

अनुवाद , प्रमुख विषय एवं पारिभाषिक शब्दावली सहित

http://www.quranhindi.com/

1. अल-फ़ातिहा

(मक्का में उतरी—आयतें 7)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब (प्रभु, पालनकर्त्ता) है।
2. बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।
3. बदला दिए जाने के दिन का मालिक है।
4. हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं।
5. हमें सीधे मार्ग पर चला।
6. उन लोगों के मार्ग पर जो तेरे कृपापात्र हुए,
7. जो न प्रकोप के भागी हुए और न पथभ्रष्ट।



سورة الفاتحة مكية

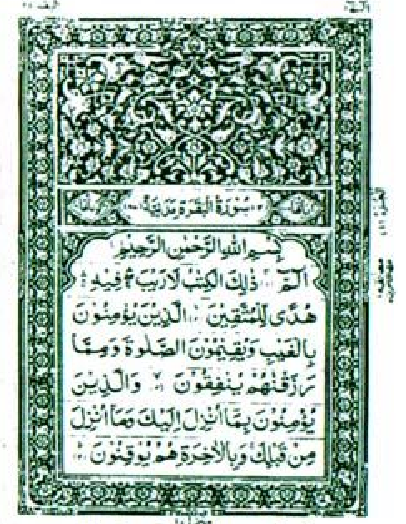
بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين ۙ الرحمن
الرحيم ۙ مالك يوم الدين ۗ
إياك نعبد وإياك نستعين ۗ
اهدنا الصراط المستقيم ۙ صراط
الذين أنعمت عليهم ۙ غير
المغضوب عليهم ولا الضالين ۗ

----

e-book by : Umar Kairanvi , Nadeem and Zia-ul-Islam

http://islaminhindi.blogspot.com/



2. अल-बक़रा

(मदीना में उतरी—आयतें 286)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम०।

2. वह किताब यही है,[1] जिसमें कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन है डर रखनेवालों के लिए,

3. जो अनदेखे ईमान लाते हैं,[2] नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं;

4. और जो उसपर ईमान लाते हैं जो तुमपर उतरा और जो तुमसे पहले अवतरित हुआ है और आख़िरत पर वही लोग विश्वास रखते हैं;

---

1. जिसका वादा किया गया था।
2. या परोक्ष पर ईमान लाते हैं अर्थात ईमान लाने के लिए परोक्ष को देख लेने की शर्त वे नहीं लगाते।

أُولَٰٓئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ
تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ
سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰٓ أَبْصَٰرِهِمْ غِشَٰوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَ
بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝ يُخَٰدِعُونَ اللَّهَ وَ
الَّذِينَ ءَامَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا
تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوٓا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝
أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا
قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا كَمَآ ءَامَنَ النَّاسُ قَالُوٓا أَنُؤْمِنُ
كَمَآ ءَامَنَ السُّفَهَآءُ ۗ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلَٰكِن

5. वही लोग हैं जो अपने रब के सीधे मार्ग पर हैं और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।

6. जिन लोगों ने कुफ़्र (इनकार) किया उनके लिए बराबर है, चाहे तुमने उन्हें सचेत किया हो या सचेत न किया हो, वे ईमान नहीं लाएँगे।

7. अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर परदा पड़ा है, और उनके लिए बड़ी यातना है।

8. कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हैं, हालाँकि वे ईमान नहीं रखते।

9. वे अल्लाह और ईमानवालों के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालाँकि धोखा वे स्वयं अपने-आपको ही दे रहे हैं, परन्तु वे इसको महसूस नहीं करते।

10. उनके दिलों में रोग था तो अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और उनके झूठ बोलते रहने के कारण उनके लिए एक दुखद यातना है।

11. और जब उनसे कहा जाता है कि "ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो", तो कहते हैं : "हम तो केवल सुधारक हैं।"

12. जान लो ! वही हैं जो बिगाड़ पैदा करते हैं, परन्तु उन्हें एहसास नहीं होता।

13. और जब उनसे कहा जाता है : "ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए हैं", कहते हैं : "क्या हम ईमान लाएँ जैसे कम समझ लोग ईमान लाए हैं ?" जान लो, वही कम समझ हैं परन्तु जानते नहीं।

لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَ
إِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِئُونَ ۝ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ
فَمَا رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ
مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ
لَا يُبْصِرُونَ ۝ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝
أَوْ كَصَيِّبٍ مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ
يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ
الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ
يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۖ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا
أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ

14. और जब ईमान लानेवालों से मिलते हैं तो कहते हैं : "हम भी ईमान लाए हैं," और जब एकांत में अपने शैतानों के पास पहुँचते हैं, तो कहते हैं : "हम तो तुम्हारे साथ हैं और यह तो हम केवल परिहास कर रहे हैं।"

15. अल्लाह उनके साथ परिहास कर रहा है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दिए जाता है, वे भटकते फिर रहे हैं।

16. यही वे लोग हैं, जिन्होंने मार्गदर्शन के बदले में गुमराही मोल ली, किन्तु उनके इस व्यापार ने न कोई लाभ पहुँचाया और न ही वे सीधा मार्ग पा सके।

17. उनकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी व्यक्ति ने आग जलाई, फिर जब उसने उसके वातावरण को प्रकाशित कर दिया, तो अल्लाह ने उनका प्रकाश ही छीन लिया और उन्हें अँधेरों में छोड़ दिया जिससे उन्हें कुछ सुझाई नहीं दे रहा है।

18. वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं, अब वे लौटने के नहीं।

19. या (उनकी मिसाल ऐसी है) जैसे आकाश से वर्षा हो रही हो जिसके साथ अँधेरे हों और गरज और चमक भी हो, वे बिजली की कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उँगलियाँ दे ले रहे हों—और अल्लाह ने तो इनकार करनेवालों को घेर रखा है।

20. मानो शीघ्र ही बिजली उनकी आँखों की रौशनी उचक लेने को है; जब भी वह उनपर चमकती हो, उसमें वे चल पड़ते हों और जब उनपर अँधेरा छा जाता हो तो खड़े हो जाते हों; अगर अल्लाह चाहता तो उनकी सुनने और

وَأَبْصَارِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِن
قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ
فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ
بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَ
أَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَإِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ
عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُم
مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا
وَلَن تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَ
الْحِجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِن ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوا
هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ

उनके देखने की शक्ति बिलकुल ही छीन लेता।[1] निस्संदेह, अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

21. ऐ लोगो! बन्दगी करो अपने रब की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम बच सको;

22. वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आकाश को छत बनाया, और आकाश से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार और फल तुम्हारी रोज़ी के लिए पैदा किए, अतः जब तुम जानते हो तो अल्लाह के समकक्ष न ठहराओ।

23. और अगर उसके विषय में जो हमने अपने बन्दे पर उतारा है, तुम किसी सन्देह में हो तो उस जैसी कोई सूरा ले आओ और अल्लाह से हटकर अपने सहायकों को बुला लो जिनके आ मौजूद होने पर तुम्हें विश्वास है, यदि तुम सच्चे हो।

24. फिर अगर तुम ऐसा न कर सको और तुम कदापि नहीं कर सकते, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन इनसान और पत्थर हैं. जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार की गई है।

25. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; जब भी उनमें

1. यहाँ दो मिसालें पेश की गई हैं, एक यहूदी मुनाफ़िक़ों के लिए जिनके ईमान लाने की कोई आशा न थी। दूसरी मदीना के ग़ैर यहूदी मुनाफ़िक़ों के लिए जिनके विषय में यह आशा थी कि वे ईमान ला सकते हैं।

فِيهَآ أَزْوَٰجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝ إِنَّ ٱللَّهَ
لَا يَسْتَحْىِۦٓ أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا
فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا
ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَيَقُولُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ
يُضِلُّ بِهِۦ كَثِيرًا وَيَهْدِى بِهِۦ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِۦٓ إِلَّا
ٱلْفَٰسِقِينَ ۝ ٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ
مِيثَٰقِهِۦ وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَ
يُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ۝ كَيْفَ
تَكْفُرُونَ بِٱللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَٰتًا فَأَحْيَٰكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ لَكُم مَّا
فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ ٱسْتَوَىٰٓ إِلَى ٱلسَّمَآءِ فَسَوَّىٰهُنَّ
سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّى جَاعِلٌ فِى ٱلْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوٓا۟ أَتَجْعَلُ

से कोई फल उन्हें रोज़ी के रूप में मिलेगा, तो कहेंगे : "यह तो वही है जो पहले हमें मिला था," और उन्हें मिलता-जुलता ही (फल) मिलेगा; उनके लिए वहाँ पाक-साफ़ पत्नियाँ होंगी, और वे वहाँ सदैव रहेंगे।

26. निस्संदेह अल्लाह नहीं शर्माता कि वह कोई मिसाल पेश करे चाहे वह हो मच्छर की, बल्कि उससे भी बढ़कर किसी तुच्छ चीज़ की। फिर जो ईमान लाए हैं वे तो जानते हैं कि वह उनके रब की ओर से सत्य है; रहे इनकार करनेवाले तो वे कहते हैं : "इस मिसाल से अल्लाह का अभिप्राय क्या है?" इससे वह बहुतों को भटकने देता है और बहुतों को सीधा मार्ग दिखा देता है, मगर इससे वह केवल अवज्ञाकारियों ही को भटकने देता है।

27. जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं और जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काट डालते हैं, और ज़मीन मे बिगाड़ पैदा करते हैं, वही हैं जो घाटे में हैं।

28. तुम अल्लाह के साथ अविश्वास की नीति कैसे अपनाते हो, जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने तुम्हें जीवित किया, फिर वही तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है?

29. वही तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की सारी चीज़ें पैदा कीं, फिर आकाश की ओर रुख़ किया और ठीक तौर पर सात आकाश बनाए और वह हर चीज़ को जानता है।

30. और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि "मैं धरती में

فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّىٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ
وَعَلَّمَ ءَادَمَ الْأَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَٰٓئِكَةِ
فَقَالَ أَنۢبِـُٔونِى بِأَسْمَآءِ هَٰٓؤُلَآءِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ
قَالُوا سُبْحَٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَآ إِنَّكَ أَنتَ الْعَلِيمُ
الْحَكِيمُ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ أَنۢبِئْهُم بِأَسْمَآئِهِمْ فَلَمَّآ أَنۢبَأَهُم
بِأَسْمَآئِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّىٓ أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَٰوَٰتِ
وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ وَإِذْ
قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِـَٔادَمَ فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ
وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَٰفِرِينَ وَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ اسْكُنْ
أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا
تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّٰلِمِينَ فَأَزَلَّهُمَا
الشَّيْطَٰنُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا

(मनुष्य को) ख़लीफ़ा (सत्ताधारी) बनानेवाला हूँ।" उन्होंने कहा : "क्या उसमें उसको रखेगा, जो उसमें बिगाड़ पैदा करे और रक्तपात करे और हम तेरा गुणगान करते और तुझे पवित्र कहते हैं?" उसने कहा : "मैं जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।"

31. उसने (अल्लाह ने) आदम को सारे नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा : "अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ।"

32. वे बोले : "पाक और महिमावान है तू! तूने जो कुछ हमें बताया उसके सिवा हमें कोई ज्ञान नहीं। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।"

33. उसने कहा : "ऐ आदम! उन्हें उन लोगों के नाम बताओ।" फिर जब उसने उन्हें उनके नाम बता दिए तो (अल्लाह ने) कहा : "क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं आकाशों और धरती की छिपी बातों को जानता हूँ और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो।"

34. और याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि "आदम को सजदा करो" तो, उन्होंने सजदा किया सिवाय इबलीस के; उसने इनकार कर दिया और लगा बड़ा बनने और काफ़िर हो रहा।

35. और हमने कहा : "ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो और वहाँ जी भर बेरोक-टोक जहाँ से तुम दोनों का जी चाहे खाओ, लेकिन इस वृक्ष के पास न जाना, अन्यथा तुम ज़ालिम ठहरोगे।"

36. अन्ततः शैतान ने उन्हें वहाँ से फिसला दिया, फिर उन दोनों को वहाँ से निकलवाकर छोड़ा, जहाँ वे थे। हमने कहा कि "उतरो, तुम एक-दूसरे के शत्रु

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ
اِلٰى حِيْنٍ ۝ فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ
اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ
فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ
وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۝ وَ
اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ
كَافِرٍۢ بِهٖ ۪ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۫ وَّاِيَّايَ
فَاتَّقُوْنِ ۝ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا
الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا
الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ

होगे और तुम्हें एक समय तक धरती में ठहरना और बिलसना है।"

37. फिर आदम ने अपने रब से कुछ शब्द पा लिए, तो अल्लाह ने उसकी तौबा क़बूल कर ली; निस्संदेह वही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

38. हमने कहा : "तुम सब यहाँ से उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण किया, तो ऐसे लोगों को न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।"

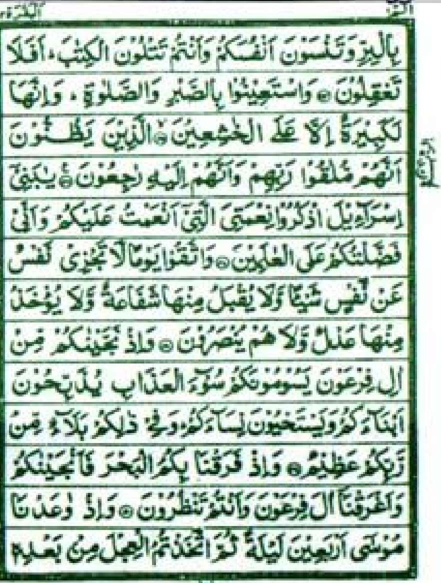
39. और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

40. ऐ इसराईल की संतान ! याद करो मेरे उस अनुग्रह को जो मैंने तुमपर किया था। और मेरी प्रतिज्ञा को पूरा करो, मैं तुमसे की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा और हाँ मुझी से डरो।

41. और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है, जो उसकी पुष्टि में है, जो तुम्हारे पास है, और सबसे पहले तुम ही उसके इनकार करनेवाले न बनो। और मेरी आयतों को थोड़ा मूल्य प्राप्त करने का साधन न बनाओ, मुझसे ही तुम डरो।

42. और सत्य में असत्य का घाल-मेल न करो और जानते-बूझते सत्य को छिपाओ मत।

43. और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और (मेरे समक्ष) झुकनेवालों के साथ झुको।



44. क्या तुम लोगों को तो नेकी और एहसान का उपदेश देते हो और अपने आपको भूल जाते हो, हालाँकि तुम किताब भी पढ़ते हो? फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

45. धैर्य और नमाज़ से मदद लो, और निस्संदेह यह (नमाज़) बहुत कठिन है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिनके दिल पिघले हुए हों;

46. जो समझते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की ओर उन्हें पलटकर जाना है।

47. ऐ इसराईल की संतान! याद करो मेरे उस अनुग्रह को जो मैंने तुमपर किया था और इसे भी कि मैंने तुम्हें सारे संसार पर श्रेष्ठता प्रदान की थी;

48. और डरो उस दिन से जब न कोई किसी की ओर से कुछ तावान भरेगा और न किसी की ओर से कोई सिफ़ारिश ही क़बूल की जाएगी और न किसी की ओर से कोई फ़िद्‌या (अर्थदण्ड) लिया जाएगा और न वे सहायता ही पा सकेंगे।

49. और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔनियों से छुटकारा दिलाया जो तुम्हें अत्यन्त बुरी यातना देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे; और इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी परीक्षा थी।

50. याद करो जब हमने तुम्हें सागर में अलग-अलग चौड़े रास्ते से ल जाकर छुटकारा दिया और फ़िरऔनियों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया।

51. और याद करो जब हमने मूसा से चालीस रातों का वादा ठहराया तो उसके

وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ۝ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَ
الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ
لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنفُسَكُم بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ
فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ عِندَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيمُ ۝ وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى
اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّاعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ۝
ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَ
ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ
كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوا
أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ
فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا

पीछे तुम बछड़े को अपना देवता बना बैठे, तुम अत्याचारी थे ।

52. फिर इसके पश्चात् भी हमने तुम्हें क्षमा किया, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ ।

53. और याद करो जब मूसा को हमने किताब और कसौटी प्रदान की, ताकि तुम मार्ग पा सको ।

54. और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! बछड़े को देवता बनाकर तुमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है, तो तुम अपने पैदा करनेवाले की ओर पलटो, अतः अपने लोगों[1] को स्वयं क़त्ल करो। यही तुम्हारे पैदा करनेवाले की दृष्टि में तुम्हारे लिए अच्छा है, फिर उसने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली । निस्संदेह, वह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है ।"

55. और याद करो जब तुमने कहा था : "ऐ मूसा, हम तुमपर ईमान नहीं लाएँगे जब तक अल्लाह को खुल्लम-खुल्ला न देख लें ।" फिर एक कड़क ने तुम्हें आ दबोचा[2], तुम देखते रहे ।

56. फिर तुम्हारे निर्जीव हो जाने के पश्चात् हमने तुम्हें जिला उठाया, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ ।

57. और हमने तुमपर बादलों की छाया की और तुमपर 'मन्न' और 'सलवा' उतारा— "खाओ, जो अच्छी पाक चीज़ें हमने तुम्हें प्रदान की हैं ।" उन्होंने हमारा तो कुछ भी नहीं बिगाड़ा, बल्कि वे अपने ही ऊपर अत्याचार करते रहे ।

1. अर्थात् अपने उन लोगों को जिन्होंने ऐसे अपराध किए, जिनकी सज़ा क़त्ल ही है ।
2. अर्थात् तुमने इस प्रकार की धृष्टता की, कि तत्काल अल्लाह के प्रकोप में ग्रस्त हो गए ।

وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ۚ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ
فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا
عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ۞ وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا
اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن
رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۞ وَإِذْ
قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن بَقْلِهَا وَ
قِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ
الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ
لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ
وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ

58. और जब हमने कहा था : "इस बस्ती में प्रवेश करो फिर उसमें से जहाँ से चाहो जी भर खाओ, और बस्ती के द्वार में सजदागुज़ार बनकर प्रवेश करो, और कहो : "छूट है।"[1] हम तुम्हारी ख़ताओं को क्षमा कर देंगे और अच्छे से अच्छा काम करनेवालों पर हम और अधिक अनुग्रह करेंगे।"

59. फिर जो बात उनसे कही गई थी ज़ालिमों ने उसे दूसरी बात से बदल दिया।[2] अन्ततः ज़ालिमों पर हमने, जो अवज्ञा वे कर रहे थे उसके कारण, आकाश से यातना उतारी।

60. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी की प्रार्थना की तो हमने कहा : "चट्टान पर अपनी लाठी मारो", तो उससे बारह स्रोत फूट निकले और हर गिरोह ने अपना-अपना घाट जान लिया——"खाओ और पियो अल्लाह का दिया और धरती में बिगाड़ फैलाते न फिरो।"

61. और याद करो जब तुमने कहा था : "ऐ मूसा, हम एक ही प्रकार के खाने पर कदापि संतोष नहीं कर सकते, अतः हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो कि वह हमारे वास्ते धरती की उपज से साग-पात और ककड़ियाँ और लहसुन और मसूर और प्याज़ निकाले।" कहा (मूसा ने) : "क्या तुम जो घटिया चीज़ है उसको उससे बदलकर लेना चाहते हो जो उत्तम है? किसी नगर में उतरो, फिर जो कुछ तुमने माँगा है, तुम्हें मिल जाएगा"——और उनपर अपमान और हीन दशा थोप दी गई,

1. अर्थात् हमारा काम तुमपर बोझ डालना नहीं, बल्कि ज़ुल्म के बोझ से तुम्हें उबारना है।
2. अर्थात् उनकी नीति वह न रही, जो अपेक्षित थी।

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
الَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَاِذْ
اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۭ خُذُوْا مَآ
اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا
قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ۝ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا
وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى
لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ۭ قَالُوْٓا

और वे अल्लाह के प्रकोप के भागी हुए। यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों का इनकार करते रहे और नबियों की अकारण हत्या करते थे। यह इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की और वे सीमा का उल्लंघन करते रहे।

62. निस्संदेह, ईमानवाले और जो यहूदी हुए और ईसाई और साबिई, जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाया और अच्छा कर्म किया तो ऐसे लोगों का उनके अपने रब के पास (अच्छा) बदला है, उनको न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे—

63. और याद करो जब हमने इस हाल में कि तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर ऊँचा कर रखा था, तुमसे दृढ़ वचन लिया था : "जो चीज़ हमने तुम्हें दी है उसे मज़बूती के साथ पकड़ो और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो ताकि तुम बच सको।"

64. फिर इसके पश्चात् भी तुम फिर गए, तो यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दयालुता तुम पर न होती, तो तुम घाटे में पड़ गए होते।

65. और तुम उन लोगों के विषय में तो जानते ही हो जिन्होंने तुममें से 'सब्त'[1] के दिन के मामले में मर्यादा का उल्लंघन किया था, तो हमने उनसे कह दिया : "बन्दर हो जाओ, धिक्कारे और फिटकारे हुए!"

66. फिर हमने इसे सामनेवालों और बाद के लोगों के लिए शिक्षा-सामग्री और डर रखनेवालों के लिए नसीहत बनाकर छोड़ा।

67. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा : "निश्चय ही अल्लाह

---

1. अर्थात् सामूहिक इबादत का दिन।

أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ
بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا
بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا
وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا
بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ
مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ
فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا
فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾
فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ

तुम्हें आदेश देता है कि एक गाय ज़बह करो।" कहने लगे : "क्या तुम हमसे परिहास करते हो?" उसने कहा : "मैं इससे अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि जाहिल बनूँ।"

68. बोले : "हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमपर स्पष्ट कर दे कि वह (गाय) कौन-सी है?" उसने कहा : "वह कहता है कि वह ऐसी गाय है जो न बूढ़ी है, न बछिया, इनके बीच की रास है; तो जो तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है, करो।"

69. कहने लगे : "हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा है?" कहा : "वह कहता है कि वह गाय सुनहरी है, गहरे चटकीले रंग की कि देखनेवालों को प्रसन्न कर देती है।"

70. बोले : "हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि वह कौन-सी है, गायों का निर्धारण हमारे लिए संदिग्ध हो रहा है। यदि अल्लाह ने चाहा तो हम अवश्य पता लगा लेंगे।"

71. उसने कहा : "वह कहता है कि वह ऐसी गाय है जो सधाई हुई नहीं है कि भूमि जोतती हो, और न वह खेत को पानी देती है, ठीक-ठाक है, उसमें किसी दूसरे रंग की मिलावट नहीं है।" बोले : "अब तुमने ठीक बात बताई है।" फिर उन्होंने उसे ज़ब्ह किया, जबकि वे करना नहीं चाहते थे।

72. और याद करो जब तुमने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, फिर उस सिलसिले में तुमने टाल-मटोल से काम लिया—जबकि जिसको तुम छिपा रहे थे, अल्लाह उसे खोल देनेवाला था।

73. ——तो हमने कहा : "उसे उसके एक हिस्से से मारो।" इस प्रकार अल्लाह

मुर्दों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।

74. फिर इसके पश्चात् भी तुम्हारे दिल कठोर हो गए, तो वे पत्थरों की तरह हो गए बल्कि उनसे भी अधिक कठोर; क्योंकि कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं, और उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं कि फट जाते हैं तो उनमें से पानी निकलने लगता है, और उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के भय से गिर जाते हैं। और अल्लाह, जो कुछ तुम कर रहे हो, उससे बेख़बर नहीं है।

وَيُرِيكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ ثُمَّ قَسَتْ
قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ
قَسْوَةً ۚ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۚ
وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ۚ وَاِنَّ مِنْهَا
لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۚ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ۝ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ
كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ
مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا لَقُوا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ
قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ
بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ
اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

75. तो क्या तुम इस लालच में हो कि वे तुम्हारी बात मान लेंगे, जबकि उनमें से कुछ लोग अल्लाह का कलाम सुनते रहे हैं, फिर उसे भली-भाँति समझ लेने के पश्चात जान-बूझकर उसमें परिवर्तन करते रहे ?

76. और जब वे ईमान लानेवालों से मिलते हैं तो कहते हैं : "हम भी ईमान रखते हैं", और जब आपस में एक-दूसरे से एकांत में मिलते हैं तो कहते हैं : "क्या तुम उन्हें वे बातें, जो अल्लाह ने तुमपर खोलीं, बता देते हो कि वे उनके द्वारा तुम्हारे रब के यहाँ हुज्जत में तुम्हारा मुक़ाबिला करें ? तो क्या तुम समझते नहीं !"

77. क्या वे जानते नहीं कि अल्लाह वह सब कुछ जानता है, जो कुछ वे छिपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं ?

78. और उनमें सामान्य बेपढ़े भी हैं जिन्हें किताब का ज्ञान नहीं है, बस कुछ कामनाओं एवं आशाओं को धर्म जानते हैं, और वे तो बस अटकल से काम लेते हैं।

يَظُنُّونَ ۝ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۗ
ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا
يَكْسِبُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ۗ
قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ
اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ كَسَبَ
سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـــَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَاِذْ
اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۗ وَ
بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

79. तो विनाश और तबाही है उन लोगों के लिए जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं फिर कहते हैं : "यह अल्लाह की ओर से है", ताकि उसके द्वारा थोड़ा मूल्य प्राप्त कर लें। तो तबाही है उनके लिए उसके कारण जो उनके हाथों ने लिखा और तबाही है उनके लिए उसके कारण जो वे कमा रहे हैं।

80. वे कहते हैं : "जहन्नम की आग हमें नहीं छू सकती, हाँ, कुछ गिने-चुने दिनों की बात और है।" कहो : "क्या तुमने अल्लाह से कोई वचन ले रखा है? फिर तो अल्लाह कदापि अपने वचन के विरुद्ध नहीं जा सकता? या तुम अल्लाह के ज़िम्मे डालकर ऐसी बात कहते हो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?

81. क्यों नहीं; जिसने भी कोई बदी कमाई और उसकी ख़ताकारी ने उसे अपने घेरे में ले लिया, तो ऐसे ही लोग आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं; वे उसी में सदैव रहेंगे।

82. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वही जन्नतवाले हैं, वे सदैव उसी में रहेंगे।"

83. और याद करो जब इसराईल की संतान से हमने वचन लिया : "अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करोगे; और माँ-बाप के साथ और नातेदारों के साथ और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे; और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।" तो तुम फिर गए, बस तुममें बचे थोड़े ही, और तुम उपेक्षा की नीति ही अपनाए रहे।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ
أَنفُسَكُم مِّن دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ
ثُمَّ أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا
مِّنكُم مِّن دِيَارِهِمْ تَظَاهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَإِن يَأْتُوكُمْ أُسَارَىٰ تُفَادُوهُمْ وَهُوَ
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ
وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاءُ مَن يَفْعَلُ ذَٰلِكَ
مِنكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ
وَقَفَّيْنَا مِن بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ

84. और याद करो जब हमने तुमसे वचन लिया : "अपने ख़ून न बहाओगे और न अपने लोगों को अपनी बस्तियों से निकालोगे।" फिर तुमने इक़रार किया और तुम स्वयं इसके गवाह हो।

85. फिर तुम वही हो कि अपने लोगों की हत्या करते हो और अपने ही एक गिरोह के लोगों को उनकी बस्तियों से निकालते हो; तुम गुनाह और ज़्यादती के साथ उनके विरुद्ध एक-दूसरे के पृष्ठपोषक बन जाते हो; और यदि वे बन्दी बनकर तुम्हारे पास आते हैं, तो उनकी रिहाई के लिए फ़िद्‌ए (अर्थदण्ड) का लेन-देन करते हो जबकि उनको उनके घरों से निकालना ही तुमपर हराम था, तो क्या तुम किताब के एक हिस्से को मानते हो और एक को नहीं मानते? फिर तुममें जो ऐसा करें उनका बदला इसके सिवा और क्या हो सकता है कि सांसारिक जीवन में अपमान हो? और क़ियामत के दिन ऐसे लोगों को कठोर से कठोर यातना की ओर फेर दिया जाएगा। अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है जो कुछ तुम कर रहे हो।

86. यही वे लोग हैं जो आख़िरत के बदले सांसारिक जीवन के ख़रीदार हुए, तो न उनकी यातना हल्की की जाएगी और न उन्हें कोई सहायता पहुँच सकेगी।

87. और हमने मूसा को किताब दी थी, और उसके पश्चात् आगे-पीछे निरन्तर रसूल भेजते रहे; और मरयम के बेटे ईसा को खुली-खुली निशानियाँ प्रदान कीं और पवित्र-आत्मा के द्वारा उसे शक्ति प्रदान की; तो यही तो हुआ कि जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह कुछ लेकर आया जो तुम्हारे जी को

مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا
جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ
فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ؗ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا
مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ؗ
فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ
اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ
بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَ
اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ
اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ

पसंद न था, तो तुम अकड़ बैठे, तो एक गिरोह को तो तुमने झुठलाया और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे ?

88. वे कहते हैं : "हमारे दिलों पर तो प्राकृतिक आवरण चढ़े हैं।" नहीं, बल्कि उनके इनकार के कारण अल्लाह ने उनपर लानत की है; अत: वे ईमान थोड़े ही लाएँगे।

89. और जब उनके पास एक किताब अल्लाह की ओर से आई है जो उसकी पुष्टि करती है जो उनके पास मौजूद है—और इससे पहले तो वे न माननेवाले लोगों पर विजय पाने के इच्छुक रहे हैं—फिर जब वह चीज़ उनके पास आ गई जिसे वे पहचान भी गए हैं, तो उसका इनकार कर बैठे; तो अल्लाह की फिटकार इनकार करनेवालों पर !

90. क्या ही बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों का सौदा किया, अर्थात् जो कुछ अल्लाह ने उतारा है उसे सरकशी और इस अप्रियता के कारण नहीं मानते कि अल्लाह अपना फ़ज़्ल (कृपा) अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है क्यों उतारता है, अत: वे प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी हो गए हैं। और ऐसे इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना है।

91. जब उनसे कहा जाता है : "अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसपर ईमान लाओ", तो कहते हैं : "हम तो उसपर ईमान रखते हैं जो हमपर उतरा है," और उसे मानने से इनकार करते हैं जो उसके पीछे है, जबकि वही सत्य है, उसकी पुष्टि करता है जो उनके पास है। कहो : "अच्छा तो इससे पहले

مصدقا لما معهم ۗ قل فلم تقتلون أنبياء الله
من قبل إن كنتم مؤمنين ۞ ولقد جاءكم موسى
بالبينات ثم اتخذتم العجل من بعده وأنتم
ظالمون ۞ وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم
الطور خذوا ما آتيناكم بقوة واسمعوا ۖ قالوا
سمعنا وعصينا وأشربوا في قلوبهم العجل بكفرهم ۚ
قل بئسما يأمركم به إيمانكم إن كنتم مؤمنين ۞
قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة
من دون الناس فتمنوا الموت إن كنتم صادقين ۞
ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم ۗ والله عليم
بالظالمين ۞ ولتجدنهم أحرص الناس على
حياة ومن الذين أشركوا ۚ يود أحدهم لو يعمر
ألف سنة وما هو بمزحزحه من العذاب أن

अल्लाह के पैग़म्बरों की हत्या क्यों करते रहे हो, यदि तुम ईमानवाले हो ?"

92. तुम्हारे पास मूसा खुली-खुली निशानियाँ लेकर आया, फिर भी उसके बाद तुम ज़ालिम बनकर बछड़े को देवता बना बैठे।

93. और याद करो जब हमने तुमसे वचन लिया, और तूर को तुम्हारे ऊपर उठाए रखा था—"जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से पकड़ो और सुनो।" वे बोले : "हमने सुना, किन्तु हमने माना नहीं।" उनके अविश्वास के कारण उनके दिलों में बछड़ा बस गया था। कहो : "यदि तुम ईमानवाले हो, तो कितना बुरा वह कर्म है जिसका हुक्म तुम्हारा ईमान तुम्हें देता है।"

94. कहो : "यदि अल्लाह के निकट आख़िरत का घर सारे इनसानों को छोड़कर केवल तुम्हारे ही लिए है, फिर तो मृत्यु की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो।"

95. अपने हाथों इन्होंने जो कुछ आगे भेजा है उसके कारण वे कदापि उसकी कामना न करेंगे; अल्लाह तो ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।

96. तुम उन्हें सब लोगों से बढ़कर जीवन का लोभी पाओगे, यहाँ तक कि वे इस सम्बन्ध में शिर्क करनेवालों से भी बढ़े हुए हैं। उनका तो प्रत्येक व्यक्ति यह इच्छा रखता है कि क्या ही अच्छा होता कि उसे हज़ार वर्ष की आयु मिले, जबकि यदि उसे यह आयु प्राप्त भी हो जाए, तो भी वह अपने आपको यातना से नहीं बचा सकता। अल्लाह देख रहा है, जो कुछ वे कर रहे हैं।

يُعَمَّرَ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ قُلْ مَنْ كَانَ
عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ
مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ
وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَلَقَدْ
أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا
الْفَاسِقُونَ ۝ أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ
مِنْهُمْ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَمَّا جَاءَهُمْ
رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ نَبَذَ
فَرِيقٌ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ
ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُو
الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ
وَلَٰكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا

97. कहो : "जो कोई जिबरील का शत्रु हो, (तो वह अल्लाह का शत्रु है,) क्योंकि उसने तो उसे अल्लाह ही के हुक्म से तुम्हारे दिल पर उतारा है, जो उन (भविष्यवाणियों) के सर्वथा अनुकूल है जो उससे पहले से मौजूद हैं; और ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन और शुभ-सूचना है ।

98. जो कोई अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिबरील और मीकाईल का शत्रु हो, तो ऐसे इनकार करनेवालों का अल्लाह शत्रु है ।"

99. और हमने तुम्हारी ओर खुली-खुली आयतें उतारी हैं और उनका इनकार तो बस वही लोग करते हैं, जो उल्लंघनकारी हैं ।

100. क्या यह उनकी निश्चित नीति है कि जब भी उन्होंने कोई वचन दिया तो उनके एक गिरोह ने उसे उठा फेंका? बल्कि उनमें अधिकतर ईमान ही नहीं रखते ।

101. और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल आया, जिससे उस (भविष्यवाणी) की पुष्टि हो रही है जो उनके पास थी, तो उनके एक गिरोह ने, जिन्हें किताब मिली थी, अल्लाह की किताब को अपने पीठ पीछे डाल दिया, मानो वे कुछ जानते ही नहीं ।

102. और वे उस चीज़ के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलैमान की बादशाही पर थोपकर पढ़ते थे——हालाँकि सुलैमान ने कोई कुफ़्र नहीं किया था, बल्कि कुफ़्र तो शैतानों ने किया था; वे लोगों को जादू सिखाते थे——और उस चीज़ में पड़ गए जो बाबिल में दोनों फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गई थी । और वे किसी को भी सिखाते न थे जबतक कि कह न देते : "हम तो बस एक

أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۚ
وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ
فَلَا تَكْفُرْ ۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ
الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ
وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوا ۗ
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ
عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ

परीक्षा हैं; तो तुम कुफ़्र में न पड़ना।" तो लोग उन दोनों से वह कुछ सीखते हैं, जिसके द्वारा पति और पत्नी में अलगाव पैदा कर दें—— यद्यपि वे उससे किसी को भी हानि नहीं पहुँचा सकते थे। हाँ, यह और बात है कि अल्लाह के हुक्म से किसी को हानि पहुँचनेवाली ही हो—और वह कुछ सीखते हैं जो उन्हें हानि ही पहुँचाए और उन्हें कोई लाभ न पहुँचाए। और उन्हें भली-भाँति मालूम है कि जो उसका ग्राहक बना, उसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। कितनी बुरी चीज़ के बदले उन्होंने अपने प्राणों का सौदा किया, यदि वे जानते (तो ठीक मार्ग अपनाते)।

103. और यदि वे ईमान लाते और डर रखते, तो अल्लाह के यहाँ से मिलनेवाला बदला कहीं अच्छा था, यदि वे जानते (तो इसे समझ सकते)।

104. ऐ ईमान लानेवालो! 'राइना'[1] न कहा करो, बल्कि 'उनज़ुरना'[2] कहा करो और सुना करो। और इनकार करनेवालों के लिए दुखद यातना है।

105. इनकार करनेवाले नहीं चाहते, न किताबवाले और न मुशरिक (बहुदेववादी) कि तुम्हारे रब की ओर से तुमपर कोई भलाई उतरे, हालाँकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी दयालुता के लिए ख़ास कर ले; अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

---

1. यहाँ अरबी में जो वाक्य प्रयुक्त हुआ है, तनिक हेर-फेर से इसका अर्थ कुछ से कुछ हो जाता है। इसी लिए इस शब्द को प्रयोग में लाने से रोका गया है।
2. हमपर नज़र कीजिए, या तनिक हमारा ख़याल कीजिए।

مَنْ يَّشَاۤءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَا نَنْسَخْ مِنْ
اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ۗ اَلَمْ تَعْلَمْ
اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ
اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ
تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُىِٕلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ
يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاۤءَ السَّبِيْلِ ۝
وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ
كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ
بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَقَالُوْا

106. हम जिस आयत (और निशान) को भी मिटा दें या उसे भुला देते हैं, तो उससे बेहतर लाते हैं या उस जैसा दूसरा ही। क्या तुम जानते नहीं हो कि अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है?

107. क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है और अल्लाह से हटकर न तुम्हारा कोई मित्र है और न सहायक?

108. (ऐ ईमानवालो ! तुम अपने रसूल के आदर का ध्यान रखो) या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी प्रकार से प्रश्न और बात करो, जिस प्रकार इससे पहले मूसा से बात की गई है? हालाँकि जिस व्यक्ति ने ईमान के बदले इनकार की नीति अपनाई, तो वह सीधे रास्ते से भटक गया।

109. बहुत-से किताबवाले अपने भीतर की ईर्ष्या से चाहते हैं कि किसी प्रकार वे तुम्हारे ईमान लाने के बाद फेरकर तुम्हें इनकार कर देनेवाला बना दें, यद्यपि सत्य उनपर प्रकट हो चुका है, तो तुम दरगुज़र (क्षमा) से काम लो और जाने दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला लागू कर दे। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

110. और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और तुम स्वयं अपने लिए जो भलाई भी पेश करोगे, उसे अल्लाह के यहाँ मौजूद पाओगे। निस्संदेह जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ
تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝ بَلَىٰ ۚ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ
شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ
وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسَاجِدَ
اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ
مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي
الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ

111. और उनका कहना है : "कोई व्यक्ति जन्नत में प्रवेश नहीं कर सकता सिवाय उसके जो यहूदी है या ईसाई है।"[1] ये उनकी अपनी निराधार कामनाएँ है। कहो : "यदि तुम सच्चे हो तो अपने प्रमाण पेश करो।"

112. क्यों नहीं, जिसने भी अपने-आपको अल्लाह के प्रति समर्पित कर दिया और उसका कर्म भी अच्छे से अच्छा हो तो उसका प्रतिदान उसके रब के पास है और ऐसे लोगों के लिए न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

113. यहूदियों ने कहा : "ईसाइयों की कोई बुनियाद नहीं।" और ईसाइयों ने कहा : "यहूदियों की कोई बुनियाद नहीं।" हालाँकि वे किताब का पाठ करते हैं। इसी तरह की बात उन्होंने भी कही है जो ज्ञान से वंचित हैं। तो अल्लाह क़ियामत के दिन उनके बीच उस चीज़ के विषय में निर्णय कर देगा, जिसके विषय में वे विभेद कर रहे हैं।

114. और उससे बढ़कर अत्याचारी और कौन होगा जिसने अल्लाह की मस्जिदों को उसके नाम के स्मरण से वंचित रखा और उन्हें उजाड़ने पर उतारू रहा? ऐसे लोगों को तो बस डरते हुए ही उनमें प्रवेश करना चाहिए था। उनके लिए संसार में रुसवाई (अपमान) है और उनके लिए आख़िरत में बड़ी यातना नियत है।

115. पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, अत: जिस ओर भी तुम रुख़ करो

---

1. अर्थात् यहूदियों की दृष्टि में केवल यहूदी ही जन्नत में प्रवेश पा सकते हैं और ईसाइयों की दृष्टि में केवल ईसाई ही जन्नत में जाएँगे।

اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ
اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۭ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا
اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ۭ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۭ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا
وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْــَٔـلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ۝ وَلَنْ
تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ
مِلَّتَهُمْ ۭ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۭ وَلَىِٕنِ
اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ
مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَلَّذِيْنَ

منزل

उसी ओर अल्लाह का रुख़ है। निस्संदेह अल्लाह बड़ी समाईवाला (सर्वव्यापी), सर्वज्ञ है।

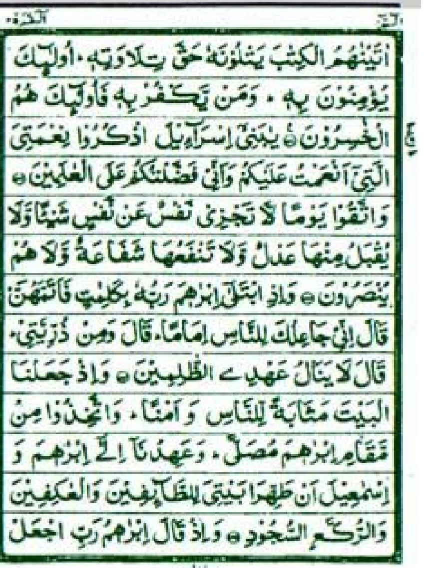
116. कहते हैं : अल्लाह औलाद रखता है—— महिमावान है वह! (पूरब और पश्चिम ही नहीं, बल्कि) आकाशों और धरती में जो कुछ भी है, उसी का है। सभी उसके आज्ञाकारी हैं।

117. वह आकाशों और धरती का प्रथमत: पैदा करनेवाला है। वह तो जब किसी काम का निर्णय करता है, तो उसके लिए बस कह देता है कि "हो जा" और वह हो जाता है।

118. जिन्हें ज्ञान नहीं, वे कहते हैं : "अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता? या कोई निशानी हमारे पास आ जाए।" इसी प्रकार इनसे पहले के लोग भी कह चुके हैं। इन सबके दिल एक जैसे हैं। हम खोल-खोलकर निशानियाँ उन लोगों के लिए बयान कर चुके हैं जो विश्वास करें।

119. निश्चित रूप से हमने तुम्हें हक़ के साथ शुभ-सूचना देनेवाला और डरानेवाला बनाकर भेजा। भड़कती आग में पड़नेवालों के विषय में तुमसे कुछ न पूछा जाएगा।

120. न यहूदी तुमसे कभी राज़ी होनेवाले हैं और न ईसाई जब तक कि तुम उनके पंथ पर न चलने लग जाओ। कह दो : "अल्लाह का मार्गदर्शन ही वास्तविक मार्गदर्शन है।" और यदि उस ज्ञान के पश्चात् जो तुम्हारे पास आ चुका है, तुमने उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया, तो अल्लाह से बचानेवाला न तो तुम्हारा कोई मित्र होगा और न सहायक।



121. जिन लोगों को हमने किताब दी है उनमें वे लोग जो उसे उस तरह पढ़ते हैं जैसाकि उसके पढ़ने का हक़ है, वही उसपर ईमान ला रहे हैं, और जो उसका इनकार करेंगे, वही घाटे में रहनेवाले हैं।

122. ऐ इसराईल की संतान! मेरी उस कृपा को याद करो जो मैंने तुमपर की थी और यह कि मैंने तुम्हें संसारवालों पर श्रेष्ठता प्रदान की।

123. और उस दिन से डरो, जब कोई न किसी के काम आएगा, न किसी की ओर से अर्थदण्ड स्वीकार किया जाएगा, और न कोई सिफ़ारिश ही उसे लाभ पहुँचा सकेगी, और न उनको कोई सहायता ही पहुँच सकेगी।

124. और याद करो जब इबराहीम की उसके रब ने कुछ बातों में परीक्षा ली तो उसने उनको पूरा कर दिखाया। उसने कहा : "मैं तुझे सारे इनसानों का पेशवा बनानेवाला हूँ।" उसने निवेदन किया : "और मेरी संतान में भी।" उसने कहा : "ज़ालिम मेरे इस वादे के अन्तर्गत नहीं आ सकते।"

125. और याद करो जब हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और शान्तिस्थल बनाया——और: "इबराहीम के स्थल में से किसी जगह को नमाज़ की जगह बना लो!"——और इबराहीम और इसमाईल को ज़िम्मेदार बनाया। "तुम मेरे इस घर को तवाफ़ करनेवालों और एतिकाफ़ करनेवालों के लिए और रुकू और सजदा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखो।"

126. और याद करो जब इबराहीम ने कहा : "ऐ मेरे रब! इसे शान्तिमय

هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ
اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ
فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِؕ وَ
بِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ
مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّاؕ اِنَّكَ
اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ
لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا
مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَاۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝
رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْؕ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ
اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَاۚ
وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لَهٗ

भू-भाग बना दे और इसके उन निवासियों को फलों की रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएँ।" कहा : "और जो इनकार करेगा थोड़ा फ़ायदा तो उसे भी दूँगा, फिर उसे घसीटकर आग की यातना की ओर पहुँचा दूँगा और वह बहुत-ही बुरा ठिकाना है !"

127. और याद करो जब इबराहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे, (तो उन्होंने प्रार्थना की) : "ऐ हमारे रब ! हमारी ओर से इसे स्वीकार कर ले, निस्संदेह तू सुनता-जानता है।

128. ऐ हमारे रब ! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय बना; और हमें हमारे इबादत के तरीक़े बता और हमारी तौबा क़बूल कर। निस्संदेह तू तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

129. ऐ हमारे रब ! उनमें उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाए और उनको किताब और तत्त्वदर्शिता की शिक्षा दे और उन (की आत्मा) को विकसित करे। निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।"

130. कौन है जो इबराहीम के पंथ से मुँह मोड़े सिवाय उसके जिसने स्वयं को पतित कर लिया ? और उसे तो हमने दुनिया में चुन लिया था और निस्संदेह आख़िरत में उसकी गणना योग्य लोगों में होगी;

131. क्योंकि जब उससे उसके रब ने कहा : "मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो जा।" उसने कहा : "मैं सारे संसार के रब का मुस्लिम हो गया।"

الٓمّ البقرة ٢

رَبِّهٖۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَوَصّٰى
بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى
لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ اَمْ
كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ
لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ
وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ
وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْئَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ
قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ
اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِىَ

منزل ١

132. और इसी की वसीयत इबराहीम ने अपने बेटों को की और याक़ूब ने भी (अपनी संतान को की) कि : "ऐ मेरे बेटो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन (धर्म) चुना है, तो इस्लाम (ईश-आज्ञापालन) के अतिरिक्त किसी और दशा में तुम्हारी मृत्यु न हो ।"[1]

133. (क्या तुम इबराहीम के वसीयत करते समय मौजूद थे ?) या तुम मौजूद थे जब याक़ूब की मृत्यु का समय आया ? जब उसने अपने बेटों से कहा : "तुम मेरे पश्चात् किसकी इबादत करोगे ?" उन्होंने कहा : "हम आपके इष्ट-पूज्य और आपके पूर्वज इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ के इष्ट-पूज्य की बन्दगी करेंगे—जो अकेला इष्ट-पूज्य है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं ।"

134. वह एक गिरोह था जो गुज़र चुका, जो कुछ उसने कमाया वह उसका है, और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारा है । और जो कुछ वे करते रहे उसके विषय में तुमसे कोई पूछताछ न की जाएगी ।

135. वे कहते हैं : "यहूदी या ईसाई हो जाओ तो मार्ग पा लोगे ।" कहो : "नहीं, बल्कि इबराहीम का पंथ अपनाओ जो एक (अल्लाह) का हो गया था, और वह बहुदेववादियों में से न था ।"

136. कहो : "हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतरी और जो इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी

1. अर्थात् तुम जीवन के अंतिम क्षण तक मुस्लिम (आज्ञाकारी) ही रहना ।

النبيون من ربهم لا نفرق بين احد منهم
ونحن له مسلمون ۝ فان امنوا بمثل ما امنتم به
فقد اهتدوا ۚ وان تولوا فانما هم في شقاق ۚ
فسيكفيكهم الله ۚ وهو السميع العليم ۝ صبغة
الله ۚ ومن احسن من الله صبغة ۚ ونحن له
عابدون ۝ قل اتحاجوننا في الله وهو ربنا و
ربكم ۚ ولنا اعمالنا ولكم اعمالكم ۚ ونحن له
مخلصون ۝ ام تقولون ان ابراهم واسمعيل
واسحق ويعقوب والاسباط كانوا هودا او
نصرى ۗ قل ءانتم اعلم ام الله ۗ ومن اظلم ممن
كتم شهادة عنده من الله ۗ وما الله بغافل عما
تعملون ۝ تلك امة قد خلت ۚ لها ما كسبت
ولكم ما كسبتم ۚ ولا تسئلون عما كانوا يعملون ۝

संतान की ओर उतरी, और जो मूसा और ईसा को मिली, और जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान की गई। हम उनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम केवल उसी के आज्ञाकारी हैं।"

137. फिर यदि वे उसी तरह ईमान लाएँ जिस तरह तुम ईमान लाए हो, तो उन्होंने मार्ग पा लिया। और यदि वे मुँह मोड़ें, तो फिर वही विरोध में पड़े हुए हैं। अतः तुम्हारी जगह स्वयं अल्लाह उनसे निबटने के लिए काफ़ी है; वह सब कुछ सुनता, जानता है।

138. (कहो) : "अल्लाह का रंग ग्रहण करो, उसके रंग से अच्छा और किसका रंग हो सकता है? और हम तो उसी की बन्दगी करते हैं।"

139. कहो : "क्या तुम अल्लाह के विषय में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वही हमारा रब भी है, और तुम्हारा रब भी? और हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। और हम तो बस निरे उसी के हैं।

140. या तुम कहते हो कि इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान सब के सब यहूदी या ईसाई थे?" कहो : "तुम अधिक जानते हो या अल्लाह? और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसके पास अल्लाह की ओर से आई हुई कोई गवाही हो, और वह उसे छिपाए? और जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है।"

141. वह एक गिरोह था जो गुज़र चुका, जो कुछ उसने कमाया वह उसके लिए है और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारे लिए है। और तुमसे उसके विषय में न पूछा जाएगा, जो कुछ वे करते रहे हैं।

142. मूर्ख लोग अब कहेंगे : "उन्हें उनके उस क़िबले (उपासना-दिशा) से, जिसपर वे थे, किस चीज़ ने फेर दिया ?" कहो : "पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, वह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है।"

143. और इसी प्रकार हमने तुम्हें बीच का एक उत्तम समुदाय बनाया है, ताकि तुम सारे मनुष्यों पर गवाह हो, और रसूल तुमपर गवाह हो। और जिस (क़िबले) पर तुम रहे हो उसे तो हमने केवल इसलिए क़िबला बनाया था कि जो लोग पीठ-पीछे फिर जानेवाले हैं, उनसे हम उनको अलग जान लें जो रसूल का अनुसरण करते हैं। और यह बात बहुत भारी (अप्रिय) है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि वह तुम्हारे ईमान को अकारथ कर दे, अल्लाह तो इनसानों के लिए अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ
قِبْلَتِهِمُ الَّتِىْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ
الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا
جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِىْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ
يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ
كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝
قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ
قِبْلَةً تَرْضٰهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

144. हम आकाश में तुम्हारे मुँह की गर्दिश देख रहे हैं, तो हम अवश्य ही तुम्हें उसी क़िबले का अधिकारी बना देंगे जिसे तुम पसन्द करते हो। अतः मस्जिदे हराम (काबा) की ओर अपना रुख़ करो। और जहाँ कहीं भी हो अपने मुँह उसी की ओर करो—— निश्चय ही जिन लोगों को किताब मिली थी वे भली-भाँति जानते हैं कि वही उनके रब की ओर से हक़ है, इसके बावजूद जो कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है।

رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَئِنْ
اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ
بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْ
بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۗ
وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝
وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ
اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا
اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

145. यदि तुम उन लोगों के पास, जिन्हें किताब दी गई थी, कोई भी निशानी ले आओ, फिर भी वे तुम्हारे क़िबले का अनुसरण नहीं करेंगे और तुम भी उनके क़िबले का अनुसरण करनेवाले नहीं हो। और वे स्वयं परस्पर एक-दूसरे के क़िबले का अनुसरण करनेवाले नहीं हैं। और यदि तुमने उस ज्ञान के पश्चात्, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया, तो निश्चय ही तुम्हारी गणना ज़ालिमों में होगी।

146. जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उसे पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं और उनमें से कुछ सत्य को जान-बूझकर छिपा रहे हैं।

147. सत्य तुम्हारे रब की ओर से है। अतः तुम सन्देह करनेवालों में से कदापि न होना।

148. प्रत्येक की एक ही दिशा है, वह उसी की ओर मुख किए हुए है, तो तुम भलाइयों में अग्रसरता दिखाओ। जहाँ कहीं भी तुम होगे अल्लाह तुम सबको एकत्र करेगा। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

149. और जहाँ से भी तुम निकलो, 'मस्जिदे हराम' (काबा) की ओर अपना मुँह फेर लिया करो। निस्संदेह यही तुम्हारे रब की ओर से हक़ है। जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है।

150. जहाँ से भी तुम निकलो, 'मस्जिदे हराम' की ओर अपना मुँह फेर लिया करो, और जहाँ कहीं भी तुम हो उसी की ओर मुँह कर लिया करो,

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ
عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا
تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ۝ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو
عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَ
الْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ
اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِنْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ
بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَ
الْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا

ताकि लोगों के पास तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई हुज्जत बाक़ी न रहे—— सिवाय उन लोगों के जो उनमें ज़ालिम हैं, तुम उनसे न डरो, मुझसे ही डरो——और ताकि मैं तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दूँ, और ताकि तुम सीधी राह चलो।

151. जैसाकि हमने तुम्हारे बीच एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हें निखारता है, और तुम्हें किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) की शिक्षा देता है और तुम्हें वह कुछ सिखाता है, जो तुम जानते न थे।

152. अतः तुम मुझे याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञता न दिखलाना।

153. ऐ ईमान लानेवालो ! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं।

154. और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाएँ उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वे जीवित हैं, परन्तु तुम्हें एहसास नहीं होता।

155. और हम अवश्य ही कुछ भय से, और कुछ भूख से, और कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से तुम्हारी परीक्षा लेंगे। और धैर्य से काम लेनेवालों को शुभ-सूचना दे दो।

156. जो लोग उस समय, जबकि उनपर कोई मुसीबत आती है, कहते

أَصَابَتْهُمْ مُّصِيبَةٌ ۙ قَالُوٓا إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّآ إِلَيْهِ
رٰجِعُونَ ۝ أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَ
رَحْمَةٌ ۖ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۝ إِنَّ الصَّفَا وَ
الْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ
فَإِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَآ
أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِن بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ
لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ أُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ
اللّٰعِنُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا
فَأُولٰٓئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ
لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ خٰلِدِينَ
فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ۝

हैं : "निस्संदेह हम अल्लाह ही के हैं और हम उसी की ओर लौटनेवाले हैं।"

157. यही लोग हैं जिनपर उनके रब की विशेष कृपाएँ हैं और दयालुता भी; और यही लोग हैं जो सीधे मार्ग पर हैं।

158. निस्संदेह सफ़ा और मरवा अल्लाह की विशेष निशानियों में से हैं; अतः जो इस घर (काबा) का हज या उमरा करे उसके लिए इसमें कोई दोष नहीं कि वह इन दोनों (पहाड़ियों) के बीच फेरा लगाए। और जो कोई स्वेच्छा और रुचि से कोई भलाई का कार्य करे तो अल्लाह भी गुणग्राहक, सर्वज्ञ है।

159. जो लोग हमारी उतारी हुई खुली निशानियों और मार्गदर्शन को छिपाते हैं, इसके बाद कि हम उन्हें लोगों के लिए किताब में स्पष्ट कर चुके हैं; वही हैं जिन्हें अल्लाह धिक्कारता है—और सभी धिक्कारनेवाले भी उन्हें धिक्कारते हैं।

160. सिवाय उनके जिन्होंने तौबा कर ली और सुधार कर लिया, और साफ़-साफ़ बयान कर दिया, तो उनकी तौबा मैं क़बूल करूँगा; मैं बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान हूँ।

161. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और काफ़िर (इनकार करनेवाले) ही रहकर मरे, वही हैं जिनपर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और सारे मनुष्यों की, सबकी फिटकार है।

162. इसी दशा में वे सदैव रहेंगे, न उनकी यातना हल्की की जाएगी और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ
الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ
اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ
فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَ
السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ
الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعَذَابِ ۝ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا
وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ۝ وَقَالَ

163. तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है, उस कृपाशील और दयावान् के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं।

164. निस्संदेह आकाशों और धरती की संरचना में, और रात और दिन की अदला-बदली में, और उन नौकाओं में जो लोगों की लाभप्रद चीज़ें लेकर समुद्र (और नदी) में चलती हैं, और उस पानी में जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर जिसके द्वारा धरती को उसके निर्जीव हो जाने के पश्चात जीवित किया और उसमें हर एक (प्रकार के) जीवधारी को फैलाया और हवाओं को गर्दिश देने में और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच (काम पर) नियुक्त होते हैं, उन लोगों के लिए कितनी ही निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें।

165. कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह से हटकर दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से प्रेम करना चाहिए। और कुछ ईमानवाले हैं उन्हें सबसे बढ़कर अल्लाह से प्रेम होता है। और ये अत्याचारी (बहुदेववादी) जबकि यातना देखते हैं, यदि इस तथ्य को जान लेते कि शक्ति सारी की सारी अल्लाह ही को प्राप्त है और यह कि अल्लाह अत्यन्त कठोर यातना देनेवाला है (तो इनकी नीति कुछ और होती)।

166. जब वे लोग जिनके पीछे वे चलते थे, यातना को देखकर अपने अनुयायियों से विरक्त हो जाएँगे और उनके सम्बन्ध और सम्पर्क टूट जाएँगे।

167. वे लोग जो उनके पीछे चले थे कहेंगे : "काश! हमें एक बार (फिर संसार

الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا
تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ
عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ۞ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ
كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا
خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۞ اِنَّمَا
يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۞ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا
مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا
يَهْتَدُوْنَ ۞ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ
الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ
بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا

منزل

में) लौटना होता तो जिस तरह आज ये हमसे विरक्त हो रहे हैं, हम भी इनसे विरक्त हो जाते ।" इस प्रकार अल्लाह उनके लिए संताप बनाकर उन्हें उनके कर्म दिखाएगा और वे आग (जहन्नम) से निकल न सकेंगे ।

168. ऐ लोगो ! धरती में जो हलाल और अच्छी-सुथरी चीज़ें है उन्हें खाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो । निस्संदेह वह तुम्हारा खुला शत्रु है ।

169. वह तो बस तुम्हें बुराई और अश्लीलता पर उकसाता है और इसपर कि तुम अल्लाह पर थोपकर वे बातें कहो जो तुम नहीं जानते ।

170. और जब उनसे कहा जाता है : "अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसका अनुसरण करो;" तो कहते हैं : "नहीं, बल्कि हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है ।" क्या उस दशा में भी जबकि उनके बाप-दादा कुछ भी बुद्धि से काम न लेते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों ?

171. इन इनकार करनेवालों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई ऐसी चीज़ों को पुकारे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ न सुनती और समझती हो । ये बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं; इसलिए ये कुछ भी नहीं समझ सकते ।

172. ऐ ईमान लानेवालो ! जो अच्छी-सुथरी चीज़ें हमने तुम्हें प्रदान की हैं उनमें से खाओ और अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाओ, यदि तुम उसी की बन्दगी करते हो ।

لله إن كنتم إياه تعبدون ۝ إنما حرم عليكم
الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به لغير
الله فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم
عليه إن الله غفور رحيم ۝ إن الذين
يكتمون ما أنزل الله من الكتب ويشترون به
ثمنا قليلا أولئك ما يأكلون في بطونهم إلا
النار ولا يكلمهم الله يوم القيمة ولا يزكيهم
ولهم عذاب أليم ۝ أولئك الذين اشتروا الضللة
بالهدى والعذاب بالمغفرة فما أصبرهم على
النار ۝ ذلك بأن الله نزل الكتب بالحق وإن
الذين اختلفوا في الكتب لفي شقاق بعيد ۝
ليس البر أن تولوا وجوهكم قبل المشرق و
المغرب ولكن البر من آمن بالله واليوم الآخر و

173. उसने तो तुमपर केवल मुर्दार और ख़ून और सूअर का माँस और जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है। इसपर भी जो बहुत मजबूर और विवश हो जाए, वह अवज्ञा करनेवाला न हो और न सीमा से आगे बढ़नेवाला हो तो उसपर कोई गुनाह नहीं। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

174. जो लोग उस चीज़ को छिपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में से उतारी है और उसके बदले थोड़े मूल्य का सौदा करते हैं, वे तो बस आग खाकर अपने पेट भर रहे हैं; और क़ियामत के दिन अल्लाह न तो उनसे बात करेगा और न उन्हें निखारेगा; और उनके लिए दुखद यातना है।

175. यही लोग हैं जिन्होंने मार्गदर्शन के बदले पथभ्रष्टता मोल ली; और क्षमा के बदले यातना के ग्राहक बने। तो आग को सहन करने के लिए उनका उत्साह कितना बढ़ा हुआ है!

176. वह (यातना) इसलिए होगी कि अल्लाह ने तो हक़ के साथ किताब उतारी, किन्तु जिन लोगों ने किताब के मामले में विभेद किया वे हठ और विरोध में बहुत दूर निकल गए।

177. नेकी केवल यह नहीं है कि तुम अपने मुँह पूरब और पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि नेकी तो उसकी नेकी है जो अल्लाह, अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसके प्रति प्रेम के बावजूद, नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और माँगनेवालों को दिया

الْمَلَٰٓئِكَةِ وَالْكِتَٰبِ وَالنَّبِيِّـۧنَ ۚ وَءَاتَى الْمَالَ عَلَىٰ
حُبِّهِۦ ذَوِى الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَٰمَىٰ وَالْمَسَٰكِينَ وَابْنَ
السَّبِيلِ وَالسَّآئِلِينَ وَفِى الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَوٰةَ
وَءَاتَى الزَّكَوٰةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَٰهَدُوا ۖ
وَالصَّٰبِرِينَ فِى الْبَأْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِينَ الْبَأْسِ ۗ
أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى
الْقَتْلَى ۖ الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنثَىٰ
بِالْأُنثَىٰ ۚ فَمَنْ عُفِىَ لَهُۥ مِنْ أَخِيهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ
بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَآءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَٰنٍ ۗ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ
فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيَوٰةٌ
يَٰٓأُولِى الْأَلْبَٰبِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا

और गर्दनें छुड़ाने में भी, और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अपने वचन को ऐसे लोग पूरा करनेवाले हैं जब वचन दें; और तंगी और विशेष रूप से शारीरिक कष्टों में और लड़ाई के समय में जमनेवाले हैं, ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और वही लोग डर रखनेवाले हैं।

178. ऐ ईमान लानेवालो! मारे जानेवालों के विषय में हत्यादण्ड (क़िसास) तुमपर अनिवार्य किया गया, स्वतंत्र-स्वतंत्र बराबर हैं और ग़ुलाम-ग़ुलाम बराबर हैं और औरत-औरत बराबर हैं। फिर यदि किसी को उसके भाई की ओर से कुछ छूट मिल जाए तो सामान्य रीति का पालन करना चाहिए; और भले तरीक़े से उसे अदा करना चाहिए। यह तुम्हारे रब की ओर से एक छूट और दयालुता है। फिर इसके बाद भी जो ज़्यादती करे तो उसके लिए दुखद यातना है।

179. ऐ बुद्धि और समझवालो! तुम्हारे लिए हत्यादण्ड (क़िसास) में जीवन है, ताकि तुम बचो।

180. जब तुममें से किसी की मृत्यु का समय आ जाए, यदि वह कुछ माल छोड़ रहा हो, तो माँ-बाप और नातेदारों को भलाई की वसीयत करना तुमपर

अनिवार्य किया गया। यह हक़ है डर रखनेवालों पर।

181. तो जो कोई उसके सुनने के पश्चात् उसे बदल डाले तो उसका गुनाह उन्हीं लोगों पर होगा जो इसे बदलेंगे। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है

82. फिर जिस किसी वसीयत करनेवाले को न्याय से किसी प्रकार के हटने या हक़ मारने की आशंका हो, इस कारण उनके (वारिसों के) बीच सुधार की व्यवस्था कर दे, तो उसपर कोई गुनाह नहीं। निस्संदेह अल्लाह क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ الْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى
الْمُتَّقِينَ ۝ فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَمَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا
إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ
بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا
كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝
أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ
عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ
يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا
فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۚ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ

183. ऐ ईमान लानेवालो ! तुमपर रोज़े अनिवार्य किए गए, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर किए गए थे, ताकि तुम डर रखनेवाले बन जाओ।

184. गिनती के कुछ दिनों के लिए—— इसपर भी तुममें कोई बीमार हो, या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में संख्या पूरी कर ले। और जिन (बीमार और मुसाफ़िरों) को इसकी (मुहताजों को खिलाने की) सामर्थ्य हो, उनके ज़िम्मे बदले में एक मुहताज का खाना है। फिर जो अपनी ख़ुशी से कुछ और नेकी करे तो यह उसी के लिए अच्छा है और यह कि तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जानो।

185. रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथ। अत: तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले।

الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ
الْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَنْ
كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۖ
يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۖ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ
قَرِيْبٌ ۖ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ
لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ۖ هُنَّ لِبَاسٌ
لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۖ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ
كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ
فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۖ وَكُلُوْا
وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ

अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती और कठिनाई नहीं चाहता, (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है, उसपर अल्लाह की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

186. और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान रखें, ताकि वे सीधा मार्ग पा लें।

187. तुम्हारे लिए रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना जायज़ (वैध) हुआ। वे तुम्हारे परिधान (लिबास) हैं और तुम उनका परिधान हो। अल्लाह को मालूम हो गया कि तुम लोग अपने-आपसे कपट कर रहे थे, तो उसने तुमपर कृपा की और तुम्हें क्षमा कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो-जुलो और अल्लाह ने जो कुछ तुम्हारे लिए लिख रखा है, उसे तलब करो। और खाओ और पियो यहाँ तककि तुम्हें उषाकाल की सफ़ेद धारी (रात की) काली धारी से स्पष्ट दिखाई दे जाए। फिर रात तक रोज़ा पूरा करो और जब तुम मस्जिदों में 'एतकाफ़' की हालत में हो, तो तुम उनसे न मिलो। ये अल्लाह की सीमाएँ हैं। अत: इनके निकट न जाना। इस प्रकार अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए

الخيط الاسود من الفجر ثم اتموا الصيام الى
اليل ولا تباشروهن وانتم عكفون في
المسجد تلك حدود الله فلا تقربوها كذلك
يبين الله ايته للناس لعلهم يتقون ولا
تاكلوا اموالكم بينكم بالباطل وتدلوا بها الى
الحكام لتاكلوا فريقا من اموال الناس بالاثم
وانتم تعلمون يسئلونك عن الاهلة قل هي
مواقيت للناس والحج وليس البر بان تاتوا
البيوت من ظهورها ولكن البر من اتقى واتوا
البيوت من ابوابها واتقوا الله لعلكم تفلحون
وقاتلوا في سبيل الله الذين يقاتلونكم ولا
تعتدوا ان الله لا يحب المعتدين واقتلوهم
حيث ثقفتموهم واخرجوهم من حيث اخرجوكم

منزل

खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वे डर रखनेवाले बनें।

188. और आपस में तुम एक-दूसरे के माल को अवैध रूप से न खाओ, और न उन्हें हाकिमों के आगे ले जाओ कि (हक़ मारकर) लोगों के कुछ माल जानते-बूझते हड़प सको।

189. वे तुमसे (प्रतिष्ठित) महीनों के विषय में पूछते हैं। कहो : "वे तो लोगों के लिए और हज के लिए नियत हैं। और यह कोई ख़ूबी और नेकी नहीं है कि तुम घरों में उनके पीछे से आओ, बल्कि नेकी तो उसकी है जो (अल्लाह का) डर रखे। तुम घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

190. और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ें, किन्तु ज़्यादती न करो। निस्संदेह अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को पसन्द नहीं करता।

191. और जहाँ कहीं उनपर क़ाबू पाओ, क़त्ल करो और उन्हें निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है, इसलिए कि फ़ितना (उत्पीड़न) क़त्ल से भी बढ़कर गम्भीर है। लेकिन मस्जिदे हराम (काबा) के निकट तुम उनसे न लड़ो जबतक कि वे स्वयं तुमसे वहाँ युद्ध न करें। अतः यदि वे तुमसे युद्ध करें तो उन्हें क़त्ल करो—ऐसे इनकारियों का ऐसा ही बदला है।

والفتنة أشد من القتل ۚ ولا تقاتلوهم عند
المسجد الحرام حتى يقاتلوكم فيه ۖ فإن قاتلوكم
فاقتلوهم ۗ كذلك جزاء الكافرين ۝ فإن انتهوا
فإن الله غفور رحيم ۝ وقاتلوهم حتى لا تكون
فتنة ويكون الدين لله ۖ فإن انتهوا فلا
عدوان إلا على الظالمين ۝ الشهر الحرام بالشهر
الحرام والحرمات قصاص ۚ فمن اعتدى عليكم
فاعتدوا عليه بمثل ما اعتدى عليكم ۚ
واتقوا الله واعلموا أن الله مع المتقين ۝
وأنفقوا في سبيل الله ولا تلقوا بأيديكم إلى
التهلكة ۛ وأحسنوا ۛ إن الله يحب المحسنين ۝
وأتموا الحج والعمرة لله ۚ فإن أحصرتم فما
استيسر من الهدي ۖ ولا تحلقوا رءوسكم حتى

192. फिर यदि वे बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह भी क्षमा करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

193. तुम उनसे लड़ो यहाँ तककि फ़ितना शेष न रह जाए और दीन (धर्म) अल्लाह के लिए हो जाए। अत: यदि वे बाज़ आ जाएँ तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी के विरुद्ध कोई क़दम उठाना ठीक नहीं।

194. प्रतिष्ठित महीना बराबर है प्रतिष्ठित महीने के, और समस्त प्रतिष्ठाओं का भी बराबरी का बदला है। अत: जो तुमपर ज़्यादती करे, तो जैसी ज़्यादती वह तुमपर करे, तुम भी उसी प्रकार उससे ज़्यादती का बदला लो। और अल्लाह का डर रखो और जान लो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

195. और अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करो और अपने ही हाथों से अपने-आपको तबाही में न डालो, और अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ। निस्संदेह अल्लाह अच्छे से अच्छा काम करनेवालों को पसन्द करता है।

196. और हज और उमरा जो कि अल्लाह के लिए हैं, पूरे करो। फिर यदि तुम घिर जाओ, तो जो क़ुरबानी उपलब्ध हो पेश कर दो। और अपने सिर न मूड़ो जब तककि क़ुरबांनी अपने ठिकाने न पहुँच जाए, किन्तु जो व्यक्ति तुममें बीमार हो या उसके सिर में कोई तकलीफ़ हो, तो रोज़े या सदक़ा या क़ुरबानी

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا
اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ
صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۥ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ
اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا
رَجَعْتُمْ ۭ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ
اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ
مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۭ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ
خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۭ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ
التَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ

के रूप में फ़िद्या देना होगा। फिर जब तुमपर से ख़तरा टल जाए, तो जो व्यक्ति हज तक उमरा से लाभान्वित हो, तो जो क़ुरबानी उपलब्ध हो पेश करे, और जिसको उपलब्ध न हो तो हज के दिनों में तीन दिन के रोज़े रखे और सात दिन के रोज़े जब तुम वापस हो, ये पूरे दस हुए। यह उसके लिए है जिसके बाल-बच्चे मस्जिदे हराम के निकट न रहते हों। अल्लाह का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

197. हज के महीने जाने-पहचाने और निश्चित हैं, तो जो इनमें हज करने का निश्चय करे, तो हज में न तो काम-वासना की बातें हो सकती हैं और न अवज्ञा और न लड़ाई-झगड़े की कोई बात। और जो भलाई के काम भी तुम करोगे अल्लाह उसे जानता होगा। और (ईश-भय का) पाथेय ले लो, क्योंकि सबसे उत्तम पाथेय ईश-भय है। और ऐ बुद्धि और समझवालो ! मेरा डर रखो।

198. इसमें तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि अपने रब का अनुग्रह तलब करो। फिर जब तुम अरफ़ात से चलो तो 'मशअरे हराम' (मुज़्दल्फ़ा) के निकट ठहरकर अल्लाह को याद करो, और उसे याद करो जैसाकि उसने तुम्हें बताया है, और इससे पहले तुम पथभ्रष्ट थे।

مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ
وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ
الضَّآلِّيْنَ ۝ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ
النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ
اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ۚ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ
رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى
الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۚ
وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْٓ اَيَّامٍ
مَّعْدُوْدٰتٍ ۚ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۚ

199. इसके पश्चात् जहाँ से और सब लोग चलें, वहीं से तुम भी चलो, और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

200. फिर जब तुम अपनी हज सम्बन्धी रीतियों को पूरा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसे अपने बाप-दादा को याद करते रहे हो, बल्कि उससे भी बढ़कर याद करो। फिर लोगों में कोई तो ऐसा है जो कहता है : "हमारे रब! हमें दुनिया में दे दे।" ऐसी हालत में आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

201. और उनमें कोई ऐसा है जो कहता है : "हमारे रब! हमें प्रदान कर दुनिया में भी अच्छी दशा और आख़िरत में भी अच्छी दशा, और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।"

202. ऐसे ही लोग हैं कि उन्होंने जो कुछ कमाया है उसकी जिन्स का हिस्सा उनके लिए नियत है। और अल्लाह जल्द ही हिसाब चुकानेवाला है।

203. और अल्लाह की याद में गिनती के ये कुछ दिन व्यतीत करो। फिर जो कोई जल्दी करके दो ही दिन में कूच करे तो इसमें उसपर कोई गुनाह नहीं। और जो ठहरा रहे तो इसमें भी उसपर कोई गुनाह नहीं। यह उसके लिए है जो अल्लाह का डर रखे। और अल्लाह का डर रखो और जान रखो कि उसी के पास तुम इकट्ठा होगे।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ
الْخِصَامِ ۔ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ
فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ
الْفَسَادَ ۔ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ
بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۔ وَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ
وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۔ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا
فِي السِّلْمِ كَاۗفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ
اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۔ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا
جَاۗءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ

204. लोगों में कोई तो ऐसा है कि इस सांसारिक जीवन के विषय में उसकी बात तुम्हें बहुत भाती है, उस (खोट) के बावजूद जो उसके दिल में होती है, वह अल्लाह को गवाह ठहराता है और झगड़े में वह बड़ा हठी है।

205. और जब लौटता है, तो धरती में इसलिए दौड़-धूप करता है कि इसमें बिगाड़ पैदा करे और खेती और नस्ल को तबाह करे, जबकि अल्लाह बिगाड़ को पसन्द नहीं करता।

206. और जब उससे कहा जाता है : "अल्लाह से डर", तो अहंकार उसे और गुनाह पर जमा देता है। अतः उसके लिए तो जहन्नम ही काफ़ी है, और वह बहुत-ही बुरी शय्या है!

207. और लोगों में वह भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता के संसाधन की चाह में अपनी जान खपा देता है। अल्लाह भी अपने ऐसे बन्दों के प्रति अत्यन्त करुणाशील है।

208. ऐ ईमान लानेवालो! तुम सब इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। वह तो तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।

209. फिर यदि तुम उन स्पष्ट दलीलों के पश्चात् भी, जो तुम्हारे पास आ चुकी हैं, फिसल गए, तो भली-भाँति जान रखो कि अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

210. क्या वे (इसराईल की सन्तान) बस इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह स्वयं बादलों की छायों में उनके सामने आ जाए और फ़रिश्ते भी,

الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ
بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝
زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ
مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝
كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۣ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ
مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۠ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۭ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ

हालाँकि बात तय कर दी गई है? मामले तो अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।

211. इसराईल की सन्तान से पूछो, हमने उन्हें कितनी खुली-खुली निशानियाँ प्रदान कीं। और जो अल्लाह की नेमत को इसके बाद कि वह उसे पहुँच चुकी हो बदल डाले, तो निस्संदेह अल्लाह भी कठोर दण्ड देनेवाला है।

212. इनकार करनेवाले सांसारिक जीवन पर रीझे हुए हैं और ईमानवालों का उपहास करते हैं, जबकि जो लोग अल्लाह का डर रखते हैं, वे क़ियामत के दिन उनसे ऊपर होंगे। अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।

213. सारे मनुष्य एक ही समुदाय थे (उन्होंने विभेद किया), तो अल्लाह ने नबियों को भेजा, जो शुभ-सूचना देनेवाले और डरानेवाले थे; और उनके साथ हक़ पर आधारित किताब उतारी, ताकि लोगों में उन बातों का जिनमें वे विभेद कर रहे हैं, फ़ैसला कर दे। इसमें विभेद तो बस उन्हीं लोगों ने, जिन्हें वह मिली थी, परस्पर ज़्यादती करने के लिए इसके पश्चात् किया, जबकि खुली निशानियाँ उनके पास आ चुकी थीं। अतः ईमानवालों को अल्लाह ने अपनी अनुज्ञा से उस सत्य के विषय में मार्गदर्शन किया, जिसमें उन्होंने विभेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता है, सीधे मार्ग पर चलाता है।

214. क्या तुमने यह समझ रखा है कि जन्नत में प्रवेश पा जाओगे, जबकि अभी तुमपर वह सब कुछ नहीं बीता है जो तुमसे पहले के लोगों पर बीत चुका? उनपर तंगियाँ और तकलीफ़ें आईं, और उन्हें हिला मारा गया यहाँ तक कि रसूल बोल उठे और उसके साथ के ईमानवाले भी कि अल्लाह की सहायता कब आएगी? जान लो! अल्लाह की सहायता निकट है।

215. वे तुमसे पूछते हैं : "कितना ख़र्च करें?" कहो : "(पहले यह समझ लो कि) जो माल भी तुमने ख़र्च किया है, वह तो माँ-बाप, नातेदारों और अनाथों, और मुहताजों और मुसाफ़िरों के लिए ख़र्च हुआ है। और जो भलाई भी तुम करो, निस्संदेह अल्लाह उसे भली-भाँति जान लेगा।

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ
الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۔ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَ
الضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ۔ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ۔ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۔ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ
مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ۔ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
بِهٖ عَلِيْمٌ ۔ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۔
وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۔ وَ
عَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۔ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۔ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ
الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۔ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۔ وَصَدٌّ

216. तुमपर युद्ध अनिवार्य किया गया और वह तुम्हें अप्रिय है, और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और जानता अल्लाह है, और तुम नहीं जानते।"

217. वे तुमसे आदरणीय महीने में युद्ध के विषय में पूछते हैं। कहो : "उसमें लड़ना बड़ी गंभीर बात है, परन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना, उसके साथ अविश्वास करना, मस्जिदे हराम (काबा) से रोकना और उसके लोगों को उससे निकालना, अल्लाह की दृष्टि में इससे भी अधिक गंभीर है और फ़ितना (उत्पीड़न), रक्तपात से भी बुरा है।" और उनका बस चले तो वे तो तुमसे बराबर लड़ते रहें, ताकि तुम्हें तुम्हारे दीन (धर्म) से फेर दें। और तुममें से जो

عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَإِخْرَاجُ أَهْلِهٖ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ
أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتّٰى
يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ۚ وَمَنْ
يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ
فَأُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ
وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجٰهَدُوا
فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ۙ أُولٰٓئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ
غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ
فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۖ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ
مِنْ نَفْعِهِمَا ۗ وَيَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۬ قُلِ
الْعَفْوَ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْآيٰتِ لَعَلَّكُمْ

कोई अपने दीन से फिर जाए और अविश्वासी होकर मरे, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके कर्म दुनिया और आख़िरत में नष्ट हो गए, और वही आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं, वे उसी में सदैव रहेंगे।

218. रहे वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह के मार्ग में घर-बार छोड़ा और जिहाद किया, वही अल्लाह की दयालुता की आशा रखते हैं। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

219-220. तुमसे शराब और जुए के विषय में पूछते हैं। कहो : "उन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है, यद्यपि लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, परन्तु उनका गुनाह उनके फ़ायदे से कहीं बढ़कर है।" और वे तुमसे पूछते हैं : "कितना ख़र्च करें?" कहो : "जो आवश्यकता से अधिक हो।" इस प्रकार अल्लाह दुनिया और आख़िरत के विषय में तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो।

. और वे तुमसे अनाथों के विषय में पूछते हैं। कहो : "उनके सुधार की जो रीति भी अपनाई जाए अच्छी है। और यदि तुम उन्हें अपने साथ सम्मिलित कर लो तो वे तुम्हारे भाई-बन्धु ही हैं। और अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवाले को बनाव पैदा करनेवाले से अलग पहचानता है। और यदि अल्लाह चाहता

तो तुमको ज़हमत (कठिनाई) में डाल देता। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

221. और मुशरिक (बहुदेववादी) स्त्रियों से विवाह न करो जब तक कि वे ईमान न लाएँ। एक ईमानवाली बांदी (दासी), मुशरिक स्त्री से कहीं उत्तम है; चाहे वह तुम्हें कितनी ही अच्छी क्यों न लगे। और न (ईमानवाली स्त्रियों का) मुशरिक पुरुषों से विवाह करो, जबतक कि वे ईमान न लाएँ। एक ईमानवाला ग़ुलाम आज़ाद मुशरिक से कहीं उत्तम है, चाहे वह तुम्हें कितना ही अच्छा क्यों न लगे। ऐसे लोग आग (जहन्नम) की ओर बुलाते हैं और अल्लाह अपनी अनुज्ञा से जन्नत और क्षमा की ओर बुलाता है। और वह अपनी आयतें लोगों के सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वे चेतें।

تَتَفَكَّرُونَ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِنْ
تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ
الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ
وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ
خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا تُنكِحُوا
الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن
مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ
وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۖ
وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا
النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ
يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ

222. और वे तुमसे मासिक-धर्म के विषय में पूछते हैं। कहो : "वह एक तकलीफ़ और गन्दगी की चीज़ है। अतः मासिक-धर्म के दिनों में स्त्रियों से अलग रहो और उनके पास न जाओ, जबतक कि वे पाक-साफ़ न हो जाएँ। फिर जब वे भली-भाँति पाक-साफ़ हो जाएँ, तो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है, उनके पास आओ। निस्संदेह अल्लाह बहुत तौबा करनेवालों को पसन्द करता है और वह उन्हें पसन्द करता है जो स्वच्छता को पसन्द करते हैं।

223. तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारी खेती हैं। अत: जिस प्रकार चाहो तुम अपनी खेती में आओ और अपने लिए आगे भेजो; और अल्लाह से डरते रहो; और भली-भाँति जान लो कि तुम्हें उससे मिलना है; और ईमान लानेवालों को शुभ-सूचना दे दो।

224. अपने नेक और धर्मपरायण होने और लोगों के मध्य सुधारक होने के सिलसिले में अपनी क़समों के द्वारा अल्लाह को आड़ और निशाना न बनाओ कि इन कामों को छोड़ दो। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

اللهِ ۚ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝
نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۖ
وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُم
مُّلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا اللهَ عُرْضَةً
لِّأَيْمَانِكُمْ أَن تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ
النَّاسِ ۗ وَاللهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَّا يُؤَاخِذُكُمُ اللهُ
بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ
قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ
مِن نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ۖ فَإِن فَاءُو
فَإِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ
فَإِنَّ اللهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ
بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن
يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِن كُنَّ

225. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी ऐसी क़समों पर नहीं पकड़ेगा जो यूँ ही मुँह से निकल गई हों, लेकिन उन क़समों पर वह तुम्हें अवश्य पकड़ेगा जो तुम्हारे दिल के इरादे का नतीजा हों। अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला, सहनशील है।

226. जो लोग अपनी स्त्रियों से अलग रहने की क़सम खा बैठें, उनके लिए चार महीने की प्रतीक्षा है। फिर यदि वे पलट आएँ, तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

227. और यदि वे तलाक़ ही की ठान लें, तो अल्लाह भी सुननेवाला, भली-भाँति जाननेवाला है।

228. और तलाक़ पाई हुई स्त्रियाँ तीन हैज़ (मासिक-धर्म) गुज़रने तक अपने-आप को रोके रखें, और यदि वे अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए यह वैध न होगा कि अल्लाह ने उनके गर्भाशयों में जो कुछ पैदा किया हो उसे छिपाएँ। इस बीच उनके पति, यदि सम्बन्धों को

يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ
بِرَدِّهِنَّ فِیْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْۤا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ
مِثْلُ الَّذِیْ عَلَیْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَیْهِنَّ
دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ۠ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪
فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا یَحِلُّ
لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّاۤ اٰتَیْتُمُوْهُنَّ شَیْـًٔا اِلَّاۤ اَنْ
یَّخَافَاۤ اَلَّا یُقِیْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا
یُقِیْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِمَا فِیْمَا
افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ
وَمَنْ یَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰی تَنْكِحَ
زَوْجًا غَیْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِمَاۤ
اَنْ یَّتَرَاجَعَاۤ اِنْ ظَنَّاۤ اَنْ یُّقِیْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

ठीक कर लेने का इरादा रखते हों, तो वे उन्हें लौटा लेने के ज़्यादा हक़दार हैं। और उन पत्नियों के भी सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार हैं, जैसी उन पर ज़िम्मेदारियाँ डाली गई हैं। और पतियों को उनपर एक दर्जा प्राप्त है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

229. तलाक़ दो बार है। फिर सामान्य नियम के अनुसार (स्त्री को) रोक लिया जाए या भले तरीक़े से विदा कर दिया जाए। और तुम्हारे लिए वैध नहीं है कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो, उसमें से कुछ ले लो, सिवाय इस स्थिति के कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की (निर्धारित) सीमाओं पर क़ायम न रह सकेंगे तो यदि तुमको यह डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं पर क़ायम न रहेंगे तो स्त्री जो कुछ देकर छुटकारा प्राप्त करना चाहे उसमें उन दोनों के लिए कोई गुनाह नहीं। ये अल्लाह की सीमाएँ हैं। अतः इनका उल्लंघन न करो। और जो कोई अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।

230. (दो तलाक़ों के पश्चात) फिर यदि वह उसे तलाक़ दे दे, तो इसके पश्चात वह उसके लिए वैध न होगी, जबतक कि वह उसके अतिरिक्त किसी दूसरे पति से निकाह न कर ले। अतः यदि वह उसे तलाक़ दे दे तो फिर उन दोनों के लिए एक दूसरे को पलट आने में कोई गुनाह न होगा, यदि वे समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं पर क़ायम रह सकते हैं। और ये अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ हैं, जिन्हें वह उन लोगों के लिए बयान कर रहा है जो जानना चाहते हों।

حُدُودُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ
النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا
لِتَعْتَدُوا ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ
وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتٰبِ
وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ
فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ
أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذٰلِكَ
يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ ۗ ذٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ

231. और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दे दो और वे अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो सामान्य नियम के अनुसार उन्हें रोक लो या सामान्य नियम के अनुसार उन्हें विदा कर दो। और तुम उन्हें नुक़सान पहुँचाने के ध्येय से न रोको कि ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा, तो उसने स्वयं अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया। और अल्लाह की आयतों को परिहास का विषय न बनाओ, और अल्लाह की कृपा जो तुमपर हुई है उसे याद रखो और उस किताब और तत्त्वदर्शिता (हिकमत) को याद रखो जो उसने तुमपर उतारी है, जिसके द्वारा वह तुम्हें नसीहत करता है। और अल्लाह का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जाननेवाला है।

232. और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दे दो और वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो उन्हें अपने होनेवाले दूसरे पतियों से विवाह करने से न रोको, जबकि वे सामान्य नियम के अनुसार परस्पर रज़ामन्दी से मामला तय करें। यह नसीहत तुममें से उसको की जा रही है जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखता है। यही तुम्हारे लिए ज़्यादा बरकतवाला और सुथरा तरीक़ा है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

233. और जो कोई पूरी अवधि तक (बच्चे को) दूध पिलवाना चाहे, तो माएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष तक दूध पिलाएँ। और वह जिसका बच्चा है, सामान्य नियम के अनुसार उनके खाने और उनके कपड़े का ज़िम्मेदार है। किसी पर बस उसकी अपनी समाई भर ही ज़िम्मेदारी है, न तो कोई माँ अपने

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ
وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ ۢ
بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ
مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا
وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ
تَسْتَرْضِعُوْۤا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ
مَّاۤ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ
اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ
مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ
اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ وَلَا

बच्चे के कारण (बच्चे के बाप को) नुक़सान पहुँचाए और न बाप अपने बच्चे के कारण (बच्चे की माँ को) नुक़सान पहुँचाए। और इसी प्रकार की ज़िम्मेदारी उसके वारिस पर भी आती है। फिर यदि दोनों पारस्परिक स्वेच्छा और परामर्श से दूध छुड़ाना चाहें तो उनपर कोई गुनाह नहीं। और यदि तुम अपनी संतान को किसी अन्य स्त्री से दूध पिलवाना चाहो तो इसमें भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, जबकि तुमने जो कुछ बदले में देने का वादा किया हो, सामान्य नियम के अनुसार उसे चुका दो। और अल्लाह का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

234. और तुममें से जो लोग मर जाएँ और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो वे पत्नियाँ अपने-आपको चार महीने और दस दिन तक रोके रखें। फिर जब वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो सामान्य नियम के अनुसार वे अपने लिए जो कुछ करें, उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं। जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

235. और इसमें भी तुमपर कोई गुनाह नहीं जो तुम उन औरतों को विवाह के सन्देश सांकेतिक रूप से दो या अपने मन में छिपाए रखो। अल्लाह जानता

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ
أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ
وَلَٰكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا
مَعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ
يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي
أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ
أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى
الْمُوسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ
حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ
قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً
فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَ
الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ وَأَنْ تَعْفُوا

है कि तुम उन्हें याद करोगे, परन्तु छिपकर उन्हें वचन न देना, सिवाय इसके कि सामान्य नियम के अनुसार कोई बात कह दो। और जब तक निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी न हो जाए, विवाह का नाता जोड़ने का निश्चय न करो। जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे मन की बात भी जानता है। अतः उससे सावधान रहो और यह भी जान लो कि अल्लाह अत्यन्त क्षमा करनेवाला, सहनशील है।

236. यदि तुम स्त्रियों को इस स्थिति में तलाक़ दे दो कि यह नौबत पेश न आई हो कि तुमने उन्हें हाथ लगाया हो और उनका कुछ हक़ (मह्र) निश्चित किया हो, तो तुमपर कोई भार नहीं। हाँ, सामान्य नियम के अनुसार उन्हें कुछ ख़र्च दो—समाई रखनेवाले पर उसकी अपनी हैसियत के अनुसार और तंगदस्त पर उसकी अपनी हैसियत के अनुसार अनिवार्य है—यह अच्छे लोगों पर एक हक़ है।

237. और यदि तुम उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो, किन्तु उनका मह्र निश्चित कर चुके हो, तो जो मह्र तुमने निश्चित किया है उसका आधा अदा करना होगा, यह और बात है कि वे स्वयं छोड़ दें या पुरुष जिसके हाथ में विवाह का सूत्र है, वह नर्मी से काम ले (और मह्र पूरा अदा कर दे)। और यह कि तुम नर्मी से काम लो तो यह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है और तुम एक-दूसरे को हक़ से बढ़कर देना न भूलो। निश्चय ही अल्लाह उसे देख

أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ
إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ حَافِظُوا عَلَى
الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ۝
فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنتُمْ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا
وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِم مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ
إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۝ وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا
مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ

रहा है, जो कुछ तुम करते हो।

238. सदैव नमाज़ों की और अच्छी नमाज़ की पाबन्दी करो, और अल्लाह के आगे पूरे विनीत और शांतभाव से खड़े हुआ करो।

239. फिर यदि तुम्हें (शत्रु आदि का) भय हो, तो पैदल या सवार जिस तरह सम्भव हो नमाज़ पढ़ लो। फिर जब निश्चिन्त हो तो अल्लाह को उस प्रकार याद करो जैसाकि उसने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे।

240. और तुममें से जिन लोगों की मृत्यु हो जाए और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, अर्थात अपनी पत्नियों के हक़ में यह वसीयत छोड़ जाएँ कि घर से निकाले बिना एक वर्ष तक उन्हें ख़र्च दिया जाए, तो यदि वे निकल जाएँ तो अपने लिए सामान्य नियम के अनुसार वे जो कुछ भी करें उसमें तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

241. और तलाक़ पाई हुई स्त्रियों को सामान्य नियम के अनुसार (इद्दत की अवधि में) ख़र्च भी मिलना चाहिए। यह डर रखनेवालों पर एक हक़ है।

242. इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है, ताकि तुम समझ से काम लो।

243. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो हज़ारों की संख्या में होने पर भी मृत्यु के भय से अपने घरबार छोड़कर निकले थे? तो अल्लाह ने उनसे कहा : "मृत्यु प्राय हो जाओ तुम।" फिर उसने उन्हें जीवन प्रदान किया।

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ اِنَّ اللّٰهَ
لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً
وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ اَلَمْ
تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى
اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ
عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا
نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا
وَاَبْنَآئِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا
اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

अल्लाह तो लोगों के लिए उदार अनुग्राही है, किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते।

244. और अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है।

245. कौन है जो अल्लाह को अच्छा ऋण दे कि अल्लाह उसे उसके लिए कई गुना बढ़ा दे? और अल्लाह ही तंगी भी देता है और कुशादगी भी प्रदान करता है, और उसी की ओर तुम्हें लौटना है।

246. क्या तुमने मूसा के पश्चात् इसराईल की संतान के सरदारों को नहीं देखा, जब उन्होंने अपने एक नबी से कहा : "हमारे लिए एक सम्राट नियुक्त कर दो ताकि हम अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें?" उसने कहा : "यदि तुम्हें लड़ाई का आदेश दिया जाए तो क्या तुम्हारे बारे में यह संभावना नहीं है कि तुम न लड़ो?" वे कहने लगे : "हम अल्लाह के मार्ग में क्यों न लड़ें, जबकि हम अपने घरों से निकाल दिए गए हैं और अपने बाल-बच्चों से भी अलग कर दिए गए हैं?"—— फिर जब उनपर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया तो उनमें से थोड़े लोगों के सिवा सब फिर गए। और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।——

247. उनके नबी ने उनसे कहा : "अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को सम्राट नियुक्त किया है।" बोले : "उसकी बादशाही हमपर कैसे हो सकती है, जबकि हम उसके मुक़ाबले में बादशाही के ज़्यादा हक़दार हैं और जबकि उसे माल की कुशादगी भी प्राप्त नहीं है?" उसने कहा : "अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसको ही चुना है और उसे ज्ञान में और शारीरिक क्षमता में ज़्यादा कुशादगी प्रदान की है। अल्लाह जिसको चाहे अपना राज्य प्रदान करे। और अल्लाह बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।"

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ
مَلِكًا ۚ قَالُوٓا أَنّٰى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ
أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ
قَالَ إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً
فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللّٰهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَنْ
يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ
إِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَّأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ
سَكِينَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوسٰى
وَاٰلُ هٰرُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝ فَلَمَّا فَصَلَ
طَالُوتُ بِالْجُنُودِ ۙ قَالَ إِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيكُمْ
بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي ۚ وَمَنْ
لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّيٓ إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً

248. उनके नबी ने उनसे कहा : "उसकी बादशाही की निशानी यह है कि वह संदूक़ तुम्हारे पास आ जाएगा, जिसमें तुम्हारे रब की ओर से सकीनत (प्रशान्ति) और मूसा के लोगों और हारून के लोगों की छोड़ी हुई यादगारें हैं, जिसको फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे।[1] यदि तुम ईमानवाले हो तो, निस्संदेह इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है।"

249. फिर जब तालूत सेनाएँ लेकर चला तो उसने कहा : "अल्लाह निश्चित रूप से एक नदी द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेनेवाला है। तो जिसने उसका पानी पी लिया, वह मुझमें से नहीं है और जिसने उसको नहीं चखा, वही मुझमें से है। यह और बात है कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले ले।" फिर उनमें से थोड़े लोगों के सिवा सभी ने उसका पानी पी लिया,

---

1. अर्थात वह संदूक़ तुम्हारे पास असाधारण रीति से पहुंच जाएगा और इसके पहुँचने की व्यवस्था ईश्वर की ओर से होगी।

بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ
هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ
بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ۚ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ
مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً
كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝
وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۟
وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَ
الْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ۚ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ
النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَ
لٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ
اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

منزل ١

फिर जब तालूत और ईमानवाले जो उसके साथ थे नदी पार कर गए तो कहने लगे : "आज हममें जालूत और उसकी सेनाओं का मुक़ाबला करने की शक्ति नहीं है।" इसपर उन लोगों ने, जो समझते थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है, कहा : "कितनी ही बार एक छोटी-सी टुकड़ी ने अल्लाह की अनुज्ञा से एक बड़े गिरोह पर विजय पाई है। अल्लाह तो जमनेवालो के साथ है।"

250. और जब वे जालूत और उसकी सेनाओं के मुक़ाबले पर आए तो कहा : "ऐ हमारे रब! हमपर धैर्य उण्डेल दे और हमारे क़दम जमा दे और इनकार करनेवाले लोगों पर हमें विजय प्रदान कर।"

251. अन्ततः अल्लाह की अनुज्ञा से उन्होंने उनको पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया, और अल्लाह ने उसे राज्य और तत्त्वदर्शिता (हिकमत) प्रदान की, जो कुछ वह (दाऊद) चाहे, उससे उसको अवगत कराया। और यदि अल्लाह मनुष्यों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के द्वारा हटाता न रहता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, किन्तु अल्लाह संसारवालों के लिए उदार अनुग्राही है।

252. ये अल्लाह की सच्ची आयतें हैं जो हम तुम्हें (सोद्देश्य) सुना रहे हैं और निश्चय ही तुम उन लोगों में से हो, जो रसूल बनाकर भेजे गए हैं।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۘ
مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۚ
وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ
الْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ
بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ ۚ وَلَوْ
شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۗ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۗ
وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۗ
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ مَنْ ذَا
الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۗ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ

253. ये रसूल ऐसे हुए हैं कि इनमें हमने कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की। इनमें कुछ से तो अल्लाह ने बातचीत की और इनमें से कुछ को दर्जों की दृष्टि से उच्चता प्रदान की। और मरयम के बेटे ईसा को हमने खुली निशानियाँ दी और पवित्र आत्मा से उसकी सहायता की। और यदि अल्लाह चाहता तो वे लोग, जो उनके पश्चात हुए, खुली निशानियाँ पा लेने के बाद परस्पर न लड़ते। किन्तु वे विभेद में पड़ गए तो उनमे से कोई तो ईमान लाया और उनमें से किसी ने इनकार की नीति अपनाई। और यदि अल्लाह चाहता तो वे परस्पर न लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है, करता है।

254. ऐ ईमान लानेवालो! हमने जो कुछ तुम्हें प्रदान किया है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न कोई मित्रता होगी और न कोई सिफ़ारिश। ज़ालिम वही हैं, जिन्होंने इनकार की नीति अपनाई है।

255. अल्लाह कि जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, वह जीवन्त-सत्ता है, सबको सँभालने और क़ायम रखनेवाला है। उसे न ऊँघ लगती है और न निद्रा। उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कौन है जो उसके यहाँ उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके? वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके ज्ञान में से

أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ
عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضَ ۚ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيمُ ۝ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۖ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ
مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ
فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا
يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ
إِلَى الظُّلُمٰتِ ۗ أُولٰئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا
خٰلِدُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرٰهِمَ فِي
رَبِّهِ أَنْ آتٰهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرٰهِمُ رَبِّيَ
الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۙ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ ۖ

किसी चीज़ पर हावी नहीं हो सकते, सिवाय उसके जो उसने चाहा। उसकी कुर्सी (प्रभुता) आकाशों और धरती को व्याप्त है और उनकी सुरक्षा उसके लिए तनिक भी भारी नहीं और वह उच्च, महान है।

256. धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई बढ़े हुए सरकश को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। अल्लाह सब कुछ सुनने, जाननेवाला है।

257. जो लोग ईमान लाते हैं, अल्लाह उनका रक्षक और सहायक है। वह उन्हें अँधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है। रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया तो उनके संरक्षक बढ़े हुए सरकश हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अँधेरों की ओर ले जाते हैं। वही आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं। वे उसी में सदैव रहेंगे।

258. क्या तुमने उसको नहीं देखा, जिसने इबराहीम से उसके 'रब' के सिलसिले में झगड़ा किया था, इस कारण कि अल्लाह ने उसको राज्य दे रखा था? जब इबराहीम ने कहा : "मेरा 'रब' वह है जो जिलाता और मारता है।" उसने कहा : "मैं भी तो जिलाता और मारता हूँ।" इबराहीम ने कहा : "अच्छा तो अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है, तो तू उसे पश्चिम से ले आ।" इसपर

قَالَ إِبْرٰهِيمُ فَإِنَّ اللّٰهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ
فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ۗ وَ
اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ۚ أَوْ كَالَّذِي مَرَّ
عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوشِهَا ۚ قَالَ أَنّٰى
يُحْيِي هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَأَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ
عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا
أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ
فَانْظُرْ إِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانْظُرْ
إِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى
الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ
فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۙ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۞ وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي
الْمَوْتٰى ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۖ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ

वह अधर्मी चकित रह गया। अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

259. या उस जैसे (व्यक्ति) को नहीं देखा, जिसका एक ऐसी बस्ती पर से गुज़र हुआ, जो अपनी छतों के बल गिरी हुई थी। उसने कहा : "अल्लाह इसके विनष्ट हो जाने के पश्चात इसे किस प्रकार जीवन प्रदान करेगा?" तो अल्लाह ने उसे सौ वर्ष की मृत्यु दे दी, फिर उसे उठा खड़ा किया। कहा : "तू कितनी अवधि तक इस अवस्था में रहा।" उसने कहा : "मैं एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा रहा।" कहा : "नहीं, बल्कि तू सौ वर्ष रहा है। अब अपने खाने और पीने की चीज़ों को देख ले, उनपर समय का कोई प्रभाव नहीं, और अपने गधे को भी देख, और यह इसलिए कह रहे हैं ताकि हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बना दें और हड्डियों को देख कि किस प्रकार हम उन्हें उभारते हैं, फिर, उनपर माँस चढ़ाते हैं।" तो जब वास्तविकता उसपर प्रकट हो गई तो वह पुकार उठा : "मैं जानता हूँ कि अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।"

260. और याद करो जब इबराहीम ने कहा : "ऐ मेरे रब ! मुझे दिखा दे, तू मुर्दों को कैसे जीवित करेगा?" कहा : "क्या तुझे विश्वास नहीं ?" उसने कहा : "क्यों नहीं, किन्तु यह निवेदन इसलिए है कि मेरा दिल संतुष्ट हो जाए।" कहा : "अच्छा, तो चार पक्षी ले, फिर उन्हें अपने साथ भली-भाँति हिला-मिला ले, फिर उनमें से प्रत्येक को एक-एक पर्वत पर रख दे, फिर उनको पुकार, वे तेरे पास

لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ
فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ
مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ
أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ مَّثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ
سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ
لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنفَقُوا
مَنًّا وَلَا أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ
وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ۗ وَاللَّهُ
غَنِيٌّ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا
صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنفِقُ

लपककर आएँगे। और जान ले कि अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।"

261. जो लोग अपने माल अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, उनकी उपमा ऐसी है, जैसे एक दाना हो, जिससे सात बालें निकलें और प्रत्येक बाल में सौ दाने हों। अल्लाह जिसे चाहता है बढ़ोतरी प्रदान करता है। अल्लाह बड़ी समाईवाला, जाननेवाला है।

262. जो लोग अपने माल अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, फिर ख़र्च करके उसका न एहसान जताते हैं और न दिल दुखाते हैं, उनका बदला उनके अपने रब के पास है। और न तो उनके लिए कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे।

263. एक भली बात कहनी और क्षमा से काम लेना उस सदक़े से अच्छा है, जिसके पीछे दुख हो। और अल्लाह अत्यन्त निस्पृह (बेनियाज़), सहनशील है।

264. ऐ ईमानवालो! अपने सदक़ों को एहसान जताकर और दुख देकर उस व्यक्ति की तरह नष्ट न करो जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च करता है और अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखता। तो उसकी हालत उस चट्टान जैसी है जिसपर कुछ मिट्टी पड़ी हुई थी, फिर उस पर ज़ोर की वर्षा हुई और उसे साफ़ चट्टान की दशा में छोड़ गई। ऐसे लोग

مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهُ
وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ
مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ
اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ
اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ
يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهُ فِيْهَا
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ
ضُعَفَآءُ ۚ فَاَصَابَهَاۤ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝

अपनी कमाई कुछ भी प्राप्त नहीं करते। और अल्लाह इनकार की नीति अपनानेवालों को मार्ग नहीं दिखाता।

265. और जो लोग अपने माल अल्लाह की प्रसन्नता के संसाधनों की तलब में और अपने दिलों को जमाव प्रदान करने के कारण ख़र्च करते हैं उनकी हालत उस बाग़ की तरह है जो किसी अच्छी और उर्वर भूमि पर हो। उसपर घोर वर्षा हुई, तो उसमें दुगुने फल आए। फिर यदि घोर वर्षा उस पर नहीं हुई, तो फुहार ही पर्याप्त होगी। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।

266. क्या तुममें से कोई यह चाहेगा कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, जिसके नीचे नहरें बह रही हों, वहाँ उसे हर प्रकार के फल प्राप्त हों, और उसका बुढ़ापा आ गया हो और उसके बच्चे अभी कमज़ोर ही हों कि उस बाग़ पर एक आग भरा बगूला आ गया, और वह जलकर रह गया? इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे सामने आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि सोच-विचार करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا
الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ
تُغْمِضُوْا فِيْهِ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيْدٌ
اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاۗءِ ۚ
وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۭ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۚ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ
يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ۭ وَمَا
يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ
مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
يَعْلَمُهٗ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ اِنْ تُبْدُوا
الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا
الْفُقَرَاۗءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ

267. ऐ ईमान लानेवालो! अपनी कमाई की पाक और अच्छी चीज़ों में से ख़र्च करो और उन चीज़ों में से भी जो हमने धरती से तुम्हारे लिए निकाली हैं। और देने के लिए उसके ख़राब हिस्से (के देने) का इरादा न करो, जबकि तुम स्वयं उसे कभी न लोगे। यह और बात है कि उसको लेने में देखी-अनदेखी कर जाओ। और जान लो कि अल्लाह निस्पृह, प्रशंसनीय है।

268. शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर उभारता है, जबकि अल्लाह अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है। अल्लाह बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।

269. वह जिसे चाहता है तत्त्वदर्शिता प्रदान करता है और जिसे तत्त्वदर्शिता प्राप्त हुई उसे बड़ी दौलत मिल गई। किन्तु चेतते वही हैं जो बुद्धि और समझवाले हैं।

270. और तुमने जो कुछ भी ख़र्च किया और जो कुछ भी नज़्र (मन्नत) की हो, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

271. यदि तुम खुले रूप में सदक़े दो तो यह भी अच्छा है और यदि उनको छिपाकर मुहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। और यह तुम्हारे कितने ही गुनाहों को मिटा देगा। और अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।

سَيِّاٰتِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ لَيْسَ
عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ
وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْنَ
اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ
يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝ لِلْفُقَرَآءِ
الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ
التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ
وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝
اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّ
عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ
الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ

272. उन्हें मार्ग पर ला देने का दायित्व तुमपर नहीं है, बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है। और जो कुछ भी माल तुम ख़र्च करोगे, वह तुम्हारे अपने ही भले के लिए होगा और तुम अल्लाह के (बताए हुए) उद्देश्य के अतिरिक्त किसी और उद्देश्य से ख़र्च न करो। और जो माल भी तुम ख़र्च करोगे, वह पूरा-पूरा तुम्हें चुका दिया जाएगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा।

273. यह उन मुहताजों के लिए है जो अल्लाह के मार्ग में घिर गए हैं कि धरती में (जीविकोपार्जन के लिए) कोई दौड़-धूप नहीं कर सकते। उनके स्वाभिमान के कारण अपरिचित व्यक्ति उन्हें धनवान समझता है। तुम उन्हें उनके लक्षणों से पहचान सकते हो। वे लिपटकर लोगों से नहीं माँगते। जो माल भी तुम ख़र्च करोगे, वह अल्लाह को ज्ञात होगा।

274. जो लोग अपने माल रात-दिन छिपे और खुले ख़र्च करें, उनका बदला तो उनके रब के पास है, और न उन्हें कोई भय है और न वे शोकाकुल होंगे।

275. जो लोग ब्याज खाते हैं, वे बस इस प्रकार उठते हैं जिस प्रकार वह व्यक्ति उठता है, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो और यह इसलिए कि उनका कहना है : "व्यापार भी तो ब्याज के सदृश है", जबकि अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज को अवैध ठहराया है। अतः जिसको उसके रब

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا
الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ۚ
فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا
سَلَفَ ۚ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا
وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۚ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ
اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ
لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ ذُوْ

की ओर से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया, तो जो कुछ पहले ले चुका वह उसी का रहा और मामला उसका अल्लाह के हवाले है। और जिसने फिर यही कर्म किया तो ऐसे ही लोग आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं। उसमें वे सदैव रहेंगे।

276. अल्लाह ब्याज को घटाता और मिटाता है और सदक़ों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी अकृतज्ञ, हक़ मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।

277. निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी, उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है, और उन्हें न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

278. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो और जो कुछ ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमानवाले हो।

279. फिर यदि तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध के लिए ख़बरदार हो जाओ। और यदि तौबा कर लो तो अपना मूलधन लेने का तुम्हें अधिकार है। न तुम अन्याय करो और न तुम्हारे साथ अन्याय किया जाए।

280. और यदि कोई तंगी में हो तो हाथ खुलने तक मुहलत देनी होगी; और सदक़ा कर दो, (अर्थात् मूलधन भी न लो) तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जान सको।

عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ
لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ
فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا
تَدَايَنتُم بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۚ
وَلْيَكْتُب بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ
كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ
الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ
مِنْهُ شَيْئًا ۚ فَإِن كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا
أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ
وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِن
رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ
مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَن تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا

281. और उस दिन का डर रखो जबकि तुम अल्लाह की ओर लौटोगे, फिर प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने कमाया पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कदापि कोई अन्याय न होगा।

282. ऐ ईमान लानेवालो! जब किसी निश्चित अवधि के लिए आपस में ऋण का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि कोई लिखनेवाला तुम्हारे बीच न्यायपूर्वक (दस्तावेज़) लिख दे। और लिखनेवाला लिखने से इनकार न करे; जिस प्रकार अल्लाह ने उसे सिखाया है, उसी प्रकार वह दूसरों के लिए लिखने के काम आए और बोलकर वह लिखाए जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो। और उसे अल्लाह का, जो उसका रब है, डर रखना चाहिए और उसमें कोई कमी न करनी चाहिए। फिर यदि वह व्यक्ति जिसके ज़िम्में हक़ की अदायगी हो, कम समझ या कमज़ोर हो या वह बोलकर न लिखा सकता हो तो उसके संरक्षक को चाहिए कि न्यायपूर्वक बोलकर लिखा दे। और अपने पुरुषों में से दो गवाहों को गवाह बना लो और यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, जिन्हें तुम गवाह के लिए पसन्द करो, ग़वाह हो जाएँ। (दो स्त्रियाँ इसलिए रखी गई हैं) ताकि यदि एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे। और गवाहों को जब बुलाया जाए तो आने से इनकार न करें। मामला चाहे छोटा हो या बड़ा एक निर्धारित अवधि तक के लिए है, तो उसे लिखने में सुस्ती से काम न लो। यह अल्लाह की दृष्टि में अधिक न्यायसंगत बात है और इससे गवाही भी अधिक ठीक रहती है। और इससे अधिक संभावना है कि तुम किसी संदेह

में नहीं पड़ोगे। हाँ, यदि कोई सौदा नक़्द हो, जिसका लेन-देन तुम आपस में कर रहे हो, तो तुम्हारे उसके न लिखने में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और जब आपस में क्रय-विक्रय का मामला करो तो उस समय भी गवाह कर लिया करो, और न किसी लिखनेवाले को हानि पहुँचाई जाए और न किसी गवाह को। और यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए अवज्ञा की बात होगी। और अल्लाह का डर रखो। अल्लाह तुम्हें शिक्षा दे रहा है। और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ
إِذَا مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْأَمُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا
إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۖ إِلَّا أَنْ تَكُونَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ
وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۚ وَإِنْ تَفْعَلُوا
فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۗ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۞ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ
وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهَانٌ مَقْبُوضَةٌ ۖ فَإِنْ أَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ
وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۗ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَنْ
يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ

283. और यदि तुम किसी सफ़र में हो और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो गिरवी रखकर मामला करो। फिर यदि तुममें से एक-दूसरे पर भरोसा करे, तो जिस पर भरोसा किया है उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए कि वह विश्वासपात्र है और अल्लाह का, जो उसका रब है, डर रखे। और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِنْ تُبْدُوْا
مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۭ
فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ
مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ڭ غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا
وُسْعَهَا ۭ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۭ
رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا
وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَي الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ
وَاعْفُ عَنَّا ۪ وَاغْفِرْ لَنَا ۪ وَارْحَمْنَا ۪ اَنْتَ مَوْلٰىنَا
فَانْصُرْنَا عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

284. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और जो कुछ तुम्हारे मन में है, यदि तुम उसे व्यक्त करो या छिपाओ, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा। फिर वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे यातना दे। अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

285. रसूल उसपर, जो कुछ उसके रब की ओर से उसकी ओर उतरा, ईमान लाया और ईमानवाले भी, प्रत्येक, अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाया। (और उनका कहना यह है) : "हम उसके रसूलों में से किसी को दूसरे रसूलों से अलग नहीं करते।" और उनका कहना है : "हमने सुना और आज्ञाकारी हुए। हमारे रब! हम तेरी क्षमा के इच्छुक हैं और तेरी ही ओर लौटना है।"

286. —अल्लाह किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है। उसका है जो उसने कमाया और उसी पर उसका वबाल (आपदा) भी है जो उसने किया।—"हमारे रब! यदि हम भूलें या चूक जाएँ तो हमें न पकड़ना। हमारे रब! और हमपर ऐसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। हमारे रब! और हमसे वह बोझ न उठवा, जिसकी हमें शक्ति नहीं। और हमें क्षमा कर और हमें ढाँक ले, और हमपर दया कर। तू ही हमारा संरक्षक है, अतएव इनकार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।"



3. आले इमरान

(मदीना में उतरी— आयतें 200)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान हैं।

1. अलिफ़० लाम० मीम०।

2. अल्लाह ही पूज्य है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह जीवन्त है, सबको सँभालने और क़ायम रखनेवाला।

3. उसने तुमपर हक़ के साथ किताब उतारी जो अपने से पहले की (किताबों की) पुष्टि करती है, और उसने तौरात और इंजील उतारी;

4. इससे पहले लोगों के मार्गदर्शन के लिए और उसने कसौटी भी उतारी। निस्संदेह जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इनकार किया उनके लिए कठोर यातना है और अल्लाह प्रभुत्वशाली भी है और (बुराई का) बदला लेनेवाला भी।

5. निस्संदेह अल्लाह से कोई चीज़ न धरती में छिपी है और न आकाश में।

6. वही है जो गर्भाशयों में, जैसा चाहता है, तुम्हारा रूप देता है। उस प्रभुत्त्वशाली, तत्त्वदर्शी के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं।

7. वही है जिसने तुमपर अपनी ओर से किताब उतारी, वे सुदृढ़ आयतें हैं जो किताबों का मूल और सारगर्भित रूप हैं और दूसरी उपलक्षित, तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे फ़ितना (गुमराही) की तलाश और उसके

فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ
الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا
اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ
كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝
رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ
لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝
رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ
اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۝ كَدَأْبِ آلِ
فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝
قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ

आशय और परिणाम की चाह में उसका अनुसरण करते हैं जो उपलक्षित है। जबकि उनका परिणाम बस अल्लाह ही जानता है, और वे जो ज्ञान में पक्के हैं, वे कहते हैं : "हम उसपर ईमान लाए, हर एक हमारे रब ही की ओर से है।" और चेतते तो केवल वही हैं जो बुद्धि और समझ रखते हैं।

8. हमारे रब ! जब तू हमें सीधे मार्ग पर लगा चुका है तो इसके पश्चात हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर और हमें अपने पास से दयालुता प्रदान कर। निश्चय ही तू बड़ा दाता है।

9. हमारे रब ! तू लोगों को एक दिन इकट्ठा करनेवाला है, जिसमें कोई संदेह नहीं। निस्संदेह अल्लाह अपने वचन के विरुद्ध जानेवाला नहीं है।

10. जिन लोगों ने इनकार की नीति अपनाई है अल्लाह के मुक़ाबले में तो न उनके माल उनके कुछ काम आएँगे और न उनकी संतान ही। और वही हैं जो आग (जहन्नम) का ईंधन बनकर रहेंगे।

11. जैसे फ़िरऔन के लोगों और उनसे पहले के लोगों का हाल हुआ। उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ लिया। और अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

12. इनकार करनेवालों से कह दो : "शीघ्र ही तुम पराभूत होगे और जहन्नम

جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ
فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ
وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ
الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنطَرَةِ
مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ
الْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ
وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الْمَآبِ ۝ قُلْ أَؤُنَبِّئُكُم
بِخَيْرٍ مِّن ذَٰلِكُمْ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِندَ رَبِّهِمْ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ
بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا

की ओर हाँके जाओगे। और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।"

13. तुम्हारे लिए उन दोनों गिरोहों में एक निशानी है जो (बद्र की) लड़ाई में एक-दूसरे के मुक़ाबिल हुए। एक गिरोह अल्लाह के मार्ग में लड़ रहा था, जबकि दूसरा विधर्मी था। ये अपनी आँखों देख रहे थे कि वे उनसे दुगुने हैं। अल्लाह अपनी सहायता से जिसे चाहता है, शक्ति प्रदान करता है। दृष्टिवान लोगों के लिए इसमें बड़ी शिक्षा-सामग्री है।

14. मनुष्यों को चाहत की चीज़ों से प्रेम शोभायमान प्रतीत होता है कि वे स्त्रियाँ, बेटे, सोने-चाँदी के ढेर और निशान लगे (चुने हुए) घोड़े हैं और चौपाए और खेती। यह सब सांसारिक जीवन की सामग्री है और अल्लाह के पास ही अच्छा ठिकाना है।

15. कहो : "क्या मैं तुम्हें इनसे उत्तम चीज़ का पता दूँ?" जो लोग अल्लाह का डर रखेंगे उनके लिए उनके रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। वहाँ पाक-साफ़ जोड़े होंगे और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अल्लाह अपने बन्दों पर नज़र रखता है।

16. ये वे लोग हैं जो कहते हैं : "हमारे रब, हम ईमान लाए हैं। अतः हमारे

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اَلصّٰبِرِيْنَ وَ
الصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ
بِالْاَسْحَارِ ۝ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۟
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ
مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ فَاِنْ
حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ
وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ
فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا
عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

गुनाहों को क्षमा कर दे और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।"

17. ये लोग धैर्य से काम लेनेवाले, सत्यवान और अत्यन्त आज्ञाकारी हैं, ये (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च करते और रात की अंतिम घड़ियों में क्षमा की प्रार्थनाएँ करते हैं।

18. अल्लाह ने गवाही दी कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं; और फ़रिश्तों ने और उन लोगों ने भी जो न्याय और संतुलन स्थापित करनेवाली एक सत्ता को जानते हैं। उस प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी के सिवा कोई पूज्य नहीं।

19. दीन (धर्म) तो अल्लाह की दृष्टि में इस्लाम ही है। जिन्हें किताब दी गई थी, उन्होंने तो इसमें इसके पश्चात् विभेद किया कि ज्ञान उनके पास आ चुका था। ऐसा उन्होंने परस्पर दुराग्रह के कारण किया। जो अल्लाह की आयतों का इनकार करेगा तो अल्लाह भी जल्द हिसाब लेनेवाला है।

20. अब यदि वे तुमसे झगड़ें तो कह दो : "मैंने और मेरे अनुयायियों ने तो अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया है।" और जिन्हें किताब मिली थी और जिनके पास किताब नहीं है, उनसे कहो : "क्या तुम भी इस्लाम को अपनाते हो?" फिर यदि वे इस्लाम को अंगीकार कर लें तो सीधा मार्ग पा गए। और यदि मुँह मोड़ें तो तुमपर केवल (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है। और अल्लाह स्वयं बन्दों को देख रहा है।

21. जो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करें और नबियों को नाहक़ क़त्ल करें और उन लोगों को क़त्ल करें जो न्याय के पालन करने को कहें,

بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ
مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ
ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا
مَّعْدُوْدٰتٍ ۪ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ۝ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ
فِيْهِ ۣ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُوْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ
مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ وَتُعِزُّ
مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ

उनको दुखद यातना की मंगल सूचना दे दो।

22. यही लोग हैं, जिनके कर्म दुनिया और आख़िरत में अकारथ गए और उनका सहायक कोई भी नहीं।

23. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें ईश-ग्रंथ का एक हिस्सा प्रदान हुआ। उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है कि वह उनके बीच निर्णय करे, फिर भी उनका एक गिरोह (उसकी) उपेक्षा करते हुए मुँह फेर लेता है?

24. यह इसलिए कि वे कहते हैं: "आग हमें नहीं छू सकती। हाँ, कुछ गिने-चुने दिनों (के कष्टों) की बात और है।" उनकी मनघड़ंत बातों ने, जो वे घड़ते रहे हैं, उन्हें धोखे में डाल रखा है।

25. फिर क्या हाल होगा, जब हम उन्हें उस दिन इकट्ठा करेंगे, जिसके आने में कोई संदेह नहीं और प्रत्येक व्यक्ति को, जो कुछ उसने कमाया होगा, पूरा-पूरा मिल जाएगा; और उनके साथ कोई अन्याय न होगा।

26. कहो: "ऐ अल्लाह, राज्य के स्वामी! तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले, और जिसे चाहे इज़्ज़त (प्रभुत्व) प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित कर दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निस्संदेह तुझे हर

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ
تُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ
فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ
تُقٰىةً وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝
قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ
اللّٰهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ
نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا وَّمَا عَمِلَتْ
مِنْ سُوْٓءٍ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا بَعِيْدًا
وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ۝

चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

27. तू रात को दिन में पिरोता है और दिन को रात में पिरोता है। तू निर्जीव से सजीव को निकालता है और सजीव से निर्जीव को निकालता है। और जिसे चाहता है, बेहिसाब देता है।"

28. ईमानवालों को चाहिए कि वे ईमानवालों से हटकर इनकार करनेवालों को अपना मित्र (राज़दार) न बनाएँ, और जो ऐसा करेगा, उसका अल्लाह से कोई संबंध नहीं, क्योंकि उससे सम्बद्ध यही बात है कि तुम उनसे बचो, जिस प्रकार वे तुमसे बचते हैं। और अल्लाह तुम्हें अपने आपसे डराता है, और अल्लाह ही की ओर लौटना है।

29. कह दो : "यदि तुम अपने दिलों की बात छिपाओ या उसे प्रकट करो, प्रत्येक दशा में अल्लाह उसे जान लेगा। और वह उसे भी जानता है, जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।"

30. जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई को सामने मौजूद पाएगा, वह कामना करेगा कि काश ! उसके और उस दिन के बीच बहुत दूर का फ़ासला होता। और अल्लाह तुम्हें अपना भय दिलाता है, और वह अपने बन्दों के लिए अत्यन्त करुणामय है।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
قُلْ أَطِيعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ
لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ۝ إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىٓ اٰدَمَ وَ
نُوحًا وَّاٰلَ إِبْرٰهِيمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِينَ ۝
ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
إِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ
مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ
إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثٰى ۗ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ۗ وَ
لَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثٰى ۚ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّيٓ
أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ ۝
فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَّأَنْبَتَهَا نَبَاتًا

31. कह दो : "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।"

32. कह दो : "अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो।" फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो अल्लाह भी इनकार करनेवालों से प्रेम नहीं करता।

33. अल्लाह ने आदम, नूह, इबराहीम की संतान और इमरान की संतान को सारे संसार की अपेक्षा प्राथमिकता देकर चुना।

34. एक नस्ल के रूप में, उसमें से एक पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी से पैदा हुई। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

35. याद करो जब इमरान की स्त्री ने कहा : "मेरे रब! जो बच्चा मेरे पेट में है उसे मैंने हर चीज़ से छुड़ाकर भेंट स्वरूप तुझे अर्पित किया। अतः तू उसे मेरी ओर से स्वीकार कर। निस्संदेह तू सब कुछ सुनता, जानता है।"

36. फिर जब उसके यहाँ बच्ची पैदा हुई तो उसने कहा : "मेरे रब! मेरे यहाँ तो लड़की पैदा हुई है"—अल्लाह तो जानता ही था जो कुछ उसके यहाँ पैदा हुआ था। और वह लड़का उस लड़की की तरह नहीं हो सकता—"और मैंने उसका नाम मरयम रखा है। और मैं उसे और उसकी संतान को तिरस्कृत शैतान (के उपद्रव) से सुरक्षित रखने के लिए तेरी शरण में देती हूँ।"

37. अतः उसके रब ने उसका अच्छी स्वीकृति के साथ स्वागत किया और

حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۚ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى
لَكِ هٰذَا ۚ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۞ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا
رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۞ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ
وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّ
حَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۞ قَالَ رَبِّ اَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۚ
قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۞ قَالَ رَبِّ
اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ
ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۚ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّ

उत्तम रूप में उसे परवान चढ़ाया; और ज़करिया को उसका संरक्षक बनाया। जब कभी ज़करिया उसके पास मेहराब (इबादतगाह) में जाता, तो उसके पास कुछ रोज़ी पाता। उसने कहा : "ऐ मरयम! ये चीज़ें तुझे कहाँ से मिलती हैं?" उसने कहा : "यह अल्लाह के पास से है।" निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब देता है।

38. वहीं ज़करिया ने अपने रब को पुकारा, कहा : "मेरे रब! मुझे तू अपने पास से अच्छी संतान (अनुयायी) प्रदान कर। तू ही प्रार्थना का सुननेवाला है।"

39. तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी, जबकि वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था : "अल्लाह, तुझे यह्या की शुभ-सूचना देता है, जो अल्लाह के एक कलिमे की पुष्टि करनेवाला, सरदार, अत्यन्त संयमी और अच्छे लोगों में से एक नबी होगा।"

40. उसने कहा : "मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे पैदा होगा, जबकि मुझे बुढ़ापा आ गया है और मेरी पत्नी बाँझ है?" कहा : "इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है, करता है।"

41. उसने कहा : "मेरे रब! मेरे लिए कोई आदेश निश्चित कर दे।" कहा : "तुम्हारे लिए आदेश यह है कि तुम लोगों से तीन दिन तक संकेत के सिवा कोई बातचीत न करो। अपने रब को बहुत अधिक याद करो और सायंकाल और

سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ
يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ
عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِينَ ۝ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ
وَاسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرّٰكِعِينَ ۝ ذٰلِكَ
مِنْ أَنْبَآءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلٰمَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِذْ قَالَتِ
الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ
اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ وَيُكَلِّمُ
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِينَ ۝
قَالَتْ رَبِّ أَنّٰى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِي
بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ إِذَا قَضٰى

प्रातः समय उसकी तसबीह (महिमागान) करते रहो।"

42. और जब फ़रिश्तों ने कहा : "ऐ मरयम ! अल्लाह ने तुझे चुन लिया और तुझे पवित्रता प्रदान की और तुझे संसार की स्त्रियों के मुक़ाबले में चुन लिया।

43. ऐ मरयम ! पूरी निष्ठा के साथ अपने रब की आज्ञा का पालन करती रह, और सजदा कर और झुकनेवालों के साथ तू भी झुकती रह।"

44. यह परोक्ष की सूचनाओं में से है, जिसकी वह्य हम तुम्हारी ओर कर रहे हैं।[1] तुम तो उस समय उनके पास नहीं थे, जब वे अपनी क़लमों को फेंक रहे थे कि उनमें कौन मरयम का संरक्षक बने और न उस समय तुम उनके पास थे, जब वे आपस में झगड़ रहे थे।

45. और याद करो जब फ़रिश्तों ने कहा : "ऐ मरयम ! अल्लाह तुझे अपने एक कलिमे (बात) की शुभ-सूचना देता है, जिसका नाम मसीह, मरयम का बेटा, ईसा होगा। वह दुनिया और आख़िरत में आबरूवाला होगा और अल्लाह के निकटवर्ती लोगों में से होगा।

46. वह लोगों से पालने में भी बात करेगा और बड़ी आयु को पहुँचकर भी। और वह नेक व्यक्ति होगा।——

47. वह बोली : "मेरे रब ! मेरे यहाँ लड़का कहाँ से होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं ?" कहा : "ऐसा ही होगा, अल्लाह जो

1. अर्थात प्रकाशना (Revelation) के द्वारा तुम्हें सूचित कर रहे हैं।

اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ وَيُعَلِّمُهُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝ وَرَسُوْلًا
اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ
الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ
اُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ
وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ
بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ
التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ
وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۝ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ

منزل

चाहता है, पैदा करता है। जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो उसको बस यही कहता है 'हो जा' तो वह हो जाता है।

48. और उसको किताब, हिकमत, तौरात और इंजील का ज्ञान देगा।

49. और उसे इसराईल की संतान की ओर रसूल बनाकर भेजेगा। (वह कहेगा) कि "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी के रूप जैसी आकृति बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक मारता हूँ, तो वह अल्लाह के आदेश से उड़ने लगती है। और मैं अल्लाह के आदेश से अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूँ और मुर्दे को जीवित कर देता हूँ। और मैं तुम्हें बता देता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ अपने घरों में इकट्ठा करके रखते हो। निस्संदेह इसमें तुम्हारे लिए एक निशानी है, यदि तुम माननेवाले हो।

50. और मैं तौरात की, जो मेरे आगे है, पुष्टि करता हूँ और इसलिए आया हूँ कि तुम्हारे लिए कुछ उन चीज़ों को हलाल कर दूँ जो तुम्हारे लिए हराम थीं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ। अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

51. निस्संदेह अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा रब भी, अतः तुम उसी की बन्दगी करो। यही सीधा मार्ग है।"

52. फिर जब ईसा को उनके अविश्वास और इनकार का आभास हुआ तो

الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ
نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝
رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ
الْمَاكِرِينَ ۝ إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ
وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ فَأَمَّا
الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ۝ وَأَمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ

उसने कहा : "कौन अल्लाह की ओर बढ़ने में मेरा सहायक होता है ?" हवारियों (साथियों) ने कहा : "हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाए और गवाह रहिए कि हम मुस्लिम हैं।

53. हमारे रब ! तूने जो कुछ उतारा है, हम उसपर ईमान लाए और इस रसूल का अनुसरण स्वीकार किया। अतः तू हमें गवाही देनेवालों में लिख ले।"

54. और वे चाल चले तो अल्लाह ने भी उसका तोड़ किया और अल्लाह उत्तम तोड़ करनेवाला है।

55. जब अल्लाह ने कहा : "ऐ ईसा ! मैं तुझे अपने क़ब्ज़े में ले लूँगा और तुझे अपनी ओर उठा लूँगा और अविश्वासियों (की कुचेष्टाओं) से तुझे पाक कर दूँगा और तेरे अनुयायियों को क़ियामत के दिन तक उन लोगों के ऊपर रखूँगा, जिन्होंने इनकार किया। फिर मेरी ओर तुम्हें लौटना है। फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों का फ़ैसला कर दूँगा, जिनके विषय में तुम विभेद करते रहे हो।

56. तो जिन लोगों ने इनकार की नीति अपनाई, उन्हें दुनिया और आख़िरत में कड़ी यातना दूँगा। उनका कोई सहायक न होगा।"

57. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें वह उनका पूरा-पूरा बदला देगा। अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

58. ये आयतें हैं और हिकमत (तत्त्वज्ञान) से परिपूर्ण अनुस्मारक, जो हम

مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ۞ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى
عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۞ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْمُمْتَرِيْنَ ۞ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَ
اَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ
ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ۞
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا
اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۞ قُلْ يٰۤاَهْلَ
الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ
اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ
بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا

तुम्हें सुना रहे हैं।

59. निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि में ईसा की मिसाल आदम जैसी है कि उसे मिट्टी से बनाया, फिर उससे कहा : "हो जा", तो वह हो जाता है।[1]

60. यह हक़ तुम्हारे रब की ओर से है, तो तुम संदेह में न पड़ना।

61. अब इसके पश्चात कि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है, कोई तुमसे इस विषय में कुतर्क करे तो कह दो : "आओ, हम अपने बेटों को बुला लें और तुम भी अपने बेटों को बुला लो, और हम अपनी स्त्रियों को बुला लें और तुम भी अपनी स्त्रियों को बुला लो, और हम अपने को और तुम अपने को ले आओ, फिर मिलकर प्रार्थना करें और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें।"

62. निस्संदेह यही सच्चा बयान है और अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। और अल्लाह ही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

63. फिर यदि वे लोग मुँह मोड़ें तो अल्लाह फ़सादियों को भली-भाँति जानता है।

64. कहो : "ऐ किताबवालो ! आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है; यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और न उसके साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ और न परस्पर हममें से कोई एक-दूसरे को अल्लाह से हटकर रब बनाए।" फिर यदि

1. अर्थात किसी चीज़ की रचना के लिए अल्लाह का इरादा ही काफ़ी होता है। इस सिलसिले में वह किसी वाह्य वस्तु का मुहताज नहीं।

فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تُحَاجُّونَ فِيٓ إِبْرٰهِيمَ وَمَآ أُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ
وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝
هٰٓأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ حٰجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ
تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَ
أَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ مَا كَانَ إِبْرٰهِيمُ يَهُودِيًّا
وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا ۚ وَمَا
كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرٰهِيمَ
لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا ۚ
وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ
أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّونَكُمْ ۚ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّآ
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ
تَكْفُرُونَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۝ يَا أَهْلَ

वे मुँह मोड़ें तो कह दो : "गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।"

65. "ऐ किताबवालो! तुम इबराहीम के विषय में हमसे क्यों झगड़ते हो? जबकि तौरात और इंजील तो उसके पश्चात् उतारी गई हैं, तो क्या तुम समझ से काम नहीं लेते?

66. ये तुम लोग हो कि उसके विषय में तो वाद-विवाद कर चुके जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान था। अब उसके विषय में क्यों वाद-विवाद करते हो, जिसके विषय में तुम्हें कुछ भी ज्ञान नहीं? अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।"

67. इबराहीम न यहूदी था और न ईसाई, बल्कि वह तो एक ओर का होकर रहनेवाला मुस्लिम (आज्ञाकारी) था। वह कदापि मुशरिकों में से न था।

68. निस्संदेह इबराहीम से सबसे अधिक निकटता का सम्बन्ध रखनेवाले वे लोग हैं जिन्होंने उसका अनुसरण किया, और यह नबी और ईमानवाले लोग। और अल्लाह ईमानवालों का समर्थक एवं सहायक है।

69. किताबवालों में से एक गिरोह के लोगों की कामना है कि काश! वे तुम्हें पथभ्रष्ट कर सकें, जबकि वे केवल अपने-आपको पथभ्रष्ट कर रहे हैं। किन्तु उन्हें इसका एहसास नहीं।

70. ऐ किताबवालो! तुम अल्लाह की आयतों का इनकार क्यों करते हो, जबकि तुम स्वयं गवाह हो?

71. ऐ किताबवालो! सत्य को असत्य के साथ क्यों गड्ड-मड्ड करते और

الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ
وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ
النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَلَا تُؤْمِنُوْٓا
اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ
اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ
عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ
عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِى
الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ

जानते-बूझते सत्य को छिपाते हो ?

72. किताबवालों में से एक गिरोह कहता है : "ईमानवालों पर जो कुछ उतरा है, उसपर प्रातः काल ईमान लाओ और संध्या समय उसका इनकार कर दो, ताकि वे फिर जाएँ।

73. और तुम अपने धर्म के अनुयायियों के अतिरिक्त किसी पर विश्वास न करो।—कह दो : 'वास्तविक मार्गदर्शन तो अल्लाह का मार्गदर्शन है'— कि कहीं जो चीज़ तुम्हें प्राप्त है, उस जैसी चीज़ किसी और को प्राप्त हो जाए, या वे तुम्हारे रब के सामने तुम्हारे ख़िलाफ़ हुज्जत कर सकें।" कह दो : "बढ़-चढ़कर प्रदान करना तो अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह बड़ी समाईवाला, सब कुछ जाननेवाला है।

74. वह जिसे चाहता है अपनी रहमत (दयालुता) के लिए ख़ास कर लेता है। और अल्लाह बड़ी उदारता दशनिवाला है।"

75. और किताबवालों में कोई तो ऐसा है कि यदि तुम उसके पास धन-दौलत का एक ढेर भी अमानत रख दो तो वह उसे तुम्हें लौटा देगा। और उनमें कोई ऐसा है कि यदि तुम एक दीनार भी उसकी अमानत में रखो, तो जब तककि तुम उसके सिर पर सवार न हो, वह उसे तुम्हें अदा नहीं करेगा। यह इसलिए कि वे

يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ
وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾ وَإِنَّ
مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُونَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ
مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ
اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ
كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ كُونُوا رَبَّانِيِّينَ
بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾
وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا

कहते हैं : "उन लोगों के विषय में जो किताबवाले नहीं हैं हमारी कोई पकड़ नहीं ।" और वे जानते-बूझते अल्लाह पर झूठ मढ़ते हैं ।

76. क्यों नहीं, जो कोई अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा और डर रखेगा, तो अल्लाह भी डर रखनेवालों से प्रेम करता है ।

77. रहे वे लोग जो अल्लाह की प्रतिज्ञा और अपनी क़समों का थोड़े मूल्य पर सौदा करते हैं, उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं । अल्लाह न तो उनसे बात करेगा और न क़ियामत के दिन उनकी ओर देखेगा, और न ही उन्हें निखारेगा । उनके लिए तो दुखद यातना है ।

78. उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बानों का इस प्रकार उलट-फेर करते हैं कि तुम समझो कि वह किताब ही में से है, जबकि वह किताब में से नहीं होता । और वे कहते हैं : "यह अल्लाह की ओर से है ।" जबकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता । और वे जानते-बूझते झूठ गढ़कर अल्लाह पर थोपते हैं ।

79. किसी मनुष्य के लिए यह संभव न था कि अल्लाह उसे किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) और पैग़म्बरी प्रदान करे और वह लोगों से कहने लगे : "तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे उपासक बनो ।" बल्कि वह तो यही कहेगा कि : "तुम रबवाले बनो, इसलिए कि तुम किताब की शिक्षा देते हो और इसलिए कि तुम स्वयं भी पढ़ते हो ।"

80. और न वह तुम्हें इस बात का हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को अपना रब बना लो । क्या वह तुम्हें अधर्म का हुक्म देगा, जबकि तुम

أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَإِذْ
أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُم مِّن كِتَابٍ
وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنصُرُنَّهُ ۚ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ
عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا
وَأَنَا مَعَكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ۝ فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ
ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ
يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝ قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ
وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ
وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ
أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ وَمَن يَبْتَغِ

(उसके) आज्ञाकारी हो ?

81. और याद करो जब अल्लाह ने नबियों के संबंध में वचन लिया कि : "मैंने तुम्हें जो कुछ किताब और हिकमत प्रदान की, इसके पश्चात तुम्हारे पास कोई रसूल उसकी पुष्टि करता हुआ आए जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम अवश्य उसपर ईमान लाओगे और निश्चय ही उसकी सहायता करोगे।" कहा : "क्या तुमने इक़रार किया? और इसपर मेरी ओर से डाली हुई ज़िम्मेदारी का बोझ उठाया?" उन्होंने कहा : "हमने इक़रार किया।" कहा : "अच्छा तो गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ।"

82. फिर इसके बाद जो फिर गए, तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं।

83. अब क्या इन लोगों को अल्लाह के दीन (धर्म) के सिवा किसी और दीन की तलब है, हालाँकि आकाशों और धरती में जो कोई भी है स्वेच्छापूर्वक या विवश होकर उसी के आगे झुका हुआ है। और उसी की ओर सबको लौटना है ?

84. कहो : "हम तो अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हम पर उतरी है, और जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान पर उतरी उसपर भी, और जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान हुई (उसपर भी हम ईमान रखते हैं)। हम उनमें से किसी को उस सम्बन्ध से अलग नहीं करते जो उनके बीच पाया जाता है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं।"

85. जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी

غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا
كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّ
جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ
بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۟ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ
تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ
اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۗ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝

ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। और आख़िरत में वह घाटा उठानेवालों में से होगा।

86. अल्लाह उन लोगों को कैसे मार्ग दिखाएगा, जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात् अधर्म और इनकार की नीति अपनाई, जबकि वे स्वयं इस बात की गवाही दे चुके हैं कि यह रसूल सच्चा है और उनके पास स्पष्ट निशानियाँ भी आ चुकी हैं? अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाया करता।

87. उन लोगों का बदला यही है कि उनपर अल्लाह और फ़रिश्तों और सारे मनुष्यों की लानत है।

88. इसी दशा में वे सदैव रहेंगे, न उनकी यातना हल्की होगी और न उन्हें मुहलत ही दी जाएगी।

89. हाँ, जिन लोगों ने इसके पश्चात तौबा कर ली और अपनी नीति को सुधार लिया तो निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

90. रहे वे लोग जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात इनकार किया और अपने इनकार में बढ़ते ही गए, उनकी तौबा कदापि स्वीकार न होगी। वास्तव में वही पथभ्रष्ट हैं।

91. निस्संदेह जिन लोगों ने इनकार किया और इनकार ही की दशा में मरे, तो उनमें किसी से धरती के बराबर सोना भी, यदि उसने प्राण-मुक्ति के लिए दिया हो, कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है और उनका कोई सहायक न होगा।



92. तुम नेकी और वफ़ादारी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते, जब तकि उन चीज़ों को (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च न करो, जो तुम्हें प्रिय हैं। और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे, निश्चय ही अल्लाह को उसका ज्ञान होगा।

93. खाने की सारी चीज़ें इसराईल की संतान के लिए हलाल थीं, सिवाय उन चीज़ों के जिन्हें तौरात के उतरने से पहले इसराईल ने स्वयं अपने लिए हराम कर लिया था। कहो : "यदि तुम सच्चे हो तो तौरात लाओ और उसे पढ़ो।"

94. अब इसके पश्चात् भी जो व्यक्ति झूठी बातें अल्लाह से जोड़े, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।

95. कहो : "अल्लाह ने सच कहा है; अत: इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण करो, जो हर ओर से कटकर एक का हो गया था और मुशरिकों में से न था।"

96. निस्संदेह इबादत के लिए पहला घर जो 'मानव के लिए' बनाया गया वही है जो मक्का में है, बरकतवाला और सर्वथा मार्गदर्शन, संसारवालों के लिए।

97. उसमें स्पष्ट निशानियाँ हैं, वह इबराहीम का स्थल है। और जिसने उसमें प्रवेश किया, वह निश्चिन्त हो गया। लोगों पर अल्लाह का हक़ है कि जिसको वहाँ तक पहुँचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह इस घर का हज करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता), अल्लाह तो सारे संसार से निरपेक्ष है।"

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ
وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ۞ قُلْ يٰٓاَهْلَ
الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ
تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۗ وَمَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ
بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ۞ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَ
اَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ۗ
وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ
تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۞ وَاعْتَصِمُوْا
بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۖ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ

98. कहो : "ऐ किताबवालो ! तुम अल्लाह की आयतों का इनकार क्यों करते हो, जबकि जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह की दृष्टि में है ?"

99. कहो : "ऐ किताबवालो ! तुम ईमान लानेवालों को अल्लाह के मार्ग से क्यों रोकते हो, तुम्हें उसमें किसी टेढ़ की तलाश रहती है, जबकि तुम भली-भाँति वास्तविकता से अवगत हो और जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है।"

100. ऐ ईमान लानेवालो ! यदि तुमने उनके किसी गिरोह की बात मान ली, जिन्हें किताब मिली थी, तो वे तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात फिर तुम्हें अधर्मी बना देंगे।

101. अब तुम इनकार कैसे कर सकते हो, जबकि तुम्हें अल्लाह की आयतें पढ़कर सुनाई जा रही हैं और उसका रसूल तुम्हारे बीच मौजूद है ? जो कोई अल्लाह को मज़बूती से पकड़ ले, वह सीधे मार्ग पर आ गया।

102. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो, जैसाकि उसका डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो।

103. और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो। और अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो तुमपर हुई। जब तुम आपस में एक-दूसरे के शत्रु थे तो उसने तुम्हारे दिलों को परस्पर

فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ
مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ
يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا
كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ
تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ
اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَأَمَّا
الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعَالَمِينَ ۝

जोड़ दिया और तुम उसकी कृपा से भाई-भाई बन गए। तुम आग के एक गड्ढे के किनारे खड़े थे, तो अल्लाह ने उससे तुम्हें बचा लिया। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम मार्ग पा लो।

104. और तुम्हें एक ऐसे समुदाय का रूप धारण कर लेना चाहिए जो नेकी की ओर बुलाए और भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके। यही सफलता प्राप्त करनेवाले लोग हैं।

105. तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जो विभेद में पड़ गए, और इसके पश्चात कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थीं, वे विभेद में पड़ गए। ये वही लोग हैं, जिनके लिए बड़ी (घोर) यातना है। (यह यातना उस दिन होगी।)

106. जिस दिन कितने ही चेहरे उज्ज्वल होंगे और कितने ही चेहरे काले पड़ जाएँगे, तो जिनके चेहरे काले पड़ गए होंगे (वे सदा यातना में ग्रस्त रहेंगे। खुली निशानियाँ आने के बाद जिन्होंने विभेद किया) उनसे कहा जाएगा : "क्या तुमने ईमान के पश्चात इनकार की नीति अपनाई? तो लो, अब उस इनकार के बदले में जो तुम करते रहे हो, यातना का मज़ा चखो।"

107. रहे वे लोग जिनके चेहरे उज्ज्वल होंगे, वे अल्लाह की दयालुता की छाया में होंगे। वे उसी में सदैव रहेंगे।

108. ये अल्लाह की आयतें हैं, जिन्हें हम हक़ के साथ तुम्हें सुना रहे हैं। अल्लाह संसारवालों पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करना चाहता।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ
لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۗ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ
خَيْرًا لَّهُمْ ۚ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝
لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۚ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ
الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ
الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ
مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذٰلِكَ
بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ لَيْسُوْا سَوَآءً ۚ مِنْ
اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ

109. आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं।

110. तुम एक उत्तम समुदाय हो, जो लोगों के समक्ष लाया गया है। तुम नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। और यदि किताबवाले भी ईमान लाते तो उनके लिए यह अच्छा होता। उनमें ईमानवाले भी हैं, किन्तु उनमें अधिकतर लोग अवज्ञाकारी ही हैं।

111. थोड़ा दुख पहुँचाने के अतिरिक्त वे तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। और यदि वे तुमसे लड़ेंगे, तो तुम्हें पीठ दिखा जाएँगे, फिर उन्हें कोई सहायता भी न मिलेगी।

112. वे जहाँ कहीं भी पाए गए उनपर ज़िल्लत (अपमान) थोप दी गई। किन्तु अल्लाह की रस्सी थामें या लोगों की रस्सी, तो और बात है। वे अल्लाह के प्रकोप के पात्र हुए और उनपर दशाहीनता थोप दी गई। यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों का इनकार और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं। और यह इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की और सीमोल्लंघन करते रहे।

113. ये सब एक जैसे नहीं हैं। किताबवालों में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो सीधे मार्ग पर हैं और रात की घड़ियों में अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे

الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ۝ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ۚ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ
تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝
مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ
رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا
بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۚ وَدُّوْا
مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚ

منزل ١

सजदा करते रहनेवाले हैं।

114. वे अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं और नेकी का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में अग्रसर रहते हैं, और वे अच्छे लोगों में से हैं।

115. जो नेकी भी वे करेंगे, उसकी अवमानना न होगी। अल्लाह डर रखनेवालों से भली-भाँति परिचित है।

116. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न उनके माल उनके कुछ काम आ सकेंगे और न उनकी संतान ही। वे तो आग में जानेवाले लोग हैं, उसी में वे सदैव रहेंगे।

117. इस सांसारिक जीवन के लिए जो कुछ भी वे ख़र्च करते हैं, उसकी मिसाल उस वायु जैसी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चल जाए, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया है और उसे विनष्ट करके रख दे। अल्लाह ने उनपर कोई अत्याचार नहीं किया, अपितु वे तो स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे हैं।

118. ऐ ईमान लानेवालो! अपनों को छोड़कर दूसरों को अपना अंतरंग मित्र न बनाओ, वे तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते। जितनी भी तुम कठिनाई में पड़ो, वही उनको प्रिय है। उनका द्वेष तो उनके मुँह से व्यक्त हो चुका है और जो कुछ उनके सीने छिपाए हुए हैं, वह तो इससे भी बढ़कर

وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْآيَاتِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هَا أَنْتُمْ أُولَاءِ
تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ
كُلِّهِ ۚ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا
عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ ۗ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ إِنْ تَمْسَسْكُمْ
حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا
بِهَا ۖ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ
شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝ وَإِذْ غَدَوْتَ
مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ
أَنْ تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَ

है। यदि तुम बुद्धि से काम लो, तो हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं।

119. ये तो तुम हो जो उनसे प्रेम करते हो और वे तुमसे प्रेम नहीं करते, जबकि तुम समस्त किताबों पर ईमान रखते हो। और वे जब तुमसे मिलते हैं तो कहने को तो कहते हैं कि : "हम ईमान लाए हैं।" किन्तु जब वे अलग होते हैं तो तुमपर क्रोध के मारे दाँतों से उँगलियाँ काटने लगते हैं। कह दो : "तुम अपने क्रोध में आप मरो। निस्संदेह अल्लाह दिलों के भेद को जानता है।"

120. यदि तुम्हारा कोई भला होता है तो उन्हें बुरा लगता है। परन्तु यदि तुम्हें कोई अप्रिय बात पेश आती है तो उससे वे प्रसन्न हो जाते हैं। यदि तुमने धैर्य से काम लिया और (अल्लाह का) डर रखा, तो उनकी कोई चाल तुम्हें कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह ने उसे अपने घेरे में ले रखा है।

121. याद करो जब तुम सवेरे अपने घर से निकलकर ईमानवालों को युद्ध के मोर्चों पर लगा रहे थे।[1]——अल्लाह तो सब कुछ सुनता, जानता है।

122. जब तुम्हारे दो गिरोहों ने साहस छोड़ देना चाहा, जबकि अल्लाह उनका संरक्षक मौजूद था——और ईमानवालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

123. और बद्र में[2] अल्लाह तुम्हारी सहायता कर भी चुका था, जबकि तुम

1. यह बात उहुद की लड़ाई के अवसर की है। 2. बद्र की लड़ाई में।

أَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُمِدَّكُمْ
رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ۝
بَلَىٰ ۚ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُمْ مِنْ فَوْرِهِمْ
هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ
مُسَوِّمِينَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ
وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِنَ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَائِبِينَ ۝
لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ
يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

बहुत कमज़ोर हालत में थे। अतः अल्लाह ही का डर रखो, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

124. जब तुम ईमानवालों से कह रहे थे : "क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतारकर तुम्हारी सहायता करे?"

125. हाँ, क्यों नहीं। यदि तुम धैर्य से काम लो और डर रखो, फिर शत्रु सहसा तुमपर चढ़ आएँ, उसी क्षण तुम्हारा रब पाँच हज़ार विध्वंसकारी फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा।

126. अल्लाह ने तो इसे तुम्हारे लिए बस एक शुभ-सूचना बनाया और इसलिए कि तुम्हारे दिल संतुष्ट हो जाएँ—— सहायता तो बस अल्लाह ही के यहाँ से आती है जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

127. ताकि इनकार करनेवालों के एक हिस्से को काट डाले या उन्हें बुरी तरह पराजित और अपमानित कर दे कि वे असफल होकर लौटें।

128. तुम्हें इस मामले में कोई अधिकार नहीं—— चाहे वह उनकी तौबा क़बूल करे या उन्हें यातना दे, क्योंकि वे अत्याचारी हैं।

129. आकाशों और धरती में जो कुछ भी है, अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

130. ऐ ईमान लानेवालो! बढ़ोत्तरी के ध्येय से ब्याज न खाओ, जो कई

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۚ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ
لِلْكٰفِرِيْنَ ۚ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ۚ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ
لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَ
الضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ
عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۚ وَالَّذِيْنَ
اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا
اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۠ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۚ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ
مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

गुना अधिक हो सकता है। और अल्लाह का डर रखो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

131. और उस आग से बचो जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार है।

132. और अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी बनो, ताकि तुमपर दया की जाए।

133. और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं।

134. वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—— और अल्लाह को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं।

135. और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, तो तत्काल अल्लाह उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं— और अल्लाह के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते।

136. उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۞ قَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۞ هٰذَا
بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۞
وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۞ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ
قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۚ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ
وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ۚ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۞ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ۞ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا
الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ
وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۞ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ
مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ

बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।

137. तुमसे पहले (धर्मविरोधियों के साथ अल्लाह की) रीति के कितने ही नमूने गुज़र चुके हैं, तो तुम धरती में चल-फिरकर देखो कि झुठलानेवालों का क्या परिणाम हुआ है।

138. यह लोगों के लिए स्पष्ट बयान और डर रखनेवालों के लिए मार्गदर्शन और उपदेश है।

139. हताश न हो और दुखी न हो, यदि तुम ईमानवाले हो, तो तुम्हीं प्रभावी रहोगे।

140. यदि तुम्हें आघात पहुँचे तो उन लोगों को भी ऐसा ही आघात पहुँच चुका है। ये युद्ध के दिन हैं, जिन्हें हम लोगों के बीच डालते ही रहते हैं और ऐसा इसलिए हुआ कि अल्लाह ईमानवालों को जान ले और तुममें से कुछ लोगों को गवाह बनाए— और अत्याचारी अल्लाह को प्रिय नहीं हैं।

141. और ताकि अल्लाह ईमानवालों को निखार दे और इनकार करनेवालों को मिटा दे।

142. क्या तुमने यह समझ रखा है कि जन्नत में यूँ ही प्रवेश करोगे, जबकि अल्लाह ने अभी उन्हें परखा ही नहीं जो तुममें जिहाद (सत्य-मार्ग में जानतोड़ कोशिश) करनेवाले हैं।—और दृढ़तापूर्वक जमे रहनेवाले हैं।

143. और तुम तो मृत्यु की कामनाएँ कर रहे थे, जब तक कि वह तुम्हारे सामने नहीं आई थी। लो, अब तो वह तुम्हारे सामने आ गई और तुमने उसे

تَنْظُرُوْنَ ۝ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ اَفَاۡىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ
عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۗ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ
يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا
مُّؤَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ
وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۗ وَسَنَجْزِى
الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ
رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۗ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْٓ
اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

अपनी आँखों से देख लिया।

144. मुहम्मद तो बस एक रसूल हैं। उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं। तो क्या यदि उनकी मृत्यु हो जाए या उनकी हत्या कर दी जाए तो तुम उल्टे पाँव फिर जाओगे? जो कोई उल्टे पाँव फिरेगा, वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा। और कृतज्ञ लोगों को अल्लाह बदला देगा।

145. और अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई व्यक्ति मर नहीं सकता। हर व्यक्ति एक लिखित निश्चित समय का अनुपालन कर रहा है। और जो कोई दुनिया का बदला चाहेगा, उसे हम इस दुनिया में से देंगे, जो आख़िरत का बदला चाहेगा, उसे हम उसमें से देंगे और जो कृतज्ञता दिखलाएँगे, उन्हें तो हम बदला देंगे ही।

146. कितने ही नबी ऐसे गुज़रे हैं जिनके साथ होकर बहुत-से ईशभक्तों ने युद्ध किया, तो अल्लाह के मार्ग में जो मुसीबत उन्हें पहुँची उससे वे न तो हताश हुए और न उन्होंने कोई कमज़ोरी दिखाई और न ऐसा हुआ कि वे दबे हों। और अल्लाह दृढ़तापूर्वक जमे रहनेवालों से प्रेम करता है।

147. उन्होंने कुछ नहीं कहा सिवाय इसके कि "ऐ हमारे रब! तू हमारे गुनाहों को और हमारे अपने मामले में जो ज़्यादती हमसे हो गई हो, उसे क्षमा कर दे और हमारे क़दम जमाए रख, और इनकार करनेवाले लोगों के मुक़ाबले

الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَ
حُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ
اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝ سَنُلْقِيْ فِيْ
قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ
مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَ
بِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ
وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ
تَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ
اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ
لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ

में हमारी सहायता कर।"

148. अतः अल्लाह ने उन्हें दुनिया का भी बदला दिया और आख़िरत का अच्छा बदला भी। और सत्कर्मी लोगों से अल्लाह प्रेम करता है।

149. ऐ ईमान लानेवालो! यदि तुम उन लोगों के कहने पर चलोगे जिन्होंने इनकार का मार्ग अपनाया है, तो वे तुम्हें उल्टे पाँव फेर ले जाएँगे। फिर तुम घाटे में पड़ जाओगे।

150. बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा संरक्षक है; और वह सबसे अच्छा सहायक है।

151. हम शीघ्र ही इनकार करनेवालों के दिलों में धाक बिठा देंगे, इसलिए कि उन्होंने ऐसी चीज़ों को अल्लाह का साझी ठहराया है जिनके साथ उसने कोई सनद नहीं उतारी, और उनका ठिकाना आग (जहन्नम) है। और अत्याचारियों का क्या ही बुरा ठिकाना है।

152. और अल्लाह ने तो तुम्हें अपना वादा सच्चा कर दिखाया, जबकि तुम उसकी अनुज्ञा से उन्हें क़त्ल कर रहे थे। यहाँ तककि जब तुम स्वयं ढीले पड़ गए और काम में झगड़ा डाल दिया और अवज्ञा की, जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज़ दिखा दी थी जिसकी तुम्हें चाह थी। तुममें कुछ लोग दुनिया चाहते थे और कुछ आख़िरत के इच्छुक थे। फिर अल्लाह ने तुम्हें उनके मुक़ाबले से हटा दिया, ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले। फिर भी उसने तुम्हें क्षमा कर दिया,

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُونَ
عَلَىٰ أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ
فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ
وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ ثُمَّ
أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُعَاسًا
يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِنْكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ
أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ
يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ
الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا
يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ
شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَاهُنَا ۗ قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ
لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ
وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا

क्योंकि अल्लाह ईमानवालों के लिए बड़ा अनुग्राही है।

153. जब तुम लोग दूर भागे चले जा रहे थे और किसी को मुड़कर देखते तक न थे और रसूल तुम्हें पुकार रहा था, जबकि वह तुम्हारी दूसरी टुकड़ी के साथ था (जो भागी नहीं), तो अल्लाह ने तुम्हें शोक पर शोक दिया, ताकि तुम्हारे हाथ से कोई चीज़ निकल जाए या तुमपर कोई मुसीबत आए तो तुम शोकाकुल न हो। और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसकी भली-भाँति ख़बर रखता है।

154. फिर इस शोक के पश्चात उसने तुमपर एक शान्ति उतारी—एक निद्रा, जो तुममें से कुछ लोगों को घेर रही थी और कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें अपने प्राणों की चिन्ता थी। वे अल्लाह के विषय में ऐसा ख़याल कर रहे थे, जो सत्य के सर्वथा प्रतिकूल, अज्ञान (काल) का ख़याल था। वे कहते थे : "इन मामलों में क्या हमारा भी कुछ अधिकार है ?" कह दो : "मामले तो सबके सब अल्लाह के (हाथ में) हैं।" वे जो कुछ अपने दिलों में छिपाए रखते हैं, तुमपर ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं : "यदि इस मामले में हमारा भी कुछ अधिकार होता तो हम यहाँ मारे न जाते।" कह दो : "यदि तुम अपने घरों में भी होते, तो भी जिन लोगों का क़त्ल होना तय था, वे निकलकर अपने अंतिम शयन-स्थलों तक पहुँचकर रहते।" और यह इसलिए भी था कि जो

فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ
إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ
إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا
وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ
كَانُوا غُزًّى لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا
قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَ
اللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ
مِنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ وَلَئِنْ مُتُّمْ
أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِنَ
اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ

कुछ तुम्हारे सीनों में है, अल्लाह उसे परख ले और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे साफ़ कर दे। और अल्लाह दिलों का हाल भली-भाँति जानता है।

155. तुममें से जो लोग दोनों गिरोहों की मुठभेड़ के दिन पीठ दिखा गए, उन्हें तो शैतान ही ने उनकी कुछ कमाई (कर्म) के कारण विचलित कर दिया था। और अल्लाह तो उन्हें क्षमा कर चुका है। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमा करनेवाला, सहनशील है।

156. ऐ ईमान लानेवालो! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इनकार किया और अपने भाइयों के विषय में, जबकि वे सफ़र में गए हों या युद्ध में हों (और उनकी वहाँ मृत्यु हो जाए तो), कहते हैं : "यदि वे हमारे पास होते तो न मरते और न क़त्ल होते। (ऐसी बातें तो इसलिए होती हैं) ताकि अल्लाह उनको उनके दिलों में घर करनेवाला पछतावा और संताप बना दे। अल्लाह ही जीवन प्रदान करने और मृत्यु देनेवाला है। और तुम जो कुछ भी कर रहे हो वह अल्लाह की दृष्टि में है।

157. और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गए या मर गए, तो अल्लाह का क्षमादान और उसकी दयालुता तो उससे कहीं उत्तम है, जिसके बटोरने में वे लगे हुए हैं।

158. हाँ, यदि तुम मर गए या मारे गए, तो प्रत्येक दशा में तुम अल्लाह ही के पास इकट्ठा किए जाओगे।

159. (तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर

لانفضوا من حولك ۖ فاعف عنهم واستغفر
لهم وشاورهم في الأمر ۚ فإذا عزمت فتوكل
على الله ۚ إن الله يحب المتوكلين ۝ إن
ينصركم الله فلا غالب لكم ۖ وإن يخذلكم فمن
ذا الذي ينصركم من بعده ۗ وعلى الله فليتوكل
المؤمنون ۝ وما كان لنبي أن يغل ۚ ومن
يغلل يأت بما غل يوم القيامة ۚ ثم توفى كل
نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ۝ أفمن
اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله
ومأواه جهنم ۚ وبئس المصير ۝ هم درجات عند
الله ۗ والله بصير بما يعملون ۝ لقد من الله
على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا من أنفسهم
يتلو عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب

से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छँट जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो। और मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं।

160. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे, तो कोई तुमपर प्रभावी नहीं हो सकता। और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है जो उसके पश्चात तुम्हारी सहायता कर सके। अतः ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

161. यह किसी नबी के लिए संभव नहीं कि वह दिल में कीना-कपट रखे, और जो कोई कीना-कपट रखेगा तो वह क़ियामत के दिन अपने द्वेष समेत हाज़िर होगा। और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का पूरा-पूरा बदला दे दिया जाएगा और उनपर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।

162. भला क्या जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा पर चले वह उस जैसा हो सकता है जो अल्लाह के प्रकोप का भागी हो चुका हो और जिसका ठिकाना जहन्नम है? और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।

163. अल्लाह के यहाँ उनके विभिन्न दर्जे हैं और जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह की दृष्टि में है।

164. निस्संदेह अल्लाह ने ईमानवालों पर बड़ा उपकार किया, जबकि स्वयं उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठाया जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है और उन्हें

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾
أَوَلَمَّا أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا
قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ مِنْ عِندِ أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ
اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ
الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾
وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ
قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ
مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ
فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ الَّذِينَ
قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۗ
قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ

निखारता है, और उन्हें किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, अन्यथा इससे पहले वे लोग खुली गुमराही में पड़े हुए थे।

165. यह क्या कि जब तुम्हें एक मुसीबत पहुँची, जिसकी दोगुनी तुमने पहुँचाई, तो तुम कहने लगे कि "यह कहाँ से आ गई?" कह दो : "यह तो तुम्हारी अपनी ओर से है, अल्लाह को तो हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।"

166. और दोनों गिरोहों की मुठभेड़ के दिन जो कुछ तुम्हारे सामने आया वह अल्लाह ही की अनुज्ञा से आया और इसलिए कि वह जान ले कि ईमानवाले कौन हैं।

167. और इसलिए कि वह कपटाचारियों को भी जान ले जिनसे कहा गया कि "आओ, अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो या दुश्मनों को हटाओ।" उन्होंने कहा : "यदि हम जानते कि लड़ाई होगी तो हम अवश्य तुम्हारे साथ हो लेते।" उस दिन वे ईमान की अपेक्षा अधर्म के अधिक निकट थे। वे अपने मुँह से वे बातें कहते हैं, जो उनके दिलों में नहीं होतीं। और जो कुछ वे छिपाते हैं, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

168. ये वही लोग हैं जो स्वयं तो बैठे रहे और अपने भाइयों के विषय में कहने लगे : "यदि वे हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते।" कह दो : "अच्छा, यदि तुम सच्चे हो, तो अब तुम अपने ऊपर से मृत्यु को टाल देना।"

169. तुम उन लोगों को जो अल्लाह के मार्ग में मारे गए हैं, मुर्दा न समझो,

बल्कि वे अपने रब के पास जीवित हैं, रोज़ी पा रहे हैं।

170. अल्लाह ने अपनी उदार कृपा से जो कुछ उन्हें प्रदान किया है, वे उसपर बहुत प्रसन्न हैं और उन लोगों के लिए भी खुश हो रहे हैं जो उनके पीछे रह गए हैं, अभी उनसे मिले नहीं हैं कि उन्हें भी न कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे।

171. वे अल्लाह के अनुग्रह और उसकी उदार कृपा से प्रसन्न हो रहे हैं और इससे कि अल्लाह ईमानवालों का बदला नष्ट नहीं करता।

اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ١٦٩
فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىھُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ
بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِھِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا ھُمْ يَحْزَنُوْنَ ١٧٠ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ
مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ١٧١ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ
مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَھُمُ الْقَرْحُ ڛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
مِنْھُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ١٧٢ اَلَّذِيْنَ قَالَ لَھُمُ
النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْھُمْ
فَزَادَھُمْ اِيْمَانًا ڰ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ١٧٣
فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْھُمْ
سُوْۗءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ١٧٤
اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَاۗءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْھُمْ

172. जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल की पुकार को स्वीकार किया, इसके पश्चात कि उन्हें आघात पहुँच चुका था। इन सत्कर्मी और (अल्लाह का) डर रखनेवालों के लिए बड़ा प्रतिदान है।

173. ये वही लोग हैं जिनसे लोगों ने कहा कि "तुम्हारे विरुद्ध लोग इकट्ठा हो गए हैं, अतः उनसे डरो।" तो इस चीज़ ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया। और उन्होंने कहा : "हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है।"

174. तो वे अल्लाह की ओर से प्राप्त होनेवाली नेमत और उदार कृपा के साथ लौटे। उन्हें कोई तकलीफ़ छू भी नहीं सकी और वे अल्लाह की इच्छा पर चले भी, और अल्लाह बड़ी ही उदार कृपावाला है।

175. वह तो शैतान है जो अपने मित्रों को डराता है। अतः तुम उनसे न

وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَلَا يَحْزُنكَ
الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَن يَضُرُّوا
اللَّهَ شَيْئًا ۗ يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي
الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا
الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا
نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ
لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ مَّا كَانَ
اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ
يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ
عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِن رُّسُلِهِ مَن
يَشَاءُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَإِن تُؤْمِنُوا وَ
تَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ

منزل

डरो, बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।

176. जो लोग अधर्म और इनकार में जल्दी दिखाते हैं, उनके कारण तुम दुखी न हो। वे अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे, उनके लिए तो बड़ी यातना है।

177. जो लोग ईमान की क़ीमत पर इनकार और अधर्म के ग्राहक हुए, वे अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, उनके लिए तो दुखद यातना है।

178. और यह ढील जो हम उन्हें दिए जाते हैं, इसे अधर्मी लोग अपने लिए अच्छा न समझें। यह ढील तो हम उन्हें सिर्फ़ इसलिए दे रहे हैं कि वे गुनाहों में और अधिक बढ़ जाएँ, और उनके लिए तो अत्यन्त अपमानजनक यातना है।

179. अल्लाह ईमानवालों को इस दशा में नहीं रहने देगा, जिसमें तुम हो। यह तो उस समय तक की बात है जबतक कि वह अपवित्र को पवित्र से पृथक नहीं कर देता। और अल्लाह ऐसा नहीं है कि वह तुम्हें परोक्ष की सूचना दे दे। किन्तु अल्लाह इस काम के लिए जिसको चाहता है चुन लेता है, और वे उसके रसूल होते हैं। अत: अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और यदि तुम ईमान लाओगे और (अल्लाह का) डर रखोगे तो तुमको बड़ा प्रतिदान मिलेगा।

180. जो लोग उस चीज़ में कृपणता से काम लेते हैं, जो अल्लाह ने अपनी

يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُم ۖ
بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۗ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَ
اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ لَّقَدْ سَمِعَ اللَّهُ
قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۘ
سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ
وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ
لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ
قَدْ جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي
قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝
فَإِن كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُو

उदार कृपा से उन्हें प्रदान की है, वे यह न समझें कि यह उनके हित में अच्छा है, बल्कि यह उनके लिए बुरा है। जिस चीज़ में उन्होंने कृपणता से काम लिया होगा, वही आगे क़ियामत के दिन उनके गले का तौक़ बन जाएगा। और ये आकाश और धरती अंत में अल्लाह ही के लिए रह जाएँगे। तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

181. अल्लाह उन लोगों की बात सुन चुका है जिनका कहना है कि "अल्लाह तो निर्धन है और हम धनवान हैं।" उनकी बात हम लिख लेंगे और नबियों को जो वे नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं उसे भी।[1] और हम कहेंगे : "लो, (अब) जलने की यातना का मज़ा चखो।"

182. यह उसका बदला है, जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा। अल्लाह अपने बन्दों पर तनिक भी ज़ुल्म नहीं करता।"

183. ये वही लोग हैं जिनका कहना है कि "अल्लाह ने हमें ताकीद की है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएँ, जबतक कि वह हमारे सामने ऐसी क़ुरबानी न पेश करे जिसे आग खा जाए।" कहो : "तुम्हारे पास मुझसे पहले कितने ही रसूल खुली निशानियाँ लेकर आ चुके हैं, और वे वह चीज़ भी लाए थे जिसके लिए तुम कह रहे हो। फिर यदि तुम सच्चे हो तो तुमने उन्हें क़त्ल क्यों किया?"

184. फिर यदि वे तुम्हें झुठलाते ही रहें, तो तुमसे पहले भी कितने ही रसूल

---

1. अर्थात उनकी ऐसी करतूतों की क्या सज़ा हो, यह हम लिख देंगे।

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ
ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ
فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ
وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ لَتُبْلَوُنَّ
فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۗ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا
اَذًى كَثِيْرًا ۗ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ
مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا
تَكْتُمُوْنَهٗ ۗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ
الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا
بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ

झुठलाए जा चुके हैं, जो खुली निशानियाँ, 'ज़बूरें' और प्रकाशमान किताब लेकर आए थे।

185. प्रत्येक जीव मृत्यु का मज़ा चखनेवाला है, और तुम्हें तो क़ियामत के दिन पूरा-पूरा बदला दे दिया जाएगा। अतः जिसे आग (जहन्नम) से हटाकर जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, वह सफल रहा। रहा सांसारिक जीवन, तो वह माया-सामग्री के सिवा कुछ भी नहीं।

186. तुम्हारे माल और तुम्हारे प्राण में तुम्हारी परीक्षा होकर रहेगी और तुम्हें उन लोगों से, जिन्हें तुमसे पहले किताब प्रदान की गई थी और उन लोगों से जिन्होंने 'शिर्क' किया, बहुत-सी कष्टप्रद बातें सुननी पड़ेंगी। परन्तु, यदि तुम जमे रहे और (अल्लाह का) डर रखा, तो यह उन कर्मों में से है जो आवश्यक ठहरा दिया गया है।

187. याद करो जब अल्लाह ने उन लोगों से, जिन्हें किताब प्रदान की गई थी, वचन लिया था कि "उसे लोगों के सामने भली-भाँति स्पष्ट करोगे, उसे छिपाओगे नहीं।" किन्तु उन्होंने उसे पीठ पीछे डाल दिया और तुच्छ मूल्य पर उसका सौदा किया। कितना बुरा सौदा है जो ये कर रहे हैं।

188. तुम उन्हें कदापि यह न समझना, जो अपने किए पर ख़ुश हो रहे हैं और जो काम उन्होंने नहीं किए, चाहते हैं कि उसपर भी उनकी प्रशंसा की जाए——तो तुम उन्हें यह न समझना कि वे यातना से बच जाएँगे, उनके लिए

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ فِي
خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ
اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ
فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ
هَٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝
رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۖ وَمَا
لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا
يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ۚ رَبَّنَا
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا
مَعَ الْأَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ
وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

तो दुखद यातना है।

189. आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है, और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

190. निस्संदेह आकाशों और धरती की रचना मे और रात और दिन के आगे- पीछे बारी-बारी आने में उन बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं।

191. जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों और धरती की रचना में सोच-विचार करते हैं। (वे पुकार उठते है:) "हमारे रब! तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अत: तू हमें आग की यातना से बचा ले।

192. हमारे रब, तूने जिसे आग में डाला, उसे रुसवा कर दिया। और ऐसे ज़ालिमों का कोई सहायक न होगा।

193. हमारे रब! हमने एक पुकारनेवाले को ईमान की ओर बुलाते सुना कि 'अपने रब पर ईमान लाओ।' तो हम ईमान ले आए। हमारे रब! तो अब तू हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमें नेक और वफ़ादार लोगों के साथ (दुनिया से) उठा।

194. हमारे रब! जिस चीज़ का वादा तूने अपने रसूलों के द्वारा किया वह हमें प्रदान कर और क़ियामत के दिन हमें रुसवा न करना। निस्संदेह तू अपने वादे के विरुद्ध जानेवाला नहीं है।"

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ
عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ
بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ
عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ
حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۗ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ
لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ
لِّلْاَبْرَارِ ۝ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ

195. तो उनके रब ने उनकी पुकार सुन ली कि "मैं तुममें से किसी कर्म करनेवाले के कर्म को अकारथ नहीं करूँगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। तुम सब आपस में एक-दूसरे से हो। अतः जिन लोगों ने (अल्लाह के मार्ग में) घरबार छोड़ा और अपने घरों से निकाले गए और मेरे मार्ग में सताए गए, और लड़े और मारे गए, मैं उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दूँगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में प्रवेश कराऊँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।" यह अल्लाह के पास से उनका बदला होगा और सबसे अच्छा बदला अल्लाह ही के पास है।

196. बस्तियों में इनकार करनेवालों की चलत-फिरत तुम्हें किसी धोखे में न डाले।

197. यह तो थोड़ी सुख-सामग्री है, फिर तो उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

198. किन्तु जो लोग अपने रब से डरते रहे उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उसमें सदैव रहेंगे। यह अल्लाह की ओर से पहला आतिथ्य-सत्कार होगा और जो कुछ अल्लाह के पास है, वह नेक और वफ़ादार लोगों के लिए सबसे अच्छा है।

199. और किताबवालों में से कुछ ऐसे भी हैं, जो इस हाल में कि उनके दिल अल्लाह के आगे झुके हुए होते हैं, अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस

चीज़ पर भी जो तुम्हारी ओर उतारी गई है, और उस चीज़ पर भी जो स्वयं उनकी ओर उतरी। वे अल्लाह की आयतों का 'तुच्छ मूल्य पर सौदा' नहीं करते, उनके लिए उनके रब के पास उनका प्रतिदान है। अल्लाह हिसाब भी जल्द ही कर देगा।

200. ऐ ईमान लानेवालो ! धैर्य से काम लो और (मुक़ाबले में) बढ़-चढ़कर धैर्य दिखाओ और जुटे और डटे रहो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो सको।



4. अन-निसा

(मदीना में उतरी— आयतें 177)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ लोगो ! अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दीं। अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपनी माँगें रखते हो। और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।

2. और अनाथों को उनका माल दे दो और बुरी चीज़ को अच्छी चीज़ से न बदलो, और न उनके माल को अपने माल के साथ मिलाकर खा जाओ। यह बहुत बड़ा गुनाह है।

3. और यदि तुम्हें आशंका हो कि तुम अनाथों (अनाथ लड़कियों) के प्रति

न्याय न कर सकोगे तो उनमें से, जो तुम्हें पसन्द हों, दो-दो या तीन-तीन या चार-चार से विवाह कर लो। किन्तु यदि तुम्हें आशंका हो कि तुम उनके साथ एक जैसा व्यवहार न कर सकोगे, तो फिर एक ही पर बस करो, या उस स्त्री (लौंडी) पर जो तुम्हारे क़ब्ज़े में आई हो, उसी पर बस करो। इसमें तुम्हारे न्याय से न हटने की अधिक संभावना है।

4. और स्त्रियों को उनके महर ख़ुशी से अदा करो। हाँ, यदि वे अपनी ख़ुशी से उसमें से तुम्हारे लिए छोड़ दें तो उसे तुम अच्छा और पाक समझकर खाओ।

فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى
وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ؕ
وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ
شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ۚ وَلَا تُؤْتُوا
السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا
وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا
مَّعْرُوْفًا ۚ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ
اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا
تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ
غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ
بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ
فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۚ لِلرِّجَالِ

5. और अपने माल, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए जीवन-यापन का साधन बनाया है, बेसमझ लोगों को न दो। उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भली बात कहो।

6. और अनाथों को जाँचते रहो, यहाँ तक कि जब वे विवाह की अवस्था को पहुँच जाएँ, तो फिर यदि तुम देखो कि उनमें सूझ-बूझ आ गई है, तो उनके माल उन्हें सौंप दो, और इस भय से कि कहीं वे बड़े न हो जाएँ तुम उनके माल अनुचित रूप से उड़ाकर और जल्दी करके न खाओ। और जो धनवान हो, उसे तो (इस माल से) बचना ही चाहिए। हाँ, जो निर्धन हो, वह उचित रीति से कुछ खा सकता है। फिर जब उनके माल उन्हें सौंपने लगो, तो उनकी मौजूदगी में गवाह बना लो। हिसाब लेने के लिए तो अल्लाह काफ़ी है।

7. पुरुषों का उस माल में एक हिस्सा है जो माँ-बाप और नातेदारों ने छोड़ा

نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَ
لِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ
مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۝ وَإِذَا
حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ
فَارْزُقُوهُم مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝
وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا
خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝
إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا
يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝
يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِن كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ
ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِن كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

हो; और स्त्रियों का भी उस माल में एक हिस्सा है जो माल माँ-बाप और नातेदारों ने छोड़ा हो——चाहे वह थोड़ा हो या अधिक हो—— यह हिस्सा निश्चित किया हुआ है।

8. और जब बाँटने के समय नातेदार और अनाथ और मुहताज उपस्थित हों तो उन्हें भी उसमें से (उनका हिस्सा) दे दो और उनसे भली बात करो।

9. और लोगों को डरना चाहिए कि यदि वे स्वयं अपने पीछे निर्बल बच्चे छोड़ते तो उन्हें उन बच्चों के विषय में कितना भय होता। तो फिर उन्हें अल्लाह से डरना चाहिए और ठीक सीधी बात कहनी चाहिए।

10. जो लोग अनाथों के माल अन्याय के साथ खाते हैं, वास्तव में वे अपने पेट आग से भरते हैं, और वे अवश्य भड़कती हुई आग में पड़ेंगे।

11. अल्लाह तुम्हारी संतान के विषय में तुम्हें आदेश देता है कि दो बेटियों के हिस्से के बराबर एक बेटे का हिस्सा होगा; और यदि दो से अधिक बेटियाँ ही हों तो उनका हिस्सा छोड़ी हुई सम्पत्ति का दो तिहाई है। और यदि वह अकेली हो तो उसके लिए आधा है। और यदि मरनेवाले की संतान हो तो उसके माँ-बाप में से प्रत्येक का उसके छोड़े हुए माल का छठा हिस्सा है। और यदि वह निस्संतान हो और उसके माँ-बाप ही उसके वारिस हों, तो उसकी माँ का हिस्सा तिहाई होगा। और यदि उसके भाई भी हों, तो उसकी माँ का छठा हिस्सा होगा। ये हिस्से, वसीयत जो वह कर जाए पूरी करने या ऋण चुका देने के पश्चात हैं। तुम्हारे बाप भी हैं और तुम्हारे बेटे भी। तुम

إِن كَانَ لَهُۥ وَلَدٌ ۚ فَإِن لَّمْ يَكُن لَّهُۥ وَلَدٌ وَوَرِثَهُۥٓ
أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ ٱلثُّلُثُ ۚ فَإِن كَانَ لَهُۥٓ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ
ٱلسُّدُسُ مِنۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِى بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ
ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ
نَفْعًا ۚ فَرِيضَةً مِّنَ ٱللَّهِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَٰجُكُمْ إِن لَّمْ
يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ
ٱلرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ ۚ مِنۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَآ
أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ ٱلرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ
وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ ٱلثُّمُنُ مِمَّا
تَرَكْتُم ۚ مِّنۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ وَ
إِن كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَٰلَةً أَوِ ٱمْرَأَةٌ وَلَهُۥٓ أَخٌ
أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَٰحِدٍ مِّنْهُمَا ٱلسُّدُسُ ۚ فَإِن كَانُوٓا۟

नहीं जानते कि उनमें से लाभ पहुँचाने की दृष्टि से कौन तुमसे अधिक निकट है। यह हिस्सा अल्लाह का निश्चित किया हुआ है। अल्लाह सब कुछ जानता, समझता है।

12. और तुम्हारी पत्नियों ने जो कुछ छोड़ा हो, उसमें तुम्हारा आधा है, यदि उनकी संतान न हों। लेकिन यदि उनकी संतान हों तो वे जो छोड़ें, उसमें तुम्हारा चौथाई होगा, इसके पश्चात कि जो वसीयत वे कर जाएँ वह पूरी कर दी जाए, या जो ऋण (उनपर) हो वह चुका दिया जाए। और जो कुछ तुम छोड़ जाओ, उसमें उनका (पत्नियों का) चौथाई हिस्सा होगा, यदि तुम्हारी कोई संतान न हो। लेकिन यदि तुम्हारी संतान है, तो जो कुछ तुम छोड़ोगे, उसमें से उनका (पत्नियों का) आठवाँ हिस्सा होगा, इसके पश्चात कि जो वसीयत तुमने की हो वह पूरी कर दी जाए, या जो ऋण हो उसे चुका दिया जाए, और यदि किसी पुरुष या स्त्री के न तो कोई संतान हो और न उसके माँ-बाप ही जीवित हों और उसके एक भाई या बहन हो तो उन दोनों

أَكْثَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ ۚ وَصِيَّةً
مِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ
وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝
وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝
وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا
عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِنْكُمْ ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ
فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ
لَهُنَّ سَبِيلًا ۝ وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنْكُمْ فَآذُوهُمَا ۖ
فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ

में से प्रत्येक का छठा हिस्सा होगा। लेकिन यदि वे इससे अधिक हों तो फिर एक तिहाई में वे सब शरीक होंगे, इसके पश्चात् कि जो वसीयत उसने की वह पूरी कर दी जाए या जो ऋण (उसपर) हो वह चुका दिया जाए, शर्त यह है कि वह हानिकर न हो। यह अल्लाह की ओर से ताकीदी आदेश है और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त सहनशील है।

13. ये अल्लाह की निश्चित की हुई सीमाएँ हैं। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वह सदैव रहेगा और यही बड़ी सफलता है।

14. परन्तु जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे अल्लाह आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। और उसके लिए अपमानजनक यातना है।

15. और तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्यभिचार कर बैठें, उनपर अपने में से चार आदमियों की गवाही लो, फिर यदि वे गवाही दे दें तो उन्हें घरों में बन्द रखो, यहाँ तक कि उनकी मृत्यु आ जाए या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे।

16. और तुममें से जो दो पुरुष यह कर्म करें, उन्हें प्रताड़ित करो, फिर यदि वे तौबा कर लें और अपने को सुधार लें, तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह तौबा क़बूल करनेवाला, दयावान है।

17. उन्हीं लोगों की तौबा क़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है जो भावनाओं

में बहकर नादानी से कोई बुराई कर बैठें, फिर जल्द ही तौबा कर लें, ऐसे ही लोग हैं जिनकी तौबा अल्लाह क़बूल करता है। अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

18. और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो बुरे काम किए चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो कहने लगता है : "अब मैं तौबा करता हूँ।" और इसी प्रकार तौबा उनकी भी नहीं है, जो मरते दम तक इनकार करनेवाले ही रहें। ऐसे लोगों के लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

يَعْمَلُونَ السُّوٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ
فَأُولَٰٓئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السَّيِّـَٔاتِ حَتَّىٰٓ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ
إِنِّي تُبْتُ الْـَٰٔنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ
أُولَٰٓئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَٰٓأَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا النِّسَآءَ
كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَآ
آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّآ أَن يَأْتِينَ بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ
وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ
فَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا شَيْـًٔا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا
كَثِيرًا ۝ وَإِنْ أَرَدتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ
زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ

19. ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे लिए वैध नहीं कि स्त्रियों के माल के ज़बरदस्ती वारिस बन बैठो, और न यह वैध है कि उन्हें इसलिए रोको और तंग करो कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है, उसमें से कुछ ले उड़ो। परन्तु यदि वे खुले रूप में अशिष्ट कर्म कर बैठें तो दूसरी बात है। और उनके साथ भले तरीक़े से रहो-सहो। फिर यदि वे तुम्हें पसन्द न हों, तो संभव है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो और अल्लाह उसमें बहुत कुछ भलाई रख दे।

20. और यदि तुम एक पत्नी की जगह दूसरी पत्नी लाना चाहो तो, चाहे

شَيْـًٔا ۚ أَتَأْخُذُونَهُۥ بُهْتَـٰنًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝ وَكَيْفَ
تَأْخُذُونَهُۥ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَ
أَخَذْنَ مِنكُم مِّيثَـٰقًا غَلِيظًا ۝ وَلَا تَنكِحُوا۟
مَا نَكَحَ ءَابَآؤُكُم مِّنَ ٱلنِّسَآءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ
إِنَّهُۥ كَانَ فَـٰحِشَةً وَمَقْتًا وَسَآءَ سَبِيلًا ۝
حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَـٰتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَٰتُكُمْ وَ
عَمَّـٰتُكُمْ وَخَـٰلَـٰتُكُمْ وَبَنَاتُ ٱلْأَخِ وَبَنَاتُ ٱلْأُخْتِ وَ
أُمَّهَـٰتُكُمُ ٱلَّـٰتِىٓ أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَٰتُكُم مِّنَ ٱلرَّضَـٰعَةِ
وَأُمَّهَـٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَـٰٓئِبُكُمُ ٱلَّـٰتِى فِى حُجُورِكُم
مِّن نِّسَآئِكُمُ ٱلَّـٰتِى دَخَلْتُم بِهِنَّ فَإِن لَّمْ تَكُونُوا۟
دَخَلْتُم بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَـٰٓئِلُ أَبْنَآئِكُمُ
ٱلَّذِينَ مِنْ أَصْلَـٰبِكُمْ وَأَن تَجْمَعُوا۟ بَيْنَ ٱلْأُخْتَيْنِ
إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

तुमने उनमें किसी को ढेरों माल दे दिया हो, उसमें से कुछ मत लेना। क्या तुम उसपर झूठा आरोप लगाकर और खुले रूप में हक़ मारकर उसे लोगे?

21. और तुम उसे किस तरह ले सकते हो, जबकि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो और वे तुमसे दृढ़ प्रतिज्ञा भी ले चुकी हैं?

22. और उन स्त्रियों से विवाह न करो, जिनसे तुम्हारे बाप विवाह कर चुके हों, परन्तु जो पहले हो चुका सो हो चुका। निस्संदेह यह एक अश्लील और अत्यन्त अप्रिय कर्म है, और बुरी रीति है।

23. तुम्हारे लिए हराम हैं तुम्हारी माएँ, बेटियाँ, बहनें, फूफियाँ, मौसियाँ, भतीजियाँ, भाँजियाँ, और तुम्हारी वे माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो और दूध के रिश्ते से तुम्हारी बहनें और तुम्हारी सासें और तुम्हारी पत्नियों की बेटियाँ जो दूसरे पति से हों और जो तुम्हारी गोदों में पलीं——तुम्हारी उन स्त्रियों की बेटियाँ जिनसे तुम संभोग कर चुके हो। परन्तु यदि संभोग नहीं किया है तो इसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं——और तुम्हारे उन बेटों की पत्नियाँ जो तुमसे पैदा हों और यह भी कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो; परन्तु पहले जो हो चुका सो हो चुका। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ
اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ
فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ
مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝
وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ
الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ
بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ
وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ

24. और विवाहिता स्त्रियाँ भी वर्जित हैं, सिवाय उनके जो तुम्हारी लौंडी हों। यह अल्लाह ने तुम्हारे लिए अनिवार्य कर दिया है। इनके अतिरिक्त शेष स्त्रियाँ तुम्हारे लिए वैध हैं कि तुम अपने माल के द्वारा उन्हें प्राप्त करो उनकी पाकदामनी की सुरक्षा के लिए, न कि यह काम स्वच्छन्द काम-तृप्ति के लिए हो। फिर उनसे दाम्पत्य जीवन का आनंद लो तो उसके बदले उनका निश्चित किया हुआ हक़ (महर) अदा करो और यदि हक़ निश्चित हो जाने के पश्चात तुम आपस में अपनी प्रसन्नता से कोई समझौता कर लो, तो इसमें तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

25. और तुममें से जिस किसी की इतनी सामर्थ्य न हो कि पाकदामन, स्वतंत्र, ईमानवाली स्त्रियों से विवाह कर सके, तो तुम्हारी वे ईमानवाली जवान लौंडियाँ ही सही जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। और अल्लाह तुम्हारे ईमान को भली-भाँति जानता है। तुम सब आपस में एक ही हो, तो उनके मालिकों की अनुमति से तुम उनसे विवाह कर लो और सामान्य नियम के अनुसार उन्हें उनका हक़ भी दो। वे पाकदामनी की सुरक्षा करनेवाली हों, स्वच्छन्द काम-तृप्ति न करनेवाली हों और न वे चोरी-छिपे ग़ैरों से प्रेम करनेवाली हों। फिर जब वे विवाहिता बना ली जाएँ और उसके पश्चात कोई अश्लील कर्म कर बैठें, तो जो दण्ड सम्मानित स्त्रियों के लिए है, उसका आधा उनके लिए होगा। यह तुममें से उस व्यक्ति के लिए है, जिसे ख़राबी में पड़ जाने का

الْعَذَابِ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَأَنْ
تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يُرِيدُ
اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَاللَّهُ
يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ
الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ۝ يُرِيدُ اللَّهُ
أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ ۚ
وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝
وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ
نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ إِنْ تَجْتَنِبُوا
كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

भय हो, और यह कि तुम धैर्य से काम लो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयावान है।

26. अल्लाह चाहता है कि तुमपर स्पष्ट कर दे और तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों पर चलाए, जो तुमसे पहले हुए हैं और तुमपर दयादृष्टि करे। अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, तत्वदर्शी है।

27. और अल्लाह चाहता है कि तुमपर दयादृष्टि करे, किन्तु जो लोग अपनी तुच्छ इच्छाओं का पालन करते हैं, वे चाहते हैं कि तुम राह से हटकर बहुत दूर जा पड़ो।

28. अल्लाह चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका कर दे, क्योंकि इनसान निर्बल पैदा किया गया है।

29. ऐ ईमान लानेवालो! आपस में एक-दूसरे के माल ग़लत तरीक़े से न खाओ— यह और बात है कि तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से कोई सौदा हो—और न अपनों की हत्या करो। निस्संदेह अल्लाह तुमपर बहुत दयावान है।

30. और जो कोई ज़ुल्म और ज़्यादती से ऐसा करेगा, तो उसे हम जल्द ही आग में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिए सरल है।

31. यदि तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहो, जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है, तो

مُّدْخَلًا كَرِيمًا ۝ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ
بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۭ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا
اكْتَسَبُوْا ۭ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۭ وَسْـَٔـلُوا
اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝
وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۭ
وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْھُمْ نَصِيْبَھُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝ اَلرِّجَالُ
قَوّٰمُوْنَ عَلَي النِّسَاۗءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَھُمْ عَلٰي
بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۭ فَالصّٰلِحٰتُ
قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۭ وَالّٰتِيْ
تَخَافُوْنَ نُشُوْزَھُنَّ فَعِظُوْھُنَّ وَاهْجُرُوْھُنَّ فِي
الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْھُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا
عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ۝

ع

منزل ۱

हम तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें प्रतिष्ठित स्थान में प्रवेश कराएँगे।

32. और उसकी कामना न करो, जिसमें अल्लाह ने तुममें किसी को किसी से उच्च रखा है। पुरुषों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है और स्त्रियों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है। अल्लाह से उसका उदार दान चाहो। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

33. और प्रत्येक माल के लिए, जो माँ-बाप और नातेदार छोड़ जाएँ, हमने वारिस ठहरा दिए हैं और जिन लोगों से अपनी क़समों के द्वारा तुम्हारा पक्का मामला हुआ हो, तो उन्हें भी उनका हिस्सा दो। निस्संदेह हर चीज़ अल्लाह के समक्ष है।

34. पति पत्नियों के संरक्षक और निगराँ हैं, क्योंकि अल्लाह ने उनमें से कुछ को कुछ के मुक़ाबले में आगे रखा है, और इसलिए भी कि पतियों ने अपने माल खर्च किए हैं, तो नेक पत्नियाँ तो आज्ञापालन करनेवाली होती हैं और गुप्त बातों की रक्षा करती हैं, क्योंकि अल्लाह ने उनकी रक्षा की है। और जो पत्नियाँ ऐसी हों जिनकी सरकशी का तुम्हें भय हो, उन्हें समझाओ और बिस्तरों में उन्हें अकेली छोड़ दो और (अति आवश्यक हो तो) उन्हें मारो भी। फिर यदि वे तुम्हारी बात मानने लगें, तो उनके विरुद्ध कोई रास्ता न ढूँढो। अल्लाह सबसे उच्च, सबसे बड़ा है।

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ
أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِن يُرِيدَا إِصْلَاحًا
يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ۝
وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ
إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ
وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ
بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ۝
الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ
وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَأَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝ وَالَّذِينَ يُنفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا
بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَمَن يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا

35. और यदि तुम्हें पति-पत्नी के बीच बिगाड़ का भय हो, तो एक फ़ैसला करनेवाला पुरुष के लोगों में से और एक फ़ैसला करनेवाला स्त्री के लोगों में से नियुक्त करो, यदि वे दोनों सुधार करना चाहेंगे, तो अल्लाह उनके बीच अनुकूलता पैदा कर देगा। निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।

36. अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो।

37. वे जो स्वयं कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी पर उभारते हैं और अल्लाह ने अपने उदार दान से जो कुछ उन्हें दे रखा होता है, उसे छिपाते हैं, तो हमने अकृतज्ञ लोगों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

38. वे जो अपने माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, न अल्लाह पर ईमान रखते हैं, न अंतिम दिन पर, और जिस किसी का साथी शैतान हुआ,



तो वह बहुत ही बुरा साथी है।

39. उनका क्या बिगड़ जाता, यदि वे अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है, उसमें से ख़र्च करते? अल्लाह उन्हें भली-भाँति जानता है।

40. निस्संदेह अल्लाह रत्ती-भर भी ज़ुल्म नहीं करता और यदि कोई एक नेकी हो तो वह उसे कई गुना बढ़ा देगा और अपनी ओर से बड़ा बदला देगा।

41. फिर क्या हाल होगा जब हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह लाएँगे और स्वयं तुम्हें इन लोगों के मुक़ाबले में गवाह बनाकर पेश करेंगे?

42. उस दिन वे लोग जिन्होंने इनकार किया होगा और रसूल की अवज्ञा की होगी, यही चाहेंगे कि किसी तरह उन्हें धरती में समोकर उसे बराबर कर दिया जाए। वे अल्लाह से कोई बात भी न छिपा सकेंगे।

43. ऐ ईमान लानेवालो! नशे की दशा में नमाज़ में व्यस्त न हो, जब तक कि तुम यह न जानने लगो कि तुम क्या कह रहे हो। और इसी प्रकार नापाकी की दशा में भी (नमाज़ में व्यस्त न हो), जब तक कि तुम स्नान न कर लो, सिवाय इसके कि तुम सफ़र में हो। और यदि तुम बीमार हो या सफ़र में हो, या तुममें से कोई शौच करके आए या तुमने स्त्रियों को हाथ लगाया हो, फिर तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी से काम लो और उसपर हाथ मारकर अपने चेहरे और हाथों पर मलो। निस्संदेह अल्लाह नर्मी से काम लेनेवाला,

अत्यन्त क्षमाशील है।

44. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें सौभाग्य प्रदान हुआ था अर्थात किताब दी गई थी? वे पथभ्रष्टता के ख़रीदार बने हुए हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ।

45. अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को भली-भाँति जानता है। अल्लाह एक संरक्षक के रूप में काफ़ी है और अल्लाह एक सहायक के रूप में भी काफ़ी है।

46. वे लोग जो यहूदी बन गए, वे शब्दों को उनके स्थानों से दूसरी ओर फेर देते हैं और कहते हैं: "समि'अना व 'असैना" (हमने सुना, लेकिन हम मानते नहीं); और "इसम'अ ग़ै-र मुसम'इन" (सुनो हालाँकि तुम सुनने के योग्य नहीं हो) और "राइना" (हमारी ओर ध्यान दो)—यह वे अपनी ज़बानों को तोड़-मरोड़कर और दीन पर चोटें करते हुए कहते हैं। और यदि वे कहते: "समि'अना व अ-त'अना" (हमने सुना और माना) और "इसम 'अ" (सुनो) और "उनज़ुरना"[1] (हमारी ओर निगाह करो) तो यह उनके लिए अच्छा और अधिक ठीक होता। किन्तु उनपर तो उनके इनकार के कारण अल्लाह की फिटकार पड़ी हुई है। फिर वे ईमान थोड़े ही लाते हैं।

47. ऐ लोगो! जिन्हें किताब दी गई, उस चीज़ को मानो जो हमने उतारी है, जो उसकी पुष्टि में है, जो स्वयं तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को

بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ۝
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ
يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ ۝
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ
بِاللَّهِ نَصِيرًا ۝ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ
الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا
فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
وَاسْمَعْ وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَ
لَٰكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُم مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ
وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا

1. 'समि'अना व अ-त'अना' और 'इसम'अ' और 'उनज़ुरना' के अरबी वाक्यों में इसकी गुंजाइश नहीं पाई जाती कि इनका कोई अनुचित अर्थ लिया जा सके। इसी लिए इन्हीं को प्रयोग करने को ठीक बताया गया।

रूपरेखा को मिटाकर रख दें और उन्हें उनके पीछे की ओर फेर दें या उनपर लानत करें, जिस प्रकार हमने सब्तवालों पर लानत की थी। और अल्लाह का आदेश तो लागू होकर ही रहता है।

48. अल्लाह इसको क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी ठहराया जाए। किन्तु उससे नीचे दर्जे के अपराध को जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा और जिस किसी ने अल्लाह का साझी ठहराया, तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ घड़ लिया।

49. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने को पूर्ण एवं शिष्ट होने का दावा करते हैं? (कोई यूँ ही शिष्ट नहीं हुआ करता) बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है, पूर्णता एवं शिष्टता प्रदान करता है। और उनके साथ तनिक भी अत्याचार नहीं किया जाता।

لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ
ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى
اِثْمًا عَظِيْمًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَھُمْ ۭ
بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاۗءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى
بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا
نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ
وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَاۗءِ اَهْدٰى مِنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۝ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَھُمُ
اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۝
اَمْ لَھُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ
النَّاسَ نَقِيْرًا ۝ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰي

50. देखो तो सही, वे अल्लाह पर कैसा झूठ मढ़ते हैं? खुले गुनाह के लिए तो यही पर्याप्त है।

51. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया? वे अवास्तविक चीज़ों और तागूत (बढ़े हुए सरकश) को मानते हैं। और अधर्मियों के विषय में कहते हैं: "ये ईमानवालों से बढ़कर मार्ग पर हैं।"

52. वही हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की है, और जिसपर अल्लाह लानत कर दे, उसका तुम कोई सहायक कदापि न पाओगे।

53. या बादशाही में इनका कोई हिस्सा है? फिर तो ये लोगों को फूटी कौड़ी तक भी न देते।

54. या ये लोगों से इसलिए ईर्ष्या करते हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपने उदार

مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ۝
فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ
وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا
سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ
بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ ؗ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ
يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا
حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا

दान से अनुगृहीत कर दिया? हमने तो इबराहीम के लोगों को किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) दी और उन्हें बड़ा राज्य प्रदान किया।[1]

55. फिर उनमें से कोई उसपर ईमान लाया और उनमें से किसी ने उससे किनारा खींच लिया। और (ऐसे लोगों के लिए) जहन्नम की भड़कती आग ही काफ़ी है।

56. जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया, उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब भी उनकी खालें पक जाएँगी, तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखते ही रहें। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

57. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाखिल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। उनके लिए वहाँ पाक जोड़े होंगे और हम उन्हें घनी छाँव में दाखिल करेंगे।

58. अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके हक़दारों तक पहुँचा दिया करो। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निस्संदेह,

1. अर्थात उनकी इच्छा के प्रतिकूल हमने इसमाईल की संतान को किताब, हिकमत और महान राज्य प्रदान किया।

بَصِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ
تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ
اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ ذٰلِكَ
خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ
يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ
وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۚ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ
اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ
تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ
الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ۝ فَكَيْفَ اِذَآ
اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ
جَآءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا

अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

59. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल का कहना मानो और उनका भी कहना मानो जो तुममें अधिकारी लोग हैं। फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा हो जाए, तो उसे तुम अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो। यही उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।

60. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जो दावा तो यह करते हैं कि वे उस चीज़ पर ईमान रखते हैं, जो तुम्हारी ओर उतारी गई है और जो तुमसे पहले उतारी गई है। और चाहते हैं कि अपना मामला ताग़ूत के पास ले जाकर फ़ैसला कराएँ, जबकि उन्हें हुक्म दिया गया है कि वे उसका इनकार करें? परन्तु शैतान तो उन्हें भटकाकर बहुत दूर डाल देना चाहता है।

61. और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस चीज़ की ओर जो अल्लाह ने उतारी है और आओ रसूल की ओर, तो तुम मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) को देखते हो कि वे तुमसे कतराकर रह जाते हैं।

62. फिर कैसी बात होगी कि जब उनकी अपनी ही करतूतों के कारण उनपर बड़ी मुसीबत आ पड़ेगी। फिर वे तुम्हारे पास अल्लाह की क़समें खाते

وتوفيقا ۝ أولئك الذين يعلم الله ما في قلوبهم
فأعرض عنهم وعظهم وقل لهم في أنفسهم قولا
بليغا ۝ وما أرسلنا من رسول إلا ليطاع
بإذن الله ولو أنهم إذ ظلموا أنفسهم جاءوك
فاستغفروا الله واستغفر لهم الرسول لوجدوا
الله توابا رحيما ۝ فلا وربك لا يؤمنون
حتى يحكموك فيما شجر بينهم ثم لا يجدوا في
أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا تسليما ۝ ولو
أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا أنفسكم أو اخرجوا
من دياركم ما فعلوه إلا قليل منهم ولو
أنهم فعلوا ما يوعظون به لكان خيرا لهم وأشد
تثبيتا ۝ وإذا لآتيناهم من لدنا أجرا عظيما ۝
ولهديناهم صراطا مستقيما ۝ ومن يطع الله

हुए आते हैं कि हम तो केवल भलाई और बनाव चाहते थे ?

63. ये वे लोग हैं जिनके दिलों की बात अल्लाह भली-भाँति जानता है; तो तुम उन्हें जाने दो और उन्हें समझाओ और उनसे उनके विषय में वह बात कहो जो प्रभावकारी हो।

64. हमने जो रसूल भी भेजा, इसलिए भेजा कि अल्लाह की अनुमति से उसकी आज्ञा का पालन किया जाए। और यदि यह उस समय, जबकि इन्होंने स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म किया था, तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से क्षमा चाहते और रसूल भी इनके लिए क्षमा की प्रार्थना करता तो निश्चय ही वे अल्लाह को अत्यन्त क्षमाशील और दयावान पाते।

65. तो तुम्हें तुम्हारे रब की क़सम ! ये ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के झगड़ों में ये तुमसे फ़ैसला न कराएँ। फिर जो फ़ैसला तुम कर दो, उसपर ये अपने दिल में कोई तंगी न पाएँ और पूरी तरह मान लें।

66. और यदि कहीं हमने उन्हें आदेश दिया होता कि "अपनों को क़त्ल करो[1] या अपने घरों से निकल जाओ", तो उनमें से थोड़े ही ऐसा करते। हालाँकि जो नसीहत उन्हें की जाती है, अगर वे उसे व्यवहार में लाते तो यह बात उनके लिए अच्छी होती और ज़्यादा जमाव पैदा करनेवाली होती।

67. और उस समय हम उन्हें अपनी ओर से निश्चय ही बड़ा बदला प्रदान करते।

68. और उन्हें सीधे मार्ग पर भी लगा देते।

69. जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करता है, तो ऐसे ही लोग

1. यानी अपने उन लोगों को जिन्होंने ऐसे अपराध किए जिनकी सज़ा क़त्ल ही है।


وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ
وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۝ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا
حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انْفِرُوا جَمِيعًا ۝ وَإِنَّ
مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالَ
قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا ۝
وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَنْ لَمْ
تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَا لَيْتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ
فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ
يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ
نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي

उन लोगों के साथ हैं जिनपर अल्लाह की कृपादृष्टि रही है— वे नबी, सिद्दीक़, शहीद और अच्छे लोग हैं। और वे कितने अच्छे साथी हैं।

70. यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है। और काफ़ी है अल्लाह, इस हाल में कि वह भली-भाँति जानता है।

71. ऐ ईमान लानेवालो! अपने बचाव की सामग्री (हथियार आदि) सँभालो। फिर या तो अलग-अलग टुकड़ियों में निकलो या इकट्ठे होकर निकलो।

72. तुममें से कोई ऐसा भी है जो ढीला पड़ जाता है, फिर यदि तुमपर कोई मुसीबत आए तो कहने लगता है कि अल्लाह ने मुझपर कृपा की कि मैं इन लोगों के साथ न गया।

73. परन्तु यदि अल्लाह की ओर से तुमपर कोई उदार अनुग्रह हो तो वह इस प्रकार से जैसे तुम्हारे और उसके बीच प्रेम का कोई संबंध ही नहीं, कहता है : "क्या ही अच्छा होता कि मैं भी उनके साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त करता।"

74. तो जो लोग आख़िरत (परलोक) के बदले सांसारिक जीवन का सौदा करें, उन्हें चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में लड़ें। जो अल्लाह के मार्ग में लड़ेगा, चाहे वह मारा जाए या विजयी रहे, उसे हम शीघ्र ही बड़ा बदला प्रदान करेंगे।

75. तुम्हें क्या हुआ है कि अल्लाह के मार्ग में और उन कमज़ोर पुरुषों, औरतों

سَبِيلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ
هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ
لَدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾
الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ
الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾ أَلَمْ تَرَ
إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ
اللّٰهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ
عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ
مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَىٰ

और बच्चों के लिए युद्ध न करो, जो प्रार्थनाएँ करते हैं कि "हमारे रब ! तू हमें इस बस्ती से निकाल, जिसके लोग अत्याचारी हैं। और हमारे लिए अपनी ओर से तू कोई समर्थक नियुक्त कर और हमारे लिए अपनी ओर से तू कोई सहायक नियुक्त कर।"

76. ईमान लानेवाले तो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करते हैं और अधर्मी लोग तागूत (बढ़े हुए सरकश) के मार्ग में युद्ध करते हैं। अतः तुम शैतान के मित्रों से लड़ो। निश्चय ही, शैतान की चाल बहुत कमज़ोर होती है।

77. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो? फिर जब उन्हें युद्ध का आदेश दिया गया तो क्या देखते हैं कि उनमें से कुछ लोगों का हाल यह है कि वे लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह का डर हो या यह डर उससे भी बढ़कर हो। कहने लगे : "हमारे रब ! तूने हमपर युद्ध क्यों अनिवार्य कर दिया? क्यों न थोड़ी मुहलत हमें और दी?" कह दो : "दुनिया की पूँजी बहुत थोड़ी है, जबकि आख़िरत उस व्यक्ति के लिए अधिक अच्छी है जो अल्लाह

وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ
الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ
حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِندِ اللَّهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ
سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِندِكَ ۚ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِندِ
اللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ
حَدِيثًا ۝ مَّا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ وَمَا
أَصَابَكَ مِن سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ
لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝ مَّن يُطِعِ
الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ
عِندِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۖ
وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ

का डर रखता हो और तुम्हारे साथ तनिक भी अन्याय न किया जाएगा।

78. तुम जहाँ कहीं भी होगे, मृत्यु तो तुम्हें आकर रहेगी; चाहे तुम मज़बूत बुर्जों (क़िलों) में ही (क्यों न) हो।" यदि उन्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है तो कहते हैं : "यह तो अल्लाह के पास से है।" परन्तु यदि उन्हें कोई बुरी हालत पेश आती है तो कहते हैं : "यह तुम्हारे कारण है।" कह दो : "हरेक चीज़ अल्लाह के पास से है।" आख़िर इन लोगों को क्या हो गया है कि ये ऐसे नहीं लगते कि कोई बात समझ सकें?

79. तुम्हें जो भी भलाई प्राप्त होती है, वह अल्लाह की ओर से है और जो बुरी हालत तुम्हें पेश आ जाती है तो वह तुम्हारे अपने ही कारण पेश आती है। हमने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बनाकर भेजा है और (इसपर) अल्लाह का गवाह होना काफ़ी है।

80. जिसने रसूल की आज्ञा का पालन किया, उसने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया और जिसने मुँह मोड़ा तो हमने तुम्हें ऐसे लोगों पर कोई रखवाला बनाकर तो नहीं भेजा है।

81. और वे दावा तो आज्ञापालन का करते हैं, परन्तु जब तुम्हारे पास से हटते हैं तो उनमें एक गिरोह अपने कथन के विपरीत रात में षड्यंत्र करता है। जो कुछ वे षड्यंत्र करते हैं, अल्लाह उसे लिख रहा है। तो तुम उनसे रुख़ फेर लो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह का कार्यसाधक होना काफ़ी है!

82. क्या वे क़ुरआन में सोच-विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह के

الْقُرْاٰنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ
اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ
اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ۚ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ
اِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ
مِنْهُمْ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ
الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا
تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ
اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّ
اَشَدُّ تَنْكِيْلًا ۝ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ
نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ
لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ۝
وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते।

83. जब उनके पास निश्चिन्तता या भय की कोई बात पहुँचती है तो उसे फैला देते हैं, हालाँकि अगर वे उसे रसूल और अपने समुदाय के उत्तरदायी व्यक्तियों तक पहुँचाते तो उसे वे लोग जान लेते जो उनमें उसकी जाँच कर सकते हैं। और यदि तुमपर अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती, तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे चलने लग जाते।

84. अतः अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो——तुमपर तो बस तुम्हारी अपनी ही ज़िम्मेदारी है——और ईमानवालों को कमज़ोरियों को दूर करो और उन्हें (युद्ध के लिए) उभारो। इसकी बहुत संभावना है कि अल्लाह इनकार करनेवालों के ज़ोर को रोक लगा दे। अल्लाह बड़ा ज़ोरवाला और कठोर दण्ड देनेवाला है।

85. जो कोई अच्छी सिफ़ारिश करेगा, उसे उसके कारण प्रतिदान मिलेगा और जो बुरी सिफ़ारिश करेगा, तो उसके कारण उसका बोझ उसपर पड़कर रहेगा। अल्लाह को तो हर चीज़ पर क़ाबू हासिल है।

86. और तुम्हें जब सलामती की कोई दुआ दी जाए, तो तुम सलामती की उससे अच्छी दुआ दो या उसी को लौटा दो। निश्चय ही, अल्लाह हर चीज़ का हिसाब रखता है।

87. अल्लाह के सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। वह तुम्हें क़ियामत के दिन की

إِلَّا هُوَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ
وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝ فَمَا لَكُمْ فِي
الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا ۚ
أَتُرِيدُونَ أَنْ تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَنْ يُضْلِلِ
اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝ وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ
كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً ۖ فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ
أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا
فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ ۖ وَلَا
تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ إِلَّا الَّذِينَ
يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ
حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَنْ يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا
قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ
فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ

ओर ले जाकर इकट्ठा करके रहेगा, जिसके आने में कोई संदेह नहीं, और अल्लाह से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है।

88. फिर तुम्हें क्या हो गया है कि कपटाचारियों (मुनाफ़िक़ों) के विषय में तुम दो गिरोह हो रहे हो, यद्यपि अल्लाह ने तो उनकी करतूतों के कारण उन्हें उल्टा फेर दिया है? क्या तुम उसे मार्ग पर लाना चाहते हो जिसे अल्लाह ने गुमराह छोड़ दिया है? हालाँकि जिसे अल्लाह मार्ग न दिखाए, उसके लिए तुम कदापि कोई मार्ग नहीं पा सकते।

89. वे तो चाहते हैं कि जिस प्रकार वे स्वयं अधर्मी हैं, उसी प्रकार तुम भी अधर्मी बनकर उन जैसे हो जाओ; तो तुम उनमें से अपने मित्र न बनाओ, जब तक कि वे अल्लाह के मार्ग में घरबार न छोड़ें। फिर यदि वे इससे पीठ फेरें तो उन्हें पकड़ो, और उन्हें क़त्ल करो जहाँ कहीं भी उन्हें पाओ—तो उनमें से किसी को न अपना मित्र बनाना और न सहायक—

90. सिवाय उन लोगों के जो ऐसे लोगों से संबंध रखते हों, जिनसे तुम्हारे और उनके बीच कोई समझौता हो या वे तुम्हारे पास इस दशा में आएँ कि उनके दिल इससे तंग हो रहे हों कि वे तुमसे लड़ें या अपने लोगों से लड़ाई करें। यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें तुमपर क़ाबू दे देता। फिर तो वे तुमसे अवश्य लड़ते; तो यदि वे तुमसे अलग रहें और तुमसे न लड़ें और संधि के

السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۝
سَتَجِدُونَ اٰخَرِينَ يُرِيدُونَ اَنْ يَّاْمَنُوكُمْ وَ
يَاْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوْا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوا
فِيهَا فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ
وَيَكُفُّوْا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ
ثَقِفْتُمُوهُمْ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا
مُّبِينًا ۝ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا
خَطَـًٔا وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ
مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ
يَّصَّدَّقُوا فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَاِنْ كَانَ
مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ

लिए तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाएँ तो उनके विरुद्ध अल्लाह ने तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं रखा है।

91. अब तुम कुछ ऐसे लोगों को भी पाओगे, जो चाहते हैं कि तुम्हारी ओर से निश्चिन्त होकर रहें और अपने लोगों की ओर से भी निश्चिन्त होकर रहें। परन्तु जब भी वे फ़साद और उपद्रव की ओर फेरे गए तो वे उसी में औंधे जा गिरे। तो यदि वे तुमसे अलग-थलग न रहें और तुम्हारी ओर सुलह का हाथ न बढ़ाएँ, और अपने हाथ न रोकें, तो तुम उन्हें पकड़ो और क़त्ल करो, जहाँ कहीं भी तुम उन्हें पाओ। उनके विरुद्ध हमने तुम्हें खुला अधिकार दे रखा है।

92. किसी ईमानवाले का यह काम नहीं कि वह किसी ईमानवाले की हत्या करे, भूल-चूक की बात और है। और कोई व्यक्ति यदि ग़लती से किसी ईमानवाले की हत्या कर दे, तो एक मोमिन ग़ुलाम को आज़ाद करना होगा और अर्थदण्ड उस (मारे गए व्यक्ति) के घरवालों को सौंपा जाए। यह और बात है कि वे अपनी ख़ुशी से छोड़ दें। और यदि वह उन लोगों में से हो, जो तुम्हारे शत्रु हों और वह (मारा जानेवाला) स्वयं मोमिन रहा हो तो एक मोमिन को ग़ुलामी से आज़ाद करना होगा। और यदि वह उन लोगों में से हो कि तुम्हारे और उनके बीच कोई संधि और समझौता हो, तो अर्थदण्ड उसके घरवालों को सौंपा जाए और एक मोमिन को ग़ुलामी से आज़ाद करना होगा। लेकिन जो (ग़ुलाम) न पाए तो वह निरन्तर दो मास के रोज़े रखे। यह अल्लाह

की ओर से निश्चित किया हुआ उसकी तरफ़ पलट आने का तरीक़ा है। अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

93. और जो व्यक्ति जान-बूझकर किसी मोमिन की हत्या करे, तो उसका बदला जहन्नम है, जिसमें वह सदा रहेगा; उसपर अल्लाह का प्रकोप और उसकी फिटकार है और उसके लिए अल्लाह ने बड़ी यातना तैयार कर रखी है।

94. ऐ ईमान लानेवालो! जब तुम अल्लाह के मार्ग में निकलो तो अच्छी तरह पता लगा लो और जो तुम्हें सलाम करे, उससे यह न कहो कि तुम ईमान नहीं रखते, और इससे तुम्हारा ध्येय यह हो कि सांसारिक जीवन का माल प्राप्त करो। अल्लाह के पास तो बहुत अधिक प्राप्त माल है। पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुमपर उपकार किया, तो अच्छी तरह पता लगा लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

95. ईमानवालों में से वे लोग जो बिना किसी कारण के बैठे रहते हैं और जो अल्लाह के मार्ग में अपने धन और प्राणों के साथ जी-तोड़ कोशिश करते हैं, दोनों समान नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठ रहनेवालों की अपेक्षा अपने धन और प्राणों से जी-तोड़ कोशिश करनेवालों का दर्जा बढ़ा रखा है। यद्यपि

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً
مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ
يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا
فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا
عَظِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى
اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۚ كَذٰلِكَ
كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۚ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ لَا يَسْتَوِي
الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَ
الْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ

عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۚ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
الْحُسْنٰى ۚ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ
اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ۚ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ۚ
قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ قَالُوْٓا اَلَمْ
تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ۚ
فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝
اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَ
الْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ
سَبِيْلًا ۝ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ
وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ۝ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا

प्रत्येक के लिए अल्लाह ने अच्छे बदले का वचन दिया है। परन्तु अल्लाह ने बैठ रहनेवालों की अपेक्षा जी-तोड़ कोशिश करनेवालों का बड़ा बदला रखा है।

96. उसकी ओर से दर्जे हैं और क्षमा और दयालुता है। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

97. जो लोग अपने-आप पर अत्याचार करते हैं, जब फ़रिश्ते उस दशा में उनके प्राण ग्रस्त कर लेते हैं, तो कहते हैं : "तुम किस दशा में पड़े रहे?" वे कहते हैं : "हम धरती में निर्बल और बेबस थे।" फ़रिश्ते कहते हैं : "क्या अल्लाह की धरती विस्तृत न थी कि तुम उसमें घर-बार छोड़कर कहीं चले जाते?" तो ये वही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है।—और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

98. सिवाय उन बेबस पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के जिनके बस में कोई उपाय नहीं और न कोई राह पा रहे हैं;

99. तो संभव है कि अल्लाह ऐसे लोगों को छोड़ दे; क्योंकि अल्लाह छोड़ देनेवाला और बड़ा क्षमाशील है।

100. जो कोई अल्लाह के मार्ग में घरबार छोड़कर निकलेगा, वह धरती में शरण लेने की बहुत जगह और समाई पाएगा, और जो कोई अपने घर में सब

وَسَعَةً ۚ وَمَن يَخْرُجْ مِن بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى
اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ
أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا
وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
أَن تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَن يَفْتِنَكُمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا
مُّبِينًا وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ
فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِّنْهُم مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ
فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِن وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ
طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ
وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَدَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ
فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُم مَّيْلَةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ

कुछ छोड़कर अल्लाह और उसके रसूल की ओर निकले और उसकी मृत्यु हो जाए, तो उसका प्रतिदान अल्लाह के ज़िम्मे हो गया। अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयावान है।

101. और जब तुम धरती में यात्रा करो, तो इसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं कि नमाज़ को कुछ संक्षिप्त कर दो; यदि तुम्हें इस बात का भय हो कि विधर्मी लोग तुम्हें सताएँगे और कष्ट पहुँचाएँगे। निश्चय ही विधर्मी लोग तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

102. और जब तुम उनके बीच हो और (लड़ाई की दशा में) उन्हें नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हो, तो चाहिए कि उनमें से एक गिरोह के लोग तुम्हारे साथ खड़े हो जाएँ और अपने हथियार साथ लिए रहें, और फिर जब वे सजदा कर लें तो उन्हें चाहिए कि वे हटकर तुम्हारे पीछे हो जाएँ और दूसरे गिरोह के लोग, जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी, आएँ और तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें, और उन्हें भी चाहिए कि वे भी अपने बचाव के सामान और हथियार लिए रहें। विधर्मी चाहते ही हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से असावधान हो जाओ तो वे तुमपर एक साथ टूट पड़ें। यदि वर्षा के कारण तुम्हें तकलीफ़ होती हो या तुम बीमार हो, तो

عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّنْ مَّطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ
مَّرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوٓا أَسْلِحَتَكُمْ ۖ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ
إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝ فَإِذَا
قَضَيْتُمُ الصَّلَوٰةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَ
عَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ ۚ
إِنَّ الصَّلَوٰةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا ۝
وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۖ إِنْ تَكُونُوا تَأْلَمُونَ
فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۖ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ
مَا لَا يَرْجُونَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ إِنَّآ
أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَآ أَرَاكَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ۝
وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝
وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ إِنَّ

तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि अपने हथियार रख दो, फिर भी अपनी सुरक्षा का सामान लिए रहो। अल्लाह ने विधर्मियों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

103. फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते रहो। फिर जब तुम्हें इतमीनान हो जाए तो विधिवत रूप से नमाज़ पढ़ो। निस्संदेह ईमानवालों पर समय की पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है।

104. और उन लोगों का पीछा करने में सुस्ती न दिखाओ। यदि तुम्हें दुख पहुँचता है; तो उन्हें भी तो दुख पहुँचता है, जिस तरह तुमको दुख पहुँचता है। और तुम अल्लाह से उस चीज़ की आशा करते हो, जिस चीज़ की वे आशा नहीं करते। अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

105. निस्संदेह हमने यह किताब हक़ के साथ उतारी है, ताकि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिखाया है उसके अनुसार लोगों के बीच फ़ैसला करो। और तुम विश्वासघाती लोगों की ओर से झगड़नेवाले न बनो।

106. अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयावान है।

107. और तुम उन लोगों की ओर से न झगड़ो जो स्वयं अपनों के साथ विश्वासघात करते हैं। अल्लाह को ऐसा व्यक्ति प्रिय नहीं है जो विश्वासघाती,

اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۚ يَّسْتَخْفُوْنَ
مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ
اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝ هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ
عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝
وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ
اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّكْسِبْ
اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْۗئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ
يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗـــًٔـا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ ع
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ
طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ

हक़ मारनेवाला हो।

108. वे लोगों से तो छिपते हैं, परन्तु अल्लाह से नहीं छिपते। वह तो (उस समय भी) उनके साथ होता है, जब वे रातों में उस बात की गुप्त-मन्त्रणा करते हैं जो उनकी इच्छा के विरुद्ध होती है। जो कुछ वे करते हैं, वह अल्लाह (के ज्ञान) से आच्छादित है।

109. हाँ, ये तुम ही हो, जिन्होंने सांसारिक जीवन में उनकी ओर से झगड़ लिया, परन्तु क़ियामत के दिन उनकी ओर से अल्लाह से कौन झगड़ेगा या कौन उनका वकील होगा?

110. और जो कोई बुरा कर्म कर बैठे या अपने-आप पर अत्याचार करे, फिर अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करे, तो वह अल्लाह को बड़ा क्षमाशील, दयावान पाएगा।

111. और जो व्यक्ति गुनाह कमाए, तो वह अपने ही लिए कमाता है। अल्लाह तो सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

112. और जो व्यक्ति कोई ग़लती या गुनाह की कमाई करे, फिर उसे किसी निर्दोष पर थोप दे, तो उसने एक बड़े लांछन और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर ले लिया।

113. यदि तुमपर अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती तो उनमें से कुछ लोग तो यह निश्चय कर ही चुके थे कि तुम्हें राह से भटका दें, हालाँकि वे अपने आप ही को पथभ्रष्ट कर रहे हैं, और तुम्हें वे कोई हानि

أَنفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن شَيْءٍ وَأَنزَلَ اللَّهُ
عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن
تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝ لَا خَيْرَ
فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ
مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَن يَفْعَلْ
ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا
عَظِيمًا ۝ وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ
نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝
إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ
ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ
ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا
وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ۝ لَّعَنَهُ اللَّهُ

नहीं पहुँचा सकते। अल्लाह ने तुमपर किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) उतारी है और उसने तुम्हें वह कुछ सिखाया जो तुम जानते न थे। और अल्लाह का तुमपर बहुत बड़ा अनुग्रह है।

114. उनकी अधिकतर काना-फूसियों में कोई भलाई नहीं होती। हाँ, जो व्यक्ति सदक़ा देने या भलाई करने या लोगों के बीच सुधार के लिए कुछ कहे, तो उसकी बात और है। और जो कोई यह काम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए करेगा, उसे हम निश्चय ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेंगे।

115. और जो व्यक्ति, इसके पश्चात भी कि मार्गदर्शन खुलकर उसके सामने आ गया है, रसूल का विरोध करेगा और ईमानवालों के मार्ग के अतिरिक्त किसी और मार्ग पर चलेगा तो उसे हम उसी पर चलने देंगे, जिसको उसने अपनाया होगा और उसे जहन्नम में झोंक देंगे, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

116. निस्संदेह अल्लाह इस चीज़ को क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को शामिल किया जाए। हाँ, इससे नीचे दर्जे के अपराध को, जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराता है, तो वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा।

117. वे अल्लाह से हटकर बस कुछ देवियों को पुकारते हैं। और वे तो बस सरकश शैतान को पुकारते हैं;

118. जिसपर अल्लाह की फिटकार है। उसने कहा था : "मैं तेरे बन्दों में

से एक निश्चित हिस्सा लेकर रहूँगा।

119. और उन्हें अवश्य ही भटकाऊँगा और उन्हें कामनाओं में उलझाऊँगा, और उन्हें हुक्म दूँगा तो वे चौपायों के कान फाड़ेंगे, और उन्हें मैं सुझाव दूँगा तो वे अल्लाह की संरचना में परिवर्तन करेंगे।" और जिसने अल्लाह से हटकर शैतान को अपना संरक्षक और मित्र बनाया, वह खुले घाटे में पड़ गया।

120. वह उनसे वादा करता है और उन्हें कामनाओं में उलझाए रखता है, हालाँकि शैतान उनसे जो कुछ वादा करता है वह एक धोके के सिवा कुछ भी नहीं होता।

121. वही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वे उससे अलग होने की कोई जगह न पाएँगे।

122. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन हो सकता है?

123. बात न तुम्हारी कामनाओं की है और न किताबवालों की कामनाओं की। जो भी बुराई करेगा उसे उसका फल मिलेगा और वह अल्लाह से हटकर न तो कोई मित्र पाएगा और न ही सहायक।

124. किन्तु जो अच्छे कर्म करेगा, चाहे पुरुष हो या स्त्री, यदि वह ईमान-

وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا
وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ
اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۭ
وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ
خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ۭ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ۭ وَمَا
يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۔ اُولٰۗىِٕكَ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۡ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ۔ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقًّا ۭ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ۝ لَيْسَ
بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ۭ مَنْ يَّعْمَلْ
سُوْۗءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا
وَّلَا نَصِيْرًا ۔ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ

اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ
وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ۝ وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ
اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ
اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ۝
وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ وَكَانَ
اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطًا ۝ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِى
النِّسَآءِ ۗ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فِى الْكِتٰبِ فِىْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِىْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ
مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَ
الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى
بِالْقِسْطِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِهٖ عَلِيْمًا ۝ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا
نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا

वाला है तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। और उनका हक़ रत्ती भर भी मारा नहीं जाएगा।

125. और दीन (धर्म) की दृष्टि से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है, जिसने अपने आपको अल्लाह के आगे झुका दिया और वह अत्यन्त सत्कर्मी भी हो और इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण करे, जो सबसे कटकर एक का हो गया था? अल्लाह ने इबराहीम को अपना घनिष्ठ मित्र बनाया था।

126. जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, वह अल्लाह ही का है और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।

127. लोग तुमसे स्त्रियों के विषय में पूछते हैं, कहो : "अल्लाह तुम्हें उनके विषय में हुक्म देता है और जो आयतें तुमको इस किताब में पढ़कर सुनाई जाती हैं, वे उन स्त्रियों के अनाथों के विषय में भी हैं, जिनके हक़ तुम अदा नहीं करते। और चाहते हो कि तुम उनके साथ विवाह कर लो और कमज़ोर यतीम बच्चों के बारे में भी यही आदेश है। और इस विषय में भी कि तुम अनाथों के विषय में इनसाफ़ पर क़ायम रहो। जो भलाई भी तुम करोगे तो निश्चय ही, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता होगा।"

128. यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से दुर्व्यवहार या बेरुख़ी का भय हो, तो इसमें उनके लिए कोई दोष नहीं कि वे दोनों आपस में मेल-मिलाप की कोई राह निकाल लें। और मेल-मिलाप अच्छी चीज़ है। और

بينهما صلحا والصلح خير واحضرت الانفس
الشح وان تحسنوا وتتقوا فان الله كان بما
تعملون خبيرا ۝ ولن تستطيعوا ان تعدلوا بين
النساء ولو حرصتم فلا تميلوا كل الميل فتذروها
كالمعلقة وان تصلحوا وتتقوا فان الله
كان غفورا رحيما ۝ وان يتفرقا يغن الله كلا
من سعته وكان الله واسعا حكيما ۝ ولله ما
في السموت وما في الارض ولقد وصينا الذين
اوتوا الكتب من قبلكم واياكم ان اتقوا الله
وان تكفروا فان لله ما في السموت وما في الارض
وكان الله غنيا حميدا ۝ ولله ما في السموت
وما في الارض وكفى بالله وكيلا ۝ ان يشا
يذهبكم ايها الناس ويات باخرين وكان

मन तो लोभ एवं कृपणता के लिए उद्यत रहता है। परन्तु यदि तुम अच्छा व्यवहार करो और (अल्लाह का) भय रखो, तो अल्लाह को निश्चय ही जो कुछ तुम करोगे उसकी ख़बर रहेगी।

129. और चाहे तुम कितना ही चाहो, तुममें इसकी सामर्थ्य नहीं हो सकती कि औरतों के बीच पूर्ण रूप से न्याय कर सको। तो ऐसा भी न करो कि किसी से पूर्णरूप से फिर जाओ, जिसके परिणामस्वरूप वह ऐसी हो जाए, जैसे उसका पति खो गया हो। परन्तु यदि तुम अपना व्यवहार ठीक रखो और (अल्लाह से) डरते रहो, तो निस्संदेह अल्लाह भी बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

130. और यदि दोनों अलग ही हो जाएँ तो अल्लाह अपनी समाई से एक को दूसरे से बेपरवाह कर देगा। अल्लाह बड़ी समाईवाला, तत्वदर्शी है।

131. आकाशों और धरती में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का है। तुमसे पहले जिन्हें किताब दी गई थी, उन्हें और तुम्हें भी हमने ताकीद की है कि "अल्लाह का डर रखो।" यदि तुम इनकार करते हो, तो इससे क्या होने का? आकाशों और धरती में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का रहेगा। अल्लाह तो निस्पृह, प्रशंसनीय है।

132. हाँ, आकाशों और धरती में जो कुछ है, अल्लाह ही का है और अल्लाह कार्यसाधक की हैसियत से काफ़ी है।

133. ऐ लोगो! यदि वह चाहे तो तुम्हें हटा दे और तुम्हारी जगह दूसरों को

اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ
الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا
قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ
اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا
فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ
وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ
الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ
بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ
كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ

ले आए। अल्लाह को इसकी पूरी सामर्थ्य है।

134. जो कोई दुनिया का बदला चाहता है, तो अल्लाह के पास दुनिया का बदला भी है और आख़िरत का भी। अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

135. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इनसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) अल्लाह को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का संबंध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर रहेगी।

136. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उस किताब पर भी, जिसको वह इसके पहले उतार चुका है। और जिस किसी ने भी अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और अंतिम दिन का इनकार किया, तो वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा।

137. रहे वे लोग जो ईमान लाए, फिर इनकार किया; फिर ईमान लाए, फिर इनकार किया; फिर इनकार की दशा में बढ़ते चले गए तो अल्लाह उन्हें कदापि

وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۝ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَاءَ
مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ
فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا ۝ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي
الْكِتٰبِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ
يُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوضُوا فِي
حَدِيثٍ غَيْرِهٖ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِثْلُهُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ
الْمُنٰفِقِينَ وَالْكٰفِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۝ الَّذِينَ
يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِنَ اللّٰهِ قَالُوا
أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۚ وَإِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِينَ نَصِيبٌ ۚ قَالُوا
أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَاللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلَنْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِينَ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۝ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ يُخٰدِعُونَ

क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें राह दिखाएगा।

138. मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) को मंगल-सूचना दे दो कि उनके लिए दुखद यातना है;

139. जो ईमानवालों को छोड़कर इनकार करनेवालों को अपना मित्र बनाते हैं। क्या उन्हें उनके पास प्रतिष्ठा की तलाश है? प्रतिष्ठा तो सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है।

140. वह 'किताब' में तुमपर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इनकार किया जा रहा है और उनका उपहास किया जा रहा है, तो जब तक वे किसी दूसरी बात में न लग जाएँ, उनके साथ न बैठो, अन्यथा तुम भी उन्हीं जैसे होगे : निश्चय ही अल्लाह कपटाचारियों और इनकार करनेवालों— सबको जहन्नम में एकत्र करनेवाला है।

141. जो तुम्हारे मामले में प्रतीक्षा करते हैं, यदि अल्लाह की ओर से तुम्हारी विजय हुई, तो कहते हैं : "क्या हम तुम्हारे साथ न थे?" और यदि विधर्मियों के हाथ कुछ लगा तो कहते हैं : "क्या हमने तुम्हें घेर नहीं लिया था और तुम्हें ईमानवालों से बचाया नहीं?" अतः अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा, और अल्लाह विधर्मियों को ईमानवालों के मुक़ाबले में कोई राह नहीं देगा।

142. कपटाचारी अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालाँकि उसी ने

اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَإِذَا قَامُوْٓا إِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا
كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ إِلَّا
قَلِيْلًا ۝ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ
وَلَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ
سَبِيْلًا ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا
الْكٰفِرِيْنَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ أَتُرِيْدُوْنَ
أَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ إِنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ
تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۝ إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَأَصْلَحُوْا
وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَأَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَأُولٰٓئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ
أَجْرًا عَظِيْمًا ۝ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ
شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝

उन्हें धोखे में डाल रखा है। जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो कसमसाते हुए, लोगों को दिखाने के लिए खड़े होते हैं। और अल्लाह को थोड़े ही याद करते हैं।

143. इसी के बीच डाँवाडोल हो रहे हैं, न इन (ईमानवालों) की तरफ़ के हैं, न इन (इनकार करनेवालों) की तरफ़ के। जिसे अल्लाह ही भटका दे, उसके लिए तो तुम कोई राह नहीं पा सकते।

144. ऐ ईमान लानेवालो! ईमानवालों से हटकर इनकार करनेवालों को अपना मित्र न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह का स्पष्ट तर्क अपने विरुद्ध जुटाओ?

145. निस्संदेह कपटाचारी आग (जहन्नम) के सबसे निचले खण्ड में होंगे, और तुम कदापि उनका कोई सहायक न पाओगे।

146. उन लोगों की बात और है जिन्होंने तौबा कर ली और अपने को सुधार लिया और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लिया और अपने दीन (धर्म) में अल्लाह ही के हो रहे। ऐसे लोग ईमानवालों के साथ हैं और अल्लाह ईमानवालों को शीघ्र ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेगा।

147. अल्लाह को तुम्हें यातना देकर क्या करना है, यदि तुम कृतज्ञता दिखलाओ और ईमान लाओ? अल्लाह गुणग्राहक, सब कुछ जाननेवाला है।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ
ظُلِمَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا
اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْۗءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا
قَدِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ
نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ
حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ
اُولٰۗىِٕكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ يَسْـَٔــلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ
عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ
مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ

148. अल्लाह बुरी बात खुल्लम-खुल्ला कहने को पसंद नहीं करता, मगर उसकी बात और है जिसपर ज़ुल्म किया गया हो। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

149. यदि तुम खुले रूप में नेकी और भलाई करो या उसे छिपाओ या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो अल्लाह भी क्षमा करनेवाला, सामर्थ्यवान है।

150. जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते हैं कि "हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते" और इस तरह वे चाहते हैं कि बीच की कोई राह अपनाएँ;

151. वही लोग पक्के इनकार करनेवाले हैं और हमने इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

152. रहे वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं और उनमें से किसी को उस संबंध में पृथक नहीं करते जो उनके बीच पाया जाता है, ऐसे लोगों को अल्लाह शीघ्र ही उनके प्रतिदान प्रदान करेगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

153. किताबवालों की तुमसे माँग है कि तुम उनपर आकाश से कोई किताब उतार लाओ, तो वे तो मूसा से इससे भी बड़ी माँग कर चुके हैं। उन्होंने कहा था : "हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष दिखा दो", तो उनके इस अपराध पर बिजली की कड़क ने उन्हें आ दबोचा। फिर वे बछड़े को अपना उपास्य

الصَّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَٰلِكَ ۚ وَآتَيْنَا
مُوسَىٰ سُلْطَٰنًا مُبِينًا ۝ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ
بِمِيثَٰقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا
لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَٰقًا
غَلِيظًا ۝ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَٰقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِآيَٰتِ
اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا
غُلْفٌ ۚ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝ وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ
بُهْتَٰنًا عَظِيمًا ۝ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ
عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا
صَلَبُوهُ وَلَٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا
فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ ۚ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا

बना बैठे, हालाँकि उनके पास खुली-खुली निशानियाँ आ चुकी थीं। फिर हमने उसे भी क्षमा कर दिया और मूसा को स्पष्ट बल एवं प्रभाव प्रदान किया।

154. और उन लोगों से वचन लेने के साथ तूर (पहाड़) को उनपर उठा दिया और उनसे कहा : "दरवाज़े में सजदा करते हुए प्रवेश करो।" और उनसे कहा : "सब्त (सामूहिक इबादत का दिन) के विषय में ज़्यादती न करना।" और हमने उनसे बहुत-ही दृढ़ वचन लिया था।

155. फिर उनके अपने वचन भंग करने और अल्लाह की आयतों का इनकार करने के कारण और नबियों को नाहक़ क़त्ल करने और उनके यह कहने के कारण कि "हमारे हृदय आवरणों में सुरक्षित हैं"—— नहीं, बल्कि वास्तव में उनके इनकार के कारण अल्लाह ने उनके दिलों पर ठप्पा लगा दिया है। तो ये ईमान थोड़े ही लाते हैं।

156. और उनके इनकार के कारण और मरयम के ख़िलाफ़ ऐसी बात कहन पर जो एक बड़ा लांछन था——

157. और उनके इस कथन के कारण कि हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह, अल्लाह के रसूल, को क़त्ल कर डाला—— हालाँकि न तो इन्होंने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध हो गया। और जो लोग इसमें विभेद कर रहे हैं, निश्चय ही वे इस मामले में सन्देह में थे। अटकल पर चलने के अतिरिक्त उनके पास कोई ज्ञान न था।

اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۚ بَلْ رَّفَعَهُ اللَّهُ
إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۚ وَإِن مِّنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۚ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَن
سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۚ وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا
عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ لَّٰكِنِ الرَّاسِخُونَ
فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ
إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ ۚ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ
وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ إِنَّا أَوْحَيْنَا
إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِن بَعْدِهِ ۚ

निश्चय ही उन्होंने उसे (ईसा को) क़त्ल नहीं किया,

158. बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया। और अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

159. किताबवालों में से कोई ऐसा न होगा, जो उसकी मृत्यु से पहले उसपर ईमान न ले आए। और वह क़ियामत के दिन उनपर गवाह होगा।

160. सारांश यह कि यहूदियों के अत्याचार के कारण हमने बहुत-सी अच्छी पाक चीज़ें उनपर हराम कर दीं, जो उनके लिए हलाल थीं और उनके प्राय: अल्लाह के मार्ग से रोकने के कारण;

161. और उनके ब्याज लेने के कारण, जबकि उन्हें इससे रोका गया था। और उनके अवैध रूप से लोगों के माल खाने के कारण ऐसा किया गया और हमने उनमें से जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए दुखद यातना तैयार कर रखी है।

162. परन्तु उनमें से जो लोग ज्ञान में पक्के हैं और ईमानवाले हैं, वे उस पर ईमान रखते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया है और जो तुमसे पहले उतारा गया था, और जो विशेष रूप से नमाज़ क़ायम करते, ज़कात देते और अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं। यही लोग हैं जिन्हें हम शीघ्र ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेंगे।

163. हमने तुम्हारी ओर उसी प्रकार वह्य की है जिस प्रकार नूह और उसके बाद के नबियों की ओर वह्य की। और हमने इबराहीम, इसमाईल,

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ
وَسُلَيْمَانَ ۚ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ۝ وَرُسُلًا قَدْ
قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ
عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ۝ رُّسُلًا
مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ
حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝
لَّٰكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنزَلَ إِلَيْكَ ۖ أَنزَلَهُ بِعِلْمِهِ ۖ
وَالْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ
ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا
لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۝
إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَكَانَ

इसहाक़ और याक़ूब और उसकी संतान और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की ओर भी वह्य की। और हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान किया।

164. और कितने ही रसूल हुए जिनका वृतान्त पहले हम तुमसे बयान कर चुके हैं और कितने ही ऐसे रसूल हुए जिनका वृत्तान्त हमने तुमसे नहीं बयान किया। और मूसा से अल्लाह ने बातचीत की, जिस प्रकार बातचीत की जाती है।

165. रसूल शुभ समाचार देनेवाले और सचेत करनेवाले बनाकर भेजे गए हैं, ताकि रसूलों के पश्चात लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में (अपने निर्दोष होने का) कोई तर्क न रहे। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

166. परन्तु अल्लाह गवाही देता है कि उसके द्वारा जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है कि उसे उसने अपने ज्ञान के साथ उतारा है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं, यद्यपि अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है।

167. निश्चय ही, जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका, वे भटककर बहुत दूर जा पड़े।

168. जिन लोगों ने इनकार किया और ज़ुल्म पर उतर आए, उन्हें अल्लाह कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें कोई मार्ग दिखाएगा।

169. सिवाय जहन्नम के मार्ग के, जिसमें वे सदैव पड़े रहेंगे। और यह अल्लाह

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ
جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا
لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ يٰٓاَهْلَ
الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ
اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ
وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ؗ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا
اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝
لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا
الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ
عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ۝

के लिए बहुत-ही सहज बात है।

170. ऐ लोगो! रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य लेकर आ गया है। अत: तुम उस भलाई को मानो जो तुम्हारे लिए जुटाई गई है। और यदि तुम इनकार करते हो तो आकाशों और धरती में जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है। और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

171. ऐ किताबवालो! अपने धर्म में हद से आगे न बढ़ो और अल्लाह से जोड़कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहो। मरयम का बेटा मसीह-ईसा इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि अल्लाह का रसूल है और उसका एक 'कलिमा' है, जिसे उसने मरयम की ओर भेजा था। और उसकी ओर से एक रूह है। तो तुम अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और "तीन" न कहो—— बाज़ आ जाओ! यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है—— अल्लाह तो केवल अकेला पूज्य है। यह उसकी महानता के प्रतिकूल है कि उसका कोई बेटा हो। आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी का है। और अल्लाह कार्यसाधक की हैसियत से काफ़ी है।

172. मसीह ने कदापि अपने लिए बुरा नहीं समझा कि वह अल्लाह का बन्दा हो और न निकटवर्ती फ़रिश्तों ने ही (इसे बुरा समझा)। और जो कोई अल्लाह की बन्दगी को अपने लिए बुरा समझेगा और घमण्ड करेगा,-तो वह (अल्लाह) उन सभी लोगों को अपने पास इकट्ठा करके रहेगा।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ
أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا
وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ
لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَا
إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ﴿١٧٤﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا
بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ
إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٧٥﴾ يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ
يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ
وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا
إِن لَّمْ يَكُن لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا
الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً
فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
أَن تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾

173. अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, तो अल्लाह उन्हें उनका पूरा-पूरा बदला देगा और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करेगा। और जिन लोगों ने बन्दगी को बुरा समझा और घमण्ड किया, तो उन्हें वह दुखद यातना देगा। और वे अल्लाह से बच सकने के लिए न अपना कोई निकट का समर्थक पाएँगे और न ही कोई सहायक।

174. ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुला प्रमाण आ चुका है और हमने तुम्हारी ओर एक स्पष्ट प्रकाश उतारा है।

175. तो रहे वे लोग जो अल्लाह पर ईमान लाए और उसे मज़बूती के साथ पकड़े रहे, उन्हें वह शीघ्र ही अपनी दयालुता और अपने उदार अनुग्रह के क्षेत्र में दाखिल करेगा और उन्हें अपनी ओर का सीधा मार्ग दिखा देगा।

176. वे तुमसे आदेश मालूम करना चाहते हैं। कह दो : "अल्लाह तुम्हें ऐसे व्यक्ति के विषय में, जिसका कोई वारिस न हो, आदेश देता है—— यदि किसी पुरुष की मृत्यु हो जाए जिसकी कोई संतान न हो, परन्तु उसकी एक बहन हो, तो जो कुछ उसने छोड़ा है उसका आधा हिस्सा उस बहन का होगा। और भाई बहन का वारिस होगा, यदि उस (बहन) की कोई संतान न हो। और यदि (वारिस) दो बहनें हों, तो जो कुछ उसने छोड़ा है, उसमें से उनके लिए दो-तिहाई होगा। और यदि कई भाई-बहन (वारिस) हों तो एक पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के बराबर होगा।"

अल्लाह तुम्हारे लिए आदेशों को स्पष्ट करता है, ताकि तुम न भटको। और अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है।

5. अल-माइदा

(मदीना में उतरी— आयतें 120)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ ईमान लानेवालो! प्रतिबंधों (प्रतिज्ञाओं, समझौतों आदि) का पूर्ण रूप से पालन करो। तुम्हारे लिए चौपायों की जाति के जानवर हलाल हैं सिवाय उनके जो तुम्हें बताए जा रहे हैं; (हलाल जानवरों को खाओ) लेकिन जब तुम इहराम[1] की दशा में हो तो शिकार को हलाल न


سورة المائدة مدنية
بسم الله الرحمن الرحيم
يا أيها الذين آمنوا أوفوا بالعقود ۚ أحلت لكم
بهيمة الأنعام إلا ما يتلى عليكم غير محلي
الصيد وأنتم حرم ۗ إن الله يحكم ما يريد
يا أيها الذين آمنوا لا تحلوا شعائر الله ولا
الشهر الحرام ولا الهدي ولا القلائد ولا
آمين البيت الحرام يبتغون فضلا من ربهم
ورضوانا ۚ وإذا حللتم فاصطادوا ۚ ولا يجرمنكم
شنآن قوم أن صدوكم عن المسجد الحرام أن
تعتدوا ۘ وتعاونوا على البر والتقوى ۖ ولا تعاونوا
على الإثم والعدوان ۚ واتقوا الله ۖ إن الله شديد

समझना। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, आदेश देता है।

2. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह की निशानियों का अनादर न करो; न आदर के महीनों का, न क़ुरबानी के जानवरों का और न उन जानवरों का जिनकी गरदनों में पट्टे पड़े हों और न उन लोगों का जो अपने रब के अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता की चाह में प्रतिष्ठित गृह (काबा) को जाते हों। और जब इहराम की दशा से बाहर हो जाओ तो शिकार करो। और ऐसा न हो कि एक गिरोह की शत्रुता, जिसने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर का रास्ता बन्द कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लगो। हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो। अल्लाह का डर रखो; निश्चय ही अल्लाह बड़ा कठोर दण्ड देनेवाला है।

---

1. हज और उमरा के अवसर पर पहना जानेवाला विशेष परिधान।

الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ
الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ
وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ
السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَ
أَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌ الْيَوْمَ يَئِسَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ
الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ
نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ
فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ
الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

3. तुम्हारे लिए हराम हुआ मुर्दार, रक्त, सूअर का मांस और वह जानवर जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो और वह जो घुटकर या चोट खाकर या ऊँचाई से गिरकर या सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी हिंसक पशु ने फाड़ खाया हो—सिवाय उसके जिसे तुमने ज़बह कर लिया हो—और वह जो किसी थान पर ज़बह किया गया हो। और यह भी (तुम्हारे लिए हराम है) कि तीरों के द्वारा क़िस्मत मालूम करो। यह आज्ञा का उल्लंघन है— आज इनकार करनेवाले तुम्हारे धर्म की ओर से निराश हो चुके हैं, तो तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम[1] को पसन्द किया— तो जो कोई भूख से विवश हो जाए, परन्तु गुनाह की ओर उसका झुकाव न हो, तो निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

4. वे तुमसे पूछते हैं कि "उनके लिए क्या हलाल है?" कह दो : "तुम्हारे लिए सारी अच्छी स्वच्छ चीज़ें हलाल हैं और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधे हुए शिकारी जानवर के रूप में सधा रखा हो— जिनको जैसा अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, सिखाते हो— वे जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़े रखें, उसको खाओ और उसपर अल्लाह का नाम लो। और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह जल्द हिसाब लेनेवाला है।"

---

1. अर्थात पूरा जीवन अल्लाह की इच्छा के अनुसार व्यतीत करना।

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۖ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ أُوْتُوا
الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۖ وَالْمُحْصَنٰتُ
مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ أَخْدَانٍ ۗ وَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالْإِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ
الْخٰسِرِيْنَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى
الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۗ وَإِنْ
كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۗ وَإِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى أَوْ عَلٰى
سَفَرٍ أَوْ جَآءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ أَوْ لٰمَسْتُمُ
النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَأَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ۗ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

5. आज तुम्हारे लिए अच्छी स्वच्छ चीज़ें हलाल कर दी गईं और जिन्हें किताब दी गई उनका भोजन भी तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा भोजन उनके लिए हलाल है और शरीफ़ और स्वतंत्र ईमानवाली स्त्रियाँ भी, और वे शरीफ़ और स्वतंत्र स्त्रियाँ भी जो तुमसे पहले के किताबवालों में से हों, जबकि तुम उनका हक़ (महर) देकर उन्हें निकाह में लाओ। न तो यह काम स्वच्छंद कामतृप्ति के लिए हो और न चोरी-छिपे याराना करने को। और जिस किसी ने ईमान से इनकार किया, उसका सारा किया-धरा अकारथ गया और वह आख़िरत में भी घाटे में रहेगा।

6. ऐ ईमान लानेवालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों को और हाथों को कुहनियों तक धो लिया करो और अपने सिरों पर हाथ फेर लो और अपने पैरों को भी टखनों तक धो लो। और यदि नापाक हो तो अच्छी तरह पाक हो जाओ। परन्तु यदि बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई शौच करके आया हो या तुमने स्त्रियों को हाथ लगाया हो, फिर पानी न मिले तो पाक मिट्टी से काम लो। उसपर हाथ मारकर अपने मुँह और हाथों पर फेर लो। अल्लाह तुम्हें किसी तंगी में नहीं डालना चाहता।[1] अपितु वह चाहता है कि

1. बल्कि उसने तंगी रखी ही नहीं। जानवरों को ज़बह करते समय अल्लाह का नाम लेने से उनका मांस हलाल हो जाता है। विवाह से स्त्रियाँ वैध हो जाती हैं। इसी प्रकार वुज़ू और तयम्मुम अर्थात मुँह-हाथ कुहनियों तक धोने और सिर पर हाथ फेरने तथा दोनों पाँव टखनों तक धोने और पानी न मिलने पर इसके विकल्प के रूप में स्वच्छ मिट्टी से काम लेने के पश्चात् आदमी नमाज़ पढ़ने के लायक़ हो जाता है।

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُم مِّنْ حَرَجٍ وَلَٰكِن يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ
وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَاذْكُرُوا
نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُم بِهِ
إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ
لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝
وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۙ لَهُم
مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ
أَن يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ ۖ

तुम्हें पवित्र करे और अपनी नेमत तुमपर पूरी कर दे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

7. और अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुमपर किया है और उस प्रतिज्ञा को भी जो उसने तुमसे की है, जबकि तुमने कहा था— "हमने सुना और माना।" और अल्लाह का डर रखो। अल्लाह जो कुछ सीनों (दिलों) में है, उसे भी जानता है।

8. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह के लिए ख़ूब उठनेवाले, इनसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो। इनसाफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ख़बर है।

9. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है।

10. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही भड़कती आग में पड़नेवाले हैं।

11. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुमपर किया है, जबकि कुछ लोगों ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाने का निश्चय कर

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا
مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۚ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ۚ
لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ
بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝ فَبِمَا نَقْضِهِمْ
مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ
يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا
ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ
اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى

लिया था तो उसने उनके हाथ तुमसे रोक दिए। अल्लाह का डर रखो, और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

12. अल्लाह ने इसराईल की संतान से वचन लिया था और हमने उनमें से बारह सरदार नियुक्त किए थे। और अल्लाह ने कहा था : "मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुमने नमाज़ क़ायम रखी, ज़कात देते रहे, मेरे रसूलों पर ईमान लाए और उनकी सहायता की और अल्लाह को अच्छा ऋण दिया तो मैं अवश्य तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दूँगा और तुम्हें निश्चय ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। फिर इसके पश्चात तुममें से जिसने इनकार किया, तो वास्तव में वह ठीक और सही रास्ते से भटक गया।"

13. फिर उनके बार-बार अपने वचन को भंग कर देने के कारण हमने उनपर लानत की और उनके हृदय कठोर कर दिए। वे शब्दों को उनके स्थान से फेरकर कुछ का कुछ कर देते हैं और जिसके द्वारा उन्हें याद दिलाया गया था, उसका एक बड़ा भाग वे भुला बैठे। और तुम्हें उनके किसी न किसी विश्वासघात का बराबर पता चलता रहेगा। उनमें ऐसा न करनेवाले थोड़े लोग हैं, तो तुम उन्हें क्षमा कर दो और उन्हें छोड़ो। निश्चय ही अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं जो उत्तमकर्मी हैं।

14. और हमने उन लोगों से भी दृढ़ वचन लिया था, जिन्होंने कहा था कि

اخذنا ميثاقهم فنسوا حظا مما ذكروا به فأغرينا
بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة ۚ وسوف
ينبئهم الله بما كانوا يصنعون ۝ يا أهل الكتاب
قد جاءكم رسولنا يبين لكم كثيرا مما كنتم
تخفون من الكتاب ويعفو عن كثير ۚ قد جاءكم
من الله نور وكتاب مبين ۝ يهدي به الله
من اتبع رضوانه سبل السلام ويخرجهم
من الظلمات إلى النور بإذنه ويهديهم إلى
صراط مستقيم ۝ لقد كفر الذين قالوا إن
الله هو المسيح ابن مريم ۚ قل فمن يملك
من الله شيئا إن أراد أن يهلك المسيح ابن
مريم وأمه ومن في الأرض جميعا ۗ ولله
ملك السماوات والأرض وما بينهما ۚ يخلق

हम नसारा (ईसाई) हैं, किन्तु जो कुछ उन्हें जिसके द्वारा याद कराया गया था उसका एक बड़ा भाग भुला बैठे। फिर हमने उनके बीच क़ियामत तक के लिए शत्रुता और द्वेष की आग भड़का दी, और अल्लाह जल्द उन्हें बता देगा, जो कुछ वे बनाते रहे थे।

15. ऐ किताबवालो! हमारा रसूल तुम्हारे पास आ गया है। किताब की जो कुछ बातें तुम छिपाते थे, उसमें से बहुत-सी बातें वह तुम्हारे सामने खोल रहा है और बहुत-सी बातों को छोड़ देता है। तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश और एक स्पष्ट किताब आ गई है,

16. जिसके द्वारा अल्लाह उस व्यक्ति को जो उसकी प्रसन्नता का अनुगामी है, सलामती की राहें दिखा रहा है और अपनी अनुज्ञा से ऐसे लोगों को अँधेरों से निकालकर उजाले की ओर ला रहा है और उन्हें सीधे मार्ग पर चला रहा है।

17. निश्चय ही उन लोगों ने इनकार किया, जिन्होंने कहा : "अल्लाह तो वही मरयम का बेटा मसीह है।" कहो : "अल्लाह के आगे किसका कुछ बस चल सकता है, यदि वह मरयम के पुत्र मसीह को और उसकी माँ (मरयम) को और समस्त धरतीवालों को विनष्ट करना चाहे? और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आकाशों और धरती की और जो कुछ उनके मध्य है उसकी भी। वह

مَا يَشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَقَالَتِ
الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ۗ قُلْ
فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۗ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ
خَلَقَ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَ
لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۫ وَاِلَيْهِ
الْمَصِيْرُ ۝ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا
جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ۫ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ
وَّنَذِيْرٌ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ
مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ
مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا
الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِىْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا

जो चाहता है पैदा करता है। और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।"

18. यहूदी और ईसाई कहते हैं : "हम तो अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं।" कहो : "फिर वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों पर दण्ड क्यों देता है? बात यह नहीं है, बल्कि तुम भी उसके पैदा किए हुए प्राणियों में से एक मनुष्य हो। वह जिसे चाहे क्षमा करे और जिसे चाहे दण्ड दे।" और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आकाशों और धरती की और जो कुछ उनके बीच है उसकी भी, और जाना भी उसी की ओर है।

19. ऐ किताबवालो! हमारा रसूल ऐसे समय में तुम्हारे पास आया है और तुम्हारे लिए (हमारे आदेश) खोल-खोलकर बयान करता है, जबकि रसूलों के आने का सिलसिला एक मुद्दत से बन्द था, ताकि तुम यह न कह सको कि "हमारे पास कोई शुभ-समाचार देनेवाला और सचेत करनेवाला नहीं आया।" तो देखो! अब तुम्हारे पास शुभ-समाचार देनेवाला और सचेत करनेवाला आ गया है। अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

20. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा था : "ऐ मेरे लोगो! अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो उसने तुम्हें प्रदान की है। उसने तुममें नबी पैदा किए और तुम्हें शासक बनाया और तुमको वह कुछ दिया जो संसार में किसी को नहीं दिया था।

21. ऐ मेरे लोगो! इस पवित्र भूमि में प्रवेश करो, जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए

تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنقَلِبُوا خَاسِرِينَ ۝ قَالُوا
يَا مُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا
حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا
دَاخِلُونَ ۝ قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ
اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ
فَإِنَّكُمْ غَالِبُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ۝ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا
مَّا دَامُوا فِيهَا ۖ فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا
هَاهُنَا قَاعِدُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا
نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝
قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۛ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۛ
يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ

लिख दी है। और पीछे न हटो, अन्यथा घाटे में पड़ जाओगे।"

22. उन्होंने कहा : "ऐ मूसा! उसमें तो बड़े शक्तिशाली लोग रहते हैं। हम तो वहाँ कदापि नहीं जा सकते, जब तक कि वे वहाँ से निकल नहीं जाते। हाँ, यदि वे वहाँ से निकल जाएँ, तो हम अवश्य प्रविष्ट हो जाएँगे।

23. उन डरनेवालों में से ही दो व्यक्ति ऐसे भी थे जिनपर अल्लाह का अनुग्रह था। उन्होंने कहा : "उन लोगों के मुक़ाबले में दरवाज़े से प्रविष्ट हो जाओ। जब तुम उसमें प्रविष्ट हो जाओगे, तो तुम ही प्रभावी होगे। अल्लाह पर भरोसा रखो, यदि तुम ईमानवाले हो।"

24. उन्होंने कहा : "ऐ मूसा! जब तक वे लोग वहाँ हैं, हम तो कदापि वहाँ नहीं जाएँगे। ऐसा ही है तो जाओ तुम और तुम्हारा रब, और दोनों लड़ो। हम तो यहीं बैठे रहेंगे।"

25. उसने कहा : "मेरे रब! मेरा स्वयं अपने और अपने भाई के अतिरिक्त किसी पर अधिकार नहीं है। अतः तू हमारे और इन अवज्ञाकारी लोगों के बीच अलगाव पैदा कर दे।"

26. कहा : "अच्छा तो अब यह भूमि चालीस वर्ष तक इनके लिए वर्जित है। ये धरती में मारे-मारे फिरेंगे, तो तुम इन अवज्ञाकारी लोगों के प्रति शोक न करो।"

27. और इन्हें आदम के दो बेटों का सच्चा वृतान्त सुना दो। जब दोनों ने

कुरबानी की, तो उनमें से एक की कुरबानी स्वीकृत हुई और दूसरे की स्वीकृत न हुई। उसने कहा : "मैं तुझे अवश्य ही मार डालूँगा।" दूसरे ने कहा : "अल्लाह तो उन्हीं की (कुरबानी) स्वीकृत करता है, जो डर रखनेवाले हैं।

28. यदि तू मेरी हत्या करने के लिए मेरी ओर हाथ बढ़ाएगा तो मैं तेरी हत्या करने के लिए तेरी ओर अपना हाथ नहीं बढ़ाऊँगा। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का रब है।

29. मैं तो चाहता हूँ कि मेरा गुनाह और अपना गुनाह तू ही अपने सिर ले ले, फिर आग (जहन्नम) में पड़नेवालों में से हो जाए, और वही अत्याचारियों का बदला है :"

30. अन्ततः उसके जी ने उसे अपने भाई की हत्या के लिए उद्यत कर दिया, तो उसने उसकी हत्या कर डाली और घाटे में पड़ गया।

31. तब अल्लाह ने एक कौआ भेजा जो भूमि कुरेदने लगा, ताकि उसे दिखा दे कि वह अपने भाई के शव को कैसे छिपाए। कहने लगा : "अफ़सोस मुझ पर! क्या मैं इस कौए जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छिपा देता?" फिर वह लज्जित हुआ।

32. इसी कारण हमने इसराईल की संतान के लिए लिख दिया था कि जिसने किसी व्यक्ति को किसी के ख़ून का बदला लेने या धरती में फ़साद

إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ
مِنَ الْآخَرِ ۖ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ
اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝ لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ۖ
إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝ إِنِّي أُرِيدُ
أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ
النَّارِ ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝ فَطَوَّعَتْ لَهُ
نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝
فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ
كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ ۚ قَالَ يَا وَيْلَتَا أَعَجَزْتُ
أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ
أَخِي ۖ فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ۝ مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ ۚ
كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ
النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا
النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ
ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعْدَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ
لَمُسْرِفُونَ ۝ إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا
أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ
خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ
خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا
عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ
وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ

फैलाने के अतिरिक्त किसी और कारण से मार डाला तो मानो उसने सारे ही इनसानों की हत्या कर डाली। और जिसने उसे जीवन प्रदान किया, उसने मानो सारे इनसानों को जीवन दान किया। उनके पास हमारे रसूल स्पष्ट प्रमाण ला चुके हैं, फिर भी उनमें बहुत-से लोग धरती में ज़्यादतियाँ करनेवाले ही हैं।

33. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनका बदला तो बस यही है कि बुरी तरह क़त्ल किए जाएँ या सूली पर चढ़ाए जाएँ या उनके हाथ-पाँव विपरीत दिशाओं में काट डाले जाएँ या उन्हें देश से निष्कासित कर दिया जाए। यह अपमान और तिरस्कार उनके लिए दुनिया में है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी यातना है।

34. किन्तु जो लोग, इससे पहले कि तुम्हें उनपर अधिकार प्राप्त हो, पलट आएँ (अर्थात तौबा कर लें) तो ऐसी दशा में तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

35. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो और उसका सामीप्य प्राप्त करो और उसके मार्ग में जी-तोड़ संघर्ष करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

36. जिन लोगों ने इनकार किया यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो सारी

الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يُرِيدُونَ
أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ
فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ
اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ فَمَن تَابَ مِن بَعْدِ
ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَغْفِرُ
لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا
الرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ
مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِن

धरती में है और उतना ही उसके साथ और भी हो कि वह उसे देकर क़ियामत के दिन की यातना से बच जाएँ; तब भी उनकी ओर से यह सब दी जानेवाली वस्तुएँ स्वीकार न की जाएँगी। उनके लिए दुखद यातना ही है।

37. वे चाहेंगे कि आग (जहन्नम) से निकल जाएँ, परन्तु वे उससे न निकल सकेंगे। उनके लिए चिरस्थायी यातना है।

38. और चोर चाहे स्त्री हो या पुरुष दोनों के हाथ काट दो। यह उनकी कमाई का बदला है और अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड। अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

39. फिर जो व्यक्ति अत्याचार करने के पश्चात पलट आए और अपने को सुधार ले, तो निश्चय ही वह अल्लाह की कृपा का पात्र होगा। निस्संदेह, अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

40. क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही आकाशों और धरती के राज्य का अधिकारी है? वह जिसे चाहे यातना दे और जिसे चाहे क्षमा कर दे। अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

41. ऐ रसूल! जो लोग अधर्म के मार्ग में दौड़ते हैं, उनके कारण तुम दुखी न होना; वे जिन्होंने अपने मुँह से कहा कि "हम ईमान ले आए", किन्तु उनके दिल ईमान नहीं लाए; और वे जो यहूदी हैं, वे झूठ के लिए कान लगाते हैं और उन

قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۛ سَمَّاعُونَ
لِلْكَذِبِ سَمَّاعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ
يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۖ يَقُولُونَ
إِنْ أُوتِيتُمْ هَٰذَا فَخُذُوهُ وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ
فَاحْذَرُوا ۚ وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ
لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ
اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ سَمَّاعُونَ
لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ
فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۖ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ وَكَيْفَ
يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَاةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ

दूसरे लोगों की भली-भाँति सुनते हैं, जो तुम्हारे पास नहीं आए, शब्दों को उनका स्थान निश्चित होने के बाद भी उनके स्थान से हटा देते हैं। कहते हैं : "यदि तुम्हें यह (आदेश) मिले, तो इसे स्वीकार करना और यदि न मिले तो बचना।" जिसे अल्लाह ही आपदा में डालना चाहे उसके लिए अल्लाह के यहाँ तुम्हारी कुछ भी नहीं चल सकती। ये वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने स्वच्छ करना नहीं चाहा। उनके लिए संसार में भी अपमान और तिरस्कार है और आख़िरत में भी बड़ी यातना है।

42. वे झूठ के लिए कान लगाते रहनेवाले और बड़े हराम खानेवाले हैं। अतः यदि वे तुम्हारे पास आएँ, तो या तुम उनके बीच फ़ैसला कर दो या उन्हें टाल जाओ। यदि तुम उन्हें टाल गए तो वे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। परन्तु यदि फ़ैसला करो तो उनके बीच इनसाफ़ के साथ फ़ैसला करो। निश्चय ही अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों से प्रेम करता है।

43. वे तुमसे फ़ैसला कराएँगे भी कैसे, जबकि उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है! फिर इसके पश्चात भी वे मुँह मोड़ते हैं। वे तो

ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ
اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ
بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ
اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ
وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ
وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ۞ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ
بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ
وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ
قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ
وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ۞ وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ

ईमान ही नहीं रखते।

44. निस्संदेह हमने तौरात उतारी, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था। नबी जो आज्ञाकारी थे, उसको यहूदियों के लिए अनिवार्य ठहराते थे कि वे उसका पालन करें और इसी प्रकार अल्लाहवाले और शास्त्रवेत्ता भी। क्योंकि उन्हें अल्लाह की किताब की सुरक्षा का आदेश दिया गया था और वे उसके संरक्षक थे। तो तुम लोगों से न डरो, बल्कि मुझ ही से डरो और मेरी आयतों के बदले थोड़ा मूल्य प्राप्त करने का मामला न करना। जो लोग उस विधान के अनुसार फ़ैसला न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग विधर्मी हैं।

45. और हमने उस (तौरात) में उनके लिए लिख दिया था कि जान जान के बराबर है, आँख आँख के बराबर है, नाक नाक के बराबर है, कान कान के बराबर, दाँत दाँत के बराबर और सब आघातों के लिए इसी तरह बराबर का बदला है। तो जो कोई उसे क्षमा कर दे तो यह उसके लिए प्रायश्चित होगा और जो लोग उस विधान के अनुसार फ़ैसला न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।

46. और उनके पीछे उन्हीं के पद-चिह्नों पर हमने मरयम के बेटे ईसा को

مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَ
مُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ عَمَّا جَاۗءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۭ لِكُلٍّ
جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ
لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ
اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَاَنِ احْكُمْ

भेजा जो पहले से उसके सामने मौजूद किताब 'तौरात' की पुष्टि करनेवाला था। और हमने उसे इनजील प्रदान की, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था। और वह अपनी पूर्ववर्ती किताब तौरात की पुष्टि करनेवाली थी, और वह डर रखनेवालों के लिए मार्गदर्शन और नसीहत थी।

47. अतः इनजील वालों को चाहिए कि उस विधान के अनुसार फ़ैसला करें, जो अल्लाह ने उस इनजील में उतारा है। और जो उसके अनुसार फ़ैसला न करें, जो अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग उल्लंघनकारी हैं।

48. और हमने तुम्हारी ओर यह किताब हक़ के साथ उतारी है, जो उस किताब की पुष्टि करती है जो उसके पहले से मौजूद है और उसकी संरक्षक है। अतः लोगों के बीच तुम मामलों में वही फ़ैसला करना जो अल्लाह ने उतारा है और जो सत्य तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़कर उनकी इच्छाओं का पालन न करना। हमने तुममें से प्रत्येक के लिए एक ही घाट (शरीअत) और एक ही मार्ग निश्चित किया है। यदि अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक समुदाय बना देता। परन्तु जो कुछ उसने तुम्हें दिया है, उसमें वह तुम्हारी परीक्षा करनी चाहता है। अतः भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ो। तुम सबको अल्लाह ही की ओर लौटना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जिसमें तुम विभेद करते रहे हो।

49. और यह कि तुम उनके बीच वही फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है

और उनकी इच्छाओं का पालन न करो और उनसे बचते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हें फ़रेब में डालकर जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारी ओर उतारा है उसके किसी भाग से वे तुम्हें हटा दें। फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो जान लो कि अल्लाह ही उनके कुछ गुनाहों के कारण उन्हें संकट में डालना चाहता है। निश्चय ही अधिकांश लोग उल्लंघनकारी हैं।

50. अब क्या वे अज्ञान का फ़ैसला चाहते हैं? तो विश्वास करनेवाले लोगों के लिए अल्लाह से अच्छा फ़ैसला करनेवाला कौन हो सकता है?

بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ
وَاحْذَرْهُمْ أَن يَفْتِنُوكَ عَن بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ
إِلَيْكَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ
أَن يُصِيبَهُم بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ
النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٤٩﴾ أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ
وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ
أَوْلِيَاءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم
مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا
دَائِرَةٌ ۚ فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ
مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ

51. ऐ ईमान लानेवालो! तुम यहूदियों और ईसाइयों को अपना मित्र (राज़दार) न बनाओ। वे (तुम्हारे विरुद्ध) परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं। तुममें से जो कोई उनको अपना मित्र बनाएगा, वह उन्हीं लोगों में से होगा। निस्संदेह अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

52. तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में रोग है, वे उनके यहाँ जाकर उनके बीच दौड़-धूप कर रहे हैं। वे कहते हैं : "हमें भय है कि कहीं हम किसी संकट में न ग्रस्त हो जाएँ।" तो संभव है कि जल्द ही अल्लाह (तुम्हें) विजय प्रदान करे या उसकी ओर से कोई और बात प्रकट हो। फिर तो

نٰدِمِيْنَ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ
لَمَعَكُمْ ۭ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ
فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ
اَذِلَّةٍ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۡ
يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ
لَوْمَةَ لَاۗىِٕمٍ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ
يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ
وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّتَوَلَّ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ
اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ये लोग जो कुछ अपने जी में छिपाए हुए हैं, उसपर लज्जित होंगे।

53. उस समय ईमानवाले कहेंगे : "क्या ये वही लोग हैं जो अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाकर विश्वास दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं?" इनका किया-धरा सब अकारथ गया और ये घाटे में पड़कर रहे।

54. ऐ ईमान लानेवालो ! तुममें से जो कोई अपने धर्म से फिरेगा तो अल्लाह जल्द ही ऐसे लोगों को लाएगा जिनसे उसे प्रेम होगा और जो उससे प्रेम करेंगे। वे ईमानवालो के प्रति नरम और अविश्वासियों के प्रति कठोर होंगे। अल्लाह की राह में जी-तोड़ कोशिश करेंगे और किसी भर्त्सना करनेवाले की भर्त्सना से न डरेंगे। यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। अल्लाह बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।

55. तुम्हारे मित्र तो केवल अल्लाह और उसका रसूल और वे ईमानवाले हैं; जो विनम्रता के साथ नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते हैं।

56. अब जो कोई अल्लाह और उसके रसूल और ईमानवालों को अपना मित्र बनाए, तो निश्चय ही अल्लाह का गिरोह प्रभावी होकर रहेगा।

57. ऐ ईमान लानेवालो ! तुमसे पहले जिनको किताब दी गई थी, जिन्होंने

لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّ
لَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ
وَ الْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا
هُزُوًا وَّ لَعِبًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۝
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ
اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ
اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ
الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَاۗءِ السَّبِيْلِ ۝ وَ
اِذَا جَاۗءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ

तुम्हारे धर्म को हँसी-खेल बना लिया है, उन्हें और इनकार करनेवालों को अपना मित्र न बनाओ। और अल्लाह का डर रखो, यदि तुम ईमानवाले हो।

58. जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वे उसे हँसी और खेल बना लेते हैं। इसका कारण यह है कि वे बुद्धिहीन लोग हैं।

59. कहो : "ऐ किताबवालो! क्या इसके सिवा हमारी कोई और बात तुम्हें बुरी लगती है कि हम अल्लाह और उस चीज़ पर ईमान लाए, जो हमारी ओर उतारी गई, और जो पहले उतारी जा चुकी है? और यह कि तुममें अधिकांश लोग अवज्ञाकारी हैं।"

60. कहो : "क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह के यहाँ परिणाम की दृष्टि से इससे भी बुरी नीति क्या है? कौन गिरोह है जिसपर अल्लाह की फिटकार पड़ी और जिसपर अल्लाह का प्रकोप हुआ और जिसमें से उसने बन्दर और सूअर बनाए और जिसने बढ़े हुए फ़सादी (तागूत) की बन्दगी की, वे लोग (तुमसे भी) निकृष्ट दर्जे के थे। और वे (तुमसे भी अधिक) सीधे मार्ग से भटके हुए थे।"

61. जब वे (यहूदी) तुम लोगों के पास आते हैं तो कहते हैं : "हम ईमान ले आए।" हालाँकि वे इनकार के साथ आए थे और उसी के साथ चले गए।

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا
يَكْتُمُونَ ۝ وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ
عَن قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا
كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ
غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۘ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ
يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا
أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ وَأَلْقَيْنَا
بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ
كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ
فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝
وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ

अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं।

62. तुम देखते हो कि उनमें से बहुतेरे लोग हक़ मारने, ज़्यादती करने और हरामख़ोरी में बड़ी तेज़ी दिखाते हैं। निश्चय ही बहुत ही बुरा है, जो वे कर रहे हैं।

63. उनके संत और धर्मज्ञाता उन्हें गुनाह की बात बकने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते? निश्चय ही बहुत बुरा है, जो काम वे कर रहे हैं।

64. और यहूद कहते हैं : "अल्लाह का हाथ बँध गया है।"[1] उन्हीं के हाथ बँधे हैं, और फिटकार है उनपर, उस बकवास के कारण जो वे करते हैं, बल्कि उसके दोनों हाथ तो खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है, उससे अवश्य ही उनके अधिकतर लोगों की सरकशी और इनकार ही में अभिवृद्धि होगी। और हमने उनके बीच क़ियामत तक के लिए शत्रुता और द्वेष डाल दिया है। वे जब भी युद्ध की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। वे धरती में बिगाड़ फैलाने के लिए प्रयास कर रहे हैं, हालाँकि अल्लाह बिगाड़ फैलानेवालों को पसन्द नहीं करता।

65. और यदि किताबवाले ईमान लाते और (अल्लाह का) डर रखते तो हम

---

1. अर्थात वे यह समझ रहे हैं कि अल्लाह के उदार दान और उपकार के पात्र केवल यहूदी हैं।

سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۔ وَلَوْ اَنَّهُمْ
اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ
مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ
مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۔ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا
يَعْمَلُوْنَ ۔ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ ۔ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَهٗ ۔
وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۔ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۔ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى
شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۔ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۔ فَلَا تَاْسَ
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۔ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
الَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِــُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ

उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमत भरी जन्नतों में दाख़िल कर देते।

66. और यदि वे तौरात और इंजील को और जो कुछ उनके रब की ओर से उनकी ओर उतारा गया है, उसे क़ायम रखते, तो उन्हें अपने ऊपर से भी खाने को मिलता और अपने पाँव के नीचे से भी। उनमें से एक गिरोह सीधे मार्ग पर चलनेवाला भी है, किन्तु उनमें से अधिकतर ऐसे हैं कि जो भी करते हैं बुरा होता है।

67. ऐ रसूल! तुम्हारे रब की ओर से तुमपर जो कुछ उतारा गया है, उसे पहुँचा दो। यदि ऐसा न किया तो तुमने उसका संदेश नहीं पहुँचाया। अल्लाह तुम्हें लोगों (की बुराइयों) से बचाएगा। निश्चय ही अल्लाह इनकार करनेवाले लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

68. कह दो : "ऐ किताबवालो! तुम किसी भी चीज़ पर नहीं हो, जब तक कि तौरात और इनजील को और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, उसे क़ायम न रखो।" किन्तु (ऐ नबी!) तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर जो कुछ अवतरित हुआ है, वह अवश्य ही उनमें से बहुतों की सरकशी और इनकार में अभिवृद्धि करनेवाला है। अतः तुम इनकार करनेवाले लोगों की दशा पर दुखी न होना।

69. निस्संदेह वे लोग जो ईमान लाए हैं और जो यहूदी हुए हैं और साबई और ईसाई, उनमें से जो कोई भी अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाए और

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۞ لَقَدْ اَخَذْنَا
مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ
كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ
فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ۞ وَحَسِبُوْٓا اَلَّا
تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۞ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ
اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ
الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۞
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ

अच्छा कर्म करे तो ऐसे लोगों को न तो कोई डर होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

70. हमने इसराईल की संतान से दृढ़ वचन लिया और उनकी ओर रसूल भेजे। उनके पास जब भी कोई रसूल वह कुछ लेकर आया जो उन्हें पसन्द न था, तो कितनों को तो उन्होंने झुठलाया और कितनों की हत्या करने लगे।

71. और उन्होंने समझा कि कोई आपदा न आएगी; इसलिए वे अंधे और बहरे बन गए। फिर अल्लाह ने उनपर दयादृष्टि की, फिर भी उनमें से बहुत-से अंधे और बहरे हो गए। अल्लाह देख रहा है, जो कुछ वे करते हैं।

72. निश्चय ही उन्होंने (सत्य का) इनकार किया, जिन्होंने कहा : "अल्लाह मरयम का बेटा मसीह ही है।" जबकि मसीह ने कहा था : "ऐ इसराईल की संतान ! अल्लाह की बन्दगी करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। जो कोई अल्लाह का साझी ठहराएगा, उसपर तो अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग है। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।"

73. निश्चय ही उन्होंने इनकार किया, जिन्होंने कहा : "अल्लाह तीन में का

ثلثة وما من إله إلا إله واحد وإن
لم ينتهوا عما يقولون ليمسن الذين كفروا
منهم عذاب أليم ۝ أفلا يتوبون إلى
الله ويستغفرونه والله غفور رحيم ۝
ما المسيح ابن مريم إلا رسول قد خلت
من قبله الرسل وأمه صديقة كانا
يأكلان الطعام انظر كيف نبين لهم الآيات
ثم انظر أنى يؤفكون ۝ قل أتعبدون
من دون الله ما لا يملك لكم ضرا ولا نفعا
والله هو السميع العليم ۝ قل يا أهل
الكتاب لا تغلوا في دينكم غير الحق ولا
تتبعوا أهواء قوم قد ضلوا من قبل و
أضلوا كثيرا وضلوا عن سواء السبيل ۝

एक है।" हालाँकि अकेले पूज्य के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। जो कुछ वे कहते हैं यदि इससे बाज़ न आएँ तो उनमें से जिन्होंने इनकार किया है, उन्हें दुखद यातना पहुँचकर रहेगी।

74. फिर क्या वे लोग अल्लाह की ओर नहीं पलटेंगे और उससे क्षमा याचना नहीं करेंगे, जबकि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

75. मरयम का बेटा मसीह एक रसूल के अतिरिक्त और कुछ नहीं। उससे पहले भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके हैं। उसकी माँ अत्यन्त सत्यवती थी। दोनों ही भोजन करते थे। देखो, हम किस प्रकार उनके सामने निशानियाँ स्पष्ट करते हैं; फिर देखो, ये किस प्रकार उलटे फिरे जा रहे हैं!

76. कह दो : "क्या तुम अल्लाह से हटकर उसकी बन्दगी करते हो जो न तुम्हारी हानि का अधिकारी है, न लाभ का? हालाँकि सुननेवाला, जाननेवाला अल्लाह ही है।"

77. कह दो : "ऐ किताबवालो! अपने धर्म में नाहक़ हद से आगे न बढ़ो और उन लोगों की इच्छाओं का पालन न करो जो इससे पहले स्वयं पथभ्रष्ट हुए और बहुतों को पथभ्रष्ट किया और सीधे मार्ग से भटक गए।

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ
دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۭ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا
يَعْتَدُوْنَ ۝ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ
فَعَلُوْهُ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ تَرٰى كَثِيْرًا
مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ
لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ
هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ
كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ
عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ
وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ
قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

78. इसराईल की संतान में से जिन लोगों ने इनकार किया, उनपर दाऊद और मरयम के बेटे ईसा की ज़बान से फिटकार पड़ी, क्योंकि उन्होंने अवज्ञा की और वे हद से आगे बढ़े जा रहे थे।

79. जो बुरा काम वे करते थे, उससे वे एक-दूसरे को रोकते न थे। निश्चय ही बहुत ही बुरा था, जो वे कर रहे थे।

80. तुम उनमें से बहुतेरे लोगों को देखते हो जो इनकार करनेवालों से मित्रता रखते हैं। निश्चय ही बहुत बुरा है, जो उन्होंने अपने आगे रखा है। अल्लाह का उनपर प्रकोप हुआ और यातना में वे सदैव ग्रस्त रहेंगे।

81. और यदि वे अल्लाह और नबी पर और उस चीज़ पर ईमान लाते, जो उसकी ओर अवतरित हुई, तो वे उनको मित्र न बनाते। किन्तु उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

82. तुम ईमानवालों का शत्रु सब लोगों से बढ़कर यहूदियों और बहुदेववादियों को पाओगे। और ईमान लानेवालों के लिए मित्रता में सबसे निकट उन लोगों को पाओगे, जिन्होंने कहा कि 'हम नसारा हैं।' यह इस कारण है कि उनमें बहुत-से धर्मज्ञाता और संसार-त्यागी संत पाए जाते हैं। और इस कारण कि वे अहंकार नहीं करते।



83. जब वे उसे सुनते हैं जो रसूल पर अवतरित हुआ तो तुम देखते हो कि उनकी आँखें आँसुओं से छलकने लगती हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया। वे कहते हैं : "हमारे रब! हम ईमान ले आए। अतएव तू हमारा नाम गवाही देनेवालों में लिख ले।

84. और हम अल्लाह पर और जो सत्य हमारे पास पहुँचा है उसपर ईमान क्यों न लाएँ, जबकि हमें आशा है कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के साथ (जन्नत में) प्रविष्ट करेगा।"

85. फिर अल्लाह ने उनके इस कथन के कारण उन्हें ऐसे बाग़ प्रदान किए, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे। और यही सत्कर्मी लोगों का बदला है।

86. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे भड़कती आग (में पड़ने) वाले हैं।

87. ऐ ईमान लानेवालो! जो अच्छी पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उन्हें हराम न कर लो और हद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही अल्लाह को वे लोग प्रिय नहीं हैं, जो हद से आगे बढ़ते हैं।

88. जो कुछ अल्लाह ने हलाल और पाक रोज़ी तुम्हें दी है, उसे खाओ और अल्लाह का डर रखो, जिसपर तुम ईमान लाए हो।

89. तुम्हारी उन क़समों पर अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता जो यूँ ही असावधानी में ज़बान से निकल जाती हैं। परन्तु जो तुमने पक्की क़समें खाई हों, उनपर वह तुम्हें पकड़ेगा। तो इसका प्रायश्चित दस मुहताजों को औसत

عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ
مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ
اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۗ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۗ
ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۗ وَاحْفَظُوْٓا
اَيْمَانَكُمْ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ
وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ
الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّمَا يُرِيْدُ
الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۤءَ فِى
الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ
الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ لَيْسَ

दर्जे का वह खाना खिला देना है, जो तुम अपने बाल-बच्चों को खिलाते हो या फिर उन्हें कपड़े पहनाना या एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा। और जिसे इसकी सामर्थ्य न हो, तो उसे तीन दिन के रोज़े रखने होंगे। यह तुम्हारी क़समों का प्रायश्चित है, जबकि तुम क़सम खा बैठो। तुम अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया करो। इस प्रकार अल्लाह अपनी आयतें तुम्हारे सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

90. ऐ ईमान लानेवालो! ये शराब और जुआ और देवस्थान और पाँसे तो गंदे शैतानी काम हैं। अत: तुम इनसे अलग रहो, ताकि तुम सफल हो।

91. शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम बाज़ न आओगे?

92. अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो और बचते रहो, किन्तु यदि तुमने मुँह मोड़ा तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल स्पष्ट रूप से (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।

93. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे पहले जो कुछ

عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا
طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۗ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ
اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ
ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا
الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ
مِّنْكُمْ هَدْيًاۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ
اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ۗ عَفَا
اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۗ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۗ وَ
اللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۞ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ

खा-पी चुके उसके लिए उनपर कोई गुनाह नहीं; जबकि वे डर रखें और ईमान पर क़ायम रहें और अच्छे कर्म करें। फिर डर रखें और ईमान लाएँ, फिर डर रखें और अच्छे से अच्छा कर्म करें। अल्लाह सत्कर्मियों से प्रेम करता है।

94. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह उस शिकार के द्वारा तुम्हारी अवश्य परीक्षा लेगा जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँच सकें, ताकि अल्लाह यह जान ले कि उससे बिन देखे कौन डरता है। फिर इसके पश्चात जिसने ज़्यादती की, उसके लिए दुखद यातना है।

95. ऐ ईमान लानेवालो ! इहराम की हालत में तुम शिकार न मारो। तुम में जो कोई जान-बूझकर उसे मारे, तो उसने जो जानवर मारा हो, चौपायों में से उसी जैसा एक जानवर— जिसका फ़ैसला तुम्हारे दो न्यायप्रिय व्यक्ति कर दें— काबा पहुँचाकर क़ुरबान किया जाए, या प्रायश्चित के रूप में मुहताजों को भोजन कराना होगा या उसके बराबर रोज़े रखने होंगे, ताकि वह अपने किए का मज़ा चख ले। जो पहले हो चुका उसे अल्लाह ने क्षमा कर दिया; परन्तु जिस किसी ने फिर ऐसा किया तो अल्लाह उससे बदला लेगा। अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेनेवाला है।

96. तुम्हारे लिए जल का शिकार और उसका खाना हलाल है कि तुम उससे

وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ
صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۞ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ
الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ
وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ۞ اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۞ مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَ
اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۞ قُل لَّا يَسْتَوِي
الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا
اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۞ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِن تُبْدَ لَكُمْ
تَسُؤْكُمْ ۚ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ

फ़ायदा उठाओ और मुसाफ़िर भी। किन्तु थलीय शिकार जब तक तुम इहराम में हो, तुमपर हराम है। और अल्लाह से डरते रहो, जिसकी ओर तुम इकट्ठा होगे।

97. अल्लाह ने आदरणीय घर काबा को लोगों के लिए क़ायम रहने का साधन बनाया और आदरणीय महीनों और क़ुरबानी के जानवरों और उन जानवरों को भी जिनके गले में पट्टे बँधे हों, यह इसलिए कि तुम जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और यह कि अल्लाह हर चीज़ से अवगत है।

98. जान लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है और यह कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

99. रसूल पर (संदेश) पहुँचा देने के अतिरिक्त और कोई ज़िम्मेदारी नहीं। अल्लाह तो जानता है, जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो।

100. कह दो : "बुरी चीज़ और अच्छी चीज़ समान नहीं होतीं, चाहे बुरी चीज़ों की बहुतायत तुम्हें प्रिय ही क्यों न लगे।" अतः ऐ बुद्धि और समझवालो! अल्लाह का डर रखो, ताकि तुम सफल हो सको।

101. ऐ ईमान लानेवालो! ऐसी चीज़ों के विषय में न पूछो कि वे यदि तुम पर स्पष्ट कर दी जाएँ, तो तुम्हें बुरी लगें। यदि तुम उन्हें ऐसे समय में पूछोगे, जबकि क़ुरआन अवतरित हो रहा है, तो वे तुमपर स्पष्ट कर दी जाएँगी।

تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللهُ عَنْهَا ۚ وَاللهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝
قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا
كٰفِرِينَ ۝ مَا جَعَلَ اللهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ
وَّلَا وَصِيلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
يَفْتَرُونَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ ۖ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلٰى مَا أَنْزَلَ اللهُ وَإِلَى
الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَآءَنَا ۚ
أَوَلَوْ كَانَ آبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُونَ ۝
يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ
مَّنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ
الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ آخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ

अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला, सहनशील है।

102. तुमसे पहले कुछ लोग इस तरह के प्रश्न कर चुके हैं, फिर वे उसके कारण इनकार करनेवाले हो गए।

103. अल्लाह ने न कोई 'बहीरा' ठहराया है और न 'सायबा' और न 'वसीला' और न 'हाम'[1], परन्तु इनकार करनेवाले अल्लाह पर झूठ का आरोपण करते हैं और उनमें अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते।

104. और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ की ओर आओ जो अल्लाह ने अवतरित की है और रसूल की ओर, तो वे कहते हैं : "हमारे लिए तो वही काफ़ी है, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।" क्या यद्यपि उनके बाप-दादा कुछ भी न जानते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों?

105. ऐ ईमान लानेवालो ! तुमपर अपनी चिन्ता अनिवार्य है, जब तुम रास्ते पर हो, तो जो कोई भटक जाए वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अल्लाह की ओर तुम सबको लौटकर जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे होगे।

106. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुममें से किसी की मृत्यु का समय आ जाए तो वसीयत के समय तुममें से दो न्यायप्रिय व्यक्ति गवाह हों, या तुम्हारे ग़ैर

---

1. अरब के बहुदेववादी अपने बुतों के नाम पर जानवर छोड़ते थे, फिर उनसे कोई काम न लेते थे। विभिन्न प्रकार के ऊँट और ऊँटनियों के अलग-अलग नाम रखते थे, उन्हीं नामों का उल्लेख इस आयत में किया गया है।

إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ
الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ
إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا
نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ۝ فَإِنْ عُثِرَ
عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا
مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ
لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِن شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا
إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ
عَلَىٰ وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَن تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا
أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝
إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي

लोगों में से दूसरे दो व्यक्ति गवाह बन जाएँ, यह उस समय कि यदि तुम कहीं सफ़र में गए हो और मृत्यु तुमपर आ पहुँचे। यदि तुम्हें कोई संदेह हो तो नमाज़ के पश्चात उन दोनों को रोक लो, फिर वे दोनों अल्लाह की क़समें खाएँ कि "हम इसके बदले कोई मूल्य स्वीकार करनेवाले नहीं हैं चाहे कोई नातेदार ही क्यों न हो और न हम अल्लाह की गवाही छिपाते हैं। निस्संदेह ऐसा किया तो हम गुनाहगार ठहरेंगे।"

107. फिर यदि पता चल जाए कि उन दोनों ने हक़ मारकर अपने को गुनाह में डाल लिया है, तो उनकी जगह दूसरे दो व्यक्ति उन लोगों में से खड़े हो जाएँ, जिनका हक़ पिछले दोनों ने मारना चाहा था, फिर वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि "हम दोनों की गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सच्ची है और हमने कोई ज़्यादती नहीं की है। निस्संदेह हमने ऐसा किया तो अत्याचारियों में से होंगे।"

108. इसमें इसकी अधिक संभावना है कि वे ठीक-ठीक गवाही देंगे या डरेंगे कि उनकी क़समों के पश्चात क़समें ली जाएँगी। अल्लाह का डर रखो और सुनो। अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

109. जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा, फिर कहेगा : "तुम्हें क्या जवाब मिला?" वे कहेंगे : "हमें कुछ नहीं मालूम। तू ही छिपी बातों को जानता है।"

110. जब अल्लाह कहेगा : "ऐ मरयम के बेटे ईसा! मेरे उस अनुग्रह को

عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ إِذْ أَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ
الْقُدُسِ ۗ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَإِذْ
عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ ۚ وَإِذْ
تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا
فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِإِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ
بِإِذْنِيْ ۚ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِإِذْنِيْ ۚ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ
إِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْهُمْ إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَإِذْ
أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيّٖنَ أَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ۝ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ أَنْ يُّنَزِّلَ
عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۚ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ إِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قَالُوْا نُرِيْدُ أَنْ نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ

याद करो जो तुमपर और तुम्हारी माँ पर हुआ है। जब मैंने पवित्र आत्मा से तुम्हें शक्ति प्रदान की; तुम पालने में भी लोगों से बात करते थे और बड़ी अवस्था को पहुँचकर भी। और याद करो, जबकि मैंने तुम्हें किताब और हिकमत और तौरात और इनजील की शिक्षा दी थी। और याद करो जब तुम मेरे आदेश से मिट्टी से पंक्षी का प्रारूपण करते थे; फिर उसमें फूँक मारते थे, तो वह मेरे आदेश से उड़नेवाली बन जाती थी। और तुम मेरे आदेश से अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे और जबकि तुम मेरे आदेश से मुर्दों को जीवित निकाल खड़ा करते थे। और याद करो जबकि मैंने तुमसे इसराइलियों को रोके रखा, जबकि तुम उनके पास खुली-खुली निशानियाँ लेकर पहुँचे थे, तो उनमें से जो इनकार करनेवाले थे उन्होंने कहा : "यह तो बस खुला जादू है।"

111. और याद करो, जब मैंने हवारियों (साथियों और शार्गिदों) के दिल में डाला कि "मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ", तो उन्होंने कहा : "हम ईमान लाए और तुम गवाह रहो कि हम मुस्लिम हैं।"

112. और याद करो जब हवारियों ने कहा : "ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या तुम्हारा रब आकाश से खाने से भरा थाल उतार सकता है?" कहा : "अल्लाह से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।"

113. वे बोले : "हम चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे हृदय संतुष्ट

قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا
مِنَ الشّٰهِدِينَ ۝ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ
رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا
عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ
خَيْرُ الرّٰزِقِينَ ۝ قَالَ اللّٰهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ
فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا
أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعٰلَمِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ
يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي
وَأُمِّيَ إِلٰهَيْنِ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۖ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُونُ
لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ
عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ
إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا
أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ

हों और हमें मालूम हो जाए कि तूने हमसे सच कहा और हम उसपर गवाह रहें।"

114. मरयम के बेटे ईसा ने कहा : "ऐ अल्लाह, हमारे रब! हमपर आकाश से खाने से भरा थाल उतार, जो हमारे लिए और हमारे अंगलों और हमारे पिछलों के लिए ख़ुशी का कारण बने और तेरी ओर से एक निशानी हो, और हमें आहार प्रदान कर। तू सबसे अच्छा प्रदान करनेवाला है।"

115. अल्लाह ने कहा : "मैं उसे तुमपर उतारूँगा, फिर उसके पश्चात तुममें से जो कोई इनकार करेगा तो मैं अवश्य उसे ऐसी यातना दूँगा जो संपूर्ण संसार में किसी को न दूँगा।"

116. और याद करो जब अल्लाह कहेगा : "ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह के अतिरिक्त दो और पूज्य मुझे और मेरी माँ को बना लो?" वह कहेगा : "महिमावान है तू! मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं वह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई हक़ नहीं है। यदि मैंने यह कहा होता तो तुझे मालूम ही होता। तू जानता है, जो कुछ मेरे मन में है। परन्तु मैं नहीं जानता जो कुछ तेरे मन में है। निश्चय ही, तू ही छिपी बातों का भली-भाँति जाननेवाला है।

117. मैंने उनसे उसके सिवा और कुछ नहीं कहा, जिसका तूने मुझे आदेश दिया था, यह कि 'अल्लाह की बन्दगी करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा



عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ
أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ
إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ
أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ
الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

سُورَةُ الْأَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ
الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ۖ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ
هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ۖ وَ

भी रब है।' और जब तक मैं उनमें रहा उनकी ख़बर रखता था, फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो फिर तू ही उनका निरीक्षक था। और तू हर चीज़ का साक्षी है।

118. यदि तू उन्हें यातना दे तो वे तो तेरे बन्दे ही हैं और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो निस्संदेह तू अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।"

119. अल्लाह कहेगा : "यह वह दिन है कि सच्चों को उनकी सच्चाई लाभ पहुँचाएगी। उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। यही सबसे बड़ी सफलता है।"

120. आकाशों और धरती और जो कुछ उनके बीच है, सबपर अल्लाह ही की बादशाही है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

6. अल-अनआम

(मक्का में उतरी—— आयतें 165)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान् है।

1. प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और अँधेरों और उजाले का विधान किया; फिर भी इनकार करनेवाले लोग दूसरों को अपने रब के समकक्ष ठहराते हैं।

2. वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर (जीवन की) एक अवधि

أَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ
فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ
وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ
آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ فَقَدْ
كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ
أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ
أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ
مَا لَمْ نُمَكِّن لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا
وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم
بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝
وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ
بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ
مُّبِينٌ ۝ وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ

निश्चित कर दी और उसके यहाँ (क़ियामत की) एक अवधि और निश्चित है; फिर भी तुम संदेह करते हो !

3. वही अल्लाह है, आकाशों में भी और धरती में भी। वह तुम्हारी छिपी और तुम्हारी खुली बातों को जानता है, और जो कुछ तुम कमाते हो, वह उससे भी अवगत है।

4. हाल यह है कि उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आई, जिससे उन्होंने मुँह न मोड़ लिया हो।

5. उन्होंने सत्य को झुठला दिया, जबकि वह उनके पास आया। अतः जिस चीज़ की वे हँसी उड़ाते रहे हैं, जल्द ही उसके संबंध में उन्हें ख़बरें मिल जाएँगी।

6. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितने ही गिरोहों को हम विनष्ट कर चुके हैं। उन्हें हमने धरती में ऐसा जमाव प्रदान किया था, जो तुम्हें नहीं प्रदान किया। और उनपर हमने आकाश को ख़ूब बरसता छोड़ दिया और उनके नीचे नहरें बहाईं। फिर हमने उन्हें उनके गुनाहों के कारण विनष्ट कर दिया और उनके पश्चात दूसरे गिरोहों को उठाया।

7. और यदि हम तुम्हारे ऊपर काग़ज़ में लिखी-लिखाई किताब भी उतार देते और उसे लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी, जिन्होंने इनकार किया है, वे यही कहते : "यह तो बस एक खुला जादू है।"

8. उनका तो कहना है : "इस (नबी) पर कोई फ़रिश्ता (खुले रूप में) क्यों नहीं उतारा गया ?" हालाँकि यदि हम फ़रिश्ता उतारते तो फ़ैसला हो चुका

أَنْزَلْنَا مَلَكًا لَقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُونَ ۝ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ
مَلَكًا لَجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَا يَلْبِسُونَ ۝
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ
سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ قُلْ
سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِينَ ۝ قُلْ لِمَنْ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ
قُلْ لِلّٰهِ ۚ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَغَيْرَ اللّٰهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا
فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۚ
قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ

होता। फिर उन्हें कोई मुहलत ही न मिलती।

9. यह बात भी है कि यदि हम उसे (नबी को) फ़रिश्ता बना देते तो उसे आदमी ही (के रूप का) बनाते। इस प्रकार उन्हें उसी संदेह में डाल देते, जिस संदेह में वे इस समय पड़े हुए हैं।

10. तुमसे पहले कितने ही रसूलों की हँसी उड़ाई जा चुकी है। अन्ततः जिन लोगों ने उनकी हँसी उड़ाई थी, उन्हें उसी ने आ घेरा जिस बात पर वे हँसी उड़ाते थे।

11. कहो : "धरती में चल-फिरकर देखो कि झुठलानेवालों का क्या परिणाम हुआ !"

12. कहो : "आकाशों और धरती में जो कुछ है किसका है ?" कह दो : "अल्लाह ही का है।" उसने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है। निश्चय ही वह तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। जिन लोगों ने अपने-आपको घाटे में डाला है, वही हैं जो ईमान नहीं लाते।

13. हाँ, उसी का है जो भी रात में ठहरता है और दिन में (गतिशील होता है), और वह सब कुछ सुनता, जानता है।

14. कहो : "क्या मैं आकाशों और धरती को पैदा करनेवाले अल्लाह के सिवा किसी और को संरक्षक बना लूँ? उसका हाल यह है कि वह खिलाता है और स्वयं नहीं खाता।" कहो : "मुझे आदेश हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके आगे झुक जाऊँ। और (यह कि) तुम बहुदेववादियों में कदापि सम्मिलित न होना।"

15. कहो : "यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ, तो उस स्थिति में मुझे एक

عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ مَنْ يُصْرَفْ
عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝
وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ
وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝
قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ
بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ
آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ
الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ
مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ

बड़े (भयानक) दिन की यातना का डर है।"

16. उस दिन वह जिसपर से टल गई, उसपर अल्लाह ने दया की, और यही स्पष्ट सफलता है।

17. और यदि अल्लाह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाए तो उसके अतिरिक्त उसे कोई दूर करनेवाला नहीं और यदि वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

18. उसे अपने बन्दों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है। और वह तत्त्वदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।

19. कहो : "किस चीज़ की गवाही सबसे बड़ी है?" कहो : "मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है। और यह क़ुरआन मेरी ओर वह्य (प्रकाशना) किया गया है, ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें सचेत कर दूँ। और जिस किसी को यह पहुँचे, वह भी ऐसा ही करे। क्या तुम वास्तव में गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं?" तुम कह दो : "मैं तो इसकी गवाही नहीं देता।" कहो : "वह तो बस अकेला पूज्य है। और तुम जो उसका साझी ठहराते हो, उससे मेरा कोई संबंध नहीं।"

20. जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसे इस प्रकार पहचानते हैं, जिस प्रकार अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला है, वही ईमान नहीं लाते।

21. और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या

لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تَزْعُمُوْنَ ۝ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ
رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى
اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ
يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا
يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَهُمْ
يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ
اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى
النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا
وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا

उसकी आयतों को झुठलाए। निस्संदेह अत्याचारी कभी सफल नहीं हो सकते।

22. और उस दिन को याद करो जब हम सबको इकट्ठा करेंगे; फिर बहुदेववादियों से पूछेंगे : "कहाँ हैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदार, जिनका तुम दावा किया करते थे ?"

23. फिर उनका कोई फ़ित्ना (उपद्रव) शेष न रहेगा। सिवाय इसके कि वे कहेंगे : "अपने रब अल्लाह की सौगन्ध ! हम बहुदेववादी न थे।"

24. देखो, कैसा वे अपने विषय में झूठ बोले। और वह गुम होकर रह गया जो वे घड़ा करते थे।

25. और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, हालाँकि हमने तो उनके दिलों पर परदे डाल रखे हैं कि वे उसे समझ न सकें और उनके कानों में बोझ डाल दिया है। और वे चाहे प्रत्येक निशानी देख लें तब भी उसे मानेंगे नहीं; यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास आकर तुमसे झगड़ते हैं, तो अविश्वास की नीति अपनानेवाले कहते हैं : "यह तो बस पहले के लोगों की गाथाएँ हैं।"

26. और वे उससे दूसरों को रोकते हैं और स्वयं भी उससे दूर रहते हैं। वे तो बस अपने आपको ही विनष्ट कर रहे हैं, किन्तु उन्हें इसका एहसास नहीं।

27. और यदि तुम उस समय देख सकते, जब वे आग के निकट खड़े किए जाएँगे और कहेंगे : "काश ! क्या ही अच्छा होता कि हम फिर लौटा दिए जाएँ (कि मानें) और अपने रब की आयतों को न झुठलाएँ और माननेवालों में हो जाएँ।"

28. कुछ नहीं, बल्कि जो कुछ वे पहले छिपाया करते थे, वह उनके सामने

يُخْفُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَ
إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا
نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ
قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا
يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ
عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ۝ وَمَا الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ
لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ
لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ
الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ
مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰ

आ गया। और यदि वे लौटा भी दिए जाएँ, तो फिर वही कुछ करने लगेंगे जिससे उन्हें रोका गया था। निश्चय ही वे झूठे हैं।

29. और वे कहते हैं : "जो कुछ है बस यही हमारा सांसारिक जीवन है; हम कोई फिर उठाए जानेवाले नहीं हैं।"

30. और यदि तुम देख सकते जब वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे! वह कहेगा : "क्या यह यथार्थ नहीं है?" कहेंगे : "क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम!" वह कहेगा : "अच्छा तो उस इनकार के बदले जो तुम करते रहे हो, यातना का मज़ा चखो।"

31. वे लोग घाटे में पड़े, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब अचानक उनपर वह घड़ी आ जाएगी तो वे कहेंगे : "हाय! अफ़सोस, उस कोताही पर जो इसके विषय में हमसे हुई।" और हाल यह होगा कि वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। देखो, कितना बुरा बोझ है जो ये उठाए हुए हैं!

32. सांसारिक जीवन तो एक खेल और तमाशे (ग़फ़लत) के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, जबकि आख़िरत का घर उन लोगों के लिए अच्छा है, जो डर रखते हैं। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

33. हमें मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हें दुख पहुँचता है। तो वे वास्तव में तुम्हें नहीं झुठलाते, बल्कि उन अत्याचारियों को तो अल्लाह की आयतों से इनकार है।

34. तुमसे पहले भी बहुत-से रसूल झुठलाए जा चुके हैं, तो वे अपने



झुठलाए जाने और कष्ट पहुँचाए जाने पर धैर्य से काम लेते रहे, यहाँ तक कि उन्हें हमारी सहायता पहुँच गई। कोई नहीं जो अल्लाह की बातों को बदल सके। तुम्हारे पास तो रसूलों की कुछ ख़बरें पहुँच ही चुकी हैं।

35. और यदि उनकी विमुखता तुम्हारे लिए असहनीय है, तो यदि तुमसे हो सके कि धरती में कोई सुरंग या आकाश में कोई सीढ़ी ढूँढ़ निकालो और उनके पास कोई निशानी ले आओ, तो (ऐसा कर देखो), यदि अल्लाह चाहता तो उन सबको सीधे मार्ग पर इकट्ठा कर देता। अत: तुम उजड्ड और नादान न बनना।

36. मानते तो वही लोग हैं जो सुनते हैं; रहे मुर्दे, तो अल्लाह उन्हें (क़ियामत के दिन) उठा खड़ा करेगा; फिर वे उसी की ओर पलटेंगे।

37. वे यह भी कहते हैं : "उस (नबी) पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई ?" कह दो : "अल्लाह को तो इसकी सामर्थ्य प्राप्त है कि कोई निशानी उतार दे; परन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।"

38. धरती में चलने-फिरनेवाला कोई भी प्राणी हो या अपने दो परों से उड़नेवाला कोई पक्षी, ये सब तुम्हारी ही तरह के गिरोह हैं। हमने किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है। फिर वे अपने रब की ओर इकट्ठे किए जाएँगे।

39. जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, वे बहरे और गूँगे हैं, अँधेरों में पड़े हुए हैं। अल्लाह जिसे चाहे भटकने दे और जिसे चाहे सीधे मार्ग पर लगा दे।

قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُ ٱللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ ٱلسَّاعَةُ
أَغَيْرَ ٱللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ بَلْ إِيَّاهُ
تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَآءَ وَ
تَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰٓ أُمَمٍ
مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَٰهُم بِٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ
يَتَضَرَّعُونَ ۝ فَلَوْلَآ إِذْ جَآءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا۟
وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ مَا كَانُوا۟
يَعْمَلُونَ ۝ فَلَمَّا نَسُوا۟ مَا ذُكِّرُوا۟ بِهِۦ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ
أَبْوَٰبَ كُلِّ شَىْءٍ حَتَّىٰٓ إِذَا فَرِحُوا۟ بِمَآ أُوتُوٓا۟ أَخَذْنَٰهُم
بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ۝ فَقُطِعَ دَابِرُ ٱلْقَوْمِ
ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ وَٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝ قُلْ
أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ ٱللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَٰرَكُمْ وَخَتَمَ
عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ ٱللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ ٱنظُرْ

40. कहो : "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुमपर अल्लाह की यातना आ पड़े या वह घड़ी तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? बोलो, यदि तुम सच्चे हो?

41. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो— फिर जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो, वह चाहता है तो उसे दूर भी कर देता है—और उन्हें भूल जाते हो जिन्हें साझीदार ठहराते हो।"

42. तुमसे पहले कितने ही समुदायों की ओर हमने रसूल भेजे फिर उन्हें तंगियों और मुसीबतों में डाला, ताकि वे विनम्र हों।

43. जब हमारी ओर से उनपर सख़्ती आई तो फिर क्यों न वे विनम्र हुए? परन्तु उनके हृदय तो कठोर हो गए थे और जो कुछ वे करते थे शैतान ने उसे उनके लिए मोहक बना दिया।

44. फिर जब उसे उन्होंने भुला दिया जो उन्हें याद दिलाई गई थी, तो हमने उनपर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए; यहाँ तक कि जो कुछ उन्हें मिला था, जब वे उसमें मग्न हो गए तो अचानक हमने उन्हें पकड़ लिया, तो क्या देखते हैं कि वे बिलकुल निराश होकर रह गए।

45. इस प्रकार अत्याचारी लोगों की जड़ काटकर रख दी गई। प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसार का रब है।

46. कहो : "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने की और तुम्हारी देखने की शक्ति छीन ले और तुम्हारे दिलों पर ठप्पा लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन पूज्य है जो तुम्हें ये चीज़ें लाकर दे?" देखो, किस

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ۝ قُلْ
اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً
هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَمَا نُرْسِلُ
الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ
وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا
يَفْسُقُوْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ
وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ
اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى
وَالْبَصِيْرُ ۚ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ
يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَلَا
تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

प्रकार हम तरह-तरह से अपनी निशानियाँ बयान करते हैं! फिर भी वे किनारा ही खींचते जाते हैं।

47. कहो : "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुमपर अचानक या प्रत्यक्षत: अल्लाह की यातना आ जाए, तो क्या अत्याचारी लोगों के सिवा कोई और विनष्ट होगा?"

48. हम रसूलों को केवल शुभ-सूचना देनेवाले और सचेतकर्ता बनाकर भेजते रहे हैं। फिर जो ईमान लाए और सुधर जाए, तो ऐसे लोगों के लिए न कोई भय है और न वे कभी दुखी होंगे।

49. रहे वे लोग, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें यातना पहुँचकर रहेगी, क्योंकि वे अवज्ञा करते रहे हैं।

50. कह दो : "मैं तुमसे यह नहीं कहता कि 'मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ', और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि 'मैं कोई फ़रिश्ता हूँ।' मैं तो बस उसी का अनुपालन करता हूँ जो मेरी ओर वह्य की जाती है।" कहो : "क्या अंधा और आँखोंवाला दोनों बराबर हो जाएँगे? क्या तुम सोच-विचार से काम नहीं लेते?"

51. और तुम इसके द्वारा उन लोगों को सचेत कर दो, जिन्हें इस बात का भय है कि वे अपने रब के पास इस हाल में इकट्ठा किए जाएँगे कि उसके सिवा न तो उनका कोई समर्थक होगा और न कोई सिफ़ारिश करनेवाला, ताकि वे बचें।

52. और जो लोग अपने रब को उसकी ख़ुशी की चाह में प्रात: और सायंकाल पुकारते रहते हैं, ऐसे लोगों को दूर न करना। उनके हिसाब की

يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن
شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِم مِّن شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ
فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم
بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَٰؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّن
بَيْنِنَا ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ۝ وَإِذَا جَاءَكَ
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ كَتَبَ
رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۖ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ
سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ
تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ ۚ قُل لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ ۙ
قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ
إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ ۚ مَا عِندِي

तुमपर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं है और न तुम्हारे हिसाब की उनपर कोई ज़िम्मेदारी है कि तुम उन्हें दूर करो और फिर हो जाओ अत्याचारियों में से ।

53. और इसी प्रकार हमने इनमें से एक को दूसरे के द्वारा आज़माइश में डाला, ताकि वे कहें : "क्या यही वे लोग हैं, जिनपर अल्लाह ने हममें से चुनकर एहसान किया है ?"—— क्या अल्लाह कृतज्ञ लोगों से भली-भाँति परिचित नहीं है ?

54. और जब तुम्हारे पास वे लोग आएँ, जो हमारी आयतों को मानते हैं, तो कहो : "सलाम हो तुमपर ! तुम्हारे रब ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि तुममें से जो कोई नासमझी से कोई बुराई कर बैठे, फिर उसके पश्चात पलट आए और अपना सुधार कर ले तो यह है कि वह बड़ा क्षमाशील, दयावान है ।"

55. इसी प्रकार हम अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करते हैं (ताकि तुम हर ज़रूरी बात जान लो) और इसलिए कि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए ।

56. कह दो : "तुम लोग अल्लाह से हटकर जिन्हें पुकारते हो, उनकी बन्दगी करने से मुझे रोका गया है ।" कहो : "मैं तुम्हारी इच्छाओं का अनुपालन नहीं करता, क्योंकि तब तो मैं मार्ग से भटक गया और मार्ग पानेवालों में से न रहा ।"

57. कह दो : "मैं अपने रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर क़ायम हूँ और तुमने उसे झुठला दिया है । जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो,

مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ
وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۝ قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا
تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا
يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ
وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي
ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي
كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَ
يَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ
لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ
يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ
عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ
أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ۝

वह कोई मेरे पास तो नहीं है। निर्णय का सारा अधिकार अल्लाह ही को है, वही सच्ची बात बयान करता है और वही सबसे अच्छा निर्णायक है।"

58. कह दो : "जिस चीज़ की तुम्हें जल्दी पड़ी हुई है, यदि कहीं वह चीज़ मेरे पास होती तो मेरे और तुम्हारे बीच कभी का फ़ैसला हो चुका होता। और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।"

59. उसी के पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं, जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। जल और थल में जो कुछ है, उसे वह जानता है। और जो पत्ता भी गिरता है, उसे वह निश्चय ही जानता है। और धरती के अँधेरों में कोई भी दाना हो और कोई भी आर्द्र (गीली) और शुष्क (सूखी) चीज़ हो, वह निश्चय ही एक स्पष्ट किताब में मौजूद है।

60. और वही है जो रात को तुम्हें मौत देता है और दिन में जो कुछ तुमने किया उसे जानता है। फिर वह इसलिए तुम्हें उठाता है, ताकि निश्चित अवधि पूरी हो जाए; फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

61. और वही अपने बन्दों पर पूरा-पूरा क़ाबू रखनेवाला है और वह तुम पर निगरानी करनेवाले को नियुक्त करके भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी की मृत्यु आ जाती है, तो हमारे भेजे हुए कार्यकर्त्ता उसे अपने क़ब्ज़े में कर लेते हैं और वे कोई कोताही नहीं करते।

ثم ردوا إلى الله مولاهم الحق ألا له الحكم
وهو أسرع الحاسبين ۝ قل من ينجيكم من
ظلمات البر والبحر تدعونه تضرعا وخفية
لئن أنجانا من هذه لنكونن من الشاكرين ۝
قل الله ينجيكم منها ومن كل كرب ثم أنتم
تشركون ۝ قل هو القادر على أن يبعث عليكم
عذابا من فوقكم أو من تحت أرجلكم أو يلبسكم
شيعا ويذيق بعضكم بأس بعض انظر كيف
نصرف الآيات لعلهم يفقهون ۝ وكذب به
قومك وهو الحق قل لست عليكم بوكيل ۝
لكل نبإ مستقر وسوف تعلمون ۝ وإذا رأيت
الذين يخوضون في آياتنا فأعرض عنهم حتى
يخوضوا في حديث غيره وإما ينسينك

62. फिर सब अल्लाह की ओर, जो उनका वास्तविक स्वामी है, लौट जाएँगे। जान लो, निर्णय का अधिकार उसी को है और वह बहुत जल्द हिसाब लेनेवाला है।

63. कहो : "कौन है जो थल और जल के अँधेरों से तुम्हें छुटकारा देता है, जिसे तुम गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके पुकारने लगते हो कि यदि हमें इससे बचा लिया तो हम अवश्य कृतज्ञ हो जाएँगे ?"

64. कहो : "अल्लाह तुम्हें इनसे और हरेक बेचैनी और पीड़ा से छुटकारा देता है, लेकिन फिर तुम उसका साझीदार ठहराने लगते हो।"

65. कहो : "वह इसकी सामर्थ्य रखता है कि तुमपर तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से कोई यातना भेज दे या तुम्हें टोलियों में बाँटकर परस्पर भिड़ा दे और एक को दूसरे की लड़ाई का मज़ा चखाए।" देखो, हम आयतों को कैसे, तरह-तरह से, बयान करते हैं, ताकि वे समझें।

66. तुम्हारी क़ौम ने तो उसे झुठला दिया, हालाँकि वह सत्य है। कह दो : "मैं तुमपर कोई संरक्षक नियुक्त नहीं हूँ।

67. हर ख़बर का एक निश्चित समय है और शीघ्र ही तुम्हें ज्ञात हो जाएगा।"

68. और जब तुम उन लोगों को देखो, जो हमारी आयतों पर नुक्ताचीनी करने में लगे हुए हैं, तो उनसे मुँह फेर लो, ताकि वे किसी दूसरी बात में लग जाएँ। और यदि कभी शैतान तुम्हें भुलावे में डाल दे, तो याद आ जाने के

الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝
وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ
وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَذَرِ الَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ وَاِنْ
تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ
اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا
بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ
فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى
الْهُدَى ائْتِنَا قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى

बाद उन अत्याचारियों के पास न बैठो।

69. उनके हिसाब के प्रति तो उन लोगों पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं, जो डर रखते हैं। यदि है तो बस याद दिलाने की; ताकि वे डरें।

70. छोड़ो उन लोगों को, जिन्होंने अपने धर्म को खेल और तमाशा बना लिया है और उन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा है। और इसके द्वारा उन्हें नसीहत करते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि कोई अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ जाए। अल्लाह से हटकर कोई भी नहीं, जो उसका समर्थक और सिफ़ारिश करनेवाला हो सके और यदि वह छुटकारा पाने के लिए बदले के रूप में हर संभव चीज़ देने लगे, तो भी वह उससे न लिया जाए। ऐसे ही लोग हैं, जो अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ गए। उनके लिए पीने को खौलता हुआ पानी है और दुखद यातना भी; क्योंकि वे इनकार करते रहे थे।

71. कहो : "क्या हम अल्लाह को छोड़कर उसे पुकारने लग जाएँ जो न तो हमें लाभ पहुँचा सके और न हमें हानि पहुँचा सके और हम उलटे पाँव फिर जाएँ, जबकि अल्लाह ने हमें मार्ग पर लगा दिया है?—उस व्यक्ति की तरह जिसे शैतानों ने धरती में भटका दिया हो और वह हैरान होकर रह गया हो। उसके कुछ साथी हों, जो उसे मार्ग की ओर बुला रहे हों कि 'हमारे पास चला आ!' " कह दो : "मार्गदर्शन केवल अल्लाह का मार्गदर्शन है और हमें इसी

وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ وَأَنْ أَقِيمُوا
الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِيٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ
وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهٰدَةِ ۚ
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ لِأَبِيهِ
آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۖ إِنِّيٓ أَرٰىكَ وَقَوْمَكَ
فِي ضَلٰلٍ مُبِينٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُرِيٓ إِبْرٰهِيمَ
مَلَكُوتَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ
الْمُوقِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَأٰ كَوْكَبًا ۖ
قَالَ هٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَآ أُحِبُّ
الْأٰفِلِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّي ۖ
فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ

बात का आदेश हुआ है कि हम सारे संसार के स्वामी को समर्पित हो जाएँ।"

72. और यह कि "नमाज़ क़ायम करो और उसका डर रखो। वही है, जिसके पास तुम इकट्ठे किए जाओगे,

73. और वही है जिसने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया। और जिस समय वह किसी चीज़ को कहे : 'हो जा', तो उसी समय वह हो जाती है। उसकी बात सर्वथा सत्य है और जिस दिन 'सूर' (नरसिंघा) में फूँक मारी जाएगी, राज्य उसी का होगा। वह सभी छिपी और खुली चीज़ का जाननेवाला है, और वही तत्त्वदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।"

74. और याद करो, जब इबराहीम ने अपने बाप आज़र से कहा था : "क्या तुम मूर्तियों को पूज्य बनाते हो? मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पड़ा देख रहा हूँ।"

75. और इस प्रकार हम इबराहीम को आकाशों और धरती का राज्य दिखाने लगे (ताकि उसके ज्ञान का विस्तार हो) और इसलिए कि उसे विश्वास हो।

76. अतएव जब रात उसपर छा गई, तो उसने एक तारा देखा। उसने कहा : "इसे मेरा रब ठहराते हो!" फिर जब वह छिप गया तो बोला : "छिप जानेवालों से मैं प्रेम नहीं करता।"

77. फिर जब उसनें चाँद को चमकता हुआ देखा, तो कहा : "इसको मेरा रब ठहराते हो!" फिर जब वह छिप गया, तो कहा : "यदि मेरा रब मुझे मार्ग

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ۔ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً
قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ
يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ اِنِّيْ وَجَّهْتُ
وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِيْفًا
وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۭ قَالَ
اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۭ وَلَآ اَخَافُ مَا
تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْئًا ۭ وَسِعَ رَبِّيْ
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَكَيْفَ
اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۭ فَاَيُّ
الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ
لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ

न दिखाता तो मैं भी पथभ्रष्ट लोगों में सम्मिलित हो जाता।"

78. फिर जब उसने सूर्य को चमकता हुआ देखा, तो कहा : "इसे मेरा रब ठहराते हो ! यह तो बहुत बड़ा है।" फिर जब वह भी छिप गया, तो कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं विरक्त हूँ उनसे जिनको तुम साझी ठहराते हो।

79. मैंने तो एकाग्र होकर अपना मुख उसकी ओर कर लिया है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया। और मैं साझी ठहरानेवालों में से नहीं।"

80. उसकी क़ौम के लोग उससे झगड़ने लगे। उसने कहा : "क्या तुम मुझसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो? जबकि उसने मुझे मार्ग दिखा दिया है। मैं उनसे नहीं डरता, जिन्हें तुम उसका सहभागी ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वही पूरा होकर रहता है। प्रत्येक वस्तु मेरे रब की ज्ञान-परिधि के भीतर है। फिर क्या तुम चेतोगे नहीं?

81. और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों से कैसे डरूँ, जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का सहभागी उस चीज़ को ठहराया है, जिसका उसने तुमपर कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया? अब दोनों फ़रीक़ों में से कौन अधिक निश्चिन्त रहने का अधिकारी है? बताओ यदि तुम जानते हो।

82. जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी (शिर्क) ज़ुल्म की मिलावट नहीं की, वही लोग हैं जो भय मुक्त हैं और वही सीधे मार्ग पर हैं।"

83. यह है हमारा वह तर्क जो हमने इबराहीम को उसकी अपनी क़ौम के मुक़ाबले में प्रदान किया था। हम जिसे चाहते हैं दर्जों (श्रेणियों) में ऊँचा कर

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ
كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ
وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَ
لُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ
ذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَ
النُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا
لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ

منزل ٢

देते हैं। निस्संदेह तुम्हारा रब तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

84. और हमने उसे (इबराहीम को) इसहाक़ और याक़ूब दिए; हर एक को मार्ग दिखाया—और नूह को हमने इससे पहले मार्ग दिखाया था—और उसकी संतान में दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को भी— और इस प्रकार हम शुभ-सुन्दर कर्म करनेवालों को बदला देते हैं —

85. और ज़करिया, यहया, ईसा और इलयास को भी (मार्ग दिखलाया)। इनमें का हर एक योग्य और नेक था।

86. और इसमाईल, अलयसअ, यूनुस और लूत को भी। इनमें से हर एक को हमने संसारवालों के मुक़ाबले में श्रेष्ठता प्रदान की।

87. और उनके बाप-दादा और उनकी संतान और उनके भाई-बन्धुओं में भी कितने ही लोगों को (मार्ग दिखाया)। और हमने उन्हें चुन लिया और उन्हें सीधे मार्ग की ओर चलाया।

88. यह अल्लाह का मार्गदर्शन है, जिसके द्वारा वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है मार्ग दिखाता है, और यदि उन लोगों ने कहीं अल्लाह का साझी ठहराया होता, तो उनका सब किया-धरा अकारथ हो जाता।

89. वे ऐसे लोग हैं जिन्हें हमने किताब और निर्णय-शक्ति और पैग़म्बरी प्रदान की थी (उसी प्रकार हमने मुहम्मद को भी किताब, निर्णय-शक्ति और पैग़म्बरी दी है)। फिर यदि ये लोग इसे मानने से इनकार करें, तो अब हमने इसको ऐसे लोगों को सौंपा है जो इसका इनकार नहीं करते।

90. वे (पिछले पैग़म्बर) ऐसे लोग थे, जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया था, तो तुम

اقْتَدِهْ ۗ قُل لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ
لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا
أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ
الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ ۖ تَجْعَلُونَهُ
قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۖ وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ
تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ
يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾ وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِينَ
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ
يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ
مِثْلَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ ۖ

उन्हीं के मार्ग का अनुसरण करो। कह दो : "मैं तुमसे उसका कोई प्रतिदान नहीं माँगता । वह तो सम्पूर्ण संसार के लिए बस एक प्रबोध है ।"

91. उन्होंने अल्लाह की क़द्र न जानी, जैसी उसकी क़द्र जाननी चाहिए थी, जबकि उन्होंने कहा : "अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ अवतरित ही नहीं किया है ।" कहो : "फिर वह किताब किसने अवतरित की, जो मूसा लोगों के लिए प्रकाश और मार्गदर्शन के रूप में लाया था, जिसे तुम पन्ना-पन्ना करके रखते हो? उन्हें दिखाते भी हो, परन्तु बहुत-सा छिपा जाते हो । और तुम्हें वह ज्ञान दिया गया, जिसे न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप-दादा ही ।" कह दो : "अल्लाह ही ने", फिर उन्हें छोड़ो कि वे अपनी नुक्ताचीनियों से खेलते रहें ।

92. यह किताब है जिसे हमने उतारा है; बरकतवाली है; अपने से पहले की पुष्टि में है (ताकि तुम शुभ-सूचना दो) और ताकि तुम केन्द्रीय बस्ती (मक्का) और उसके चतुर्दिक बसनेवाले लोगों को सचेत करो और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं, वे इसपर भी ईमान लाते हैं । और वे अपनी नमाज़ की रक्षा करते हैं ।

93. और उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे या यह कहे कि "मेरी ओर प्रकाशना (वह्य) की गई है", हालाँकि उसकी ओर कोई भी प्रकाशना न की गई हो । और उस व्यक्ति से (बढ़कर अत्याचारी कौन होगा) जो यह कहे कि "मैं भी ऐसी चीज़ उतार दूँगा, जैसी अल्लाह ने उतारी है ।" और यदि तुम देख सकते, जब अत्याचारी मृत्यु- यातनाओं में होते हैं और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होते हैं कि "निकालो अपने प्राण ! आज तुम्हें अपमानजनक यातना दी जाएगी, क्योंकि तुम अल्लाह के प्रति झूठ बका करते थे

الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَلَقَدْ
جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم
مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ
الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ
وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ
وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ
الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَ
جَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ
تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ
لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن نَّفْسٍ
وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे।"

94. और निश्चय ही तुम उसी प्रकार एक-एक करके हमारे पास आ गए, जिस प्रकार हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा था, उसे अपने पीछे छोड़ आए और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे हैं, जिनके विषय में तुम दावे से कहते थे कि "वे तुम्हारे मामले में (अल्लाह के) शरीक हैं।" तुम्हारे पारस्परिक संबंध टूट चुके हैं और वे सब तुमसे गुम होकर रह गए, जो दावे तुम किया करते थे।

95. निश्चय ही अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ निकालता है, सजीव को निर्जीव से निकालता है और निर्जीव को सजीव से निकालनेवाला है। वही अल्लाह है— फिर तुम कहाँ औंधे हुए जाते हो?—

96. पौ फाड़ता है, और उसी ने रात को आराम के लिए बनाया और सूर्य और चन्द्रमा को (समय के) हिसाब का साधन ठहराया। यह बड़े शक्तिमान, सर्वज्ञ का ठहराया हुआ परिणाम है।

97. और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनके द्वारा स्थल और समुद्र के अंधकारों में मार्ग पा सको। जो लोग जानना चाहें उनके लिए हमने निशानियाँ खोल-खोलकर बयान कर दी हैं।

98. और वही तो है, जिसने तुम्हें अकेली जान पैदा किया। अत: एक अवधि तक ठहरना है और फिर सौंप देना है। उन लोगों के लिए, जो समझें, हमने निशानियाँ खोल-खोलकर बयान कर दी हैं।

يَفْقَهُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِىٓ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَخْرَجْنَا
بِهِۦ نَبَاتَ كُلِّ شَىْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ
حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ
وَّجَنّٰتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا
وَّغَيْرَ مُتَشٰبِهٍ ۗ انْظُرُوٓا إِلٰى ثَمَرِهِۦٓ إِذَآ أَثْمَرَ وَيَنْعِهِۦ ۚ
إِنَّ فِى ذٰلِكُمْ لَآيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَجَعَلُوا لِلّٰهِ
شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُۥ بَنِينَ وَبَنٰتٍۭ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ سُبْحٰنَهُۥ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُونَ ۝ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۖ أَنّٰى يَكُونُ لَهُۥ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهُۥ صٰحِبَةٌ ۖ
وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ
رَبُّكُمْ ۖ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ خٰلِقُ كُلِّ شَىْءٍ فَاعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَكِيلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصٰرُ وَهُوَ يُدْرِكُ
الْأَبْصٰرَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ

99. और वही है जिसने आकाश से पानी बरसाया, फिर हमने उसके द्वारा हर प्रकार की वनस्पति उगाई; फिर उससे हमने हरी-भरी पत्तियाँ निकालीं और तने विकसित किए, जिससे हम तले-ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं— और खजूर के गाभे से झुके पड़ते गुच्छे भी— और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ लगाए, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और एक-दूसरे से भिन्न भी होते हैं। उसके फल को देखो, जब वह फलता है और उसके पकने को भी देखो! निस्संदेह ईमान लानेवाले लोगों के लिए इनमें बड़ी निशानियाँ हैं।

100. और लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी ठहरा रखा है; हालाँकि उन्हें उसी ने पैदा किया है। और बेजाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियाँ घड़ ली हैं। यह उसकी महिमा के प्रतिकूल है! वह उन बातों से उच्च है, जो वे बयान करते हैं!

101. वह आकाश और धरती का सर्वप्रथम पैदा करनेवाला है। उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है, जबकि उसकी पत्नी ही नहीं? और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है।

102. वही अल्लाह तुम्हारा रब; उसके सिवा कोई पूज्य नहीं; हर चीज़ का स्रष्टा है; अत: तुम उसी की बन्दगी करो। वही हर चीज़ का ज़िम्मेदार है।

103. निगाहें उसे नहीं पा सकतीं, बल्कि वही निगाहों को पा लेता है। वह अत्यन्त सूक्ष्म (एवं सूक्ष्मदर्शी) ख़बर रखनेवाला है।

104. तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से आँख खोल देनेवाले प्रमाण आ चुके हैं; तो जिस किसी ने देखा, अपना ही भला किया और जो अंधा बना रहा, तो वह अपने ही को हानि पहुँचाएगा। और मैं तुमपर कोई नियुक्त

ربكم ۚ فمن أبصر فلنفسه ۖ ومن عمي فعليها ۚ
وما أنا عليكم بحفيظ ۝ وكذلك نصرف الآيات و
ليقولوا درست ولنبينه لقوم يعلمون ۝ اتبع ما
أوحي إليك من ربك ۖ لا إله إلا هو ۖ وأعرض عن
المشركين ۝ ولو شاء الله ما أشركوا ۗ وما جعلناك
عليهم حفيظا ۖ وما أنت عليهم بوكيل ۝ ولا تسبوا
الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا بغير
علم ۗ كذلك زينا لكل أمة عملهم ثم إلى ربهم
مرجعهم فينبئهم بما كانوا يعملون ۝ وأقسموا بالله
جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها ۚ قل
إنما الآيات عند الله ۖ وما يشعركم أنها إذا جاءت
لا يؤمنون ۝ ونقلب أفئدتهم وأبصارهم كما لم
يؤمنوا به أول مرة ونذرهم في طغيانهم يعمهون ۝

रखवाला नहीं हूँ।

105. और इसी प्रकार हम अपनी आयतें विभिन्न ढंग से बयान करते हैं (कि वे सुनें) और इसलिए कि वे कह लें "(ऐ मुहम्मद !) तुमने कहीं से पढ़-पढ़ा लिया है।" और इसलिए भी कि हम उनके लिए जो जानना चाहें, सत्य को स्पष्ट कर दें।

106. तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी तरफ़ जो वह्य की गई है, उसी का अनुसरण किए जाओ, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं और बहुदेववादियों (की कुनीति) पर ध्यान न दो।

107. यदि अल्लाह चाहता तो वे (उसका) साझी न ठहराते। तुम्हें हमने उनपर कोई नियुक्त संरक्षक तो नहीं बनाया है और न तुम उनके कोई ज़िम्मेदार ही हो।

108. अल्लाह के सिवा जिन्हें ये पुकारते हैं, तुम उनके प्रति अपशब्द का प्रयोग न करो। ऐसा न हो कि वे हद से आगे बढ़कर अज्ञान वश अल्लाह के प्रति अपशब्द का प्रयोग करने लगें। इसी प्रकार हमने हर गिरोह के लिए उसके कर्म को सुहावना बना दिया है। फिर उन्हें अपने रब ही की ओर लौटना है।उस समय वह उन्हें बता देगा, जो कुछ वे करते रहे होंगे।

109. वे लोग तो अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि यदि उनके पास कोई निशानी आ जाए तो उसपर वे अवश्य ईमान लाएँगे। कह दो : "निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं।" और तुम्हें क्या पता कि जब वे आ जाएँगी तो भी वे ईमान नहीं लाएँगे।

110. और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे, जिस प्रकार वे पहली बार ईमान नहीं लाए थे। और हम उन्हें छोड़ देंगे कि वे अपनी सरकशी में भटकते रहें।



111. यदि हम उनकी ओर फ़रिश्ते भी उतार देते और मुर्दे भी उनसे बातें करने लगते और प्रत्येक चीज़ उनके सामने लाकर इकट्ठा कर देते, तो भी वे ईमान न लाते, बल्कि अल्लाह ही का चाहा क्रियान्वित है। परन्तु उनमें से अधिकतर लोग अज्ञानता से काम लेते हैं।

112. और इसी प्रकार हमने मनुष्यों और जिन्नों में से शैतानों को प्रत्येक नबी का शत्रु बनाया, जो चिकनी-चुपड़ी बात एक-दूसरे के मन में डालकर धोखा देते थे— यदि तुम्हारा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते। अब छोड़ो उन्हें और उनके मिथ्यारोपण को।—

113. और ताकि जो लोग परलोक को नहीं मानते, उनके दिल उसकी ओर झुकें और ताकि वे उसे पसंद कर लें, और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है कर लें।

114. अब क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और निर्णायक ढूढ़ूँ? हालाँकि वही है जिसने तुम्हारी ओर किताब अवतरित की है, जिसमें बातें खोल-खोलकर बता दी गई हैं और जिन लोगों को हमने किताब प्रदान की थी, वे भी जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की ओर से हक़ के साथ अवतरित हुई है, तो तुम कदापि संदेह में न पड़ना।

115. तुम्हारे रब की बात सच्चाई और इनसाफ़ के साथ पूरी हुई, कोई नहीं जो

الْعَلِيمُ ۝ وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ
يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ
وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝
فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ
اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا
مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝
وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ
الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا
مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ
الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ

उसकी बातों को बदल सके, और वह सुनता, जानता है।

116. और धरती में अधिकतर लोग ऐसे हैं कि यदि तुम उनके कहने पर चले तो वे अल्लाह के मार्ग से तुम्हें भटका देंगे। वे तो केवल अटकल के पीछे चलते हैं और वे निरे अटकल ही दौड़ाते हैं।

117. निस्संदेह तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटकता है और वह उन्हें भी जानता है जो सीधे मार्ग पर हैं।

118. अतः जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, उसे खाओ; यदि तुम उसकी आयतों को मानते हो।

119. और क्या आपत्ति है कि तुम उसे न खाओ, जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, बल्कि जो कुछ चीज़ें उसने तुम्हारे लिए हराम कर दी हैं, उनको उसने विस्तारपूर्वक तुम्हें बता दिया है। यह और बात है कि उसके लिए कभी तुम्हें विवश होना पड़े। परन्तु अधिकतर लोग तो ज्ञान के बिना केवल अपनी इच्छाओं (ग़लत विचारों) के द्वारा पथभ्रष्ट करते रहते हैं। निस्संदेह तुम्हारा रब मर्यादाहीन लोगों को भली-भाँति जानता है।

120. छोड़ो खुले गुनाह को भी और छिपे को भी। निश्चय ही गुनाह कमानेवालों को उसका बदला दिया जाएगा, जिस कमाई में वे लगे रहे होंगे।

121. और उसे न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। निश्चय ही वह तो आज्ञा का उल्लंघन है। शैतान तो अपने मित्रों के दिलों में

أطعتموهم إنكم لمشركون ۞ أومن كان ميتا
فأحييناه وجعلنا له نورا يمشي به في الناس
كمن مثله في الظلمات ليس بخارج منها ۚ
كذلك زين للكافرين ما كانوا يعملون ۝ وكذلك
جعلنا في كل قرية أكابر مجرميها ليمكروا فيها ۖ
وما يمكرون إلا بأنفسهم وما يشعرون ۝ وإذا
جاءتهم آية قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما
أوتي رسل الله ۘ الله أعلم حيث يجعل رسالته ۗ
سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب
شديد بما كانوا يمكرون ۝ فمن يرد الله أن
يهديه يشرح صدره للإسلام ۖ ومن يرد أن
يضله يجعل صدره ضيقا حرجا كأنما يصعد
في السماء ۚ كذلك يجعل الله الرجس على الذين

डालते हैं कि वे तुमसे झगड़ें। यदि तुमने उनकी बात मान ली तो निश्चय ही तुम बहुदेववादी होगे।

122. क्या वह व्यक्ति जो पहले मुर्दा था, फिर उसे हमने जीवित किया और उसके लिए एक प्रकाश उपलब्ध किया जिसको लिए हुए वह लोगों के बीच चलता-फिरता है, उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अँधेरों में पड़ा हुआ हो, उससे कदापि निकलनेवाला न हो? ऐसे ही इनकार करनेवालों के कर्म उनके लिए सुहावने बनाए गए हैं।

123. और इसी प्रकार हमने प्रत्येक बस्ती में उसके बड़े-बड़े अपराधियों को लगा दिया है कि वे वहाँ चालें चलें। वे अपने ही विरुद्ध चालें चलते हैं, किन्तु उन्हें इसका एहसास नहीं।

124. और जब उनके पास कोई आयत (निशानी) आती है तो वे कहते हैं : "हम कदापि नहीं मानेंगे, जब तक कि वैसी ही चीज़ हमें न दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी गई है।" अल्लाह भली-भाँति उस (के औचित्य) को जानता है, जिसमें वह अपनी पैग़म्बरी रखता है। अपराधियों को शीघ्र ही अल्लाह के यहाँ बड़े अपमान और कठोर यातना का सामना करना पड़ेगा, उस चाल के कारण जो वे चलते रहे हैं।

125. अतः (वास्तविकता यह है कि) जिसे अल्लाह सीधे मार्ग पर लाना चाहता है, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे गुमराही में पड़ा रहने देना चाहता है, उसके सीने को तंग और भिंचा हुआ कर देता है; मानो वह आकाश में चढ़ रहा है। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी

لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ۗ
قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ لَهُمْ دَارُ
السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ
مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا
اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ
اَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا
مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ
نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝
يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا ۗ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

डाल देता है, जो ईमान नहीं लाते।

126. और यह तुम्हारे रब का रास्ता है, बिलकुल सीधा। हमने निशानियाँ, ध्यान देनेवालों के लिए खोल-खोलकर बयान कर दी हैं।

127. उनके लिए उनके रब के यहाँ सलामती का घर है और वह उनका संरक्षक मित्र है, उन कामों के कारण जो वे करते रहे हैं।

128. और उस दिन को याद करो जब वह उन सबको घेरकर इकट्ठा करेगा, (कहेगा) : "ऐ जिन्नों के गिरोह! तुमने तो मनुष्यों पर खूब हाथ साफ़ किया।" और मनुष्यों में से जो उनके साथी रहे होंगे, कहेंगे : "ऐ हमारे रब! हमने आपस में एक-दूसरे से लाभ उठाया और अपने उस नियत समय को पहुँच गए, जो तूने हमारे लिए ठहराया था।" वह कहेगा : "आग (नरक) तुम्हारा ठिकाना है, उसमें तुम्हें सदैव रहना है।" अल्लाह का चाहा ही क्रियान्वित है। निश्चय ही तुम्हारा रब तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

129. इसी प्रकार हम अत्याचारियों को एक-दूसरे के लिए (नरक का) साथी बना देंगे, उस कमाई के कारण जो वे करते रहे थे।

130. "ऐ जिन्नों और मनुष्यों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराते थे?" वे कहेंगे : "क्यों नहीं! (रसूल तो आए थे) हम स्वयं अपने विरुद्ध गवाह हैं।" उन्हें तो सांसारिक जीवन ने धोखे में रखा। मगर अब वे

كٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى
بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا
عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَرَبُّكَ
الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ
مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ
قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ
الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا
ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا
لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ
فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى
شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ

منزل ٢

स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देने लगे कि वे इनकार करनेवाले थे।

131. यह जान लो कि तुम्हारा रब ज़ुल्म करके बस्तियों को विनष्ट करनेवाला न था, जबकि उनके निवासी बेसुध रहे हों।

132. सभी के दर्जे उनके कर्मों के अनुसार हैं। और जो कुछ वे करते हैं, उससे तुम्हारा रब अनभिज्ञ नहीं है।

133. तुम्हारा रब निस्पृह, दयावान है। यदि वह चाहे तो तुम्हें (दुनिया से) ले जाए और तुम्हारे स्थान पर जिसको चाहे तुम्हारे बाद ले आए, जिस प्रकार उसने तुम्हें कुछ और लोगों की सन्तति से उठाया है।

134. जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, उसे अवश्य आना है और तुममें उसे मात करने की सामर्थ्य नहीं।

135. कह दो : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम अपनी जगह कर्म करते रहो, मैं भी अपनी जगह कर्मशील हूँ। शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि घर (लोक-परलोक) का परिणाम किसके हित में होता है। निश्चय ही अत्याचारी सफल नहीं होते।"

136. उन्होंने अल्लाह के लिए स्वयं उसी की पैदा की हुई खेती और चौपायों में से एक भाग निश्चित किया है और अपने ख़याल से कहते हैं : "यह हिस्सा अल्लाह का है और यह हमारे ठहराए हुए साझीदारों का है।" फिर जो उनके साझीदारों का (हिस्सा) है, वह अल्लाह को नहीं पहुँचता, परन्तु जो अल्लाह का है, वह उनके साझीदारों को पहुँच जाता है। कितना बुरा है, जो फ़ैसला वे करते हैं !

137. इसी प्रकार बहुत-से बहुदेववादियों के लिए उनके साझीदारों ने उनकी

مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ
وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ
فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ
وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ
وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ
الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ
وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ
وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ
قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا
رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ

अपनी संतान की हत्या को सुहाना बना दिया है, ताकि उन्हें विनष्ट कर दें और उनके लिए उनके धर्म को संदिग्ध बना दें। यदि अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते; तो छोड़ दो उन्हें और उनके झूठ घड़ने को।

138. और वे कहते हैं : "ये जानवर और खेती वर्जित और सुरक्षित हैं। इन्हें तो केवल वही खा सकता है, जिसे हम चाहें।"— ऐसा वे स्वयं अपने ख़याल से कहते हैं— और कुछ चौपाए ऐसे हैं, जिनकी पीठों को (सवारी के लिए) हराम ठहरा लिया है और कुछ जानवर ऐसे हैं जिनपर अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ घड़ा है, और वह शीघ्र ही उन्हें उनके झूठ घड़ने का बदला देगा।

139. और वे कहते हैं : "जो कुछ इन जानवरों के पेट में है वह बिलकुल हमारे पुरुषों ही के लिए है और वह हमारी पत्नियों के लिए वर्जित है। परन्तु यदि वह मुर्दा हो, तो वे सब उसमें शरीक हैं।" शीघ्र ही वह उन्हें उनके ऐसा कहने का बदला देगा। निस्संदेह वह तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

140. वे लोग कुछ जाने-बूझे बिना घाटे में रहे, जिन्होंने मूर्खता के कारण अपनी संतान की हत्या की और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया था, उसे अल्लाह पर झूठ घड़कर हराम ठहरा लिया। वास्तव में वे भटक गए और वे सीधा मार्ग पानेवाले न हुए।

141. और वही है जिसने बाग़ पैदा किए; कुछ जालियों पर चढ़ाए जाते हैं

وَّغَيْرَ مَعْرُوشَٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ
وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَٰبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَٰبِهٍ
كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَءَاتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ
وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَمِنَ
الْأَنْعَٰمِ حَمُولَةً وَفَرْشًا كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ
وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَٰتِ الشَّيْطَٰنِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝
ثَمَٰنِيَةَ أَزْوَٰجٍ مِّنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ
اثْنَيْنِ قُلْ ءَآلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا
اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ نَبِّـُٔونِى بِعِلْمٍ
إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ
الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ ءَآلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ
أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ أَمْ كُنتُمْ
شُهَدَآءَ إِذْ وَصَّىٰكُمُ اللَّهُ بِهَٰذَا فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ

और कुछ नहीं चढ़ाए जाते और खजूर और खेती भी जिनकी पैदावार विभिन्न प्रकार की होती है, और ज़ैतून और अनार जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और नहीं भी मिलते हैं। जब वह फल दे, तो उसका फल खाओ और उसका हक़ अदा करो जो उस (फ़सल) की कटाई के दिन वाजिब होता है। और हद से आगे न बढ़ो, क्योंकि वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।

142. और चौपायों में से कुछ बोझ उठानेवाले बड़े और कुछ छोटे जानवर पैदा किए। अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें से खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो। निश्चय ही वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।

143. आठ नर-मादा पैदा किए——दो भेड़ की जाति से और दो बकरी की जाति से—— कहो : "क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा को? या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में हो? किसी ज्ञान के आधार पर मुझे बताओ, यदि तुम सच्चे हो।"

144. और दो ऊँट की जाति से और दो गाय की जाति से, कहो : "क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा को? या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में हो? या, तुम उपस्थित थे, जब अल्लाह ने तुम्हें इसका आदेश दिया था? फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो लोगों को

افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ
اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٤﴾ قُلْ لَا أَجِدُ فِي
مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ
يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ
رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ
بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٥﴾ وَعَلَى الَّذِينَ
هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا
أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ
وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو
رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾ سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ
اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ

पथभ्रष्ट करने के लिए अज्ञानता-पूर्वक अल्लाह पर झूठ घड़े? निश्चय ही, अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।"

145. कह दो : "जो कुछ मेरी ओर प्रकाशना की गई है, उसमें तो मैं नहीं पाता कि किसी खानेवाले पर उसका कोई खाना हराम किया गया हो, सिवाय इसके कि वह मुरदार हो, या बहता हुआ रक्त हो या सुअर का मांस हो— कि वह निश्चय ही नापाक है— या वह चीज़ जो मर्यादा से हटी हुई हो, जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो। इसपर भी जो बहुत विवश और लाचार हो जाए; परन्तु वह अवज्ञाकारी न हो और न हद से आगे बढ़नेवाला हो, तो निश्चय ही तुम्हारा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

146. और उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए हमने नाख़ूनवाला जानवर हराम किया था और गाय और बकरी में से इन दोनों की चरबियाँ उनके लिए हराम कर दी थीं, सिवाय उस (चर्बी) के जो उन दोनों की पीठों या आँखों से लगी हुई या हड्डी से मिली हुई हों। यह बात ध्यान में रखो। हमने उन्हें उनकी सरकशी का बदला दिया था और निश्चय ही हम सच्चे हैं।

147. फिर यदि वे तुम्हें झुठलाएँ तो कह दो : "तुम्हारा रब व्यापक दयालुतावाला है और अपराधियों से उसकी यातना नहीं फिरती।"

148. बहुदेववादी कहेंगे : "यदि अल्लाह चाहता तो न हम साझीदार ठहराते और न हमारे पूर्वज ही; और न हम किसी चीज़ को (बिना अल्लाह के आदेश के) हराम ठहराते।" ऐसे ही उनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया था, यहाँ

كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا
بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ
اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ۝
قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝ قُلْ
تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ
شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا
النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ

तक कि उन्हें हमारी यातना का मज़ा चखना पड़ा। कहो : "क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है कि उसे हमारे पास पेश करो?" तुम लोग केवल गुमान पर चलते हो और निरे अटकल से काम लेते हो।

149. कह दो : "पूर्ण तर्क तो अल्लाह ही का है। अतः यदि वह चाहता तो तुम सबको सीधा मार्ग दिखा देता।"

150. कह दो : "अपने उन गवाहों को लाओ, जो इसकी गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया है।" फिर यदि वे गवाही दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो आख़िरत को नहीं मानते और (जिनका) हाल यह है कि वे दूसरों को अपने रब के समकक्ष ठहराते हैं।

151. कह दो : "आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे ऊपर क्या पाबन्दियाँ लगाई हैं : यह कि किसी चीज़ को उसका साझीदार न ठहराओ और माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार करो और निर्धनता के कारण अपनी संतान की हत्या न करो; हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और अश्लील बातों के निकट न जाओ, चाहे वे खुली हुई हों या छिपी हुई हों। और किसी जीव की, जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है, हत्या न करो। यह और बात है कि हक़ के लिए ऐसा करना पड़े। ये बातें हैं, जिनकी ताकीद उसने

بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا
بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا
الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا
وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ
وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا
فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ ثُمَّ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَ
تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ
رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ
فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلُوْٓا
اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَاۗىِٕفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا

तुम्हें की है, शायद कि तुम बुद्धि से काम लो।

152. और अनाथ के धन को हाथ न लगाओ, किन्तु ऐसे तरीक़े से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए। और इनसाफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तौलो। हम किसी व्यक्ति पर उसी काम की ज़िम्मेदारी का बोझ डालते हैं जो उसकी सामर्थ्य में हो। और जब बात कहो, तो न्याय की कहो, चाहे मामला अपने नातेदार ही का क्यों न हो, और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो। ये बातें हैं, जिनकी उसने तुम्हें ताकीद की है। आशा है तुम ध्यान रखोगे।

153. और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उसके मार्ग से हटाकर इधर-उधर कर देंगे। यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की है, ताकि तुम (पथभ्रष्टता से) बचो।"

154. फिर (देखो) हमने मूसा को किताब दी थी, (धर्म को) पूर्णता प्रदान करने के लिए, जिसे उसने उत्तम रीति से ग्रहण किया था; और हर चीज़ को स्पष्ट रूप से बयान करने, मार्गदर्शन देने और दया करने के लिए, ताकि वे लोग अपने रब से मिलने पर ईमान लाएँ।

155. और यह किताब भी हमने उतारी है, जो बरकतवाली है; तो तुम इसका अनुसरण करो और डर रखो, ताकि तुमपर दया की जाए,

156. कि कहीं ऐसा न हो कि तुम कहने लगो : "किताब तो केवल हमसे पहले के दो गिरोहों पर उतारी गई थी और हमें तो उनके पढ़ने-पढ़ाने की

وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۙ أَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ
أَنَّآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ أَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ
فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ
عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا
سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ
إِلَّآ أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ
بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ
لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ
أَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ إِيْمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوْٓا إِنَّا
مُنْتَظِرُوْنَ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا
شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ۗ إِنَّمَآ أَمْرُهُمْ إِلَى اللّٰهِ
ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ

ख़बर तक न थी।"

157. या यह कहने लगो : "यदि हमपर किताब उतारी गई होती तो हम उनसे बढ़कर सीधे मार्ग पर होते।" तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण, मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है। अब उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और दूसरों को उनसे फेरे? जो लोग हमारी आयतों से रोकते हैं, उन्हें हम इस रोकने के कारण जल्द बुरी यातना देंगे।

158. क्या ये लोग केवल इसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या स्वयं तुम्हारा रब आ जाए या तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाए? जिस दिन तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाएगी, फिर किसी ऐसे व्यक्ति को उसका ईमान कुछ लाभ न पहुँचाएगा जो पहले ईमान न लाया हो या जिसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो। कह दो : "तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा करते हैं।"

159. जिन लोगों ने अपने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और स्वयं गिरोहों में बँट गए, तुम्हारा उनसे कोई संबंध नहीं। उनका मामला तो बस अल्लाह के हवाले है। फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वे किया करते थे।

160. जो कोई अच्छा चरित्र लेकर आएगा उसे उसका दस गुना बदला मिलेगा

فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا
يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّنِىْ
هَدٰىنِىْ رَبِّىْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا
مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝
قُلْ اِنَّ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ
وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِىْ رَبًّا
وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ
اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى
رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝
وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۚ اِنَّ
رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

और जो व्यक्ति बुरा चरित्र लेकर आएगा उसे उसका बस उतना ही बदला मिलेगा, उनके साथ कोई अन्याय न होगा।

161. कहो : "मेरे रब ने मुझे सीधा मार्ग दिखा दिया है, बिलकुल ठीक धर्म, इबराहीम के पंथ की ओर जो सबसे कटकर एक (अल्लाह) का हो गया था और वह बहुदेववादियों में से न था।"

162. कहो : "मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है।

163. उसका कोई साझी नहीं है। मुझे तो इसी का आदेश मिला है और सबसे पहला मुस्लिम (आज्ञाकारी) मैं हूँ।

164. कहो : "क्या मैं अल्लाह से भिन्न कोई और रब ढूढ़ूँ, जबकि हर चीज़ का रब वही है!" और यह कि प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ कमाता है, उसका फल वही भोगेगा; कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब की ओर लौटकर जाना है। उस समय वह तुम्हें बता देगा, जिसमें परस्पर तुम्हारा मतभेद और झगड़ा था।

165. वही है जिसने तुम्हें धरती में ख़लीफ़ा (अधिकारी, उत्तराधिकारी) बनाया और तुममें से कुछ लोगों के दर्जे कुछ लोगों की अपेक्षा ऊँचे रखे, ताकि जो कुछ उसने तुमको दिया है उसमें वह तुम्हारी परीक्षा ले। निस्संदेह तुम्हारा रब जल्द सज़ा देनेवाला है। और निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

7. अल-आराफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 206)

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓصٓ ۝ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ
حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝
اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ
دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَكَمْ مِّنْ
قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ۝
فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا
اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ
وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا
كُنَّا غَآئِبِيْنَ ۝ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ
مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ
مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम० साद०।

2. यह एक किताब है, जो तुम्हारी ओर उतारी गई है—— अतः इससे तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो——ताकि तुम इसके द्वारा सचेत करो और यह ईमानवालों के लिए एक प्रबोधन है;

3. जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, उस पर चलो और उसे छोड़कर दूसरे संरक्षक मित्रों का अनुसरण न करो। तुम लोग नसीहत थोड़े ही मानते हो।

4. कितनी ही बस्तियाँ थीं, जिन्हें हमने विनष्ट कर दिया। उनपर हमारी यातना रात को सोते समय आ पहुँची या (दिन-दहाड़े) आई, जबकि वे दोपहर में विश्राम कर रहे थे।

5. जब उनपर हमारी यातना आ गई तो इसके सिवा उनके मुँह से कुछ न निकला कि वे पुकार उठे : "वास्तव में हम अत्याचारी थे।"

6. अतः हम उन लोगों से अवश्य पूछेंगे, जिनके पास रसूल भेजे गए थे, और हम रसूलों से भी अवश्य पूछेंगे।

7. फिर हम पूरे ज्ञान के साथ उनके सामने सब बयान कर देंगे। हम कहीं ग़ायब नहीं थे।

8. और बिलकुल पक्का-सच्चा वज़न उसी दिन होगा। अतः जिनके कर्म वज़न में भारी होंगे, वही सफलता प्राप्त करेंगे।

9. और वे लोग जिनके कर्म वज़न में हलके होंगे, तो वही वे लोग हैं,

بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ
جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ
اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ
قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ
طِيْنٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ
تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝ قَالَ
اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ اِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ۝ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَاۗىِٕلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝ قَالَ

जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, क्योंकि वे हमारी आयतों का इनकार और अपने ऊपर अत्याचार करते रहे।

10. और हमने धरती में तुम्हें अधिकार दिया और उसमें तुम्हारे लिए जीवन-सामग्री रखी। तुम कृतज्ञता थोड़े ही दिखलाते हो।

11. हमने तुम्हें पैदा करने का निश्चय किया; फिर तुम्हारा रूप बनाया; फिर हमने फ़रिश्तों से कहा : "आदम को सजदा करो।" तो उन्होंने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। वह (इबलीस) सजदा करनेवालों में से न हुआ।

12. कहा : "तुझे किसने सजदा करने से रोका, जबकि मैंने तुझे आदेश दिया था?" बोला : "मैं उससे अच्छा हूँ। तूने मुझे अग्नि से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया।"

13. कहा : "उतर जा यहाँ से ! तुझे कोई हक़ नहीं है कि यहाँ घमण्ड करे, तो अब निकल जा; निश्चय ही तू अपमानित है।"

14. बोला : "मुझे उस दिन तक मुहलत दे, जबकि लोग उठाए जाएँगे।"

15. कहा : "निस्संदेह तुझे मुहलत है।"

16. बोला : "अच्छा, इस कारण कि तूने मुझे गुमराही में डाला है[1], मैं भी तेरे सीधे मार्ग पर उनके लिए घात में अवश्य बैठूँगा।

17. फिर उनके आगे और उनके पीछे और उनके दाएँ और उनके बाएँ से उनके पास आऊँगा। और तू उनमें अधिकतर को कृतज्ञ न पाएगा।"

---

1. अर्थात तेरे सजदे के लिए आदेश देने के कारण मैं गुमराही में पड़ गया।

اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَّمَن تَبِعَكَ
مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾ وَيَا آدَمُ
اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا
وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾
فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا
مِن سَوْآتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ
هَٰذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا
مِنَ الْخَالِدِينَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ
النَّاصِحِينَ ﴿٢١﴾ فَدَلَّاهُمَا بِغُرُورٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ
بَدَتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن
وَرَقِ الْجَنَّةِ ۖ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَن
تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَأَقُل لَّكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ
مُّبِينٌ ﴿٢٢﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ

18. कहा : "निकल जा यहाँ से ! निन्दित, ठुकराया हुआ। उनमें से जिस किसी ने भी तेरा अनुसरण किया, मैं अवश्य तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा।"

19. और "ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत में रहो-बसो, फिर जहाँ से चाहो खाओ, लेकिन इस वृक्ष के निकट न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।"

20. फिर शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि उनकी शर्मगाहों को, जो उन दोनों से छिपी थीं, उन दोनों के सामने खोल दे। और उसने (इबलीस ने) कहा : "तुम्हारे रब ने तुम दोनों को जो इस वृक्ष से रोका है, तो केवल इसलिए कि ऐसा न हो कि तुम कहीं फ़रिश्ते हो जाओ या कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें अमरता प्राप्त हो जाए।"

21. और उसने उन दोनों के आगे क़समें खाईं कि "निश्चय ही मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।"

22. इस प्रकार धोखा देकर उसने उन दोनों को झुका लिया। अन्तत: जब उन्होंने उस वृक्ष का स्वाद लिया, तो उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गईं और वे अपने ऊपर बाग़ के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। तब उनके रब ने उन्हें पुकारा : "क्या मैंने तुम दोनों को इस वृक्ष से रोका नहीं था और तुमसे कहा नहीं था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है ?"

23. दोनों बोले : "हमारे रब ! हमने अपने आप पर अत्याचार किया। अब यदि तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न दर्शाई, फिर तो हम घाटा उठानेवालों में से होंगे।"

تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۞ قَالَ
اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلٰى حِينٍ ۞ قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَ
فِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ۞ يٰبَنِي آدَمَ
قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُوَارِي سَوْآتِكُمْ وَرِيشًا ۖ
وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذٰلِكَ مِنْ آيٰتِ اللّٰهِ
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۞ يٰبَنِي آدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ
كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا
لِيُرِيَهُمَا سَوْآتِهِمَا ۗ إِنَّهُ يَرٰكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِينَ أَوْلِيَاءَ
لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۞ وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا
وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللّٰهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ
إِنَّ اللّٰهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ ۖ أَتَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ

24. कहा : "उतर जाओ ! तुम परस्पर एक-दूसरे के शत्रु हो और एक अवधि तक तुम्हारे लिए धरती में ठिकाना और जीवन-सामग्री है।"

25. कहा : "वहीं तुम्हें जीना और वहीं तुम्हें मरना है और उसी में से तुमको निकाला जाएगा।"

26. ऐ आदम की संतान ! हमने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को छुपाए और रक्षा और शोभा का साधन हो। और धर्मपरायणता का वस्त्र—वह तो सबसे उत्तम है, यह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि वे ध्यान दें।

27. ऐ आदम की सन्तान ! कहीं शैतान तुम्हें बहकावे में न डाल दे, जिस प्रकार उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया था; उनके वस्त्र उनपर से उतरवा दिए थे, ताकि उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोल दे। निस्संदेह वह और उसका गिरोह उस स्थान से तुम्हें देखता है, जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते। हमने तो शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया है, जो ईमान नहीं रखते।

28. और उनका हाल यह है कि जब वे लोग कोई अश्लील कर्म करते हैं तो कहते हैं कि "हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाह ही ने हमें इसका आदेश दिया है।" कह दो : "अल्लाह कभी अश्लील बातों का आदेश नहीं दिया करता। क्या अल्लाह पर थोपकर ऐसी

مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا
وُجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ۝ فَرِيقًا هَدَىٰ
وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا
الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ
أَنَّهُمْ مُهْتَدُونَ ۝ يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ
كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ
لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي
أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ
لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۗ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝
قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا

बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं ?"

29. कह दो : "मेरे रब ने तो न्याय का आदेश दिया है और यह कि इबादत के प्रत्येक अवसर पर अपना रुख ठीक रखो और निरे उसी के भक्त एवं आज्ञाकारी बनकर उसे पुकारो। जैसे उसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।"

30. एक गिरोह को उसने मार्ग दिखाया। परन्तु दूसरा गिरोह ऐसा है, जिसके लोगों पर गुमराही चिपककर रह गई। निश्चय ही उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपने मित्र बनाए और समझते यह हैं कि वे सीधे मार्ग पर हैं।

31. ऐ आदम की संतान! इबादत के प्रत्येक अवसर पर अपनी शोभा धारण करो; खाओ और पियो, परन्तु हद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही, वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।

32. कहो : "अल्लाह की उस शोभा को जिसे उसने अपने बन्दों के लिए उत्पन्न किया है और आजीविका की पवित्र, अच्छी चीज़ों को किसने हराम कर दिया?" कह दो : "ये सांसारिक जीवन में भी ईमानवालों के लिए हैं; क़ियामत के दिन तो ये केवल उन्हीं के लिए होंगी। इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए सविस्तार बयान करते हैं, जो जानना चाहें।"

33. कह दो : "मेरे रब ने केवल अश्लील कर्मों को हराम किया है——जो उनमें से प्रकट हों उन्हें भी और जो छिपे हों उन्हें भी——और हक़ मारना,

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ
عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۗ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ
مِّنَ الْكِتٰبِ ۗ حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ
قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالُوْا
ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا
كٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ

नाहक़ ज़्यादती और इस बात को कि तुम अल्लाह का साझीदार ठहराओ, जिसके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा और इस बात को भी कि तुम अल्लाह पर थोपकर ऐसी बात कहो जिसका तुम्हें ज्ञान न हो।"

34. प्रत्येक समुदाय के लिए एक नियत अवधि है। फिर जब उनका नियत समय आ जाता है, तो एक घड़ी भर न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।

35. ऐ आदम की संतान! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएँ; तुम्हें मेरी आयतें सुनाएँ, तो जिसने डर रखा और सुधार कर लिया तो ऐसे लोगों के लिए न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

36. रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई; वही आगवाले हैं, जिसमें वे सदैव रहेंगे।

37. अब उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है, जिसने अल्लाह पर मिथ्यारोपण किया या उसकी आयतों को झुठलाया? ऐसे लोगों को उनके लिए लिखा हुआ हिस्सा पहुँचता रहेगा, यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनके प्राण ग्रस्त करने के लिए उनके पास आएँगे तो कहेंगे : "कहाँ हैं, वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे?" कहेंगे : "वे तो हमसे गुम हो गए।" और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वास्तव में वे इनकार करनेवाले थे।

38. वह कहेगा : "जिन्न और इनसान के जो गिरोह तुमसे पहले गुज़रे हैं,

उन्हीं के साथ सम्मिलित होकर तुम भी आग में प्रवेश करो।" जब भी कोई जमाअत प्रवेश करेगी, तो वह अपनी बहन[1] पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब सब उसमें रल-मिल जाएँगे तो उनमें से बाद में आनेवाले अपने से पहलेवाले के विषय में कहेंगे : "हमारे रब! हमें इन्हीं लोगों ने गुमराह किया था; तो तू इन्हें आग की दोहरी यातना दे।" वह कहेगा : "हरेक के लिए दोहरी ही है। किन्तु तुम नहीं जानते।"

39. और उनमें से पहले आनेवाले अपने से बाद में आनेवालों से कहेंगे : "फिर हमारे मुक़ाबले में तुम्हें कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं, तो जैसी कुछ कमाई तुम करते रहे हो, उसके बदले में तुम यातना का मज़ा चखो!"

40. जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई, उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जाएँगे और न वे जन्नत में प्रवेश करेंगे जब तक कि ऊँट सुई के नाके में से न गुज़र जाए। हम अपराधियों को ऐसा ही बदला देते हैं।

41. उनके लिए बिछौना जहन्नम का होगा और ओढ़ना भी उसी का। अत्याचारियों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

42. इसके विपरीत जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए— हम किसी पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालते— वही लोग

قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ
أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا
قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا
فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ
لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ
لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ
يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا

1. अर्थात अपनी जैसी दूसरी जमाअत (दल)।

أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٤٢﴾ وَ
نَزَعْنَا مَا فِى صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِى مِن
تَحْتِهِمُ ٱلْأَنْهَٰرُ ۖ وَقَالُوا۟ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى هَدَىٰنَا
لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَآ أَنْ هَدَىٰنَا ٱللَّهُ ۖ
لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِٱلْحَقِّ ۖ وَنُودُوٓا۟ أَن
تِلْكُمُ ٱلْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾
وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ أَصْحَٰبَ ٱلنَّارِ أَن قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا
وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا۟ نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ
بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾ ٱلَّذِينَ
يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ
وَهُم بِٱلْءَاخِرَةِ كَٰفِرُونَ ﴿٤٥﴾ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ
وَعَلَى ٱلْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّۢا بِسِيمَىٰهُمْ ۚ

जन्नतवाले हैं। वे उसमें सदैव रहेंगे।

43. उनके सीनों में एक-दूसरे के प्रति जो रंजिश होगी, उसे हम दूर कर देंगे; उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे : "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने इसकी ओर हमारा मार्गदर्शन किया। और यदि अल्लाह हमारा मार्गदर्शन न करता तो हम कदापि मार्ग नहीं पा सकते थे। हमारे रब के रसूल निस्संदेह सत्य लेकर आए थे।" और उन्हें आवाज़ दी जाएगी : "यह जन्नत है, जिसके तुम वारिस बनाए गए। उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे थे।"

44. जन्नतवाले आगवालों को पुकारेंगे : "हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था, उसे हमने सच पाया। तो क्या तुमसे तुम्हारे रब ने जो वादा कर रखा था, तुमने भी उसे सच पाया?" वे कहेंगे : "हाँ।" इतने में एक पुकारनेवाला उनके बीच पुकारेगा : "अल्लाह की फिटकार है अत्याचारियों पर।"——

45. जो अल्लाह के मार्ग से रोकते और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं और जो आख़िरत का इनकार करते हैं,

46. और इन दोनों के मध्य एक ओट होगी। और ऊँचाइयों पर कुछ लोग होंगे जो प्रत्येक को उसके लक्षणों से पहचानते होंगे, और जन्नतवालों से

وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ
يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ۝ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ
تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ
رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ
جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ اَهٰٓؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ اُدْخُلُوا
الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝
وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا
عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ قَالُوْٓا اِنَّ
اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا
دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا وَمَا

पुकारकर कहेंगे : "तुमपर सलाम है।" वे अभी जन्नत में प्रविष्ट तो नहीं हुए होंगे, यद्यपि वे आस लगाए होंगे।

47. और जब उनकी निगाहें आगवालों की ओर फिरेंगी, तो कहेंगे : "हमारे रब, हमें अत्याचारी लोगों में सम्मिलित न करना।"

48. और ये ऊँचाइयोंवाले कुछ ऐसे लोगों से, जिन्हें ये उनके लक्षणों से पहचानते हैं, कहेंगे : "तुम्हारे जत्थे तो तुम्हारे कुछ काम न आए और न तुम्हारा अकड़ते रहना ही।

49. क्या ये वही हैं ना, जिनके विषय में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उनपर अपनी दया-दृष्टि न करेगा।" "जन्नत में प्रवेश करो, तुम्हारे लिए न कोई भय है और न तुम्हें कोई शोक होगा।"

50. आगवाले जन्नतवालों को पुकारेंगे कि "थोड़ा पानी हमपर बहा दो, या उन चीज़ों में से कुछ दे दो जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं।" वे कहेंगे : "अल्लाह ने तो ये दोनों चीज़ें इनकार करनेवालों के लिए वर्जित कर दी हैं।"——

51. उनके लिए जिन्होंने अपना धर्म खेल-तमाशा ठहराया और जिन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया, तो आज हम भी उन्हें भुला देंगे, जिस प्रकार वे अपने इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे और हमारी आयतों का

كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝ وَلَقَدْ جِئْنَاهُم بِكِتَابٍ
فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝
هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلُهُ
يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِن قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَل لَّنَا مِن شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا
لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ قَدْ
خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝
إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي
اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ
تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ ادْعُوا رَبَّكُمْ
تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝

इनकार करते रहे।

52. और निश्चय ही हम उनके पास एक ऐसी किताब ले आए हैं, जिसे हमने ज्ञान के आधार पर विस्तृत किया है, जो ईमान लानेवालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।

53. क्या वे लोग केवल इसी की प्रतीक्षा में हैं कि उसकी वास्तविकता और परिणाम प्रकट हो जाए? जिस दिन उसकी वास्तविकता सामने आ जाएगी, तो वे लोग जो इससे पहले उसे भूले हुए थे, बोल उठेंगे : "वास्तव में, हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे। तो क्या हमारे कुछ सिफ़ारिशी हैं, जो हमारी सिफ़ारिश कर दें या हमें वापस भेज दिया जाए कि जो कुछ हम करते थे उससे भिन्न कर्म करें?" उन्होंने अपने आपको घाटे में डाल दिया और जो कुछ वे झूठ घढ़ते थे, वे सब उनसे गुम होकर रह गए।

54. निस्संदेह तुम्हारा रब वही अल्लाह है, जिसने आकाशों और धरती को छह दिनों में पैदा किया—फिर राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। वह रात को दिन पर ढाँकता है जो तेज़ी से उसका पीछा करने में सक्रिय है।—और सूर्य, चन्द्रमा और तारे भी बनाए, इस प्रकार कि वे उसके आदेश से काम में लगे हुए हैं। सावधान रहो, उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है। अल्लाह सारे संसार का रब, बड़ी बरकतवाला है।

55. अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारो। निश्चय ही वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।

ولو اننا الاعراف

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا
وَّطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهٖ ۚ حَتّٰى إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ
لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَأَخْرَجْنَا بِهٖ
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۚ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ
بِإِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ
كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝
لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ إِنِّيْٓ
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ قَالَ
الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهٖٓ إِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

منزل ٢

56. और धरती में उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ न पैदा करो। भय और आशा के साथ उसे पुकारो। निश्चय ही, अल्लाह की दयालुता सत्कर्मी लोगों के निकट है।

57. और वही है जो अपनी दयालुता से पहले शुभ सूचना देने को हवाएँ भेजता है, यहाँ तक कि जब वे बोझल बादल को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी निर्जीव भूमि की ओर चला देते हैं, फिर उससे पानी बरसाते हैं; फिर उससे हर तरह के फल निकालते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को मृत अवस्था से निकालेगे—ताकि तुम्हें ध्यान हो।

58. और अच्छी भूमि के पेड़-पौधे उसके रब के आदेश से निकलते हैं और जो भूमि ख़राब हो गई तो उससे निकम्मी पैदावार के अतिरिक्त कुछ नहीं निकलता। इसी प्रकार हम निशानियों को उन लोगों के लिए तरह-तरह से बयान करते हैं, जो कृतज्ञता दिखलानेवाले हैं।

59. हमने नूह को उसकी क़ौम के लोगों की ओर भेजा, तो उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।"

60. उसकी क़ौम के सरदारों ने कहा : "हम तो तुम्हें खुली गुमराही में पड़ा देख रहे हैं।"

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ
مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ
اَنْصَحُ لَكُمْ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۞
اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى
رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ۞ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ الَّذِيْنَ
مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ۞ وَ اِلٰى
عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۞ قَالَ
الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ
سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۞ قَالَ
يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ

61. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! किसी गुमराही का मुझसे संबंध नहीं, बल्कि मैं सारे संसार के रब का एक रसूल हूँ।

62. अपने रब के संदेश पहुँचाता हूँ और तुम्हारा हित चाहता हूँ, और मैं अल्लाह की ओर से वह कुछ जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।"

63. क्या (तुमने मुझे झूठा समझा) और तुम्हें इस पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के द्वारा तुम्हारे रब की नसीहत आई ? ताकि वह तुम्हें सचेत कर दे और ताकि तुम डर रखने लगो और शायद कि तुमपर दया की जाए।

64. किन्तु उन्होंने झुठला दिया। अन्ततः हमने उसे और उन लोगों को जो उसके साथ एक नौका में थे, बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को ग़लत समझा, उन्हें हमने डुबो दिया। निश्चय ही वे अन्धे लोग थे।

65. और आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या (इसे सोचकर) तुम डरते नहीं ?"

66. उसकी क़ौम के इनकार करनेवाले सरदारों ने कहा, "वास्तव में, हम तो देखते हैं कि तुम बुद्धिहीनता में ग्रस्त हो और हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।"

67. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं बुद्धिहीनता में कदापि ग्रस्त

رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا
لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ۝ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ
ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ
نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا
اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا
لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۚ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ
سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ
بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ
الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

नहीं हूँ। परन्तु मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।

68. तुम्हें अपने रब के संदेश पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा विश्वस्त हितैषी हूँ।

69. क्या (तुमने मुझे झूठा समझा) और तुम्हें इसपर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के द्वारा तुम्हारे रब की नसीहत आई, ताकि वह तुम्हें सचेत करे? और याद करो, जब उसने नूह की क़ौम के पश्चात तुम्हें उसका उत्तराधिकारी बनाया और शारीरिक दृष्टि से भी तुम्हें अधिक विशालता प्रदान की। अतः अल्लाह की सामर्थ्य के चमत्कारों को याद करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।"

70. वे बोले : "क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अकेले अल्लाह की हम बन्दगी करें और जिनको हमारे बाप-दादा पूजते रहे हैं, उन्हें छोड़ दें? अच्छा, तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, उसे हमपर ले आओ, यदि तुम सच्चे हो।"

71. उसने कहा : "तुम पर तो तुम्हारे रब की ओर से नापाकी थोप दी गई है और प्रकोप टूट पड़ा है। क्या तुम मुझसे उन नामों के लिए झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख छोड़े हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा? अच्छा, तो तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।"

72. फिर हमने अपनी दयालुता से उसको और जो लोग उसके साथ थे उन्हें

بنا وقطعنا دابر الذين كذبوا بآياتنا
وما كانوا مؤمنين ۝ وإلى ثمود أخاهم
صالحا ۚ قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من
إله غيره ۖ قد جاءتكم بينة من ربكم ۖ هذه
ناقة الله لكم آية ۖ فذروها تأكل في أرض
الله ۖ ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب أليم ۝
واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد عاد و
بوأكم في الأرض تتخذون من سهولها
قصورا وتنحتون الجبال بيوتا ۖ فاذكروا آلاء
الله ولا تعثوا في الأرض مفسدين ۝ قال
الملأ الذين استكبروا من قومه للذين
استضعفوا لمن آمن منهم أتعلمون أن
صالحا مرسل من ربه ۚ قالوا إنا بما أرسل

बचा लिया और उन लोगों की जड़ काट दी, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था और ईमानवाले न थे।

73. और समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण आ चुका है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। अतः इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में खाए। और तकलीफ़ पहुँचाने के लिए इसे हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें एक दुखद यातना आ लेगी——

74. और याद करो जब अल्लाह ने आद के पश्चात् तुम्हें उसका उत्तराधिकारी बनाया और धरती में तुम्हें ठिकाना प्रदान किया। तुम उसके समतल मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को काट-छाँट कर भवनों का रूप देते हो। अतः अल्लाह की सामर्थ्य के चमत्कारों को याद करो और धरती में बिगाड़ पैदा करते न फिरो।"

75. उसकी क़ौम के सरदार, जो बड़े बने हुए थे, उन कमज़ोर लोगों से, जो उनमें ईमान लाए थे, कहने लगे : "क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब का भेजा हुआ (पैग़म्बर) है ?" उन्होंने कहा : "निस्संदेह जिस चीज़ के साथ

بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَ عَتَوْا
عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَ قَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ
قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ
لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ وَ لُوْطًا
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ
بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ
الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا
اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝

वह भेजा गया है, हम उसपर ईमान रखते हैं।"

76. उन घमण्ड करनेवालों ने कहा : "जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो, हम तो उसको नहीं मानते।"

77. फिर उन्होंने उस ऊँटनी की कूचें काट दीं और अपने रब के आदेश की अवहेलना की और बोले : "ऐ सालेह ! हमें तू जिस चीज़ की धमकी देता है, उसे हमपर ले आ, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।"

78. अन्ततः एक हिला मारनेवाली आपदा ने उन्हें आ लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

79. फिर वह यह कहता हुआ उनके यहाँ से फिरा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं तो तुम्हें अपने रब का संदेश पहुँचा चुका और मैंने तुम्हारा हित चाहा। परन्तु तुम्हें अपने हितैषी पसन्द ही नहीं आते।"

80. और हमने लूत को भेजा। जब उसने अपनी क़ौम से कहा : "क्या तुम वह प्रत्यक्ष अश्लील कर्म करते हो, जिसे दुनिया में तुमसे पहले किसी ने नहीं किया ?"

81. तुम स्त्रियों को छोड़कर मर्दों से कामेच्छा पूरी करते हो, बल्कि तुम नितान्त मर्यादाहीन लोग हो।

82. उसकी क़ौम के लोगों का उत्तर इसके अतिरिक्त और कुछ न था कि वे बोले : "निकालो, उन लोगों को अपनी बस्ती से। ये ऐसे लोग हैं जो बड़े पाक-साफ़ हैं !"

83. फिर हमने उसे और उसके लोगों को छुटकारा दिया, सिवाय उसकी स्त्री के कि वह पीछे रह जानेवालों में से थी।

84. और हमने उनपर एक बरसात बरसाई, तो देखो अपराधियों का कैसा परिणाम हुआ।

85. और मदयनवालों की ओर हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा: "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण आ चुका है। तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी करो, और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो, और धरती में उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ पैदा न करो। यही तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम ईमानवाले हो।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُجْرِمِينَ ۝ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ
يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ
جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَ
الْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا
فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن
كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ
تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ
بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ
قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِينَ ۝ وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي
أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ
يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

86. और प्रत्येक मार्ग पर इसलिए न बैठो कि धमकियाँ दो और उस व्यक्ति को अल्लाह के मार्ग से रोकने लगो जो उसपर ईमान रखता हो और न उस मार्ग को टेढ़ा करने में लग जाओ। याद करो, वह समय जब तुम थोड़े थे, फिर उसने तुम्हें अधिक कर दिया। और देखो, बिगाड़ पैदा करनेवालों का कैसा परिणाम हुआ।

87. और यदि तुममें एक गिरोह ऐसा है, जो उसपर ईमान लाया है, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान नहीं लाया, तो धैर्य से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे। और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।"



88. उसकी क़ौम के सरदारों ने, जो घमण्ड में पड़े थे, कहा : "ऐ शुऐब ! हम तुझे और तेरे साथ उन लोगों को, जो ईमान लाए हैं, अपनी बस्ती से निकालकर रहेंगे। या फिर तुम हमारे पंथ में लौट आओ।" उसने कहा : "क्या (तुम यही चाहोगे) यद्यपि यह हमें अप्रिय हो जब भी ?

89. हम अल्लाह पर झूठ घड़नेवाले ठहरेंगे, यदि तुम्हारे पंथ में लौट आएँ, इसके बाद कि अल्लाह ने हमें उससे छुटकारा दे दिया है। यह हमसे तो होने का नहीं कि हम उसमें पलट कर जाएँ, बल्कि हमारे रब अल्लाह की इच्छा ही क्रियान्वित है। ज्ञान की दृष्टि से हमारा रब हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है। हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हमारे रब, हमारे और हमारी क़ौम के बीच निश्चित अटल फ़ैसला कर दे। और तू सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।"

90. उसकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया था, बोले : "यदि तुम शुऐब के अनुयायी बने तो तुम घाटे में पड़ जाओगे।"

91. अन्ततः एक दहला देनेवाली आपदा ने उन्हें आ लिया। फिर वे अपने घर में औंधे पड़े रह गए,

92. शुऐब को झुठलानेवाले, मानो कभी वहाँ बसे ही न थे। शुऐब को झुठलानेवाले ही घाटे में रहे।

93. तब वह उनके यहाँ से यह कहता हुआ फिरा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो !



मैंने अपने रब के संदेश तुम्हें पहुँचा दिए और मैंने तुम्हारा हित चाहा। अब मैं इनकार करनेवाले लोगों पर कैसे अफ़सोस करूँ !"

94. हमने जिस बस्ती में भी कभी कोई नबी भेजा, तो वहाँ के लोगों को तंगी और मुसीबत में डाला, ताकि वे (हमारे सामने) गिड़गिड़ाएँ।

95. फिर हमने बदहाली को ख़ुशहाली से बदल दिया, यहाँ तक कि वे ख़ूब फले-फूले और कहने लगे : "ये दुख और सुख तो हमारे बाप-दादा को भी पहुँचे हैं।" अन्ततः जब वे बेख़बर थे, हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया।

96. यदि बस्तियों के लोग ईमान लाते और डर रखते तो अवश्य ही हम उनपर आकाश और धरती की बरकतें खोल देते, परन्तु उन्होंने तो झुठलाया। तो जो कुछ कमाई वे करते थे, उसके बदले में हमने उन्हें पकड़ लिया।

97. फिर क्या बस्तियों के लोगों को इस ओर से निश्चिन्त रहने का अवसर मिल सका कि रात में उनपर हमारी यातना आ जाए, जबकि वे सोए हुए हों ?

98. और क्या बस्तियों के लोगों को इस ओर से निश्चिन्त रहने का अवसर मिल सका कि दिन चढ़े उनपर हमारी यातना आ जाए, जबकि वे खेल रहे हों ?

99. आख़िर क्या वे अल्लाह की चाल से निश्चिन्त हो गए थे ? तो (समझ लो उन्हें टोटे में पड़ना ही था, क्योंकि) अल्लाह की चाल से तो वही लोग निश्चिन्त होते हैं, जो टोटे में पड़नेवाले होते हैं।

100. क्या जो धरती के, उसके पूर्ववासियों के पश्चात उत्तराधिकारी हुए हैं,

أَهْلِهَآ أَن لَّوْ نَشَآءُ أَصَبْنَٰهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقُرَىٰ
نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَٰتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِن
قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَٰفِرِينَ ﴿١٠١﴾ وَمَا
وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ ۖ وَإِن وَجَدْنَآ أَكْثَرَهُمْ
لَفَٰسِقِينَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِـَٔايَٰتِنَآ إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَإِي۟هِۦ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَٰقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ يَٰفِرْعَوْنُ إِنِّى
رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٠٤﴾ حَقِيقٌ عَلَىٰٓ أَن لَّآ أَقُولَ
عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ
فَأَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ
بِـَٔايَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿١٠٦﴾ فَأَلْقَىٰ

उनपर यह तथ्य प्रकट न हुआ कि यदि हम चाहें तो उनके गुनाहों पर उन्हें आ पकड़ें? हम तो उनके दिलों पर मुहर लगा रहे हैं, क्योंकि वे कुछ भी नहीं सुनते।

101. ये हैं वे बस्तियाँ जिनके कुछ वृत्तांत हम तुमको सुना रहे हैं। उनके पास उनके रसूल खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए परन्तु वे ऐसे न हुए कि ईमान लाते। इसका कारण यह था कि वे पहले से झुठलाते रहे थे। इसी प्रकार अल्लाह इनकार करनेवालों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

102. हमने उनके अधिकतर लोगों में प्रतिज्ञा का निर्वाह न पाया, बल्कि उनके बहुतों को हमने उल्लंघनकारी ही पाया।

103. फिर उनके पश्चात हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, परन्तु उन्होंने उनका इनकार और स्वयं पर अत्याचार किया। तो देखो, इन बिगाड़ पैदा करनेवालों का कैसा परिणाम हुआ!

104. मूसा ने कहा : "ऐ फ़िरऔन! मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।

105. मैं इसका अधिकारी हूँ कि अल्लाह से सम्बद्ध करके सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण लेकर आ गया हूँ। अतः तुम इसराईल की संतान को मेरे साथ जाने दो।"

106. बोला : "यदि तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश करो, यदि तुम सच्चे हो।"

عصاه فإذا هي ثعبان مبين ۝ ونزع يده فإذا
هي بيضاء للنظرين ۝ قال الملأ من قوم
فرعون إن هذا لسحر عليم ۝ يريد أن يخرجكم من
أرضكم فماذا تأمرون ۝ قالوا أرجه وأخاه و
أرسل في المدائن حشرين ۝ يأتوك بكل سحر
عليم ۝ وجاء السحرة فرعون قالوا إن لنا
لأجرا إن كنا نحن الغلبين ۝ قال نعم وإنكم لمن
المقربين ۝ قالوا يموسى إما أن تلقي وإما أن
نكون نحن الملقين ۝ قال ألقوا فلما ألقوا
سحروا أعين الناس واسترهبوهم وجاءو بسحر
عظيم ۝ وأوحينا إلى موسى أن ألق عصاك فإذا
هي تلقف ما يأفكون ۝ فوقع الحق وبطل ما
كانوا يعملون ۝ فغلبوا هنالك وانقلبوا

107. तब उसने अपनी लाठी डाल दी। क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष अजगर है।

108. और उसने अपना हाथ निकाला, तो क्या देखते हैं कि वह सब देखनेवालों के सामने चमक रहा है।

109. फ़िरऔन की क़ौम के सरदार कहने लगे : "अरे, यह तो बड़ा कुशल जादूगर है!

110. तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल देना चाहता है। तो अब क्या कहते हो?"

111. उन्होंने कहा : "इसे और इसके भाई को प्रतीक्षा में रखो और नगरों में हरकारे भेज दो,

112. कि वे हर कुशल जादूगर को तुम्हारे पास ले आएँ।"

113. अतएव जादूगर फ़िरऔन के पास आ गए। कहने लगे : "यदि हम विजयी हुए तो अवश्य ही हमें बड़ा बदला मिलेगा?"

114. उसने कहा : "हाँ, और बेशक तुम (मेरे) क़रीबियों में से हो जाओगे।"

115. उन्होंने कहा : "ऐ मूसा! या तुम डालो या फिर हम डालते हैं?"

116. उसने कहा : "तुम ही डालो।" फिर उन्होंने डाला तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें भयभीत कर दिया। उन्होंने एक बहुत बड़े जादू का प्रदर्शन किया।

117. हमने मूसा की ओर प्रकाशना की कि "अपनी लाठी डाल दे।" फिर क्या देखते हैं कि वह उनके रचे हुए स्वांग को निगलती जा रही है।

118. इस प्रकार सत्य प्रकट हो गया और जो कुछ वे कर रहे थे, मिथ्या होकर रहा।

119. अत: वे पराभूत हो गए और अपमानित होकर रहे।

120. और जादूगर सहसा सजदे में गिर पड़े।

121. बोले : "हम सारे संसार के रब पर ईमान ले आए;

122. मूसा और हारून के रब पर।"

123. फ़िरऔन बोला : "इससे पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ, तुम उसपर ईमान ले आए! यह तो एक चाल है, जो तुम लोग नगर में चले हो, ताकि उसके निवासियों को उससे निकाल दो। अच्छा, तो अब तुम्हें जल्द ही मालूम हुआ जाता है!

124. मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा; फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाकर रहूँगा।"

125. उन्होंने कहा : "हम तो अपने रब ही की ओर लौटेंगे।

126. और तू केवल इस क्रोध से हमें कष्ट पहुँचाने के लिए पीछे पड़ गया है कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान ले आए। हमारे रब! हमपर धैर्य उड़ेल दे और हमें इस दशा में उठा कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हों।"

127. फ़िरऔन की क़ौम के सरदार कहने लगे : "क्या तुम मूसा और उसकी क़ौम को ऐसे ही छोड़ दोगे कि वे ज़मीन में बिगाड़ पैदा करें और वे तुम्हें और तुम्हारे उपास्यों को छोड़ बैठें?" उसने कहा : "हम उनके बेटों को बुरी तरह क़त्ल करेंगे और उनकी स्त्रियों को जीवित रखेंगे। निश्चय ही हमें उनपर पूर्ण अधिकार प्राप्त है।"

128. मूसा ने अपनी क़ौम से कहा : "अल्लाह से संबद्ध होकर सहायता प्राप्त करो और धैर्य से काम लो। धरती अल्लाह की है। वह अपने बन्दों में

صٰغِرِيْنَ ۚ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۚ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ
قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ
هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا
مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ
قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۚ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ
اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۗ رَبَّنَآ اَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ۚ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى
الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۗ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ
وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ۚ قَالَ
مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ

الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَاۤءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَ
الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ
اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۗ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ
اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ
كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ
بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝
فَاِذَا جَاۤءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ
اَلَآ اِنَّمَا طٰۤىِٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا
بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ
الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَ
الدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۗ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

से जिसे चाहता है, उसका वारिस बना देता है। और अंतिम परिणाम तो डर रखनेवालों ही के लिए है।"

129. उन्होंने कहा : "तुम्हारे आने से पहले भी हम सताए गए और तुम्हारे आने के बाद भी।" उसने कहा : "निकट है कि तुम्हारा रब तुम्हारे शत्रुओं को विनष्ट कर दे और तुम्हें धरती में ख़लीफ़ा बनाए, फिर यह देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो।"

130. और हमने फ़िरऔनियों को कई वर्ष तक अकाल और पैदावार की कमी में ग्रस्त रखा कि वे चेतें।

131. फिर जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती है तो कहते हैं : "**यह तो है** ही हमारे लिए।" और जब उन्हें बुरी हालत पेश आए तो वे उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत (अशकुन) ठहराएँ। सुन लो, उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के पास है, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

132. वे बोले : "तू हमपर जादू करने के लिए चाहे कोई भी निशानी हमारे पास ले आए, हम तुझपर ईमान लानेवाले नहीं।"

133. अन्ततः हमने उनपर तूफ़ान और टिड्डियाँ और छोटे कीड़े और मेंढक और रक्त, कितनी ही निशानियाँ अलग-अलग भेजीं, किन्तु वे घमण्ड ही करते

مُجْرِمِينَ ۝ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يٰمُوسَى
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ
عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيٓ
إِسْرَآءِيلَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلٰٓى أَجَلٍ هُمْ
بٰلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ
فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا
غٰفِلِينَ ۝ وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ
مَشٰرِقَ الْأَرْضِ وَمَغٰرِبَهَا الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا ۚ
وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۙ
بِمَا صَبَرُوا ۚ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَ
قَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ۝ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيٓ
إِسْرَآءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلٰى
أَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوا يٰمُوسَى اجْعَلْ لَّنَا إِلٰهًا كَمَا

रहे। वे थे ही अपराधी लोग।

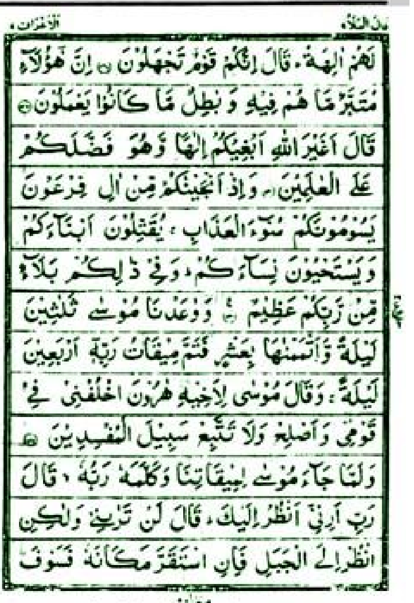
134. जब कभी उनपर यातना आ पड़ती, कहते : "ऐ मूसा, हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो, उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उसने तुमसे कर रखी है। तुमने यदि हमपर से यह यातना हटा दी, तो हम अवश्य ही तुम पर ईमान ले आएँगे और इसराईल की संतान को तुम्हारे साथ जाने देंगे।"

135. किन्तु जब हम उनपर से यातना को एक नियत समय के लिए जिस तक वे पहुँचनेवाले ही थे, हटा लेते तो क्या देखते कि वे वचन-भंग करने लग गए।

136. फिर हमने उनसे बदला लिया और उन्हें गहरे पानी में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को ग़लत समझा और उनसे ग़ाफ़िल हो गए।

137. और जो लोग कमज़ोर पाए जाते थे, उन्हें हमने उस भू-भाग के पूरब के हिस्सों और पश्चिम के हिस्सों का उत्तराधिकारी बना दिया, जिसे हमने बरकत दी थी। और तुम्हारे रब का अच्छा वादा इसराईल की संतान के हक़ में पूरा हुआ, क्योंकि उन्होंने धैर्य से काम लिया और फ़िरऔन और उसकी क़ौम का वह सब कुछ हमने विनष्ट कर दिया, जिसे वे बनाते और ऊँचा उठाते थे।

138. और इसराईल की संतान को हमने सागर से पार करा दिया, फिर वे ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपनी कुछ मूर्तियों से लगे बैठे थे। कहने लगे : "ऐ मूसा! हमारे लिए भी कोई ऐसा उपास्य ठहरा दे, जैसे इनके उपास्य हैं।"



उसने कहा : "निश्चय ही तुम बड़े ही अज्ञानी लोग हो।

139. निश्चय ही वह सब कुछ जिसमें ये लोग लगे हुए हैं, बरबाद होकर रहेगा। और जो कुछ ये कर रहे हैं सर्वथा व्यर्थ है।"

140. उसने कहा : "क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और उपास्य ढूढ़ूँ, हालाँकि उसी ने सारे संसारवालों पर तुम्हें श्रेष्ठता प्रदान की?"

141. और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिया जो तुम्हें बुरी यातना में ग्रस्त रखते थे। तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे। और वह (छुटकारा दिलाना) तुम्हारे रब की ओर से बड़ा अनुग्रह है।

142. और हमने मूसा से तीस रातों का वादा ठहराया, फिर हमने दस और बढ़ाकर उसे पूरा किया। इस प्रकार उसके रब की ठहराई हुई अवधि चालीस रातों में पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा : "मेरे पीछे तुम मेरी क़ौम में मेरा प्रतिनिधित्व करना और सुधारना-सँवारना और बिगाड़ पैदा करनेवालों के मार्ग पर न चलना।"

143. जब मूसा हमारे निश्चित किए हुए समय पर पहुँचा और उसके रब ने उससे बातें कीं, तो वह कहने लगा : "मेरे रब! मुझे देखने की शक्ति प्रदान कर कि मैं तुझे देखूँ।" कहा : "तू मुझे कदापि न देख सकेगा। हाँ, पहाड़ की ओर देख। यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह जाए तो फिर तू मुझे देख लेगा।" अतएव जब उसका रब पहाड़ पर प्रकट हुआ तो उसे चकनाचूर कर

تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ
مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ
اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّيْ
اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ
فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهٗ
فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا
لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا
بِاَحْسَنِهَا ۗ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ سَاَصْرِفُ
عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ
وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ
الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ
يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا
عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاۤءِ

दिया और मूसा मूर्छित होकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया तो कहा : "महिमा है तेरी ! मैं तेरे समक्ष तौबा करता हूँ और सबसे पहला ईमान लानेवाला मैं हूँ।"

144. उसने कहा : "ऐ मूसा ! मैंने दूसरे लोगों के मुक़ाबले में तुझे चुनकर अपने संदेशों और अपनी वाणी से तुझे उपकृत किया। अत: जो कुछ मैं तुझे दूँ उसे ले और कृतज्ञता दिखा।"

145. और हमने उसके लिए तख़्तियों पर उपदेश के रूप में हर चीज़ और हर चीज़ का विस्तृत वर्णन लिख दिया। अत: उनको मज़बूती से पकड़। उनमें उत्तम बातें हैं। अपनी क़ौम के लोगों को हुक्म दे कि वे उनको अपनाएँ। मैं शीघ्र ही तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊँगा।

146. जो लोग धरती में नाहक़ बड़े बनते हैं, मैं अपनी निशानियों की ओर से उन्हें फेर दूँगा। यदि वे प्रत्येक निशानी देख लें तब भी वे उस पर ईमान नहीं लाएँगे। यदि वे सीधा मार्ग देख लें तो भी वे उसे अपना मार्ग नहीं बनाएँगे। लेकिन यदि वे पथभ्रष्टता का मार्ग देख लें तो उसे अपना मार्ग ठहरा लेंगे। यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे ग़ाफ़िल रहे।

147. जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत के मिलन को झूठा

الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ
مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ
لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۘ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا
ظَالِمِينَ ۝ وَلَمَّا سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ
قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِنْ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا
لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ
قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي
مِنْ بَعْدِي ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ
وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ
الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا
تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا

जाना, उनका तो सारा किया-धरा उनकी जान को लागू हुआ। जो कुछ वे करते रहे हैं क्या उसके सिवा वे किसी और चीज़ का बदला पाएँगे?

148. और मूसा के पीछे उसकी क़ौम ने अपने ज़ेवरों से अपने लिए एक बछड़ा बना लिया, जिसमें से बैल की-सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्होंने देखा नहीं कि वह न तो उनसे बातें करता है और न उन्हें कोई राह दिखाता है? उन्होंने उसे अपना उपास्य बना लिया, और वे बड़े अत्याचारी थे।

149. और जब (चेतावनी से) उन्हें पश्चात्ताप हुआ और उन्होंने देख लिया कि वास्तव में वे भटक गए हैं तो कहने लगे : "यदि हमारे रब ने हमपर दया न की और उसने हमें क्षमा न किया तो हम घाटे में पड़ जाएँगे!"

150. और जब मूसा क्रोध और दुख से भरा हुआ अपनी क़ौम की ओर लौटा तो उसने कहा : "तुम लोगों ने मेरे पीछे मेरी जगह बुरा किया। क्या तुम अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे?" फिर उसने तख़्तियाँ डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़कर उसे अपनी ओर खींचने लगा। वह बोला : "ऐ मेरी माँ के बेटे! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझ लिया और निकट था कि मुझे मार डालते। अतः शत्रुओं को मुझपर हुलसने का अवसर न दे और अत्याचारी लोगों में मुझे सम्मिलित न कर।"

151. उसने कहा : "मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर दे और हमें

فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ إِنَّ الَّذِينَ
اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ
وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا
إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ وَلَمَّا سَكَتَ
عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا
هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ
وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ
فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا
مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ
لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ وَاكْتُبْ لَنَا

अपनी दयालुता में दाख़िल कर ले। तू तो सबसे बढ़कर दयावान है।"

152. जिन लोगों ने बछड़े को अपना उपास्य बनाया, वे अपने रब की ओर से प्रकोप और सांसारिक जीवन में अपमान में ग्रस्त होकर रहेंगे; और झूठ घड़नेवालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

153. रहे वे लोग जिन्होंने बुरे कर्म किए फिर उसके पश्चात तौबा कर ली और ईमान ले आए, तो इसके बाद तो तुम्हारा रब बड़ा ही क्षमाशील, दयावान है।

154. और जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो उसने तख़्तियों को उठा लिया। उनके लेख में उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता थी जो अपने रब से डरते हैं।

155. मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को हमारे नियत किए हुए समय के लिए चुना। फिर जब उन लोगों को एक भूकम्प ने आ पकड़ा तो उसने कहा : "मेरे रब! यदि तू चाहता तो पहले ही इनको और मुझको विनष्ट कर देता। जो कुछ हमारे नादानों ने किया है, क्या उसके कारण तू हमें विनष्ट करेगा? यह तो बस तेरी ओर से एक परीक्षा है। इसके द्वारा तू जिसको चाहे पथभ्रष्ट कर दे और जिसे चाहे मार्ग दिखा दे। तू ही हमारा संरक्षक है। अत: तू हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर, और तू ही सबसे बढ़कर क्षमा करनेवाला है।

156. और हमारे लिए इस संसार में भलाई लिख दे और आख़िरत में भी।

فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا
إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَ
رَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ
يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا
يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ
الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي
التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ
عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ
وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ
إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ

हम तेरी ही ओर उन्मुख हुए।" उसने कहा : "अपनी यातना में मैं तो उसी को ग्रस्त करता हूँ, जिसे चाहता हूँ, किन्तु मेरी दयालुता से हर चीज़ आच्छादित है। उसे तो मैं उन लोगों के हक़ में लिखूँगा जो डर रखते और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।

157. (तो आज इस दयालुता के अधिकारी वे लोग हैं) जो उस रसूल, उम्मी नबी का अनुसरण करते हैं, जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं। और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता और बुराई से रोकता है उनके लिए अच्छी-स्वच्छ चीज़ों को हलाल और बुरी-अस्वच्छ चीजों को हराम ठहराता है और उनपर से उनके वह बोझ उतारता है, जो अब तक उनपर लदे हुए थे और उन बन्धनों को खोलता है, जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उसपर ईमान लाए, उसका सम्मान किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश के अनुगत हुए, जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।"

158. कहो : "ऐ लोगो ! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जो आकाशों और धरती के राज्य का स्वामी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वही

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ
وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى
اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمُ
اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى
اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ
فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَ
اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ
مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

जीवन प्रदान करता और वही मृत्यु देता है। अत: अल्लाह और उसके रसूल, उस उम्मी नबी, पर ईमान लाओ जो स्वयं अल्लाह पर और उसके शब्दों (वाणी) पर ईमान रखता है और उसका अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग पा लो।"

159. मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसे लोगों का भी हुआ जो हक़ के अनुसार मार्ग दिखाते और उसी के अनुसार न्याय करते।

160. और हमने उन्हें, बारह ख़ानदानों में विभक्त करके अलग-अलग समुदाय बना दिया। जब उसकी क़ौम के लोगों ने पानी माँगा तो हमने मूसा की ओर प्रकाशना की : "अपनी लाठी अमुक चट्टान पर मारो।" अतएव उससे बारह स्रोत फूट निकले और हर गिरोह ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया। और हमने उनपर बादल की छाया की और उनपर 'मन्न' और 'सलवा' उतारा : "हमने तुम्हें जो अच्छी-स्वच्छ चीज़ें प्रदान की हैं, उन्हें खाओ।" उन्होंने हमपर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वास्तव में वे स्वयं अपने ऊपर ही ज़ुल्म करते रहे।

161. याद करो जब उनसे कहा गया : "इस बस्ती मे रहो-बसो और इसमें जहाँ से चाहो खाओ और कहो—— हित्ततुन"[1]। और द्वार में सजदा करते हुए प्रवेश करो। हम तुम्हारी ख़ताओं को क्षमा कर देंगे और हम सुकर्मी लोगों को और अधिक भी देंगे।"

---

1. इससे अभिप्राय सार्वजनिक क्षमा और रियायत की उद्घोषणा है या क्षमा की प्रार्थना।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ
لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا
يَظْلِمُونَ ۝ وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ
تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا
يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُم بِمَا
كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ
تَعِظُونَ قَوْمًا اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ
يَتَّقُونَ ۝ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ
يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا
بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ فَلَمَّا
عَتَوْا عَن مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً

162. किन्तु उनमें से जो अत्याचारी थे उन्होंने, जो कुछ उनसे कहा गया था, उसको उससे भिन्न बात से बदल दिया। अतः जो अत्याचार वे कर रहे थे, उसके कारण हमने आकाश से उनपर यातना भेजी।

163. उनसे उस बस्ती के विषय में पूछो जो सागर-तट पर थी। जब वे सब्त के मामले में सीमा का उल्लंघन करते थे, जब उनके सब्त के दिन उनकी मछलियाँ खुले तौर पर पानी के ऊपर आ जाती थी और जो दिन उनके सब्त का न होता तो वे उनके पास न आती थीं। इस प्रकार उनके अवज्ञाकारी होने के कारण हम उनको परीक्षा में डाल रहे थे।

164. और जब उनके एक गिरोह ने कहा : "तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जा रहे हो, जिन्हें अल्लाह विनष्ट करनेवाला है या जिन्हें वह कठोर यातना देनेवाला है?" उन्होंने कहा : "तुम्हारे रब के समक्ष अपने को निरपराध सिद्ध करने के लिए, और कदाचित वे (अवज्ञा से) बचें।"

165. फिर जब वे उसे भूल गए जो नसीहत उन्हें की गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया, जो बुराई से रोकते थे और अत्याचारियों को उनकी अवज्ञा के कारण कठोर यातना में पकड़ लिया।

166. फिर जब वे सरकशी के साथ वही कुछ करते रहे, जिससे उन्हें रोका

خٰسِـِٕيْنَ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ
اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ
اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَ
مِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَ
يَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ
يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ
اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ
وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَاِذْ

गया था तो हमने उनसे कहा : "बन्दर हो जाओ, अपमानित और तिरस्कृत !"

167. और याद करो जब तुम्हारे रब ने ख़बर कर दी थी कि वह क़ियामत के दिन तक उनके विरुद्ध ऐसे लोगों को उठाता रहेगा, जो उन्हें बुरी यातना देंगे। निश्चय ही तुम्हारा रब जल्द सज़ा देता है और वह बड़ा क्षमाशील, दयावान भी है।

168. और हमने उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके धरती में अनेक गिरोहों में बिखेर दिया। कुछ उनमें से नेक हैं और कुछ उनमें इससे भिन्न हैं, और हमने उन्हें अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर उनकी परीक्षा ली, कदाचित वे पलट आएँ।

169. फिर उनके पीछे ऐसे अयोग्य लोगों ने उनकी जगह ली, जो किताब के उत्तराधिकारी होकर इसी तुच्छ संसार का सामान समेटते हैं और कहते हैं : "हमें अवश्य क्षमा कर दिया जाएगा।" और यदि इस जैसा और सामान भी उनके पास आ जाए तो वे उसे भी ले लेंगे। क्या उनसे किताब का यह वचन नहीं लिया गया था कि अल्लाह पर थोपकर हक़ के सिवा कोई और बात न कहें। और जो उसमें है उसे वे स्वयं पढ़ भी चुके हैं। और आख़िरत का घर तो उन लोगों के लिए उत्तम है, जो डर रखते हैं। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

170. और जो लोग किताब को मज़बूती से थामते हैं और जिन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है, तो काम को ठीक रखनेवालों के प्रतिदान को हम कभी अकारथ नहीं करते।

171. और याद करो जब हमने पर्वत को हिलाया, जो उनके ऊपर था।

نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ
وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا
مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن
بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ
أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَا ۛ
أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ ۝
أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا
ذُرِّيَّةً مِّن بَعْدِهِمْ ۖ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
الْمُبْطِلُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ
آيَاتِنَا فَانسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ
مِنَ الْغَاوِينَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُ
أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۚ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ

मानो वह कोई छत्र हो और वे समझे कि बस वह उनपर गिरा ही चाहता है— "थामो मज़बूती से, जो कुछ हमने दिया है। और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम बच सको।"

172. और याद करो जब तुम्हारे रब ने आदम की संतान से (अर्थात उनकी पीठों से) उनकी सन्तति निकाली और उन्हें स्वयं उनके ऊपर गवाह बनाया कि "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?" बोले : "क्यों नहीं, हम गवाह हैं।" ऐसा इसलिए किया कि तुम क़ियामत के दिन कहीं यह न कहने लगो कि "हमें तो इसकी ख़बर ही न थी।"

173. या कहो कि "(अल्लाह के साथ) साझी तो पहले हमारे बाप-दादा ने किया। हम तो उनके पश्चात उनकी सन्तति में हुए हैं। तो क्या तू हमें उसपर विनष्ट करेगा जो कुछ मिथ्याचारियों ने किया है?"

174. इस प्रकार स्थिति के अनुकूल आयतें प्रस्तुत करते हैं। और शायद कि वे पलट आएँ।

175. और उन्हें उस व्यक्ति का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें प्रदान की, किन्तु वह उनसे निकल भागा। फिर शैतान ने उसे अपने पीछे लगा लिया। अन्ततः वह पथभ्रष्ट और विनष्ट होकर रहा।

176. यदि हम चाहते तो इन आयतों के द्वारा उसे उच्चता प्रदान करते, किन्तु वह तो धरती के साथ लग गया और अपनी इच्छा के पीछे चला। अतः उसकी मिसाल कुत्ते जैसी है कि यदि तुम उसपर आक्षेप करो तब भी वह

الْكَلْبِ ۚ إِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ
يَلْهَثْ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ
فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ سَاءَ
مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنْفُسَهُمْ
كَانُوا يَظْلِمُونَ ۝ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي ۖ
وَمَنْ يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ وَلَقَدْ
ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ
لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ
لَا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ
أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْغَافِلُونَ ۝ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ
بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۚ
سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمِمَّنْ خَلَقْنَا

ज़बान लटकाए रहे या यदि तुम उसे छोड़ दो तब भी वह ज़बान लटकाए ही रहे। यही मिसाल उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, तो तुम वृत्तान्त सुनाते रहो, कदाचित वे सोच-विचार कर सकें।

177. बुरे हैं मिसाल की दृष्टि से वे लोग, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे स्वयं अपने ही ऊपर अत्याचार करते रहे।

178. जिसे अल्लाह मार्ग दिखाए वही सीधा मार्ग पानेवाला है और जिसे वह मार्ग से वंचित रखे, तो ऐसे ही लोग घाटे में पड़नेवाले हैं।

179. निश्चय ही हमने बहुत-से जिन्नों और मनुष्यों को जहन्नम ही के लिए फैला रखा है। उनके पास दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते नहीं; उनके पास कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे पशुओं की तरह हैं, बल्कि वे उनसे भी अधिक पथभ्रष्ट हैं। वही लोग हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

180. अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं। तो तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ो जो उसके नामों के संबंध में कुटिलता ग्रहण करते हैं। जो कुछ वे करते हैं, उसका बदला वे पाकर रहेंगे।

181. हमारे पैदा किए प्राणियों में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हक़ के अनुसार

أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ
حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي
مَتِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِنْ
جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي
مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ
شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ
فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝ مَنْ يُضْلِلِ
اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ
مُرْسَاهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا
لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا
تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۖ

मार्ग दिखाते और उसी के अनुसार न्याय करते हैं।

182. रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें क्रमशः तबाही की ओर ले जाएँगे, ऐसे तरीक़े से जिसे वे जानते नहीं।

183. मैं तो उन्हें ढील दिए जा रहा हूँ। निश्चय ही मेरी चाल अत्यन्त सुदृढ़ है।

184. क्या उन लोगों ने विचार नहीं किया? उनके साथी को कोई उन्माद नहीं। वह तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करनेवाला है।

185. या क्या उन्होंने आकाशों और धरती के राज्य पर और जो चीज़ भी अल्लाह ने पैदा की है उसपर दृष्टि नहीं डाली, और इस बात पर कि कदाचित उनकी अवधि निकट आ लगी हो? फिर आख़िर इसके बाद अब कौन-सी बात हो सकती है, जिसपर वे ईमान लाएँगे?

186. जिसे अल्लाह मार्ग से वंचित रखे उसके लिए कोई मार्गदर्शक नहीं। वह तो उन्हें उनकी सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ रहा है।

187. तुमसे उस घड़ी (क़ियामत) के विषय में पूछते हैं कि वह कब आएगी? कह दो : "उसका ज्ञान मेरे रब ही के पास है। अतः वही उसे उसके समय पर प्रकट करेगा। वह आकाशों और धरती में बोझिल हो गई है— बस अचानक ही वह तुमपर आ जाएगी।" वे तुमसे पूछते हैं मानो तुम

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا
مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ
مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ
وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ
نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ
بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا
صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا
صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى
اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ
شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا
وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى

उसके विषय में भली-भाँति जानते हो। कह दो : "उसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है— किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते।"

188. कहो : "मैं अपने लिए न तो लाभ का अधिकार रखता हूँ और न हानि का, बल्कि अल्लाह ही की इच्छा क्रियान्वित है। यदि मुझे परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान होता तो बहुत-सी भलाई समेट लेता और मुझे कभी कोई हानि न पहुँचती। मैं तो बस सचेत करनेवाला और शुभ-समाचार देनेवाला हूँ, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।"

189. वही है जिसने तुम्हें अकेली जान पैदा किया और उसी की जाति से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उसकी ओर प्रवृत्त होकर शान्ति और चैन प्राप्त करे। फिर जब उसने उसको ढाँक लिया तो उसने एक हल्का-सा बोझ उठा लिया; फिर वह उसे लिए हुए चलती-फिरती रही, फिर जब वह बोझिल हो गई तो दोनों ने अल्लाह—अपने रब को पुकारा : "यदि तूने हमें भला-चंगा बच्चा दिया, तो निश्चय ही हम तेरे कृतज्ञ होंगे।"

190. किन्तु उसने जब उन्हें भला-चंगा (बच्चा) प्रदान किया तो जो उन्हें प्रदान किया उसमें वे दोनों उसका (अल्लाह का) साझी ठहराने लगे। किन्तु अल्लाह तो उच्च है उससे, जो साझी वे ठहराते हैं।

191. क्या वे उसको साझी ठहराते हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं करता, बल्कि ऐसे उनके ठहराए हुए साझीदार तो स्वयं पैदा किए जाते हैं।

192. और वे न तो उनकी सहायता करने की सामर्थ्य रखते हैं और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं?

193. यदि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ तो वे तुम्हारे पीछे न

الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ
أَنْتُمْ صَامِتُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا
لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝ أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ
بِهَآ ۚ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَآ ۚ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ
يُبْصِرُونَ بِهَآ ۚ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ
ادْعُوا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنْظِرُونِ ۝
إِنَّ وَلِـيِّـۦَ اللّٰهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى
الصّٰلِحِينَ ۝ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِۦ لَا
يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَآ أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۝
وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرٰىهُمْ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝ خُذِ الْعَفْوَ
وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِينَ ۝ وَإِمَّا

आएँगे। तुम्हारे लिए बराबर है— उन्हें पुकारो या तुम चुप रहो।

194. तुम अल्लाह को छोड़कर जिन्हें पुकारते हो वे तो तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं, अतः पुकार लो उनको, यदि तुम सच्चे हो, तो उन्हें चाहिए कि वे तुम्हें उत्तर दें!

195. क्या उनके पाँव हैं जिनसे वे चलते हों या उनके हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हों या उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते हों या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों? कहो : "तुम अपने ठहराए हुए सहभागियों को बुला लो, फिर मेरे विरुद्ध चालें चलो, इस प्रकार कि मुझे मुहलत न दो।

196. निश्चय ही मेरा संरक्षक मित्र अल्लाह है, जिसने यह किताब उतारी और वह अच्छे लोगों का संरक्षण करता है।

197. रहे वे जिन्हें तुम उसको छोड़कर पुकारते हो, वे न तो तुम्हारी, सहायता करने की सामर्थ्य रखते हैं और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं।

198. और यदि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ तो वे न सुनेंगे। वे तुम्हें ऐसे दीख पड़ते हैं जैसे वे तुम्हारी ओर ताक रहे हैं, हालाँकि वे कुछ भी नहीं देखते।

199. क्षमा की नीति अपनाओ और भलाई का हुक्म देते रहो और अज्ञानियों से किनारा खींचो।

200. और यदि शैतान तुम्हें उकसाए तो अल्लाह की शरण माँगो।

يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ إِنَّهٗ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ
طٰۗئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَإِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝
وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۝
وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ
قُلْ إِنَّمَآ أَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى إِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ هٰذَا
بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ
أَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ
نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ
بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝
إِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ
عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝

निश्चय ही, वह सब कुछ सुनता, जानता है।

201. जो डर रखते हैं, उन्हें जब शैतान की ओर से कोई खयाल छू जाता है, तो वे चौंक उठते हैं। फिर वे साफ़ देखने लगते हैं।

202. और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे लिए जाते हैं, फिर वे कोई कमी नहीं करते।

203. और जब तुम उनके सामने कोई निशानी नहीं लाते तो वे कहते हैं : "तुम स्वयं कोई निशानी क्यों न छाँट लाए?" कह दो : "मैं तो केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे रब की ओर से प्रकाशना की जाती है। यह तुम्हारे रब की ओर से अन्तर्दृष्टियों का प्रकाश-पुंज है, और ईमान लानेवालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।"

204. जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो और चुप रहो, ताकि तुमपर दया की जाए।

205. अपने रब को अपने मन में प्रातः और संध्या के समयों में विनम्रतापूर्वक, डरते हुए और हल्की आवाज़ के साथ याद किया करो। और उन लोगों में से न हो जाओ जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

206. निस्संदेह जो तुम्हारे रब के पास हैं, वे उसकी बन्दगी के मुक़ाबले में अहंकार की नीति नहीं अपनाते; वे तो उसकी तसबीह (महिमागान) करते हैं और उसी को सजदा करते हैं।



8. अल-अनफ़ाल

(मदीना में उतरी — आयतें 75)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. वे तुमसे ग़नीमतों के विषय में पूछते हैं। कहो : "ग़नीमतें अल्लाह और रसूल की हैं। अतः अल्लाह का डर रखो और आपस के संबंधों को ठीक रखो। और, अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमानवाले हो।

2. ईमानवाले तो वही लोग हैं जिनके दिल उस समय काँप उठें जबकि अल्लाह को याद किया जाए। और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाएँ तो वे उनके ईमान को और अधिक बढ़ा दें और वे अपने रब पर भरोसा रखते हों।

3. ये वे लोग हैं जो नमाज़ क़ायम करते और जो कुछ हमने दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

4. वही लोग वास्तव में ईमानवाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास बड़े दर्जे हैं और क्षमा और सम्मानित उत्तम आजीविका भी।

5. (यह बिलकुल वैसी ही परिस्थिति है) जैसे तुम्हारे रब ने तुम्हें तुम्हारे घर से एक उद्देश्य के साथ निकाला, किन्तु ईमानवालों में से एक गिरोह को यह अप्रिय लगा था।

6. वे सत्य के विषय में उसके स्पष्ट हो जाने के पश्चात तुमसे झगड़ रहे

وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۞ وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى
الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ
الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ
يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ۞
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۞
إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي
مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ۞ وَمَا
جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ
وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۞ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ وَ
يُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ
وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ
قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۞ إِذْ يُوحِي

ع

منزل

थे। मानो वे आँखों देखी मृत्यु की ओर हाँके जा रहे हों।

7. और याद करो जब अल्लाह तुमसे वादा कर रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आएगा और तुम चाहते थे कि तुम्हें वह हाथ आए, जो निःशस्त्र था, हालाँकि अल्लाह चाहता था कि अपने वचनों से सत्य को सत्य कर दिखाए और इनकार करनेवालों की जड़ काट दे;

8. ताकि सत्य को सत्य कर दिखाए और असत्य को असत्य, चाहे अपराधियों को कितना ही अप्रिय लगे।

9. याद करो जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी पुकार सुन ली। (उसने कहा :) "मैं एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा जो तुम्हारे साथी होंगे।"

10. अल्लाह ने यह केवल इसलिए किया कि यह एक शुभ-सूचना हो और ताकि इससे तुम्हारे हृदय संतुष्ट हो जाएँ। सहायता अल्लाह ही के यहाँ से होती है। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

11. याद करो जबकि वह अपनी ओर से चैन प्रदान कर तुम्हें ऊँघ से ढँक रहा था और वह आकाश से तुमपर पानी बरसा रहा था, ताकि उसके द्वारा तुम्हें अच्छी तरह पाक करे और शैतान की गन्दगी तुमसे दूर करे और तुम्हारे दिलों को मज़बूत करे और उसके द्वारा तुम्हारे क़दमों को जमा दे।

12. याद करो जब तुम्हारा रब फ़रिश्तों की ओर प्रकाशना (वह्य) कर रहा

رَبُّكَ إِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ أَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ۚ سَأُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۞ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَإِنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۞ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَأَنَّ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ۞ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا إِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا
تُوَلُّوْهُمُ الْأَدْبَارَ ۞ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ
دُبُرَهٗٓ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلٰى فِئَةٍ
فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَأْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۚ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۞ فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

था कि "मैं तुम्हारे साथ हूँ। अतः तुम ईमानवालों को जमाए रखो। मैं इनकार करनेवालों के दिलों में रोब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गरदनें मारो और उनके पोर-पोर पर चोट लगाओ !"

13. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करे (उसे कठोर यातना मिलकर रहेगी) क्योंकि अल्लाह कड़ी यातना देनेवाला है।

14. यह तो तुम चखो! और यह कि इनकार करनेवालों के लिए आग की यातना है।

15. ऐ ईमान लानेवालो! जब एक सेना के रूप में तुम्हारा इनकार करनेवालों से मुक़ाबला-हो तो पीठ न फेरो।

16. जिस किसी ने भी उस दिन उनसे अपनी पीठ फेरी—यह और बात है कि युद्ध-चाल के रूप में या दूसरी टुकड़ी से मिलने के लिए ऐसा करे—तो वह अल्लाह के प्रकोप का भागी हुआ और उसका ठिकाना जहन्नम है, और क्या ही बुरा जगह है वह पहुँचने की!

17. तुमने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ही ने उन्हें क़त्ल किया और जब तुमने (उनकी ओर मिट्टी और कंकड़) फेंका, तो तुमने नहीं फेंका बल्कि

رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۚ اِنَّ
اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ
كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ
الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا
نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ
كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا
تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اِنَّ
شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا
يَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۚ وَلَوْ
اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ

منزل ٢

अल्लाह ने फेंका (कि अल्लाह अपनी गुण-गरिमा दिखाए) और ताकि अपनी ओर से ईमानवालों के गुण प्रकट करे। निस्संदेह अल्लाह सुनता, जानता है।

18. यह तो हुआ, और यह (जान लो) कि अल्लाह इनकार करनेवालों की चाल को कमज़ोर कर देनेवाला है।

19. यदि तुम फ़ैसला चाहते हो तो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ चुका और यदि बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। लेकिन यदि तुमने पलटकर फिर वही हरकत की तो हम भी पलटेंगे और तुम्हारा जत्था, चाहे वह कितना ही अधिक हो, तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगा। और यह कि अल्लाह मोमिनों के साथ होता है।

20. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो और उससे मुँह न फेरो जबकि तुम सुन रहे हो।

21. और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने कहा था कि "हमने सुना", हालाँकि वे सुनते नहीं।

22. अल्लाह की दृष्टि में तो निकृष्ट पशु वे बहरे-गूँगे लोग हैं, जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

23. यदि अल्लाह जानता कि उनमें कुछ भी भलाई है, तो वह उन्हें अवश्य सुनने का सौभाग्य प्रदान करता। और यदि वह उन्हें सुना देता तो भी वे कतराते हुए मुँह फेर लेते।

24. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह और रसूल की बात मानो, जब वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुम्हें जीवन प्रदान करनेवाली है, और जान रखो

لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَاتَّقُوا
فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۖ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَاذْكُرُوا
إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ
بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَ
تَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَاعْلَمُوا أَنَّمَا
أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا
اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ وَإِذْ

कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के बीच आड़े आ जाता है और यह कि वही है जिसकी ओर (पलटकर) तुम एकत्र होगे।

25. बचो उस फ़ितने से जो अपनी लपेट में विशेष रूप से केवल अत्याचारियों को ही नहीं लेगा, जान लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

26. और याद करो जब तुम थोड़े थे, धरती में निर्बल थे, डरे-सहमे रहते थे कि लोग कहीं तुम्हें उचक न ले जाएँ, फिर उसने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी सहायता से तुम्हें शक्ति प्रदान की और अच्छी-स्वच्छ चीज़ों की तुम्हें रोज़ी दी, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

27. ऐ ईमान लानेवालो! जानते-बूझते तुम अल्लाह और उसके रसूल के साथ विश्वासघात न करना और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करना।

28. और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान परीक्षा-सामग्री हैं और यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिदान है।

29. ऐ ईमान लानेवालो! यदि तुम अल्लाह का डर रखोगे तो वह तुम्हें एक विशिष्टता प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर करेगा और तुम्हें क्षमा करेगा। अल्लाह बड़ा अनुग्राहक है।

30. और याद करो जब इनकार करनेवाले तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे कि

يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ
يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ
الْمَاكِرِينَ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ
سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ
كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا
حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ
اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝ وَمَا لَهُمْ أَلَّا
يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا
الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا كَانَ
صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ

तुम्हें क़ैद रखें या तुम्हें क़त्ल कर दें या तुम्हें निकाल बाहर करें। वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी चाल चल रहा था। अल्लाह सबसे अच्छी चाल चलता है।

31. जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो वे कहते हैं : "हम सुन चुके। यदि हम चाहें तो ऐसी बातें हम भी बना लें; ये तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।"

32. और याद करो जब उन्होंने कहा था : "ऐ अल्लाह! यदि यही तेरे यहाँ से सत्य हो तो हमपर आकाश से पत्थर बरसा दे, या हमपर कोई दुखद यातना ही ले आ।

33. और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम उनके बीच उपस्थित हो और वह उन्हें यातना देने लग जाए, और न अल्लाह ऐसा है कि वे क्षमा-याचना कर रहे हों और वह उन्हें यातना में ग्रस्त कर दे।

34. किन्तु अब क्या है उनके पास कि अल्लाह उन्हें यातना न दे, जबकि वे "मस्जिदे हराम" (काबा) से रोकते हैं, हालाँकि वे उसके कोई व्यवस्थापक नहीं? उसके व्यवस्थापक तो केवल डर रखनेवाले ही हैं, परन्तु उनके अधिकतर लोग जानते नहीं।

35. उनकी नमाज़ इस घर (काबा) के पास सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के अलावा कुछ भी नहीं होती। तो अब यातना का मज़ा चखो, उस

فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ۝ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ
الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ
فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْخَاسِرُونَ ۝ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ
لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ
سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ
وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ
بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۝

इनकार के बदले में जो तुम करते रहे हो।

36. निश्चय ही इनकार करनेवाले अपने माल अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिए ख़र्च करते हैं। वे तो उनको ख़र्च करते रहेंगे, फिर यही उनके लिए पश्चात्ताप बनेगा। फिर वे पराभूत होंगे और इनकार करनेवाले जहन्नम की ओर समेट लाए जाएँगे,

37. ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छाँटकर अलग करे और नापाकों को आपस में एक-दूसरे पर रखकर ढेर बनाए, फिर उसे जहन्नम में डाल दे। यही लोग घाटे में पड़नेवाले हैं।

38. उन इनकार करनेवालों से कह दो कि वे यदि बाज़ आ जाएँ तो जो कुछ हो चुका, उसे क्षमा कर दिया जाएगा, किन्तु यदि वे फिर भी वही करेंगे तो पूर्ववर्ती लोगों के सिलसिले में जो रीति अपनाई गई वह सामने से गुज़र चुकी है।

39. उनसे युद्ध करो, यहाँ तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन (धर्म) पूरा का पूरा अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर यदि वे बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह उनके कर्म को देख रहा है।

40. किन्तु यदि वे मुँह मोड़ें तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है। क्या ही अच्छा संरक्षक है वह, और क्या ही अच्छा सहायक!



41. और तुम्हें मालूम हो कि जो कुछ ग़नीमत के रूप में माल तुमने प्राप्त किया है, उसका पाँचवाँ भाग अल्लाह का, रसूल का, नातेदारों का, अनाथों का, मुहताजों और मुसाफ़िरों का है। यदि तुम अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान रखते हो, जो हमने अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन उतारी, जिस दिन दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई, और अल्लाह को हर चीज़ की पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है।

42. याद करो जब तुम घाटी के निकटवर्ती छोर पर थे और वे घाटी के दूरस्थ छोर पर थे और क़ाफ़िला तुमसे नीचे की ओर था। यदि तुम परस्पर समय निश्चित किए होते तो अनिवार्यतः तुम निश्चित समय पर न पहुँचते। किन्तु जो कुछ हुआ वह इसलिए कि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे, जिसका पूरा होना निश्चित था, ताकि जिसे विनष्ट होना हो, वह स्पष्ट प्रमाण देखकर ही विनष्ट हो और जिसे जीवित रहना हो वह स्पष्ट प्रमाण देखकर जीवित रहे। निस्संदेह अल्लाह भली-भाँति जानता, सुनता है।

43. और याद करो जब अल्लाह उनको तुम्हारे स्वप्न में थोड़ा करके तुम्हें दिखा रहा था और यदि वह उन्हें ज़्यादा करके तुम्हें दिखा देता तो अवश्य ही तुम हिम्मत हार बैठते और असल मामले में झगड़ने लग जाते, किन्तु अल्लाह ने इससे बचा लिया। निश्चय ही वह तो जो कुछ दिलों में होता है उसे भी जानता है।

44. याद करो जब तुम्हारी परस्पर मुठभेड़ हुई तो वह तुम्हारी निगाहों में उन्हें

الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ
لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۭ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً
فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَ
تَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
بَطَرًا وَّرِئَاۗءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَاِذْ زَيَّنَ
لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ
الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّىْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَاۗءَتِ
الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰي عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ
مِّنْكُمْ اِنِّىْٓ اَرٰي مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّىْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ

कम करके और तुम्हें उनकी निगाहों में कम करके दिखा रहा था, ताकि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे जिसका होना निश्चित था। और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

45. ऐ ईमान लानेवालो! जब तुम्हारा किसी गिरोह से मुक़ाबला हो जाए तो जमे रहो और अल्लाह को ज़्यादा याद करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

46. और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो और आपस में न झगड़ो, अन्यथा हिम्मत हार बैठोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। और धैर्य से काम लो। निश्चय ही, अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

47. और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते और लोगों को दिखाते निकले थे और वे अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, हालाँकि जो कुछ वे करते हैं, अल्लाह उसे अपने घेरे में लिए हुए है।

48. और याद करो जब शैतान ने उनके कर्म उनके लिए सुन्दर बना दिए और कहा : "आज लोगों में से कोई भी तुमपर प्रभावी नहीं हो सकता। मैं तुम्हारे साथ हूँ।" किन्तु जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए तो वह उलटे पाँव फिर गया और कहने लगा : "मेरा तुमसे कोई संबंध नहीं। मैं वह कुछ देख रहा हूँ, जो तुम्हें नहीं दिखाई देता। मैं अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ
وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ
يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا
عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ
وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ كَدَاْبِ اٰلِ
فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَ
اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

कठोर यातना देनेवाला है।"

49. याद करो जब कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, कह रहे थे : "इन लोगों को तो इनके धर्म ने धोखे में डाल रखा है।" हालाँकि जो अल्लाह पर भरोसा रखता है, तो निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

50. क्या ही अच्छा होता कि तुम देखते जब फ़रिश्ते इनकार करनेवालों के प्राण ग्रस्त करते हैं! वे उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते जाते हैं कि "लो अब जलने की यातना का मज़ा चखो।" (तो उनकी दुर्दशा का अन्दाज़ा कर सकते)।

51. यह तो उसी का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता।

52. इनके साथ वैसा ही मामला पेश आया जैसा फ़िरऔन के लोगों और उनसे पहले के लोगों के साथ पेश आया। उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के कारण उन्हें पकड़ लिया। निस्संदेह अल्लाह शक्तिशाली, कठोर यातना देनेवाला है।

53. यह इसलिए हुआ कि अल्लाह उस उदार अनुग्रह (नेमत) को, जो उसने किसी क़ौम पर किया हो, बदलनेवाला नहीं है, जब तक कि लोग उस चीज़ को न बदल डालें, जिसका संबंध स्वयं उनसे है। और यह कि अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

54. जैसे फ़िरऔनियों और उनसे पहले के लोगों का हाल हुआ। उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया तो हमने उन्हें उनके गुनाहों के बदले में

وَاعْلَمُوْا الانفال

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَ
كُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ
اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ
عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ
كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ۝ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي
الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝
وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ
عَلٰى سَوَآءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ۝ وَلَا
يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ۭ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ۝
وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ
الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَ
اٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ
يَعْلَمُهُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

विनष्ट कर दिया और फ़िरऔनियों को डुबो दिया। ये सभी अत्याचारी थे।

55. निश्चय ही, सबसे बुरे प्राणी अल्लाह की दृष्टि में वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया। फिर वे ईमान नहीं लाते।

56. जिनसे तुमने वचन लिया वे फिर हर बार अपने वचन को भंग कर देते हैं और वे डर नहीं रखते।

57. अतः यदि युद्ध में तुम उनपर क़ाबू पाओ, तो उनके साथ इस तरह पेश आओ कि उनके पीछेवाले भी भाग खड़े हों, ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें।

58. और यदि तुम्हें किसी क़ौम से विश्वासघात की आशंका हो, तो तुम भी उसी प्रकार ऐसे लोगों के साथ हुई संधि को खुल्लम-खुल्ला उनके आगे फेंक दो। निश्चय ही अल्लाह को विश्वासघात करनेवाले प्रिय नहीं।

59. इनकार करनेवाले यह न समझें कि वे आगे निकल गए। वे क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते।

60. और जो भी तुमसे हो सके, उनके लिए बल और बँधे घोड़े[1] तैयार रखो, ताकि इसके द्वारा अल्लाह के शत्रुओं और अपने शत्रुओं और इनके अतिरिक्त उन दूसरे लोगों को भी भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उनको जानता है और अल्लाह के मार्ग में तुम जो कुछ भी ख़र्च करोगे, वह तुम्हें

1. युद्ध की तैयारी की ओर संकेत है।

يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝ وَإِنْ جَنَحُوا
لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ
فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَ
بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ
وَلَٰكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ ع
عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ
يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ
يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَا يَفْقَهُونَ ۝ الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

पूरा-पूरा चुका दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कदापि अन्याय न होगा।

61. और यदि वे संधि और सलामती की ओर झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। निस्संदेह, वह सब कुछ सुनता, जानता है।

62. और यदि वे यह चाहें कि तुम्हें धोखा दें तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है। वही तो है जिसने तुम्हें अपनी सहायता से और मोमिनों के द्वारा शक्ति प्रदान की।

63. और उनके दिल आपस में एक-दूसरे के साथ जोड़ दिए। यदि तुम, धरती में जो कुछ है, सब ख़र्च कर डालते तो भी उनके दिलों को परस्पर जोड़ न सकते, किन्तु अल्लाह ने उन्हें परस्पर जोड़ दिया। निश्चय ही वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

64. ऐ नबी! तुम्हारे लिए अल्लाह और तुम्हारे ईमानवाले अनुयायी ही काफ़ी हैं।

65. ऐ नबी! मोमिनों को जिहाद पर उभारो। यदि तुम्हारे बीस आदमी जमे होंगे, तो वे दो सौ पर प्रभावी होंगे और यदि तुममें से ऐसे सौ होंगे तो वे इनकार करनेवालों में से एक हज़ार पर प्रभावी होंगे, क्योंकि वे नासमझ लोग हैं।

66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया और उसे मालूम हुआ कि

اِنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ
يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا
اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ مَا كَانَ
لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰي حَتّٰي يُثْخِنَ فِي
الْاَرْضِ ۭ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ڰ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ
الْاٰخِرَةَ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ
سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ فَكُلُوْا
مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ڮ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ
مِّنَ الْاَسْرٰٓي ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا
يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَ
اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ
فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۭ

तुममें कुछ कमज़ोरी है। तो यदि तुम्हारे सौ आदमी जमे रहनेवाले होंगे, तो वे दो सौ पर प्रभावी रहेंगे और यदि तुममें ऐसे हज़ार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से वे दो हज़ार पर प्रभावी रहेंगे। अल्लाह तो उन्हीं लोगों के साथ है जो जमे रहते हैं।

67. किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि उसके पास क़ैदी हों यहाँ तक कि वह धरती में रक्तपात करे।[1] तुम लोग संसार की सामग्री चाहते हो, जबकि अल्लाह आख़िरत चाहता है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

68. यदि अल्लाह का लिखा पहले से मौजूद न होता, तो जो कुछ नीति तुमने अपनाई है उसपर तुम्हें कोई बड़ी यातना आ लेती।

69. अतः जो कुछ ग़नीमत का माल तुमने प्राप्त किया है, उसे वैध-पवित्र समझकर खाओ और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

70. ऐ नबी ! जो क़ैदी तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं, उनसे कह दो : "यदि अल्लाह ने यह जान लिया कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है तो वह तुम्हें उससे कहीं उत्तम प्रदान करेगा, जो तुम से छिन गया है और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

71. किन्तु यदि वे तुम्हारे साथ विश्वासघात करना चाहेंगे, तो इससे पहले वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। तो उसने तुम्हें उनपर अधिकार

1. अर्थात यहाँ तक कि विरोधियों को कुचलकर उनका ज़ोर तोड़ दे।

وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا
أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم
مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ
فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا
تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ۝
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

दे दिया। अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, बड़ा तत्त्वदर्शी है।

72. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया और जिन लोगों ने उन्हें शरण दी और सहायता की, वही लोग परस्पर एक-दूसरे के संरक्षक मित्र हैं। रहे वे लोग जो ईमान लाए, किन्तु उन्होंने हिजरत नहीं की, उनसे तुम्हारा संरक्षण और मित्रता का कोई संबंध नहीं है, जब तक कि वे हिजरत न करें, किन्तु यदि वे धर्म के मामले में तुमसे सहायता माँगें तो तुमपर अनिवार्य है कि सहायता करो, सिवाय इसके कि यह सहायता किसी ऐसी क़ौम के मुक़ाबले में हो जिससे तुम्हारी कोई संधि हो। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देखता है।

73. जो इनकार करनेवाले लोग हैं, वे आपस में एक-दूसरे के मित्र और सहायक हैं। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो धरती में फ़ितना और बड़ा फ़साद फैलेगा।

74. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया और जिन लोगों ने उन्हें शरण दी और सहायता की वही सच्चे मोमिन हैं। उनके लिए क्षमा और सम्मानित—उत्तम आजीविका है।



75. और जो लोग बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया तो ऐसे लोग भी तुम में ही से हैं। किन्तु अल्लाह की किताब में ख़ून के रिश्तेदार एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

9. अत-तौबा

(मदीना में उतरी— आयतें 129)

1. मुशरिकों (बहुदेववादियों) से, जिनसे तुमने संधि की थी, विरक्ति (की उद्घोषणा) है अल्लाह और उसके रसूल की ओर से।

2. "अतः इस धरती में चार महीने और चल-फिर लो और यह बात जान लो कि तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते और यह कि अल्लाह इनकार करनेवालों को अपमानित करता है।"

3. सार्वजनिक उद्घोषणा है अल्लाह और उसके रसूल की ओर से, बड़े हज के दिन लोगों के लिए, कि "अल्लाह मुशरिकों के प्रति ज़िम्मेदारी से बरी है और उसका रसूल भी। अब यदि तुम तौबा कर लो, तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है, किन्तु यदि तुम मुह मोड़ते हो, तो जान लो कि तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते।" और इनकार करनेवालों को एक दुखद यातना की शुभ-सूचना दे दो;

4. सिवाय उन मुशरिकों के जिनसे तुमने संधि-समझौते किए, फिर उन्होंने

ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ
اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ
الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ
فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ
فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ
اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى
يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝ كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ
عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ
عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا
لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

तुम्हारे साथ अपने वचन को पूर्ण करने में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता ही की, तो उनके साथ उनकी संधि को उन लोगों के निर्धारित समय तक पूरा करो। निश्चय ही अल्लाह को डर रखनेवाले प्रिय हैं।

5. फिर, जब हराम (प्रतिष्ठित) महीने बीत जाएँ तो मुशरिकों को जहाँ कहीं पाओ क़त्ल करो, उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो, निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

6. और यदि मुशरिकों में से कोई तुमसे शरण माँगे, तो तुम उसे शरण दे दो, यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले। फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो; क्योंकि वे ऐसे लोग हैं, जिन्हें ज्ञान नहीं।

7. इन मुशरिकों की किसी संधि की कोई ज़िम्मेदारी अल्लाह और उसके रसूल पर कैसे बाक़ी रह सकती है?— उन लोगों का मामला इससे अलग है, जिनसे तुमने मस्जिदे हराम (काबा) के पास संधि की थी, तो जब तक वे तुम्हारे साथ सीधे रहें, तब तक तुम भी उनके साथ सीधे रहो। निश्चय ही अल्लाह को डर रखनेवाले प्रिय हैं।——

8. कैसे बाक़ी रह सकती है? जबकि उनका हाल यह है कि यदि वे तुम्हें दबा पाएँ तो वे न तुम्हारे विषय में किसी नाते-रिश्ते का ख़याल रखें और न किसी अभिवचन का। वे अपने मुँह ही से तुम्हें राज़ी करते हैं, किन्तु उनके दिल इनकार करते रहते हैं और उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा-सा मूल्य स्वीकार किया और इस प्रकार वे उसका मार्ग अपनाने से रुक गए। निश्चय ही बहुत बुरा है जो कुछ वे कर रहे हैं।

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ
إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ
قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ۝ اشْتَرَوْا بِآيَاتِ
اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَرْقُبُونَ فِي
مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝
فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ۝ وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ
عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ
الْكُفْرِ ۙ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ۝
أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا
بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ

10. किसी मोमिन के बारे में न तो नाते-रिश्ते का ख़याल रखते हैं और न किसी अभिवचन का। वही लोग हैं जिन्होंने सीमा का उल्लंघन किया।

11. अतः यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो वे धर्म के भाई हैं। और हम उन लोगों के लिए आयतें खोल-खोलकर बयान करते हैं, जो जानना चाहें।

12. और यदि अपने अभिवचन के पश्चात वे अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन (धर्म) पर चोटें करने लगें, तो फिर कुफ़्र (अधर्म) के सरदारों से युद्ध करो, उनकी क़समें कुछ नहीं, ताकि वे बाज़ आ जाएँ।

13. क्या तुम ऐसे लोगों से नहीं लड़ोगे जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ डालीं और रसूल को निकाल देना चाहा और वही हैं जिन्होंने तुमसे छेड़ में पहल की?

أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ۝ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ
وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ
قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۝ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ
وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ
اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِن
دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ
أَن يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنفُسِهِم
بِالْكُفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ
هُمْ خَالِدُونَ ۝ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ

क्या तुम उनसे डरते हो? यदि तुम मोमिन हो तो इसका ज़्यादा हक़दार अल्लाह है कि तुम उससे डरो।

14. उनसे लड़ो। अल्लाह तुम्हारे हाथों से उन्हें यातना देगा और उन्हें अपमानित करेगा और उनके मुक़ाबले में वह तुम्हारी सहायता करेगा। और ईमानवाले लोगों के दिलों का दुखमोचन करेगा;

15. उनके दिलों का क्रोध मिटाएगा, अल्लाह जिसे चाहेगा, उसपर दया-दृष्टि डालेगा। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

16. क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम ऐसे ही छोड़ दिए जाओगे, हालाँकि अल्लाह ने अभी उन लोगों को छाँटा ही नहीं, जिन्होंने तुममें से जिहाद किया और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों को छोड़कर किसी को घनिष्ठ मित्र नहीं बनाया? तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

17. यह मुशरिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें और उसके प्रबंधक हों, जबकि वे स्वयं अपने विरुद्ध कुफ़्र की गवाही दे रहे हैं। उन लोगों का सारा किया-धरा अकारथ गया और वे आग में सदैव रहेंगे।

18. अल्लाह की मस्जिदों का प्रबंधक और उसे आबाद करनेवाला वही हो सकता है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया, नमाज़ क़ायम की और

وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَن يَكُونُوا
مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ
وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُونَ عِندَ
اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ
آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِندَ اللَّهِ ۚ
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم
بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّاتٍ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ
مُّقِيمٌ ۝ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُولَٰئِكَ

ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा। अतः ऐसे ही लोग, आशा है कि सीधा मार्ग पानेवाले होंगे।

19. क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम (काबा) के प्रबंध को उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है, जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया और उसने अल्लाह के मार्ग में संघर्ष किया? अल्लाह की दृष्टि में वे बराबर नहीं। और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

20. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ दर्जे में वे बहुत बड़े हैं और वही सफल हैं।

21. उन्हें उनका रब अपनी दयालुता और प्रसन्नता और ऐसे बाग़ों की शुभ-सूचना देता है, जिनमें उनके लिए स्थायी सुख-सामग्री है।

22. उनमें वे सदैव रहेंगे। निस्संदेह अल्लाह के पास बड़ा बदला है।

23. ऐ ईमान लानेवालो! अपने बाप और अपने भाइयों को अपने मित्र न बनाओ यदि ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र उन्हें प्रिय हो। तुममें से जो कोई उन्हें

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ
وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ
ِاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ
مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ
اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝
لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ
حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ
شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ
تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ وَذٰلِكَ جَزَآءُ
الْكٰفِرِيْنَ ۝ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى

अपना मित्र बनाएगा, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी होंगे।

24. कह दो : "यदि तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे रिश्ते-नातेवाले और माल, जो तुमने कमाए हैं और कारोबार जिसके मन्दा पड़ जाने का तुम्हें भय है और घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसके मार्ग में जिहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो प्रतीक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला ले आए। और अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता।"

25. अल्लाह बहुत-से अवसरों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है और हुनैन (की लड़ाई) के दिन भी, जब तुम अपनी अधिकता पर फूल गए, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई और धरती अपनी विशालता के बावजूद तुम पर तंग हो गई। फिर तुम पीठ फेरकर भाग खड़े हुए।

26. अन्ततः अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी सकीनत (प्रशान्ति) उतारी और ऐसी सेनाएँ उतारीं जिनको तुमने नहीं देखा। और इनकार करनेवालों को यातना दी, और यही इनकार करनेवालों का बदला है।

27. फिर इसके बाद अल्लाह जिसको चाहता है उसे तौबा नसीब करता है।

مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً
فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ
صٰغِرُوْنَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ
وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِئُوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
قَبْلُ ۭ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْٓا
اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

28. ऐ ईमान लानेवालो! मुशरिक तो बस अपवित्र ही हैं। अतः इस वर्ष के पश्चात वे मस्जिदे हराम के पास न आएँ। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय हो तो आगे यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम्हें अपने अनुग्रह से समृद्ध कर देगा। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

29. वे किताबवाले जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अंतिम दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते हैं और न सत्यधर्म का अनुपालन करते हैं, उनसे लड़ो, यहाँ तक कि वे सत्ता से विलग होकर और छोटे (अधीनस्थ) बनकर जिज़्या देने लगें।

30. यहूदी कहते हैं : "उज़ैर अल्लाह का बेटा है" और ईसाई कहते हैं : "मसीह अल्लाह का बेटा है।" ये उनकी अपने मुँह की बातें हैं। ये उन लोगों की-सी बातें कर रहे हैं जो इससे पहले इनकार कर चुके हैं। अल्लाह की मार इन पर! ये कहाँ से औंधे हुए जा रहे हैं!

31. उन्होंने अल्लाह से हटकर अपने धर्मज्ञाताओं और संसार-त्यागी संतों और मरयम के बेटे ईसा को अपने रब बना लिए——हालाँकि उन्हें इसके सिवा

وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا
إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ
يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى
اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ هُوَ
الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْأَحْبَارِ وَ
الرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ
يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا
فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ
وَظُهُورُهُمْ ۖ هَٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ فَذُوقُوا

और कोई आदेश नहीं दिया गया था कि अकेले इष्ट-पूज्य की वे बन्दगी करें, जिसके सिवा कोई और पूज्य नहीं। उसकी महिमा के प्रतिकूल है वह शिर्क जो ये लोग करते हैं।——

32. चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह से बुझा दें, किन्तु अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण किए बिना नहीं रहेगा, चाहे इनकार करनेवालों को अप्रिय ही लगे।

33. वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीन (धर्म) पर प्रभावी कर दे, चाहे मुशरिकों को बुरा लगे।

34. ऐ ईमान लानेवालो ! अवश्य ही बहुत-से धर्मज्ञाता और संसार-त्यागी संत ऐसे हैं जो लोगों के माल नाहक़ खाते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, और जो लोग सोना और चाँदी एकत्र करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते, उन्हें दुखद यातना की शुभ-सूचना दे दो।

35. जिस दिन उनको जहन्नम की आग में तपाया जाएगा फिर उससे उनके ललाटों और उनके पहलुओं और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगा) : "यही है जो तुमने अपने लिए संचय किया, तो जो कुछ तुम संचित

مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ ۝ إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ
اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۚ ذٰلِكَ
الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ
وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ
كَافَّةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّمَا
النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا
يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا
حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوءُ
أَعْمَالِهِمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِينَ ۝
يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ
انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ۚ
أَرَضِيتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ

करते रहे हो, उसका मज़ा चखो !"

36. निस्संदेह महीनों की संख्या—अल्लाह के अध्यादेश में उस दिन से जब उसने आकाशों और धरती को पैदा किया—अल्लाह की दृष्टि में बारह महीने हैं। उनमें चार आदर के हैं, यही सीधा दीन (धर्म) है। अतः तुम उन (महीनों) में अपने ऊपर अत्याचार न करो।[1] और मुशरिकों से तुम सबके सब लड़ो, जिस प्रकार वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं। और जान लो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

37. (आदर के महीनों का) हटाना तो बस कुफ़्र में एक वृद्धि है, जिससे इनकार करनेवाले गुमराही में पड़ते हैं। किसी वर्ष वे उसे हलाल (वैध) ठहरा लेते हैं और किसी वर्ष उसको हराम ठहरा लेते हैं, ताकि अल्लाह के आदृत (महीनों) की संख्या पूरी कर लें, और इस प्रकार अल्लाह के हराम किए हुए को वैध ठहरा लें। उनके अपने बुरे कर्म उनके लिए सुहाने हो गए हैं और अल्लाह इनकार करनेवाले लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

38. ऐ ईमान लानेवालो ! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है : "अल्लाह के मार्ग में निकलो" तो तुम धरती पर ढहे जाते हो ? क्या तुम आख़िरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन पर राज़ी हो गए ? सांसारिक जीवन की

1. अर्थात इन महीनों में लड़ाई से बाज़ रहो।

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝ اِلَّا تَنْفِرُوْا
يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ
وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ
لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ
سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَ
جَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۭ وَكَلِمَةُ
اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنْفِرُوْا
خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا
لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۭ

सुख-सामग्री तो आख़िरत के हिसाब में है कुछ थोड़ी ही !

39. यदि तुम न निकलोगे तो वह तुम्हें दुखद यातना देगा और वह तुम्हारी जगह दूसरे गिरोह को ले आएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।

40. यदि तुम उसकी सहायता न भी करो तो अल्लाह उसकी सहायता उस समय कर चुका है जब इनकार करनेवालों ने उसे इस स्थिति में निकाला कि वह केवल दो में का दूसरा था, जब वे दोनों गुफा में थे। जबकि वह अपने साथी से कह रहा था : "शोकाकुल न हो। अवश्यमेव अल्लाह हमारे साथ है।" फिर अल्लाह ने उसपर अपनी ओर से सकीनत (प्रशान्ति) उतारी और उसकी सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम देख न सके और इनकार करनेवालों का बोल नीचा कर दिया, बोल तो अल्लाह ही का ऊँचा रहता है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

41. हलके और बोझिल निकल पड़ो और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करो ! यही तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम जानो।

42. यदि निकट (भविष्य में) ही कुछ मिलनेवाला होता और सफ़र भी हलका होता तो वे अवश्य तुम्हारे पीछे चल पड़ते, किन्तु मार्ग की दूरी उन्हें

وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ
يُهْلِكُونَ أَنفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝
عَفَا اللَّهُ عَنكَ لِمَ أَذِنتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ
لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ ۝ لَا
يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
أَن يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ
فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ۝ وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ
لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَٰكِن كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاثَهُمْ
فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝ لَوْ
خَرَجُوا فِيكُم مَّا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَأَوْضَعُوا
خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَمَّاعُونَ

कठिन और बहुत दीर्घ प्रतीत हुई। अब वे अल्लाह की क़समें खाएँगे कि "यदि हममें इसकी सामर्थ्य होती तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकलते।" वे अपने आपको तबाही में डाल रहे हैं और अल्लाह भली-भाँति जानता है कि निश्चय ही वे झूठे हैं।

43. अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया! तुमने उन्हें क्यों अनुमति दे दी, यहाँ तक कि जो लोग सच्चे हैं वे तुम्हारे सामने प्रकट हो जाते और झूठों को भी तुम जान लेते?

44. जो लोग अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं, वे तुमसे कभी यह नहीं चाहेंगे कि उन्हें अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करने से माफ़ रखा जाए। और अल्लाह डर रखनेवालों को भली-भाँति जानता है।

45. तुमसे छुट्टी तो बस वही लोग माँगते हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिनके दिल संदेह में पड़े हैं, तो वे अपने संदेह ही में डाँवाडोल हो रहे हैं।

46. यदि वे निकलने का इरादा करते तो इसके लिए कुछ सामग्री जुटाते, किन्तु अल्लाह ने उनके उठने को नापसन्द किया तो उसने उन्हें रोक दिया। उनसे कह दिया गया : "बैठनेवालों के साथ बैठ रहो।"

47. यदि वे तुम्हारे साथ निकलते भी तो तुम्हारे अन्दर ख़राबी के सिवा किसी और चीज़ की अभिवृद्धि नहीं करते। और वे तुम्हारे बीच उपद्रव मचाने के लिए दौड़-धूप करते और तुममें उनकी सुननेवाले हैं। और अल्लाह

لَهُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۞ لَقَدِ ابْتَغَوُا
الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ
الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ۞ وَمِنْهُمْ
مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ
سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۞ إِنْ
تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ
يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا
وَهُمْ فَرِحُونَ ۞ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ
اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۞ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى
الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ
بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا
إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ۞ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ

अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

48. उन्होंने तो इससे पहले भी उपद्रव मचाना चाहा था और वे तुम्हारे विरुद्ध घटनाओं और मामलों के उलटने-पलटने में लगे रहे, यहाँ तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का आदेश प्रकट होकर रहा, यद्यपि उन्हें अप्रिय ही लगता रहा।

49. उनमें कोई है, जो कहता है : "मुझे इजाज़त दे दीजिए, मुझे फ़ितने में न डालिए।" जान लो कि वे फ़ितने में तो पड़ ही चुके हैं और निश्चय ही जहन्नम भी इनकार करनेवालों को घेर रही है।

50. यदि तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है, तो उन्हें बुरा लगता है और यदि तुमपर कोई मुसीबत आ जाती है तो वे कहते हैं : "हमने तो अपना काम पहले ही सँभाल लिया था।" और वे ख़ुश होते हुए पलटते हैं।

51. कह दो : "हमें कुछ भी पेश नहीं आ सकता सिवाय उसके जो अल्लाह ने लिख दिया है। वही हमारा स्वामी है। और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।"

52. कहो : "तुम हमारे लिए दो भलाइयों [1] में से किसी एक भलाई के सिवा किसकी प्रतीक्षा कर सकते हो? जबकि हमें तुम्हारे हक़ में इसी की प्रतीक्षा है कि अल्लाह अपनी ओर से तुम्हें कोई यातना देता है या हमारे हाथों दिलाता है। अच्छा तो तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

53. कह दो : "तुम चाहे स्वेच्छापूर्वक ख़र्च करो या अनिच्छापूर्वक, तुमसे

1. अल्लाह की राह में मृत्यु (शहादत) या विजय।

كَرْهًا لَّن يُتَقَبَّلَ مِنكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنتُمْ قَوْمًا
فَاسِقِينَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ أَن تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ
إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ
الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ
كَارِهُونَ ۝ فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ ۚ
إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَيَحْلِفُونَ
بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ
قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ۝ لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ
أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ۝ وَمِنْهُم
مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا
رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ۝
وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ

कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। निस्संदेह तुम अवज्ञाकारी लोग हो।"

54. उनके ख़र्च के स्वीकृत होने में इसके अतिरिक्त और कोई चीज़ बाधक नहीं कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया। नमाज़ को आते हैं तो बस हारे जी आते हैं और ख़र्च करते हैं, तो अनिच्छापूर्वक ही।

55. अतः उनके माल तुम्हें मोहित न करें और न उनकी संतान ही। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके द्वारा उन्हें सांसारिक जीवन में यातना दे और उनके प्राण इस दशा में निकलें कि वे इनकार करनेवाले ही रहें।

56. वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वे तुम्हीं में से हैं, हालाँकि वे तुममें से नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो त्रस्त रहते हैं।

57. यदि वे कोई शरण पा लें या कोई गुफा या घुस बैठने की जगह, तो अवश्य ही वे बगटुट उसकी ओर उल्टे भाग जाएँ।

58. और उनमें से कुछ लोग सदक़ों के विषय में तुमपर चोटें[1] करते हैं। किन्तु यदि उन्हें उसमें से दे दिया जाए तो प्रसन्न हो जाएँ और यदि उन्हें उसमें से न दिया गया तो क्या देखोगे कि वे क्रोधित होने लगते हैं।

59. यदि अल्लाह और उसके रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था, उसपर वे राज़ी रहते और कहते कि "हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है। अल्लाह हमें जल्द ही

1. अर्थात तुमपर इसका आरोपण करते हैं कि ख़ैरात (दान) बाँटने में तुम न्याय से काम नहीं लेते।

وَقَالُوا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ
وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝ اِنَّمَا
الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا
وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً مِّنَ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ
خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ
اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ اَلَمْ
يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ

अपने अनुग्रह से देगा और उसका रसूल भी। हम तो अल्लाह ही की ओर उन्मुख हैं।" (तो यह उनके लिए अच्छा होता)।

60. सदक़े तो बस ग़रीबों, मुहताजों और उन लोगों के लिए हैं, जो इस काम पर नियुक्त हों और उनके लिए जिनके दिलों को आकृष्ट करना और परचाना अभीष्ट हो और गर्दनों को छुड़ाने और क़र्ज़दारों और तावान भरनेवालों की सहायता करने में, अल्लाह के मार्ग में, मुसाफ़िरों की सहायता करने में लगाने के लिए हैं। यह अल्लाह की ओर से ठहराया हुआ हुक्म है। अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

61. और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं, जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं : "वह तो निरा कान[1] है !" कह दो : "वह सर्वथा कान तुम्हारी भलाई के लिए है। वह अल्लाह पर ईमान रखता है और ईमानवालों पर भी विश्वास करता है। और उन लोगों के लिए सर्वथा दयालुता है जो तुममें से ईमान लाए हैं। रहे वे लोग जो अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं, उनके लिए दुखद यातना है।"

62. वे तुम लोगों के सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं, ताकि तुम्हें राज़ी कर लें, हालाँकि यदि वे मोमिन हैं तो अल्लाह और उसका रसूल इसके ज़्यादा हक़दार हैं कि उनको राज़ी करें।

63. क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध

---

1. मुनाफ़िक़ नबी (सल्ल०) के विषय में यह भी कहते थे कि वे तो केवल कान होकर रह गए हैं। जो चाहता है कान भर देता है और उनको हमारे विरुद्ध भड़का देता है।

لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ
الْعَظِيْمُ ۔ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ۔ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ
لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ اَبِاللّٰهِ
وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۔ لَا
تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ
عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَاۗىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ
كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۔ اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ
مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ
فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۔ وَعَدَ
اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ

करता है, उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह सदैव रहेगा। यह बहुत बड़ी रुसवाई है।

64. मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) डर रहे हैं कि कहीं उनके बारे में कोई ऐसी सूरा न अवतरित हो जाए जो वह सब कुछ उनपर खोल दे, जो उनके दिलों में है। कह दो : "मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह तो उसे प्रकट करके रहेगा, जिसका तुम्हें डर है।"

65. और यदि उनसे पूछो तो कह देंगे : "हम तो केवल बातें और हँसी-खेल कर रहे थे।" कहो : "क्या अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ हँसी-मज़ाक़ करते थे?

66. बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान के पश्चात इनकार किया। यदि हम तुम्हारे कुछ लोगों को क्षमा भी कर दें तो भी कुछ लोगों को यातना देकर ही रहेंगे, क्योंकि वे अपराधी हैं।"

67. मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से रोकते हैं और हाथों को बन्द किए रहते हैं। वे अल्लाह को भूल बैठे तो उसने भी उन्हें भुला दिया। निश्चय ही मुनाफ़िक़ अवज्ञाकारी हैं।

68. अल्लाह ने मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों और इनकार करनेवालों से जहन्नम की आग का वादा किया है, जिसमें वे सदैव ही रहेंगे।

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ
اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۙ كَالَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّ
اَوْلَادًا ۗ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ
كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ
وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۗ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۗ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ
بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

वही उनके लिए काफ़ी है और अल्लाह ने उनपर लानत की, और उनके लिए स्थाई यातना है।

69. उन लोगों की तरह, जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, वे शक्ति में तुमसे बढ़-चढ़कर थे और माल और औलाद में भी बढ़े हुए थे। फिर उन्होंने अपने हिस्से का मज़ा उठाना चाहा और तुमने भी अपने हिस्से से मज़ा उठाना चाहा, जिस प्रकार कि तुमसे पहले के लोगों ने अपने हिस्से का मज़ा उठाना चाहा, और जिस प्रकार वे वाद-विवाद में पड़े थे तुम भी वाद-विवाद में पड़ गए। ये वही लोग हैं जिनका किया-धरा दुनिया और आख़िरत में अकारथ गया, और वही घाटे में हैं।

70. क्या उन्हें उन लोगों का वृतांत नहीं पहुँचा जो उनसे पहले गुज़रे हैं—नूह के लोगों का, आद और समूद का, और इबराहीम की क़ौम का और मदयनवालों का और उन बस्तियों का जिन्हें उलट दिया गया? उनके रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए थे, फिर अल्लाह ऐसा न था कि वह उनपर अत्याचार करता, किन्तु वे स्वयं अपने-आप पर अत्याचार कर रहे थे।

71. रहे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, वे सब परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं। भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं,

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ وَ
يُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيعُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ ؕ
أُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا
وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ
مِّنَ اللّٰهِ أَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝
يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ جٰهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِينَ
وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَأْوٰهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝ يَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوا ؕ وَلَقَدْ
قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلٰمِهِمْ وَ
هَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنٰهُمُ
اللّٰهُ وَرَسُولُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ

ज़कात देते हैं और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करते हैं। ये वे लोग हैं, जिनपर शीघ्र ही अल्लाह दया करेगा। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

72. मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बाग़ों में पवित्र निवास गृहों का (भी वादा है) और अल्लाह की प्रसन्नता और रज़ामन्दी का; जो सबसे बढ़कर है। यही सबसे बड़ी सफलता है।

73. ऐ नबी ! इनकार करनेवालों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो और उनके साथ सख़्ती से पेश आओ। अन्ततः उनका ठिकाना जहन्नम है और वह जा पहुँचने की बहुत बुरी जगह है !

74. वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा, हालाँकि उन्होंने अवश्य ही कुफ़्र की बात कही है और अपने इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात इनकार किया, और वह चाहा जो वे न पा सके। उनके प्रतिशोध का कारण तो यह है कि अल्लाह और उसके रसूल ने अपने अनुग्रह से उन्हें समृद्ध कर दिया।

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَإِن يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ
عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْهُم
مَّنْ عَاهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَانَا مِن فَضْلِهِ
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ فَلَمَّا
آتَاهُم مِّن فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوا وَّهُم
مُّعْرِضُونَ ۝ فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ
إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا
وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ
عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ
إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللَّهُ

अब यदि वे तौबा कर लें तो उन्हीं के लिए अच्छा है और यदि उन्होंने मुँह मोड़ा तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत में दुखद यातना देगा और धरती में उनका न कोई मित्र होगा और न सहायक।

75. और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह को वचन दिया था कि "यदि उसने हमें अपने अनुग्रह से दिया तो हम अवश्य दान करेंगे और नेक होकर रहेंगे।"

76. किन्तु, जब अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और पहलू बचाकर फिर गए।

77. फिर परिणाम यह हुआ कि उसने उनके दिलों में उस दिन तक के लिए कपटाचार डाल दिया, जब वे उससे मिलेंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से जो प्रतिज्ञा की थी उसे भंग कर दिया और इसलिए भी कि वे झूठ बोलते रहे।

78. क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनका भेद और उनकी कानाफूसियों को अच्छी तरह जानता है और यह कि अल्लाह परोक्ष की सारी बातों को भली- भाँति जानता है।

79. जो लोग स्वेच्छापूर्वक देनेवाले मोमिनों पर उनके सदक़ों (दान) के विषय में चोटें करते हैं और उन लोगों का उपहास करते हैं, जिनके पास इसके सिवा कुछ नहीं जो वे मशक़्क़त उठाकर देते हैं, उन (उपहास करनेवालों) का

مِنْهُمْ ۙ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ
أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۚ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ
مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا
بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ ۝ فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ
رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي
الْحَرِّ ۗ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا ۚ لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝
فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ طَائِفَةٍ
مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ
تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا ۖ
إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ

उपहास अल्लाह ने किया और उनके लिए दुखद यातना है।

80. तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या उनके लिए क्षमा की प्रार्थना न करो। यदि तुम उनके लिए सत्तर बार भी क्षमा की प्रार्थना करोगे, तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और अल्लाह अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

81. पीछे रह जानेवाले अल्लाह के रसूल के पीछे अपने बैठ रहने पर प्रसन्न हुए। उन्हें यह नापसंद हुआ कि अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करें। और उन्होंने कहा : "इस गर्मी में न निकलो।" कह दो : "जहन्नम की आग इससे कहीं अधिक गर्म है", यदि वे समझ पाते (तो ऐसा न कहते)।

82. अब चाहिए कि जो कुछ वे कमाते रहे हैं, उसके बदले में हँसें कम और रोएँ अधिक।

83. अब यदि अल्लाह तुम्हें उनके किसी गिरोह की ओर रुजू कर दे और भविष्य में वे तुमसे साथ निकलने की अनुमति चाहें तो कह देना : "तुम मेरे साथ कभी भी नहीं निकल सकते और न मेरे साथ होकर किसी शत्रु से लड़ सकते हो। तुम पहली बार बैठ रहने पर ही राज़ी हुए, तो अब पीछे रहनेवालों

الْخٰلِفِيْنَ ۝ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ
اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ وَلَا تُعْجِبْكَ
اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝
وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ
رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَ قَالُوْا
ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ
الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝
لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۡ وَ
اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

के साथ बैठे रहो।"

84. और उनमें से जिस किसी व्यक्ति की मृत्यु हो उसकी जनाज़े की नमाज़ कभी न पढ़ना और न कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होना। उन्होंने तो अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और मरे इस दशा में कि अवज्ञाकारी थे।

85. और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें मोहित न करें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके द्वारा उन्हें संसार में यातना दे और उनके प्राण इस दशा में निकलें कि वे काफ़िर हों।

86. और जब कोई सूरा उतरती है कि "अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो।" तो उनके सामर्थ्यवान लोग तुमसे छुट्टी माँगने लगते हैं और कहते हैं कि "हमें छोड़ दो कि हम बैठनेवालों के साथ रह जाएँ।"

87. वे इसी पर राज़ी हुए कि पीछे रह जानेवाली स्त्रियों के साथ रह जाएँ और उनके दिलों पर तो मुहर लग गई है, अतः वे समझते नहीं।

88. किन्तु, रसूल और उसके ईमानवाले साथियों ने अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया, और वही लोग हैं जिनके लिए भलाइयाँ हैं और वही लोग हैं जो सफल हैं।

89. अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ
الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى
وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا
نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ
سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ
اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ
اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ
الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ۝ اِنَّمَا
السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ
اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ
وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

منزل ٢

बह रही हैं, वे उनमें सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।

90. बहाने करनेवाले बद्दू भी आए कि उन्हें (बैठे रहने की) छुट्टी मिल जाए। और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वे भी बैठे रहे। उनमें से जिन्होंने इनकार किया उन्हें शीघ्र ही एक दुखद यातना पहुँचकर रहेगी।

91. न तो कमज़ोरों के लिए कोई दोष की बात है और न बीमारों के लिए और न उन लोगों के लिए जिन्हें ख़र्च करने के लिए कुछ प्राप्त नहीं, जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के प्रति निष्ठावान हों। उत्तमकारों पर इलज़ाम की कोई गुंजाइश नहीं है। अल्लाह तो बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

92. और न उन लोगों पर आक्षेप करने की कोई गुंजाइश है जिनका हाल यह है कि जब वे तुम्हारे पास आते हैं, कि तुम उनके लिए सवारी का प्रबंध कर दो, तुम कहते हो : "मुझे ऐसा कुछ प्राप्त नहीं जिसपर तुम्हें सवार करूँ।" वे इस दशा में लौटते हैं कि इस ग़म में उनकी आँखें आँसू बहा रही होती हैं कि वे अपने पास ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते।

93. इल्ज़ाम तो बस उनपर है जो धनवान होते हुए तुमसे छुट्टी माँगते हैं। वे इसपर राज़ी हुए कि पीछे डाले गए लोगों के साथ रह जाएँ। अल्लाह ने तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिए वे जानते नहीं।



94. जब तुम पलटकर उनके पास पहुँचोगे तो वे तुम्हारे सामने बहाने करेंगे। तुम कह देना : "बहाने न बनाओ। हम तुम्हारी बात कदापि नहीं मानेंगे। हमें अल्लाह ने तुम्हारे वृत्तांत बता दिए हैं। अभी अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे काम को देखेगा, फिर तुम उसकी ओर लौटोगे, जो छिपे और खुले का ज्ञान रखता है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुम्हें बता देगा।"

95. जब तुम पलटकर उनके पास जाओगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएँगे, ताकि तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो। तो तुम उन्हें छोड़ ही दो। निश्चय ही वे गन्दगी हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है। जो कुछ वे कमाते रहे हैं, यह उसी का बदला है।

96. वे तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, किन्तु यदि तुम उनसे राज़ी भी हो गए तो अल्लाह ऐसे लोगों से कदापि राज़ी न होगा, जो अवज्ञाकारी हैं।

97. ये बद्दू इनकार और कपटाचार में बहुत-ही बढ़े हुए हैं। और इसी के ज़्यादा योग्य हैं कि उसकी सीमाओं से अनभिज्ञ रहें, जिसे अल्लाह ने अपने रसूल पर अवतरित किया है। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

98. और कुछ बद्दू ऐसे हैं, कि वे जो कुछ ख़र्च करते हैं, उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे हक़ में बुरी गर्दिशों (बुरे दिन) की प्रतीक्षा में हैं, बुरी

गर्दिश में तो वही हैं। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

99. और बद्दुओं में ऐसे भी लोग हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन को मानते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहाँ निकटताओं का और रसूल की दुआओं को प्राप्त करने का साधन बनाते हैं। हाँ ! निस्संदेह वह उनके हक़ में निकटता ही है। अल्लाह उन्हें शीघ्र ही अपनी दयालुता में दाख़िल करेगा। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

100. सबसे पहले आगे बढ़नेवाले मुहाजिर और अनसार और जिन्होंने भली प्रकार उनका अनुसरण किया, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। और उसने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वे उनमें सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।

101. और तुम्हारे आस-पास के बद्दुओं में और मदीनावालों में कुछ ऐसे कपटाचारी हैं जो कपट-नीति पर जमे हुए हैं। उनको तुम नहीं जानते, हम उन्हें भली-भाँति जानते हैं। शीघ्र ही हम उन्हें दो बार यातना देंगे। फिर वे एक बड़ी यातना की ओर लौटाए जाएँगे।

102. और दूसरे कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार किया। उन्होंने मिले-जुले कर्म किए, कुछ अच्छे और कुछ बुरे। आशा है कि अल्लाह

عَلِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ
الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَالسَّابِقُونَ
الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ
اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمِمَّنْ
حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ
مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ
سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝
وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا
وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَوٰتَكَ سَكَنٌ
لَّهُمْ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ اللَّهَ
هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِۦ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَٰتِ
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَقُلِ اعْمَلُوا۟ فَسَيَرَى
اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُۥ وَالْمُؤْمِنُونَ ۖ وَسَتُرَدُّونَ
إِلَىٰ عَٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَٰدَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ وَءَاخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا
يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا۟ مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا
وَتَفْرِيقًۢا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ
اللَّهَ وَرَسُولَهُۥ مِن قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَآ
إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ۝ لَا تَقُمْ

की कृपा-दृष्टि उनपर हो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

103. तुम उनके माल में से दान लेकर उन्हें शुद्ध करो और उसके द्वारा उन (की आत्मा) को विकसित करो और उनके लिए दुआ करो। निस्संदेह तुम्हारी दुआ उनके लिए सर्वथा परितोष है। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

104. क्या वे जानते नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और सदक़े लेता है और यह कि अल्लाह ही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

105. कह दो : "कर्म किए जाओ। अभी अल्लाह और उसका रसूल और ईमानवाले तुम्हारे कर्म को देखेंगे। फिर तुम उसकी ओर पलटोगे, जो छिपे और खुले को जानता है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो, वह सब तुम्हें बता देगा।"

106. और कुछ दूसरे लोग भी हैं जिनका मामला अल्लाह का हुक्म आने तक स्थगित है, चाहे वह उन्हें यातना दे या उनकी तौबा क़बूल करे। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

107. और कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिन्होंने एक मस्जिद बनाई इसलिए कि नुक़सान पहुँचाएँ और कुफ़्र करें और इसलिए कि ईमानवालों के बीच फूट डालें और उस व्यक्ति के घात लगाने का ठिकाना बनाएँ, जो इससे पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुका है। वे निश्चय ही क़समें खाएँगे कि "हमने तो बस अच्छा ही चाहा था।" किन्तु अल्लाह गवाही देता है कि वे बिलकुल झूठे हैं।

108. तुम कभी भी उसमें खड़े न होना। वह मस्जिद जिसकी आधारशिला

فِيْهِ اَبَدًا ۭ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَي التَّقْوٰي مِنْ اَوَّلِ
يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ۭ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ
يَّتَطَهَّرُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝ اَفَمَنْ اَسَّسَ
بُنْيَانَهٗ عَلٰي تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ
اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰي شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ
فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ
اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ اللّٰهَ
اشْتَرٰي مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ
لَهُمُ الْجَنَّةَ ۭ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ
يُقْتَلُوْنَ ۣ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ
وَالْقُرْاٰنِ ۭ وَمَنْ اَوْفٰي بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا
بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

पहले दिन ही से ईशपरायणता पर रखी गई है, वह इसकी ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग पाए जाते हैं, जो अच्छी तरह स्वच्छ रहना पसन्द करते हैं, और अल्लाह भी पाक-साफ़ रहनेवालों को पसन्द करता है।

109. फिर क्या वह अच्छा है जिसने अपने भवन की आधारशिला अल्लाह के भय और उसकी ख़ुशी पर रखी है या वह, जिसने अपने भवन की आधारशिला किसी खाई के खोखले कगार पर रखी, जो गिरने ही को है। फिर वह उसे लेकर जहन्नम की आग में जा गिरा? अल्लाह तो अत्याचारी लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

110. उनका यह भवन जो उन्होंने बनाया है, सदैव उनके दिलों में खटक बनकर रहेगा। हाँ, यदि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ तो दूसरी बात है। अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

111. निस्संदेह अल्लाह ने ईमानवालों से उनके प्राण और उनके माल इसके बदले में ख़रीद लिए हैं कि उनके लिए जन्नत है। वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं, तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। यह उसके ज़िम्मे तौरात, इनजील और क़ुरआन में (किया गया) एक पक्का वादा है। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करनेवाला हो भी कौन सकता है? अत: अपने उस सौदे पर ख़ुशियाँ मनाओ, जो सौदा तुमने उससे किया है। और यही

الْعَظِيمُ ۝ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ
السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ
لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَ
الَّذِينَ آمَنُوا أَن يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا
أُولِي قُرْبَىٰ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ
الْجَحِيمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا
عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ
عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ
يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ
اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا
لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ لَقَد

सबसे बड़ी सफलता है।

112. वे ऐसे हैं, जो तौबा करते हैं, बन्दगी करते हैं, स्तुति करते हैं, (अल्लाह के मार्ग में) भ्रमण करते हैं, (अल्लाह के आगे) झुकते हैं, सजदा करते हैं, भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और अल्लाह की निर्धारित सीमाओं की रक्षा करते हैं—और इन ईमानवालों को शुभ-सूचना दे दो।

113. नबी और ईमान लानेवालों के लिए उचित नहीं कि वे बहुदेववादियों के लिए क्षमा की प्रार्थना करें, यद्यपि वे उनके नातेदार ही क्यों न हों, जबकि उनपर यह बात खुल चुकी है कि वे भड़कती आगवाले हैं।

114. इबराहीम ने अपने बाप के लिए जो क्षमा की प्रार्थना की थी, वह तो केवल एक वादे के कारण की थी, जो वादा वह उससे कर चुका था। फिर जब उसपर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे विरक्त हो गया। वास्तव में, इबराहीम बड़ा ही कोमल हृदय, अत्यन्त सहनशील था।

115. अल्लाह ऐसा नहीं कि लोगों को पथभ्रष्ट ठहराए, जबकि वह उनको राह पर ला चुका हो, जब तक कि उन्हें साफ़-साफ़ वे बातें बता न दे, जिनसे उन्हें बचना है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है।

116. आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है, वही जिलाता और मारता है। अल्लाह से हटकर न तुम्हारा कोई मित्र है और न सहायक।

117. अल्लाह नबी पर मेहरबान हो गया और मुहाजिरों और अनसार पर भी,

تَابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ
قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۙ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى
اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ
عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ
اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيْمُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا
مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ
حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ
وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا
يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ

जिन्होंने तंगी की घड़ी में उसका साथ दिया, इसके पश्चात कि उनमें से एक गिरोह के दिल कुटिलता की ओर झुक गए थे। फिर उसने उनपर दया-दृष्टि दर्शाई। निस्संदेह वह उनके लिए अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

118. और उन तीनों पर भी जो पीछे छोड़ दिए गए थे, यहाँ तक कि जब धरती विशाल होते हुए भी उनपर तंग हो गई और उनके प्राण उनपर दूभर हो गए और उन्होंने समझा कि अल्लाह से बचने के लिए कोई शरण नहीं मिल सकती——मिल सकती है तो उसी के यहाँ। फिर उसने उनपर कृपा-दृष्टि की ताकि वे पलट आएँ। निस्संदेह अल्लाह ही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

119. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।

120. मदीनावालों और उनके आसपास के बद्दुओं को ऐसा नहीं चाहिए था कि अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे रह जाएँ और न यह कि उसकी जान के मुक़ाबले में उन्हें अपनी जान अधिक प्रिय हो, क्योंकि वह अल्लाह के मार्ग में प्यास या थकान या भूख की कोई भी तकलीफ़ उठाएँ या किसी ऐसी जगह क़दम रखें, जिससे काफ़िरों का क्रोध भड़के या जो चरका भी वे शत्रु को

مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۙ وَلَا يُنْفِقُوْنَ
نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا
اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ
كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ
وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَحْذَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَ
اَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى

लगाएँ, उसपर उनके हक़ में अनिवार्यतः एक सुकर्म लिख लिया जाता है। निस्संदेह अल्लाह उत्तमकार का कर्मफल अकारथ नहीं जाने देता।

121. और वे थोड़ा या ज़्यादा जो कुछ भी ख़र्च करें या (अल्लाह के मार्ग में) कोई घाटी पार करें, उनके हक़ में अनिवार्यतः लिख लिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें उनके अच्छे कर्मों का बदला प्रदान करे।

122. यह तो नहीं कि ईमानवाले सब के सब निकल खड़े हों, फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उनके हर गिरोह में से कुछ लोग निकलते, ताकि वे धर्म में समझ प्राप्त करते और ताकि वे अपने लोगों को सचेत करते, जब वे उनकी ओर लौटते, ताकि वे (बुरे कर्मों से) बचते?

123. ऐ ईमान लानेवालो! उन इनकार करनेवालों से लड़ो जो तुम्हारे निकट हैं और चाहिए कि वे तुममें सख़्ती पाएँ, और जान रखो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

124. जब भी कोई सूरा अवतरित की गई, तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं : "इसने तुममें से किसके ईमान को बढ़ाया?" हाँ, जो लोग ईमान लाए हैं इसने उनके ईमान को बढ़ाया है। और वे आनन्द मना रहे हैं।

125. रहे वे लोग जिनके दिलों में रोग है, उनकी गन्दगी में अभिवृद्धि करते हुए उसने उन्हें उनकी अपनी गन्दगी में और आगे बढ़ा दिया। और वे मरे तो



इनकार की दशा ही में।

126. क्या वे देखते नहीं कि प्रत्येक वर्ष वे एक या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं? फिर भी न तो वे तौबा करते हैं और न चेतते हैं।

127. और जब कोई सूरा अवतरित होती है, तो वे परस्पर एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि "तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है।" फिर पलट जाते हैं। अल्लाह ने उनके दिल फेर दिए हैं, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

128. तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असहय है। वह तुम्हारे लिए लालायित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

129. अब यदि ये मुँह मोड़ें तो कह दो : "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं! उसी पर मैंने भरोसा किया और वही बड़े सिंहासन का प्रभु है।"

10. यूनुस

(मक्का में उतरी— आयतें 109)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० रा०। ये तत्वदर्शितायुक्त किताब की आयतें हैं।

2. क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य है कि हमने उन्हीं में से एक आदमी की ओर प्रकाशना की कि लोगों को सचेत कर दो और जो लोग मान लें, उनको शुभ समाचार दे दो कि उनके लिए उनके रब के पास शाश्वत

وَبَشِّرِ الَّذِينَ اٰمَنُوٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا
مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ
نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَ
الْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ

सच्चा उन्नत स्थान है? इनकार करनेवाले कहने लगे : "निस्संदेह यह एक खुला जादूगर है।"

3. निस्संदेह तुम्हारा रब वही अल्लाह है, जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया, फिर सिंहासन पर विराजमान होकर व्यवस्था चला रहा है। उसकी अनुज्ञा के बिना कोई सिफ़ारिश करनेवाला नहीं है। वह अल्लाह है तुम्हारा रब। अतः उसी की बन्दगी करो। तो क्या तुम ध्यान न दोगे?

4. उसी की ओर तुम सबको लौटना है। यह अल्लाह का पक्का वादा है। निस्संदेह वही पहली बार पैदा करता है। फिर दोबारा पैदा करेगा, ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें न्यायपूर्वक बदला दे। रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके लिए खौलता पेय और दुखद यातना है, उस इनकार के बदले में जो वे करते रहे।

5. वही है जिसने सूर्य को सर्वथा दीप्ति और चन्द्रमा को प्रकाश बनाया और उनके लिए मंज़िलें निश्चित कीं, ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। अल्लाह ने यह सब कुछ सोद्देश्य ही पैदा किया है। वह अपनी निशानियों को उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करता है, जो जानना चाहें।

6. निस्संदेह रात और दिन के उलट-फेर में और जो कुछ अल्लाह ने

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا
بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا
غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ
بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ
النَّعِيْمِ ۝ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ
فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ
بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۚ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا
يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ
الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى

आकाशों और धरती में पैदा किया उसमें डर रखनेवाले लोगों के लिए निशानियाँ हैं।

7. रहे वे लोग जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते और सांसारिक जीवन ही पर निहाल हो गए हैं और उसी पर संतुष्ट हो बैठे, और जो हमारी निशानियों की ओर से असावधान हैं;

8. ऐसे लोगों का ठिकाना आग है, उसके बदले में जो वे कमाते रहे।

9. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनका रब उनके ईमान के कारण उनका मार्गदर्शन करेगा। उनके नीचे नेमत भरी जन्नतों में नहरें बह रही होंगी।

10. वहाँ उनकी पुकार यह होगी कि "महिमा है तेरी, ऐ अल्लाह!" और उनका पारस्परिक अभिवादन "सलाम" होगा। और उनकी पुकार का अंत इसपर होगा कि "प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है।"

11. यदि अल्लाह लोगों के लिए उनके जल्दी मचाने के कारण भलाई की जगह बुराई को शीघ्र घटित कर दे तो उनकी ओर उनकी अवधि पूरी कर दी जाए, किन्तु हम उन लोगों को जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते उनकी अपनी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं।

12. मनुष्य को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है, वह लेटे या बैठे या खड़े हमको पुकारने लग जाता है। किन्तु जब हम उसकी तकलीफ़ उससे दूर कर देते हैं तो

ضُرٍّ مَّسَّهُ ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَ
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ
كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ
خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ لِنَنظُرَ كَيْفَ
تَعْمَلُونَ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۙ قَالَ
الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا
أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِن تِلْقَاءِ
نَفْسِي ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ
عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قُل لَّوْ شَاءَ
اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُم بِهِ ۖ فَقَدْ
لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ فَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ

वह इस तरह चल देता है मानो कभी कोई तकलीफ़ पहुँचने पर उसने हमें पुकारा ही न था। इसी प्रकार मर्यादाहीन लोगों के लिए जो कुछ वे कर रहे हैं सुहावना बना दिया गया है।

13. तुमसे पहले कितनी ही नस्लों को, जब उन्होंने अत्याचार किया, हम विनष्ट कर चुके है, हालाँकि उनके रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए थे। किन्तु वे ऐसे न थे कि उन्हें मानते। अपराधी लोगों को हम इसी प्रकार बदला दिया करते हैं।

14. फिर उनके पश्चात हमने धरती में उनकी जगह तुम्हें रखा, ताकि हम देखें कि तुम कैसे कर्म करते हो।

15. और जब उनके सामने हमारी खुली हुई आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे लोग, जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, कहते हैं : "इसके सिवा कोई और क़ुरआन ले आओ या इसमें कुछ परिवर्तन करो।" कह दो : "मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी ओर से इसमें कोई परिवर्तन करूँ। मैं तो बस उसका अनुपालन करता हूँ, जो प्रकाशना मेरी ओर अवतरित की जाती है। यदि मैं अपने प्रभु की अवज्ञा करूँ तो इसमें मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है।"

16. कह दो : "यदि अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें यह पढ़कर न सुनाता और न वह तुम्हें इससे अवगत कराता। आख़िर इससे पहले मैं तुम्हारे बीच जीवन की पूरी अवधि व्यतीत कर चुका हूँ। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?"

17. फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर

إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ
هٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا
لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً
فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَيَقُولُونَ لَوْلَا
أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ
لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ وَإِذَا
أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا
لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ
إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ حَتّٰى إِذَا كُنْتُمْ فِي

थोपकर झूठ घड़े या उसकी आयतों को झुठलाए? निस्संदेह अपराधी कभी सफल नहीं होते।

18. वे लोग अल्लाह से हटकर उनको पूजते हैं, जो न उनका कुछ बिगाड़ सकें और न उनका कुछ भला कर सकें। और वे कहते हैं : "ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं।" कह दो : "क्या तुम अल्लाह को उसकी ख़बर देनेवाले हो, जिसका अस्तित्व न उसे आकाशों में ज्ञात है न धरती में?" महिमावान है वह और उसकी उच्चता के प्रतिकूल है वह शिर्क, जो वे कर रहे हैं।

19. सारे मनुष्य एक ही समुदाय थे। वे तो स्वयं अलग-अलग हो रहे। और यदि तेरे रब की ओर से पहले ही एक बात निश्चित न हो गई होती, तो उनके बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर दिया जाता जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं।

20. वे कहते हैं : "उसपर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?" तो कह दो : "परोक्ष तो अल्लाह ही से सम्बन्ध रखता है। अच्छा, प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।"

21. जब हम लोगों को उनके किसी तकलीफ़ में पड़ने के पश्चात दयालुता का रसास्वादन कराते हैं तो वे हमारी आयतों के विषय में चालबाज़ियाँ करने लग जाते हैं। कह दो : "अल्लाह की चाल ज़्यादा तेज़ है।" निस्संदेह जो चालबाज़ियाँ तुम कर रहे हो, हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनको लिखते जा रहे हैं।

22. वही है जो तुम्हें थल और जल में चलाता है, यहाँ तक कि जब तुम नौका

الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا
جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ
مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ
الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنفُسِكُم
مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا
أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا
أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا
فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ كَذَٰلِكَ

में होते हो और वह लोगों को लिए हुए अच्छी अनुकूल वायु के सहारे चलती है और वे उससे हर्षित होते हैं कि अकस्मात उनपर प्रचण्ड वायु का झोंका आता है, हर ओर से लहरें उनपर चली आती हैं और वे समझ लेते हैं कि बस अब वे घिर गए, उस समय वे अल्लाह ही को, निरी उसी पर आस्था रखकर, पुकारने लगते हैं : "यदि तूने हमें इससे बचा लिया तो हम अवश्य आभारी होंगे।"

23. फिर जब वह उनको बचा लेता है, तो क्या देखते हैं कि वे नाहक़ धरती में सरकशी करने लग जाते हैं। ऐ लोगो ! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही विरुद्ध है। सांसारिक जीवन का सुख ले लो। फिर तुम्हें हमारी ही ओर लौटकर आना है। फिर हम तुम्हें बता देंगे जो कुछ तुम करते रहे होगे।

24. सांसारिक जीवन की उपमा तो बस ऐसी है जैसे हमने आकाश से पानी बरसाया, तो उसके कारण धरती से उगनेवाली चीज़ें, जिनको मनुष्य और चौपाये सभी खाते हैं, घनी हो गईं, यहाँ तक कि जब धरती ने अपना शृंगार कर लिया और सँवर गई और उसके मालिक समझने लगे कि उन्हें उसपर पूरा अधिकार प्राप्त है कि रात या दिन में हमारा आदेश आ पहुँचा। फिर हमने उसे कटी फ़सल की तरह कर दिया, मानो कल वहाँ कोई आबादी ही न थी। इसी तरह हम उन लोगों के लिए खोल-खोलकर निशानियाँ बयान करते

نفصل الايت لقوم يتفكرون ۝ والله يدعوا الى
دار السلم ويهدي من يشاء الى صراط مستقيم ۝
للذين احسنوا الحسنى وزيادة ولا يرهق وجوههم
قتر ولا ذلة اولئك اصحب الجنة هم فيها
خلدون ۝ والذين كسبوا السيات جزاء سيئة
بمثلها وترهقهم ذلة ما لهم من الله من عاصم
كانما اغشيت وجوههم قطعا من اليل مظلما
اولئك اصحب النار هم فيها خلدون ۝ ويوم
نحشرهم جميعا ثم نقول للذين اشركوا
مكانكم انتم وشركاؤكم فزيلنا بينهم وقال
شركاؤهم ما كنتم ايانا تعبدون ۝ فكفى بالله
شهيدا بيننا وبينكم ان كنا عن عبادتكم
لغفلين ۝ هنالك تبلوا كل نفس ما اسلفت و

हैं, जो सोच-विचार से काम लेना चाहें।

25. और अल्लाह तुम्हें सलामती के घर की ओर बुलाता है, और जिसे चाहता है सीधी राह चलाता है;

26. अच्छे से अच्छा कर्म करनेवालों के लिए अच्छा बदला है और इसके अतिरिक्त और भी। और उनके चेहरों पर न तो कलौंस छाएगी और न ज़िल्लत। वही जन्नतवाले हैं; वे उसमें सदैव रहेंगे।

27. रहे वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ कमाईं, तो एक बुराई का बदला भी उसी जैसा होगा; और ज़िल्लत उनपर छा रही होगी। उन्हें अल्लाह से बचानेवाला कोई न होगा। उनके चेहरों पर मानो अँधेरी रात के टुकड़े ओढ़ा दिए गए हों। वही आगवाले हैं, उन्हें उसमें सदैव रहना है।

28. और जिस दिन हम उन सबको इकट्ठा करेंगे, फिर उन लोगों से, जिन्होंने शिर्क किया होगा, कहेंगे : "अपनी जगह ठहरे रहो तुम भी और तुम्हारे साझीदार भी।" फिर हम उनके बीच अलगाव पैदा कर देंगे, और उनके ठहराए हुए साझीदार कहेंगे : "तुम हमारी तो बन्दगी नहीं करते थे।

29. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही एक गवाह काफ़ी है। हमें तो तुम्हारी बन्दगी की ख़बर तक न थी।"

30. वहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने पहले के किए हुए कर्मों को स्वयं जाँच लेगा और

رُدُّوٓا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ۞ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَآءِ وَ
الْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَن
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ فَقُلْ
أَفَلَا تَتَّقُونَ ۞ فَذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۖ فَمَاذَا بَعْدَ
الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ۞ كَذَٰلِكَ حَقَّتْ
كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوٓا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۞
قُلْ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُ ۚ قُلِ اللَّهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۖ فَأَنَّىٰ
تُؤْفَكُونَ ۞ قُلْ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَهْدِيٓ إِلَى
الْحَقِّ ۚ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۗ أَفَمَن يَهْدِيٓ إِلَى
الْحَقِّ أَحَقُّ أَن يُتَّبَعَ أَمَّن لَّا يَهِدِّيٓ إِلَّآ أَن يُهْدَىٰ

वह अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर फिरेंगे और जो कुछ झूठ वे घड़ते रहे थे, वह सब उनसे गुम होकर रह जाएगा।

31. कहो : "तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी कौन देता है, या ये कान और आँखें किसके अधिकार में हैं और कौन जीवन्त को निर्जीव से निकालता है और निर्जीव को जीवन्त से निकालता है और कौन यह सारा इन्तिज़ाम चला रहा है?" इस पर वे बोल पड़ेंगे : "अल्लाह!" तो कहो : "फिर आखिर तुम क्यों नहीं डर रखते?"

32. फिर यही अल्लाह तो है तुम्हारा वास्तविक रब। फिर आखिर सत्य के पश्चात पथभ्रष्टता के अतिरिक्त और क्या रह जाता है? फिर तुम कहाँ से फिरे जाते हो?

33. इसी तरह अवज्ञाकारी लोगों के प्रति तुम्हारे रब की बात सच्ची होकर रही कि वे मानेंगे नहीं।

34. कहो : "क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई है जो सृष्टि का आरंभ भी करता हो, फिर उसकी पुनरावृति भी करे?" कहो : "अल्लाह ही सृष्टि का आरंभ करता है और वही उसकी पुनरावृत्ति भी; आख़िर तुम कहाँ औंधे हुए जाते हो?"

35. कहो : "क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करे?" कहो : "अल्लाह ही सत्य के मार्ग पर चलाता है। फिर जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता हो, वह इसका ज़्यादा हक़दार है कि उसका अनुसरण किया जाए या वह जो स्वयं ही मार्ग न पाए जब तक कि उसे मार्ग न दिखाया

فما لكم كيف تحكمون ۝ وما يتبع اكثرهم الا
ظنا ان الظن لا يغني من الحق شيئا ان الله
عليم بما يفعلون ۝ وما كان هذا القران ان
يفترى من دون الله ولكن تصديق الذي بين
يديه وتفصيل الكتب لا ريب فيه من رب
العلمين ۝ ام يقولون افترىه قل فاتوا بسورة
مثله وادعوا من استطعتم من دون الله ان
كنتم صدقين ۝ بل كذبوا بما لم يحيطوا بعلمه
ولما ياتهم تاويله كذلك كذب الذين من
قبلهم فانظر كيف كان عاقبة الظلمين ۝ و
منهم من يؤمن به ومنهم من لا يؤمن به و
ربك اعلم بالمفسدين ۝ وان كذبوك فقل لي
عملي ولكم عملكم انتم بريئون مما اعمل

जाए ? फिर यह तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले कर रहे हो ?"

36. और उनमें से अधिकतर तो बस अटकल पर चलते हैं। निश्चय ही अटकल सत्य को कुछ भी दूर नहीं कर सकती।[1] वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है।

37. यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह से हटकर घड़ लिया जाए, बल्कि यह तो जिसके समक्ष है, उसकी पुष्टि में है और किताब का विस्तार है, जिसमें किसी संदेह की गुंजाइश नहीं। यह सारे संसार के रब की ओर से है।

38. (क्या उन्हें कोई खटक है) या वे कहते हैं : "इस व्यक्ति (पैग़म्बर) ने उसे स्वयं ही घड़ लिया है ?" कहो : "यदि तुम सच्चे हो, तो इस जैसी एक सूरा ले आओ और अल्लाह से हटकर उसे बुला लो, जिसपर तुम्हारा बस चले।"

39. बल्कि बात यह है कि जिस चीज़ के ज्ञान पर वे हावी न हो सके, उसे उन्होंने झुठला दिया और अभी उसका परिणाम उनके सामने नहीं आया। इसी प्रकार उन लोगों ने भी झुठलाया था, जो इनसे पहले थे। फिर देख लो उन अत्याचारियों का कैसा परिणाम हुआ !

40. उनमें कुछ लोग उसपर ईमान रखनेवाले हैं और उनमें कुछ लोग उसपर ईमान लानेवाले नहीं हैं। और तुम्हारा रब बिगाड़ पैदा करनेवालों को भली-भाँति जानता है।

41. और यदि वे तुझे झुठलाएँ तो कह दो : "मेरा कर्म मेरे लिए है और

1. अर्थात अटकल कदापि सत्य का बदल (Substitute) नहीं हो सकती।

وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ
اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ
وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ
شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ
يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ
يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ
اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ
الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ
رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا

तुम्हारा कर्म तुम्हारे लिए। जो कुछ मैं करता हूँ उसकी ज़िम्मेदारी से तुम बरी हो और जो कुछ तुम करते हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।"

42. और उनमें बहुत-से ऐसे लोग हैं जो तेरी ओर कान लगाते हैं। किन्तु क्या तू बहरों को सुनाएगा, चाहे वे समझ न रखते हों?

43. और कुछ उनमें ऐसे हैं, जो तेरी ओर ताकते हैं, किन्तु क्या तू अंधों को मार्ग दिखाएगा, चाहे उन्हें कुछ सूझता न हो?

44. अल्लाह तो लोगों पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता, किन्तु लोग स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।

45. जिस दिन वह उनको इकट्ठा करेगा तो ऐसा जान पड़ेगा जैसे वे दिन की एक घड़ी भर ठहरे थे। वे परस्पर एक-दूसरे को पहचानेंगे। वे लोग घाटे में पड़ गए, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे मार्ग न पा सके।

46. जिस चीज़ का हम उनसे वादा करते हैं उसमें से कुछ चाहे तुझे दिखा दें या हम तुझे (इससे पहले) उठा लें, उन्हें तो हमारी ओर लौटकर आना ही है। फिर जो कुछ वे कर रहे हैं उसपर अल्लाह गवाह है।

47. प्रत्येक समुदाय के लिए एक रसूल है। फिर जब उनके पास उनका रसूल आ जाता है तो उनके बीच न्यायपूर्वक फ़ैसला कर दिया जाता है। उनपर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाता।

48. वे कहते हैं : "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

49. कहो : "मुझे अपने लिए न तो किसी हानि का अधिकार प्राप्त है और न

وَّلَا نَفۡعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمۡ فَلَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ۝
قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ اَتٰٮكُمۡ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوۡ نَهَارًا مَّا
ذَا يَسۡتَعۡجِلُ مِنۡهُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ۝ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ
اٰمَنۡتُمۡ بِهٖ ؕ آٰلۡـٰٔنَ وَقَدۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ۝
ثُمَّ قِيۡلَ لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ذُوۡقُوۡا عَذَابَ الۡخُلۡدِ ۚ هَلۡ
تُجۡزَوۡنَ اِلَّا بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡسِبُوۡنَ ۝ وَيَسۡتَنۡۢبِـُٔوۡنَكَ
اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلۡ اِىۡ وَرَبِّىۡۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ وَمَاۤ اَنۡتُمۡ
بِمُعۡجِزِيۡنَ ۝ وَلَوۡ اَنَّ لِكُلِّ نَفۡسٍ ظَلَمَتۡ مَا فِى
الۡاَرۡضِ لَافۡتَدَتۡ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا
رَاَوُا الۡعَذَابَ ۚ وَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ بِالۡقِسۡطِ وَهُمۡ لَا
يُظۡلَمُوۡنَ ۝ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ
اَلَاۤ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا

लाभ का, बल्कि अल्लाह जो चाहता है वही होता है। हर समुदाय के लिए एक नियत समय है, जब उनका नियत समय आ जाता है तो वे न घड़ी भर पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।"

50. कहो : "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुमपर उसकी यातना रातों रात या दिन को आ जाए तो (क्या तुम उसे टाल सकोगे?) वह आख़िर कौन-सी चीज़ होगी जिसके लिए अपराधियों को जल्दी पड़ी हुई है?

51. क्या फिर जब वह घटित हो जाएगी तब तुम उसे मानोगे?— क्या अब! इसी के लिए तो तुम जल्दी मचा रहे थे!"

52. फिर अत्याचारी लोगों से कहा जाएगा : "स्थायी यातना का मज़ा चखो! जो कुछ तुम कमाते रहे हो, उसके सिवा तुम्हें और क्या बदला दिया जा सकता है?"

53. वे तुम से चाहते हैं कि उन्हें ख़बर दो कि "क्या वह वास्तव में सत्य है?" कह दो : "हाँ, मेरे रब की क़सम! वह बिलकुल सत्य है और तुम क़ाबू से बाहर निकल जानेवाले नहीं हो।"

54. यदि प्रत्येक अत्याचारी व्यक्ति के पास वह सब कुछ हो जो धरती में है, तो वह अर्थदण्ड के रूप में उसे दे डाले। जब वे यातना को देखेंगे तो मन ही मन में पछताएँगे। उनके बीच न्यायपूर्वक फ़ैसला कर दिया जाएगा और उनपर कोई अत्याचार न होगा।

55. सुन लो, जो कुछ आकाशों और धरती में है, अल्लाह ही का है। जान लो,

يَعْلَمُوْنَ ۝ هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ
لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ
فَلْيَفْرَحُوْا ۭ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ
مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ
حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۭ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى
اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ
عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ
فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝
وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ
قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ
شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۭ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ

निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है, किन्तु उनमें अधिकतर लोग जानते नहीं।

56. वही जिलाता और मारता है और उसी की ओर तुम लौटाए जा रहे हो।

57. ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश और जो कुछ सीनों में (रोग) है, उसके लिए रोगमुक्ति और मोमिनों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है।

58. कह दो : "यह अल्लाह के अनुग्रह और उसकी दया से है, अतः इस पर उन्हें प्रसन्न होना चाहिए। यह उन सब चीज़ों से उत्तम है, जिनको वे इकट्ठा करने में लगे हुए हैं।"

59. कह दो : "क्या तुम लोगों ने यह भी देखा कि जो रोज़ी अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारी है उसमें से तुमने स्वयं ही कुछ को हराम और हलाल ठहरा लिया?" कहो : "क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी अनुमति दी है या तुम अल्लाह पर झूठ घड़कर थोप रहे हो?"

60. जो लोग झूठ घड़कर उसे अल्लाह पर थोंपते हैं, उन्होंने क़ियामत के दिन के विषय में क्या समझ रखा है? अल्लाह तो लोगों के लिए बड़ा अनुग्रहवाला है, किन्तु उनमें अधिकतर कृतज्ञता नहीं दिखलाते।

61. तुम जिस दशा में भी होते हो और क़ुरआन से जो कुछ भी पढ़ते हो और तुम लोग जो काम भी करते हो हम तुम्हें देख रहे होते हैं, जब तुम उसमें लगे होते हो। और तुम्हारे रब से कण भर भी कोई चीज़ छिपी नहीं है, न

رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي
السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا
وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ
إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝
أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ ۗ
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
شُرَكَاءَ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا
يَخْرُصُونَ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ

धरती में न आकाश में और न उससे छोटी और न बड़ी कोई चीज़ ऐसी है जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो।

62. सुन लो, अल्लाह के मित्रों को न तो कोई डर है और न वे शोकाकुल ही होंगे।

63. ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डर कर रहे।

64. उनके लिए सांसारिक जीवन में भी शुभ-सूचना है और आख़िरत में भी— अल्लाह के शब्द बदलते नहीं— यही बड़ी सफलता है।

65. उनकी बात तुम्हें दुखी न करे, सारा प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है, वह सुनता, जानता है।

66. जान रखो! जो कोई भी आकाशों में है और जो कोई धरती में है, अल्लाह ही का है। जो लोग अल्लाह को छोड़कर दूसरे साझीदारों को पुकारते हैं, वे आख़िर किसका अनुसरण करते हैं? वे तो केवल अटकल पर चलते हैं और वे निरे अटकलें दौड़ाते हैं।

67. वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें चैन पाओ और दिन को प्रकाशमान बनाया (ताकि तुम उसमें दौड़-धूप कर सको); निस्संदेह

لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ ۖ
هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ
عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا
ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ
بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ ۘ
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي
وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا
أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ
غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ۝ فَإِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى
اللَّهِ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ

इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो सुनते हैं।

68. वे कहते हैं : "अल्लाह औलाद रखता है।" महान और उच्च है वह! वह निरपेक्ष है, आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है। तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। क्या तुम अल्लाह से जोड़कर वह बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?

69. कह दो : "जो लोग अल्लाह पर थोपकर झूठ घड़ते हैं, वे सफल नहीं होते।"

70. यह तो सांसारिक सुख है। फिर हमारी ओर ही उन्हें लौटना है, फिर जो इनकार वे क़रते रहे होंगे उसके बदले में हम उन्हें कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे।

71. उन्हें नूह का वृत्तान्त सुनाओ। जब उसने अपनी क़ौम से कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यदि मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों के द्वारा नसीहत करना तुम्हें भारी हो गया है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है। तुम अपना मामला ठहरा लो और अपने ठहराए हुए साझीदारों को भी साथ ले लो, फिर तुम्हारा मामला तुमपर कुछ संदिग्ध न रहे; फिर मेरे साथ जो कुछ करना है, कर डालो और मुझे मुहलत न दो।"

72. फिर यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं माँगा। मेरा बदला (पारिश्रमिक) बस अल्लाह के ज़िम्मे है, और आदेश मुझे मुस्लिम (आज्ञाकारी) होने का हुआ है।

73. किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हमने उसे और उन लोगों को, जो

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ
وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهٖ رُسُلًا
اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا
كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ
الْمُعْتَدِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا
قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ
لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ۚ اَسِحْرٌ هٰذَا ۚ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَا
نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ

उसके साथ नौका में थे, बचा लिया और उन्हें उत्तराधिकारी बनाया, और उन लोगों को डुबो दिया, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था। अतः देख लो, जिन्हें सचेत किया गया था उनका क्या परिणाम हुआ !

74. फिर उसके बाद कितने ही रसूल हमने उनकी क़ौम की ओर भेजे और वे उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए, किन्तु वे ऐसे न थे कि जिसको पहले झुठला चुके हों, उसे मानते। इसी तरह अतिक्रमणकारियों के दिलों पर हम मुहर लगा देते हैं।

75. फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को अपनी आयतों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा। किन्तु उन्होंने घमण्ड किया, वे थे ही अपराधी लोग।

76. अतः जब हमारी ओर से सत्य उनके सामने आया तो वे कहने लगे : "यह तो खुला जादू है।"

77. मूसा ने कहा : "क्या तुम सत्य के विषय में ऐसा कहते हो, जबकि यह तुम्हारे सामने आ गया है? क्या यह कोई जादू है? जादूगर तो सफल नहीं हुआ करते।"

78. उन्होंने कहा : "क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमें उस चीज़ से फेर दे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है और धरती में तुम दोनों की बड़ाई स्थापित हो जाए? हम तो तुम्हें माननेवाले नहीं।"

79. फ़िरऔन ने कहा : "हर कुशल जादूगर को मेरे पास लाओ।"

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ
لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا
قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝
فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ
مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ
لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَقَالَ
مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْۤا
اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاَوْحَيْنَاۤ
اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ

80. फिर जब जादूगर आ गए तो मूसा ने उनसे कहा : "जो कुछ तुम डालते हो, डालो।"

81. फिर जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा : "तुम जो कुछ लाए हो, जादू है। अल्लाह अभी उसे मलियामेट किए देता है। निस्संदेह अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों के कर्म को फलीभूत नहीं होने देता।

82. अल्लाह अपने शब्दों से सत्य को सत्य कर दिखाता है, चाहे अपराधी नापसंद ही करें।"

83. फिर मूसा की बात उसकी क़ौम की संतति में से बस कुछ ही लोगों ने मानी; फ़िरऔन और उनके अपने सरदारों के भय से कि कहीं उन्हें किसी फ़ितने में न डाल दें। फ़िरऔन था भी धरती में बहुत सिर उठाए हुए, और निश्चय ही वह हद से आगे बढ़ गया था।

84. मूसा ने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसपर भरोसा करो, यदि तुम आज्ञाकारी हो।"

85. इसपर वे बोले : "हमने अल्लाह पर भरोसा किया। ऐ हमारे रब ! तू हमें अत्याचारी लोगों के हाथों आज़माइश में न डाल।

86. और अपनी दयालुता से हमें इनकार करनेवालों से छुटकारा दिला।"

87. हमने मूसा और उसके भाई की ओर प्रकाशना की कि "तुम दोनों अपने

بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ
اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝
قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا
تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَجٰوَزْنَا
بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَ
جُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ
قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ
بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ آٰلْـٰٔنَ
وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

लोगों के लिए मिस्र में कुछ घर निश्चित कर लो और अपने घरों को क़िबला बना लो।[1] और नमाज़ क़ायम करो और ईमानवालों को शुभसूचना दे दो।"

88. मूसा ने कहा : "हमारे रब! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को सांसारिक जीवन में शोभा-सामग्री और धन दिए हैं, हमारे रब, इसलिए कि वे तेरे मार्ग से भटकाएँ! हमारे रब, उनके धन नष्ट कर दे और उनके हृदय कठोर कर दे कि वे ईमान न लाएँ, ताकि वे दुखद यातना देख लें।"

89. कहा : "तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकृत हो चुकी। अतः तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों के मार्ग पर कदापि न चलना, जो जानते नहीं।"

90. और हमने इसराईलियों को समुद्र पार करा दिया। फिर फ़िरऔन और उसकी सेनाओं ने सरकशी और ज़्यादती के साथ उनका पीछा किया, यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो पुकार उठा : "मैं ईमान ले आया कि उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, जिसपर इसराईल की संतान ईमान लाई। अब मैं आज्ञाकारी हूँ।"

91. "क्या अब? हालाँकि इससे पहले तूने अवज्ञा की और बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था।

1. अर्थात उनसे मस्जिद का काम लो।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ
اٰيَةً ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا
لَغٰفِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مُبَوَّاَ
صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰھُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا
حَتّٰى جَاۗءَھُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَھُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ فَاِنْ
كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔـلِ الَّذِيْنَ
يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاۗءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝
وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ
عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَوْ جَاۗءَتْهُمْ
كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝ فَلَوْلَا

92. अतः आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तू अपने बादवालों के लिए एक निशानी हो जाए। निश्चय ही, बहुत-से लोग हमारी निशानियों के प्रति असावधान ही रहते हैं।"

93. और हमने इसराईल की संतान को अच्छा, सम्मानित ठिकाना दिया और उन्हें अच्छी आजीविका प्रदान की। फिर उन्होंने उस समय विभेद किया, जबकि ज्ञान उनके पास आ चुका था। निश्चय ही तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा, जिसमें वे विभेद करते रहे हैं।

94. अतः यदि तुम्हें उस चीज़ के बारे में कोई संदेह हो, जो हमने तुम्हारी ओर अवतरित की है, तो उनसे पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। तुम्हारे पास तो तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका। अतः तुम कदापि संदेह करनेवाले न हो।

95. और न उन लोगों में सम्मिलित होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, अन्यथा तुम घाटे में पड़कर रहोगे।

96. निस्संदेह जिन लोगों के विषय में तुम्हारे रब की बात सच्ची होकर रही वे ईमान नहीं लाएँगे,

97. जब तक कि वे दुखद यातना न देख लें, चाहे प्रत्येक निशानी उनके पास आ जाए।

98. फिर ऐसी कोई बस्ती क्यों न हुई कि वह ईमान लाती और उसका ईमान


كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم
يونس لما آمنوا كشفنا عنهم عذاب الخزي
في الحياة الدنيا ومتعناهم إلى حين ۝ ولو
شاء ربك لآمن من في الأرض كلهم جميعا
أفأنت تكره الناس حتى يكونوا مؤمنين ۝
وما كان لنفس أن تؤمن إلا بإذن الله و
يجعل الرجس على الذين لا يعقلون ۝
قل انظروا ماذا في السماوات والأرض وما
تغني الآيات والنذر عن قوم لا يؤمنون ۝
فهل ينتظرون إلا مثل أيام الذين خلوا
من قبلهم قل فانتظروا إني معكم من
المنتظرين ۝ ثم ننجي رسلنا والذين آمنوا كذلك
حقا علينا ننج المؤمنين ۝ قل يا أيها الناس إن

उसके लिए लाभप्रद सिद्ध होता? हाँ, यूनुस की क़ौम के लोग इसके अपवाद हैं। जब वे ईमान लाए तो हमने सांसारिक जीवन में अपमानजनक यातना को उनपर से टाल दिया और उन्हें एक अवधि तक सुखोपभोग का अवसर प्रदान किया।

99. यदि तुम्हारा रब चाहता तो धरती में जितने भी लोग हैं वे सब के सब ईमान ले आते, फिर क्या तुम लोगों को विवश करोगे कि वे मोमिन हो जाएँ?

100. हालाँकि किसी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई व्यक्ति ईमान लाए। वह तो उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है, जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

101. कहो : "देख लो, आकाशों और धरती में क्या कुछ है!" किन्तु निशानियाँ और चेतावनियाँ उन लोगों के कुछ काम नहीं आतीं, जो ईमान न लाना चाहें।

102. अतः वे तो उस तरह के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिस तरह के दिन वे लोग देख चुके हैं जो उनसे पहले गुज़रे हैं। कह दो : "अच्छा, प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।"

103. फिर हम अपने रसूलों और उन लोगों को बचा लेते रहे हैं, जो ईमान ले आए। ऐसी ही हमारी रीति है, हमपर यह हक़ है कि ईमानवालों को बचा लें।

104. कह दो : "ऐ लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के विषय में किसी संदेह में हो

كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي
يَتَوَفَّاكُمْ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا
لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا
مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا
كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ
لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي
لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا
أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ

तो मैं तो उनकी बन्दगी नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह से हटकर बन्दगी करते हो, बल्कि मैं उस अल्लाह की बन्दगी करता हूँ जो तुम्हें मृत्यु देता है। और मुझे आदेश है कि मैं ईमानवालों में से होऊँ।

105. और यह कि हर ओर से एकाग्र होकर अपना रुख इस धर्म की ओर कर लो और मुशरिकों में कदापि सम्मिलित न हो,

106. और अल्लाह से हटकर उसे न पुकारो जो न तुम्हें लाभ पहुँचाए और न तुम्हें हानि पहुँचा सके और न तुम्हारा कुछ बुरा कर सके, क्योंकि यदि तुमने ऐसा किया तो उस समय तुम अत्याचारी होगे।

107. यदि अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में डाल दे तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नहीं। और यदि वह तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा कर ले तो कोई उसके अनुग्रह को फेरनेवाला भी नहीं। वह इसे अपने बन्दों में से जिस तक चाहता है, पहुँचाता है और वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

108. कह दो : "ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है। अब जो कोई मार्ग पर आएगा, तो वह अपने ही लिए मार्ग पर आएगा, और जो कोई पथभ्रष्ट होगा तो वह अपने ही बुरे के लिए पथभ्रष्ट होगा। मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवालेदार तो हूँ नहीं।"

109. जो कुछ तुमपर प्रकाशना की जा रही है, उसका अनुसरण करो और



धैर्य से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।

11. हूद

(मक्का में उतरी—आयतें 123)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० रा०। यह एक किताब है जिसकी आयतें पक्की हैं, फिर सविस्तार बयान हुई हैं; उसकी ओर से जो अत्यन्त तत्त्वदर्शी, पूरी ख़बर रखनेवाला है।

2. कि "तुम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। मैं तो उसकी ओर से तुम्हें सचेत करनेवाला और शुभ सूचना देनेवाला हूँ।"

3. और यह कि "अपने रब से क्षमा माँगो, फिर उसकी ओर पलट आओ। वह तुम्हें एक निश्चित अवधि तक सुखोपभोग की उत्तम सामग्री प्रदान करेगा। और बढ़-चढ़कर कर्म करनेवालों पर वह तदधिक अपना अनुग्रह करेगा, किन्तु यदि तुम मुँह फेरते हो तो निश्चय ही मुझे तुम्हारे विषय में एक बड़े दिन की यातना का भय है।

4. तुम्हें अल्लाह ही की ओर पलटना है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।"

5. देखो! ये अपने सीनों को मोड़ते हैं, चाहिए कि उससे छिपें। देखो! जब ये अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँकते हैं, वह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं। निस्संदेह वह सीनों तक की बात को जानता है।



6. धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। वह जानता है जहाँ उसे ठहरना है और जहाँ उसे सौंपा जाना है। सब कुछ एक स्पष्ट किताब में मौजूद है।

7. वही है जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया— उसका सिंहासन पानी पर था— ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। और यदि तुम कहो कि "मरने के पश्चात तुम अवश्य उठोगे।" तो जिन्हें इनकार है, वे कहने लगेंगे : "यह तो खुला जादू है।"

8. यदि हम एक निश्चित अवधि तक के लिए उनसे यातना को टाले रखें, तो वे कहने लगेंगे : "आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है?" सुन लो! जिस दिन वह उनपर आ जाएगी तो फिर वह उनपर से टाली नहीं जाएगी। और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे उपहास करते हैं।

9. यदि हम मनुष्य को अपनी दयालुता का रसास्वादन कराकर फिर उसको उससे छीन लें, तो (वह दयालुता के लिए याचना नहीं करता) निश्चय ही वह निराशावादी, कृतघ्न है।

10. और यदि हम इसके पश्चात कि उसे तकलीफ़ पहुँची हो, उसे नेमत का रसास्वादन कराते हैं तो वह कहने लगता है : "मेरे तो सारे दुख दूर हो गए।" वह तो फूला नहीं समाता, डींगें मारने लगता है।

11. उनकी बात दूसरी है जिन्होंने धैर्य से काम लिया और सत्कर्म किए।

صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى
اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ
قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا
مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ
اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ
اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖؗ
وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا

वही हैं जिनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है।

12. तो शायद तुम उसमें से कुछ छोड़ बैठोगे, जो तुम्हारी ओर प्रकाशना रूप में भेजी जा रही है। और तुम इस बात पर तंगदिल हो रहे हो कि वे कहते हैं : "उसपर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतरा या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया?" तुम तो केवल सचेत करनेवाले हो। हर चीज़ अल्लाह ही के हवाले है।

13. (उन्हें कोई शंका है) या वे कहते हैं कि "उसने इसे स्वयं घड़ लिया है?" कह दो : "अच्छा, यदि तुम सच्चे हो तो इस जैसी घड़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह से हटकर जिस किसी को बुला सकते हो बुला लो।"

14. फिर यदि वे तुम्हारी बात न मानें तो जान लो, यह अल्लाह के ज्ञान ही के साथ अवतरित हुआ है। और यह कि उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। तो अब क्या तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते हो?

15. जो व्यक्ति सांसारिक जीवन और उसकी शोभा का इच्छुक हो तो ऐसे लोगों को उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला हम यहीं दे देते हैं और इसमें उनका कोई हक़ नहीं मारा जाता।

16. यही वे लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा और कुछ भी नहीं। उन्होंने जो कुछ बनाया, वह सब वहाँ उनकी जान को लागू हुआ और

يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِۦ وَيَتْلُوهُ
شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِۦ كِتَٰبُ مُوسَىٰٓ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ
أُو۟لَٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِۦ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِۦ مِنَ ٱلْأَحْزَابِ
فَٱلنَّارُ مَوْعِدُهُۥ ۚ فَلَا تَكُ فِى مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ ٱلْحَقُّ
مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ ٱفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ
يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ ٱلْأَشْهَٰدُ هَٰٓؤُلَآءِ
ٱلَّذِينَ كَذَبُوا۟ عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى
ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ ٱلَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ
وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِٱلْءَاخِرَةِ هُمْ كَٰفِرُونَ ۝
أُو۟لَٰٓئِكَ لَمْ يَكُونُوا۟ مُعْجِزِينَ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا
كَانَ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ ۘ يُضَٰعَفُ
لَهُمُ ٱلْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا۟ يَسْتَطِيعُونَ ٱلسَّمْعَ وَمَا

उनका सारा किया-धरा मिथ्या होकर रहा।

17. फिर क्या वह व्यक्ति जो अपने रब के एक स्पष्ट प्रमाण पर है और स्वयं उसके रूप में भी एक गवाह उसके साथ-साथ रहता है—और इससे पहले मूसा की किताब भी एक मार्गदर्शक और दयालुता के रूप में उपस्थित रही है—(और वह जो प्रकाश एवं मार्गदर्शन से वंचित है, दोनों बराबर हो सकते हैं) ऐसे ही लोग उसपर ईमान लाते हैं, किन्तु इन गिरोहों में से जो उसका इनकार करेगा तो उसके लिए जिस जगह का वादा है, वह तो आग है। अतः तुम्हें इसके विषय में कोई संदेह न हो। यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, किन्तु अधिकतर लोग मानते नहीं।

18. उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर थोपकर झूठ घड़े। ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देनेवाले कहेंगे : "यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ घड़ा।" सुन लो! ऐसे अत्याचारियों पर अल्लाह की लानत है।

19. जो अल्लाह के मार्ग से रोकते और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं; और वही आख़िरत का इनकार करते हैं।

20. वे धरती में क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते और न अल्लाह से हटकर उनका कोई समर्थक ही है। उन्हें दोहरी यातना दी जाएगी। वे न सुन ही सकते

كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝ أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا أَنفُسَهُمْ
وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ
فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ وَأَخْبَتُوٓا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ
الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ
كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ هَلْ يَسْتَوِيَانِ
مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ
قَوْمِهِۦٓ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَن لَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّا
اللَّهَ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ فَقَالَ
الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِۦ مَا نَرَىٰكَ إِلَّا
بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَىٰكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ
أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن
فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَٰذِبِينَ ۝ قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ

थे और न देख ही सकते थे।

21. ये वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और जो कुछ वे घड़ा करते थे, वह सब उनसे गुम होकर रह गया।

22. निश्चय ही वही आख़िरत में सबसे बढ़कर घाटे में रहेंगे।

23. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और अपने रब की ओर झुक पड़े वही जन्नतवाले हैं, उसमें वे सदैव रहेंगे।

24. दोनों पक्षों की उपमा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो और एक देखने और सुननेवाला। क्या इन दोनों की दशा समान हो सकती है? तो क्या तुम होश से काम नहीं लेते?

25. हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा। (उसने कहा :) "मैं तुम्हें साफ़- साफ़ चेतावनी देता हूँ।

26. यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। मुझे तुम्हारे विषय में एक दुखद दिन की यातना का भय है।"

27. इसपर उसकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया था, कहने लगे : "हमारी दृष्टि में तो तुम हमारे ही जैसे आदमी हो और हम देखते हैं कि बस कुछ ऐसे लोग ही तुम्हारे अनुयायी हैं जो पहली दृष्टि ही में हमारे यहाँ के नीच हैं। हम अपने मुक़ाबले में तुममें कोई बड़ाई नहीं देखते, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।"

28. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम्हारा क्या विचार है? यदि मैं

إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً
مِّنْ عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ۚ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ
لَهَا كَارِهُونَ ۝ وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ
إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ
آمَنُوا ۚ إِنَّهُم مُّلَاقُو رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُونَ ۝ وَيَا قَوْمِ مَن يَنصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِن
طَرَدتُّهُمْ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي
خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي
مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَن
يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنفُسِهِمْ ۖ
إِنِّي إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ قَالُوا يَا نُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا
فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ
مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ اللَّهُ إِن

अपने रब के एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपने पास से दयालुता भी प्रदान की है, फिर वह तुम्हें न सूझे तो क्या हम हठात् उसे तुमपर चिपका दें, जबकि वह तुम्हें अप्रिय है ?

29. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं इस काम पर तुमसे कोई धन नहीं माँगता। मेरा पारिश्रमिक तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है। मैं ईमान लानेवालों को दूर करनेवाला भी नहीं। उन्हें तो अपने रब से मिलना ही है, किन्तु मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि तुम अज्ञानी लोग हो।

30. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यदि मैं उन्हें धुत्कार दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी सहायता कर सकता है ? फिर क्या तुम होश से काम नहीं लेते ?

31. और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि 'मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं', और न मुझे परोक्ष का ज्ञान है और न मैं यह कहता हूँ कि 'मैं कोई फ़रिश्ता हूँ' और न उन लोगों के विषय में, जो तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ हैं, मैं यह कहता हूँ कि अल्लाह उन्हें कोई भलाई न देगा। जो कुछ उनके जी में है, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। (यदि मैं ऐसा कहूँ) तब तो मैं अवश्य ही ज़ालिमों में से हूँगा।"

32. उन्होंने कहा : "ऐ नूह ! तुम हमसे झगड़ चुके और बहुत झगड़ चुके। यदि तुम सच्चे हो तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, अब उसे हम पर ले ही आओ।"

33. उसने कहा : "वह तो अल्लाह ही यदि चाहेगा तो तुमपर लाएगा और

شَآءَ وَمَآ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ۝ وَلَا يَنۡفَعُكُمۡ نُصۡحِىۡۤ
اِنۡ اَرَدْتُّ اَنۡ اَنۡصَحَ لَـكُمۡ اِنۡ كَانَ اللّٰهُ يُرِيۡدُ
اَنۡ يُّغۡوِيَكُمۡ ؕ هُوَ رَبُّكُمۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ۝ اَمۡ
يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَـرٰٮهُ ؕ قُلۡ اِنِ افۡتَـرَيۡتُهٗ فَعَلَىَّ اِجۡرَامِىۡ
وَاَنَا بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تُجۡرِمُوۡنَ ۝ وَاُوۡحِىَ اِلٰى نُوۡحٍ
اَنَّهٗ لَنۡ يُّؤۡمِنَ مِنۡ قَوۡمِكَ اِلَّا مَنۡ قَدۡ اٰمَنَ فَلَا
تَبۡتَـئِسۡ بِمَا كَانُوۡا يَفۡعَلُوۡنَ ۝ وَاصۡنَعِ الۡـفُلۡكَ
بِاَعۡيُنِنَا وَوَحۡيِنَا وَلَا تُخَاطِبۡنِىۡ فِى الَّذِيۡنَ
ظَلَمُوۡا ۚ اِنَّهُمۡ مُّغۡرَقُوۡنَ ۝ وَيَصۡنَعُ الۡـفُلۡكَ وَكُلَّمَا
مَرَّ عَلَيۡهِ مَلَاٌ مِّنۡ قَوۡمِهٖ سَخِرُوۡا مِنۡهُ ؕ قَالَ
اِنۡ تَسۡخَرُوۡا مِنَّا فَاِنَّا نَسۡخَرُ مِنۡكُمۡ كَمَا
تَسۡخَرُوۡنَ ؕ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ يَّاۡتِيۡهِ عَذَابٌ
يُّخۡزِيۡهِ وَيَحِلُّ عَلَيۡهِ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ۝ حَتّٰٓى اِذَا

तुम क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते।

34. अब जबकि अल्लाह ही ने तुम्हें विनष्ट करने का निश्चय कर लिया हो, तो यदि मैं तुम्हारा भला भी चाहूँ, तो मेरा भला चाहना तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता। वही तुम्हारा रब है और उसी की ओर तुम्हें पलटना भी है।"

35. (क्या उन्हें कोई खटक है) या वे कहते हैं कि : "उसने स्वयं इसे घड़ लिया है?" कह दो : "यदि मैंने इसे घड़ लिया है तो मेरे अपराध का दायित्व मुझपर ही है। और जो अपराध तुम कर रहे हो मैं उसके दायित्व से मुक्त हूँ।"

36. नूह की ओर प्रकाशना की गई कि "जो लोग ईमान ला चुके हैं, उनके सिवा अब तुम्हारी क़ौम में कोई ईमान लानेवाला नहीं। अत: जो कुछ वे कर रहे हैं उसपर तुम दुखी न हो।

37. तुम हमारे समक्ष और हमारी प्रकाशना के अनुसार नाव बनाओ और अत्याचारियों के विषय में मुझसे बात न करो। निश्चय ही वे डूबकर रहेंगे।"

38. वह नाव बनाने लगता है। उसकी क़ौम के सरदार जब भी उसके पास से गुज़रते तो उसका उपहास करते। उसने कहा : "यदि तुम हमारा उपहास करते हो तो हम भी तुम्हारा उपहास करेंगे, जैसे तुम हमारा उपहास करते हो।

39. अब शीघ्र ही तुम जान लोगे कि कौन है जिसपर ऐसी यातना आती है, जो उसे अपमानित कर देगी और जिसपर ऐसी स्थाई यातना टूट पड़ती है।

40. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया और तंदूर उबल पड़ा तो हमने

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ
كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ
الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ۗ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝
وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ۗ
اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ
كَالْجِبَالِ ۣ وَنَادٰى نُوْحُ ۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ
يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ۗ قَالَ
لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ
بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۝ وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ
ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ
الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ

कहा : "हर जाति में से दो-दो के जोड़े उसमें चढ़ा लो और अपने घरवालों को भी—सिवाय ऐसे व्यक्ति के जिसके बारे में बात तय पा चुकी है— और जो ईमान लाया हो उसे भी।" किन्तु उसके साथ जो ईमान लाए थे वे थोड़े ही थे।

41. उसने कहा : "उसमें सवार हो जाओ। अल्लाह के नाम से इसका चलना भी है और इसका ठहरना भी। निस्संदेह मेरा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

42. और वह (नाव) उन्हें लिए हुए पहाड़ों जैसी ऊँची लहर के बीच चल रही थी। नूह ने अपने बेटे को, जो उससे अलग था, पुकारा : "ऐ मेरे बेटे ! हमारे साथ सवार हो जा। तू इनकार करनेवालों के साथ न रह।"

43. उसने कहा : "मैं किसी पहाड़ से जा लगूँगा, जो मुझे पानी से बचा लेगा।" कहा : "आज अल्लाह के आदेश (फ़ैसले) से कोई बचानेवाला नहीं है सिवाय उसके जिसपर वह दया करे।" इतने में दोनों के बीच लहर आ पड़ी और डूबनेवालों के साथ वह भी डूब गया।

44. और कहा गया : "ऐ धरती ! अपना पानी निगल जा और ऐ आकाश ! तू थम जा।" अतएव पानी तह में बैठ गया और फ़ैसला चुका दिया गया और वह (नाव) जूदी पर्वत पर टिक गई और कह दिया गया : "फिटकार हो अत्याचारी लोगों पर !"

45. नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा : "मेरे रब ! मेरा बेटा मेरे घरवालों

مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ
الْحٰكِمِينَ ۝ قَالَ يٰنُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۚ إِنَّهُ
عَمَلٌ غَيْرُ صٰلِحٍ ۗ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۗ
إِنِّيٓ أَعِظُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجٰهِلِينَ ۝ قَالَ رَبِّ
إِنِّيٓ أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۚ
وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِيٓ أَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِينَ ۝
قِيلَ يٰنُوحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ
عَلٰٓى أُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۚ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ
يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تِلْكَ مِنْ أَنْبَآءِ
الْغَيْبِ نُوحِيهَآ إِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ أَنْتَ
وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۚ فَاصْبِرْ ۚ إِنَّ الْعَاقِبَةَ
لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِلٰى عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا

में से है और निस्संदेह तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बड़ा हाकिम भी है।"

46. कहा : "ऐ नूह ! वह तेरे घरवालों में से नहीं, वह तो सर्वथा एक बिगड़ा काम है। अतः जिसका तुझे ज्ञान नहीं, उसके विषय में मुझसे न पूछ, तेरे नादान हो जाने की आशंका से मैं तुझे नसीहत करता हूँ।"

47. उसने कहा : "मेरे रब ! मैं इससे तेरी पनाह माँगता हूँ कि तुझसे उस चीज़ का सवाल करूँ जिसका मुझे कोई ज्ञान न हो। अब यदि तूने मुझे क्षमा न किया और मुझपर दया न की, तो मैं घाटे में पड़कर रहूँगा।"

48. कहा गया : "ऐ नूह ! हमारी ओर से सलामती और उन बरकतों के साथ उतर, जो तुझपर और उन गिरोहों पर होंगी, जो तेरे साथवालों में से होंगे। कुछ गिरोह ऐसे भी होंगे जिन्हें हम थोड़े दिनों का सुखोपभोग कराएँगे। फिर उन्हें हमारी ओर से दुखद यातना आ पहुँचेगी।"

49. ये परोक्ष की ख़बरें हैं जिनकी हम तुम्हारी ओर प्रकाशना कर रहे हैं। इससे पहले तो न तुम्हें इनकी ख़बर थी और न तुम्हारी क़ौम को। अतः धैर्य से काम लो। निस्संदेह अंतिम परिणाम डर रखनेवालों के पक्ष में है।

50. और 'आद' की ओर उनके भाई 'हूद' को भेजा। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य

مُفْتَرُونَ ۝ يَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَيَا قَوْمِ
اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ
مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِينَ ۝ قَالُوا يَا هُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ
بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝
إِنْ نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۗ
قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِمَّا
تُشْرِكُونَ ۝ مِنْ دُونِهِ ۖ فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا
تُنْظِرُونِ ۝ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۚ
مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي
عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ
مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ

प्रभु नहीं। तुमने तो बस झूठ घड़ रखा है।

51. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं इसपर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता। मेरा पारिश्रमिक तो बस उसके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

52. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अपने रब से क्षमा याचना करो, फिर उसकी ओर पलट आओ। वह तुमपर आकाश को ख़ूब बरसता छोड़ेगा और तुममें शक्ति पर शक्ति की अभिवृद्धि करेगा। तुम अपराधी बनकर मुँह न फेरो।"

53. उन्होंने कहा : "ऐ हूद! तू हमारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आया है। तेरे कहने से हम अपने इष्ट-पूज्यों को नहीं छोड़ सकते और न हम तुझपर ईमान लानेवाले हैं।

54-55. हम तो केवल यही कहते हैं कि हमारे इष्ट-पूज्यों में से किसी की तुझपर मार पड़ गई है।" उसने कहा : "मैं तो अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि उनसे मेरा कोई संबंध नहीं, जिनको तुम साझी ठहराकर उसके सिवा पूज्य मानते हो। अतः तुम सब मिलकर मेरे साथ दाँव-घात लगाकर देखो और मुझे मुहलत न दो।

56. मेरा भरोसा तो अल्लाह, अपने रब और तुम्हारे रब, पर है। चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है, उसकी चोटी तो उसी के हाथ में है। निस्संदेह मेरा रब सीधे मार्ग पर है।

57. किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो जो कुछ देकर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था, वह तो मैं तुम्हें पहुँचा ही चुका। मेरा रब तुम्हारे स्थान पर दूसरी

وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝
وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝
وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ
وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ
الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا
رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ۝ وَإِلَىٰ ثَمُودَ
أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم
مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَ
اسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ
إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ۝ قَالُوا يَا صَالِحُ قَدْ كُنتَ
فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَا ۖ أَتَنْهَانَا أَن نَّعْبُدَ
مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا

किसी क़ौम को लाएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। निस्संदेह मेरा रब हर चीज़ की देख-भाल कर रहा है।"

58. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने हूद और उसके साथ के ईमान लानेवालों को अपनी दयालुता से बचा लिया। और एक कठोर यातना से हमने उन्हें छुटकारा दिया।

59. ये आद हैं, जिन्होंने अपने रब की आयतों का इनकार किया; उसके रसूलों की अवज्ञा की और हर सरकश विरोधी के पीछे चलते रहे।

60. इस संसार में भी लानत ने उनका पीछा किया और क़ियामत के दिन भी : "सुन लो! निस्संदेह आद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया। सुनो! विनष्ट हो आद, हूद की क़ौम।"

61. समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई अन्य पूज्य-प्रभु नहीं। उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया और उसमें तुम्हें बसाया। अतः उससे क्षमा माँगो; फिर उसकी ओर पलट आओ। निस्संदेह मेरा रब निकट है, प्रार्थनाओं को स्वीकार करनेवाला भी।"

62. उन्होंने कहा : "ऐ सालेह! इससे पहले तू हमारे बीच ऐसा व्यक्ति था जिससे बड़ी आशाएँ थीं। क्या तू हमें उनको पूजने से रोकता है जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते रहे हैं? जिसकी ओर तू हमें बुला रहा है उसके विषय

إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِن كُنتُ
عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَءَاتٰنِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَن
يَنصُرُنِي مِنَ اللّٰهِ إِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُونَنِي
غَيْرَ تَخْسِيرٍ ۝ وَيٰقَوْمِ هٰذِهِ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ
ءَايَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوهَا
بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۝ فَعَقَرُوهَا
فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ أَيَّامٍ ذٰلِكَ
وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا
صٰلِحًا وَالَّذِينَ ءَامَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ
خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝
وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي
دِيَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝ كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا أَلَآ إِنَّ
ثَمُودَا كَفَرُوا رَبَّهُمْ أَلَا بُعْدًا لِّثَمُودَ ۝

में तो हमें संदेह है जो हमें दुविधा में डाले हुए है।"

63. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुमने सोचा? यदि मैं अपने रब के एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से दयालुता प्रदान की है, तो यदि मैं उसकी अवज्ञा करूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी सहायता करेगा? तुम तो और अधिक घाटे में डाल देने के अतिरिक्त मेरे हक़ में और कोई अभिवृद्धि नहीं करोगे।

64. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में खाए और इसे तकलीफ़ देने के लिए हाथ न लगाना अन्यथा समीपस्थ यातना तुम्हें आ लेगी।"

65. किन्तु उन्होंने उसकी कूचें काट डालीं। इसपर उसने कहा : "अपने घरों में तीन दिन और मज़े ले लो। यह ऐसा वादा है, जो झूठा सिद्ध न होगा।"

66. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, तो हमने अपनी दयालुता से सालेह को और उसके साथ के ईमान लानेवालों को बचा लिया, और उस दिन के अपमान से उन्हें सुरक्षित रखा। वास्तव में, तुम्हारा रब बड़ा शक्तिवान, प्रभुत्वशाली है।

67. और अत्याचार करनेवालों को एक भयंकर चिंघार ने आ लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए,

68. मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। "सुनो! समूद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया। सुन लो! फिटकार हो समूद पर!"

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا
سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ۝
فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى
قَوْمِ لُوْطٍ ۝ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا
بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝ قَالَتْ
يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ
اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ۝ قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ
اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ
اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ
الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ
لُوْطٍ ۝ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ۝
يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ

69. और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इबराहीम के पास शुभ सूचना लेकर पहुँचे। उन्होंने कहा : "सलाम हो!" उसने भी कहा : "सलाम हो।" फिर उसने कुछ विलंब न किया, एक भुना हुआ बछड़ा ले आया।

70. किन्तु जब देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ रहे हैं तो उसने उन्हें अजनबी समझा और दिल में उनसे डरा। वे बोले : "डरो नहीं, हम तो लूत की क़ौम की ओर भेजे गए हैं।"

71. उसकी स्त्री भी खड़ी थी। वह इसपर हँस पड़ी। फिर हमने उसको इसहाक़ और इसहाक़ के बाद याक़ूब की शुभ सूचना दी।

72. वह बोली : "हाय मेरा हतभाग्य! क्या मैं बच्चे को जन्म दूँगी, जबकि मैं वृद्धा हूँ और ये मेरे पति हैं बूढ़े? यह तो बड़ी ही अद्‌भुत बात है!"

73. वे बोले : "क्या अल्लाह के आदेश पर तुम आश्चर्य करती हो? घरवालो! तुम लोगों पर तो अल्लाह की दयालुता और उसकी बरकतें हैं। वह निश्चय ही प्रशंसनीय, गौरववाला है।"

74. फिर जब इबराहीम की घबराहट दूर हो गई और उसे शुभ सूचना भी मिली तो वह लूत की क़ौम के विषय में हम से झगड़ने लगा।

75. निस्संदेह इबराहीम बड़ा ही सहनशील, कोमल हृदय, हमारी ओर रुजू (प्रवृत्त) होनेवाला था।

76. "ऐ इबराहीम! इसे छोड़ दो। तुम्हारे रब का आदेश आ चुका है और

رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝
وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ
بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ۝ وَجَآءَهٗ
قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۗ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
السَّيِّاٰتِ ۗ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ
لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۗ اَلَيْسَ
مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا
فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝
قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ
شَدِيْدٍ ۝ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ
يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ۗ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا
مَآ اَصَابَهُمْ ۗ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۗ اَلَيْسَ الصُّبْحُ

निश्चय ही उनपर न टलनेवाली यातना आनेवाली है।"

77. और जब हमारे दूत लूत के पास पहुँचे तो वह उनके कारण अप्रसन्न हुआ और उनके मामले में दिल तंग पाया। कहने लगा : "यह तो बड़ा ही कठिन दिन है।"

78. उसकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आ पहुँचे। वे पहले से ही दुष्कर्म किया करते थे। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! ये मेरी (क़ौम की) बेटियाँ (विधित: विवाह के लिए) मौजूद हैं। ये तुम्हारे लिए अधिक पवित्र हैं। अत: अल्लाह का डर रखो और मेरे अतिथियों के विषय में मुझे अपमानित न करो। क्या तुममें एक भी अच्छी समझ का आदमी नही ?"

79. उन्होंने कहा : "तुझे तो मालूम है कि तेरी बेटियों से हमें कोई मतलब नहीं। और हम जो चाहते हैं, उसे तू भली-भाँति जानता है।"

80. उसने कहा : "क्या ही अच्छा होता मुझमें तुमसे मुक़ाबले की शक्ति होती या मैं किसी सुदृढ़ आश्रय की शरण ही ले सकता।"

81. उन्होंने कहा : "ऐ लूत ! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं। वे तुम तक कदापि नही पहुँच सकते। अत: तुम रात के किसी हिस्से में अपने घरवालों को लेकर निकल जाओ और तुममें से कोई पीछे पलटकर न देखे। हाँ, तुम्हारी स्त्री का मामला और है। उसपर भी वही कुछ बीतनेवाला है, जो उनपर बीतेगा।

بِقَرِيبٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ۝
مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۚ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّٰلِمِينَ
بِبَعِيدٍ ۝ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ
يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا
تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۝ وَيَٰقَوْمِ أَوْفُوا
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝
بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۚ
وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ۝ قَالُوا يَٰشُعَيْبُ أَصَلَوٰتُكَ
تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ
فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۖ إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ۝

निर्धारित समय उनके लिए प्रातःकाल का है। तो क्या प्रातःकाल निकट नहीं ?"

82. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने उसको तलपट कर दिया और उसपर ककरीले पत्थर ताबड़-तोड़ बरसाए,

83. जो तुम्हारे रब के यहाँ चिह्नित थे। और वे अत्याचारियों से कुछ दूर भी नहीं।

84. मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। और नाप और तौल में कमी न करो। मैं तो तुम्हें अच्छी दशा में देख रहा हूँ, किन्तु मुझे तुम्हारे विषय में एक घेर लेनेवाले दिन की यातना का भय है।

85. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! इनसाफ़ के साथ नाप और तौल को पूरा रखो। और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो और धरती में बिगाड़ पैदा करनेवाले बनकर अपने मुँह को कलुषित न करो।

86. यदि तुम मोमिन हो तो जो अल्लाह के पास शेष रहता है वही तुम्हारे लिए उत्तम है। मैं तुम्हारे ऊपर कोई नियुक्त रखवाला नहीं हूँ।"

87. वे बोले : "ऐ शुऐब ! क्या तेरी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि उन्हें हम छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं या यह कि हम अपने माल का उपभोग अपनी इच्छानुसार न करें ? बस एक तू ही तो बड़ा सहनशील, समझदार रह गया है !"

88. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम्हारा क्या विचार है? यदि मैं अपने रब के एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से अच्छी आजीविका भी प्रदान की (तो झुठलाना मेरे लिए कितना हानिकारक होगा !)। और मैं नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ स्वयं तुम्हारे विपरीत उनको करने लगूँ। मैं तो अपने बस भर केवल सुधार चाहता हूँ। मेरा काम बनना तो अल्लाह ही की सहायता से संभव है। उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मैं रुजू करता हूँ।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ
اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا
اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْۤ اَنْ
يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَاۤ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ
قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوْا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝ قَالُوْا
يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ
فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ؗ وَمَاۤ اَنْتَ
عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْۤ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ

89. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मेरे प्रति तुम्हारा विरोध कहीं तुम्हें उस अपराध पर न उभारे कि तुमपर भी वही कुछ बीते जो नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर बीत चुका है, और लूत की क़ौम तो तुमसे कुछ दूर भी नहीं।

90. अपने रब से क्षमा माँगो और फिर उसकी ओर पलट आओ। मेरा रब तो बड़ा दयावन्त, बहुत प्रेम करनेवाला है।"

91. उन्होंने कहा : "ऐ शुऐब ! तेरी बहुत-सी बातों को समझने में तो हम असमर्थ हैं। और हम तो तुझे देखते हैं कि तू हमारे मध्य अत्यंत निर्बल है। यदि तेरे भाई-बन्धु न होते तो हम पत्थर मार-मारकर कभी का तुझे समाप्त कर चुके होते। तू इतने बल-बूतेवाला तो है नहीं कि हमपर भारी हो।"

92. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! क्या मेरे भाई-बन्धु तुमपर अल्लाह से भी ज़्यादा भारी हैं कि तुमने उसे अपने पीछे डाल दिया ? तुम जो कुछ भी करते हो निश्चय ही मेरे रब ने उसे अपने घेरे में ले रखा है।

93. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम अपनी जगह कर्म करते रहो, मैं भी कर

إِنِّي عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ
يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ
رَقِيبٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ
آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا
الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝ كَأَن لَّمْ
يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ۝
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا
أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۝ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ۝ وَأُتْبِعُوا
فِي هَٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ بِئْسَ الرِّفْدُ
الْمَرْفُودُ ۝ ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ
مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ۝ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن

रहा हूँ। शीघ्र ही तुमको ज्ञात हो जाएगा कि किसपर वह यातना आती है, जो उसे अपमानित करके रहेगी, और कौन है जो झूठा है! प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

94. अन्ततः जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने अपनी दयालुता से शुऐब और उसके साथ के ईमान लानेवालों को बचा लिया। और अत्याचार करनेवालों को एक प्रचण्ड चिंघार ने आ लिया और वे अपने घरों में अचेत औंधे पड़े रह गए,

95. मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। "सुन लो! फिटकार है मदयनवालों पर, जैसे समूद पर फिटकार हुई!"

96-97. और हमने मूसा को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, किन्तु वे फ़िरऔन ही के कहने पर चले, हालाँकि फ़िरऔन की बात कोई ठीक बात न थी।——

98. क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के लोगों के आगे होगा—और उसने उन्हें आग में जा उतारा, और बहुत ही बुरा घाट है वह उतरने का!

99. यहाँ भी लानत ने उनका पीछा किया और क़ियामत के दिन भी—— बहुत ही बुरा पुरस्कार है यह जो किसी को दिया जाए!

100. ये बस्तियों के कुछ वृत्तान्त हैं, जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इनमें कुछ तो खड़ी हैं और कुछ की फ़सल कट चुकी है।

101. हमने उनपर अत्याचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने स्वयं अपने आप पर

ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ
يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ
رَبِّكَ ۚ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۞ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ
رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ اِنَّ اَخْذَهٗٓ
اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۞ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ
عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۚ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَ
ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۞ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ
مَّعْدُوْدٍ ۞ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ
فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ۞ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي
النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا
دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ اِنَّ
رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۞ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا
فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

अत्याचार किया। फिर जब तेरे रब का आदेश आ गया तो उनके वे पूज्य, जिन्हें वे अल्लाह से हटकर पुकारा करते थे, उनके कुछ भी काम न आ सके। उन्होंने विनाश के अतिरिक्त उनके लिए किसी और चीज़ में अभिवृद्धि नहीं की।

102. तेरे रब की पकड़ ऐसी ही होती है, जब वह किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है। निस्संदेह उसकी पकड़ बड़ी दुखद, अत्यन्त कठोर होती है।

103. निश्चय ही इसमें उस व्यक्ति के लिए एक निशानी है जो आख़िरत की यातना से डरता हो। वह एक ऐसा दिन होगा, जिसमें सारे ही लोग एकत्र किए जाएँगे और वह एक ऐसा दिन होगा, जिसमें सब कुछ आँखों के सामने होगा,

104. हम उसे केवल थोड़ी अवधि के लिए ही टाल रहे हैं;

105. जिस दिन वह आएगा, तो उसकी अनुमति के बिना कोई व्यक्ति बात तक न कर सकेगा। फिर (मानवों में) कोई तो उनमें अभागा होगा और कोई भाग्यशाली।

106. तो जो अभागे होंगे, वे आग में होंगे; जहाँ उन्हें आर्तनाद करना और फुँकार मारना है।

107. वहाँ वे सदैव रहेंगे, जब तक आकाश और धरती स्थिर रहें, बात यह है कि तुम्हारे रब की इच्छा ही चलेगी। तुम्हारा रब जो चाहे करे।

108. रहे वे जो भाग्यशाली होंगे तो वे जन्नत में होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝
فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ
اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ
نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى
الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِىْ شَكٍّ
مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ
اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ فَاسْتَقِمْ
كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَىِ
النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ

जब तक आकाश और धरती स्थिर रहें। बात यह है कि तुम्हारे रब की इच्छा ही चलेगी। यह एक ऐसा उपहार है, जिसका सिलसिला कभी न टूटेगा।

109. अत: जिनको ये पूज रहे हैं, उनके विषय में तुझे कोई संदेह न हो। ये तो बस उसी तरह पूजा किए जा रहे हैं, जिस तरह इससे पहले इनके बाप-दादा पूजा करते रहे हैं। हम तो इन्हें इनका हिस्सा बिना किसी कमी के पूरा-पूरा देनेवाले हैं।

110. हम मूसा को भी किताब दे चुके हैं। फिर उसमें भी विभेद किया गया था। यदि तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले ही निश्चित न कर दी गई होती तो उनके बीच कभी का फ़ैसला कर दिया गया होता। ये उसकी ओर से असमंजस में डाल देनेवाले संदेह में पड़े हुए हैं।

111. निश्चय ही समय आने पर एक-एक को, जितने भी हैं उनको तुम्हारा रब उनका किया पूरा-पूरा देकर रहेगा। वे जो कुछ कर रहे हैं, निस्संदेह उसे उसकी पूरी ख़बर है।

112. अत: जैसा तुम्हें आदेश हुआ है, जमे रहो और तुम्हारे साथ के तौबा करनेवाले भी जमे रहें, और सीमोल्लंघन न करना। जो कुछ भी तुम करते हो, निश्चय ही वह उसे देख रहा है।

113. उन लोगों की ओर तनिक भी न झुकना, जिन्होंने अत्याचार की नीति अपनाई है, अन्यथा आग तुम्हें आ लिपटेगी——और अल्लाह से हटकर तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र नहीं——फिर तुम्हें कोई सहायता भी न मिलेगी।

114. और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ

السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۚ وَاصْبِرْ
فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَلَوْلَا
كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ
يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ
اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ
وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ
الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ
رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ
مُخْتَلِفِيْنَ ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ
وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ
اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ
هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقُلْ

हिस्से में। निस्संदेह नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं। यह याद रखनेवालों के लिए एक अनुस्मरण है।

115. और धैर्य से काम लो, इसलिए कि अल्लाह सुकर्मियों का बदला अकारथ नहीं करता;

116. फिर तुमसे पहले जो नस्लें गुज़र चुकी हैं उनमें ऐसे भले-समझदार क्यों न हुए जो धरती में बिगाड़ से रोकते, उन थोड़े-से लोगों के सिवा जिनको उनमें से हमने बचा लिया। अत्याचारी लोग तो उसी सुख-सामग्री के पीछे पड़े रहे, जिसमें वे रखे गए थे। वे तो थे ही अपराधी।

117. तुम्हारा रब तो ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अकारण विनष्ट कर दे, जबकि वहाँ के निवासी बनाव और सुधार में लगे हों।

118. और यदि तुम्हारा रब चाहता तो वह सारे मनुष्यों को एक समुदाय बना देता, किन्तु अब तो वे सदैव विभेद करते ही रहेंगे,

119. सिवाय उनके जिनपर तुम्हारा रब दया करे और इसी के लिए उसने उन्हें पैदा किया है, और तुम्हारे रब की यह बात पूरी होकर रही कि "मैं जहन्नम को अपराधी जिन्नों और मनुष्यों सबसे भरकर रहूँगा।"

120. रसूलों के वृत्तान्तों में से हर वह कथा जो हम तुम्हें सुनाते हैं उसके द्वारा हम तुम्हारे हृदय को सुदृढ़ करते हैं। और इसमें तुम्हारे पास सत्य आ गया है और मोमिनों के लिए उपदेश और अनुस्मरण भी।

121. जो लोग ईमान नहीं ला रहे हैं उनसे कह दो : "तुम अपनी जगह कर्म


لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا
عَامِلُونَ وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ وَلِلَّهِ غَيْبُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ
وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

سُورَةُ يُوسُفَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الر تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ إِنَّا أَنزَلْنَاهُ
قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ نَحْنُ نَقُصُّ
عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَٰذَا
الْقُرْآنَ وَإِن كُنتَ مِن قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ
إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ
كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ
قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ

किए जाओ, हम भी कर्म कर रहे हैं।

122. तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

123. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में छिपा है, और हर मामला उसी की ओर पलटता है। अत: उसी की बन्दगी करो और उसी पर भरोसा रखो। जो कुछ तुम करते हो, उससे तुम्हारा रब बेख़बर नहीं है।

12. यूसुफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 111)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० रा०। ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं।

2. हमने इसे अरबी क़ुरआन के रूप में उतारा है, ताकि तुम समझो।

3. इस क़ुरआन की तुम्हारी ओर प्रकाशना करके इसके द्वारा हम तुम्हें एक बहुत ही अच्छा बयान सुनाते हैं, यद्यपि इससे पहले तुम बेख़बर थे।

4. जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा : "ऐ मेरे बाप! मैंने स्वप्न में ग्यारह सितारे देखे और सूर्य और चाँद। मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सजदा कर रहे हैं।"

5. उसने कहा : "ऐ मेरे बेटे! अपना स्वप्न अपने भाइयों को मत बताना,

فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ۝ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ
مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ
وَعَلٰٓي اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓي اَبَوَيْكَ مِنْ
قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝
لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝
اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَ
نَحْنُ عُصْبَةٌ ۭ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۚ ۝ اقْتُلُوْا
يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ
وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ قَاۗىِٕلٌ
مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ
يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝
قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰي يُوْسُفَ وَاِنَّا

अन्यथा वे तेरे विरुद्ध कोई चाल चलेंगे। शैतान तो मनुष्य का खुला हुआ शत्रु है।

6. और ऐसा ही होगा, तेरा रब तुझे चुन लेगा और तुझे बातों की तथ्य तक पहुँचना सिखाएगा और अपना अनुग्रह तुझपर और याक़ूब के घरवालों पर उसी प्रकार पूरा करेगा, जिस प्रकार इससे पहले वह तेरे पूर्वज इबराहीम और इसहाक़ पर पूरा कर चुका है। निस्संदेह तेरा रब सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।"

7. निश्चय ही यूसुफ़ और उसके भाइयों में सवाल करनेवालों के लिए निशानियाँ हैं।

8. जबकि उन्होंने कहा : "यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे अधिक प्रिय हैं, हालाँकि हम एक पूरा जत्था हैं। वास्तव में हमारे बाप स्पष्टतः बहक गए हैं।

9. यूसुफ़ को मार डालो या उसे किसी भूभाग में फेंक आओ, ताकि तुम्हारे बाप का ध्यान केवल तुम्हारी ही ओर हो जाए। इसके पश्चात् तुम फिर नेक बन जाना।"

10. उनमें से एक बोलनेवाला बोल पड़ा : "यूसुफ़ की हत्या न करो, यदि तुम्हें कुछ करना ही है तो उसे किसी कुएँ की तह में डाल दो। कोई राहगीर उसे उठा लेगा।"

11. उन्होंने कहा : "ऐ हमारे बाप ! आपको क्या हो गया है कि यूसुफ़ के मामले

لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَ
اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا
بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ
غٰفِلُوْنَ ۝ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ
اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ
فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ
هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً
يَّبْكُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا
يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ
لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ۝ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ
كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ
جَمِيْلٌ ۭ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ۝ وَجَآءَتْ
سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى

में आप हमपर भरोसा नहीं करते, हालाँकि, हम तो उसके हितैषी हैं?

12. हमारे साथ कल उसे भेज दीजिए कि वह कुछ चर-चुग और खेल ले। उसकी रक्षा के लिए तो हम हैं ही।"

13. उसने कहा : "यह बात कि तुम उसे ले जाओ, मुझे दुखी कर देती है। कहीं ऐसा न हो कि तुम उसका ध्यान न रख सको और भेड़िया उसे खा जाए।"

14. वे बोले : "हमारे एक जत्थे के होते हुए भी यदि उसे भेड़िए ने खा लिया, तब तो निश्चय ही हम सब कुछ गँवा बैठे।"

15. फिर जब वे उसे ले गए और सभी इस बात पर सहमत हो गए कि उसे एक कुएँ की गहराई में डाल दें (तो उन्होंने वह किया जो करना चाहते थे), और हमने उसकी ओर प्रकाशना की : "तू उन्हें उनके इस कर्म से अवगत कराएगा और वे जानते न होंगे।"

16. कुछ रात बीते वे रोते हुए अपने बाप के पास आए।

17. कहने लगे : "ऐ हमारे बाप! हम परस्पर दौड़ में मुक़ाबला करते हुए दूर चले गए और यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया था कि इतने में भेड़िया उसे खा गया। आप तो हमपर विश्वास करेंगे नहीं, यद्यपि हम सच्चे हैं।"

18. वे उसके कुर्ते पर झूठमूठ का ख़ून लगा लाए थे। उसने कहा : "नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ने बहकाकर तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब धैर्य से काम लेना ही उत्तम है! जो बात तुम बता रहे हो उसमें अल्लाह ही सहायक हो सकता है।"

19. एक क़ाफ़िला आया। फिर अपने पनिहारा को भेजा। उसने अपना डोल ज्यों ही डाला तो पुकार उठा : "अरे! कितनी ख़ुशी की बात है। यह तो

هٰذَا غُلٰمٌ ۚ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ
مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ
لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ
نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۚ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۡ
وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى
اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ
اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ
الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ
رَبِّىْٓ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ۚ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ۚ
كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ۚ اِنَّهٗ مِنْ

एक लड़का है।" उन्होंने उसे व्यापार का माल समझकर छुपा लिया। किन्तु जो कुछ वे कर रहे थे, अल्लाह तो उसे जानता ही था।

20. उन्होंने उसे सस्ते दाम, गिनती के कुछ दिरहमों में बेच दिया, क्योंकि वे उसके मामले में बेपरवाह थे।

21. मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा, उसने अपनी स्त्री से कहा : "इसको अच्छी तरह रखना। बहुत संभव है कि यह हमारे काम आए या हम इसे बेटा बना लें।" इस प्रकार हमने उस भूभाग में यूसुफ़ के क़दम जमाने की राह निकाली (ताकि उसे प्रतिष्ठा प्रदान करें) और ताकि मामलों और बातों के परिणाम से हम उसे अवगत कराएँ। अल्लाह तो अपना काम करके रहता है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

22. और जब वह अपनी पूरी जवानी को पहुँचा तो हमने उसे निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया। उत्तमकार लोगों को हम इसी प्रकार बदला देते हैं।

23. जिस स्त्री के घर में वह रहता था, वह उसपर डोरे डालने लगी। उसने दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी : "लो, आ जाओ!" उसने कहा : "अल्लाह की पनाह! मेरे रब ने मुझे अच्छा स्थान दिया है। अत्याचारी कभी सफल नहीं होते।"

24. उसने उसका इरादा कर लिया था। यदि वह अपने रब का स्पष्ट प्रमाण न देख लेता तो वह भी उसका इरादा कर लेता। ऐसा इसलिए हुआ ताकि हम बुराई और अश्लीलता को उससे दूर रखें। निस्संदेह वह हमारे

عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ۝ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ
مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَاءُ
مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَفْسِي ۚ وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ
وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ
دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ
قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيمٌ ۝ يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِي
لِذَنْبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ۝ وَقَالَ نِسْوَةٌ
فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ ۖ
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ

चुने हुए बन्दों में से था।

25. वे दोनों दरवाज़े की ओर झपटे और उस स्त्री ने उसका कुर्ता पीछे से फाड़ डाला। दरवाज़े पर दोनों ने उस स्त्री के पति को उपस्थित पाया। वह बोली : "जो कोई तुम्हारी घरवाली के साथ बुरा इरादा करे, उसका बदला इसके सिवा और क्या होगा कि उसे बंदी बनाया जाए या फिर कोई दुखद यातना दी जाए ?"

26. उसने कहा : "यही मुझपर डोरे डाल रही थी।" उस स्त्री के लोगों में से एक गवाह ने गवाही दी : "यदि इसका कुर्ता आगे से फटा है तो यह सच्ची है और यह झूठा है,

27. और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो यह झूठी है और यह सच्चा है।"

28. फिर जब देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो उसने कहा : "यह तुम स्त्रियों की चाल है। निश्चय ही तुम्हारी चाल बड़े ग़ज़ब की होती है।

29. यूसुफ़ ! इस मामले को जाने दे और स्त्री तू अपने गुनाह की माफ़ी माँग। निस्संदेह ख़ता तेरी ही है।"

30. नगर में स्त्रियाँ कहने लगीं : "अज़ीज़[1] की पत्नी अपने नव युवक ग़ुलाम पर डोरे डालना चाहती है। वह प्रेम-प्रेरणा से उसके मन में घर कर गया है। हम तो उसे देख रहे हैं कि वह खुली ग़लती में पड़ गई है।"

31. उसने जब उनकी मक्कारी की बातें सुनी तो उन्हें बुला भेजा और उनमें

1. मिस्र के उच्च पदाधिकारी की उपाधि।

لَهُنَّ مُتَّكَـًٔا وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ
قَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ
اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ
اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ
وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ
يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ ۚ
وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ
الْجٰهِلِيْنَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَاَوُا
الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ
فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَ
قَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ

से हरेक के लिए आसन सुसज्जित किया और उनमें से हरेक को एक छुरी दी। उसने (यूसुफ़ से) कहा : "इनके सामने आ जाओ।" फिर जब स्त्रियों ने उसे देखा तो वे उसकी बड़ाई से दंग रह गईं। उन्होंने अपने हाथ घायल कर लिए और कहने लगीं : "अल्लाह की पनाह! यह मनुष्य नहीं। यह तो कोई प्रतिष्ठित फ़रिश्ता है।"

32. वह बोली : "यह वही है जिसके विषय में तुम मुझे मलामत कर रही थीं। हाँ, मैंने इसे रिझाना चाहा था, किन्तु यह बचा रहा। और यदि इसने न किया जो मैं इससे कहती हूँ तो यह अवश्य क़ैद किया जाएगा और अपमानित होगा।"

33. उसने कहा : "मेरे रब! जिसकी ओर ये सब मुझे बुला रही हैं, उससे अधिक तो मुझे क़ैद ही पसन्द है। यदि तूने उनके दाँव-घात को मुझसे न टाला तो मैं उनकी ओर झुक जाऊँगा और निरे आवेग के वशीभूत हो जाऊँगा।"

34. अतः उसके रब ने उसकी सुन ली और उसकी ओर से उन स्त्रियों के दाँव-घात को टाल दिया। निस्संदेह वह सब कुछ सुनता, जानता है।

35. फिर उन्हें, इसके पश्चात कि वे निशानियाँ देख चुके थे, यह सूझा कि उसे एक अवधि के लिए क़ैद कर दें।

36. कारागार में दो नव युवकों ने भी उसके साथ प्रवेश किया। उनमें से एक ने कहा : "मैंने स्वप्न देखा है कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ।" दूसरे ने कहा : "मैंने देखा कि मैं अपने सिर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ, जिनको पक्षी खा रहे हैं। हमें

الطير منه ۚ نبئنا بتأويله ۖ إنا نراك من المحسنين ۝
قال لا يأتيكما طعام ترزقانه إلا نبأتكما بتأويله
قبل أن يأتيكما ۚ ذلكما مما علمني ربي ۚ إني
تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله وهم بالآخرة هم
كافرون ۝ واتبعت ملة آبائي إبراهيم وإسحاق
ويعقوب ۚ ما كان لنا أن نشرك بالله من شيء ۚ
ذلك من فضل الله علينا وعلى الناس ولكن أكثر
الناس لا يشكرون ۝ يا صاحبي السجن أأرباب
متفرقون خير أم الله الواحد القهار ۝ ما تعبدون
من دونه إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم
ما أنزل الله بها من سلطان ۚ إن الحكم إلا لله ۚ أمر ألا
تعبدوا إلا إياه ۚ ذلك الدين القيم ولكن أكثر
الناس لا يعلمون ۝ يا صاحبي السجن أما أحدكما

इसका अर्थ बता दीजिए। हमें तो आप बहुत ही नेक नज़र आते हैं।"

37-38. उसने कहा : "जो भोजन तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास नहीं आ पाएगा, उसके तुम्हारे पास आने से पहले ही मैं तुम्हें इसका अर्थ बता दूँगा। यह उन बातों में से है, जो मेरे रब ने मुझे सिखाई हैं। मैंने तो उन लोगों का तरीक़ा छोड़कर, जो अल्लाह को नहीं मानते और जो आख़िरत (परलोक) का इनकार करते हैं, अपने पूर्वज इबराहीम, इसहाक़ और याक़ूब का तरीक़ा अपनाया है। हमसे यह नहीं हो सकता कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ। यह हमपर और लोगों पर अल्लाह का अनुग्रह है। किन्तु अधिकतर लोग आभार नहीं प्रकट करते।

39. ऐ कारागार के मेरे साथियो! क्या अलग-अलग बहुत-से रब अच्छे हैं या अकेला अल्लाह जिसका प्रभुत्व सबपर है?

40. तुम उसके सिवा जिनकी भी बन्दगी करते हो वे तो बस निरे नाम हैं, जो तुमने रख छोड़े हैं और तुम्हारे बाप-दादा ने। उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। सत्ता और अधिकार तो बस अल्लाह का है। उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो। यही सीधा, सच्चा दीन (धर्म) है, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

41. ऐ कारागार के मेरे दोनों साथियो! तुममें से एक तो अपने स्वामी को

فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا ۖ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ
الطَّيْرُ مِن رَّأْسِهِ ۚ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيَانِ ۝
وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِندَ رَبِّكَ
فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ
سِنِينَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ
سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ
وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِن
كُنتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ۝ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا
نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِي نَجَا
مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُم بِتَأْوِيلِهِ
فَأَرْسِلُونِ ۝ يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي
سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ
سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَّعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ

मद्यपान कराएगा; रहा दूसरा तो उसे सूली पर चढ़ाया जाएगा और पक्षी उसका सिर खाएँगे। फ़ैसला हो चुका उस बात का जिसके विषय में तुम मुझसे पूछ रहे हो।"

42. उन दोनों में से जिसके विषय में उसने समझा था कि वह रिहा हो जाएगा, उससे कहा : "अपने स्वामी से मेरी चर्चा करना।" किन्तु शैतान ने अपने स्वामी से उसकी चर्चा करना भुलवा दिया। अतः वह (यूसुफ़) कई वर्ष तक कारागार ही में रहा।

43. फिर ऐसा हुआ कि सम्राट ने कहा : "मैंने स्वप्न में देखा है कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालें हरी हैं और दूसरी (सात) सूखी। ऐ सरदारो! यदि तुम स्वप्न का अर्थ बताते हो, तो मुझे मेरे इस स्वप्न के संबंध में बताओ।"

44. उन्होंने कहा : "ये तो संभ्रमित स्वप्न हैं। हम ऐसे स्वप्न का अर्थ नहीं जानते।"

45. इतने में उन दोनों में से जो रिहा हो गया था और एक अर्से के बाद उसे याद आया तो वह बोला.: "मैं इसका अर्थ तुम्हें बताता हूँ। ज़रा मुझे (यूसुफ़ के पास) भेज दीजिए।"

46. "यूसुफ़, ऐ सत्यवान! हमें इसका अर्थ बता कि सात मोटी गायें हैं, जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालें हैं और दूसरी (सात)

لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا
فَمَا حَصَدتُّمْ فَذَرُوهُ فِي سُنبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا
تَأْكُلُونَ ۝ ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ
يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ۝
ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَ
فِيهِ يَعْصِرُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا
جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ
النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ
عَلِيمٌ ۝ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدتُّنَّ يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِ ۚ
قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِن سُوءٍ ۚ قَالَتِ امْرَأَتُ
الْعَزِيزِ الْآنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدتُّهُ عَن نَّفْسِهِ
وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ
بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ۝

सूखी, ताकि मैं लोगों के पास लौटकर जाऊँ कि वे जान लें।"

47. उसने कहा : "सात वर्ष तक तुम व्यवहारतः खेती करते रहोगे। फिर तुम जो फ़सल काटो तो थोड़े हिस्से के सिवा जो तुम्हारे खाने के काम आए शेष को उसकी बाली ही में रहने देना।

48. फिर उसके पश्चात सात कठिन वर्ष आएँगे जो वे सब खा जाएँगे जो तुमने उनके लिए पहले से इकट्ठा कर रखा होगा, सिवाय उस थोड़े-से हिस्से के जो तुम सुरक्षित कर लोगे।

49. फिर उसके पश्चात एक वर्ष ऐसा आएगा, जिसमें वर्षा द्वारा लोगों की फ़रियाद सुन ली जाएगी और उसमें वे रस निचोड़ेंगे।"

50. सम्राट ने कहा : "उसे मेरे पास ले आओ।" किन्तु जब दूत उसके पास पहुँचा तो उसने कहा : "अपने स्वामी के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि 'उन स्त्रियों का क्या मामला है, जिन्होंने अपने हाथ घायल कर लिए थे।' निस्संदेह मेरा रब उनकी मक्कारी को भली-भाँति जानता है।"

51. ——उसने कहा : "तुम स्त्रियों का क्या हाल था, जब तुमने यूसुफ़ को रिझाने की चेष्टा की थी?" उन्होंने कहा : "पाक है अल्लाह! हम उसमें कोई बुराई नहीं जानते हैं।" अज़ीज़ की स्त्री बोल उठी : "अब तो सत्य प्रकट हो गया है। मैंने ही उसे रिझाना चाहा था। वह तो बिलकुल सच्चा है।"

52. ——"यह इसलिए कि वह जान ले कि मैंने गुप्त रूप से उसके साथ विश्वासघात नहीं किया है और यह कि अल्लाह विश्वासघातियों की चाल को चलने नहीं देता।

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِىٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ
إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىٓ ۚ إِنَّ رَبِّى غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَقَالَ
ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِى بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِى ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ
قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۝ قَالَ
ٱجْعَلْنِى عَلَىٰ خَزَآئِنِ ٱلْأَرْضِ ۖ إِنِّى حَفِيظٌ عَلِيمٌ ۝
وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِى ٱلْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا
حَيْثُ يَشَآءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ
أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ۝ وَلَأَجْرُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ
ءَامَنُوا۟ وَكَانُوا۟ يَتَّقُونَ ۝ وَجَآءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ
فَدَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُۥ مُنكِرُونَ ۝ وَلَمَّا
جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ٱئْتُونِى بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ
أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّىٓ أُوفِى ٱلْكَيْلَ وَأَنَا۠ خَيْرُ
ٱلْمُنزِلِينَ ۝ فَإِن لَّمْ تَأْتُونِى بِهِۦ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ

منزل ٣

53. मैं यह नहीं कहता कि मैं बरी हूँ—जी तो बुराई पर उभारता ही है—— यदि मेरा रब ही दया करे तो बात और है। निश्चय ही मेरा रब बहुत क्षमाशील, दयावान है।"

54. सम्राट ने कहा : "उसे मेरे पास ले आओ! मैं उसे अपने लिए ख़ास कर लूँगा।" जब उसने उससे बात-चीत की तो उसने कहा "निस्संदेह आज तुम हमारे यहाँ विश्वसनीय अधिकार प्राप्त व्यक्ति हो।"

55. उसने कहा : "इस भू-भाग के ख़ज़ानों पर मुझे नियुक्त कर दीजिए। निश्चय ही मैं रक्षक और ज्ञानवान हूँ।"

56. इस प्रकार हमने यूसुफ़ को उस भू-भाग में अधिकार प्रदान किया कि वह उसमें जहाँ चाहे अपनी जगह बनाए। हम जिसे चाहते हैं उसे अपनी दया का पात्र बनाते हैं। उत्तमकारों का बदला हम अकारथ नहीं जाने देते।

57. और ईमान लानेवालों और डर रखनेवालों के लिए आख़िरत का बदला इससे कहीं उत्तम है।

58. फिर ऐसा हुआ कि यूसुफ़ के भाई आए और उसके सामने उपस्थित हुए। उसने तो उन्हें पहचान लिया, किन्तु वे उससे अपरिचित रहे।

59. जब उसने उनके लिए उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा : "बाप की ओर से जो तुम्हारा एक भाई है, उसे मेरे पास लाना। क्या देखते नहीं कि मैं पूरी माप से देता हूँ और मैं अच्छा आतिथेय भी हूँ?

60. किन्तु यदि तुम उसे मेरे पास न लाए तो फिर तुम्हारे लिए मेरे यहाँ कोई

عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ ۝ قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ
أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ۝ وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا
بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا
إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ فَلَمَّا رَجَعُوا
إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ
مَعَنَا أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ قَالَ هَلْ
آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمِنْتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ ۖ
فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ وَلَمَّا
فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ ۖ
قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي ۖ هَٰذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا ۖ
وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ۖ
ذَٰلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ۝ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ
تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ

माप (ग़ल्ला) नहीं और तुम मेरे पास आना भी मत।"

61. वे बोले : "हम उसके लिए उसके बाप को राज़ी करने की कोशिश करेंगे और हम यह काम अवश्य करेंगे।"

62. उसने अपने सेवकों से कहा : "इनका दिया हुआ माल इनके सामान में रख दो कि जब ये अपने घरवालों की ओर लौटें तो इसे पहचान लें, ताकि ये फिर लौटकर आएँ।"

63. फिर जब वे अपने बाप के पास लौटकर गए तो कहा : "ऐ हमारे बाप! (अनाज की) माप हमसे रोक दी गई है। अतः हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिए, ताकि हम माप भर लाएँ; और हम उसकी रक्षा के लिए तो मौजूद ही हैं।"

64. उसने कहा : "क्या मैं उसके मामले में तुमपर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा इससे पहले उसके भाई के मामले में तुमपर भरोसा कर चुका हूँ? हाँ, अल्लाह ही सबसे अच्छा रक्षक है और वह सबसे बढ़कर दयावान है।"

65. जब उन्होंने अपना सामान खोला, तो उन्होंने अपना माल अपनी ओर वापस किया हुआ पाया। वे बोले : "ऐ हमारे बाप, हमें और क्या चाहिए! यह हमारा माल भी तो हमें लौटा दिया गया है। अब हम अपने घरवालों के लिए खाद्य-सामग्री लाएँगे और अपने भाई की रक्षा भी करेंगे। और एक ऊँट के बोझभर और अधिक लेंगे। इतना माप (ग़ल्ला) मिल जाना तो बिलकुल आसान है।"

66. उसने कहा : "मैं उसे तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेज सकता। जब तक कि तुम अल्लाह को गवाह बनाकर मुझे पक्का वचन न दो कि तुम उसे मेरे

يُحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ
مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝ وَقَالَ يَا بَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا
مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُتَفَرِّقَةٍ ۖ
وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا
لِلَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝
وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ
يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي
نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِمَا عَلَّمْنَاهُ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا
عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ ۖ قَالَ إِنِّي أَنَا
أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي
رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ

पास अवश्य लाओगे, यह और बात है कि तुम घिर जाओ।" फिर जब उन्होंने उसे अपना वचन दे दिया तो उसने कहा : "हम जो कुछ कर रहे हैं वह अल्लाह के हवाले है।"

67. उसने यह भी कहा : "ऐ मेरे बेटो ! एक द्वार से प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना यद्यपि मैं अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता। आदेश तो बस अल्लाह ही का चलता है। उसी पर मैंने भरोसा किया और भरोसा करनेवालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।"

68. और जब उन्होंने प्रवेश किया जिस तरह से उनके बाप ने उन्हें आदेश दिया था—अल्लाह की ओर से होनेवाली किसी चीज़ को वह उनसे हटा नहीं सकता था। बस याक़ूब के जी की एक इच्छा थी, जो उसने पूरी कर ली। और निस्संदेह वह ज्ञानवान था, क्योंकि हमने उसे ज्ञान प्रदान किया था; किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं —

69. और जब उन्होंने यूसुफ़ के यहाँ प्रवेश किया तो उसने अपने भाई को अपने पास जगह दी और कहा : "मैं तेरा भाई हूँ। जो कुछ ये करते रहे हैं, अब तू उसपर दुखी न हो।"

70. फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में पानी पीने का प्याला रख दिया। फिर एक पुकारनेवाले ने पुकारकर कहा : "ऐ

ومآ ابرئ ۱۳ | يوسف ۱۲

لَسٰرِقُوْنَ ۝ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝
قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ
وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا
لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝ قَالُوْا
فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ
مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ
نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ
اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ
كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ
الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ
نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝ قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ
فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ
فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ

منزل ۳

क़ाफ़िलेवालो ! निश्चय ही तुम चोर हो !"

71. वे उनकी ओर रुख़ करते हुए बोले : "तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है ?"

72. उन्होंने कहा : "शाही पैमाना हमें नहीं मिल रहा है। जो व्यक्ति उसे ला दे उसको एक ऊँट का बोझभर ग़ल्ला इनाम मिलेगा। मैं इसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ।"

73. वे कहने लगे : "अल्लाह की क़सम ! तुम लोग जानते ही हो कि हम इस भू-भाग में बिगाड़ पैदा करने नहीं आए हैं और न हम चोर हैं।"

74. उन्होंने कहा : "यदि तुम झूठे सिद्ध हुए तो फिर उसका दण्ड क्या है ?"

75. वे बोले : "उसका दण्ड यह है कि जिसके सामान में वह मिले वही उसका बदला ठहराया जाए। हम अत्याचारियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं।"

76. फिर उसके भाई की ख़ुरजी से पहले उनकी ख़ुरजियाँ देखनी शुरू कीं; फिर उसके भाई की ख़ुरजी से उसे बरामद कर लिया। इस प्रकार हमने यूसुफ़ के लिए उपाय किया। वह शाही क़ानून के अनुसार अपने भाई को प्राप्त नहीं कर सकता था। बल्कि अल्लाह ही की इच्छा लागू है। हम जिसको चाहें उसके दर्जे ऊँचे कर दें। और प्रत्येक ज्ञानवान से ऊपर एक ज्ञानवान मौजूद है।

77. उन्होंने कहा : "यदि यह चोरी करता है तो चोरी तो इससे पहले इसका एक भाई भी कर चुका है।" किन्तु यूसुफ़ ने इसे अपने जी ही में रखा और उनपर प्रकट नहीं किया। उसने कहा : "मक़ाम की दृष्टि से तुम अत्यन्त बुरे

مَكَانًا ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ۝ قَالُوا يَا أَيُّهَا
الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا
مَكَانَهُ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالَ مَعَاذَ
اللَّهِ أَن نَّأْخُذَ إِلَّا مَن وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِندَهُ
إِنَّا إِذًا لَّظَالِمُونَ ۝ فَلَمَّا اسْتَيْأَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا
نَجِيًّا ۖ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ
قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُم مَّوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ وَمِن قَبْلُ
مَا فَرَّطتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ
حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۖ وَهُوَ خَيْرُ
الْحَاكِمِينَ ۝ ارْجِعُوا إِلَىٰ أَبِيكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا
إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝ وَاسْأَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي
كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا

हो। जो कुछ तुम बताते हो, अल्लाह को उसका पूरा ज्ञान है।"

78. उन्होंने कहा : "ऐ अज़ीज़! इसका बाप बहुत ही बूढ़ा है। इसलिए इसके स्थान पर हममें से किसी को रख लीजिए। हमारी दृष्टि में तो आप बड़े ही सुकर्मी हैं।"

79. उसने कहा : "इस बात से अल्लाह पनाह में रखे कि जिसके पास हमने अपना माल पाया है, उसे छोड़कर हम किसी दूसरे को रखें। फिर तो हम अत्याचारी ठहरेंगे।"

80. तो जब वे उससे निराश हो गए तो परामर्श करने के लिए अलग जा बैठे। उनमें जो बड़ा था, वह कहने लगा : "क्या तुम जानते नहीं कि तुम्हारा बाप अल्लाह के नाम पर तुमसे वचन ले चुका है और उसको जो इससे पहले यूसुफ़ के मामले में तुमसे क़सूर हो चुका है? मैं तो इस भू-भाग से कदापि टलने का नहीं जब तक कि मेरे बाप मुझे अनुमति न दें या अल्लाह ही मेरे हक़ में कोई फ़ैसला कर दे। और वही सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।

81. तुम अपने बाप के पास लौटकर जाओ और कहो : 'ऐ हमारे बाप! आपके बेटे ने चोरी की है। हमने तो वही कहा जो हमें मालूम हो सका, परोक्ष तो हमारी दृष्टि में था नहीं।

82. आप उस बस्ती से पूछ लीजिए जहाँ हम थे और उस क़ाफ़िले से भी

لَصٰدِقُوْنَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ
فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ
اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ
يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ
فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ
حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝
قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ
يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْــَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ
لَا يَايْــَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ فَلَمَّا
دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا
الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ
تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝

जिसके साथ होकर हम आए। निस्संदेह हम बिलकुल सच्चे हैं'।"

83. उसने कहा : "नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ही ने तुम्हें पट्टी पढ़ाकर एक बात बना दी है। अब धैर्य से काम लेना ही उत्तम है! बहुत संभव है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए। वह तो सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।"

84. उसने उनकी ओर से मुख फेर लिया और कहने लगा : "हाय अफ़सोस, यूसुफ़ की जुदाई पर!" और ग़म के मारे उसकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं और वह घुटा जा रहा था।

85. उन्होंने कहा : "अल्लाह की क़सम! आप तो यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे, यहाँ तक कि घुलकर रहेंगे या प्राण ही त्याग देंगे।"

86. उसने कहा : "मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ। और अल्लाह की ओर से जो मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते।

87. ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और अल्लाह की सदयता से निराश न हो। अल्लाह की सदयता से तो केवल कुफ़्र करनेवाले ही निराश होते हैं।"

88. फिर जब वे उसके पास उपस्थित हुए तो कहा : "ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घरवालों को बहुत तकलीफ़ पहुँची है और हम कुछ तुच्छ-सी पूँजी लेकर आए हैं, किन्तु आप हमें पूरी-पूरी माप प्रदान करें। और हमें दान दें। निश्चय ही दान करनेवालों को बदला अल्लाह देता है।"

89. उसने कहा : "क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि जब तुम आवेग के वशीभूत थे तो यूसुफ़ और उसके भाई के साथ तुमने क्या किया था ?"

90. वे बोल पड़े : "क्या यूसुफ़ आप ही हैं ?" उसने कहा : "मैं ही यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हमपर उपकार किया है। सच तो यह है कि जो कोई डर रखे और धैर्य से काम ले तो अल्लाह भी उत्तमकारों का बदला अकारथ नहीं करता।"

91. उन्होंने कहा : "अल्लाह की क़सम ! आपको अल्लाह ने हमारे मुक़ाबले में पसन्द किया और निश्चय ही चूक तो हमसे हुई।"

92. उसने कहा : "आज तुमपर कोई आरोप नहीं। अल्लाह तुम्हें क्षमा करे। वह सबसे बढ़कर दयावान है।

93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे बाप के मुख पर डाल दो। उनकी नेत्र-ज्योति लौट आएगी, फिर अपने सब घरवालों को मेरे यहाँ ले आओ।"

94. इधर जब क़ाफ़िला चला तो उनके बाप ने कहा : "यदि तुम मुझे बहकी बातें करनेवाला न समझो तो मुझे तो यूसुफ़ की महक आ रही है।"

95. वे बोले : "अल्लाह की क़सम ! आप तो अभी तक अपनी उसी पुरानी भ्रांति ही में पड़े हुए हैं।"

96. फिर जब शुभ सूचना देनेवाला आया तो उसने उस (कुर्ते) को उसके मुँह पर डाल दिया और तत्क्षण उसकी नेत्र-ज्योति लौट आई। उसने कहा : "क्या मैंने

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ
جٰهِلُونَ ۝ قَالُوٓا أَءِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ ۚ قَالَ أَنَا
يُوسُفُ وَهٰذَآ أَخِي ۫ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۚ إِنَّهُ مَنْ
يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝
قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخٰطِئِينَ ۝
قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۚ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫
وَهُوَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِينَ ۝ اِذْهَبُوا بِقَمِيصِي هٰذَا
فَأَلْقُوهُ عَلٰى وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا ۚ وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ
أَجْمَعِينَ ۝ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ
إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَآ أَنْ تُفَنِّدُونِ ۝
قَالُوا تَاللّٰهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلٰلِكَ الْقَدِيمِ ۝ فَلَمَّآ أَنْ
جَآءَ الْبَشِيرُ أَلْقٰهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۚ
قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ ۚ إِنِّيٓ أَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا

تَعْلَمُونَ ۝ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا
خَاطِئِينَ ۝ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۚ إِنَّهُ هُوَ
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ
إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
آمِنِينَ ۝ وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ
سُجَّدًا ۖ وَقَالَ يَا أَبَتِ هَٰذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِنْ
قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ
أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ
بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ
رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝
رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
أَنْتَ وَلِيِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا

तुमसे कहा नहीं था कि अल्लाह की ओर से जो मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते।"

97. वे बोले : "ऐ हमारे बाप! आप हमारे गुनाहों की क्षमा के लिए प्रार्थना करें। वास्तव में चूक हमसे ही हुई।"

98. उसने कहा : "मैं अपने रब से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा। वह बहुत क्षमाशील, दयावान है।"

99. फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने माँ-बाप को ख़ास अपने पास जगह दी और कहा : "तुम सब नगर में प्रवेश करो। अल्लाह ने चाहा तो यह प्रवेश निश्चिन्तता के साथ होगा।"

100. उसने अपने माँ-बाप को ऊँची जगह सिंहासन पर बिठाया और सब उसके आगे सजदे में गिर पड़े। इस अवसर पर उसने कहा : "ऐ मेरे बाप! यह मेरे विगत स्वप्न का साकार रूप है। इसे मेरे रब ने सच बना दिया। और उसने मुझपर उपकार किया जब मुझे क़ैदखाने से निकाला और आप लोगों को देहात से इसके पश्चात ले आया, जबकि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था। निस्संदेह मेरा रब जो चाहता है उसके लिए सूक्ष्म उपाय करता है। वास्तव में वही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

101. मेरे रब! तूने मुझे राज्य प्रदान किया और मुझे घटनाओं और बातों के निष्कर्ष तक पहुँचना सिखाया। आकाश और धरती के पैदा करनेवाले! दुनिया और आख़िरत में तू ही मेरा संरक्षक मित्र है। तू मुझे इस दशा में उठा

وَّأَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝ ذٰلِكَ مِنْ أَنْبَآءِ الْغَيْبِ
نُوْحِيْهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوْٓا أَمْرَهُمْ
وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝ وَمَآ أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَكَأَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا
مُعْرِضُوْنَ ۝ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ إِلَّا وَهُمْ
مُّشْرِكُوْنَ ۝ أَفَأَمِنُوْٓا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ
عَذَابِ اللّٰهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ أَدْعُوْٓا إِلَى اللّٰهِ ۚ
عَلٰى بَصِيْرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۚ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ
أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا
رِجَالًا نُّوْحِيْٓ إِلَيْهِمْ مِّنْ أَهْلِ الْقُرٰى ۗ أَفَلَمْ يَسِيْرُوْا

कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला।"

102. ये परोक्ष की ख़बरे हैं जिनकी हम तुम्हारी ओर प्रकाशना कर रहे हैं। तुम तो उनके पास नहीं थे, जब उन्होंने अपने मामले को पक्का करके षड्यंत्र किया था।

103. किन्तु चाहे तुम कितना ही चाहो, अधिकतर लोग तो मानेंगे नहीं।

104. तुम उनसे इसका कोई बदला भी नही माँगते। यह तो सारे संसार के लिए बस एक अनुस्मरण है।

105. आकाशों और धरती में कितनी ही निशानियाँ हैं, जिनपर से वे इस तरह गुज़र जाते हैं कि उनकी ओर वे ध्यान ही नहीं देते।

106. इनमें अधिकतर लोग अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि वे साझी भी ठहराते हैं।

107. क्या वे इस बात से निश्चिन्त हैं कि अल्लाह की कोई यातना उन्हें ढँक ले या सहसा वह घड़ी ही उनपर आ जाए, जबकि वे बिलकुल बेख़बर हों?

108. कह दो : "यही मेरा मार्ग है। मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूँ। मैं स्वयं भी पूर्ण प्रकाश में हूँ और मेरे अनुयायी भी—— महिमावान है अल्लाह!——और मैं कदापि बहुदेववादी नहीं।"

109. तुमसे पहले भी हमने जिनको रसूल बनाकर भेजा, वे सब बस्तियों के रहनेवाले पुरुष ही थे। हम उनकी ओर प्रकाशना करते रहे——फिर क्या वे

فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وَ
ظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ
مَنْ نَشَاءُ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝
لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ
مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي
بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَ
رَحْمَةً لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

سُورَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الٓمٓرٰ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ
مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उनका कैसा परिणाम हुआ, जो उनसे पहले गुज़रे हैं? निश्चय ही आख़िरत का घर ही डर रखनेवालों के लिए सर्वोत्तम है। तो क्या तुम समझते नहीं?——

110. यहाँ तक कि जब वे रसूल निराश होने लगे और वे समझने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था कि सहसा उन्हें हमारी सहायता पहुँच गई। फिर हमने जिसे चाहा बचा लिया। किन्तु अपराधी लोगों पर से तो हमारी यातना टलती ही नहीं।

111. निश्चय ही उनकी कथाओं में बुद्धि और समझ रखनेवालों के लिए एक शिक्षाप्रद सामग्री है। यह कोई घड़ी हुई बात नहीं है, बल्कि यह अपने से पूर्व[1] की पुष्टि में है, और हर चीज़ का विस्तार और ईमान लानेवाले लोगों के लिए मार्ग- दर्शन और दयालुता है।

13. अर-रअ्द

(मदीना में उतरी— आयतें 43)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम० रा०। ये किताब की आयतें हैं और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, वह सत्य है, किन्तु अधिकतर लोग मान नहीं रहे हैं।

---

1. अर्थात अपने से पूर्व की आसमानी शिक्षाओं।

الله الذي رفع السموت بغير عمد ترونها ثم
استوى على العرش وسخر الشمس والقمر ط
كل يجري لأجل مسمى يدبر الأمر يفصل
الأيت لعلكم بلقاء ربكم توقنون ۝ وهو الذي
مد الأرض وجعل فيها رواسي وأنهرا ط ومن
كل الثمرت جعل فيها زوجين اثنين يغشى
اليل النهار ط إن في ذلك لأيت لقوم يتفكرون ۝
وفي الأرض قطع متجورت وجنت من أعناب و
زرع ونخيل صنوان وغير صنوان يسقى بماء
واحد قف ونفضل بعضها على بعض في الأكل ط
إن في ذلك لأيت لقوم يعقلون ۝ وإن تعجب
فعجب قولهم ءإذا كنا تربا ءإنا لفي خلق
جديد ۵ أولئك الذين كفروا بربهم ج وأولئك

2. अल्लाह वह है जिसने आकाशों को बिना सहारे के ऊँचा बनाया जैसा कि तुम उन्हें देखते हो। फिर वह सिंहासन पर आसीन हुआ। उसने सूर्य और चन्द्रमा को काम पर लगाया। हरेक एक नियत समय तक के लिए चला जा रहा है। वह सारे काम का विधान कर रहा है; वह निशानियाँ खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम्हें अपने रब से मिलने का विश्वास हो।

3. और वही है जिसने धरती को फैलाया और उसमें जमे हुए पर्वत और नदियाँ बनाईं और हरेक पैदावार की दो-दो क़िस्में बनाईं। वही रात से दिन को छिपा देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं।

4. और धरती में पास-पास भूभाग पाए जाते हैं जो परस्पर मिले हुए हैं, और अंगूरों के बाग़ हैं और खेतियाँ हैं और खजूर के पेड़ हैं, इकहरे भी और दोहरे भी। सबको एक ही पानी सिंचित करता है, फिर भी हम पैदावार और स्वाद में किसी को किसी के मुक़ाबले में बढ़ा देते हैं। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो बुद्धि से काम लेते हैं।

5. अब यदि तुम्हें आश्चर्य ही करना है तो आश्चर्य की बात तो उनका यह कहना है कि : "क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा भी होंगे ?" वही हैं जिन्होंने अपने रब के साथ इनकार की नीति अपनाई और

الْأَغْلٰلُ فِيْٓ أَعْنَاقِهِمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ
قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۗ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَ
إِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ إِنَّمَآ
أَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا
تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۗ
وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسَرَّ
الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَ
سَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ
مِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ أَمْرِ اللّٰهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ

वही हैं, जिनकी गर्दनों में तौक़ पड़े हुए हैं और वही आग (में पड़ने) वाले हैं जिसमें उन्हें सदैव रहना है।

6. वे भलाई से पहले बुराई के लिए तुमसे जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि उनसे पहले कितनी ही शिक्षाप्रद मिसालें गुज़र चुकी हैं। किन्तु तुम्हारा रब लोगों को उनके अत्याचार के बावजूद क्षमा कर देता है और वास्तव में तुम्हारा रब दण्ड देने में भी बहुत कठोर है।

7. जिन्होंने इनकार किया, वे कहते हैं : "उसपर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं अवतरित हुई ?" तुम तो बस एक चेतावनी देनेवाले हो और हर क़ौम के लिए एक मार्गदर्शक हुआ है।

8. किसी भी स्त्री-जाति को जो भी गर्भ रहता है अल्लाह उसे जान रहा होता है और उसे भी जो गर्भाशय में कमी-बेशी होती है। और उसके यहाँ हरेक चीज़ का एक निश्चित अन्दाज़ा है।

9. वह परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञाता है, महान, अत्यन्त उच्च है।

10. तुममें से कोई चुपके से बात करे और जो कोई ज़ोर से और जो कोई रात में छिपता हो और जो दिन में चलता-फिरता दीख पड़ता हो उसके लिए सब बराबर है।

11. उसके रक्षक (पहरेदार) उसके अपने आगे और पीछे लगे होते हैं जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा करते हैं। किसी क़ौम के लोगों को जो कुछ

لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاِذَآ
اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا
وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ
بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ
الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ
فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ۝ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۗ
وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ
بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا
هُوَ بِبَالِغِهٖ ۚ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝
وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ
كَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۩ قُلْ مَنْ رَّبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ قُلِ اللّٰهُ ۗ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ

प्राप्त होता है अल्लाह उसे बदलता नहीं, जब तक कि वे स्वयं अपने आपको न बदल डालें। और जब अल्लाह किसी क़ौम का अनिष्ट चाहता है तो फिर वह उससे टल नहीं सकता, और उससे हटकर उनका कोई समर्थक और संरक्षक भी नहीं।

12. वही है जो भय और आशा के निमित्त तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है और बोझिल बादलों को उठाता है।

13. बादल की गरज उसका गुणगान करती है और उसके भय से काँपते हुए फ़रिश्ते भी। वही कड़कती बिजलियाँ भेजता है, फिर जिसपर चाहता है उन्हें गिरा देता है, जबकि वे अल्लाह के विषय में झगड़ रहे होते हैं। निश्चय ही उसकी चाल बड़ी सख़्त है।

14. उसी के लिए सच्ची पुकार है। उससे हटकर जिनको वे पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का कुछ भी उत्तर नहीं देते। बस यह ऐसा ही होता है जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर इसलिए फैलाए कि वह उसके मुँह में पहुँच जाए, हालाँकि वह उस तक पहुँचनेवाला नहीं। कुफ़्र करनेवालों की पुकार तो बस भटकने ही के लिए होती है।

15. आकाशों और धरती में जो भी हैं स्वेच्छापूर्वक या विवशतापूर्वक अल्लाह ही को सजदा कर रहे हैं और उनकी परछाइयाँ भी प्रात: और संध्या समय।

16. कहो : "आकाशों और धरती का रब कौन है?" कहो : "अल्लाह!" कह दो : "फिर क्या तुमने उससे हटकर दूसरों को अपना संरक्षक बना रखा है,

دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي
الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا
كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ
كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ
زَبَدًا رَّابِيًا وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ
ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ
اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً
وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ كَذَٰلِكَ
يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ
الْحُسْنَىٰ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ

जिन्हें स्वयं अपने भी किसी लाभ का न अधिकार प्राप्त है और न किसी हानि का?" कहो : "क्या अंधा और आँखोंवाला दोनों बराबर होते हैं? या बराबर होते हैं अँधेरे और प्रकाश? या जिनको अल्लाह का सहभागी ठहराया है, उन्होंने भी कुछ पैदा किया है, जैसा कि उसने पैदा किया है जिसके कारण सृष्टि का मामला इनके लिए गड्डमड्ड हो गया है?" कहो : "हर चीज़ का पैदा करनेवाला अल्लाह है और वह अकेला है, सब पर प्रभावी !"

17. उसने आकाश से पानी उतारा तो नदी-नाले अपनी-अपनी समाई के अनुसार बह निकले। फिर पानी के बहाव ने उभरे हुए झाग को उठा लिया और उसमें से भी, जिसे वे ज़ेवर या दूसरे सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, ऐसा ही झाग उठता है। इस प्रकार अल्लाह सत्य और असत्य की मिसाल बयान करता है। फिर जो झाग है वह तो सूखकर नष्ट हो जाता है और जो कुछ लोगों को लाभ पहुँचानेवाला होता है, वह धरती में ठहर जाता है। इसी प्रकार अल्लाह दृष्टांत प्रस्तुत करता है।

18. जिन लोगों ने अपने रब का आमंत्रण स्वीकार कर लिया, उनके लिए अच्छा पुरस्कार है। रहे वे लोग जिन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है, बल्कि उसके साथ उतना और भी हो तो

أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَ
بِئْسَ الْمِهَادُ ۝ أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ
مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا
يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۝ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ
بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ
الْحِسَابِ ۝ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ
أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى
الدَّارِ ۝ جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ
آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ
عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۝ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ ۚ فَنِعْمَ
عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

अपनी मुक्ति के लिए वे सब दे डालें। वही हैं, जिनका बुरा हिसाब होगा। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह अत्यन्त बुरा विश्राम-स्थल है।

19. भला वह व्यक्ति जो जानता है कि जो कुछ तुमपर उतरा है तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, कभी उस जैसा हो सकता है जो अंधा है? परन्तु समझते तो वही हैं जो बुद्धि और समझ रखते हैं,

20. जो अल्लाह के साथ की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और अभिवचन को तोड़ते नहीं,

21. और जो ऐसे हैं कि अल्लाह ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है, उसे जोड़ते हैं और अपने रब से डरते रहते हैं और बुरे हिसाब का उन्हें डर लगा रहता है।

22. और जिन लोगों ने अपने रब की प्रसन्नता की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ क़ायम की और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से खुले और छिपे ख़र्च किया, और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। वही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत के घर का अच्छा परिणाम है,

23. अर्थात सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी संतानों में से जो नेक होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास पहुँचेंगे।

24. (वे कहेंगे) : "तुमपर सलाम है उसके बदले में जो तुमने धैर्य से काम लिया।" अत: क्या ही अच्छा परिणाम है आख़िरत के घर का!

25. रहे वे लोग जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को उसे दृढ़ करने के पश्चात तोड़

مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَ
يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ
سُوءُ الدَّارِ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَ
يَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا
أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ
يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا
وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ
تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ۝ كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي
أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ
الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَٰنِ قُلْ
هُوَ رَبِّي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ

डालते हैं और अल्लाह ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है, उसे काटते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं। वही हैं जिनके लिए फिटकार है और जिनके लिए आख़िरत का बुरा घर है।

26. अल्लाह जिसको चाहता है प्रचुर फैली हुई रोज़ी प्रदान करता है और इसी प्रकार नपी-तुली भी। और वे सांसारिक जीवन में मग्न हैं, हालाँकि सांसारिक जीवन आख़िरत के मुक़ाबले में तो बस अल्प सुख-सामग्री है।

27. जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं : "उसपर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यो नहीं उतरी?" कहो : "अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है। अपनी ओर तो वह मार्गदर्शन उसी का करता है जो रुजू होता है।"

28. ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को अल्लाह के स्मरण से आराम और चैन मिलता है। सुन लो, अल्लाह के स्मरण से ही दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है।

29. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए सुख-सौभाग्य है और लौटने का अच्छा ठिकाना है।

30. अतएव हमने तुम्हें एक ऐसे समुदाय में भेजा है जिससे पहले कितने ही समुदाय गुज़र चुके हैं, ताकि हमने तुम्हारी ओर जो प्रकाशना की है, उसे उनको सुना दो, यद्यपि वे रहमान के साथ इनकार की नीति अपनाए हुए हैं। कह दो : "वही मेरा रब है। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। उसी पर मेरा

مَتَابِ ۝ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ
قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ۗ بَلْ لِّلّٰهِ
الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۗ اَفَلَمْ يَايْــَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ
يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۗ وَلَا يَزَالُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ
قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ
قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۗ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۝ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ۗ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۗ اَمْ
تُنَبِّــُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ
الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا
عَنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝

भरोसा है और उसी की ओर मुझे पलटकर जाना है।"

31. और यदि कोई ऐसा क़ुरआन होता जिसके द्वारा पहाड़ चलने लगते या उससे धरती खण्ड-खण्ड हो जाती या उसके द्वारा मुर्दे बोलने लगते (तब भी वे लोग ईमान न लाते)। नहीं, बल्कि बात यह है कि सारे काम अल्लाह ही के अधिकार में हैं। फिर क्या जो लोग ईमान लाए हैं वे यह जानकर निराश नहीं हुए कि यदि अल्लाह चाहता तो सारे ही मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लगा देता? और इनकार करनेवालों पर तो उनकी करतूतों के बदले में कोई न कोई आपदा निरंतर आती ही रहेगी, या उनके घर के निकट ही कहीं उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पूरा होगा। निस्संदेह अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं जाता।"

32. तुमसे पहले भी कितने ही रसूलों का उपहास किया जा चुका है, किन्तु मैंने इनकार करनेवालों को मुहलत दी। फिर अंततः मैंने उन्हें पकड़ लिया, फिर कैसी रही मेरी सज़ा?

33. भला वह (अल्लाह) जो प्रत्येक व्यक्ति के सिर पर, उसकी कमाई पर निगाह रखते हुए खड़ा है (उसके समान कोई दूसरा हो सकता है)? फिर भी लोगों ने अल्लाह के सहभागी-ठहरा रखे हैं। कहो: "तनिक उनके नाम तो लो! (क्या तुम्हारे पास उनके पक्ष में कोई प्रमाण है?) या ऐसा है कि तुम उसे ऐसी बात की ख़बर दे रहे हो, जिसके अस्तित्व की उसे धरती भर में ख़बर नहीं? या यूँ ही यह एक ऊपरी बात ही बात है?" नहीं, बल्कि इनकार करनेवालों को उनकी मक्कारी ही सुहावनी लगती है और वे मार्ग से रुक गए हैं। जिसे अल्लाह ही गुमराही में छोड़ दे, उसे कोई मार्ग पर लानेवाला नहीं।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ
وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ
وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ اُكُلُهَا
دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى
الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ
بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۗ
قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۗ
اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ
حُكْمًا عَرَبِيًّا ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا
وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا
لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ
يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝

34. उनके लिए सांसारिक जीवन में भी यातना है। रही आख़िरत की यातना, तो वह अत्यन्त कठोर है। और कोई भी तो नहीं जो उन्हें अल्लाह से बचानेवाला हो।

35. डर रखनेवालों के लिए जिस जन्नत का वादा है उसकी शान यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल शाश्वत हैं और इसी प्रकार उसकी छाया भी। यह परिणाम है उनका जो डर रखते हैं, जबकि इनकार करनेवालों का परिणाम आग है।

36. जिन लोगों को हमने किताब प्रदान की है वे उससे, जो तुम्हारी ओर उतारा है, हर्षित होते हैं और विभिन्न गिरोहों के कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उसकी कुछ बातों का इनकार करते हैं। कह दो : "मुझे तो बस यह आदेश हुआ है कि मैं अल्लाह की बन्दगी करूँ और उसका सहभागी न ठहराऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मुझे लौटकर जाना है।"

37. और इसी प्रकार हमने इस (क़ुरआन) को एक अरबी फ़रमान के रूप में उतारा है। अब यदि तुम उस ज्ञान के पश्चात भी, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उनकी इच्छाओं के पीछे चले तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तो तुम्हारा कोई सहायक मित्र होगा और न कोई बचानेवाला।

38. तुमसे पहले भी हम कितने ही रसूल भेज चुके हैं और हमने उन्हें पत्नियाँ और बच्चे भी दिए थे, और किसी रसूल को यह अधिकार नहीं था कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई निशानी स्वयं ला देता। हर चीज़ के लिए एक समय है जो अटल लिखित है।



39. अल्लाह जो कुछ चाहता है मिटा देता है। इसी तरह वह क़ायम भी रखता है। मूल किताब तो स्वयं उसी के पास है।

40. हम जो वादा उनसे कर रहे हैं चाहे उसमें से कुछ हम तुम्हें दिखा दें, या तुम्हें उठा लें। तुम्हारा दायित्व तो बस संदेश का पहुँचा देना ही है, हिसाब लेना तो हमारे ज़िम्मे है।

41. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम धरती पर चले आ रहे हैं, उसे उसके किनारों से घटाते हुए ?[1] अल्लाह ही फ़ैसला करता है। कोई नहीं जो उसके फ़ैसले को पीछे डाल सके। वह हिसाब भी जल्द लेता है।

42. उनसे पहले जो लोग गुज़रे हैं, वे भी चालें चल चुके हैं, किन्तु वास्तविक चाल तो पूरी की पूरी अल्लाह ही के हाथ में है। प्रत्येक व्यक्ति जो कमाई कर रहा है उसे वह जानता है। इनकार करनेवालों को शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा कि परलोक-गृह के शुभ परिणाम के अधिकारी कौन हैं।

43. जिन लोगों ने इनकार की नीति अपनाई, वे कहते हैं : "तुम कोई रसूल नहीं हो।" कह दो : "मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह की और जिस किसी के पास किताब का ज्ञान है उसकी, गवाही काफ़ी है।"

14. इबराहीम

(मक्का में उतरी— आयतें 52)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. अलिफ़० लाम० रा०। यह एक किताब है जिसे हमने तुम्हारी ओर

1. अर्थात सत्य के विरोधियों का सत्ताधिकार सिमटता जा रहा है।

إِلَى النُّورِ ۙ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ
الْحَمِيدِ ۝ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝
الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ
وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولَٰئِكَ
فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا
بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ
وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُم بِأَيَّامِ اللَّهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ
اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُم مِّنْ آلِ
فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ

अवतरित की है, ताकि तुम मनुष्यों को अँधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले आओ, उनके रब की अनुमति से प्रभुत्वशाली, प्रशंस्य सत्ता, उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। इनकार करनेवालों के लिए तो एक कठोर यातना के कारण बड़ी तबाही है।

3. जो आख़िरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं, वही परले दरजे की गुमराही में पड़े हैं।

4. हमने जो रसूल भी भेजा, उसकी अपनी क़ौम की भाषा के साथ ही भेजा, ताकि वह उनके लिए अच्छी तरह खोलकर बयान कर दे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट रहने देता है और जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर लगा देता है। वह है भी प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्त्वदर्शी।

5. हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा था कि "अपनी क़ौम के लोगों को अँधेरों से प्रकाश की ओर निकाल ला और उन्हें 'अल्लाह के दिवस' याद दिला।"[1] निश्चय ही इसमें प्रत्येक धैर्यवान, कृतज्ञ व्यक्ति के लिए कितनी ही निशानियाँ हैं।

6. जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : "अल्लाह की उस

---

1. मानव-इतिहास के वे दिन जिनमें अल्लाह ने सरकशों और अवज्ञाकारियों को विनष्ट किया और अपने आज्ञाकारी बन्दों की सहायता की, उन्हें अत्याचारियों से छुटकारा दिलाया और उन्हें बड़ाई और श्रेष्ठता प्रदान की।

أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِى ذَٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن
رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ
لَأَزِيدَنَّكُمْ ۖ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِى لَشَدِيدٌ ۝ وَ
قَالَ مُوسَىٰٓ إِن تَكْفُرُوٓا أَنتُمْ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ
جَمِيعًا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِىٌّ حَمِيدٌ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا
ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ
وَٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَرَدُّوٓا أَيْدِيَهُمْ فِىٓ
أَفْوَٰهِهِمْ وَقَالُوٓا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ وَإِنَّا
لَفِى شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَتْ
رُسُلُهُمْ أَفِى ٱللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ
يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰٓ
أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوٓا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

कृपादृष्टि को याद करो, जो तुमपर हुई। जब उसने तुम्हें फ़िरऔनियों से छुटकारा दिलाया जो तुम्हें बुरी यातना दे रहे थे, तुम्हारे बेटों का वध कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को जीवित रखते थे, किन्तु इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी कृपा हुई।"

7. जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया था कि 'यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, परन्तु यदि तुम अकृतज्ञ सिद्ध हुए तो निश्चय ही मेरी यातना भी अत्यन्त कठोर है।'

8. और मूसा ने भी कहा था : "यदि तुम और वे जो भी धरती में हैं सब के सब अकृतज्ञ हो जाओ तो अल्लाह तो बड़ा निरपेक्ष, प्रशंस्य है।"

9. क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़रे हैं : नूह की क़ौम और आद और समूद और वे लोग जो उनके पश्चात हुए जिनको अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता? उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए थे, किन्तु उन्होंने उनके मुँह पर अपने हाथ रख दिए और कहने लगे : "जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है, हम उसका इनकार करते हैं और जिसकी ओर तुम हमें बुला रहे हो, उसके विषय में तो हम अत्यन्त दुविधाजनक संदेह में ग्रस्त हैं।"

10. उनके रसूलों ने कहा "क्या अल्लाह के विषय में संदेह है, जो आकाशों और धरती का रचयिता है? वह तो तुम्हें इसलिए बुला रहा है, ताकि तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर दे और तुम्हें एक नियत समय तक मुहलत दे।" उन्होंने कहा : "तुम तो बस हमारे ही जैसे एक मनुष्य हो, चाहते हो कि

तुरीदू-न अन तसुद्दूना अम्मा का-न यअ्बुदु आबाउना ... (Arabic text below)

تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا
فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن
نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ
وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ
لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحَىٰ
إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ
الْأَرْضَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَ
خَافَ وَعِيدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ
عَنِيدٍ ۝ مِّن وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ

हमें उनसे रोक दो जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते आए हैं। अच्छा, तो अब हमारे सामने कोई स्पष्ट प्रमाण ले आओ।"

11. उनके रसूलों ने उनसे कहा : "हम तो वास्तव में बस तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, किन्तु अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है एहसान करता है और यह हमारा काम नहीं कि तुम्हारे सामने कोई प्रमाण ले आएँ। यह तो बस अल्लाह के आदेश के पश्चात ही संभव है; और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए।

12. आखिर हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जबकि उसने हमें हमारे मार्ग दिखाए हैं? तुम हमें जो तकलीफ़ पहुँचा रहे हो उसके मुक़ाबले में हम धैर्य से काम लेंगे। भरोसा करनेवालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।"

13. अन्ततः इनकार करनेवालों ने अपने रसूलों से कहा : "हम तुम्हें अपने भू-भाग से निकालकर रहेंगे, या तो तुम्हें हमारे पंथ में लौट आना होगा।" तब उनके रब ने उनकी ओर प्रकाशना की : "हम अत्याचारियों को विनष्ट करके रहेंगे।

14. और उनके पश्चात तुम्हें इस धरती में बसाएँगे। यह उसके लिए है, जिसे मेरे समक्ष खड़े होने का भय हो और जो मेरी चेतावनी से डरे।"

15. उन्होंने फ़ैसला चाहा और प्रत्येक सरकश-दुराग्रही असफल होकर रहा।

16. वह जहन्नम से घिरा है और पीने को उसे कचलोहू का पानी दिया जाएगा,

صَدِيدٍ ۙ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِنْ
وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي
يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ
ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَ
يَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ
بِعَزِيزٍ ۝ وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ
عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدَانَا
اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا
لَنَا مِنْ مَحِيصٍ ۝ وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ

17. जिसे वह कठिनाई से घूँट-घूँट करके पिएगा और ऐसा नहीं लगेगा कि वह आसानी से उसे उतार सकता है, और मृत्यु उसपर हर ओर से चली आती होगी, फिर भी वह मरेगा नहीं। और उसके सामने कठोर यातना होगी।

18. जिन लोगों ने अपने रब का इनकार किया उनकी मिसाल यह है कि उनके कर्म जैसे राख हों जिसपर आँधी के दिन प्रचण्ड हवा का झोंका चले। कुछ भी उन्हें अपनी कमाई में से हाथ न आ सकेगा। यही परले दर्जे की तबाही और गुमराही है।

19. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने आकाशों और धरती को सोद्देश्य पैदा किया? यदि वह चाहे तो तुम सबको ले जाए और एक नवीन सृष्ट जनसमूह ले आए।

20. और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

21. सबके सब अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएँगे तो कमज़ोर लोग, उन लोगों से जो बड़े बने हुए थे, कहेंगे : "हम तो तुम्हारे पीछे चलते थे। तो क्या तुम अल्लाह की यातना में से कुछ हमपर से टाल सकते हो?" वे कहेंगे : "यदि अल्लाह हमें मार्ग दिखाता तो हम तुम्हें भी दिखाते। अब यदि हम व्याकुल हों या धैर्य से काम लें, हमारे लिए बराबर है। हमारे लिए बचने का कोई उपाय नहीं।"

22. जब मामले का फ़ैसला हो चुकेगा तब शैतान कहेगा : "अल्लाह ने तो

الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ
فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا
أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا
أَنفُسَكُم ۖ مَّا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنتُم بِمُصْرِخِيَّ ۖ إِنِّي
كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِن قَبْلُ ۗ إِنَّ الظَّالِمِينَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝ أَلَمْ تَرَ
كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ
طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝
تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللَّهُ
الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَمَثَلُ
كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِن

तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने भी तुमसे वादा किया था, फिर मैंने तो तुमसे सत्य के प्रतिकूल कहा था। और मेरा तो तुमपर कोई अधिकार नहीं था, सिवाय इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया और तुमने मेरी बात मान ली; तो अब मुझे मलामत (भर्त्सना) न करो, बल्कि अपने आप ही को मलामत करो, न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो। पहले जो तुमने सहभागी ठहराया था, मैं उससे विरक्त हूँ।" निश्चय ही अत्याचारियों के लिए दुखदायिनी यातना है।

23. इसके विपरीत जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए वे ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे अपने रब की अनुमति से सदैव रहेंगे। वहाँ उनका अभिवादन 'सलाम' से होगा।

24. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने कैसी मिसाल पेश की? अच्छी उत्तम बात एक अच्छे शुभ वृक्ष के सदृश है, जिसकी जड़ गहरी जमी हुई हो और उसकी शाखाएँ आकाश में पहुँची हुई हों;

25. अपने रब की अनुमति से वह हर समय अपना फल दे रहा हो। अल्लाह तो लोगों के लिए मिसालें पेश करता है, ताकि वे जाग्रत हों।

26. और अशुभ एवं अशुद्ध बात की मिसाल एक अशुभ वृक्ष के सदृश है, जिसे धरती के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए और उसे कुछ

भी स्थिरता प्राप्त न हो।

27. ईमान लानेवालों को अल्लाह सुदृढ़ बात के द्वारा सांसारिक जीवन में भी और परलोक में भी सुदृढ़ता प्रदान करता है और अत्याचारियों को अल्लाह विचलित कर देता है। और अल्लाह जो चाहता है, करता है।

28. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत को कुफ़्र से बदल डाला[1] और अपनी क़ौम को विनाश-गृह में उतार दिया;

29. जहन्नम में, जिसमें वे झोंके जाएँगे और वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है!

فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝ يُثَبِّتُ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي
الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا
يَشَآءُ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا
وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۝ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ
وَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ۝ قُلْ
لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا
مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ
يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ
بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ
لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۝

30. और उन्होंने अल्लाह के प्रतिद्वन्द्वी बना लिए, ताकि परिणामस्वरूप वे उन्हें उसके मार्ग से भटका दें। कह दो : "थोड़े दिन मज़े ले लो। अन्ततः तुम्हें आग ही की ओर जाना है।"

31. मेरे जो बन्दे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि वे नमाज़ की पाबन्दी करें और हमने उन्हें जो कुछ दिया है उसमें से छुपे और खुले ख़र्च करें, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न मैत्री।

32. वह अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती की सृष्टि की और आकाश से पानी उतारा, फिर वह उसके द्वारा कितने ही पैदावार और फल तुम्हारी आजीविका के रूप में सामने लाया। और नौका को तुम्हारे काम में लगाया, ताकि समुद्र में उसके आदेश से चले और नदियों को भी तुम्हें लाभ पहुँचाने में लगाया।

1. अर्थात अल्लाह की कृपा और उसके उपकार के बदले में कृतज्ञता क्या दिखाते, कृतघ्न होकर रहे।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ
الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۚ وَاِنْ
تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۚ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ
كَفَّارٌ ۟ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ
اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۟ رَبِّ
اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ
فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ
زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ
مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ۝ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا
نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ
فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

33. और सूर्य और चन्द्रमा को तुम्हारे लिए कार्यरत किया कि एक नियत विधान के अधीन निरंतर गतिशील हैं। और रात और दिन को भी तुम्हें लाभ पहुँचाने में लगा रखा है।

34. और हर उस चीज़ में से तुम्हें दिया जो तुमने उससे माँगा। यदि तुम अल्लाह की नेमतों की गणना करना चाहो तो उनकी पूरी गणना नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा ही अन्यायी, कृतघ्न है।

35. याद करो जब इबराहीम ने कहा था : "मेरे रब ! इस भूभाग (मक्का) को शान्तिमय बना दे और मुझे और मेरी सन्तान को इससे बचा कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाएँ।

36. मेरे रब ! इन्होंने (इन मूर्तियों ने) तो बहुत-से लोगों को पथभ्रष्ट किया है। अतः जिस किसी ने मेरा अनुसरण किया वह मेरा है और जिसने मेरी अवज्ञा की तो निश्चय ही तू बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

37. हमारे रब ! मैंने एक ऐसी घाटी में जहाँ कृषि-योग्य भूमि नहीं अपनी सन्तान के एक हिस्से को तेरे प्रतिष्ठित घर (काबा) के निकट बसा दिया है। हमारे रब ! ताकि वे नमाज़ क़ायम करें। अतः तू लोगों के दिलों को उनकी ओर झुका दे और उन्हें फलों और पैदावार की आजीविका प्रदान कर, ताकि वे कृतज्ञ बनें।

38. हमारे रब ! तू जानता ही है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं। अल्लाह से तो कोई भी चीज़ न धरती में छिपी है और न आकाश में।

39. सारी प्रशंसा है उस अल्लाह की जिसने बुढ़ापे के होते हुए भी मुझे

وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي
لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِن
ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَ
لِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا
تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا
يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِينَ
مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۖ وَ
أَفْئِدَتُهُمْ هَوَاءٌ ﴿٤٣﴾ وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ
الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخِّرْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ
قَرِيبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۗ أَوَلَمْ تَكُونُوا
أَقْسَمْتُم مِّن قَبْلُ مَا لَكُم مِّن زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ وَسَكَنتُمْ فِي
مَسَاكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوا

इसमाईल और इसहाक़ दिए। निस्संदेह मेरा रब प्रार्थना अवश्य सुनता है।

40. मेरे रब! मुझे और मेरी सन्तान को नमाज़ क़ायम करनेवाला बना। हमारे रब! और हमारी प्रार्थना स्वीकार कर।

41. हमारे रब! मुझे और मेरे माँ-बाप को और मोमिनों को उस दिन क्षमाकर देना, जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा।"

42. अब ये अत्याचारी जो कुछ कर रहे हैं, उससे अल्लाह को असावधान न समझो। वह तो इन्हें बस उस दिन तक के लिए टाल रहा है जबकि आँखें फटी की फटी रह जाएँगी,

43. अपने सिर उठाए भागे चले जा रहे होंगे; उनकी निगाह स्वयं उनकी अपनी ओर भी न फिरेगी और उनके दिल उड़े जा रहे होंगे।

44. लोगों को उस दिन से डराओ, जब यातना उन्हें आ लेगी। उस समय अत्याचारी लोग कहेंगे : "हमारे रब! हमें थोड़ी-सी मुहलत दे दे। हम तेरे आमंत्रण को स्वीकार करेंगे और रसूलों का अनुसरण करेंगे।" (कहा जाएगा :) "क्या तुम इससे पहले क़समें नहीं खाया करते थे कि हमारा तो पतन ही न होगा?

45. तुम लोगों की बस्तियों में रह-बस चुके थे, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया था और तुमपर अच्छी तरह स्पष्ट हो चुका था कि उनके साथ हमने कैसा मामला किया और हमने तुम्हारे लिए कितनी ही मिसालें बयान की थीं।"

46. वे अपनी चाल चल चुके हैं। अल्लाह के पास भी उनके लिए चाल

مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۚ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ
لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ
وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ يَوْمَ
تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا
لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ
مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ
وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ
نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝
هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا
هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝

मौजूद थी, यद्यपि उनकी चाल ऐसी ही क्यों न रही हो जिससे पर्वत भी अपने स्थान से टल जाएँ।

47. अतः यह न समझना कि अल्लाह अपने रसूलों से किए हुए अपने वादे के विरुद्ध जाएगा। अल्लाह तो अपार शक्तिवाला, प्रतिशोधक है।

48. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से बदल दी जाएगी और आकाश भी। और वे सब के सब अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएँगे, जो अकेला है, सबपर जिसका आधिपत्य है।

49. और उस दिन तुम अपराधियों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं।

50. उनके परिधान तारकोल के होंगे और आग उनके चेहरों पर छा रही होगी,

51. ताकि अल्लाह प्रत्येक जीव को उसकी कमाई का बदला दे। निश्चय ही अल्लाह जल्द हिसाब लेनेवाला है।

52. यह लोगों को संदेश पहुँचा देना है (ताकि वे इसे ध्यानपूर्वक सुनें) और ताकि उन्हें इसके द्वारा सावधान कर दिया जाए और ताकि वे जान लें कि वही अकेला पूज्य है और ताकि वे सचेत हो जाएँ, जो बुद्धि और समझ रखते हैं।

15. अल-हिज्र

(मक्का में उतरी— आयतें 99)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० रा०। यह किताब अर्थात स्पष्ट क़ुरआन की आयतें हैं।


ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين
ذرهم يأكلوا ويتمتعوا ويلههم الأمل فسوف
يعلمون ۝ وما أهلكنا من قرية إلا ولها
كتاب معلوم ۝ ما تسبق من أمة أجلها وما
يستأخرون ۝ وقالوا يا أيها الذي نزل عليه
الذكر إنك لمجنون ۝ لو ما تأتينا بالملائكة
إن كنت من الصادقين ۝ ما ننزل الملائكة
إلا بالحق وما كانوا إذا منظرين ۝ إنا نحن
نزلنا الذكر وإنا له لحافظون ۝ ولقد أرسلنا
من قبلك في شيع الأولين ۝ وما يأتيهم من
رسول إلا كانوا به يستهزئون ۝ كذلك نسلكه
في قلوب المجرمين ۝ لا يؤمنون به وقد خلت
سنة الأولين ۝ ولو فتحنا عليهم بابا من السماء

2. ऐसे समय आएँगे जब इनकार करनेवाले कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते !

3. छोड़ो उन्हें खाएँ और मज़े उड़ाएँ और (लम्बी) आशा उन्हें भुलावे में डाले रखे। उन्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा !

4. हमने जिस बस्ती को भी विनष्ट किया है, उसके लिए अनिवार्यत: एक निश्चित फ़ैसला रहा है !

5. किसी समुदाय के लोग न अपने निश्चित समय से आगे बढ़ सकते हैं और न वे पीछे रह सकते हैं।

6. वे कहते हैं : "ऐ वह व्यक्ति, जिसपर अनुस्मरण अवतरित हुआ, तुम निश्चय ही दीवाने हो !

7. यदि तुम सच्चे हो तो हमारे समक्ष फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आते ?"

8. फ़रिश्तों को हम केवल सत्य के प्रयोजन हेतु उतारते हैं और उस समय लोगों को मुहलत नहीं मिलेगी।

9. यह अनुस्मरण निश्चय ही हमने अवतरित किया है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं।

10. तुमसे पहले कितने ही विगत गिरोहों में हम रसूल भेज चुके हैं।

11. कोई भी रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया, जिसका उन्होंने उपहास न किया हो।

12. इसी तरह हम अपराधियों के दिलों में इसे उतारते हैं।

13. वे इसे मानेंगे नहीं। पहले के लोगों की मिसालें गुज़र चुकी हैं।

14. यदि हम उनपर आकाश से कोई द्वार खोल दें और वे दिन-दहाड़े

فظلوا فيه يعرجون ۝ لقالوا إنما سكرت
أبصارنا بل نحن قوم مسحورون ۝ ولقد
جعلنا في السماء بروجا وزيناها للنظرين ۝ و
حفظناها من كل شيطن رجيم ۝ إلا من استرق
السمع فأتبعه شهاب مبين ۝ والأرض مددناها
وألقينا فيها روسي وأنبتنا فيها من كل شيء
موزون ۝ وجعلنا لكم فيها معايش ومن
لستم له برزقين ۝ وإن من شيء إلا عندنا
خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم ۝ وأرسلنا
الريح لوقح فأنزلنا من السماء ماء فأسقينكموه
وما أنتم له بخزنين ۝ وإنا لنحن نحي و
نميت ونحن الورثون ۝ ولقد علمنا
المستقدمين منكم ولقد علمنا المستأخرين ۝

उसमें चढ़ने भी लगें,

15. फिर भी वे यही कहेंगे : "हमारी आँखें मदमाती हैं, बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है !"

16. हमने आकाश में बुर्ज (तारा-समूह) बनाए और हमने उसे देखनेवालों के लिए सुसज्जित भी किया।

17. और हर फिटकारे हुए शैतान से उसे सुरक्षित रखा——

18. यह और बात है कि किसी ने चोरी-छिपे कुछ सुनगुन ले लिया तो एक प्रत्यक्ष अग्निशिखा ने भी झपटकर उसका पीछा किया——

19. और हमने धरती को फैलाया और उसमें अटल पहाड़ डाल दिए और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अंदाज़ में उगाई।

20. और उसमें तुम्हारे गुज़र-बसर के सामान निर्मित किए, और उनको भी जिनको रोज़ी देनेवाले तुम नहीं हो।

21. कोई भी चीज़ तो ऐसी नहीं है जिसके भंडार हमारे पास न हों, फिर भी हम उसे एक ज्ञात (निश्चित) मात्रा के साथ उतारते हैं।

22. हम ही वर्षा लानेवाली हवाओं को भेजते हैं। फिर आकाश से पानी बरसाते हैं और उससे तुम्हें सिंचित करते हैं। उसके ख़ज़ानादार तुम नहीं हो।

23. हम ही जीवन और मृत्यु देते हैं और हम ही उत्तराधिकारी रह जाते हैं।

24. हम तुम्हारे पहले के लोगों को भी जानते हैं और बाद के आनेवालों को भी हम जानते हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَقَدْ
خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝
وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ ۝ وَإِذْ
قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ
صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ
فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ
كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَنْ يَكُونَ مَعَ
السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ
السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ
مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ
الدِّينِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝
قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ

25. तुम्हारा रब ही है, जो उन्हें इकट्ठा करेगा। निस्संदेह वह तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

26. हमने मनुष्य को सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया है,

27. और उससे पहले हम जिन्नों को लू रूपी अग्नि से पैदा कर चुके थे।

28. याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा : "मैं सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करनेवाला हूँ।

29. तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना!"

30. अतएव सब के सब फ़रिश्तों ने सजदा किया,

31. सिवाय इबलीस के। उसने सजदा करनेवालों के साथ शामिल होने से इनकार कर दिया।

32. कहा : "ऐ इबलीस! तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करनेवालों में शामिल नहीं हुआ?"

33. उसने कहा : "मैं ऐसा नहीं हूँ कि मैं उस मनुष्य को सजदा करूँ, जिसको तू ने सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया।"

34. कहा : "अच्छा, तू निकल जा यहाँ से, क्योंकि तुझपर फिटकार है!

35. निश्चय ही बदले के दिन तक तुझपर धिक्कार है।"

36. उसने कहा : "मेरे रब! फिर तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे, जबकि सब उठाए जाएँगे।"

37. कहा : "अच्छा, तुझे मुहलत है,

الْمَعْلُومِ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ
مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۝
إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَٰنٌ إِلَّا مَنِ
اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ۝ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ
أَجْمَعِينَ ۝ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَٰبٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ
جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ۝
ادْخُلُوهَا بِسَلَٰمٍ ءَامِنِينَ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم
مِّنْ غِلٍّ إِخْوَٰنًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ۝ لَا يَمَسُّهُمْ
فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۝ نَبِّئْ عِبَادِي
أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ
الْأَلِيمُ ۝ وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ ۝ إِذْ دَخَلُوا
عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَٰمًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ۝ قَالُوا

38. उस दिन तक के लिए जिसका समय ज्ञात एवं नियत है।"

39. उसने कहा : "मेरे रब! इसलिए कि तूने मुझे सीधे मार्ग से विचलित कर दिया है, अतः मैं भी धरती में उनके लिए मनमोहकता पैदा करूँगा और उन सबको बहकाकर रहूँगा,

40. सिवाय उनके जो तेरे चुने हुए बन्दे होंगे।"

41. कहा : "मुझ तक पहुँचने का यही सीधा मार्ग है,

42. मेरे बन्दों पर तो तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुए लोगों के जो तेरे पीछे हो लें।

43. निश्चय ही जहन्नम ही का ऐसे समस्त लोगों से वादा है।

44. उसके सात द्वार हैं। प्रत्येक द्वार के लिए उनका एक ख़ास हिस्सा होगा।"

45. निस्संदेह डर रखनेवाले बाग़ों और स्रोतों में होंगे :

46. "प्रवेश करो इनमें निर्भयतापूर्वक सलामती के साथ!"

47. उनके सीनों में जो मन-मुटाव होगा उसे हम दूर कर देंगे। वे भाई-भाई बनकर आमने-सामने तख़्तों पर होंगे।

48. उन्हें वहाँ न तो कोई थकान और तकलीफ़ पहुँचेगी और न वे वहाँ से कभी निकाले ही जाएँगे।

49. मेरे बन्दों को सूचित कर दो कि मैं अत्यन्त क्षमाशील, दयावान हूँ;

50. और यह कि मेरी यातना भी अत्यन्त दुखदायिनी यातना है।

51. और उन्हें इबराहीम के अतिथियों का वृत्तान्त सुनाओ,

52. जब वे उसके यहाँ आए और उन्होंने सलाम किया तो उसने कहा : "हमें तो तुमसे डर लग रहा है।"

لا توجل انا نبشرك بغلم عليم ○ قال ابشرتموني
على ان مسني الكبر فبم تبشرون ○ قالوا
بشرنك بالحق فلا تكن من القنطين ○ قال ومن
يقنط من رحمة ربه الا الضالون ○ قال فما
خطبكم ايها المرسلون ○ قالوا انا ارسلنا
الى قوم مجرمين ○ الا ال لوط انا لمنجوهم
اجمعين ○ الا امراته قدرنا انها لمن الغبرين ○
فلما جاء ال لوط المرسلون ○ قال انكم قوم
منكرون ○ قالوا بل جئنك بما كانوا فيه
يمترون ○ واتينك بالحق وانا لصدقون ○
فاسر باهلك بقطع من اليل واتبع ادبارهم ولا
يلتفت منكم احد وامضوا حيث تؤمرون ○
وقضينا اليه ذلك الامر ان دابر هؤلاء

53. वे बोले : "डरो नहीं, हम तुम्हें एक ज्ञानवान पुत्र की शुभ सूचना देते हैं।"

54. उसने कहा : "क्या तुम मुझे शुभ सूचना दे रहे हो, इस अवस्था में कि मेरा बुढ़ापा आ गया है? तो अब मुझे किस बात की शुभ सूचना दे रहे हो?"

55. उन्होंने कहा : "हम तुम्हें सच्ची शुभ सूचना दे रहे हैं, तो तुम निराश न हो।"

56. उसने कहा : "अपने रब की दयालुता से पथभ्रष्टों के सिवा और कौन निराश होगा?"

57. उसने कहा : "ऐ दूतो तुम किस अभियान पर आए हो?"

58. वे बोले : "हम तो एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गए हैं,

59. सिवाय लूत के घरवालों के। उन सबको तो हम बचा लेंगे,

60. सिवाय उसकी पत्नी के—हमने निश्चित कर दिया है, वह तो पीछे रह जानेवालों में रहेगी।"

61. फिर जब ये दूत, लूत के यहाँ पहुँचे,

62. तो उसने कहा : "तुम तो अपरिचित लोग हो।"

63-64. उन्होंने कहा "नहीं, बल्कि हम तो तुम्हारे पास वही चीज़ लेकर आए हैं, जिसके विषय में वे संदेह कर रहे थे। और हम तुम्हारे पास यक़ीनी चीज़ लेकर आए हैं, और हम बिलकुल सच कह रहे हैं।

65. अतएव अब तुम अपने घरवालों को लेकर रात्रि के किसी हिस्से में निकल जाओ, और स्वयं उन सबके पीछे-पीछे चलो। और तुममें से कोई भी पीछे मुड़कर न देखे। बस चले जाओ, जिधर का तुम्हें आदेश है।"



66. हमने उसे अपना यह फ़ैसला पहुँचा दिया कि प्रातः होते-होते उनकी जड़ कट चुकी होगी।

67. इतने में नगर के लोग ख़ुश-ख़ुश आ पहुँचे।

68. उसने कहा : "ये मेरे अतिथि हैं। मेरी फ़ज़ीहत मत करना,

69. अल्लाह का डर रखो, मुझे रुसवा न करो।"

70. उन्होंने कहा : "क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों का ज़िम्मा लेने से रोका नहीं था?"

71. उसने कहा : "तुमको यदि कुछ करना है, तो ये मेरी (क़ौम की) बेटियाँ (विधितः विवाह के लिए) मौजूद हैं।"

72. तुम्हारे जीवन की सौगन्ध, वे अपनी मस्ती में खोए हुए थे,

73-74. अन्ततः पौ फटते-फटते एक भयंकर आवाज़ ने उन्हें आ लिया, और हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया, और उनपर कंकरीले पत्थर बरसाए।

75. निश्चय ही इसमें भापनेवालों के लिए निशानियाँ हैं।

76. और वह (बस्ती) सार्वजनिक मार्ग पर है।

77. निश्चय ही इसमें मोमिनों के लिए एक बड़ी निशानी है।

78. और निश्चय ही ऐका वाले[1] भी अत्याचारी थे,

79. फिर हमने उनसे भी बदला लिया, और ये दोनों (भू-भाग) खुले मार्ग पर स्थित हैं।

80. हिज्रवाले भी रसूलों को झुठला चुके हैं।

81. हमने तो उन्हें अपनी निशानियाँ प्रदान की थीं, परन्तु वे उनकी उपेक्षा ही करते रहे।

1. ऐका का अर्थ है : सघन वन। यहाँ पर शुऐब (अलै०) की एक क़ौम का नाम है।

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ
مُصْبِحِيْنَ ۝ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝
وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا
بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ
الْجَمِيْلَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝ وَلَقَدْ
اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ۝
لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ۝ كَمَآ اَنْزَلْنَا
عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ۝
فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ عَمَّا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ
الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ۝

82. वे बड़ी बेफ़िक्री से पहाड़ों को काट-काटकर घर बनाते थे।

83. अन्ततः एक भयानक आवाज़ ने प्रातः होते-होते उन्हें आ लिया।

84. फिर जो कुछ वे कमाते रहे, वह उनके कुछ काम न आ सका।

85. हमने तो आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है, सोद्देश्य पैदा किया है, और वह क़ियामत की घड़ी तो अनिवार्यतः आनेवाली है। अतः तुम भली प्रकार दरगुज़र (क्षमा) से काम लो।

86. निश्चय ही तुम्हारा रब ही बड़ा पैदा करनेवाला, सब कुछ जाननेवाला है।

87. हमने तुम्हें सात "मसानी"[1] का समूह यानी महान क़ुरआन दिया——

88. जो कुछ सुख-सामग्री हमने उनमें से विभिन्न प्रकार के लोगों को दी है, तुम उसपर अपनी आँखें न पसारो और न उनपर दुखी हो, तुम तो अपनी भुजाएँ मोमिनों के लिए झुकाए रखो,

89. और कह दो : "मैं तो साफ़-साफ़ चेतावनी देनेवाला हूँ।"——

90. जिस प्रकार हमने हिस्सा-बख़रा करनेवालों पर उतारा था,

91. जिन्होंने (अपने) क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

92-94. अब तुम्हारे रब की क़सम! हम अवश्य ही उन सबसे उसके विषय में पूछेंगे जो कुछ वे करते रहे। अतः तुम्हें जिस चीज़ का आदेश हुआ है, उसे हाँक-पुकारकर बयान कर दो, और मुशरिकों की ओर ध्यान न दो।

95. उपहास करनेवालों के लिए हम तुम्हारी ओर से काफ़ी हैं।

1. 'मसानी' अर्थात बन्दों का रुख़ मोड़ देने का साधन, चाहे वे सात सूरतें हों या सूरतों के सात वर्ग या सूरा अल-फ़ातिहा की सात आयतें।

96. जो अल्लाह के साथ दूसरों को पूज्य-प्रभु ठहराते हैं, तो शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा !

97. हम जानते हैं कि वे जो कुछ कहते हैं, उससे तुम्हारा दिल तंग होता है ।

98. तो तुम अपने रब का गुणगान करो और सजदा करनेवालों में सम्मिलित रहो ।

99. और अपने रब की बन्दगी में लगे रहो, यहाँ तक कि जो यक़ीनी है वह तुम्हारे सामने आ जाए ।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ
وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ وَاعْبُدْ
رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ

سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ
عَمَّا يُشْرِكُونَ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ
أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنذِرُوا
أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ خَلَقَ
الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ
وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا ۗ لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ

16. अन-नह्ल

(मक्का में उतरी— आयतें 128)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. आ गया आदेश अल्लाह का, तो अब उसके लिए जल्दी न मचाओ । वह महान और उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं ।

2. वह फ़रिश्तों को अपने हुक्म की रूह (वह्य) के साथ अपने जिस बन्दे पर चाहता है उतारता है कि "सचेत कर दो, मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं । अतः तुम मेरा ही डर रखो ।"

3. उसने आकाशों और धरती को सोद्देश्य पैदा किया । वह अत्यन्त उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं ।

4. उसने मनुष्य को एक बूँद से पैदा किया । फिर क्या देखते हैं कि वह खुला झगड़नेवाला बन गया !

5. रहे पशु, उन्हें भी उसी ने पैदा किया, जिसमें तुम्हारे लिए ऊष्मा प्राप्त करने

وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ
وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ
لَّمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ
لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَى
اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ ۚ وَلَوْ شَاءَ
لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً لَّكُم مِّنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝
يُنبِتُ لَكُم بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَ
الْأَعْنَابَ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ

का सामान भी है और हैं अन्य कितने ही लाभ। उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो।

6. उनमें तुम्हारे लिए एक सौन्दर्य भी है, जबकि तुम सायंकाल उन्हें लाते और जबकि तुम उन्हें चराने ले जाते हो।

7. वे तुम्हारे बोझ ढोकर ऐसे भूभाग तक ले जाते हैं, जहाँ तुम जी-तोड़ परिश्रम के बिना नहीं पहुँच सकते थे। निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ा ही करुणामय, दयावान है।

8. और घोड़े और खच्चर और गधे भी पैदा किए, ताकि तुम उनपर सवार हो और शोभा का कारण भी। और वह उसे भी पैदा करता है, जिसे तुम नहीं जानते।

9. अल्लाह के लिए ज़रूरी है उचित एवं अनुकूल मार्ग दिखाना और कुछ मार्ग टेढ़े भी हैं। यदि वह चाहता तो तुम सबको अवश्य सीधा मार्ग दिखा देता।

10. वही है जिसने आकाश से तुम्हारे लिए पानी उतारा, जिसे तुम पीते हो और उसी से पेड़ और वनस्पतियाँ भी उगती हैं, जिनमें तुम जानवरों को चराते हो।

11. और उसी से वह तुम्हारे लिए खेतियाँ उगाता है और ज़ैतून, खजूर, अंगूर और हर प्रकार के फल पैदा करता है। निश्चय ही सोच-विचार करनेवालों के लिए इसमें एक निशानी है।

12. और उसने तुम्हारे लिए रात और दिन को और सूर्य और चन्द्रमा को कार्यरत कर रखा है। और तारे भी उसी की आज्ञा से कार्यरत हैं——निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं——

13. और धरती में तुम्हारे लिए जो रंग-बिरंग की चीज़ें बिखेर रखी हैं,

فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ
لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ
حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيهِ
وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَأَلْقَىٰ
فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا
لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ
يَهْتَدُونَ ۝ أَفَمَن يَخْلُقُ كَمَن لَّا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ۝ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ
وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۝ أَمْوَاتٌ
غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

उसमें भी उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो शिक्षा लेनेवाले हैं।

14. वही तो है जिसने समुद्र को वश में किया है, ताकि तुम उससे ताज़ा मांस लेकर खाओ और उससे आभूषण निकालो, जिसे तुम पहनते हो। तुम देखते ही हो कि नौकाएँ उसको चीरती हुई चलती हैं (ताकि तुम सफ़र कर सको) और ताकि तुम उसका अनुग्रह तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

15. और उसने धरती में अटल पहाड़ डाल दिए, कि वह तुम्हें लेकर झुक न पड़े। और नदियाँ बनाईं और प्राकृतिक मार्ग बनाए, ताकि तुम मार्ग पा सको।

16. और मार्ग चिह्न भी बनाए और तारों के द्वारा भी लोग मार्ग पा लेते हैं।

17. फिर क्या जो पैदा करता है वह उस जैसा हो सकता है, जो पैदा नहीं करता? फिर क्या तुम्हें होश नहीं होता?

18. और यदि तुम अल्लाह की नेमतों (कृपादानों) को गिनना चाहो तो उन्हें पूर्ण-रूप से गिन नहीं सकते। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

19. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ प्रकट करते हो।

20. और जिन्हें वे अल्लाह से हटकर पुकारते हैं वे किसी चीज़ को भी पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किए जाते हैं।

21. मृत हैं, जिनमें प्राण नहीं। उन्हें मालूम नहीं कि वे कब उठाए जाएँगे।[1]

---

1. अर्थात उनको क़ियामत की घड़ी का भी ज्ञान नहीं, जबकि लोगों को हिसाब-किताब के लिए पुनः जीवित किया जाएगा।

إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
قُلُوبُهُمْ مُنْكِرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا
يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا
أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوا
أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ
الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾
قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ
مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ
أَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾

22. तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला प्रभु-पूज्य है। किन्तु जो आख़िरत में विश्वास नहीं रखते, उनके दिलों को इनकार है। वे अपने आपको बड़ा समझ रहे हैं।

23. निश्चय ही अल्लाह भली-भाँति जानता है, जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं। उसे ऐसे लोग प्रिय नहीं, जो अपने आपको बड़ा समझते हों।

24. और जब उनसे कहा जाता है कि "तुम्हारे रब ने क्या अवतरित किया है?" कहते है : "वे तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं।"

25. इसका परिणाम यह होगा कि वे क़ियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएँगे और उनके बोझ में से भी जिन्हें वे अज्ञानता के कारण पथभ्रष्ट कर रहे हैं। सुन लो, बहुत ही बुरा है वह बोझ जो वे उठा रहे है!

26. जो उनसे पहले गुज़रे है वे भी मक्कारियाँ कर चुके हैं। फिर अल्लाह उनके भवन पर नींवों की ओर से आया और छत उनपर उनके ऊपर से आ गिरी और ऐसे रुख से उनपर यातना आई जिसका उन्हें एहसास तक न था।

27. फिर क़ियामत के दिन अल्लाह उन्हें अपमानित करेगा और कहेगा : "कहाँ हैं मेरे वे साझीदार, जिनके लिए तुम लड़ते-झगड़ते थे?" जिन्हें ज्ञान प्राप्त था वे कहेंगे : "निश्चय ही आज रुसवाई और ख़राबी है इनकार करनेवालों के लिए।"

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ ۖ
فَأَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِن سُوءٍ ۚ بَلَىٰ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَادْخُلُوا
أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَبِئْسَ مَثْوَى
الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنزَلَ
رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا خَيْرًا ۗ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا
حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ
الْمُتَّقِينَ ۝ جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَٰلِكَ
يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ
طَيِّبِينَ ۙ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا
كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ
الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ

28. जिनकी रूहों को फ़रिश्ते इस दशा में ग्रस्त करते हैं कि वे अपने आप पर अत्याचार कर रहे होते हैं, तब आज्ञाकारी एवं वशीभूत होकर आ झुकते हैं कि "हम तो कोई बुराई नहीं करते थे।" "नहीं, बल्कि अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते रहे हो।

29. तो अब जहन्नम के द्वारों में, उसमें सदैव रहने के लिए प्रवेश करो। अतः निश्चय ही बहुत ही बुरा ठिकाना है यह अहंकारियों का।"

30. दूसरी ओर जो डर रखनेवाले हैं उनसे कहा जाता है : "तुम्हारे रब ने क्या अवतरित किया?" वे कहते हैं : "जो सबसे उत्तम है।" जिन लोगों ने भलाई की उनकी इस दुनिया में भी अच्छी हालत है और आख़िरत का घर तो अच्छा है ही। और क्या ही अच्छा घर है डर रखनेवालों का!——

31. सदैव रहने के बाग़ जिनमें वे प्रवेश करेंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनके लिए वहाँ वह सब कुछ संचित होगा, जो वे चाहें। अल्लाह डर रखनेवालों को ऐसा ही प्रतिदान प्रदान करता है।

32. जिनकी रूहों को फ़रिश्ते इस दशा में ग्रस्त करते हैं कि वे पाक और नेक होते हैं, वे कहते हैं : "तुमपर सलाम हो! प्रवेश करो जन्नत में उसके बदले में जो कुछ तुम करते रहे हो।"

33. क्या अब वे इसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि फ़रिश्ते उनके पास आ पहुँचें या तेरे रब का आदेश ही आ जाए? ऐसा ही उन लोगों ने भी किया,

الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِن
كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا
عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ وَ
قَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِن دُونِهِ
مِن شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن دُونِهِ
مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ
عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ وَلَقَدْ بَعَثْنَا
فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا
الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُم مَّنْ
حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ
فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ إِن
تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ
وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ

जो इनसे पहले थे। अल्लाह ने उनपर अत्याचार नहीं किया, किन्तु वे स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते रहे।

34. अन्ततः उनकी करतूतों की बुराइयाँ उनपर आ पड़ीं, और जिसका उपहास वे करते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

35. शिर्क करनेवालों का कहना है : "यदि अल्लाह चाहता तो उससे हटकर किसी चीज़ की न हम बन्दगी करते और न हमारे बाप-दादा ही और न हम उसके बिना किसी चीज़ को अवैध ठहराते।" उनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया। तो क्या साफ़-साफ़ संदेश पहुँचा देने के सिवा रसूलों पर कोई और भी ज़िम्मेदारी है?

36. हमने हर समुदाय में कोई न कोई रसूल भेजा कि "अल्लाह की बन्दगी करो और तागूत[1] से बचो।" फिर उनमें से किसी को तो अल्लाह ने सीधे मार्ग पर लगाया और उनमें से किसी पर पथभ्रष्टता सिद्ध होकर रही। फिर तनिक धरती में चल-फिरकर तो देखो कि झुठलानेवालों का कैसा परिणाम हुआ।

37. यद्यपि इस बात का कि वे राह पर आ जाएँ तुम्हें लालच ही क्यों न हो, किन्तु अल्लाह जिसे भटका देता है, उसे वह मार्ग नहीं दिखाया करता और ऐसे लोगों का कोई सहायक भी नहीं होता।

38. उन्होंने अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाकर कहा : "जो मर जाता है उसे

1. तागूत : बढ़े हुए फ़सादी।

أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا
عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝
لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ۝ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ
إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ وَالَّذِينَ
هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ
فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝
وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ
فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝
بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝
أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَن يَخْسِفَ اللَّهُ

अल्लाह नहीं उठाएगा।" क्यों नहीं? यह तो एक वादा है, जिसे पूरा करना उसके लिए अनिवार्य है——किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।——

39. ताकि वह उनपर उसको स्पष्ट कर दे, जिसके विषय में वे विभेद करते हैं और इसलिए भी कि इनकार करनेवाले जान लें कि वे झूठे थे।

40. किसी चीज़ के लिए जब हम उसका इरादा करते हैं तो हमारा कहना बस यही होता है कि उससे कहते हैं : "हो जा!" और वह हो जाती है।

41. और जिन लोगों ने इसके पश्चात कि उनपर ज़ुल्म ढाया गया था अल्लाह के लिए घर-बार छोड़ा उन्हें हम दुनिया में भी अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का प्रतिदान तो बहुत बड़ा है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते।

42. ये वे लोग हैं जो जमे रहे और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

43. हमने तुमसे पहले भी पुरुषों ही को रसूल बनाकर भेजा था——जिनकी ओर हम प्रकाशना करते रहे हैं। यदि तुम नहीं जानते तो अनुस्मृतिवालों[1] से पूछ लो।

44. स्पष्ट प्रमाणों और ज़बूरों (किताबों) के साथ। और अब यह अनुस्मृति तुम्हारी ओर हमने अवतरित की, ताकि तुम लोगों के समक्ष खोल-खोलकर बयान कर दो जो कुछ उनकी ओर उतारा गया है और ताकि वे सोच-विचार करें।

45. फिर क्या वे लोग जो ऐसी बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं, इस बात से

1. अर्थात किताबवालों—यहूद और नसारा से।



بهم الأرض أو يأتيهم العذاب من حيث لا
يشعرون ﴿٤٥﴾ أو يأخذهم في تقلبهم فما هم
بمعجزين ﴿٤٦﴾ أو يأخذهم على تخوف فإن ربكم
لرءوف رحيم ﴿٤٧﴾ أولم يروا إلى ما خلق الله من شيء
يتفيأ ظلاله عن اليمين والشمائل سجدا لله
وهم داخرون ﴿٤٨﴾ ولله يسجد ما في السماوات وما
في الأرض من دابة والملائكة وهم لا يستكبرون ﴿٤٩﴾
يخافون ربهم من فوقهم ويفعلون ما يؤمرون ﴿٥٠﴾
وقال الله لا تتخذوا إلهين اثنين إنما هو إله
واحد فإياي فارهبون ﴿٥١﴾ وله ما في السماوات و
الأرض وله الدين واصبا أفغير الله تتقون ﴿٥٢﴾ وما
بكم من نعمة فمن الله ثم إذا مسكم الضر
فإليه تجأرون ﴿٥٣﴾ ثم إذا كشف الضر عنكم إذا

निश्चिन्त हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धँसा दे या ऐसे मौक़े से उनपर यातना आ जाए जिसका उन्हें एहसास तक न हो?

46. या उन्हें चलते-फिरते ही पकड़ ले, वे क़ाबू से बाहर निकल जानेवाले तो हैं नहीं?

47. या वह उन्हें त्रस्त अवस्था में पकड़ ले? किन्तु तुम्हारा रब तो बड़ा ही करुणामय, दयावान है।

48. क्या अल्लाह की पैदा की हुई किसी चीज़ को उन्होंने देखा नहीं कि किस प्रकार उसकी परछाइयाँ अल्लाह को सजदा करती और विनम्रता दिखाती हुई दाएँ और बाएँ ढलती हैं?

49. और आकाशों और धरती में जितने भी जीवधारी हैं वे सब अल्लाह ही को सजदा करते हैं और फ़रिश्ते भी और वे घमण्ड बिलकुल नहा करते।

50. अपने ऊपर से अपने रब का डर रखते हैं और जो उन्हें आदेश होता है, वही करते हैं।

51. अल्लाह का फ़रमान है : "दो-दो पूज्य-प्रभु न बनाओ, वह तो बस अकेला पूज्य-प्रभु है। अत: मुझी से डरो।"

52. जो कुछ आकाशों और धरती में है सब उसी का है। उसी का दीन (धर्म) स्थायी और अनिवार्य है। फिर क्या अल्लाह के सिवा तुम किसी और का डर रखोगे?

53. तुम्हारे पास जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो तुम उसी से फ़रियाद करते हो।

54. फिर जब वह उस तकलीफ़ को तुमसे टाल देता है, तो क्या देखते हैं

فَرِيقٌ مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا
آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۗ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ
عَمَّا كُنتُمْ تَفْتَرُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ
سُبْحَانَهُ ۙ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ ۝ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم
بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ
عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۗ أَلَا سَاءَ مَا
يَحْكُمُونَ ۝ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
مَثَلُ السَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا
تَرَكَ عَلَيْهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا

कि तुममें से कुछ लोग अपने रब के साथ साझीदार ठहराने लगते हैं,

55. कि परिणामस्वरूप जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके प्रति कृतघ्नता दिखलाएँ। अच्छा, कुछ मज़े ले लो, शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा।

56. हमने उन्हें जो आजीविका प्रदान की है उसमें वे उनका हिस्सा लगाते हैं जिन्हें वे जानते भी नहीं। अल्लाह की सौगंध! तुम जो झूठ घड़ते हो उसके विषय में तुमसे अवश्य पूछा जाएगा।

57. और वे अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं—— महान और उच्च है वह—— और अपने लिए वह, जो वे चाहें।

58. और जब उनमें से किसी को बेटी की शुभ सूचना मिलती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह घुटा-घुटा रहता है।

59. जो शुभ सूचना उसे दी गई वह (उसकी दृष्टि में) ऐसी बुराई की बात हुई कि उसके कारण वह लोगों से छिपता फिरता है कि अपमान सहन करके उसे रहने दे या उसे मिट्टी में दबा दे। देखो, कितना बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं!

60. जो लोग आख़िरत को नहीं मानते बुरी मिसाल है उनकी। रहा अल्लाह, तो उसकी मिसाल अत्यन्त उच्च है। वह तो प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

61. यदि अल्लाह लोगों को उनके अत्याचार पर पकड़ने ही लग जाता तो धरती पर किसी जीवधारी को न छोड़ता, किन्तु वह उन्हें एक निश्चित समय तक टाले जाता है। फिर जब उनका नियत समय आ जाता है तो वे न तो

يَسْتَأْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝ وَيَجْعَلُوْنَ
لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ
لَهُمُ الْحُسْنٰى ۚ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ
مُّفْرَطُوْنَ ۝ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ
مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ
وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَمَآ
اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّسْمَعُوْنَ ۝ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ
نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ
لَّبَنًا خَالِصًا سَاۗىِٕغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝ وَمِنْ ثَمَرٰتِ

एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।

62. वे अल्लाह के लिए वह कुछ ठहराते हैं, जिसे ख़ुद अपने लिए नापसन्द करते हैं और उनकी ज़बानें झूठ कहती हैं कि उनके लिए अच्छा परिणाम है। निस्संदेह उनके लिए आग है और वे उसी में पड़े छोड़ दिए जाएँगे।

63. अल्लाह की सौगंध! हम तुमसे पहले भी कितने ही समुदायों की ओर रसूल भेज चुके हैं, किन्तु शैतान ने उनकी करतूतों को उनके लिए सुहावना बना दिया। तो वही आज भी उनका संरक्षक है। उनके लिए तो एक दुखद यातना है।

64. हमने यह किताब तुमपर इसी लिए अवतरित की है कि जिसमें वे विभेद कर रहे हैं उसे तुम उनपर स्पष्ट कर दो और यह मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

65. और अल्लाह ही ने आकाश से पानी बरसाया। फिर उसके द्वारा धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवित किया। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सुनते हैं।

66. और तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक बड़ी शिक्षा-सामग्री है, जो कुछ उनके पेटों में है उसमें से गोबर और रक्त के मध्य से हम तुम्हें विशुद्ध दूध पिलाते हैं, जो पीनेवालों के लिए अत्यन्त प्रिय है,

67. और खजूरों और अंगूरों के फलों से भी, जिससे तुम मादक चीज़ भी तैयार कर लेते हो और अच्छी रोज़ी भी। निश्चय ही इसमें बुद्धि से काम

النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَ
رِزْقًا حَسَنًا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝
وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ
الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۝
ثُمَّ كُلِي مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ
رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِن بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ
أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ
وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ
بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝
وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ
فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَادِّي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۚ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ

लेनेवाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है।

68. और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी के जी में यह बात डाल दी कि "पहाड़ों में और वृक्षों में और लोगों के बनाए हुए छत्रों में घर बना।

69. फिर हर प्रकार के फल-फूलों से ख़ुराक ले और अपने रब के समतल मार्गों पर चलती रह।" उसके पेट से विभिन्न रंग का एक पेय निकलता है, जिसमें लोगों के लिए आरोग्य है। निश्चय ही सोच-विचार करनेवाले लोगों के लिए इसमें एक बड़ी निशानी है।

70. अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया। फिर वह तुम्हारी आत्माओं को ग्रस्त कर लेता है और तुममें से कोई (बुढ़ापे की) निकृष्टतम अवस्था की ओर फिर जाता है, कि (परिणामस्वरूप) जानने के पश्चात फिर वह कुछ न जाने। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, बड़ा सामर्थ्यवान है।

71. और अल्लाह ने तुममें से किसी को किसी पर रोज़ी में बड़ाई दी है। किन्तु जिनको बड़ाई दी गई है वे ऐसे नहीं हैं कि अपनी रोज़ी उनकी ओर फेर दिया करते हों जो उनके क़ब्ज़े में हैं कि वे सब इसमें बराबर हो जाएँ। फिर क्या अल्लाह के अनुग्रह का उन्हें इनकार है?[1]

1. अर्थात जब तुम इसके पक्ष में नहीं हो कि अपने माल में अपने नौकर-चाकर और ग़ुलामों को बराबर का भागीदार बना लो, तो फिर यह बात तुम्हें कैसे सही मालूम होती है कि अल्लाह ने लोगों पर जो अनुग्रह किए हैं, उनके प्रति आभार प्रकट करने के सिलसिले में तुम अल्लाह के साथ दूसरों को भी साझीदार ठहराने लगते हो।

يَجْحَدُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَ
حَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ
يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝ وَ
يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا
مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝
فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَ
اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا
مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰي شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ۭ هَلْ
يَسْتَوٗنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا
يَقْدِرُ عَلٰي شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰي مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا

72. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए तुम्हारी सहजाति पत्नियाँ बनाईं और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे लिए पुत्र और पौत्र पैदा किए और तुम्हें अच्छी पाक चीज़ों की रोज़ी प्रदान की; तो क्या वे मिथ्या को मानते हैं और अल्लाह के अनुग्रह ही का उन्हें इनकार है ?

73. और अल्लाह से हटकर उन्हें पूजते हैं, जिन्हें आकाशों और धरती से रोज़ी प्रदान करने का कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं है और न उन्हें कोई सामर्थ्य ही प्राप्त है ।

74. अत: अल्लाह के लिए मिसालें न घड़ो । जानता अल्लाह है, तुम नहीं जानते ।

75. अल्लाह ने एक मिसाल पेश की है : एक ग़ुलाम है, जिसपर दूसरे का अधिकार है, उसे किसी चीज़ पर अधिकार प्राप्त नहीं । इसके विपरीत एक वह व्यक्ति है, जिसे हमने अपनी ओर से अच्छी रोज़ी प्रदान की है, फिर वह उसमें से खुले और छिपे ख़र्च करता रहता है । तो क्या वे परस्पर समान हैं ? प्रशंसा अल्लाह के लिए है ! किन्तु उनमें अधिकतर लोग जानते नहीं ।

76. अल्लाह ने एक और मिसाल पेश की है : दो व्यक्ति हैं । उनमें एक गूँगा है । किसी चीज़ पर उसे अधिकार प्राप्त नहीं । वह अपने स्वामी पर एक

ربما ۔ النحل

يُوَجِّهْهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ۖ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ ۙ وَمَنْ
يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَلِلَّهِ
غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا
كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝ وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا
تَعْلَمُونَ شَيْئًا ۙ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ
وَالْأَفْئِدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا إِلَى
الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا
اللَّهُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَاللَّهُ
جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ
مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ
ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَ
أَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

منزل

बोझ है—— उसे वह जहाँ भेजता है, कुछ भला करके नहीं लाता। क्या वह और जो न्याय का आदेश देता है और स्वयं भी सीधे मार्ग पर है वह, समान हो सकते हैं?

77. आकाशों और धरती के रहस्यों का सम्बन्ध अल्लाह ही से है। और उस क़ियामत की घड़ी का मामला तो बस ऐसा है जैसे आँखों का झपकना या वह इससे भी अधिक निकट है। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

78. अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से इस दशा में निकाला कि तुम कुछ जानते न थे। उसने तुम्हें कान, आँखें और दिल दिए, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

79. क्या उन्होंने पक्षियों को नभ मण्डल में वशीभूत नहीं देखा? उन्हें तो बस अल्लाह ही थामे हुए होता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए कितनी ही निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

80. और अल्लाह ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए टिकने की जगह बनाया है और जानवरों की खालों से भी तुम्हारे लिए घर बनाए—— जिन्हें तुम अपनी यात्रा के दिन और अपने ठहरने के दिन हल्का-फुलका पाते हो—— और एक अवधि के लिए उनके ऊन, उनके लोमचर्म और उनके बालों से कितने ही सामान और बरतने की चीज़ें बनाईं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ
مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ
الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ كَذٰلِكَ يُتِمُّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ
اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَيَوْمَ
نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا
الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝
وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَاۗءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا
هٰٓؤُلَاۗءِ شُرَكَاۗؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ
فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَاَلْقَوْا
اِلَى اللّٰهِ يَوْمَىِٕذِ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

81. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों से छाँवों का प्रबन्ध किया और पहाड़ों में तुम्हारे लिए छिपने के स्थान बनाए और तुम्हें लिबास दिए जो गर्मी से बचाते हैं और कुछ अन्य वस्त्र भी दिए जो तुम्हारी लड़ाई में तुम्हारे लिए बचाव का काम करते हैं। इस प्रकार वह तुमपर अपनी नेमत पूरी करता है, ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

82. फिर यदि वे मुँह मोड़ते हैं तो तुम्हारा दायित्व तो केवल साफ़-साफ़ संदेश पहुँचा देना है।

83. वे अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसका इनकार करते हैं और उनमें अधिकतर तो अकृतज्ञ हैं।

84. याद करो जिस दिन हम हर समुदाय में से एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर जिन्होंने इनकार किया होगा उन्हें कोई अनुमति प्राप्त न होगी। और न उन्हें इसका अवसर ही दिया जाएगा कि वे उसे राज़ी कर लें।

85. और जब वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया, यातना देख लेंगे तो न वह उनके लिए हलकी की जाएगी और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

86. और जब वे लोग जिन्होंने शिर्क किया अपने ठहराए हुए साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे : "हमारे रब! यही हमारे वे साझीदार हैं जिन्हें हम तुझसे हटकर पुकारते थे।" इसपर वे उनकी ओर बात फेंक मारेंगे कि : "तुम बिलकुल झूठे हो।"

87. उस दिन वे अल्लाह के आगे आज्ञाकारी एवं वशीभूत होकर आ पड़ेंगे।

يفترون ۝ الذين كفروا وصدوا عن سبيل
الله زدنهم عذابا فوق العذاب بما كانوا
يفسدون ۝ ويوم نبعث في كل امة شهيدا
عليهم من انفسهم وجئنا بك شهيدا على
هؤلاء ۗ ونزلنا عليك الكتب تبيانا لكل
شيء وهدى ورحمة وبشرى للمسلمين ۝
ان الله يامر بالعدل والاحسان وايتاي ذي
القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي ۚ
يعظكم لعلكم تذكرون ۝ واوفوا بعهد الله اذا
عهدتم ولا تنقضوا الايمان بعد توكيدها و
قد جعلتم الله عليكم كفيلا ۗ ان الله يعلم ما
تفعلون ۝ ولا تكونوا كالتي نقضت غزلها
من بعد قوة انكاثا ۗ تتخذون ايمانكم دخلا

और जो कुछ वे घड़ा करते थे वह सब उनसे खोकर रह जाएगा।

88. जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका उनके लिए हम यातना पर यातना बढ़ाते रहेंगे, उस बिगाड़ के बदले में जो वे पैदा करते रहे।

89. और उस समय को याद करो जब हम हर समुदाय में स्वयं उसके अपने लोगों में से एक गवाह उनपर नियुक्त करके भेज रहे थे और (इसी रीति के अनुसार) तुम्हें इन लोगों पर गवाह नियुक्त करके लाए। हमने तुमपर किताब अवतरित की हर चीज़ को खोलकर बयान करने के लिए और मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ सूचना के रूप में।

90. निश्चय ही अल्लाह न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो।

91. अल्लाह के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करो, जबकि तुमने प्रतिज्ञा की हो। और अपनी क़समों को उन्हें सुदृढ़ करने के पश्चात मत तोड़ो, जबकि तुम अपने ऊपर अल्लाह को अपना ज़ामिन बना चुके हो। निश्चय ही अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

92. तुम उस स्त्री की भाँति न हो जाओ जिसने अपना सूत मेहनत से कातने के पश्चात टुकड़े-टुकड़े करके रख दिया। तुम अपनी क़समों को परस्पर हस्तक्षेप करने का बहाना बनाने लगो इस ध्येय से कि कहीं ऐसा न हो कि

بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ
إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَ
يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ
بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ وَلَا تَشْتَرُوا
بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ
لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ
صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ

एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए। बात केवल यह है कि अल्लाह इस प्रतिज्ञा के द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेता है और जिस बात में तुम विभेद करते हो उसकी वास्तविकता तो वह क़ियामत के दिन अवश्य ही तुमपर खोल देगा।

93. यदि अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही समुदाय बना देता, परन्तु वह जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है। तुम जो कुछ भी करते हो उसके विषय में तो तुमसे अवश्य पूछा जाएगा।

94. तुम अपनी क़समों को परस्पर हस्तक्षेप करने का बहाना न बना लेना। कहीं ऐसा न हो कि कोई क़दम जमने के पश्चात उखड़ जाए और अल्लाह के मार्ग से तुम्हारे रोकने के बदले में तुम्हें तकलीफ़ का मज़ा चखना पड़े और तुम एक बड़ी यातना के भागी ठहरो।

95. और तुच्छ मूल्य के लिए अल्लाह की प्रतिज्ञा का सौदा न करो। अल्लाह के पास जो कुछ है वह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम जानो;

96. तुम्हारे पास जो कुछ है वह तो समाप्त हो जाएगा, किन्तु अल्लाह के पास जो कुछ है वही बाक़ी रहनेवाला है। जिन लोगों ने धैर्य से काम लिया उन्हें तो, जो उत्तम कर्म वे करते रहे उसके बदले में, हम अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।

97. जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग

جो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।

98. अत: जब तुम क़ुरआन पढ़ने लगो तो फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँग लिया करो।

99. उसका तो उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

100. उसका ज़ोर तो बस उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसे अपना मित्र बनाते हैं और उस (अल्लाह) के साथ साझी ठहराते हैं।

حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۞ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ
بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۞ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ
سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۞
اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ
بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۞ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ
وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۚ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ
الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۞ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۗ لِسَانُ الَّذِيْ
يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ
مُّبِيْنٌ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ

101. जब हम किसी आयत की जगह दूसरी आयत बदलकर लाते हैं—— और अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वह अवतरित करता है——तो वे कहते हैं : "तुम स्वयं ही घड़ लेते हो !" नहीं, बल्कि उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

102. कह दो : "इसे तो पवित्र आत्मा ने तुम्हारे रब की ओर से क्रमश: सत्य के साथ उतारा है, ताकि ईमान लानेवालों को जमाव प्रदान करे और आज्ञाकारियों के लिए मार्गदर्शन और शुभ सूचना हो।

103. हमें मालूम है कि वे कहते हैं : "उसको तो बस एक आदमी सिखाता पढ़ाता है।" हालाँकि जिसकी ओर वे संकेत करते हैं उसकी भाषा विदेशी है और यह स्पष्ट अरबी भाषा है।

104. सच्ची बात यह है कि जो लोग अल्लाह की आयतों को नहीं मानते,

لا يهديهم الله ولهم عذاب أليم ۝
إنما يفتري الكذب الذين لا يؤمنون
بآيات الله ۚ وأولئك هم الكاذبون ۝ من
كفر بالله من بعد إيمانه إلا من أكره و
قلبه مطمئن بالإيمان ولكن من شرح
بالكفر صدرا فعليهم غضب من الله ۚ ولهم
عذاب عظيم ۝ ذلك بأنهم استحبوا الحيوة
الدنيا على الآخرة ۚ وأن الله لا يهدي القوم
الكافرين ۝ أولئك الذين طبع الله على
قلوبهم وسمعهم وأبصارهم ۖ وأولئك هم
الغافلون ۝ لا جرم أنهم في الآخرة هم
الخاسرون ۝ ثم إن ربك للذين هاجروا من بعد
ما فتنوا ثم جاهدوا وصبروا ۚ إن ربك من

अल्लाह उनका मार्गदर्शन नहीं करता। उनके लिए तो एक दुखद यातना है।

105. झूठ तो बस वही लोग घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों को मानते नहीं और वही हैं जो झूठे हैं।

106. जिस किसी ने अपने ईमान के पश्चात अल्लाह के साथ कुफ़्र किया—सिवाय उसके जो इसके लिए विवश कर दिया गया हो और दिल उसका ईमान पर संतुष्ट हो—बल्कि वह जिसने सीना कुफ़्र के लिए खोल दिया हो, तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का प्रकोप है और उनके लिए बड़ी यातना है।

107. यह इसलिए कि उन्होंने आख़िरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन को पसन्द किया और यह कि अल्लाह कुफ़्र करनेवाले लोगों का मार्गदर्शन नहीं करता।

108. वही लोग हैं जिनके दिलों और जिनके कानों और जिनकी आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है; और वही हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

109. निश्चय ही आख़िरत में वही घाटे में रहेंगे।

110. फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने इसके उपरांत कि वे आज़माइश में पड़ चुके थे घर-बार छोड़ा, फिर जिहाद (संघर्ष) किया और जमे

بعدها لغفور رحيم ۞ يوم تأتي كل
نفس تجادل عن نفسها وتوفى كل نفس
ما عملت وهم لا يظلمون ۞ وضرب الله
مثلا قرية كانت آمنة مطمئنة يأتيها
رزقها رغدا من كل مكان فكفرت بأنعم
الله فأذاقها الله لباس الجوع والخوف بما
كانوا يصنعون ۞ ولقد جاءهم رسول منهم
فكذبوه فأخذهم العذاب وهم ظالمون ۞
فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا واشكروا
نعمت الله إن كنتم إياه تعبدون ۞ إنما
حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما
أهل لغير الله به فمن اضطر غير باغ ولا
عاد فإن الله غفور رحيم ۞ ولا تقولوا

रहे तो इन बातों के पश्चात तो निश्चय ही तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

111. जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी ओर से बहस करता हुआ आएगा और प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने किया होगा, उसका पूरा-पूरा बदला चुका दिया जाएगा, और उनपर कुछ भी अत्याचार न होगा।

112. अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है : एक बस्ती थी जो निश्चिन्त और संतुष्ट थी। हर जगह से उसकी रोज़ी प्रचुरता के साथ चली आ रही थी कि वह अल्लाह की नेमतों के प्रति अकृतज्ञता दिखाने लगी। तब अल्लाह ने उसके निवासियों को उनकी करतूतों के बदले में भूख का मज़ा चखाया और भय का वस्त्र पहनाया।

113. उनके पास उन्हीं में से एक रसूल आया। किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया। अन्ततः यातना ने उन्हें इस दशा में आ लिया कि वे अत्याचारी थे।

114. अतः जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें हलाल-पाक रोज़ी दी है उसे खाओ और अल्लाह की नेमत के प्रति कृतज्ञता दिखाओ, यदि तुम उसी को स्वामी मानते हो।

115. उसने तो तुमपर केवल मुर्दार, रक्त, सुअर का मांस और जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है। फिर यदि कोई इस प्रकार विवश हो जाए कि न तो उसकी ललक हो और न वह हद से आगे बढ़नेवाला हो तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

116. और अपनी ज़बानों के बयान किए हुए झूठ के आधार पर यह न

لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَ
هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ
إِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيْمٌ ۝ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا
قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ
لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ
بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوْٓا إِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا
لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ شَاكِرًا
لِّأَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰهُ وَهَدٰهُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَإِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ

कहा करो : "यह हलाल है और यह हराम है", ताकि इस तरह अल्लाह पर झूठ आरोपित करो। जो लोग अल्लाह से संबद्ध करके झूठ घड़ते हैं, वे कदापि सफल होनेवाले नहीं।

117. यह उपभोग थोड़ा है, उनके लिए वास्तव में तो दुखद यातना है।

118. जो यहूदी हैं उनपर हम पहले वे चीज़ें हराम कर चुके हैं जिनका उल्लेख हमने तुमसे किया। उनपर तो अत्याचार हमने नहीं किया, ाल्कि वे स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करते रहे।

119. फिर तुम्हारा रब उनके लिए जिन्होंने अज्ञानवश बुरा कर्म किया, फिर इसके बाद तौबा करके सुधार कर लिया, तो निश्चय ही तुम्हारा रब इसके पश्चात बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

120. निश्चय ही इबराहीम की स्थिति एक समुदाय की थी। वह अल्लाह का आज्ञाकारी और उसकी ओर एकाग्र था। वह कोई बहुदेववादी न था।

121. वह उसके (अल्लाह के) उदार अनुग्रहों के प्रति कृतज्ञता दिखलानेवाला था। अल्लाह ने उसे चुन लिया और उसे सीधे मार्ग पर चलाया।

122. और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में भी वह अच्छे

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ
مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝
اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۭ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ
بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ
سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ
فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۭ وَلَىِٕنْ صَبَرْتُمْ
لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا
بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ
مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا
وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝

पूर्णकाम लोगों में से होगा।

123. फिर अब हमने तुम्हारी ओर प्रकाशना की : "इबराहीम के तरीक़े पर चलो, जो बिलकुल एक ओर का हो गया था और बहुदेववादियों में से न था।"

124. 'सब्त'[1] तो केवल उन लोगों पर लागू हुआ था जिन्होंने उसके विषय में विभेद किया था। निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच क़ियामत के दिन उसका फ़ैसला कर देगा, जिसमें वे विभेद करते रहे हैं।

125. अपने रब के मार्ग की ओर तत्त्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह उन्हें भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर हैं।

126. और यदि तुम बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हें कष्ट-पहुँचा हो, किन्तु यदि तुम सब्र करो तो निश्चय ही यह सब्र करनेवालों के लिए ज़्यादा अच्छा है।

127. सब्र से काम लो—और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही से संबद्ध है—और उनपर दुखी न हो और न उससे दिल तंग हो जो चालें वे चलते हैं।

128. निश्चय ही, अल्लाह उनके साथ है जो डर रखते हैं और जो उत्तमकार हैं।

1. देखिए सूरा 'बक़रा', आयत 65


سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ ١٥
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ١٧
سُوْرَةُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مَكِّيَّةٌ (٥٠) (١٧)
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ
اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ
دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝ ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
عَبْدًا شَكُوْرًا ۝ وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِي
الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ
عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ
عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ
وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ
وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝
منزل ٤

17. बनी इसराईल

(मक्का में उतरी—आयतें 111)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या ही महिमावान है वह जो रातों- रात अपने बन्दे (मुहम्मद) को प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) से दूरवर्ती मस्जिद (अक़्सा) तक ले गया, जिसके चतुर्दिक को हमने बरकत दी, ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ। निस्संदेह वही सब कुछ सुनता, देखता है।

2. हमने मूसा को किताब दी थी और उसे इसराईल की संतान के लिए मार्गदर्शन बनाया था कि "मेरे सिवा किसी को कार्य-साधक न ठहराना।"

3. ऐ उनकी सन्तान, जिन्हें हमने नूह के साथ (नौका में) सवार किया था! निश्चय ही वह एक कृतज्ञ बन्दा था।

4. और हमने किताब में इसराईल की सन्तान को इस फ़ैसले की ख़बर दे दी थी : "तुम धरती में अवश्य दो बार बड़ा फ़साद मचाओगे और बड़ी सरकशी दिखाओगे।"

5. फिर जब उन दोनों में से पहले वादे का मौक़ा आ गया तो हमने तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे बन्दों को उठाया जो युद्ध में बड़े बलशाली थे। तो वे बस्तियों में घुसकर हर ओर फैल गए और यह वादा पूरा होना ही था।

6. फिर हमने तुम्हारी बारी उनपर लौटाई कि उनपर प्रभावी हो सको। और धनों और पुत्रों से तुम्हारी सहायता की और तुम्हें बहुसंख्यक लोगों का एक जत्था बनाया।

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا
تَتْبِيرًا ۝ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ
عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝ إِنَّ هَٰذَا
الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ
الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝
وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ۝ وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَ
كَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً
لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَ
الْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ۝ وَكُلَّ

7. "यदि तुमने भलाई की तो अपने ही लिए भलाई की और यदि तुमने बुराई की तो अपने ही लिए की।" फिर जब दूसरे वादे का मौक़ा आ गया (तो हमने तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसे प्रबल को उठाया) कि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुलमक़दिस) में घुस जाएँ, जैसे पहली बार वे उसमें घुसे थे और ताकि जिस चीज़ पर भी उनका ज़ोर चले विनष्ट कर डालें।

8. हो सकता है तुम्हारा रब तुमपर दया करे, किन्तु यदि तुम फिर उसी पूर्व नीति की ओर पलटे तो हम भी पलटेंगे, और हमने जहन्नम को इनकार करनेवालों के लिए कारागार बना रखा है।

9. वास्तव में यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है और उन मोमिनों को, जो अच्छे कर्म करते हैं, शुभ सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा बदला है।

10. और यह कि जो आख़िरत को नहीं मानते उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

11. मनुष्य उस प्रकार बुराई माँगता है जिस प्रकार उसकी प्रार्थना भलाई के लिए होनी चाहिए। मनुष्य है ही बड़ा उतावला!

12. हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाई हैं। फिर रात की निशानी को हमने मिटी हुई (प्रकाशहीन) बनाया और दिन की निशानी को हमने प्रकाशमान बनाया, ताकि तुम अपने रब का अनुग्रह (रोज़ी) ढूँढ़ो और ताकि तुम वर्षों की गणना और हिसाब मालूम कर सको, और हर चीज़ को हमने अलग-अलग स्पष्ट कर रखा है।

13. हमने प्रत्येक मनुष्य का शकुन-अपशकुन उसकी अपनी गरदन से बाँध

दिया है और क़ियामत के दिन हम उसके लिए एक किताब निकालेंगे, जिसको वह खुला हुआ पाएगा।

14. "पढ़ ले अपनी किताब (कर्मपत्र)! आज तू स्वयं ही अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।"

15. जो कोई सीधा मार्ग अपनाए तो उसने अपने ही लिए सीधा मार्ग अपनाया और जो पथभ्रष्ट हुआ, तो वह अपने ही बुरे के लिए भटका। और कोई भी बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और हम लोगों को यातना नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेज दें।

اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۝ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى
بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا
يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ
حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝ وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً
اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ
فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ
مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ
بَصِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ
فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ
يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ
سَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ

16. और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करने का इरादा कर लेते हैं तो उसके सुखभोगी लोगों को आदेश देते हैं तो (आदेश मानने के बजाए) वे वहाँ अवज्ञा करने लग जाते हैं, तब उनपर बात पूरी हो जाती है, फिर हम उन्हें बिलकुल उखाड़ फेंकते हैं।

17. हमने नूह के पश्चात कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर दिया। तुम्हारा रब अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने, देखने के लिए काफ़ी है।

18. जो कोई शीघ्र प्राप्त होनेवाली[1] को चाहता है उसके लिए हम उसी में जो कुछ किसी के लिए चाहते हैं शीघ्र प्रदान कर देते हैं। फिर उसके लिए हमने जहन्नम तैयार कर रखा है जिसमें वह अपयशग्रस्त और ठुकराया हुआ प्रवेश करेगा।

19. और जो आख़िरत चाहता हो और उसके लिए ऐसा प्रयास भी करे जैसा कि उसके लिए प्रयास करना चाहिए और वह हो मोमिन, तो ऐसे ही लोग हैं

1. अर्थात दुनिया।

जिनके प्रयास की क़द्र की जाएगी।

20. इन्हें भी और इनको भी, प्रत्येक को हम तुम्हारे रब की देन में से सहायता पहुँचाए जा रहे हैं, और तुम्हारे रब की देन बन्द नहीं है।

21. देखो, कैसे हमने उनके कुछ लोगों को कुछ के मुक़ाबले में आगे रखा है! और आख़िरत दर्जों की दृष्टि से सबसे बढ़कर है और श्रेष्ठता की दृष्टि से भी वह सबसे बढ़-चढ़कर है।

22. अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य-प्रभु न बनाओ अन्यथा निन्दित और असहाय होकर बैठे रह जाओगे।

مَشْكُوْرًا ۝ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ
وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا
بَعْضَهُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ
تَفْضِيْلًا ۝ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا
مَّخْذُوْلًا ۝ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا
فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا
كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ
وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ
بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ
لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ
وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ
كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝

23. तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें 'उँह' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टापूर्वक बात करो।

24. और उनके आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएँ बिछाए रखो और कहो : "मेरे रब! जिस प्रकार उन्होंने बालकाल में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।"

25. जो कुछ तुम्हारे जी में है उसे तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है। यदि तुम सुयोग्य और अच्छे हुए तो निश्चय ही वह भी ऐसे रुजू करनेवालों के लिए बड़ा क्षमाशील है।

26. और नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी—— और फ़ुज़ूलख़र्ची न करो।

27. निश्चय ही फ़ुज़ूलख़र्ची करनेवाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ही कृतघ्न है।——

الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ وَلَا تَقْفُ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ
كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي
الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ
الْجِبَالَ طُولًا ۝ كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ
مَكْرُوهًا ۝ ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا
مَدْحُورًا ۝ أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۝ وَلَقَدْ
صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا
نُفُورًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا
لَابْتَغَوْا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝ سُبْحَانَهُ وَ
تَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ

ع

यही उत्तम और परिणाम की दृष्टि से भी अधिक अच्छा है।

36. और जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान न हो उसके पीछे न लगो। निस्संदेह कान और आँख और दिल इनमें से प्रत्येक के विषय में पूछा जाएगा।

37. और धरती में अकड़कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो।

38. इनमें से प्रत्येक की बुराई तुम्हारे रब की दृष्टि में अप्रिय ही है।

39. ये तत्त्वदर्शिता की वे बातें हैं, जिनकी प्रकाशना तुम्हारे रब ने तुम्हारी ओर की है। और देखो, अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य-प्रभु न घड़ना, अन्यथा जहन्नम में डाल दिए जाओगे निन्दित, ठुकराए हुए!

40. क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें तो बेटों के लिए ख़ास किया और स्वयं अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ बनाया? बहुत भारी बात है जो तुम कह रहे हो!

41. हमने इस क़ुरआन में विभिन्न ढंग से बात का स्पष्टीकरण किया कि वे चेतें, किन्तु इससे उनकी नफ़रत ही बढ़ती है।

42. कह दो : "यदि उसके साथ अन्य भी पूज्य-प्रभु होते, जैसा कि ये कहते हैं, तब तो वे सिंहासनवाले (के पद) तक पहुँचने का कोई मार्ग अवश्य तलाश करते।"

43. महिमावान है वह! और बहुत उच्च है उन बातों से जो वे कहते हैं!

44. सातों आकाश और धरती और जो कोई भी उनमें है सब उसकी तसबीह

الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ وَلَا تَقْفُ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ
كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي
الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ
الْجِبَالَ طُولًا ۝ كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ
مَكْرُوهًا ۝ ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا
مَدْحُورًا ۝ أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۝ وَلَقَدْ
صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا
نُفُورًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا
لَابْتَغَوْا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝ سُبْحَانَهُ وَ
تَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ

منزل ٤

यही उत्तम और परिणाम की दृष्टि से भी अधिक अच्छा है।

36. और जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान न हो उसके पीछे न लगो। निस्संदेह कान और आँख और दिल इनमें से प्रत्येक के विषय में पूछा जाएगा।

37. और धरती में अकड़कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो।

38. इनमें से प्रत्येक की बुराई तुम्हारे रब की दृष्टि में अप्रिय ही है।

39. ये तत्त्वदर्शिता की वे बातें हैं, जिनकी प्रकाशना तुम्हारे रब ने तुम्हारी ओर की है। और देखो, अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य-प्रभु न घड़ना, अन्यथा जहन्नम में डाल दिए जाओगे निन्दित, ठुकराए हुए!

40. क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें तो बेटों के लिए ख़ास किया और स्वयं अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ बनाया? बहुत भारी बात है जो तुम कह रहे हो!

41. हमने इस क़ुरआन में विभिन्न ढंग से बात का स्पष्टीकरण किया कि वे चेतें, किन्तु इससे उनकी नफ़रत ही बढ़ती है।

42. कह दो : "यदि उसके साथ अन्य भी पूज्य-प्रभु होते, जैसा कि ये कहते हैं, तब तो वे सिंहासनवाले (के पद) तक पहुँचने का कोई मार्ग अवश्य तलाश करते।"

43. महिमावान है वह! और बहुत उच्च है उन बातों से जो वे कहते हैं!

44. सातों आकाश और धरती और जो कोई भी उनमें है सब उसकी तसबीह

السبع والارض ومن فيهن ۚ وان من شيء الا يسبح
بحمده ولكن لا تفقهون تسبيحهم ۗ انه كان
حليما غفورا ۝ واذا قرات القران جعلنا بينك
وبين الذين لا يؤمنون بالاخرة حجابا مستورا ۝ و
جعلنا على قلوبهم اكنة ان يفقهوه وفي اذانهم
وقرا ۚ واذا ذكرت ربك في القران وحده ولوا على
ادبارهم نفورا ۝ نحن اعلم بما يستمعون به اذ
يستمعون اليك واذ هم نجوى اذ يقول الظلمون
ان تتبعون الا رجلا مسحورا ۝ انظر كيف ضربوا
لك الامثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ۝ و
قالوا ءاذا كنا عظاما ورفاتا ءانا لمبعوثون
خلقا جديدا ۝ قل كونوا حجارة او حديدا ۝ او
خلقا مما يكبر في صدوركم ۚ فسيقولون من يعيدنا ۚ

(महिमागान) करते हैं और ऐसी कोई चीज़ नहीं जो उसका गुणगान न करती हो। किन्तु तुम उनकी तसबीह को समझते नहीं। निश्चय ही वह अत्यन्त सहनशील, क्षमावान है।

45. जब तुम क़ुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के बीच, जो आख़िरत को नहीं मानते, एक अदृश्य पर्दे की आड़ कर देते हैं।

46. और उनके दिलों पर भी परदे डाल देते हैं कि वे समझ न सकें। और उनके कानों में बोझ (कि वे सुन न सकें)। और जब तुम क़ुरआन के माध्यम से अपने रब का वर्णन उसे अकेला बताते हुए करते हो तो वे नफ़रत से अपनी पीठ फेरकर चल देते हैं।

47. जब वे तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो हम भली-भाँति जानते हैं कि उनके कान लगाने का प्रयोजन क्या है और उसे भी जब वे आपस में कानाफूसियाँ करते हैं, जब वे ज़ालिम कहते हैं : "तुम लोग तो बस उस आदमी के पीछे चलते हो जो पक्का जादूगर है।"

48. देखो, वे कैसी मिसालें तुमपर चस्पाँ करते हैं! वे तो भटक गए, अब कोई मार्ग नहीं पा सकते!

49. वे कहते हैं : "क्या जब हम हड्डियाँ और चूर्ण-विचूर्ण होकर रह जाएँगे, तो क्या हम फिर नए बनकर उठेंगे?"

50. कह दो : "तुम पत्थर या लोहा हो जाओ,

51. या कोई और चीज़ जो तुम्हारे जी में अत्यन्त विकट हो।" तब वे कहेंगे : "कौन हमें पलटाकर लाएगा?" कह दो : "वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा

किया।" तब वे तुम्हारे आगे अपने सिरों को हिला-हिलाकर कहेंगे : "अच्छा तो वह कब होगा?" कह दो : "कदाचित कि वह निकट ही हो।"

52. जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उसकी प्रशंसा करते हुए उसकी आज्ञा को स्वीकार करोगे और समझोगे कि तुम बस थोड़ी ही देर ठहरे रहे हो।

53. मेरे बन्दों से कह दो कि : "बात वही कहें जो उत्तम हो। शैतान तो उनके बीच उकसाकर फ़साद डालता रहता है। निस्संदेह शैतान मनुष्य का प्रत्यक्ष शत्रु है।"

قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ
رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ ۖ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ
قَرِيبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ
إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝ وَقُلْ لِعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ
كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُبِينًا ۝ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ
إِنْ يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِنْ يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَىٰ بَعْضٍ ۖ وَ
آتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ
دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۝
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ
الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ

54. तुम्हारा रब तुमसे भली-भाँति परिचित है। वह चाहे तो तुमपर दया करे या चाहे तो तुम्हें यातना दे। हमने तुम्हें उनकी ज़िम्मेदारी लेनेवाला कोई व्यक्ति बनाकर नहीं भेजा है (कि उन्हें अनिवार्यतः संमार्ग पर ला ही दो)।

55. तुम्हारा रब उससे भी भली-भाँति परिचित है जो कोई आकाशों और धरती में है, और हमने कुछ नबियों को कुछ की अपेक्षा श्रेष्ठता दी और हमने ही दाऊद को ज़बूर प्रदान की थी।

56. कह दो : "तुम उससे इतर जिनको भी पूज्य-प्रभु समझते हो उन्हें पुकार कर देखो। वे न तुमसे कोई कष्ट दूर करने का अधिकार रखते हैं और न उसे बदलने का।"

57. जिनको ये लोग पुकारते हैं वे तो स्वयं अपने रब का सामीप्य ढूँढ़ते हैं कि कौन उनमें से सबसे अधिक निकटता प्राप्त कर ले। और वे उसकी दयालुता की आशा रखते हैं और उसकी यातना से डरते रहते हैं। तुम्हारे रब

عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ۝ وَاِنْ مِّنْ
قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا
عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝
وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا
الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ
وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ
رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ
اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ؕ
وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ
ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۝ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ
كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ
ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

की यातना तो है ही डरने की चीज़ !

58. कोई भी (अवज्ञाकारी) बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़ियामत के दिन से पहले विनष्ट न कर दें या उसे कठोर यातना न दें। यह बात किताब में लिखी जा चुकी है।

59. हमें निशानियाँ (देकर नबी को) भेजने से इसके सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका कि पहले के लोग उनको झुठला चुके हैं। और (उदाहरणार्थ) हमने समूद को स्पष्ट प्रमाण के रूप में ऊँटनी दी, किन्तु उन्होंने उसके साथ ग़लत नीति अपनाकर स्वयं अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। हम निशानियाँ तो डराने ही के लिए भेजते हैं।

60. जब हमने तुमसे कहा था : "तुम्हारे रब ने लोगों को अपने घेरे में ले रखा है और जो अलौकिक दर्शन हमने तुम्हें कराया उसे तो हमने लोगों के लिए केवल एक आज़माइश बना दिया और उस वृक्ष को भी जिसे क़ुरआन में तिरस्कृत ठहराया गया है। हम उन्हें डराते हैं, किन्तु यह चीज़ उनकी बढ़ी हुई सरकशी ही को बढ़ा रही है।"

61. याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा : "आदम को सजदा करो तो इबलीस को छोड़कर सबने सजदा किया।" उसने कहा : "क्या मैं उसे सजदा करूँ, जिसे तूने मिट्टी से बनाया है ?"

62. कहने लगा : "देख तो सही, उसे जिसको तूने मेरे मुक़ाबले में श्रेष्ठता प्रदान की है, यदि तूने मुझे क़ियामत के दिन तक मुहलत दे दी, तो मैं अवश्य ही उसकी संतान को वश में करके उसका उन्मूलन कर डालूँगा। केवल थोड़े ही लोग बच सकेंगे।"

63. कहा : "जा, उनमें से जो भी तेरा अनुसरण करेगा, तो तुझ सहित ऐसे

فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ۝ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ
اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ
رَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا
يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ إِلَّا غُرُوْرًا ۝ إِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ
عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ۝ رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ
لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ إِنَّهٗ كَانَ
بِكُمْ رَحِيْمًا ۝ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ
تَدْعُوْنَ إِلَّا إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ؕ وَ
كَانَ الْإِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ
الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
وَكِيْلًا ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً أُخْرٰى
فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ
ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ۝ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا

सभी लोगों का भरपूर बदला जहन्नम है।

64. उनमें से जिस किसी पर तेरा बस चले उसके क़दम अपनी आवाज़ से उखाड़ दे। और उनपर अपने सवार और अपने प्यादे (पैदल सेना) चढ़ा ला। और माल और संतान में भी उनके साथ साझा लगा। और उनसे वादे कर!"—— किन्तु शैतान उनसे जो वादे करता है वह एक धोखे के सिवा और कुछ भी नहीं होता।——

65. "निश्चय ही जो मेरे (सच्चे) बन्दे हैं उनपर तेरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सकता।" तुम्हारा रब इसके लिए काफ़ी है कि अपना मामला उसी को सौंप दिया जाए।

66. तुम्हारा रब तो वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौका चलाता है, ताकि तुम उसका अनुग्रह (आजीविका) तलाश करो। वह तुम्हारे हाल पर अत्यन्त दयावान है।

67. जब समुद्र में तुमपर कोई आपदा आती है तो उसके सिवा वे सब जिन्हें तुम पुकारते हो, गुम होकर रह जाते हैं : किन्तु फिर जब वह तुम्हें बचाकर थल पर पहुँचा देता है तो तुम उससे मुँह मोड़ जाते हो। मानव बड़ा ही अकृतज्ञ है।

68. क्या तुम इससे निश्चिन्त हो कि वह कभी थल की ओर ले जाकर तुम्हें धँसा दे या तुमपर पथराव करनेवाली आँधी भेज दे; फिर अपना कोई कार्यसाधक न पाओ?

69. या तुम इससे निश्चिन्त हो कि वह फिर तुम्हें उसमें दोबारा ले जाए और तुमपर प्रचण्ड तूफ़ानी हवा भेज दे और तुम्हें तुम्हारे इनकार के बदले में डूबो दे। फिर तुम किसी को ऐसा न पाओ जो तुम्हारे लिए इसपर हमारा पीछा करनेवाला हो?

بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا
تَفْضِيْلًا ۝ يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ
اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا
يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ
عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ
وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ
كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۝ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ
الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝
وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ
مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ سُنَّةَ
مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

70. हमने आदम की सन्तान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी और अच्छी-पाक चीज़ों की उन्हें रोज़ी दी और अपने पैदा किए हुए बहुत-से प्राणियों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।

71. (उस दिन से डरो) जिस दिन हम मानव के प्रत्येक गिरोह को उसके अपने नायक के साथ बुलाएँगे। फिर जिसे उसका कर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, तो ऐसे लोग अपना कर्मपत्र पढ़ेंगे और उनके साथ तनिक भी अन्याय न होगा।

72. और जो यहाँ अंधा होकर रहा वह आखिरत में भी अंधा ही रहेगा, बल्कि वह मार्ग से और भी अधिक दूर पड़ा होगा।

73. और वे तो लगते थे कि तुम्हें फ़ितने में डालकर उस चीज़ से हटा देने को हैं जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है, ताकि तुम उससे भिन्न चीज़ घड़कर हमपर थोपो, और तब वे तुम्हें अपना घनिष्ट मित्र बना लेते।

74. यदि हम तुम्हें जमाव प्रदान न करते तो तुम उनकी ओर थोड़ा झुकने के निकट जा पहुँचते।

75. उस समय हम तुम्हें जीवन में भी दोहरा मज़ा चखाते और मृत्यु के पश्चात भी दोहरा मज़ा चखाते। फिर तुम हमारे मुक़ाबले में अपना कोई सहायक न पाते।

76. और निश्चय ही उन्होंने चाल चली कि इस भूभाग से तुम्हारे क़दम उखाड़ दें, ताकि तुम्हें यहाँ से निकालकर ही रहें। और ऐसा हुआ तो तुम्हारे पीछे ये भी रह थोड़े ही पाएँगे।

77. यही कार्य-प्रणाली हमारे उन रसूलों के विषय में भी रही है, जिन्हें हमने

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ ١٥ — بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ١٧

تَحْوِيْلًا ۝ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ
وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۚ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ۝ وَ
مِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ
رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ
صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ
لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ
الْبَاطِلُ ۚ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ
الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ
الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ
اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ۝
قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ۖ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ
هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۖ قُلِ
الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ۝

منزل ٤

तुमसे पहले भेजा था और तुम हमारी कार्य-प्रणाली में कोई अन्तर न पाओगे।

78. नमाज़ क़ायम करो सूर्य के ढलने से लेकर रात के छा जाने तक और फ़ज्र (प्रभात) के क़ुरआन (अर्थात् फ़ज्र की नमाज़) के पाबन्द रहो। निश्चय ही फ़ज्र का क़ुरआन पढ़ना हुज़ूरी की चीज़ है।

79. और रात के कुछ हिस्से में उस (क़ुरआन) के द्वारा जागरण किया करो, यह तुम्हारे लिए तद्अधिक (नफ़्ल) है। आशा है कि तुम्हारा रब तुम्हें उठाए ऐसा उठाना जो प्रशंसित हो।

80. और कहो : "मेरे रब! तू मुझे ख़ूबी के साथ दाख़िल कर और ख़ूबी के साथ निकाल, और अपनी ओर से मुझे सहायक शक्ति प्रदान कर।"

81. कह दो : "सत्य आ गया और असत्य मिट गया; असत्य तो मिट जानेवाला ही होता है।"

82. हम क़ुरआन में से जो उतारते हैं वह मोमिनों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) और दयालुता है, किन्तु ज़ालिमों के लिए तो वह बस घाटे ही में अभिवृद्धि करता है।

83. मानव पर जब हम सुखद कृपा करते हैं तो वह मुँह फेरता और अपना पहलू बचाता है। किन्तु जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है, तो वह निराश होने लगता है।

84. कह दो : "हर एक अपने ढब पर काम कर रहा है, तो अब तुम्हारा रब ही भली-भाँति जानता है कि कौन अधिक सीधे मार्ग पर है।"

85. वे तुमसे रूह के विषय में पूछते हैं। कह दो : "रूह का सबध तो मेरे रब के आदेश से है, किन्तु ज्ञान तुम्हें मिला थोड़ा ही है।"

86. यदि हम चाहें तो वह सब छीन लें जो हमने तुम्हारी ओर प्रकाशना की है, फिर इसके लिए हमारे मुक़ाबले में अपना कोई समर्थक न पाओगे ।

87. यह तो बस तुम्हारे रब की दयालुता है । वास्तविकता यह है कि उसका तुमपर बड़ा अनुग्रह है ।

88. कह दो : "यदि मनुष्य और जिन्न इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ कि इस क़ुरआन जैसी कोई चीज़ लाएँ, तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों ।"

وَلَئِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا
تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِّن
رَّبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۝ قُل لَّئِنِ
اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا
الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
ظَهِيرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ
مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۝
وَقَالُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ
يَنبُوعًا ۝ أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ
فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ۝ أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ
كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
قَبِيلًا ۝ أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرُفٍ أَوْ تَرْقَىٰ
فِي السَّمَاءِ ۚ وَلَن نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا

89. हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए प्रत्येक तत्वदर्शिता की बात फेर-फेरकर बयान की, फिर भी अधिकतर लोगों के लिए इनकार के सिवा हर चीज़ अस्वीकार्य ही रही ।

90. और उन्होंने कहा : "हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, जब तक कि तुम हमारे लिए धरती से एक स्रोत प्रवाहित न कर दो,

91. या फिर तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो और तुम उसके बीच बहती नहरें निकाल दो,

92. या आकाश को टुकड़े-टुकड़े करके हम पर गिरा दो जैसा कि तुम्हारा दावा है, या अल्लाह और फ़रिश्तों ही को हमारे समक्ष ले आओ,

93. या तुम्हारे लिए स्वर्ण-निर्मित एक घर हो जाए या तुम आकाश में चढ़ जाओ, और हम तुम्हारे चढ़ने को भी कदापि न मानेंगे, जब तक कि तुम हमपर एक किताब न उतार लाओ, जिसे हम पढ़ सकें ।" कह दो : "महिमावान है

मेरा रब! क्या मैं एक संदेश लानेवाला मनुष्य के सिवा कुछ और भी हूँ?"

94. लोगों को जबकि उनके पास मार्गदर्शन आया तो उनको ईमान लाने से केवल यही चीज़ रुकावट बनी कि वे कहने लगे : "क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बनाकर भेज दिया?"

95. कह दो : "यदि धरती में फ़रिश्ते आबाद होकर चलते-फिरते होते तो हम उनके लिए अवश्य आकाश से किसी फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजते।"

96. कह दो : "मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही एक गवाह काफ़ी है। निश्चय ही वह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखनेवाला, देखनेवाला है।"

97. जिसे अल्लाह ही मार्ग दिखाए वही मार्ग पानेवाला है और वह जिसे पथ भ्रष्ट होने दे, तो ऐसे लोगों के लिए उससे इतर तुम सहायक न पाओगे। क़ियामत के दिन हम उन्हें औंधे मुँह इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि वे अंधे, गूँगे और बहरे होंगे। उनका ठिकाना जहन्नम है। जब भी उसकी आग धीमी पड़ने लगेगी तो हम उसे उनके लिए और भड़का देंगे।

98. यही उनका बदला है, इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया और कहा : "क्या जब हम केवल हड्डियाँ और चूर्ण-विचूर्ण होकर रह जाएँगे, तो क्या हमें नए सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जाएगा?"

99. क्या उन्हें यह न सूझा कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया है उसे उन जैसों को भी पैदा करने की सामर्थ्य प्राप्त है? उसने तो उनके लिए एक समय निर्धारित कर रखा है, जिसमें कोई संदेह नहीं है। फिर भी ज़ालिमों के

سُبْحٰنَ الَّذِیْ ١٥ — بَنِیْ اِسْرَآءِیْل ١٧

كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ۗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا
رَّسُوْلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ
الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ قُلْ
لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ
لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ۝ قُلْ كَفٰى
بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ
خَبِيْرًا بَصِيْرًا ۝ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ وَنَحْشُرُهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰي وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۭ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۭ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۝ ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ
بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا
ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓي اَنْ يَّخْلُقَ

منزل ٤

مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ
إِلَّا كُفُورًا ۝ قُل لَّوْ أَنتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي
إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ قَتُورًا ۝
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَاسْأَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ
إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا مُوسَىٰ
مَسْحُورًا ۝ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنزَلَ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا فِرْعَوْنُ
مَثْبُورًا ۝ فَأَرَادَ أَن يَسْتَفِزَّهُم مِّنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَ
مَن مَّعَهُ جَمِيعًا ۝ وَقُلْنَا مِن بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ
اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝
وَبِالْحَقِّ أَنزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا
وَنَذِيرًا ۝ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ
مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنزِيلًا ۝ قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ

लिए इनकार के सिवा हर चीज़ अस्वीकार्य ही रही।

100. कहो : "यदि कहीं मेरे रब की दयालुता के ख़ज़ाने तुम्हारे अधिकार में होते तो ख़र्च हो जाने के भय से तुम रोके ही रखते। वास्तव में इनसान तो दिल का बड़ा ही तंग है।

101. हमने मूसा को नौ खुली निशानियाँ प्रदान की थीं। अब इसराईल की संतान से पूछ लो कि जब वह उनके पास आया और फ़िरऔन ने उससे कहा : "ऐ मूसा ! मैं तो तुम्हें बड़ा जादूगर समझता हूँ।"

102. उसने कहा : "तू भली-भाँति जानता है कि आकाशों और धरती के रब के सिवा किसी और ने इन (निशानियों) को स्पष्ट प्रमाण बनाकर नहीं उतारा है। और ऐ फ़िरऔन ! मैं तो समझता हूँ कि तू विनष्ट होने को है।"

103. अन्ततः उसने चाहा कि उनको उस भूभाग से उखाड़ फेंके, किन्तु हमने उसे और जो उसके साथ थे सभी को डुबो दिया।

104. और हमने उसके बाद इसराईल की संतान से कहा : "तुम इस भूभाग में बसो। फिर जब आख़िरत का वादा आ पूरा होगा, तो हम तुम सबको इकट्ठा ला उपस्थित करेंगे।"

105. सत्य के साथ हमने उसे अवतरित किया और सत्य के साथ वह अवतरित भी हुआ। और तुम्हें तो हमने केवल शुभ सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा है।

106. और क़ुरआन को हमने थोड़ा-थोड़ा करके इसलिए अवतरित किया, ताकि तुम ठहर-ठहरकर उसे लोगों को सुनाओ, और हमने उसे उत्तम रीति से क्रमशः उतारा है।



107. कह दो : "तुम उसे मानो या न मानो, जिन लोगों को इससे पहले ज्ञान दिया गया है, उन्हें जब वह पढ़कर सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सजदे में गिर पड़ते हैं।

108. और कहते हैं : "महान और उच्च है हमारा रब ! हमारे रब का वादा तो पूरा होकर ही रहता है।"

109. और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं और वह (क़ुरआन) उनकी विनम्रता को और बढ़ा देता है।

110. कह दो : "तुम अल्लाह को पुकारो या रहमान को पुकारो या जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिए सब अच्छे ही नाम हैं।" और अपनी नमाज़ न बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़ो और न उसे बहुत चुपके से पढ़ो, बल्कि इन दोनों के बीच मध्य मार्ग अपनाओ।

111. और कहो : "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने न तो अपना कोई बेटा बनाया और न बादशाही में उसका कोई सहभागी है और न ऐसा ही है कि वह दीन-हीन हो जिसके कारण बचाव के लिए उसका कोई सहायक मित्र हो।" और बड़ाई बयान करो उसकी, पूर्ण बड़ाई।

18. अल-कहफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 110)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर यह किताब अवतरित की और उसमें (अर्थात उस बन्दे में) कोई टेढ़ नहीं रखी,

2. ठीक और दुरुस्त, ताकि एक कठोर आपदा से सावधान कर दे जो उसकी

لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ
اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۝ مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۝ وَّ
يُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۝ مَا لَهُمْ بِهٖ
مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ
اَفْوَاهِهِمْ ۚ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ
نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ
اَسَفًا ۝ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا
لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا
عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۝ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ
الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝ اِذْ اَوَى
الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ
رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا
عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ

ओर से आ पड़ेगी। और मोमिनों को, जो अच्छे कर्म करते हैं, शुभ सूचना दे दे कि उनके लिए अच्छा बदला है;

3. जिसमें वे सदैव रहेंगे।

4. और उनको सावधान कर दे, जो कहते हैं : "अल्लाह संतानवाला है।"

5. इसका न उन्हें कोई ज्ञान है और न उनके बाप-दादा ही को था। बड़ी बात है जो उनके मुँह से निकलती है। वे केवल झूठ बोलते हैं।

6. अच्छा, शायद उनके पीछे, यदि उन्होंने यह बात न मानी तो तुम अफ़सोस के मारे अपने प्राण ही खो दोगे!

7. धरती पर जो कुछ है उसे तो हमने उसकी शोभा बनाई है, ताकि हम उनकी परीक्षा लें कि उनमें कर्म की दृष्टि से कौन उत्तम है।

8. और जो कुछ उसपर है उसे तो हम एक चटियल मैदान बना देनेवाले हैं।

9. क्या तुम समझते हो कि गुफा और रक़ीमवाले हमारी अद्‌भुत निशानियों में से थे?

10. जब उन नवयुवकों ने गुफा में जाकर शरण ली तो कहा : "हमारे रब! हमें अपने यहाँ से दयालुता प्रदान कर और हमारे लिए हमारे अपने मामले को ठीक कर दे।"

11. फिर हमने उस गुफा में कई वर्षों के लिए उनके कानों पर परदा डाल दिया।

بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْٓا
اَمَدًا ۟ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ
فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ۟ وَّرَبَطْنَا
عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ
اِذًا شَطَطًا ۝ هٰۤؤُلَاۤءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ
اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۟ وَاِذِ
اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ
یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ مِّنْ
اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝ وَتَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ
عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ

12. फिर हमने उन्हें भेजा, ताकि मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से किसने याद रखा है कि कितनी अवधि तक वे रहे।

13. हम तुम्हें ठीक-ठीक उनका वृत्तान्त सुनाते हैं। वे कुछ नव युवक थे जो अपने रब पर ईमान लाए थे, और हमने उन्हें मार्गदर्शन में बढ़ोत्तरी प्रदान की।

14. और हमने उनके दिलों को सुदृढ़ कर दिया। जब वे उठे तो उन्होंने कहा : "हमारा रब तो वही है जो आकाशों और धरती का रब है। हम उससे इतर किसी अन्य पूज्य को कदापि न पुकारेंगे। यदि हमने ऐसा किया तब तो हमारी बात हक़ से बहुत हटी हुई होगी।

15. ये हमारी क़ौम के लोग हैं, जिन्होंने उससे इतर कुछ अन्य पूज्य-प्रभु बना लिए हैं। आख़िर ये उनके हक़ में कोई स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं लाते! भला उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो झूठ घड़कर अल्लाह पर थोपे?

16. और जबकि इनसे तुम अलग हो गए हो और उनसे भी जिनको अल्लाह के सिवा ये पूजते हैं, तो गुफा में चलकर शरण लो। तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी दयालुता का दामन फैला देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे अपने काम के सम्बन्ध में सुगमता का उपकरण उपलब्ध कराएगा।"

17. और तुम सूर्य को उसके उदित होते समय देखते तो दिखाई देता कि वह उनकी गुफा से दाहिनी ओर को बचकर निकल जाता है और जब अस्त होता है तो उनकी बाईं ओर कतराकर निकल जाता है। और वे हैं कि उस (गुफा) के एक विस्तृत स्थान में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसे

اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ
فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا
وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ
الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ
عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝ وَ
كَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ
مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ
قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى
طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا
يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ۝ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ
يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا
اَبَدًا ۝ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ

अल्लाह मार्ग दिखाए, वही मार्ग पानेवाला है और जिसे वह भटकता छोड़ दे उसका तुम कोई सहायक मार्गदर्शक कदापि न पाओगे।

18. और तुम समझते कि वे जाग रहे हैं, हालाँकि वे सोए हुए होते। हम उन्हें दाएँ और बाएँ फेरते और उनका कुत्ता ड्योढ़ी पर अपनी दोनों भुजाएँ फैलाए हुए होता। यदि तुम उन्हें कहीं झाँककर देखते तो उनके पास से उलटे पाँव भाग खड़े होते और तुममें उनका भय समा जाता।

19. और इसी तरह हमने उन्हें उठा खड़ा किया कि वे आपस में पूछताछ करें। उनमें एक कहनेवाले ने कहा : "तुम कितना ठहरे रहे ?" वे बोले : "हम यही कोई एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे।" उन्होंने कहा : "जितना तुम यहाँ ठहरे हो उसे तुम्हारा रब ही भली-भाँति जानता है। अब अपने में से किसी को यह चाँदी का सिक्का देकर नगर की ओर भेजो। फिर वह देख ले कि उसमें सबसे अच्छा खाना किस जगह मिलता है। तो उसमें से वह तुम्हारे लिए कुछ खाने को ले आए और चाहिए कि वह नरमी और होशियारी से काम ले और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे।

20. यदि वे कहीं तुम्हारी ख़बर पा जाएँगे तो पथराव करके तुम्हें मार डालेंगे या तुम्हें अपने पंथ में लौटा ले जाएँगे और तब तो तुम कभी भी सफल न हो सकोगे।"

21. इस तरह हमने लोगों को उनकी सूचना दे दी, ताकि वे जान लें कि

اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ
بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۗ رَبُّهُمْ
اَعْلَمُ بِهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ
عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ۝ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ
كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ
رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ
قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۗ
فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۖ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ
مِّنْهُمْ اَحَدًا ۝ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ
ذٰلِكَ غَدًا ۝ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۖ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ
مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۝ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ
سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا

अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़ियामत की घड़ी में कोई संदेह नहीं है। वह समय भी उल्लेखनीय है जब वे आपस में उनके मामले में छीन-झपट कर रहे थे। फिर उन्होंने कहा : "उनपर एक भवन बना दो। उनका रब उन्हें भली-भाँति जानता है।" और जो लोग उनके मामले में प्रभावी रहे उन्होंने कहा : "हम तो उनपर अवश्य एक उपासनागृह बनाएँगे।"

22. अब वे कहेंगे : "वे तीन थे और उनमें चौथा उनका कुत्ता था।" और वे यह भी कहेंगे : "वे पाँच थे और उनमें छठा उनका कुत्ता था।" यह बिना निशाना देखे पत्थर चलाना है।[1] और वे यह भी कहेंगे : "वे सात थे और उनमें आठवाँ उनका कुत्ता था।" कह दो : "मेरा रब उनकी संख्या को भली-भाँति जानता है।" उनको तो थोड़े ही जानते हैं। तुम ज़ाहिरी बात के सिवा उनके सम्बन्ध में न झगड़ो और न उनमें से किसी से उनके विषय में कुछ पूछो।

23. और न किसी चीज़ के विषय में कभी यह कहो : "मैं कल इसे कर दूँगा।"

24. बल्कि अल्लाह की इच्छा ही लागू होती है। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद कर लो और कहो : "आशा है कि मेरा रब इससे भी क़रीब सही बात की ओर मार्गदर्शन कर दे।"

25. और वे अपनी गुफा में तीन सौ वर्ष रहे और नौ वर्ष उससे अधिक।

26. कह दो : "अल्लाह भली-भाँति जानता है जितना वे ठहरे।" आकाशों

1. अर्थात अँधेरे में तीर चलाना।

لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَ
اَسْمِعْ ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ
فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ۝ وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ
كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ
دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ
وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا
وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ۝ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۣ فَمَنْ شَاۗءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَاۗءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ
اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ
وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَاۗءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۭ
بِئْسَ الشَّرَابُ ۭ وَسَاۗءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ

और धरती की छिपी बात का संबंध उसी से है। वह क्या ही देखनेवाला और सुननेवाला है! उससे इतर न तो उनका कोई संरक्षक है और न वह अपने प्रभुत्व और सत्ता में किसी को साझीदार बनाता है।

27. अपने रब की किताब, जो कुछ तुम्हारी ओर प्रकाशना (वह्य) हुई, पढ़ो। कोई नहीं जो उसके बोलों को बदलनेवाला हो और न तुम उससे हटकर शरण लेने की जगह पाओगे।

28. अपने आपको उन लोगों के साथ थाम रखो, जो प्रातःकाल और सायंकाल अपने रब को उसकी प्रसन्नता चाहते हुए पुकारते हैं और सांसारिक जीवन की शोभा की चाह में तुम्हारी आँखें उनसे न फिरें। और ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल पाया है और वह अपनी इच्छा और वासना के पीछे लगा हुआ है और उसका मामला हद से आगे बढ़ गया है।

29. कह दो : "यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से। तो अब जो कोई चाहे माने और जो चाहे इनकार कर दे।" हमने तो अत्याचारियों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातों ने उन्हें घेर लिया है। यदि वे फ़रियाद करेंगे तो फ़रियाद के प्रत्युत्तर में उन्हें ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा; वह उनके मुँह भून डालेगा। बहुत ही बुरा है वह पेय और बहुत ही बुरा है वह विश्रामस्थल!

30. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, तो निश्चय ही

امَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ
عَمَلًا ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ
مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۭ نِعْمَ الثَّوَابُ ۭ وَحَسُنَتْ
مُرْتَفَقًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّ
جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ
اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْئًا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا
نَهَرًا ۝ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ
اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ
وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ
اَبَدًا ۝ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ

किसी ऐसे व्यक्ति का प्रतिदान जिसने अच्छा कर्म किया हो, हम अकारथ नहीं करते।

31. ऐसे ही लोगों के लिए सदाबहार बाग़ हैं। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और वे हरे पतले और गाढ़े रेशमी कपड़े पहनेंगे और ऊँचे तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और क्या ही अच्छा विश्रामस्थल!

32. उनके समक्ष एक उपमा प्रस्तुत करो : दो व्यक्ति हैं। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए और उनके चारों ओर हमने खजूरों के वृक्षों की बाड़ लगाई और उन दोनों के बीच हमने खेती-बाड़ी रखी।

33. दोनों में से प्रत्येक बाग़ अपने फल लाया और इसमें कोई कमी नहीं की। और उन दोनों के बीच हमने एक नहर भी प्रवाहित कर दी।

34. उसे ख़ूब फल और पैदावार प्राप्त हुई। इसपर वह अपने साथी से, जबकि वह उससे बातचीत कर रहा था, कहने लगा : "मैं तुझसे माल और दौलत में बढ़कर हूँ और मुझे जनशक्ति भी अधिक प्राप्त है।"

35. वह अपने हक़ में ज़ालिम बनकर अपने बाग़ में प्रविष्ट हुआ। कहने लगा : "मैं ऐसा नहीं समझता कि यह कभी विनष्ट होगा।

36. और मैं नहीं समझता कि वह (क़ियामत की) घड़ी क़भी आएगी। और यदि मैं वास्तव में अपने रब के पास पलटा भी तो निश्चय ही पलटने की

إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنقَلَبًا ۝ قَالَ
لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي
خَلَقَكَ مِن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاكَ
رَجُلًا ۝ لَّٰكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي
أَحَدًا ۝ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا
شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ إِن تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ
مِنكَ مَالًا وَوَلَدًا ۝ فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِ
خَيْرًا مِّن جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ
السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۝ أَوْ يُصْبِحَ مَاؤُهَا
غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ
فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ
خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ
بِرَبِّي أَحَدًا ۝ وَلَمْ تَكُن لَّهُ فِئَةٌ يَنصُرُونَهُ

जगह इससे भी उत्तम पाऊँगा।"

37. उसके साथी ने उससे बातचीत करते हुए कहा : "क्या तू उस सत्ता के साथ कुफ़्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से, फिर वीर्य से पैदा किया, फिर तुझे एक पूरा आदमी बनाया?

38. लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं किसी को अपने रब के साथ साझीदार नहीं बनाता।

39. और ऐसा क्यों न हुआ कि जब तूने अपने बाग़ में प्रवेश किया तो कहता : 'जो अल्लाह चाहे, बिना अल्लाह के कोई शक्ति नहीं?' यदि तू देखता है कि मैं धन और संतति में तुझसे कम हूँ,

40. तो आशा है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से अच्छा प्रदान करे और तेरे इस बाग़ पर आकाश से कोई कुर्क़ी (आपदा) भेज दे। फिर वह साफ़ मैदान होकर रह जाए।

41. या उसका पानी बिलकुल नीचे उतर जाए। फिर तू उसे ढूँढ़कर न ला सके।"

42. हुआ भी यही कि उसका सारा फल घिराव में आ गया। उसने उसमें जो कुछ लागत लगाई थी, उसपर वह अपनी हथेलियों को नचाता रह गया, और स्थिति यह थी कि वह बाग़ अपनी टट्टियों पर ढहा पड़ा था और वह कह रहा था : "क्या ही अच्छा होता कि मैंने अपने रब के साथ किसी को साझीदार न बनाया होता!"

43. उसका कोई जत्था न हुआ जो उसके और अल्लाह के बीच पड़कर

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝ هُنَالِكَ
الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ
مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ
هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
مُّقْتَدِرًا ۝ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ
اَمَلًا ۝ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ
وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۝ وَعُرِضُوْا
عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ؗ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝
وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ
مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ

उसकी सहायता करता और न उसे स्वयं बदला लेने की सामर्थ्य प्राप्त थी।

44. ऐसे अवसर पर काम बनाने का सारा अधिकार परम सत्य अल्लाह ही को प्राप्त है। वही बदला देने में सबसे अच्छा है और वही अच्छा परिणाम दिखाने की दृष्टि से भी सर्वोत्तम है।

45. और उनके समक्ष सांसारिक जीवन की उपमा प्रस्तुत करो : यह ऐसी है, जैसे पानी हो, जिसे हमने आकाश से उतारा तो उससे धरती की पौध घनी होकर परस्पर गुँथ गई। फिर वह चूरा-चूरा होकर रह गई, जिसे हवाएँ उड़ाए लिए फिरती हैं। अल्लाह को तो हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

46. माल और बेटे तो केवल सांसारिक जीवन की शोभा हैं, जबकि बाक़ी रहनेवाली नेकियाँ ही तुम्हारे रब के यहाँ परिणाम की दृष्टि से भी उत्तम हैं और आशा की दृष्टि से भी वही उत्तम हैं।

47. जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगे और तुम धरती को बिलकुल नग्न देखोगे और हम उन्हें इकट्ठा करेंगे तो उनमें से किसी एक को भी न छोड़ेंगे।

48. वे तुम्हारे रब के सामने पंक्तिबद्ध उपस्थित किए जाएँगे——"तुम हमारे सामने आ पहुँचे, जैसा हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। नहीं, बल्कि तुम्हारा तो यह दावा था कि हम तुम्हारे लिए वादा किया हुआ कोई समय लाएँगे ही नहीं।"

49. किताब (कर्मपत्रिका) रखी जाएगी तो अपराधियों को देखोगे कि जो कुछ उसमें होगा उससे डर रहे हैं और कह रहे हैं : "हाय, हमारा दुर्भाग्य !

لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَّلَا كَبِيرَةً إِلَّآ أَحْصٰهَا ۚ وَ
وَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
أَحَدًا ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْٓا إِلَّآ إِبْلِيْسَ ۗ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ
عَنْ أَمْرِ رَبِّهٖ ۗ أَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ أَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۗ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ
بَدَلًا ۝ مَآ أَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ
عَضُدًا ۝ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ
الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۝ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ
فَظَنُّوْٓا أَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا
مَصْرِفًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ

यह कैसी किताब है कि यह न कोई छोटी बात छोड़ती है न बड़ी, बल्कि सभी को इसने अपने अन्दर समाहित कर रखा है।" जो कुछ उन्होंने किया होगा सब मौजूद पाएँगे। तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा।

50. याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा : "आदम को सजदा करो।" तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया। वह जिन्नों में से था। तो उसने अपने रब के आदेश का उल्लंघन किया। अब क्या तुम मुझसे इतर उसे और उसकी संतान को संरक्षक-मित्र बनाते हो? हालाँकि वे तुम्हारे शत्रु हैं। क्या ही बुरा विकल्प है, जो ज़ालिमों के हाथ आया!

51. मैंने न तो आकाशों और धरती को उन्हें दिखाकर पैदा किया और न स्वयं उनको बनाने और पैदा करने के समय ही उन्हें बुलाया। मैं ऐसा नहीं हूँ कि गुमराह करनेवालों को अपनी बाहु-भुजा बनाऊँ।

52. याद करो जिस दिन वह कहेगा : "बुलाओ मेरे साझीदारों को, जिनके साझीदार होने का तुम्हें दावा था।" तो वे उनको पुकारेंगे, किन्तु वे उन्हें कोई उत्तर न देंगे और हम उनके बीच सामूहिक विनाश-स्थल निर्धारित कर देंगे।

53. अपराधी लोग आग को देखेंगे तो समझ लेंगे कि वे उसमें पड़नेवाले हैं और उससे बच निकलने की कोई जगह न पाएँगे।

54. हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर प्रकार के उत्तम विषयों को

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ
جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ
الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ
سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝
وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ ۚ
وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا
بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنْذِرُوا هُزُوًا ۝
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ
عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ
وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ۝
وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا
كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ

तरह-तरह से बयान किया है, किन्तु मनुष्य सबसे बढ़कर झगड़ालू है।

55. आख़िर लोगों को, जबकि उनके पास मार्गदर्शन आ गया तो इस बात से कि वे ईमान लाते और अपने रब से क्षमा चाहते, इसके सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका कि उनके लिए वही कुछ सामने आए जो पूर्व जनों के सामने आ चुका है, यहाँ तक कि यातना उनके सामने आ खड़ी हो।

56. रसूलों को हम केवल शुभ सूचना देनेवाले और सचेतकर्त्ता बनाकर भेजते हैं। किन्तु इनकार करनेवाले लोग हैं कि असत्य के सहारे झगड़ते हैं, ताकि सत्य को डिगा दें। उन्होंने मेरी आयतों का और जो चेतावनी उन्हें दी गई उसका मज़ाक़ बना लिया है।

57. उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के द्वारा समझाया गया, तो उसने उनसे मुँह फेर लिया और उसे भूल गया, जो सामान उसके हाथ आगे बढ़ा चुके हैं? निश्चय ही हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि कहीं वे उसे समझ न लें और उनके कानों में बोझ डाल दिया (कि कहीं वे उसे सुन न लें)।[1] यद्यपि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ, वे कभी भी मार्ग नहीं पा सकते।

58. तुम्हारा रब अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है। यदि वह उन्हें उसपर पकड़ता जो कुछ कि उन्होंने कमाया है तो उनपर शीघ्र ही यातना ला देता।

1. जब कोई अल्लाह की आयतों से मुँह फेरता है, तो उसके दिल से समझने की क्षमता ख़त्म हो जाती है और उसके कान भी सुनकर मानो कुछ नहीं सुनते। उसे अल्लाह ज़बरदस्ती मार्ग पर नहीं लाता, बल्कि भटकने के लिए छोड़ देता है।

لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ۝ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ
أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم
مَّوْعِدًا ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ
أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۝ فَلَمَّا بَلَغَا
مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ
فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا
غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِن سَفَرِنَا هَٰذَا نَصَبًا ۝
قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ
الْحُوتَ وَمَا أَنسَانِيهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ
وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۝ قَالَ ذَٰلِكَ
مَا كُنَّا نَبْغِ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۝
فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ
عِندِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِن لَّدُنَّا عِلْمًا ۝ قَالَ لَهُ

नहीं, बल्कि उनके लिए तो वादे का एक समय निश्चित है। उससे हटकर वे बच निकलने का कोई मार्ग न पाएँगे।

59. और ये बस्तियाँ वे हैं कि जब उन्होंने अत्याचार किया तो हमने उन्हें विनष्ट कर दिया, और हमने उनके विनाश के लिए एक समय निश्चित कर रखा था।

60. याद करो, जब मूसा ने अपने युवक सेवक से कहा : "जब तक कि मैं दो दरियाओं के संगम तक न पहुँच जाऊँ चलना नहीं छोड़ूँगा, चाहे मैं यूँ ही दीर्घकाल तक सफ़र करता रहूँ।"

61. फिर जब वे दोनों संगम पर पहुँचे तो वे अपनी मछली से ग़ाफ़िल हो गए और उस (मछली) ने दरिया में सुरंग बनाती अपनी राह ली।

62. फिर जब वे वहाँ से आगे बढ़ गए तो उसने अपने सेवक से कहा : "लाओ, हमारा नाश्ता। अपने इस सफ़र में तो हमें बड़ी थकान पहुँची है।"

63. उसने कहा : "ज़रा देखिए तो सही, जब हम उस चट्टान के पास ठहरे हुए थे तो मैं मछली को भूल ही गया——और शैतान ही ने उसको याद रखने से मुझे ग़ाफ़िल कर दिया——और उसने आश्चर्य रूप से दरिया में अपनी राह ली।"

64. (मूसा ने) कहा : "यही तो है जिसे हम तलाश कर रहे थे।" फिर वे दोनों अपने पदचिह्नों को देखते हुए वापस हुए।

65. फिर उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया, जिसे हमने अपने पास से दयालुता प्रदान की थी और जिसे अपने पास से ज्ञान प्रदान किया था।

66. मूसा ने उससे कहा : "क्या मैं आपके पीछे चलूँ, ताकि आप मुझे उस

مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا
عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِيَ صَبْرًا ۝ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ
بِهٖ خُبْرًا ۝ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا
وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ۝ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ
فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ
ذِكْرًا ۝ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ
خَرَقَهَا ۗ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ
جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ۝ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ
تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا
نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ۝
فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ
نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۗ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ۝

ज्ञान और विवेक की शिक्षा दें, जो आपको दी गई है ?"

67. उसने कहा : "तुम मेरे साथ धैर्य न रख सकोगे,

68. और जो चीज़ तुम्हारे ज्ञान-परिधि से बाहर हो, उसपर तुम धैर्य कैसे रख सकते हो ?"

69. (मूसा ने) कहा : "यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पाएँगे। और मैं किसी मामले में भी आपकी अवज्ञा नहीं करूँगा।"

70. उसने कहा : "अच्छा, यदि तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे किसी चीज़ के विषय में न पूछना, यहाँ तक कि मैं स्वयं ही तुमसे उसकी चर्चा करूँ।"

71. अन्ततः दोनों चले, यहाँ तक कि जब नौका में सवार हुए तो उसने उसमें दरार डाल दी। (मूसा ने) कहा : "आपने इसमें दरार डाल दी, ताकि उसके सवारों को डुबो दें ? आपने तो एक अनोखी हरकत कर डाली।"

72. उसने कहा : "क्या मैंने कहा नहीं था कि तुम मेरे साथ धैर्य न रख सकोगे ?"

73. कहा : "जो भूल-चूक मुझसे हो गई उसपर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में मुझे तंगी में न डालिए।"

74. फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक लड़के से मिले तो उसने उसे मार डाला। कहा : "क्या आपने एक अच्छी-भंली जान की हत्या कर दी, बिना इसके कि किसी की हत्या का बदला लेना अभीष्ट हो ? यह तो आपने बहुत ही बुरा किया !"

75. उसने कहा : "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम मेरे साथ धैर्य न रख सकोगे ?"

76. कहा : "इसके बाद यदि मैं आपसे कुछ पूछूँ तो आप मुझे साथ न रखें। अब तो मेरी ओर से आप पूरी तरह उज़्र को पहुँच चुके हैं।"

77. फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक बस्तीवालों के पास पहुँचे और उनसे भोजन माँगा, किन्तु उन्होंने उनके आतिथ्य से इनकार कर दिया। फिर वहाँ उन्हें एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी, तो उस व्यक्ति ने उसको खड़ा कर दिया। (मूसा ने) कहा : "यदि आप चाहते तो इसकी कुछ मज़दूरी ले सकते थे।"

78. उसने कहा : "यह मेरे और तुम्हारे बीच जुदाई का अवसर है। अब मैं तुमको उसकी वास्तविकता बताए दे रहा हूँ, जिसपर तुम धैर्य से काम न ले सके।"

79. वह जो नौका थी, कुछ निर्धन लोगों की थी जो दरिया में काम करते थे, तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, क्योंकि आगे उनके परे एक सम्राट था जो प्रत्येक नौका को ज़बरदस्ती छीन लेता था।

80. और रहा वह लड़का, तो उसके माँ-बाप ईमान पर थे। हमें आशंका हुई कि वह सरकशी और कुफ़्र से उन्हें तंग करेगा।

81. इसलिए हमने चाहा कि उनका रब उन्हें इसके बदले दूसरी संतान दे, जो आत्मविकास में इससे अच्छा हो और दया-करुणा से अधिक निकट हो।

قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ
صَبْرًا ۝ قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَن شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا
تُصَاحِبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا ۝ فَانطَلَقَا
حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا
أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن
يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ ۖ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ
أَجْرًا ۝ قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ
بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝ أَمَّا السَّفِينَةُ
فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ
أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ
غَصْبًا ۝ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ
فَخَشِينَا أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۝ فَأَرَدْنَا
أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۝

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ
تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ
اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ۗ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ
تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝ وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۗ
قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۝ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى
الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ۝ فَاَتْبَعَ
سَبَبًا ۝ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ
فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يٰذَا
الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ
حُسْنًا ۝ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ
اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۝ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَ
عَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨ الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ

82. और रही यह दीवार तो यह दो अनाथ बालकों की है जो इस नगर में रहते हैं। और इसके नीचे उनका ख़ज़ाना मौजूद है। और उनका बाप नेक था, इसलिए तुम्हारे रब ने चाहा कि वे अपनी युवावस्था को पहुँच जाएँ और अपना ख़ज़ाना निकाल लें। यह तुम्हारे रब की दयालुता के कारण हुआ। मैंने तो अपने अधिकार से कुछ नहीं किया। यह है वास्तविकता उसकी जिसपर तुम धैर्य न रख सके।"

83. वे तुमसे ज़ुलक़रनैन के विषय में पूछते हैं। कह दो : "मैं तुम्हें उसका कुछ वृत्तान्त सुनाता हूँ।"

84. हमने उसे धरती में सत्ता प्रदान की थी और उसे हर प्रकार के संसाधन दिए थे।

85. अतएव उसने एक अभियान का आयोजन किया।

86. यहाँ तक कि जब वह सूर्यास्त-स्थल तक पहुँचा तो उसे मटमैले काले पानी के एक स्रोत में डूबते हुए पाया और उसके निकट उसे एक क़ौम मिली। हमने कहा : "ऐ ज़ुलक़रनैन! तुझे अधिकार है कि चाहे तकलीफ़ पहुँचाए और चाहे उनके साथ अच्छा व्यवहार करे।"

87. उसने कहा : "जो कोई ज़ुल्म करेगा उसे तो हम दण्ड देंगे। फिर वह अपने रब की ओर पलटेगा और वह उसे कठोर यातना देगा।

88. किन्तु जो कोई ईमान लाया और अच्छा कर्म किया, उसके लिए तो अच्छा बदला है और हम उसे अपना सहज एवं मृदुल आदेश देंगे।"

أمرنا يسرا ۞ ثم أتبع سببا ۞ حتى إذا بلغ مطلع
الشمس وجدها تطلع على قوم لم نجعل لهم من
دونها سترا ۞ كذلك وقد أحطنا بما لديه خبرا ۞
ثم أتبع سببا ۞ حتى إذا بلغ بين السدين وجد من
دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا ۞ قالوا يا ذا
القرنين إن يأجوج ومأجوج مفسدون في الأرض
فهل نجعل لك خرجا على أن تجعل بيننا وبينهم
سدا ۞ قال ما مكني فيه ربي خير فأعينوني
بقوة أجعل بينكم وبينهم ردما ۞ آتوني زبر الحديد
حتى إذا ساوى بين الصدفين قال انفخوا
حتى إذا جعله نارا قال آتوني أفرغ عليه قطرا ۞
فما اسطاعوا أن يظهروه وما استطاعوا له نقبا ۞
قال هذا رحمة من ربي فإذا جاء وعد ربي جعله

89. फिर उसने एक और अभियान का आयोजन किया।

90. यहाँ तक कि जब वह सूर्योदय स्थल पर जा पहुँचा तो उसने उसे ऐसे लोगों पर उदित होते पाया जिनके लिए हमने सूर्य के मुक़ाबले में कोई ओट नहीं रखी थी।

91. ऐसा ही हमने किया था और जो कुछ उसके पास था, उसकी हमें पूरी ख़बर थी।

92. उसने फिर एक अभियान का आयोजन किया,

93. यहाँ तक कि जब वह दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उसे उनके इस किनारे कुछ लोग मिले, जो ऐसा लगता नहीं था कि कोई बात समझ पाते हों।

94. उन्होंने कहा : "ऐ ज़ुलक़रनैन ! याजूज और माजूज इस भूभाग में उत्पात मचाते हैं। क्या हम तुम्हें कोई कर इस काम के लिए दें कि तुम हमारे और उनके बीच एक अवरोध निर्मित कर दो ?"

95. उसने कहा : "मेरे रब ने मुझे जो कुछ अधिकार एवं शक्ति दी है वह उत्तम है। तुम तो बस बल से मेरी सहायता करो। मैं तुम्हारे और उनके बीच एक सुदृढ़ दीवार बनाए देता हूँ।

96. मुझे लोहे के टुकड़े ला दो।" यहाँ तक कि जब दोनों पर्वतों के बीच के रिक्त स्थान को पाटकर बराबर कर दिया तो कहा : "धौंको !" यहाँ तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा : "मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो, ताकि मैं उसपर उँड़ेल दूँ।"

97. तो न तो वे (याजूज, माजूज) उसपर चढ़कर आ सकते थे और न वे उसमें सेंध ही लगा सकते थे।

98. उसने कहा : "यह मेरे रब की दयालुता है, किन्तु जब मेरे रब के वादे का

دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ
يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ
جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾
الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَن ذِكْرِي وَكَانُوا
لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن
يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم بِالْأَخْسَرِينَ
أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ
يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا
نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ
جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ﴿١٠٦﴾
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ

समय आ जाएगा तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा, और मेरे रब का वादा सच्चा है।"

99. उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि वे एक-दूसरे से मौजों की तरह परस्पर गुत्थम-गुत्था हो जाएँगे। और "सूर" फूँका जाएगा। फिर हम उन सबको एक साथ इकट्ठा करेंगे।

100. और उस दिन जहन्नम को इनकार करनेवालों के सामने कर देंगे।

101. जिनके नेत्र मेरी अनुस्मृति की ओर से परदे में थे और जो कुछ सुन भी नहीं सकते थे।

102. तो क्या इनकार करनेवाले इस ख़याल में हैं कि मुझसे हटकर मेरे बन्दों को अपना हिमायती-बना लें? हमने ऐसे इनकार करनेवालों के आतिथ्य-सत्कार के लिए जहन्नम तैयार कर रखा है।

103. कहो : "क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बर दें, जो अपने कर्मों की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठानेवाले हैं?

104. ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं।

105. यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का और उससे मिलन का इनकार किया। अतः उनके कर्म जान को लागू हुए, तो हम क़ियामत के दिन उन्हें कोई वज़न न देंगे।

106. उनका बदला वही जहन्नम है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।

107. निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके



आतिथ्य के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे,

108. जिनमें वे सदैव रहेंगे, वहाँ से हटना न चाहेंगे ।"

109. कहो : "यदि समुद्र मेरे रब के बोल को लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो इससे पहले कि मेरे रब के बोल समाप्त हों, समुद्र ही समाप्त हो जाएगा। यद्यपि हम उसके सदृश्य एक और भी समुद्र उसके साथ ला मिलाएँ ।"

110. कह दो : "मैं तो केवल तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है। अत: जो कोई अपने रब से मिलन की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को साझी न बनाए ।"

19. मरयम

(मक्का में उतरी— आयतें 98)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. काफ़० हा० या० ऐन० साद० ।

2. वर्णन है तेरे रब की दयालुता का, जो उसने अपने बन्दे ज़करीया पर दर्शाई,

3. जबकि उसने अपने रब को चुपके-चुपके पुकारा ।

4. उसने कहा : "मेरे रब ! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गईं और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा । और मेरे रब ! तुझे पुकारकर मैं कभी बेनसीब नहीं रहा ।

5. मुझे अपने पीछे अपने भाई-बन्धुओं की ओर से भय है और मेरी पत्नी बाँझ है । अत: तू मुझे अपने पास से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर,

وَلِيًّا ۙ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ
رَضِيًّا ۝ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ
نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ
لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ
الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ
هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝ قَالَ
رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ
ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ
فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ يٰيَحْيٰى خُذِ
الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا
وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۙ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا
عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ
يُبْعَثُ حَيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ

6. जो मेरा भी उत्तराधिकारी हो और याक़ूब के वंशज का भी उत्तराधिकारी हो। और उसे मेरे रब ! वांछनीय बना।"

7. (उत्तर मिला) : "ऐ ज़करीया ! हम तुझे एक लड़के की शुभ सूचना देते हैं, जिसका नाम यह्या होगा। हमने उससे पहले किसी को उसके जैसा नहीं बनाया।"

8. उसने कहा : "मेरे रब ! मेरे लड़का कहाँ से होगा, जबकि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे की अंतिम अवस्था को पहुँच चुका हूँ ?"

9. कहा : "ऐसा ही होगा। तेरे रब ने कहा है कि यह मेरे लिए सरल है। इससे पहले मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ, जबकि तू कुछ भी न था।"

10. उसने कहा : "मेरे रब ! मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे।" कहा : "तेरी निशानी यह है कि तू भला-चंगा रहकर भी तीन रात (और दिन) लोगों से बात न करे।"

11. अतः वह मेहराब से निकलकर अपने लोगों के पास आया और उनसे संकेतों में कहा : "प्रातः काल और संध्या समय तसबीह करते रहो।"

12-13. "ऐ यह्या ! किताब को मज़बूत थाम ले।" हमने उसे बचपन ही में निर्णय-शक्ति प्रदान की, और अपने पास से नरमी और शौक़ और आत्मविकास। और वह बड़ा डरनेवाला था।

14. और अपने माँ-बाप का हक़ पहचाननेवाला था। और वह सरकश अवज्ञाकारी न था।

15. "सलाम उसपर, जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन उसकी मृत्यु हो और जिस दिन वह जीवित करके उठाया जाए !"

16. और इस किताब में मरयम की चर्चा करो, जबकि वह अपने घरवालों से

अलग होकर एक पूर्वी स्थान पर चली गई।

مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۙ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ
حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
سَوِيًّا ۝ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ
تَقِيًّا ۝ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا
زَكِيًّا ۝ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ
اَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ
وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا
مَّقْضِيًّا ۝ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝
فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ
مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝ فَنَادٰىهَا مِنْ
تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝ وَ
هُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا
جَنِيًّا ۝ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

17. फिर उसने उनसे परदा कर लिया। तब हमने उसके पास अपनी रूह (फ़रिश्ते) को भेजा और वह उसके सामने एक पूर्ण मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ।

18. वह बोल उठी : "मैं तुझसे बचने के लिए रहमान की पनाह माँगती हूँ; यदि तू (अल्लाह का) डर रखनेवाला है (तो यहाँ से हट जाएगा)।"

19. उसने कहा : "मैं तो केवल तेरे रब का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे नेकी और भलाई में बढ़ा हुआ लड़का दूँ।"

20. वह बोली : "मेरे कहाँ से लड़का होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं और न मैं कोई बदचलन हूँ?"

21. उसने कहा : "ऐसा ही होगा। तेरे रब ने कहा है कि 'यह मेरे लिए सहज है।' और ऐसा इसलिए होगा (ताकि हम तुझे) और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ और अपनी ओर से एक दयालुता। यह तो एक ऐसी बात है जिसका निर्णय हो चुका है।"

22-23. फिर उसे उस (बच्चे) का गर्भ रह गया और वह उसे लिए हुए एक दूर के स्थान पर अलग चली गई। अन्ततः प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने के पास ले आई। वह कहने लगी : "क्या ही अच्छा होता कि मैं इससे पहले ही मर जाती और भूली-बिसरी हो गई होती!"

24-25. उस समय उसे उसके नीचे से पुकारा : "शोकाकुल न हो। तेरे रब ने तेरे नीचे एक स्रोत प्रवाहित कर रखा है। तू खजूर के उस वृक्ष के तने को पकड़कर अपनी ओर हिला। तेरे ऊपर ताज़ा पकी-पकी खजूरें टपक पड़ेंगी।

26. अतः तू खा और पी और आँखें ठंडी कर। फिर यदि तू किसी आदमी

الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ
أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۝ فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۖ قَالُوا
يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۝ يَا أُخْتَ هَارُونَ مَا كَانَ
أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ۝ فَأَشَارَتْ
إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝ قَالَ
إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝ وَجَعَلَنِي
مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ
مَا دُمْتُ حَيًّا ۝ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا
شَقِيًّا ۝ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَ
يَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝ ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ
الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝ مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ
وَلَدٍ ۖ سُبْحَانَهُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ۝ وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا

को देखे तो कह देना : 'मैंने तो रहमान के लिए रोज़े की मन्नत मानी है। इसलिए मैं आज किसी मनुष्य से न बोलूँगी।' "

27. फिर वह उस बच्चे को लिए हुए अपनी क़ौम के लोगों के पास आई। वे बोले : "ऐ मरयम, तूने तो बड़ा ही आश्चर्य का काम कर डाला !

28. ऐ हारून की बहन ! न तो तेरा बाप ही कोई बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही बदचलन थी।"

29. तब उसने उस (बच्चे) की ओर संकेत किया। वे कहने लगे : "हम उससे कैसे बात करें जो पालने में पड़ा हुआ एक बच्चा है ?"

30. उसने कहा : "मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया।

31. और मुझे बरकतवाला किया जहाँ भी मैं रहूँ, और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं जीवित रहूँ।

32. और अपनी माँ का हक़ अदा करनेवाला बनाया। और उसने मुझे सरकश और बेनसीब नहीं बनाया।

33. सलाम है मुझपर जिस दिन कि मैं पैदा हुआ और जिस दिन कि मैं मरूँ और जिस दिन कि जीवित करके उठाया जाऊँ !"——

34. सच्ची और पक्की बात की दृष्टि से यह है मरयम का बेटा ईसा, जिसके विषय में वे संदेह में पड़े हुए हैं।

35. अल्लाह ऐसा नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए। महान् और उच्च है वह ! जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है तो बस उसे कह देता है : "हो जा !" तो वह हो जाती है।——

36. "और निस्संदेह अल्लाह मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी। अतः तुम



उसी की बन्दगी करो यही सीधा मार्ग है।"

37. किन्तु उनमें कितने ही गिरोहों ने पारस्परिक वैमनस्य के कारण विभेद किया, तो जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए बड़ी तबाही है एक बड़े दिन की उपस्थिति से।

38. भली-भाँति सुननेवाले और भली-भाँति देखनेवाले होंगे, जिस दिन वे हमारे सामने आएँगे! किन्तु आज ये ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

39. उन्हें पश्चाताप के दिन से डराओ, जबकि मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उनका हाल यह है कि वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और वे ईमान नहीं ला रहे हैं।

40. धरती और जो भी उसके ऊपर है उसके वारिस हम ही रह जाएँगे और हमारी ही ओर उन्हें लौटना होगा।

41. और इस किताब में इबराहीम की चर्चा करो। निस्संदेह वह एक सत्यवान नबी था।

42. जबकि उसने अपने बाप से कहा : "ऐ मेरे बाप! आप उस चीज़ को क्यों पूजते हैं, जो न सुने और न देखे और न आपके कुछ काम आए?

43. ऐ मेरे बाप! मेरे पास ऐसा ज्ञान आ गया है जो आपके पास नहीं आया। अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आपको सीधा मार्ग दिखाऊँगा।

44. ऐ मेरे बाप! शैतान की बन्दगी न कीजिए। शैतान तो रहमान का अवज्ञाकारी है।

45. ऐ मेरे बाप! मैं डरता हूँ कि कहीं आपको रहमान की कोई यातना न आ पकड़े और आप शैतान के साथी होकर रह जाएँ।"

46. उसने कहा : "ऐ इबराहीम! क्या तू मेरे उपास्यों से फिर गया है?

यदि तू बाज़ न आया तो मैं तुझपर पथराव कर दूँगा। तू अलग हो जा मुझसे मुद्दत के लिए!"

47. कहा : "सलाम है आपको! मैं आपके लिए अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करूँगा। वह तो मुझपर बहुत मेहरबान है।

48. मैं आप लोगों को छोड़ता हूँ और उनको भी जिन्हें अल्लाह से हटकर आप लोग पुकारा करते हैं। मैं तो अपने रब को पुकारूँगा। आशा है कि मैं अपने रब को पुकारकर बेनसीब नहीं रहूँगा।"

49. फिर जब वह उन लोगों से और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे उनसे अलग हो गया, तो हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए और हर एक को हमने नबी बनाया।

50. और उन्हें अपनी दयालुता से हिस्सा दिया। और उन्हें एक सच्ची उच्च ख्याति प्रदान की।

51. और इस किताब में मूसा की चर्चा करो। निस्संदेह वह चुना हुआ था और एक रसूल, नबी था।

52. हमने उसे 'तूर' के मुबारक छोर से पुकारा और रहस्य की बातें करने के लिए हमने उसे समीप किया।

53. और अपनी दयालुता से उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया।

54. और इस किताब में इसमाईल की चर्चा करो। निस्संदेह वह वादे का सच्चा था और वह एक रसूल, नबी था।

55. और अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था। और वह अपने रब के यहाँ प्रीतिकर व्यक्ति था।

عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ
وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ۝ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۚ
اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ۝ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ
شَقِيًّا ۝ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ
صِدْقٍ عَلِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۚ اِنَّهٗ كَانَ
مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ
الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ
رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۚ
اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَكَانَ
يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ

56. और इस किताब में इदरीस की भी चर्चा करो। वह अत्यन्त सत्यवान, एक नबी था।

57. हमने उसे उच्च स्थान पर उठाया था।

58. ये वे पैग़म्बर हैं जो अल्लाह के कृपापात्र हुए, आदम की सन्तान में से और उन लोगों के वंशज में से जिनको हमने नूह के साथ सवार किया, और इबराहीम और इसराईल के वंशज में से और उनमें से जिनको हमने सीधा मार्ग दिखाया और चुन लिया। जब उन्हें रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सजदा करते और रोते हुए गिर पड़ते थे।

مَرْضِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ۙ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۫ وَ
مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَ
اِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۭ اِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۝ فَخَلَفَ
مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا
الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝ۙ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ
شَيْـًٔا ۝ۙ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ
اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا
سَلٰمًا ۭ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ تِلْكَ
الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝

59. फिर उनके पश्चात ऐसे बुरे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने नमाज़ को गँवाया और मन की इच्छाओं के पीछे पड़े। अतः जल्द ही वे गुमराही (के परिणाम) से दोचार होंगे।

60. किन्तु जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे। उनपर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।——

61. अदन (रहने) के बाग़ जिनका रहमान ने अपने बन्दों से परोक्ष में होते हुए वादा किया है। निश्चय ही उसके वादे पर उपस्थित होना है।——

62. वहाँ वे 'सलाम' के सिवा कोई व्यर्थ बात नहीं सुनेंगे। उनकी रोज़ी उन्हें वहाँ प्रातः और संध्या समय प्राप्त होती रहेगी।

63. यह है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बन्दों में से हर उस व्यक्ति को बनाएँगे, जो डर रखनेवाला हो।

قال الم ١٦ مريم ١٩

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا
خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَّبُّ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ
لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝ وَيَقُولُ الْإِنسَانُ
أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ۝ أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنسَانُ
أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝ فَوَرَبِّكَ
لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ
جِثِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى
الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا
صِلِيًّا ۝ وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا
مَّقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّالِمِينَ
فِيهَا جِثِيًّا ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ

منزل ٤

64. हम तुम्हारे रब की आज्ञा के बिना नहीं उतरते। जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ इसके मध्य है सब उसी का है, और तुम्हारा रब भूलनेवाला नहीं है।

65. आकाशों और धरती का रब है और उसका भी जो इन दोनों के मध्य है। अतः तुम उसी की बन्दगी करो और उसकी बन्दगी पर जमे रहो। क्या तुम्हारे ज्ञान में उस जैसा कोई है?

66. और मनुष्य कहता है : "क्या जब मैं मर गया तो फिर जीवित करके निकाला जाऊँगा?"

67. क्या मनुष्य याद नहीं करता कि हम उसे इससे पहले पैदा कर चुके हैं, जबकि वह कुछ भी न था?

68. अतः तुम्हारे रब की क़सम! हम अवश्य उन्हें और शैतानों को भी इकट्ठा करेंगे। फिर हम उन्हें जहन्नम के चतुर्दिक इस दशा में ला उपस्थित करेंगे कि वे घुटनों के बल झुके होंगे।

69. फिर प्रत्येक गिरोह में से हम अवश्य ही उसे छाँटकर अलग करेंगे जो उनमें से रहमान (कृपाशील प्रभु) के मुक़ाबले में सबसे बढ़कर सरकश रहा होगा।

70. फिर हम उन्हें भली-भाँति जानते हैं जो उसमें झोंके जाने के सर्वाधिक योग्य हैं।

71-72. तुममें से प्रत्येक को उसपर पहुँचना ही है। यह एक निश्चय पाई हुई बात है, जिसे पूरा करना तेरे रब के ज़िम्मे है। फिर हम डर रखनेवालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उसमें घुटनों के बल पड़ा छोड़ देंगे।

73. जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें सुनाई जाती हैं तो, जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वे ईमान लानेवालों से कहते हैं : "दोनों गिरोहों में स्थान की दृष्टि से कौन

مَقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ
هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِءْيًا ۝ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ
فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ
إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ
شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ۝ وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ
اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ
رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ۝ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ
بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ
أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ۝ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا
يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۝ وَنَرِثُهُ مَا
يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً
لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ
وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا

उत्तम है और कौन मजलिस की दृष्टि से अधिक अच्छा है ?"

74. हालाँकि उनसे पहले हम कितनी ही नसलों को विनष्ट कर चुके हैं जो सामग्री और बाह्य भव्यता में इनसे कहीं अच्छी थीं !

75. कह दो : "जो गुमराही में पड़ा हुआ है उसके प्रति तो यही चाहिए कि रहमान उसकी रस्सी खूब ढीली छोड़ दे, यहाँ तक कि जब ऐसे लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है——चाहे यातना हो या क़ियामत की घड़ी—— तो वे उस समय जान लेंगे कि अपने स्थान की दृष्टि से कौन निकृष्ट और जत्थे की दृष्टि से अधिक कमज़ोर है ।"

76. और जिन लोगों ने मार्ग पा लिया है, अल्लाह उनके मार्गदर्शन में अभिवृद्धि प्रदान करता है और शेष रहनेवाली नेकियाँ ही तुम्हारे रब के यहाँ बदले और अंतिम परिणाम की दृष्टि से उत्तम हैं ।

77-78. फिर क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने हमारी आयतों का इनकार किया और कहा : "मुझे तो अवश्य ही धन और संतान मिलने को है ?" क्या उसने परोक्ष को झाँककर देख लिया है, या उसने रहमान से कोई वचन ले रखा है ?

79-80. कदापि नहीं, हम लिखेंगे जो कुछ वह कहता है और उसके लिए हम यातना को दीर्घ करते चले जाएँगे । और जो कुछ वह बताता है उसके वारिस हम होंगे और वह अकेला ही हमारे पास आएगा ।

81-82. और उन्होंने अल्लाह से इतर अपने कुछ पूज्य-प्रभु बना लिए हैं, ताकि वे उनके लिए शक्ति का कारण बनें । कुछ नहीं, ये उनकी बन्दगी का इनकार करेंगे और उनके विरोधी बन जाएँगे ।——

83. क्या तुमने देखा नहीं कि हमने शैतानों को छोड़ रखा है, जो इनकार

الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ۙ فَلَا تَعْجَلْ
عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۚ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى
الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ۙ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ۘ
لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ
عَهْدًا ۘ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ؕ لَقَدْ جِئْتُمْ
شَيْئًا اِدًّا ۙ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ
الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۙ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ۚ
وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ؕ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ؕ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ
وَعَدَّهُمْ عَدًّا ؕ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ۞ اِنَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ
وُدًّا ۞ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَ
تُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ۞ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ

करनेवालों पर नियुक्त हैं ?——

84. अतः तुम उनके लिए जल्दी न करो। हम तो बस उनके लिए (उनकी बातें) गिन रहे हैं।

85-86-87. याद करो जिस दिन हम डर रखनेवालों को सम्मानित गिरोह के रूप में रहमान के पास इकट्ठा करेंगे। और अपराधियों को जहन्नम के घाट की ओर प्यासा हाँक ले जाएँगे। उन्हें सिफ़ारिश का अधिकार प्राप्त न होगा। सिवाय उसके, जिसने रहमान के यहाँ से अनुमोदन प्राप्त कर लिया हो।

88. वे कहते हैं : "रहमान ने किसी को अपना बेटा बनाया है।"

89. अत्यन्त भारी बात है, जो तुम घड़ लाए हो !

90-91-92. निकट है कि आकाश इससे फट पड़ें और धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाए और पहाड़ धमाके के साथ गिर पड़ें, इस बात पर कि उन्होंने रहमान के लिए बेटा होने का दावा किया ! जबकि रहमान की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है कि वह किसी को अपना बेटा बनाए।

93. आकाशों और धरती में जो कोई भी है एक बन्दे के रूप में रहमान के पास आनेवाला है।

94. उसने उनका आकलन कर रखा है और उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है।

95-96. और उनमें से प्रत्येक क़ियामत के दिन उस अकेले (रहमान) के सामने उपस्थित होगा। निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए शीघ्र ही रहमान उनके लिए प्रेम उत्पन्न कर देगा।

97. अतः हमने इस वाणी को तुम्हारी भाषा में इसी लिए सहज एवं उपयुक्त बनाया है, ताकि तुम इसके द्वारा डर रखनेवालों को शुभ सूचना दो और झगड़ालू लोगों को इसके द्वारा डराओ।

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

سُورَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ (٢٠)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

طٰهٰ ۝ مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ ۝ إِلَّا تَذْكِرَةً
لِّمَن يَخْشَىٰ ۝ تَنزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَاوَاتِ
الْعُلَى ۝ الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ ۝ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَىٰ ۝ وَإِن
تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۝ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۝ وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ۝
إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا
لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝
فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَا مُوسَىٰ ۝ إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ
نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ

98. उनसे पहले कितनी ही नसलों को हम विनष्ट कर चुके हैं। क्या उनमें किसी की आहट तुम पाते हो या उनकी कोई भनक सुनते हो ?

20. ता॰ हा॰

(मक्का में उतरी— आयतें 135)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. ता॰ हा॰। हमने तुमपर यह क़ुरआन इसलिए नहीं उतारा है कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ।

3-4. यह तो बस एक अनुस्मृति है, उसके लिए जो डरे, भली-भाँति अवतरित हुआ है उस सत्ता की ओर से, जिसने पैदा किया है धरती और उच्च आकाशों को।

5. वह रहमान, जो राजासन पर विराजमान हुआ।

6. उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और जो कुछ इन दोनों के मध्य है और जो कुछ आर्द्र मिट्टी के नीचे है।

7. तुम चाहे बात पुकार कर कहो (या चुपके से), वह तो छिपी हुई और अत्यन्त गुप्त बात को भी जानता है।

8. अल्लाह, कि उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। उसके नाम बहुत ही अच्छे हैं।

9-10. क्या तुम्हें मूसा की भी ख़बर पहुँची ? जबकि उसने एक आग देखी तो उसने अपने घरवालों से कहा : "ठहरो ! मैंने एक आग देखी है। शायद कि तुम्हारे लिए उसमें से कोई अंगारा ले आऊँ या उस आग पर मैं मार्ग का पता पा लूँ।"

11. फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो पुकारा गया : "ऐ मूसा !

12. मैं ही तेरा रब हूँ। अपने जूते उतार दे। तू पवित्र घाटी 'तुवा' में है।

13. मैंने तुझे चुन लिया है। अत: सुन, जो कुछ प्रकाशना की जाती है।

فاستمع لما يوحى ۝ إنني أنا الله لا إله إلا أنا
فاعبدني وأقم الصلوة لذكري ۝ إن الساعة آتية
أكاد أخفيها لتجزى كل نفس بما تسعى ۝ فلا
يصدنك عنها من لا يؤمن بها واتبع هوىه فتردى ۝
وما تلك بيمينك يموسى ۝ قال هي عصاي أتوكؤا
عليها وأهش بها على غنمي ولي فيها مآرب
أخرى ۝ قال ألقها يموسى ۝ فألقىها فإذا هي حية
تسعى ۝ قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها
الأولى ۝ واضمم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من
غير سوء آية أخرى ۝ لنريك من آيتنا الكبرى ۝
اذهب إلى فرعون إنه طغى ۝ قال رب اشرح لي
صدري ۝ ويسر لي أمري ۝ واحلل عقدة من لساني ۝
يفقهوا قولي ۝ واجعل لي وزيرا من أهلي ۝

14. निस्संदेह मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तू मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।

15. निश्चय ही वह (क़ियामत की) घड़ी आनेवाली है——शीघ्र ही उसे लाऊँगा, उसे छिपाए रखता हूँ——ताकि प्रत्येक व्यक्ति जो प्रयास वह करता है, उसका बदला पाए।

16. अतः जो कोई उसपर ईमान नहीं लाता और अपनी वासना के पीछे पड़ा है, वह तुझे उससे रोक न दे, अन्यथा तू विनष्ट हो जाएगा।

17-18. और ऐ मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?" उसने कहा: "यह मेरी लाठी है। मैं इसपर टेक लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और इससे मेरी दूसरी ज़रूरतें भी पूरी होती हैं।"

19-20. कहा: "डाल दे उसे, ऐ मूसा!" अतः उसने उसे डाल दिया। सहसा क्या देखते हैं कि वह एक साँप है, जो दौड़ रहा है।

21. कहा: "इसे पकड़ ले और डर मत। हम इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे।

22. और अपने हाथ अपने बाज़ू की ओर समेट ले। वह बिना किसी ऐब के रौशन दूसरी निशानी के रूप में निकलेगा।

23. इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी निशानियाँ दिखाएँ।

24. तू फ़िरऔन के पास जा। वह बहुत सरकश हो गया है।"

25. उसने निवेदन किया: "मेरे रब! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे।

26. और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे।

27-28. और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। कि वे मेरी बात समझ सकें।

29. और मेरे लिए अपने घरवालों में से एक सहायक नियुक्त कर दे,

هٰرُوْنَ اَخِي ۝ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ۝ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ
اَمْرِيْ ۝ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ۝ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ۝ اِنَّكَ
كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ۝ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ۝
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ۝ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ
مَا يُوْحٰٓى ۝ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي
الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَ
عَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى
عَيْنِيْ ۝ اِذْ تَمْشِيْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ
يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا
تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ
فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ
عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ۝ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ۝ اِذْهَبْ
اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ۝ اِذْهَبَآ

30. हारून को, जो मेरा भाई है।

31. उसके द्वारा मेरी कमर मज़बूत कर।

32. और उसे मेरे काम में शरीक कर दे,

33. कि हम अधिक से अधिक तेरी तसबीह करें।

34. और तुझे ख़ूब याद करें।

35. निश्चय ही तू हमें खूब देख रहा है।"

36. कहा : "दिया गया तुझे जो तूने माँगा, ऐ मूसा!

37. हम तो तुझपर एक बार और भी उपकार कर चुके हैं।

38. जब हमने तेरी माँ के दिल में यह बात डाली थी, जो अब प्रकाशना की जा रही है,

39. कि 'उसको संदूक़ में रख दे; फिर उसे दरिया में डाल दे; फिर दरिया उसे तट पर डाल दे.कि उसे मेरा शत्रु और उसका शत्रु उठा ले।' मैंने अपनी ओर से तुझपर अपना प्रेम डाला। (ताकि तू सुरक्षित रहे) और ताकि मेरी आँख के सामने तेरा पालन-पोषण हो।

40. याद कर जबकि तेरी बहन जाती और कहती थी : 'क्या मैं तुम्हें उसका पता बता दूँ जो इसका पालन-पोषण अपने ज़िम्मे ले ले?' इस प्रकार हमने फिर तुझे तेरी माँ के पास पहुँचा दिया, ताकि उसकी आँख ठंडी हो और वह शोकाकुल न हो। और याद कर, तूने एक व्यक्ति की हत्या कर दी थी। फिर हमने तुझे उस ग़म से छुटकारा दिया। और हमने तुझे भली-भाँति परखा। फिर तू कई वर्ष मदयन के लोगों में ठहरा रहा। फिर ऐ मूसा! तू ख़ास समय पर आ गया है।

41. हमने तुझे अपने लिए तैयार किया है।

42. जा, तू और तेरा भाई मेरी निशानियों के साथ; और मेरी याद में ढीले मत पड़ना।

اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۚ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ
يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ۝ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ
عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ۝ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ
اَسْمَعُ وَاَرٰى ۝ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ
مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ
مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ۝ اِنَّا قَدْ
اُوْحِىَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ قَالَ
فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ
خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ۝ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ۝
قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ فِىْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّىْ وَلَا يَنْسَى ۝
الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا
سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا
مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ۝ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ

43. जाओ दोनों, फ़िरऔन के पास, वह सरकश हो गया है।

44. उससे नर्म बात करना, कदाचित वह ध्यान दे या डरे।"

45. दोनों ने कहा : "ऐ हमारे रब! हमें इसका भय है कि वह हमपर ज़्यादती करे या सरकशी करने लग जाए।"

46. कहा : "डरो नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूँ। सुनता और देखता हूँ।

47. अतः जाओ उसके पास और कहो : 'हम तेरे रब के रसूल हैं। इसराईल की संतान को हमारे साथ भेज दे। और उन्हें यातना न दे। हम तेरे पास तेरे रब की निशानी लेकर आए हैं। और सलामती है उसके लिए जो सन्मार्ग का अनुसरण करे!

48. निस्संदेह हमारी ओर प्रकाशना हुई है कि यातना उसके लिए है, जो झुठलाए और मुँह फेरे'।"

49. उसने कहा : "अच्छा, तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा?"

50. कहा : "हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी आकृति दी, फिर तदनुकूल निर्देशन किया।"

51. उसने कहा : "अच्छा तो उन नस्लों का क्या हाल है, जो पहले थीं?"

52. कहा : "उसका ज्ञान मेरे रब के पास एक किताब में सुरक्षित है। मेरा रब न चूकता है और न भूलता है।"——

53. "वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को पालना (बिछौना) बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते निकाले और आकाश से पानी उतारा। फिर हमने उसके द्वारा विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे निकाले।

54. खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ! निस्संदेह इसमें बुद्धिमानों

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَ
فِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝
وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ۝ قَالَ
اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ۝
فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ
مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝
قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ
ضُحًى ۝ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ۝
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ۝
فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ۝
قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ
مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ

के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

55. उसी से हमने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटाते हैं और उसी से तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे।"

56. और हमने फ़िरऔन को अपनी सब निशानियाँ दिखाईं, किन्तु उसने झुठलाया और इनकार किया।——

57. उसने कहा : "ऐ मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू से हमको हमारे अपने भूभाग से निकाल दे?

58. अच्छा, हम भी तेरे पास ऐसा ही जादू लाते हैं। अब हमारे और अपने बीच एक निश्चित स्थान ठहरा ले, कोई बीच की जगह, न हम इसके विरुद्ध जाएँ और न तू।"

59. कहा : "उत्सव का दिन तुम्हारे वादे का है और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठे हो जाएँ।"

60. तब फ़िरऔन ने पलटकर अपने सारे हथकण्डे जुटाए। और आ गया।

61. मूसा ने उन लोगों से कहा : "तबाही है तुम्हारी; झूठ घड़कर अल्लाह पर न थोपो कि वह तुम्हें एक यातना से विनष्ट कर दे और झूठ जिस किसी ने भी घड़कर थोपा, वह असफल रहा।"

62. इसपर उन्होंने परस्पर बड़ा मतभेद किया और चुपके-चुपके कानाफूसी की।

63. कहने लगे : "ये दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे भूभाग से निकाल बाहर करें। और तुम्हारी उत्तम और उच्च प्रणाली को तहस-नहस करके रख दें।

الْمُثْلَىٰ ۝ فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ
أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ۝ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَن
تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ۝ قَالَ
بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ
مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ۝ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ
خِيفَةً مُّوسَىٰ ۝ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنتَ
الْأَعْلَىٰ ۝ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ
إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۝
فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ
وَمُوسَىٰ ۝ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ
لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ
وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ
النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ۝ قَالُوا

64. अत: तुम सब मिलकर अपना उपाय जुटा लो, फिर पंक्तिबद्ध होकर आओ। आज जो प्रभावी रहा, वही सफल है।"

65. वे बोले : "ऐ मूसा! या तो तुम फेंको या फिर हम पहले फेंकते हैं।"

66. कहा : "नहीं, बल्कि तुम्हीं फेंको।" फिर अचानक क्या देखते हैं कि उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ उनके जादू से उसके खयाल में दौड़ती हुई प्रतीत हुईं।

67. और मूसा अपने जी में डरा।

68. हमने कहा : "मत डर! निस्संदेह तू ही प्रभावी रहेगा।

69. और डाल दे जो तेरे दाहिने हाथ में है। जो कुछ उन्होंने रचा है, वह उसे निगल जाएगा। जो कुछ उन्होंने रचा है, वह तो बस जादूगर का स्वांग है और जादूगर सफल नहीं होता, चाहे वह जैसे भी आए।"

70. अन्ततः जादूगर सजदे में गिर पड़े, बोले : "हम हारून और मूसा के रब पर ईमान ले आए।"

71. उसने कहा : "तुमने मान लिया उसको, इससे पहले कि मैं तुम्हें इसकी अनुज्ञा देता? निश्चय ही यह तुम सबका प्रमुख है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। अच्छा, अब मैं तुम्हारा हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दे दूँगा। तब तुम्हें अवश्य ही मालूम हो जाएगा कि हममें से किसकी यातना अधिक कठोर और स्थायी है!"

لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِىْ
فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِىْ هٰذِهِ
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ؕ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا
وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّ
اَبْقٰى ۝ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ
جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝ وَمَنْ يَّاْتِهٖ
مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ
الْعُلٰى ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۝
وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْ
فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ
دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۝ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ
فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ

72. उन्होंने कहा : "जो स्पष्ट निशानियाँ हमारे सामने आ चुकी हैं उनके मुक़ाबले में सौगंध है उस सत्ता की, जिसने हमें पैदा किया है, हम कदापि तुझे प्राथमिकता नहीं दे सकते। तो जो कुछ तू फ़ैसला करनेवाला है, कर ले। तू बस इसी सांसारिक जीवन का फ़ैसला कर सकता है।

73. हम तो अपने रब पर ईमान ले आए, ताकि वह हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे और इस जादू को भी जिसपर तूने हमें बाध्य किया। अल्लाह ही उत्तम और शेष रहनेवाला है।"—

74. सत्य यह है कि जो कोई अपने रब के पास अपराधी बनकर आया उसके लिए जहन्नम है, जिसमें न वह मरेगा और न जिएगा।

75. और जो कोई उसके पास मोमिन होकर आया, जिसने अच्छे कर्म किए होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए तो ऊँचे दर्जे हैं।

76. अदन के बाग़ है, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। यह बदला है उसका जिसने स्वयं को विकसित किया।—

77. और हमने मूसा की ओर प्रकाशना की : "रातों रात मेरे बन्दों को लेकर निकल पड़, और उनके लिए दरिया में सूखा मार्ग निकाल ले। न तो तुझे पीछा किए जाने और पकड़े जाने का भय हो और न किसी अन्य चीज़ से तुझे डर लगे।"

78. फ़िरऔन ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया। अन्ततः पानी उनपर छा गया, जैसाकि उसे उनपर छा जाना था।

قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ
مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝ كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ
عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ
هَوٰى ۝ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ۝ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ
يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ
اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ۝ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ
مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝ فَرَجَعَ
مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ
اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ
عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ

79. फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को पथभ्रष्ट किया और मार्ग न दिखाया।

80. ऐ इसराईल की सन्तान! हमने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से छुटकारा दिया और तुमसे तूर के दाहिने छोर का वादा किया और तुमपर मन्न और सलवा उतारा :

81. "खाओ, जो कुछ पाक अच्छी चीज़ें हमने तुम्हें प्रदान की हैं, किन्तु इसमें हद से आगे न बढ़ो कि तुमपर मेरा प्रकोप टूट पड़े और जिस किसी पर मेरा प्रकोप टूटा, वह तो गिरकर ही रहा।

82. और जो तौबा कर ले और ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, फिर सीधे मार्ग पर चलता रहे, उसके लिए निश्चय ही मैं अत्यन्त क्षमाशील हूँ।"——

83. "और अपनी क़ौम को छोड़कर तुझे शीघ्र आने पर किस चीज़ ने उभारा, ऐ मूसा?"

84. उसने कहा : "वे मेरे पीछे ही हैं और मैं जल्दी बढ़कर आया तेरी ओर, ऐ रब! ताकि तू राज़ी हो जाए।"

85. कहा : "अच्छा, तो हमने तेरे पीछे तेरी क़ौम के लोगों को आज़माइश में डाल दिया है। और सामरी ने उन्हें पथभ्रष्ट कर डाला।"

86. तब मूसा अत्यन्त क्रोध और खेद में डूबा हुआ अपनी क़ौम के लोगों की ओर पलटा। कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुमसे तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तुमपर लम्बी मुद्दत गुज़र गई या तुमने यही चाहा कि

غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ۝ قَالُوْا مَآ
اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا
مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى
السَّامِرِيُّ ۝ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ
فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۥ فَنَسِيَ ۝
اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۥ وَّلَا يَمْلِكُ
لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۝ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ
قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ
فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ۝ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ
عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ۝ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا
مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ۝ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۚ اَفَعَصَيْتَ
اَمْرِيْ ۝ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ
اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

तुमपर तुम्हारे रब का प्रकोप ही टूटे कि तुमने मेरे वादे के विरुद्ध आचरण किया ?"

87. उन्होंने कहा : "हमने आपसे किए हुए वादे के विरुद्ध अपने अधिकार से कुछ नहीं किया, बल्कि लोगों के ज़ेवरों के बोझ हम उठाए हुए थे, फिर हमने उनको (आग में) फेंक दिया, सामरी ने इसी तरह प्रेरित किया था ।"——

88. और उसने उनके लिए एक बछड़ा ढालकर निकाला, एक धड़ जिसकी आवाज़ बैल की थी। फिर उन्होंने कहा : "यही तुम्हारा इष्ट-पूज्य है और मूसा का भी इष्ट-पूज्य, किन्तु वह भूल गया है।"

89. क्या वे देखते न थे कि न वह किसी बात का उन्हें उत्तर देता है और न उसे उनकी हानि का कुछ अधिकार प्राप्त है और न लाभ का ?

90. और हारून इससे पहले उनसे कह भी चुका था कि "मेरी क़ौम के लोगो ! तुम इसके कारण बस फ़ितने में पड़ गए हो। तुम्हारा रब तो रहमान है। अतः तुम मेरा अनुसरण करो और मेरी बात मानो।"

91. उन्होंने कहा : "जब तक मूसा लौटकर हमारे पास न आ जाए, हम तो इससे ही लगे बैठे रहेंगे।"

92-93. उसने कहा : "ऐ हारून ! जब तुमने देखा कि ये पथभ्रष्ट हो गए हैं, तो किस चीज़ ने तुम्हें रोका कि तुमने मेरा अनुसरण न किया ? क्या तुमने मेरे आदेश की अवहेलना की ?"

94. उसने कहा : "ऐ मेरी माँ के बेटे ! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर ! मैं डरा कि तू कहेगा कि 'तूने इसराईल की संतान में फूट डाल दी और

وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۝ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ۝
قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً
مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي
نَفْسِي ۝ قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَن
تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّن تُخْلَفَهُ ۖ
وَانظُرْ إِلَىٰ إِلَٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ
لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝ إِنَّمَا إِلَٰهُكُمُ
اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝
كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ
آتَيْنَاكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ۝ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ
يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ۝ خَالِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ۝ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ وَنَحْشُرُ
الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۝ يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن

मेरी बात पर ध्यान न दिया'।"

95. (मूसा ने) कहा : "ऐ सामरी ! तेरा क्या मामला है ?"

96. उसने कहा : "मुझे उसकी सूझ प्राप्त हुई, जिसकी सूझ उन्हें प्राप्त न हुई। फिर मैंने रसूल के पद-चिह्न से एक मुट्ठी उठा ली। फिर उसे डाल दिया और मेरे जी ने मुझे कुछ ऐसा ही सुझाया।"

97. कहा : "अच्छा, तू जा ! अब इस जीवन में तेरे लिए यही है कि कहता रहे : 'कोई छुए नहीं !' और निश्चय ही तेरे लिए एक निश्चित वादा है, जो तुझपर से कदापि न टलेगा। और देख अपने इष्ट-पूज्य को जिसपर तू रीझा-जमा बैठा था ! हम उसे जला डालेंगे, फिर उसे चूर्ण-विचूर्ण करके दरिया में बिखेर देंगे।"

98. "तुम्हारा पूज्य-प्रभु तो बस वही अल्लाह है, जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। वह अपने ज्ञान से हर चीज़ पर हावी है।"

99. इस प्रकार विगत वृत्तांत हम तुम्हें सुनाते हैं और हमने तुम्हें अपने पास से एक अनुस्मृति प्रदान की है।

100. जिस किसी ने उससे मुँह मोड़ा, वह निश्चय ही क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा।

101. ऐसे लोग सदैव इसी वबाल में पड़े रहेंगे और क़ियामत के दिन उनके हक़ में यह बहुत ही बुरा बोझ सिद्ध होगा।

102. जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम अपराधियों को उस दिन इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि उनकी आँखें नीली पड़ गई होंगी।

103. वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे कि "तुम बस दस ही दिन ठहरे हो।"

لَبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ۝ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ
اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ۝ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ
عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۝ فَيَذَرُهَا
قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ۝
يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ
الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ۝
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ
وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ۝ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ
لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝ وَمَنْ
يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ
ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا
وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ

104. हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे, जबकि उनका सबसे अच्छी सम्मतिवाला कहेगा : "तुम तो बस एक ही दिन ठहरे हो।"

105. वे तुमसे पर्वतों के विषय में पूछते हैं। कह दो : "मेरा रब उन्हें धूल की तरह उड़ा देगा,

106. और धरती को एक समतल चटियल मैदान बनाकर छोड़ेगा।

107. तुम उसमें न कोई सिलवट देखोगे और न ऊँच-नीच।"

108. उस दिन वे पुकारनेवाले के पीछे चल पड़ेंगे और उसके सामने कोई अकड़ न दिखाई जा सकेगी। आवाज़ें रहमान के सामने दब जाएँगी। एक हल्की मन्द आवाज़ के अतिरिक्त तुम कुछ न सुनोगे।

109. उस दिन सिफ़ारिश काम न आएगी। यह और बात है कि किसी के लिए रहमान अनुज्ञा दे और उसके लिए बात करने को पसन्द करे।

110. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, किन्तु वे अपने ज्ञान से उसपर हावी नहीं हो सकते।

111. चेहरे उस जीवन्त, शाश्वत सत्ता के आगे झुके होंगे। असफल हुआ वह जिसने ज़ुल्म का बोझ उठाया।

112. किन्तु जो कोई अच्छे कर्म करे और हो वह मोमिन, तो उसे न तो किसी ज़ुल्म का भय होगा और न हक़ मारे जाने का।

113. और इस प्रकार हमने इसे अरबी क़ुरआन के रूप में अवतरित किया है और हमने इसमें तरह-तरह से चेतावनियाँ दी हैं, ताकि वे डर रखें या यह

أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ
وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰ إِلَيْكَ
وَحْيُهُ ۖ وَقُل رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ
آدَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ۝ وَ
إِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا
إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ ۝ فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ
وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ۝
إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۝ وَأَنَّكَ
لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ۝ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ
الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ
الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ۝ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ
لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن
وَرَقِ الْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۝ ثُمَّ

उन्हें होश दिलाए।

114. अतः सर्वोच्च है अल्लाह, सच्चा सम्राट ! क़ुरआन के (फ़ैसले के) सिलसिले में जल्दी न करो, जब तक कि वह पूरा न हो जाए। तेरी ओर उसकी प्रकाशना हो रही है। और कहो : "मेरे रब, मुझे ज्ञान में अभिवृद्धि प्रदान कर।"

115. और हमने इससे पहले आदम से एक वचन लिया था, किन्तु वह भूल गया और हमने उसमें इरादे की मज़बूती न पाई।

116. और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि "आदम को सजदा करो।" तो उन्होंने सजदा किया सिवाय इबलीस के, वह इनकार कर बैठा।

117. इसपर हमने कहा : "ऐ आदम ! निश्चय ही यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है। ऐसा न हो कि यह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे और तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ।

118. तुम्हारे लिए तो ऐसा है कि न तुम यहाँ भूखे रहोगे और न नंगे।

119. और यह कि न यहाँ प्यासे रहोगे और न धूप की तकलीफ़ उठाओगे।"

120. फिर शैतान ने उसे उकसाया। कहने लगा : "ऐ आदम ! क्या मैं तुझे शाश्वत जीवन के वृक्ष का पता दूँ और ऐसे राज्य का जो कभी जीर्ण न हो ?"

121. अन्ततः उन दोनों ने उसमें से खा लिया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी छिपाने की चीज़ें उनके आगे खुल गईं और वे दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। और आदम ने अपने रब की अवज्ञा की, तो वह मार्ग से भटक गया।

122. इसके पश्चात उसके रब ने उसे चुन लिया और दोबारा उसकी ओर

اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ۝ قَالَ اهْبِطَا
مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ
مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ۝
وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً
ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ
حَشَرْتَنِيْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ
اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ۝
وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ۚ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ۝ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ
كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ
مَسٰكِنِهِمْ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ
اَجَلٌ مُّسَمًّى ۝ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

ध्यान दिया और उसका मार्गदर्शन किया।

123. कहा : "तुम दोनों के दोनों यहाँ से उतरो ! तुम्हारे कुछ लोग कुछ के शत्रु होंगे। फिर यदि मेरी ओर से तुम्हें मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया, वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ़ में पड़ेगा।

124. और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएँगे।"

125. वह कहेगा : "ऐ मेरे रब ! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखोंवाला था ?"

126. वह कहेगा : "इसी प्रकार (तू संसार में अंधा रहा था)। तेरे पास मेरी आयतें आई थीं, तो तूने उन्हें भुला दिया था। उसी प्रकार आज तुझे भुलाया जा रहा है।"

127. इसी प्रकार हम उसे बदला देते हैं जो मर्यादा का उल्लंघन करे और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए। और आख़िरत की यातना तो अत्यन्त कठोर और अधिक स्थायी है।

128. फिर क्या उनको इससे भी मार्ग न मिला कि हम उनसे पहले कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुके हैं, जिनकी बस्तियों में वे चलते-फिरते हैं ? निस्संदेह बुद्धिमानों के लिए इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं।

129. यदि तेरे रब की ओर से पहले ही एक बात निश्चित न हो गई होती और एक अवधि नियत न की जा चुकी होती, तो अवश्य ही उन्हें यातना आ पकड़ती।

130. अतः जो कुछ वे कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और अपने रब का

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ
وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
تَرْضَىٰ ۝ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ
أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ
فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ وَأْمُرْ أَهْلَكَ
بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ
نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۝ وَقَالُوا لَوْلَا
يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي
الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ۝ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن
قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا
فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ۝
قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ
أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ۝

गुणगान करो, सूर्योदय से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात की घड़ियों में भी तसबीह करो और दिन के किनारों पर भी, ताकि तुम राज़ी हो जाओ।

131. और उसकी ओर आँख उठाकर न देखो, जो कुछ हमने उनमें से विभिन्न लोगों को उपभोग के लिए दे रखा है, ताकि हम उसके द्वारा उन्हें आज़माएँ। वह तो बस सांसारिक जीवन की शोभा है। तुम्हारे रब की रोज़ी उत्तम भी है और स्थायी भी।

132. और अपने लोगों को नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उसपर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते। रोज़ी हम ही तुम्हें देते हैं, और अच्छा परिणाम तो धर्मपरायणता ही के लिए निश्चित है।

133. और वे कहते हैं कि "यह अपने रब की ओर से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता?" क्या उनके पास उसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ गया, जो कुछ कि पहले की पुस्तकों में उल्लिखित है?

134. यदि हम उसके पहले इन्हें किसी यातना से विनष्ट कर देते तो ये कहते कि "ऐ हमारे रब, तूने हमारे पास कोई रसूल क्यों न भेजा कि इससे पहले कि हम अपमानित और रुसवा होते, तेरी आयतों का अनुपालन करने लगते?"

135. कह दो : "हर एक प्रतीक्षा में है। अत: अब तुम भी प्रतीक्षा करो। शीघ्र ही तुम जान लोगे कि कौन सीधे मार्गवाले हैं और किनको मार्गदर्शन प्राप्त है।"

21. अल-अंबिया

(मक्का में उतरी— आयतें 112)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।



سورة الأنبياء مكية

بسم الله الرحمن الرحيم

اقترب للناس حسابهم وهم في غفلة معرضون ۝
ما يأتيهم من ذكر من ربهم محدث إلا استمعوه
وهم يلعبون ۝ لاهية قلوبهم وأسروا النجوى
الذين ظلموا هل هذا إلا بشر مثلكم أفتأتون
السحر وأنتم تبصرون ۝ قال ربي يعلم القول
في السماء والأرض وهو السميع العليم ۝ بل
قالوا أضغاث أحلام بل افتراه بل هو شاعر
فليأتنا بآية كما أرسل الأولون ۝ ما آمنت
قبلهم من قرية أهلكناها أفهم يؤمنون ۝
وما أرسلنا قبلك إلا رجالا نوحي إليهم
فاسألوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون ۝

1. निकट आ गया लोगों का हिसाब और वे हैं कि असावधान कतराते जा रहे हैं।

2. उनके पास जो ताज़ा अनुस्मृति भी उनके रब की ओर से आती है, उसे वे हँसी-खेल करते हुए ही सुनते हैं।

3. उनके दिल दिलचस्पियों में खोए हुए होते हैं। उन्होंने चुपके-चुपके कानाफूसी की—— अर्थात् अत्याचार की नीति अपनानेवालों ने कि "यह तो बस तुम जैसा ही एक मनुष्य है। फिर क्या तुम देखते-बूझते जादू में फँस जाओगे?"

4. उसने कहा : "मेरा रब जानता है उस बात को जो आकाश और धरती में हो। और वह भली-भाँति सब कुछ सुनने, जाननेवाला है।"

5. नहीं, बल्कि वे कहते हैं : "ये तो संभ्रमित स्वप्न हैं, बल्कि उसने इसे स्वयं ही घड़ लिया है, बल्कि वह एक कवि है! उसे तो हमारे पास कोई निशानी लानी चाहिए, जैसे कि (निशानियाँ देकर) पहले के रसूल भेजे गए थे।"

6. इनसे पहले कोई बस्ती भी, जिसको हमने विनष्ट किया, ईमान न लाई। फिर क्या ये ईमान लाएँगे?

7. और तुमसे पहले भी हमने पुरुषों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी ओर हम प्रकाशना करते थे।——यदि तुम्हें मालूम न हो तो ज़िक्रवालों (किताबवालों) से पूछ लो।——

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا
كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ
وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَكَمْ
قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا
بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا
هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ
اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۝ قَالُوْا
يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ
دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝ وَمَا
خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝ لَوْ
اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ
اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى

8. उनको हमने कोई ऐसा शरीर नहीं दिया था कि वे भोजन न करते हों और न वे सदैव रहनेवाले ही थे।

9. फिर हमने उनके साथ वादे को सच्चा कर दिखाया और उन्हें हमने छुटकारा दिया, और जिसे हम चाहें उसे छुटकारा मिलता है। और मर्यादाहीनों को हमने विनष्ट कर दिया।

10. लो, हमने तुम्हारी ओर एक किताब अवतरित कर दी है, जिसमें तुम्हारे लिए याददिहानी है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

11. कितनी ही बस्तियों को, जो ज़ालिम थीं, हमने तोड़कर रख दिया और उनके बाद हमने दूसरे लोगों को उठाया।

12. फिर जब उन्हें हमारी यातना का आभास हुआ तो लगे वहाँ से भागने।

13. (कहा गया :) "भागो नहीं! लौट चलो, उसी भोग-विलास की ओर जो तुम्हें प्राप्त था और अपने घरों की ओर ताकि तुमसे पूछा जाए।"

14. कहने लगे : "हाय हमारा दुर्भाग्य! निस्संदेह हम ज़ालिम थे।"

15. फिर उनकी निरन्तर यही पुकार रही, यहाँ तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे कटी हुई खेती, बुझी हुई आग हो।

16. और हमने आकाश और धरती को और जो कुछ इनके मध्य है कुछ इस प्रकार नहीं बनाया कि हम कोई खेल करनेवाले हों।

17. यदि हम कोई खेल-तमाशा करना चाहते तो अपने ही पास से कर लेते, यदि हम ऐसा करने ही वाले होते।

18. नहीं, बल्कि हम तो असत्य पर सत्य की चोट लगाते हैं, तो वह उसका

الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ الْوَيْلُ
مِمَّا تَصِفُونَ ۝ وَلَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ
وَمَنْ عِندَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝ يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ
لَا يَفْتُرُونَ ۝ أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ
هُمْ يُنشِرُونَ ۝ لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ
لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا
يَصِفُونَ ۝ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ۝
أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ
هَٰذَا ذِكْرُ مَن مَّعِيَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۖ فَهُم مُّعْرِضُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا
مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا
إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ

सिर तोड़ देता है। फिर क्या देखते हैं कि वह मिटकर रह जाता है और तुम्हारे लिए तबाही है उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो !

19. और आकाशों और धरती में जो कोई है उसी का है। और जो (फ़रिश्ते) उसके पास हैं वे न तो अपने को बड़ा समझकर उसकी बन्दगी से मुँह मोड़ते हैं और न वे थकते हैं।

20. रात और दिन तसबीह करते रहते हैं, दम नहीं लेते।

21. (क्या उन्होंने आकाश से कुछ पूज्य बना लिए हैं) .... या उन्होंने धरती से ऐसे इष्ट-पूज्य बना लिए हैं, जो पुनर्जीवित करते हों ?

22. यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में अल्लाह के सिवा दूसरे इष्ट-पूज्य भी होते तो दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अत: महान और उच्च है अल्लाह, राजासन का स्वामी, उन बातों से जो ये बयान करते हैं।

23. जो कुछ वह करता है उससे उसकी कोई पूछ नहीं हो सकती, किन्तु इनसे पूछ होगी।

24. (क्या ये अल्लाह के हक़ को नहीं पहचानते) या उसे छोड़कर इन्होंने दूसरे इष्ट-पूज्य बना लिए हैं (जिसके लिए इनके पास कुछ प्रमाण है)? कह दो : "लाओ, अपना प्रमाण ! यह अनुस्मृति है उनकी जो मेरे साथ हैं और अनुस्मृति है उनकी जो मुझसे पहले हुए हैं, किन्तु बात यह है कि इनमें अधिकतर सत्य को जानते नहीं, इसलिए कतरा रहे हैं।

25. हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा, उसकी ओर यही प्रकाशना की कि "मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अत: तुम मेरी ही बन्दगी करो।"

26. और वे कहते हैं कि "रहमान संतान रखता है।" महान है वह ! बल्कि

वे तो प्रतिष्ठित बन्दे हैं।[1]

27. उससे आगे बढ़कर नहीं बोलते और उसके आदेश का पालन करते हैं।

28. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वे किसी की सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उसके जिसके लिए अल्लाह पसन्द करे। और वे उसके भय से डरते रहते हैं।

29. और जो उनमें से यह कहे कि "उसके सिवा मैं भी एक इष्ट-पूज्य हूँ।" तो हम उसे बदले में जहन्नम देंगे। ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं।

وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ۝ يَعْلَمُ مَا
بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ
ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَمَنْ
يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ
جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا
رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ
حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ
اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۠ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا
لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَاۗءَ سَقْفًا
مَّحْفُوْظًا ښ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ۝ وَهُوَ
الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ

30. क्या उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया, देखा नहीं कि ये आकाश और धरती बन्द थे। फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई, तो क्या वे मानते नहीं?

31. और हमने धरती में अटल पहाड़ रख दिए, ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह उन्हें लेकर ढुलक जाए और हमने उसमें ऐसे दर्रे बनाए कि रास्तों का काम देते हैं, ताकि वे मार्ग पाएँ।

32. और हमने आकाश को एक सुरक्षित छत बनाया, किन्तु वे हैं कि उसकी निशानियों से कतरा जाते हैं।

33. वही है जिसने रात और दिन बनाए और सूर्य और चन्द्र भी। प्रत्येक अपने-अपने कक्ष में तैर रहा है।

---

1. अर्थात ये लोग जिनको अल्लाह की संतान ठहराते हैं, वे उसकी संतान नहीं, बल्कि उसके प्रतिष्ठित बन्दे हैं।

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن
قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ۝
كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ
وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَإِذَا
رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا
أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ
هُمْ كَافِرُونَ ۝ خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ
آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا
الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا
عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ بَلْ تَأْتِيهِم
بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ
يُنظَرُونَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن

34. हमने तुमसे पहले भी किसी आदमी के लिए अमरता नहीं रखी। फिर क्या यदि तुम मर गए, तो वे सदैव रहनेवाले हैं?

35. हर जीव को मौत का मज़ा चखना है और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सबकी परीक्षा करते हैं। अन्ततः तुम्हें हमारी ही ओर पलटकर आना है।

36. जिन लोगों ने इनकार किया वे जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारा उपहास ही करते हैं। (कहते हैं:) "क्या यही वह व्यक्ति है, जो तुम्हारे इष्ट-पूज्यों की बुराई के साथ चर्चा करता है?" और उनका अपना हाल यह है कि वे रहमान के ज़िक्र (स्मरण) से इनकार करते हैं।

37. मनुष्य उतावला पैदा किया गया है। मैं तुम्हें शीघ्र ही अपनी निशानियाँ दिखाए देता हूँ। अतः तुम मुझसे जल्दी मत मचाओ।

38. वे कहते हैं कि "यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो?"

39. अगर इनकार करनेवाले उस समय को जानते, जबकि वे न तो अपने चेहरों की ओर से आग को रोक सकेंगे और न अपनी पीठों की ओर से और न उन्हें कोई सहायता ही पहुँच सकेगी तो (यातना की जल्दी न मचाते)।

40. बल्कि वह अचानक उनपर आएगी और उन्हें स्तब्ध कर देगी। फिर न उसे वे फेर सकेंगे और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

41. तुमसे पहले भी रसूलों की हँसी उड़ाई जा चुकी है, किन्तु उनमें से जिन

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم بِاللَّيْلِ وَ
النَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِم
مُّعْرِضُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا ۚ
لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ۝
بَلْ مَتَّعْنَا هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ
أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ
أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ۝ قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ ۚ
وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ۝
وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ
يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ
الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ وَإِن
كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ

लोगों ने उनकी हँसी उड़ाई थी उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा, जिसकी वे हँसी उड़ाते थे।

42. कहो कि "कौन रहमान के मुक़ाबले में रात-दिन तुम्हारी रक्षा करेगा? बल्कि बात यह है कि वे अपने रब की याददिहानी से कतरा रहे हैं।

43. (क्या वे हमें नहीं जानते) या हमसे हटकर उनके और भी इष्ट-पूज्य हैं, जो उन्हें बचा लें? वे तो स्वयं अपनी ही सहायता नहीं कर सकते हैं और न हमारे मुक़ाबले में उनका कोई साथ ही दे सकता है।

44. बल्कि बात यह है कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादा को सुख-सुविधा की सामग्री प्रदान की, यहाँ तक कि इसी दशा में एक लम्बी मुद्दत उनपर गुज़र गई, तो क्या वे देखते नहीं कि हम इस भूभाग को उसके चतुर्दिक से घटाते हुए बढ़ रहे हैं?[1] फिर क्या वे अभिमानी रहेंगे?

45. कह दो : "मैं तो बस प्रकाशना के आधार पर तुम्हें सावधान करता हूँ।" किन्तु बहरे पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हें सावधान किया जाए।

46. और यदि तुम्हारे रब की यातना का कोई झोंका भी उन्हें छू जाए तो वे कहने लगें : "हाय, हमारा दुर्भाग्य! निस्संदेह हम ज़ालिम थे।"

47. और हम वज़नी, अच्छे न्यायपूर्ण कामों को क़ियामत के दिन के लिए रख रहे हैं। फिर किसी व्यक्ति पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा, यद्यपि वह (कर्म) राई के दाने ही के बराबर हो, हम उसे ला उपस्थित करेंगे। और हिसाब करने

---

1. अर्थात कुफ़्र और इनकार करनेवालों के हाथ से धरती निकलती चली जा रही है।

بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ
الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝
وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ
عٰلِمِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ
الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا
لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ
اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى
ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ
اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝ فَجَعَلَهُمْ

के लिए हम काफ़ी हैं।

48. और हम मूसा और हारून को कसौटी और रौशनी और याददिहानी प्रदान कर चुके हैं, उन डर रखनेवालों के लिए,

49. जो परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं और उन्हें क़ियामत की घड़ी का भय लगा रहता है।

50. और यह बरकतवाली अनुस्मृति है, जिसको हमने अवतरित किया है। तो क्या तुम्हें इससे इनकार है?

51. और इससे पहले हमने इबराहीम को उसकी हिदायत और समझ दी थी——और हम उसे भली-भाँति जानते थे।——

52. जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा : "ये मूर्तियाँ क्या हैं, जिनसे तुम लगे बैठे हो?"

53. वे बोले : "हमने अपने बाप-दादा को इन्हीं की पूजा करते पाया है।"

54. उसने कहा : "तुम भी और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में हो।"

55. उन्होंने कहा : "क्या तू हमारे पास सत्य लेकर आया है या यूँ ही खेल कर रहा है?"

56. उसने कहा : "नहीं, बल्कि बात यह है कि तुम्हारा रब आकाशों और धरती का रब है, जिसने उनको पैदा किया है और मैं इसपर तुम्हारे सामने गवाही देता हूँ।

57. और अल्लाह की क़सम! इसके पश्चात कि तुम पीठ फेरकर लौटो, मैं तुम्हारी मूर्तियों के साथ अवश्य एक चाल चलूँगा।"

58. अतएव उसने उन्हें खण्ड-खण्ड कर दिया सिवाय उनकी एक बड़ी के,

جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝
قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِيْمُ ۝ قَالُوْا
فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ۝
قَالُوْۤا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۝
قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا
يَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْۤا اِنَّكُمْ
اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ
عَلِمْتَ مَا هٰۤؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ۝ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝
اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا

कदाचित वे उसकी ओर रुजू करें।

59. वे कहने लगे : "किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है? निश्चय ही वह कोई ज़ालिम है।"

60. (कुछ लोग) बोले : "हमने एक नवयुवक को, जिसे इबराहीम कहते हैं, उनके विषय में कुछ कहते सुना है।"

61. उन्होंने कहा : "तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने कि वे भी गवाह रहें।"

62. उन्होंने कहा : "क्या तूने हमारे देवों के साथ यह हरकत की है, ऐ इबराहीम!"

63. उसने कहा : "नहीं, बल्कि उनके इस बड़े ने की होगी, उन्हीं से पूछ लो, यदि वे बोलते हों।"

64. तब वे अपनी ओर पलटे और कहने लगे : "वास्तव में, ज़ालिम तो तुम्हीं लोग हो।"

65. किन्तु फिर वे बिलकुल औंधे हो रहे। (फिर बोले :) "तुझे तो मालूम है कि ये बोलते नहीं।"

66. उसने कहा : "फिर क्या तुम अल्लाह से इतर उसे पूजते हो, जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सके और न तुम्हें कोई हानि पहुँचा सके?

67. धिक्कार है तुमपर, और उनपर भी, जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो! तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?"

68. उन्होंने कहा : "जला दो उसे, और सहायक हो अपने देवताओं के, यदि तुम्हें कुछ करना है।"

69. हमने कहा : "ऐ आग! ठंडी हो जा और सलामती बन जा इबराहीम पर!"

وَسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۙ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا
فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۚ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى
الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَوَهَبْنَا
لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۗ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۗ وَكُلًّا جَعَلْنَا
صٰلِحِيْنَ ۝ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا
وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ
اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۙ وَلُوْطًا
اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ
كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ
فٰسِقِيْنَ ۙ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝
وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ
وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُ
مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا

70. उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही, किन्तु हमने उन्हीं को घाटे में डाल दिया।

71. और हम उसे और लूत को बचाकर उस भूभाग की ओर निकाल ले गए, जिसमें हमने दुनियावालों के लिए बरकतें रखी थीं।

72. और हमने उसे इसहाक़ प्रदान किया और तदधिक याक़ूब भी। और प्रत्येक को हमने नेक बनाया।

73. और हमने उन्हें नायक बनाया कि वे हमारे आदेश से मार्ग दिखाते थे और हमने उनकी ओर नेक कामों के करने और नमाज़ की पाबन्दी करने और ज़कात देने की प्रकाशना की, और वे हमारी बन्दगी में लगे हुए थे।

74. और रहा लूत तो उसे हमने निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया और उसे उस बस्ती से छुटकारा दिया जो गन्दे कर्म करती थी। वास्तव में वह बहुत ही बुरी और अवज्ञाकारी क़ौम थी।

75. और उसको हमने अपनी दयालुता में प्रवेश कराया। निस्संदेह वह अच्छे लोगों में से था।

76. और नूह की भी चर्चा करो, जबकि उसने इससे पहले हमें पुकारा था, तो हमने उसकी सुन ली और हमने उसे और उसके लोगों को बड़े क्लेश से छुटकारा दिया।

77. और उस क़ौम के मुक़ाबले में जिसने हमारी आयतों को झुठला दिया था, हमने उसकी सहायता की। वास्तव में वे बुरे लोग थे। अतः हमने उन

قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَدَاوٗدَ وَ
سُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ
غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا
سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۚ وَّسَخَّرْنَا
مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۚ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝
وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ
بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ
الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ
بٰرَكْنَا فِيْهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنَ
الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ
ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝ وَاَيُّوْبَ اِذْ
نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ
الرّٰحِمِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ

सबको डुबो दिया।

78. और दाऊद और सुलैमान पर भी हमने कृपा-दृष्टि की। याद करो जबकि वे दोनों खेती के एक झगड़े का निबटारा कर रहे थे, जब रात को कुछ लोगों की बकरियाँ उसे रौंद गई थीं। और उनका (क़ौम के लोगों का) फ़ैसला हमारे सामने था।

79. तब हमने उसे सुलैमान को समझा दिया और यूँ तो हरेक को हमने निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया था। और दाऊद के साथ हमने पहाड़ों को वशीभूत कर दिया था, जो तसबीह करते थे, और पक्षियों को भी। और ऐसा करनेवाले हम ही थे।

80. और हमने उसे तुम्हारे लिए एक परिधान[1] (बनाने) की शिल्प-कला भी सिखाई थी, ताकि युद्ध में वह तुम्हारी रक्षा करे। फिर क्या तुम आभार मानते हो?

81. और सुलैमान के लिए हमने तेज़ वायु को वशीभूत कर दिया था, जो उसके आदेश से उस भूभाग की ओर चलती थी जिसे हमने बरकत दी थी। हम तो हर चीज़ का ज्ञान रखते हैं।

82. और कितने ही शैतानों को भी अधीन किया था, जो उसके लिए ग़ोते लगाते और इसके अतिरिक्त दूसरा काम भी करते थे। और हम ही उनको संभालनेवाले थे।

83. और अय्यूब पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि "मुझे बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और तू सबसे बढ़कर दयावान है।"

84. अतः हमने उसकी सुन ली और जिस तकलीफ़ में वह पड़ा था उसको दूर

1. अर्थात कवच।

ضُرٍّ وَّاٰتَيۡنٰهُ اَهۡلَهٗ وَمِثۡلَهُمۡ مَّعَهُمۡ رَحۡمَةً مِّنۡ
عِنۡدِنَا وَذِكۡرٰى لِلۡعٰبِدِيۡنَ ۝ وَاِسۡمٰعِيۡلَ وَ
اِدۡرِيۡسَ وَذَا الۡكِفۡلِ‌ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيۡنَ ۝ۖ
وَاَدۡخَلۡنٰهُمۡ فِىۡ رَحۡمَتِنَا‌ؕ اِنَّهُمۡ مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ ۝
وَذَا النُّوۡنِ اِذۡ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنۡ لَّنۡ
نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنۡ لَّاۤ اِلٰهَ
اِلَّاۤ اَنۡتَ سُبۡحٰنَكَ ‌ۖ اِنِّىۡ كُنۡتُ مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ۝ۚ
فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيۡنٰهُ مِنَ الۡغَمِّ‌ؕ وَكَذٰلِكَ
نُـنۡجِى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝ وَزَكَرِيَّاۤ اِذۡ نَادٰى رَبَّهٗ
رَبِّ لَا تَذَرۡنِىۡ فَرۡدًا وَّاَنۡتَ خَيۡرُ الۡوٰرِثِيۡنَ ۝ۖ
فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ وَوَهَبۡنَا لَهٗ يَحۡيٰى وَاَصۡلَحۡنَا لَهٗ
زَوۡجَهٗ‌ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا يُسٰرِعُوۡنَ فِى الۡخَيۡرٰتِ وَ
يَدۡعُوۡنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا‌ؕ وَكَانُوۡا لَنَا خٰشِعِيۡنَ ۝

कर दिया, और हमने उसे उसके परिवार के लोग दिए और उनके साथ उनके जैसे और भी दिए अपने यहाँ से दयालुता के रूप में और एक याददिहानी के रूप में बन्दगी करनेवालों के लिए।

85. और इसमाईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल पर भी कृपा-दृष्टि की। इनमें से प्रत्येक धैर्यवानों में से था।

86. और उन्हें हमने अपनी दयालुता में प्रवेश कराया। निस्संदेह वे सब अच्छे लोगों में से थे।

87. और ज़ुन्नून (मछलीवाले)[1] पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि वह अत्यन्त क्रुद्ध होकर चल दिया और समझा कि हम उसे तंगी में न डालेंगे। अन्त में उसने अँधेरों में पुकारा : "तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं दोषी हूँ।"

88. तब हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसे ग़म से छुटकारा दिया। इसी प्रकार तो हम मोमिनों को छुटकारा दिया करते हैं।

89. और ज़करीया पर भी कृपा की। याद करो जबकि उसने अपने रब को पुकारा : "ऐ मेरे रब! मुझे अकेला न छोड़ यूँ, सबसे अच्छा वारिस तो तू ही है।"

90. अतः हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे यह्या प्रदान किया और उसके लिए उसकी पत्नी को स्वस्थ कर दिया। निश्चय ही वे नेकी के कामों में एक-दूसरे के मुक़ाबले में जल्दी करते थे। और हमें ईप्सा (चाह) और भय के साथ पुकारते थे और हमारे आगे दबे रहते थे।

---

1. हज़रत यूनुस (अलै०) की ओर इशारा है।

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا
وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّ هٰذِهٖٓ
اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝
وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۝
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ
لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ۝ وَحَرٰمٌ عَلٰي قَرْيَةٍ
اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ حَتّٰٓي اِذَا فُتِحَتْ
يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ
اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ
غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ وَمَا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا
وٰرِدُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ

91. और वह नारी जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की थी, हमने उसके भीतर अपनी रूह फूँकी और उसे और उसके बेटे को सारे संसार के लिए एक निशानी बना दिया।

92. "निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब हूँ। अतः तुम मेरी बन्दगी करो।"

93. किन्तु उन्होंने आपस में अपने मामले को[1] टुकड़े-टुकड़े कर डाला।——प्रत्येक को हमारी ओर पलटना है।——

94. फिर जो अच्छे कर्म करेगा, शर्त यह कि वह मोमिन हो, तो उसके प्रयास की उपेक्षा न होगी। हम तो उसके लिए उसे लिख रहे हैं।

95. और किसी बस्ती के लिए असंभव है जिसे हमने विनष्ट कर दिया कि उसके लोग (क़ियामत के दिन दण्ड पाने हेतु) न लौटें।

96. यहाँ तक कि वह समय आ जाए जब याजूज और माजूज[2] खोल दिए जाएँगे। और वे हर ऊँची जगह से निकल पड़ेंगे।

97. और सच्चा वादा निकट आ लगेगा, तो क्या देखेंगे कि उन लोगों की आँखें फटी की फटी रह गई हैं, जिन्होंने इनकार किया था : "हाय, हमारा दुर्भाग्य ! हम इसकी ओर से असावधान रहे, बल्कि हम ही अत्याचारी थे।"

98. "निश्चय ही तुम और वह कुछ जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हो। तुम उसके घाट उतरोगे।"

99. यदि ये पूज्य होते, तो उसमें न उतरते। और वे सब उसमें सदैव रहेंगे भी।

1. अर्थात अपने दीन-धर्म को।
2. ये क़ौम के नाम हैं।

100. उनके लिए वहाँ शोर गुल होगा और वे वहाँ कुछ भी नहीं सुन सकेंगे।

101. रहे वे लोग जिनके लिए पहले ही हमारी ओर से अच्छे इनाम का वादा हो चुका है, वे उससे दूर रहेंगे।

102. वे उसकी आहट भी नहीं सुनेंगे और अपनी मनचाही चीज़ों के मध्य सदैव रहेंगे।

103. वह सबसे बड़ी घबराहट उन्हें ग़म में न डालेगी। फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे : "यह तुम्हारा वही दिन है, जिसका तुमसे वादा किया जाता रहा है।"

وَكُلٌّ فِيهَا خٰلِدُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ
فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا
الْحُسْنٰى أُولٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ
حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ
خٰلِدُونَ ۝ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ
الْمَلٰئِكَةُ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝
يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ كَمَا
بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا
كُنَّا فٰعِلِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ
بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُونَ ۝
إِنَّ فِي هٰذَا لَبَلٰغًا لِقَوْمٍ عٰبِدِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا
رَحْمَةً لِلْعٰلَمِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا يُوحٰى إِلَيَّ أَنَّمَا
إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

104. जिस दिन हम आकाश को लपेट लेंगे जैसे पंजी में पन्ने लपेटे जाते हैं, जिस प्रकार पहले हमने सृष्टि का आरंभ किया था उसी प्रकार हम उसकी पुनरावृत्ति करेंगे। यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है। निश्चय ही हमें यह करना है।

105. और हम ज़बूर में याददिहानी के पश्चात लिख चुके हैं कि "धरती के वारिस[1] मेरे अच्छे बन्दे होंगे।"

106. इसमें बन्दगी करनेवाले लोगों के लिए एक संदेश है।

107. हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है।

108. कहो : "मेरे पास तो बस यह प्रकाशना की जाती है कि 'तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है। फिर क्या तुम आज्ञाकारी होते हो'?"

---

1. अर्थात जन्नत की धरती के वारिस या उस भूमि के वारिस जहाँ सत्य और असत्य में संघर्ष हो।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ
أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَمْ بَعِيدٌ مَا تُوعَدُونَ ۝ إِنَّهُ
يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۝
وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ
حِينٍ ۝ قَالَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

سُورَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ
شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ
عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَارَىٰ وَلَٰكِنَّ
عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ

109. फिर यदि वे मुँह फेरें तो कह दो : "मैंने तुम्हें सामान्य रूप से सावधान कर दिया है। अब मैं यह नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह निकट है या दूर।"

110. निश्चय ही वह ऊँची आवाज़ में कही हुई बात को जानता है और उसे भी जानता है जो तुम छिपाते हो।

111. मुझे नहीं मालूम कि कदाचित यह तुम्हारे लिए एक परीक्षा हो और एक नियत समय तक के लिए जीवन-सुख।

112. उसने कहा : "ऐ मेरे रब, सत्य का फ़ैसला कर दे! और हमारा रब रहमान है। उसी से सहायता की प्रार्थना है, उन बातों के मुक़ाबले में जो तुम लोग बयान करते हो।

22. अल-हज

(मक्का में उतरी—आयतें 78)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो! निश्चय ही क़ियामत की घड़ी का भूकम्प बड़ी भयानक चीज़ है।

2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, हाल यह होगा कि प्रत्येक दूध पिलानेवाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भभार रख देगी। और लोगों को तुम नशे में देखोगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह की यातना है ही बड़ी कठोर चीज़।

3. लोगों में कोई ऐसा भी है, जो ज्ञान के बिना अल्लाह के विषय में

فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ
كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَ
يَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ
اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ
مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ
مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ
وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى
اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا
وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ
بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ

झगड़ता है और प्रत्येक सरकश शैतान का अनुसरण करता है।

4. जबकि उसके लिए लिख दिया गया है कि जो उससे मित्रता का सम्बन्ध रखेगा उसे वह पथभ्रष्ट करके रहेगा और उसे दहकती अग्नि की यातना की ओर ले जाएगा।

5. ऐ लोगो ! यदि तुम्हें दोबारा जी उठने के विषय में कोई संदेह हो तो देखो, हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर लोथड़े से, फिर माँस की बोटी से जो बनावट में पूर्ण दशा में भी होती है और अपूर्ण दशा में भी, ताकि हम तुमपर स्पष्ट कर दें और हम जिसे चाहते हैं एक नियत समय तक गर्भाशयों में ठहराए रखते हैं। फिर तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकाल लाते हैं। फिर (तुम्हारा पालन-पोषण होता है) ताकि तुम अपनी युवावस्था को प्राप्त हो और तुममें से कोई तो पहले मर जाता है और कोई बुढ़ापे की जीर्ण अवस्था की ओर फेर दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप, जानने के पश्चात वह कुछ भी नहीं जानता। और तुम भूमि को देखते हो कि सूखी पड़ी है। फिर जहाँ हमने उसपर पानी बरसाया कि वह फबक उठी और वह उभर आई और उसने हर प्रकार की शोभायमान चीज़ें उगाईं।

6. यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और वह मुर्दों को जीवित करता है

الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ السَّاعَةَ
اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى
الْقُبُوْرِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ ثَانِىَ
عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا
خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ
لِّلْعَبِيْدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى
حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ
اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝ يَدْعُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ
هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ

और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

7. और यह कि क़ियामत की घड़ी आनेवाली है, इसमें कोई संदेह नहीं है। और यह कि अल्लाह उन्हें उठाएगा जो क़ब्रों में हैं।

8-9. और लोगों में कोई ऐसा है जो किसी ज्ञान, मार्गदर्शन और प्रकाशमान किताब के बिना अल्लाह के विषय में (घमण्ड से) अपने पहलू मोड़ते हुए झगड़ता है, ताकि अल्लाह के मार्ग से भटका दे। उसके लिए दुनिया में भी रुसवाई है और क़ियामत के दिन हम उसे जलने की यातना का मज़ा चखाएँगे।

10. (कहा जाएगा :) यह उसके कारण है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा था और इसलिए कि अल्लाह बन्दों पर तनिक भी ज़ुल्म करनेवाला नहीं।

11. और लोगों में कोई ऐसा है, जो एक किनारे पर रहकर अल्लाह की बन्दगी करता है। यदि उसे लाभ पहुँचा तो उससे संतुष्ट हो गया और यदि उसे कोई आज़माइश पेश आ गई तो औंधा होकर पलट गया। दुनिया भी खोई और आख़िरत भी। यही है खुला घाटा।

12. वह अल्लाह को छोड़कर उसे पुकारता है, जो न उसे हानि पहुँचा सके और न उसे लाभ पहुँचा सके। यही है परले दर्जे की गुमराही।

13. वह उसको पुकारता है जिससे पहुँचनेवाली हानि उससे अपेक्षित लाभ

مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝ اِنَّ
اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا
يُرِيْدُ ۝ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۗءِ
ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۝
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ
مَنْ يُّرِيْدُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ڰ
اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَ
الْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ

की अपेक्षा अधिक निकट है। बहुत ही बुरा संरक्षक है वह और बहुत ही बुरा साथी !

14. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। निस्संदेह अल्लाह जो चाहे करे।

15. जो कोई यह समझता है कि अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उसकी (रसूल की) कदापि कोई सहायता न करेगा तो उसे चाहिए कि वह आकाश की ओर एक रस्सी ताने, फिर (अल्लाह की सहायता के सिलसिले को) काट दे। फिर देख ले कि क्या उसका उपाय उस चीज़ को दूर कर सकता है जो उसे क्रोध में डाले हुए है।

16. इसी प्रकार हमने इस (क़ुरआन) को स्पष्ट आयतों के रूप में अवतरित किया। और बात यह है कि अल्लाह जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है।

17. जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबिई और ईसाई और मजूस और जिन लोगों ने शिर्क किया——इन सबके बीच अल्लाह क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा। निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि में हर चीज़ है।

18. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ही को सजदा करते हैं वे सब जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं, और सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पहाड़, वृक्ष, जानवर और बहुत-से मनुष्य ? और बहुत-से ऐसे हैं जिनपर यातना का औचित्य सिद्ध



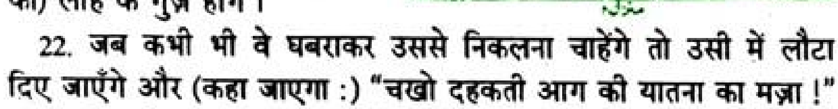
وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَ
مَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ
مَا يَشَاءُ ۩ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ
فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ
يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ
بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُم مَّقَامِعُ
مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ
غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾
إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا
مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا
حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا
إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

हो चुका है, और जिसे अल्लाह अपमानित करे उसे सम्मानित करनेवाला कोई नहीं। निस्संदेह अल्लाह जो चाहे करता है।

19. ये दो विवादी हैं, जो अपने रब के विषय में आपस में झगड़े। अतः जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए आग के वस्त्र काटे जा चुके हैं। उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।

20. इससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी।

21. और उनके लिए (दण्ड देने को) लोहे के गुर्ज़ होंगे।



22. जब कभी भी वे घबराकर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिए जाएँगे और (कहा जाएगा :) "चखो दहकती आग की यातना का मज़ा!"

23. निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ वे सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किए जाएँगे और वहाँ उनका परिधान रेशमी होगा।

24. निर्देशित किया गया उन्हें अच्छे पाक बोल की ओर और उनको प्रशंसित अल्लाह का मार्ग दिखाया गया।

25. जिन लोगों ने इनकार किया और वे अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और

وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَ
الْبَادِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ
مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ
الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ
لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ۝
وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ
كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۝
لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ
الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ۝
ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا
بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝ ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ

प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) से, जिसे हमने सब लोगों के लिए ऐसा बनाया है कि उसमें बराबर है वहाँ का रहनेवाला और बाहर से आया हुआ। और जो व्यक्ति उस (प्रतिष्ठित मस्जिद) में कुटिलता अर्थात ज़ुल्म के साथ कुछ करना चाहेगा, उसे हम दुखद यातना का मज़ा चखाएँगे।

26. याद करो जब कि हमने इबराहीम के लिए अल्लाह के घर को ठिकाना बनाया, इस आदेश के साथ कि "मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराना और मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करनेवालों और खड़े होने और झुकने और सजदा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखना।"

27. और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो कि "वे प्रत्येक गहरे मार्ग से, पैदल भी और दुबली-दुबली ऊँटनियों पर, तेरे पास आएँ।

28. ताकि वे उन लाभों को देखें जो वहाँ उनके लिए रखे गए हैं। और कुछ ज्ञात और निश्चित दिनों में उन चौपाए अर्थात मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें[1], जो उसने उन्हें दिए हैं। फिर उसमें से स्वयं भी खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ।"

29. फिर उन्हें चाहिए कि अपना मैल-कुचैल दूर करें और अपनी मन्नतें पूरी करें और इस पुरातन घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।

30. इन बातों का ध्यान रखो और जो कोई अल्लाह द्वारा निर्धारित मर्यादाओं

1. अर्थात अल्लाह का नाम लेकर उनको ज़िब्ह करें।

اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ اُحِلَّتْ لَكُمُ
الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ
مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۙ حُنَفَآءَ
لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ
فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ
تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝ ذٰلِكَ ۗ
وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝
لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَاۤ
اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا
لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ
الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ

का आदर करे, तो यह उसके रब के यहाँ उसी के लिए अच्छा है। और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल हैं, सिवाय उनके जो तुम्हें बताए गए हैं। तो मूर्तियों की गन्दगी से बचो और बचो झूठी बात से।

31. इस तरह कि अल्लाह ही की ओर के होकर रहो। उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ, क्योंकि जो कोई अल्लाह के साथ साझी ठहराता है तो मानो वह आकाश से गिर पड़ा। फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जाएँ या वायु उसे किसी दूरवर्ती स्थान पर फेंक दे।

32. इन बातों का ख़याल रखो। और जो कोई अल्लाह के नाम लगी चीज़ों का आदर करे, तो निस्संदेह वे (चीज़ें) दिलों के तक़वा (धर्मपरायणता) से संबंध रखती हैं।

33. उनमें एक निश्चित समय तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं। फिर उनको उस पुरातन घर तक (कुरबानी के लिए) पहुँचना है।

34. और प्रत्येक समुदाय के लिए हमने कुरबानी का विधान किया, ताकि वे उन जानवरों अर्थात मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें, जो उसने उन्हें प्रदान किए हैं। अत: तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है। तो उसी के आज्ञाकारी बनकर रहो और विनम्रता अपनानेवालों को शुभ सूचना दे दो।

35. ये वे लोग हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जो मुसीबत उनपर आती है उसपर धैर्य से काम लेते हैं और

وَالْمُقِيمِي الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝
وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ
فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ
فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا
الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا
وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۚ
كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا
هَدٰىكُمْ ۚ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ
عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ
كَفُوْرٍ ۝ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۚ
وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝ الَّذِيْنَ
اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا

नमाज़ को क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं।

36. (कुरबानी के) ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है। तुम्हारे लिए उनमें भलाई है। अतः खड़ा करके उनपर अल्लाह का नाम लो। फिर जब उनके पहलू भूमि से आ लगें तो उनमें से स्वयं भी खाओ और संतोष से बैठनेवालों को भी खिलाओ और माँगनेवालों को भी। ऐसा ही करो। हमने उनको तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ।

37. न उनके माँस अल्लाह को पहुँचते हैं और न उनके रक्त। किन्तु उसे तुम्हारा तक़वा (धर्मपरायणता) पहुँचता है। इस प्रकार उसने उन्हें तुम्हारे लिए वशीभूत किया है, ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो, इसपर कि उसने तुम्हारा मार्गदर्शन किया और सुकर्मियों को शुभ सूचना दे दो।

38. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों की ओर से प्रतिरक्षा करता है, जो ईमान लाए। निस्संदेह अल्लाह किसी विश्वासघाती, अकृतज्ञ को पसन्द नहीं करता।

39. अनुमति दी गई उन लोगों को जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उनपर ज़ुल्म किया गया—और निश्चय ही अल्लाह उनकी सहायता की पूरी सामर्थ्य रखता है।—

40. ये वे लोग हैं जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गए, केवल इसलिए कि वे कहते हैं कि "हमारा रब अल्लाह है।" यदि अल्लाह लोगों को एक-दूसरे

के द्वारा हटाता न रहता तो मठ और गिरजा और यहूदी प्रार्थना भवन और मस्जिदें, जिनमें अल्लाह का अधिक नाम लिया जाता है, सब ढा दी जातीं। अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा, जो उसकी सहायता करेगा—निश्चय ही अल्लाह बड़ा बलवान, प्रभुत्वशाली है।—

41. ये वे लोग हैं कि यदि धरती में हम उन्हें सत्ता प्रदान करें तो वे नमाज़ का आयोजन करेंगे और ज़कात देंगे और भलाई का आदेश करेंगे और बुराई से रोकेंगे। और सब मामलों का अंतिम परिणाम अल्लाह ही के हाथ में है।

رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّ
مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ
الْاُمُوْرِ ۝ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝ وَقَوْمُ
اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ
مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ
اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

42-44. यदि वे तुम्हें झुठलाते हैं तो उनसे पहले नूह की क़ौम, आद और समूद और इबराहीम की क़ौम और लूत की क़ौम और मदयनवाले भी झुठला चुके हैं और मूसा को भी झुठलाया जा चुका है। किन्तु मैंने इनकार करनेवालों को मुहलत दी, फिर उन्हें पकड़ लिया। तो कैसी रही मेरी यंत्रणा !

45. कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने विनष्ट कर दिया इस दशा में कि वे ज़ालिम थीं, तो वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं। और कितने ही परित्यक्त

(उजाड़) कुएँ पड़े हैं और कितने ही पक्के महल भी !

46. क्या वे धरती में चले फिरे नहीं हैं कि उनके दिल होते जिनसे वे समझते या (कम से कम) कान होते जिनसे वे सुनते ? बात यह है कि आँखे अंधी नहीं हो जातीं, बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में होते हैं ।

47. और वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं ! अल्लाह कदापि अपने वादे के विरुद्ध न करेगा । किन्तु तुम्हारे रब के यहाँ एक दिन, तुम्हारी गणना के अनुसार, एक हज़ार वर्ष जैसा है ।

عُرُوشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيدٍ ۝
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ
يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۖ فَإِنَّهَا لَا
تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِن تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي
فِي الصُّدُورِ ۝ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَ
لَن يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ
رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝ وَكَأَيِّن
مِّن قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ
أَخَذْتُهَا وَإِلَيَّ الْمَصِيرُ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ فَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن

48. कितनी ही बस्तियाँ हैं जिनको मैंने मुहलत दी इस दशा में कि वे ज़ालिम थीं । फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और अन्ततः आना तो मेरी ही ओर है ।

49. कह दो : "ऐ लोगो ! मैं तो तुम्हारे लिए बस एक साफ़-साफ़ सचेत करनेवाला हूँ ।"

50. फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए क्षमादान और सम्मानपूर्ण आजीविका है ।

51. किन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों को नीचा दिखाने की कोशिश की, वही भड़कती आगवाले हैं ।

52. तुमसे पहले जो रसूल और नबी भी हमने भेजा, तो जब भी उसने कोई

قبلك من رسول ولا نبي الا اذا تمنى القى
الشيطن في امنيته ۚ فينسخ الله ما يلقي
الشيطن ثم يحكم الله ايته ۭ والله عليم
حكيم ۙ ليجعل ما يلقي الشيطن فتنة
للذين في قلوبهم مرض والقاسية قلوبهم ۭ
وان الظلمين لفي شقاق بعيد ۙ وليعلم
الذين اوتوا العلم انه الحق من ربك
فيؤمنوا به فتخبت له قلوبهم ۭ وان الله
لهاد الذين امنوا الى صراط مستقيم ۝
ولا يزال الذين كفروا في مرية منه
حتى تاتيهم الساعة بغتة او ياتيهم عذاب
يوم عقيم ۝ الملك يومئذ لله ۭ يحكم
بينهم ۭ فالذين امنوا وعملوا الصلحت في

कामना की तो शैतान ने उसकी कामना में विघ्न डाला। इस प्रकार जो कुछ भी शैतान विघ्न डालता है, अल्लाह उसे मिटा देता है।[1] फिर अल्लाह अपनी आयतों को सुदृढ़ कर देता है।——अल्लाह सर्वज्ञ, बड़ा तत्वदर्शी है।——

53. ताकि शैतान के डाले हुए विघ्न को उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल कठोर हैं।——निस्संदेह ज़ालिम परले दर्जे के विरोध में ग्रस्त हैं।——

54. और ताकि वे लोग जिन्हें ज्ञान मिला है, जान लें कि यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है। अतः वे इसपर ईमान लाएँ और उसके सामने उनके दिल झुक जाएँ और निश्चय ही अल्लाह ईमान लानेवालों को अवश्य सीधा मार्ग दिखाता है।

55. जिन लोगों ने इनकार किया वे सदैव इसकी ओर से संदेह में पड़े रहेंगे, यहाँ तक कि क़ियामत की घड़ी अचानक उनपर आ जाए या एक अशुभ दिन की यातना उनपर आ पहुँचे।

56. उस दिन बादशाही अल्लाह ही की होगी। वह उनके बीच फ़ैसला कर देगा। अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे नेमत भरी

1. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पहले पैग़म्बरों की शिक्षाओं में लोगों ने शैतान के बहकावे में आकर बहुत-सी ग़लत बातें सम्मिलित कर दीं, विशेष रूप से यहूदियों और बहुदेववादी जातियों ने ऐसी ही हरकतें की हैं। जब क़ुरआन अवतरित हुआ तो उसने ऐसी सभी ग़लत और गुमराही की बातों का खण्डन करके नबियों की वास्तविक शिक्षाओं को स्पष्ट कर दिया।

जन्नतों में होंगे।

57. और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, उनके लिए अपमानजनक यातना है।

58. और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में घरबार छोड़ा, फिर मारे गए या मर गए, अल्लाह अवश्य उन्हें अच्छी आजीविका प्रदान करेगा। और निस्संदेह अल्लाह ही उत्तम आजीविका प्रदान करनेवाला है।

59. वह उन्हें ऐसी जगह प्रवेश कराएगा जिससे वे प्रसन्न हो जाएँगे। और निश्चय ही अल्लाह सर्वज्ञ, अत्यन्त सहनशील है।

جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۞ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۞ وَالَّذِيْنَ
هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا
لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ
خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۞ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۭ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۞ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ
عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ
لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۞ ذٰلِكَ
بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ۞ ذٰلِكَ بِاَنَّ
اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ
الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۞ اَلَمْ
تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۡ فَتُصْبِحُ

60. यह बात तो सुन ली। और जो कोई बदला ले, वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया और फिर उसपर ज़्यादती की गई, तो अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा। निश्चय ही अल्लाह दरगुज़र करनेवाला, (छोड़ देनेवाला) बहुत क्षमाशील है।

61. यह इसलिए कि अल्लाह ही है जो रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में पिरोता हुआ ले आता है। और यह कि अल्लाह सुनता, देखता है।

62. यह इसलिए भी कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे उसको छोड़कर पुकारते हैं, वे सब असत्य हैं, और यह कि अल्लाह ही सर्वोच्च, महान है।

63. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह आकाश से पानी बरसाता है, तो धरती

हरी-भरी हो जाती है? निस्संदेह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखने-वाला है।

64. उसी का है जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है। निस्संदेह अल्लाह ही निस्पृह प्रशंसनीय है।

65. क्या तुमने देखा नहीं कि धरती में जो कुछ भी है उसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए वशीभूत कर रखा है और नौका को भी कि उसके आदेश से दरिया में चलती है, और उसने आकाश को धरती पर गिरने से रोक रखा है। उसकी अनुज्ञा हो तो बात दूसरी है। निस्संदेह अल्लाह लोगों के हक़ में बड़ा करुणाशील, दयावान है।

الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝ لَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا
فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ
وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا
بِإِذْنِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَ
هُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ
إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۝ لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا
مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ ۖ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ
وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٍ ۝
وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝
اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي

66. और वही है जिसने तुम्हें जीवन प्रदान किया। फिर वही तुम्हें मृत्यु देता है और फिर वही तुम्हें जीवित करनेवाला है। निस्संदेह मानव बड़ा ही अकृतज्ञ है।

67. प्रत्येक समुदाय के लिए हमने बन्दगी की एक रीति निर्धारित कर दी है, जिसका पालन उसके लोग करते हैं। अत: इस मामले में वे तुमसे झगड़ने की राह न पाएँ। तुम तो अपने रब की ओर बुलाए जाओ। निस्संदेह तुम सीधे मार्ग पर हो।

68. और यदि वे तुमसे झगड़ा करें तो कह दो कि "तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

69. अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा, जिसमें तुम विभेद करते हो।"

70. क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाश और

السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ
اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُم
بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ
عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ
يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ
مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ
فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ
اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَ
إِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ
مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ۝ مَا قَدَرُوا

धरती में है? निश्चय ही वह (लोगों का कर्म) एक किताब में अंकित है। निस्संदेह वह (फ़ैसला करना) अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।

71. और वे अल्लाह से इतर उनकी बन्दगी करते हैं जिनके लिए न तो उसने कोई प्रमाण उतारा और न उन्हें उनके विषय में कोई ज्ञान ही है। और इन ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं।

72. और जब उन्हें हमारी स्पष्ट आयतें सुनाई जाती हैं, तो इनकार करनेवालों के चेहरों पर तुम्हें नागवारी प्रतीत होती है। लगता है कि अभी वे उन लोगों पर टूट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। कह दो : "क्या मैं तुम्हें इससे भी बुरी चीज़ की ख़बर दूँ? आग है वह—— अल्लाह ने इनकार करनेवालों से उसी का वादा कर रखा है——और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।"

73. ऐ लोगो! एक मिसाल पेश की जाती है। उसे ध्यान से सुनो : अल्लाह से हटकर तुम जिन्हें पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। यद्यपि इसके लिए वे सब इकट्ठे हो जाएँ और यदि मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले जाए तो उससे वे उसको छुड़ा भी नहीं सकते। बेबस और असहाय रहा चाहनेवाला भी (उपासक) और उसका अभीष्ट (उपास्य) भी।[1]

74. उन्होंने अल्लाह की क़द्र ही नहीं पहचानी जैसी कि उसकी क़द्र पहचाननी

1. बेबस रहा कि अपने उपास्य को न पा सका।

الله حق قدره ان الله لقوي عزيز ○ الله
يصطفي من الملائكة رسلا ومن الناس ○
ان الله سميع بصير ○ يعلم ما بين ايديهم
وما خلفهم ○ والى الله ترجع الامور ○
يايها الذين امنوا اركعوا واسجدوا واعبدوا
ربكم وافعلوا الخير لعلكم تفلحون ○ وجاهدوا
في الله حق جهاده ○ هو اجتبكم وما جعل
عليكم في الدين من حرج ○ ملة ابيكم
ابرهيم ○ هو سمكم المسلمين ○ من قبل
وفي هذا ليكون الرسول شهيدا عليكم
وتكونوا شهداء على الناس ○ فاقيموا
الصلوة واتوا الزكوة واعتصموا بالله ○ هو
مولكم ○ فنعم المولى ونعم النصير ○

चाहिए थी। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त बलवान, प्रभुत्वशाली है।

75. अल्लाह फ़रिश्तों में से संदेशवाहक चुनता है और मनुष्यों में से भी। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

76. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

77. ऐ ईमान लानेवालो! झुको और सजदा करो और अपने रब की बन्दगी करो और भलाई करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

78. और परस्पर मिलकर जिहाद करो अल्लाह के मार्ग में, जैसा कि जिहाद का हक़ है। उसने तुम्हें चुन लिया है——और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और कठिनाई नहीं रखी। तुम्हारे बाप इबराहीम के पंथ को तुम्हारे लिए पसन्द किया। उसने इससे पहले तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था और इस ध्येय से——ताकि रसूल तुमपर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह हो। अत: नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो और अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक!



23. अल-मोमिनून

(मक्का में उतरी—— आयतें 118)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. सफल हो गए ईमानवाले,

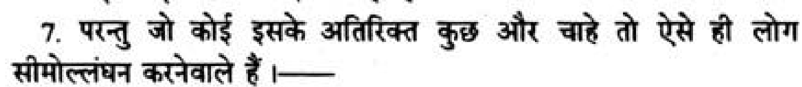
2. जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं;

3. और जो व्यर्थ बातों से पहलू बचाते हैं;

4. और जो ज़कात अदा करते हैं;

5. और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं——

6. सिवाय इस सूरत के कि अपनी पत्नियों या लौण्डियों के पास जाएँ कि इसपर वे निन्दनीय नहीं हैं।



7. परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग सीमोल्लंघन करनेवाले हैं।——

8. और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं;

9. और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं;

10. वही वारिस होनेवाले हैं।

11. जो फ़िरदौस की विरासत पाएँगे। वे उसमें सदैव रहेंगे।

12. हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया।

13. फिर हमने उसे एक सुरक्षित ठहरने की जगह टपकी हुई बूँद बनाकर रखा।

14. फिर हमने उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया; फिर हमने उस लोथड़े को

الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ
لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ
الْخٰلِقِيْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ
وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ
لَقٰدِرُوْنَ ۝ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَ
شَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ
لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا
فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا
تَاْكُلُوْنَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

बोटी का रूप दिया; फिर हमने बोटी की हड्डियाँ बनाईं; फिर हमने उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया; फिर हमने उसे एक दूसरा ही सर्जन रूप देकर खड़ा किया। अतः बहुत ही बरकतवाला है अल्लाह, सबसे उत्तम स्रष्टा !

15. फिर तुम अवश्य मरनेवाले हो।

16. फिर क़ियामत के दिन तुम निश्चय ही उठाए जाओगे।

17. और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए हैं। और हम सृष्टि-कार्य से ग़ाफ़िल नहीं।

18. और हमने आकाश से एक अंदाज़े के साथ पानी उतारा। फिर हमने उसे धरती में ठहरा दिया, और उसे विलुप्त करने की सामर्थ्य भी हमें प्राप्त है।

19. फिर हमने उसके द्वारा तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किए। तुम्हारे लिए उनमें बहुत-से फल हैं (जिनमें तुम्हारे लिए कितने ही लाभ हैं) और उनमें से तुम खाते हो।

20. और वह वृक्ष भी जो सैना पर्वत से निकलता है, जो तेल और खानेवालों के लिए सालन लिए हुए उगता है।

21. और निश्चय ही तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक शिक्षा है। उनके पेटों में जो कुछ है उसमें से हम तुम्हें पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें बहुत-से फ़ायदे हैं और उन्हें तुम खाते भी हो।

22. और उनपर और नौकाओं पर तुम सवार होते हो।

23. हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा तो उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा और कोई

इष्ट-पूज्य नहीं है। तो क्या तुम डर नहीं रखते?"

24. इसपर उसकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया था, कहने लगे : "यह तो बस तुम्ही जैसा एक मनुष्य है। चाहता है कि तुमपर श्रेष्ठता प्राप्त करे।"

"अल्लाह यदि चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता। यह बात तो हमने अपने अगले बाप-दादा के समयों में सुनी ही नहीं।

25. यह तो बस एक उन्मादग्रस्त व्यक्ति है। अतः एक समय तक इसकी प्रतीक्षा कर लो।"

26. उसने कहा : "ऐ मेरे रब! इन्होंने मुझे जो झुठलाया है, इसपर तू मेरी सहायता कर।"

27. तब हमने उसकी ओर प्रकाशना की कि "हमारी आँखों के सामने और हमारी प्रकाशना के अनुसार नौका बना, और फिर जब हमारा आदेश आ जाए और तूफ़ान उमड़ पड़े तो प्रत्येक प्रजाति में से एक-एक जोड़ा उसमें रख ले और अपने लोगों को भी, सिवाय उनके जिनके विरुद्ध पहले फ़ैसला हो चुका है। और अत्याचारियों के विषय में मुझसे बात न करना। वे तो डूबकर रहेंगे।

28. फिर जब तू नौका पर सवार हो जाए और तेरे साथी भी तो कह : 'प्रशंसा है अल्लाह की, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया।'

29. और कह : 'ऐ मेरे रब! मुझे बरकतवाली जगह उतार। और तू सबसे अच्छा मेज़बान है'।"

30. निस्संदेह इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं और परीक्षा तो हम करते ही हैं।

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ
اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۖۚ مَّا
سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ
بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ
بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ
بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ
فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ
عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ
اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۝ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ
عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ
خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا

لَمُبْتَلِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝
فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ
مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۝ وَلَئِنْ
اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ اَيَعِدُكُمْ
اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ۝
هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا
رَجُلُ ۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝
قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ
لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ

31. फिर उनके पश्चात हमने एक दूसरी नस्ल को उठाया;

32. और उनमें हमने स्वयं उन्हीं में से एक रसूल भेजा कि "अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। तो क्या तुम डर नहीं रखते?"

33. उसकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया और आख़िरत के मिलन को झुठलाया और जिन्हें हमने सांसारिक जीवन में सुख प्रदान किया था, कहने लगे : "यह तो बस तुम्हीं जैसा एक मनुष्य है। जो कुछ तुम खाते हो, वही यह भी खाता है और जो कुछ तुम पीते हो, वही यह भी पीता है।

34. यदि तुम अपने ही जैसे एक मनुष्य के आज्ञाकारी हुए तो निश्चय ही तुम घाटे में पड़ गए।

35. क्या यह तुमसे वादा करता है कि जब तुम मरकर मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाओगे तो तुम निकाले जाओगे?

36. दूर की बात है, बहुत दूर की, जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है!

37. वह तो बस हमारा यही सांसारिक जीवन ही है। (यहीं) हम मरते और जीते हैं। हम कोई दोबारा उठाए जानेवाले नहीं हैं।

38. वह तो बस एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अल्लाह पर झूठ घड़ा है। हम उसे कदापि माननेवाले नहीं।"

39. उसने कहा : "ऐ मेरे रब! उन्होंने जो मुझे झुठलाया, उसपर तू मेरी सहायता कर।"

40. कहा : "शीघ्र ही वे पछताकर रहेंगे।"

41. फिर घटित होनेवाली बात के अनुसार उन्हें एक प्रचण्ड आवाज़ ने आ

غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ
بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا
وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا
جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا
وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ ثُمَّ
اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ۬ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا
عَالِيْنَ ۝ فَقَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا
عٰبِدُوْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ۝
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ وَ
جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ
ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۝ يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ
الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝

लिया और हमने उन्हें कूड़ा-कर्कट बनाकर रख दिया। अतः फिटकार है, ऐसे अत्याचारी लोगों पर !

42. फिर हमने उनके पश्चात दूसरी नस्लों को उठाया।

43. कोई समुदाय न तो अपने निर्धारित समय से आगे बढ़ सकता है और न पीछे रह सकता है।

44. फिर हमने निरन्तर अपने रसूल भेजे। जब भी कभी किसी समुदाय के पास उसका रसूल आया, तो उसके लोगों ने उसे झुठला दिया। अतः हम एक को दूसरे के पीछे (विनाश के लिए) लगाते चले गए और हमने उन्हें ऐसा कर दिया कि वे कहानियाँ होकर रह गए। फिटकार हो उन लोगों पर जो ईमान न लाएँ !

45-46. फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर भेजा। किन्तु उन्होंने अहंकार किया। वे थे ही सरकश लोग।

47. तो वे कहने लगे : "क्या हम अपने ही जैसे दो मनुष्यों की बात मान लें, जबकि उनकी क़ौम हमारी ग़ुलाम भी है ?"

48. अतः उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया और विनष्ट होनेवालों में सम्मिलित होकर रहे।

49. और हमने मूसा को किताब प्रदान की, ताकि वे लोग मार्ग पा सकें।

50. और मरयम के बेटे और उसकी माँ को हमने एक निशानी बनाया। और हमने उन्हें रहने योग्य स्रोतवाली ऊँची जगह शरण दी :

51. "ऐ पैग़म्बरो ! अच्छी पाक चीज़ें खाओ और अच्छा कर्म करो। जो कुछ तुम करते हो उसे मैं जानता हूँ।

وَإِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَٰحِدَةً وَأَنَا۠ رَبُّكُمْ فَٱتَّقُونِ
فَتَقَطَّعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ
فَرِحُونَ فَذَرْهُمْ فِى غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ أَيَحْسَبُونَ
أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ نُسَارِعُ لَهُمْ فِى
ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ إِنَّ ٱلَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ
رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ وَٱلَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ
وَٱلَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ وَٱلَّذِينَ يُؤْتُونَ مَآ
ءَاتَوا۟ وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَٰجِعُونَ
أُو۟لَٰٓئِكَ يُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَهُمْ لَهَا سَٰبِقُونَ وَلَا
نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَلَدَيْنَا كِتَٰبٌ يَنطِقُ
بِٱلْحَقِّ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ بَلْ قُلُوبُهُمْ فِى غَمْرَةٍ مِّنْ
هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَٰلٌ مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَٰمِلُونَ
حَتَّىٰٓ إِذَآ أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِٱلْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْـَٔرُونَ

52. और निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय, एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब हूँ। अत: मेरा डर रखो।"

53. किन्तु उन्होंने स्वयं अपने मामले (धर्म) को परस्पर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। हर गिरोह उसी पर ख़ुश है, जो कुछ उसके पास है।

54. अच्छा तो उन्हें उनकी अपनी बेहोशी में डूबे हुए ही एक समय तक छोड़ दो।

55-56-57. क्या वे यह समझते हैं कि हम जो उनकी धन और सन्तान से सहायता किए जा रहे हैं, तो यह उनके लिए भलाइयों में कोई जल्दी कर रहे हैं? नहीं, बल्कि उन्हें इसका एहसास नहीं है। निश्चय ही जो लोग अपने रब के भय से काँपते रहते हैं;

58. और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं;

59. और जो लोग अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं ठहराते;

60. और जो लोग देते हैं, जो कुछ देते हैं और हाल यह होता है कि दिल उनके काँप रहे होते हैं, इसलिए कि उन्हें अपने रब की ओर पलटना है;

61-62. यही वे लोग हैं, जो भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिए अग्रसर रहनेवाले हैं। हम किसी व्यक्ति पर उसकी समाई (क्षमता) से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालते और हमारे पास एक किताब है, जो ठीक-ठीक बोलती है, और उनपर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

63. बल्कि उनके दिल इसकी (सत्य धर्म की) ओर से हटकर (वसवसों और ग़फ़लतों आदि के) भँवर में पड़े हुए हैं और उससे (ईमानवालों की नीति से) हटकर उनके कुछ और ही काम हैं। वे उन्हीं को करते रहेंगे;

64. यहाँ तक कि जब हम उनके ख़ुशहाल लोगों को यातना में पकड़ेंगे तो क्या देखते हैं कि वे विलाप और फ़रियाद कर रहे हैं।

65. (कहा जाएगा :) "आज चिल्लाओ मत, तुम्हें हमारी ओर से कोई सहायता मिलनेवाली नहीं ।

66-67. तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं, तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाते थे । हाल यह था कि इसके कारण स्वयं को बड़ा समझते थे, उसे एक कहानी कहनेवाला ठहराकर छोड़ चलते थे ।

68. क्या उन्होंने इस वाणी पर विचार नहीं किया या उनके पास वह चीज़ आ गई जो उनके पहले बाप-दादा के पास न आई थी ?

69. या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इसलिए उसका इनकार कर रहे हैं ?

لا تجأروا اليوم إنكم منا لا تنصرون ۝ قد كانت
آياتي تتلى عليكم فكنتم على أعقابكم تنكصون ۝
مستكبرين به سامرا تهجرون ۝ أفلم يدبروا
القول أم جاءهم ما لم يأت آباءهم الأولين ۝
أم لم يعرفوا رسولهم فهم له منكرون ۝ أم
يقولون به جنة بل جاءهم بالحق وأكثرهم
للحق كارهون ۝ ولو اتبع الحق أهواءهم لفسدت
السماوات والأرض ومن فيهن بل أتيناهم بذكرهم
فهم عن ذكرهم معرضون ۝ أم تسألهم خرجا
فخراج ربك خير وهو خير الرازقين ۝ وإنك
لتدعوهم إلى صراط مستقيم ۝ وإن الذين
لا يؤمنون بالآخرة عن الصراط لناكبون ۝ ولو
رحمناهم وكشفنا ما بهم من ضر للجوا في طغيانهم

70. या वे कहते हैं : "उसे उन्माद हो गया है ।" नहीं, बल्कि वह उनके पास सत्य लेकर आया है । किन्तु उनमें अधिकांश को सत्य अप्रिय है ।

71. और यदि सत्य कहीं उनकी इच्छाओं के पीछे चलता तो समस्त आकाश और धरती और जो भी उनमें है, सबमें बिगाड़ पैदा हो जाता । नहीं, बल्कि हम उनके पास उनके हिस्से की अनुस्मृति लाए हैं । किन्तु वे अपनी अनुस्मृति से कतरा रहे हैं ।

72. या तुम उनसे कुछ शुल्क माँग रहे हो ? तुम्हारे रब का दिया ही उत्तम है । और वह सबसे अच्छी रोज़ी देनेवाला है ।

73. और वास्तव में तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हो ।

74. किन्तु जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे इस मार्ग से हटकर चलना चाहते हैं ।

75. यदि हम (क़िसी आज़माइश में डालने के पश्चात) उनपर दया करते और जिस तकलीफ़ में वे होते उसे दूर कर देते तो भी वे अपनी

يَعْمَهُونَ ۝ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا
عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝ وَهُوَ
الَّذِي أَنْشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا
مَا تَشْكُرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَ
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ
اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ بَلْ قَالُوا
مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ۝ قَالُوا أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا
وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا
هَٰذَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ قُلْ
لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ
لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ
وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا

सरकशी में हठात् बहकते रहते।

76. यद्यपि हमने उन्हें यातना में पकड़ा, फिर भी वे अपने रब के आगे न तो झुके और न वे गिड़गिड़ाते ही थे।

77. यहाँ तक कि जब हम उनपर कठोर यातना का द्वार खोल दें तो क्या देखेंगे कि वे उसमें निराश होकर रह गए हैं।

78. और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। तुम कृतज्ञता थोड़े ही दिखाते हो!

79. वही है जिसने तुम्हें धरती में पैदा करके फैलाया और उसी की ओर तुम इकट्ठे होकर जाओगे।

80. और वही है जो जीवन प्रदान करता और मृत्यु देता है और रात और दिन का उलट-फेर उसी के अधिकार में है। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

81. नहीं, बल्कि वे लोग वही कुछ कहते हैं जो उनके पहले के लोग कह चुके हैं।

82. उन्होंने कहा : "क्या जब हम मरकर मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, तो क्या हमें दोबारा जीवित करके उठाया जाएगा?

83. यह वादा तो हमसे और इससे पहले हमारे बाप-दादा से होता आ रहा है। कुछ नहीं, यह तो बस अगलों की कहानियाँ हैं।"

84. कहो : "यह धरती और जो भी इसमें आबाद हैं, वे किसके हैं, बताओ यदि तुम जानते हो?"

85. वे बोल पड़ेंगे : "अल्लाह के!" कहो : "फिर तुम होश में क्यों नहीं आते?"

86. कहो : "सातों आकाशों का मालिक और महान राजासन का स्वामी कौन है?"

87. वे कहेंगे : "सब अल्लाह के हैं।" कहो : "फिर डर क्यों नहीं रखते?"

تَتَّقُونَ ۝ قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ
قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ۝ بَلْ أَتَيْنَاهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ
لَكَاذِبُونَ ۝ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ
مِنْ إِلَٰهٍ إِذًا لَذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ
عَلَىٰ بَعْضٍ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ عَالِمِ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ قُلْ رَبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي
مَا يُوعَدُونَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝
وَإِنَّا عَلَىٰ أَنْ نُرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَادِرُونَ ۝ ادْفَعْ بِالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۝ وَ
قُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ ۝ وَأَعُوذُ
بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۝ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ

88. कहो : "हर चीज़ की बादशाही किसके हाथ में है, वह जो शरण देता है और जिसके मुक़ाबले में कोई शरण नहीं मिल सकती, बताओ यदि तुम जानते हो ?"

89. वे बोल पड़ेंगे : "अल्लाह की।" कहो : "फिर कहाँ से तुमपर जादू चल जाता है ?"

90. नहीं, बल्कि हम उनके पास सत्य लेकर आए हैं और निश्चय ही वे झूठे हैं।

91. अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई अन्य पूज्य-प्रभु है। ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य-प्रभु अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देता। महान और उच्च है अल्लाह उन बातों से, जो वे बयान करते हैं;

92. जाननेवाला है छुपे और खुले का। सो वह उच्चतर है उस शिर्क से जो वे करते हैं!

93-94. कहो : "ऐ मेरे रब ! जिस चीज़ का वादा उनसे किया जा रहा है, वह यदि तू मुझे दिखाए तो मेरे रब ! मुझे उन अत्याचारी लोगों में सम्मिलित न करना।"

95-96. निश्चय ही हमें इसकी सामर्थ्य प्राप्त है कि हम उनसे जो वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें। बुराई को उस ढंग से दूर करो, जो सबसे उत्तम हो। हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ बातें वे बनाते हैं।

97. और कहो : "ऐ मेरे रब ! मैं शैतान की उकसाहटों से तेरी शरण चाहता हूँ।

98. और मेरे रब ! मैं इससे भी तेरी शरण चाहता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।"——

99-100. यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु आ गई तो वह कहेगा : "ऐ मेरे रब ! मुझे लौटा दे।—ताकि जिस (संसार) को मैं छोड़ आया हूँ उसमें अच्छा

كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ۖ وَمِن وَرَائِهِم
بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ
فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَمَن
ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَنْ
خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ
النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝ أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ
عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ
عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۝ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا
وَلَا تُكَلِّمُونِ ۝ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي
يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ
الرَّاحِمِينَ ۝ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنسَوْكُمْ

कर्म करूँ।" कुछ नहीं, यह तो बस एक (व्यर्थ) बात है जो वह कहेगा और उनके पीछे से लेकर उस दिन तक एक रोक लगी हुई है, जब वे दोबारा उठाए जाएँगे।

101. फिर जब सूर (नरसिंघा) में फूँक मारी जाएगी तो उस दिन उनके बीच रिश्ते-नाते शेष न रहेंगे, और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे।

102. फिर जिनके पलड़े भारी हुए तो वही हैं जो सफल होंगे।

103. रहे वे लोग जिनके पलड़े हल्के हुए, तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। वे सदैव जहन्नम में रहेंगे।

104. आग उनके चेहरों को झुलसा देगी और उसमें उनके मुँह विकृत हो रहे होंगे।

105. (कहा जाएगा :) "क्या तुम्हें मेरी आयतें सुनाई नहीं जाती थीं, तो तुम उन्हें झुठलाते थे?"

106. वे कहेंगे : "ऐ हमारे रब! हमारा दुर्भाग्य हमपर प्रभावी हुआ और हम भटके हुए लोग थे।

107. हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल दे! फिर यदि हम दोबारा ऐसा करें तो निश्चय ही हम अत्याचारी होंगे।"

108. वह कहेगा : "फिटकारे हुए तिरस्कृत, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो।

109. मेरे बन्दों में कुछ लोग थे, जो कहते थे : 'हमारे रब! हम ईमान ले आए। अतः तू हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर। तू सबसे अच्छा दया करनेवाला है।

110. तो तुमने उनका उपहास किया, यहाँ तक कि उनके कारण तुम मेरी

याद को भुला बैठे और तुम उनपर हँसते रहे।

111. आज मैंने उनके धैर्य का यह बदला प्रदान किया कि वही हैं जो सफलता को प्राप्त हुए।"

112. वह कहेगा : "तुम धरती में कितने वर्ष रहे ?"

113. वे कहेंगे : "एक दिन या एक दिन का कुछ भाग। गणना करनेवालों से पूछ लीजिए।"

114. वह कहेगा : "तुम ठहरे थोड़े ही, क्या अच्छा होता तुम जानते होते !

115. तो क्या तुमने यह समझा था कि हमने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और यह कि तुम्हें हमारी ओर लौटना नहीं है ?"


ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ
الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ كَمْ
لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ
بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا
لَّوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ
عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾ وَمَن
يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا
حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾ وَقُل
رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

سُورَةُ النُّورِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سُورَةٌ أَنزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ

116. तो सर्वोच्च है अल्लाह, सच्चा सम्राट ! उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, स्वामी है महिमाशाली सिंहासन का।

117. और जो कोई अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को पुकारे, जिसके लिए उसके पास कोई प्रमाण नहीं, तो बस उसका हिसाब उसके रब के पास है। निश्चय ही इनकार करनेवाले कभी सफल नहीं होंगे।

118. और कहो : "मेरे रब ! मुझे क्षमा कर दे और दया कर। तू तो सबसे अच्छा दया करनेवाला है।"

24. अन-नूर

(मदीना में उतरी— आयतें 64)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. यह एक (महत्त्वपूर्ण) सूरा है, जिसे हमने उतारा है। और इसे हमने अनिवार्य

लَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ
وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ
فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ
وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اَلزَّانِيْ
لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ
اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ
شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ
شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ
تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ
شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ
بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ

किया है, और इसमें हमने स्पष्ट आयतें (आदेश) अवतरित की हैं। कदाचित तुम शिक्षा ग्रहण करो।

2. व्यभिचारिणी और व्यभिचारी ——इन दोनों में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो और अल्लाह के धर्म (क़ानून) के विषय में तुम्हें उनपर तरस न आए, यदि तुम अल्लाह और अंतिम दिन को मानते हो। और उन्हें दण्ड देते समय मोमिनों में से कुछ लोगों को उपस्थित रहना चाहिए।

3. व्यभिचारी किसी व्यभिचारिणी या बहुदेववादी स्त्री से ही निकाह करता है। और (इसी प्रकार) व्यभिचारिणी, किसी व्यभिचारी या बहुदेववादी से ही निकाह करती है।[1] और यह मोमिनों पर हराम है।

4. और जो लोग शरीफ़ एवं पाकदामन स्त्रियों पर तोहमत लगाएँ, फिर चार गवाह न लाएँ, उन्हें अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी भी स्वीकार न करो——वही हैं जो अवज्ञाकारी हैं।——

5. सिवाय उन लोगों के जो इसके पश्चात तौबा कर लें और सुधार कर लें। तो निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

6. और जो लोग अपनी पत्नियों पर दोषारोपण करें और उनके पास स्वयं उनके अपने सिवा गवाह मौजूद न हों, तो उनमें से एक (अर्थात पति) चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह गवाही दे कि वह बिलकुल सच्चा है।

7. और पाँचवीं बार यह गवाही दे कि यदि वह झूठा हो तो उसपर अल्लाह

1. मालूम हुआ कि अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराना उसी प्रकार का घृणित कर्म है, जिस प्रकार का घृणित कर्म व्यभिचार और कुकर्म है।



की फिटकार हो।

8. पत्नी से भी सज़ा को यह बात टाल सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर गवाही दे कि वह बिलकुल झूठा है।

9. और पाँचवीं बार यह कहे कि उसपर (उस स्त्री पर) अल्लाह का प्रकोप हो, यदि वह सच्चा हो।

10. यदि तुमपर अल्लाह की उदार कृपा और उसकी दया न होती (तो तुम संकट में पड़ जाते), और यह कि अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

11. जो लोग तोहमत घड़ लाए हैं वे तुम्हारे ही भीतर की एक टोली है। तुम उसे अपने लिए बुरा मत समझो, बल्कि वह भी तुम्हारे लिए अच्छा ही है। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए उतना ही हिस्सा है जितना गुनाह उसने कमाया, और उनमें से जिस व्यक्ति ने उसकी ज़िम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा अपने सिर लिया उसके लिए बड़ी यातना है।

12. ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुम लोगों ने उसे सुना था, तब मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ अपने आपसे[1] अच्छा गुमान करते और कहते कि "यह तो खुली तोहमत है ?"

13. आख़िर वे इसपर चार गवाह क्यों न लाए ?[2] अब जबकि वे गवाह नहीं लाए, तो अल्लाह की दृष्टि में वही झूठे हैं।

14. यदि तुमपर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की उदार कृपा और उसकी दयालुता न होती तो जिस बात में तुम पड़ गए उसके कारण तुम्हें एक

1. अर्थात अपने लोगों के प्रति।

2. कि इस प्रकार अपने को सच्चा सिद्ध कर सकते।



बड़ी यातना आ लेती ।

15. सोचो, जब तुम एक-दूसरे से उस (झूठ) को अपनी ज़बानों पर लेते जा रहे थे और तुम अपने मुँह से वह कुछ कहे जा रहे थे, जिसके विषय में तुम्हें कोई ज्ञान न था और तुम उसे एक साधारण बात समझ रहे थे; हालाँकि अल्लाह के निकट वह एक भारी बात थी ।

16. और ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने उसे सुना था तो कह देते : "हमारे लिए उचित नहीं कि हम ऐसी बात ज़बान पर लाएँ । महान और उच्च है तू (ऐ अल्लाह) ! यह तो एक बड़ी तोहमत है ?"

17. अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना, यदि तुम मोमिन हो ।

18. अल्लाह तो आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोलकर बयान करता है । अल्लाह तो सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है ।

19. जो लोग चाहते हैं कि उन लोगों में जो ईमान लाए हैं, अश्लीलता फैले, उनके लिए दुनिया और आख़िरत (लोक-परलोक) में दुखद यातना है । और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।

20. और यदि तुमपर अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती (तो अवश्य ही तुमपर यातना आ जाती) और यह कि अल्लाह बड़ा करुणामय, अत्यन्त दयावान है ।

21. ऐ ईमान लानेवालो ! शैतान के पद-चिह्नों पर न चलो । जो कोई शैतान के पद-चिह्नों पर चलेगा तो वह तो उसे अश्लीलता और बुराई का आदेश देगा । और यदि अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी दयालुता तुमपर न होती तो

तुममें से कोई भी आत्म-विकास को प्राप्त न कर सकता। किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है, सँवारता-निखारता है। अल्लाह तो सब कुछ सुनता, जानता है।

22. तुममें जो बड़ाईवाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और अल्लाह की राह में घरबार छोड़नेवालों को देने से बाज़ रहने की क़सम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

أَحَدٍ أَبَدًا ۙ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ۝ وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ
يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ
اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ
الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ
وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ يَوْمَئِذٍ
يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ
الْحَقُّ الْمُبِينُ ۝ الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ
لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ
أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

23. निस्संदेह जो लोग शरीफ़, पाकदामन, भोली-भाली बेख़बर ईमानवाली स्त्रियों पर तोहमत लगाते हैं उनपर दुनिया और आख़िरत में फिटकार है। और उनके लिए एक बड़ी यातना है।

24. जिस दिन कि उनकी ज़बानें और उनके हाथ और उनके पाँव उनके विरुद्ध उसकी गवाही देंगे, जो कुछ वे करते रहे थे,

25. उस दिन अल्लाह उन्हें उनका ठीक बदला पूरी तरह दे देगा जिसके वे पात्र हैं। और वे जान लेंगे कि निस्संदेह अल्लाह ही सत्य है खुला हुआ, प्रकट कर देनेवाला।

26. गन्दी चीज़ें गन्दे लोगों के लिए हैं और गन्दे लोग गन्दी चीज़ों के लिए, और अच्छी चीज़ें अच्छे लोगों के लिए हैं और अच्छे लोग अच्छी चीज़ों के लिए। वे लोग उन बातों से बरी हैं, जो वे कह रहे हैं। उनके लिए क्षमा और सम्मानित आजीविका है।

27. ऐ ईमान लानेवालो! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में प्रवेश न करो,

بُيُوتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَأْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ۚ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ
اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ
لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا
بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا
تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا
مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۚ ذٰلِكَ اَزْكٰى
لَهُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ
يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ
بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ
اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

जब तक कि रज़ामन्दी हासिल न कर लो और उन घरवालों को सलाम न कर लो। यही तुम्हारे लिए उत्तम है, कदाचित तुम ध्यान रखो।

28. फिर यदि उनमें किसी को न पाओ, तो उनमें प्रवेश न करो जब तक कि तुम्हें अनुमति प्राप्त न हो। और यदि तुमसे कहा जाए कि वापस हो जाओ तो वापस हो जाओ, यही तुम्हारे लिए अधिक अच्छी बात है। अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते हो।

29. इसमें तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं है कि तुम ऐसे घरों में प्रवेश करो जिनमें कोई न रहता हो, जिनमें तुम्हारे फ़ायदे की कोई चीज़ हो। और अल्लाह ज़ानता है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ छिपाते हो।

30. ईमानवाले पुरुषों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यही उनके लिए अधिक अच्छी बात है। अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है, जो कुछ वे किया करते हैं।

31. और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे भी अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने शृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उनमें खुला रहता है। और अपने सीनों (वक्षस्थल) पर अपने दुपट्टे डाले रहें और अपना शृंगार किसी पर ज़ाहिर न करें सिवाय अपने पतियों के या अपने बापों के या अपने पतियों के बापों के या अपने बेटों के या अपने पतियों के बेटों के या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के या अपने भांजों

أَبْنَآئِهِنَّ أَوْ أَبْنَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَٰنِهِنَّ أَوْ
بَنِىٓ إِخْوَٰنِهِنَّ أَوْ بَنِىٓ أَخَوَٰتِهِنَّ أَوْ نِسَآئِهِنَّ أَوْ مَا
مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُنَّ أَوِ ٱلتَّٰبِعِينَ غَيْرِ أُو۟لِى ٱلْإِرْبَةِ
مِنَ ٱلرِّجَالِ أَوِ ٱلطِّفْلِ ٱلَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا۟ عَلَىٰ عَوْرَٰتِ
ٱلنِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن
زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ ٱلْمُؤْمِنُونَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَأَنكِحُوا۟ ٱلْأَيَٰمَىٰ مِنكُمْ وَٱلصَّٰلِحِينَ
مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَآئِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا۟ فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ
ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلْيَسْتَعْفِفِ
ٱلَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ ٱللَّهُ مِن
فَضْلِهِۦ ۗ وَٱلَّذِينَ يَبْتَغُونَ ٱلْكِتَٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ
أَيْمَٰنُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَءَاتُوهُم
مِّن مَّالِ ٱللَّهِ ٱلَّذِىٓ ءَاتَىٰكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا۟ فَتَيَٰتِكُمْ

के या अपने मेल-जोल की स्त्रियों के या जो उनकी अपनी मिल्कियत में हों उनके, या उन अधीनस्थ पुरुषों के जो उस अवस्था को पार कर चुके हों जिसमें स्त्री की ज़रूरत होती है, या उन बच्चों के जो स्त्रियों के परदे की बातों से परिचित न हों। और स्त्रियाँ अपने पाँव धरती पर मारकर न चलें कि अपना जो शृंगार छिपा रखा हो, वह मालूम हो जाए। ऐ ईमानवालो! तुम सब मिलकर अल्लाह से तौबा करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

32. तुममें जो बेजोड़े के हों और तुम्हारे ग़ुलामों और तुम्हारी लौंडियों में जो नेक और योग्य हों, उनका विवाह कर दो। यदि वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह अपने उदार अनुग्रह से उन्हें समृद्ध कर देगा। अल्लाह बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।

33. और जो विवाह का अवसर न पा रहे हों उन्हें चाहिए कि पाकदामनी अपनाए रहें, यहाँ तक कि अल्लाह अपने उदार अनुग्रह से उन्हें समृद्ध कर दे। और जिन लोगों पर तुम्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो उनमें से जो लोग लिखा-पढ़ी के इच्छुक हों[1] उनसे लिखा-पढ़ी कर लो, यदि तुम्हें मालूम हो कि उनमें भलाई है। और उन्हें अल्लाह के माल में से दो, जो उसने तुम्हें प्रदान किया है। और अपनी लौंडियों को सांसारिक जीवन-सामग्री की चाह में

---

1. अर्थात माल की शर्त पर अपनी आज़ादी के लिए लिखा-पढ़ी करनी चाहिए।

عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ
وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ مَثَلُ
نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ۚ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ۚ
اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ
زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ
لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ۚ يَهْدِي اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۚ وَاللّٰهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ
فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۝
رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ

व्यभिचार के लिए बाध्य न करो, जबकि वे पाकदामन रहना भी चाहती हों। और इसके लिए जो कोई उन्हें बाध्य करेगा, तो निश्चय ही अल्लाह उनके बाध्य किए जाने के पश्चात अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

34. हमने तुम्हारी ओर खुली हुई आयतें उतार दी हैं और उन लोगों की मिसालें भी पेश कर दी हैं, जो तुमसे पहले गुज़रे हैं, और डर रखनेवालों के लिए नसीहत भी।

35-37. अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है। (मोमिन के दिल में) उसके प्रकाश की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ है, जिसमें एक चिराग़ है—— वह चिराग़ एक फ़ानूस में है। वह फ़ानूस ऐसा है मानो चमकता हुआ कोई तारा है।—— वह चिराग़ ज़ैतून के एक बरकतवाले वृक्ष के तेल से जलाया जाता है, जो न पूर्वी है न पश्चिमी। उसका तेल आप ही आप भड़का पड़ता है, यद्यपि आग उसे न भी छूए। प्रकाश पर प्रकाश !—— अल्लाह जिसे चाहता है अपने प्रकाश के प्राप्त होने का मार्ग दिखा देता है। अल्लाह लोगों के लिए मिसालें प्रस्तुत करता है। अल्लाह तो हर चीज़ जानता है।—— उन घरों में जिनको ऊँचा करने और जिनमें अपने नाम के याद करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, उनमें ऐसे लोग प्रभात काल और संध्या समय उसकी तसबीह करते हैं जिन्हें अल्लाह की याद

وإقام الصلوة وإيتاء الزكوة يخافون يوما تتقلب
فيه القلوب والأبصار ليجزيهم الله أحسن ما
عملوا ويزيدهم من فضله والله يرزق من
يشاء بغير حساب ۝ والذين كفروا أعمالهم
كسراب بقيعة يحسبه الظمان ماء حتى إذا جاءه
لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفىه حسابه
والله سريع الحساب ۝ أو كظلمت في بحر لجي
يغشىه موج من فوقه موج من فوقه سحاب
ظلمت بعضها فوق بعض إذا أخرج يده لم
يكد يرىها ومن لم يجعل الله له نورا فما له
من نور ۝ ألم تر أن الله يسبح له من في السموت
والأرض والطير صفت كل قد علم صلاته و
تسبيحه والله عليم بما يفعلون ۝ ولله ملك

और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से न तो व्यापार ग़ाफ़िल करता है और न क्रय-विक्रय। वे उस दिन से डरते रहते हैं जिसमें दिल और आँखें विकल हो जाएँगी,

38. ताकि अल्लाह उन्हें बदला प्रदान करे। उनके अच्छे से अच्छे कामों का, और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करे। अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।

39. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके कर्म चटियल मैदान में मरीचिका की तरह हैं कि प्यासा उसे पानी समझता है, यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचा तो उसे कुछ भी न पाया। अलबत्ता अल्लाह ही को उसके पास पाया, जिसने उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दिया। और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करता है।

40. या फिर जैसे एक गहरे समुद्र में अँधेरे, लहर के ऊपर लहर छा रही हैं; उसके ऊपर बादल है, अँधेरे हैं एक पर एक। जब वह[1] अपना हाथ निकाले तो उसे वह सुझाई देता प्रतीत न हो। जिसे अल्लाह ही प्रकाश न दे फिर उसके लिए कोई प्रकाश नहीं।

41. क्या तुमने नहां देखा कि जो कोई भी आकाशों और धरती में है, अल्लाह की तसबीह (गुणगान) कर रहा है और पंख पसारे हुए पक्षी भी? हर एक अपनी नमाज़ और तसबीह से परिचित है। अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वे करते हैं।

1. अर्थात इन अँधेरों में घिरा हुआ व्यक्ति।

42. अल्लाह ही के लिए है आकाशों और धरती का राज्य। और अल्लाह ही की ओर लौटकर जाना है।

43. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादल को चलाता है। फिर उनको[1] परस्पर मिलाता है। फिर उसे तह पर तह कर देता है। फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से मेह बरसता है? और आकाश से——उसमें जो पहाड़ हैं (बादल जो पहाड़ जैसे प्रतीत होते हैं उनसे)——ओले बरसाता है। फिर जिस पर चाहता है गिराता है और जिससे चाहता है, उसे हटा देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बिजली की चमक निगाहों को उचक ले जाएगी।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ
اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ
رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۭ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ
يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝ وَاللّٰهُ
خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى
بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ

44. अल्लाह ही रात और दिन का उलट-फेर करता है। निश्चय ही आँखें रखनेवालों के लिए इसमें एक शिक्षा है।

45. अल्लाह ने हर जीवधारी को पानी से पैदा किया, तो उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है और कोई उनमें दो टाँगों पर चलता है और कोई उनमें चार (टाँगों) पर चलता है। अल्लाह जो चाहता है, पैदा करता है। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

46. हमने सत्य को प्रकट कर देनेवाली आयतें उतार दी हैं। आगे अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग की ओर लगा देता है।

47. वे मुनाफ़िक़ लोग कहते हैं कि "हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने आज्ञापालन स्वीकार किया।" फिर इसके पश्चात उनमें से

---

1. अर्थात उसके टुकड़ों को।

مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَ
إِذَا دُعُوْٓا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا
فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَإِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ
يَأْتُوْٓا إِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ۝ أَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ أَمِ
ارْتَابُوْٓا أَمْ يَخَافُوْنَ أَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۚ
بَلْ أُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ إِذَا دُعُوْٓا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ
يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝ وَأَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ
لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۚ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ
مَّعْرُوْفَةٌ ۚ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ
أَطِيْعُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

एक गिरोह मुँह मोड़ जाता है। ऐसे लोग मोमिन नहीं हैं।

48. जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करें तो क्या देखते हैं कि उनमें से एक गिरोह कतरा जाता है;

49. किन्तु यदि हक़ उन्हें मिलनेवाला हो तो उसकी ओर बड़े आज्ञाकारी बनकर चले आएँ।

50. क्या उनके दिलों में रोग है या वे संदेह में पड़े हुए हैं या उनको यह डर है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ अन्याय करेंगे? नहीं, बल्कि बात यह है कि वही लोग अत्याचारी हैं।

51. मोमिनों की बात तो बस यह होती है कि जब अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाएँ, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करे, तो वे कहें : "हमने सुना और आज्ञापालन किया।" और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।

52. और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे और अल्लाह से डरे और उसकी सीमाओं का ख़याल रखे, तो ऐसे ही लोग सफल हैं।

53. वे अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि यदि तुम उन्हें हुक्म दो तो वे अवश्य निकल खड़े होंगे। कह दो : "क़समें न खाओ। सामान्य नियम के अनुसार आज्ञापालन ही वास्तविक चीज़ है। तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।"

54. कहो : "अल्लाह का आज्ञापालन करो और उसके रसूल का कहा मानो। परन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो उसपर[1] तो बस वही ज़िम्मेदारी है

1. अर्थात रसूल पर।

عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ
تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝
وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِن
قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ
وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا
يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ
وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنكُمُ
الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنكُمْ
ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ مِّن قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ

जिसका बोझ उसपर डाला गया है, और तुम उसके ज़िम्मेदार हो जिसका बोझ तुमपर डाला गया है। और यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो मार्ग पा लोगे। और रसूल पर तो बस साफ़-साफ़ (संदेश) पहुँचा देने ही की ज़िम्मेदारी है।

55. अल्लाह ने उन लोगों से, जो तुममें से ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वादा किया है कि वह उन्हें धरती में अवश्य सत्ताधिकार प्रदान करेगा, जैसे उसने उनसे पहले के लोगों को सत्ताधिकार प्रदान किया था। और उनके लिए अवश्य उनके उस धर्म को जमाव प्रदान करेगा जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है। और निश्चय ही उनके वर्तमान भय के पश्चात उसे उनके लिए शान्ति और निश्चिन्तता में बदल देगा। वे मेरी बन्दगी करते हैं, मेरे साथ किसी चीज़ को साझी नहीं बनाते। और जो कोई इसके पश्चात इनकार करे, तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं।

56. नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो और रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुमपर दया की जाए।

57. यह कदापि न समझो कि इनकार की नीति अपनानेवाले धरती में क़ाबू से बाहर निकल जानेवाले हैं। उनका ठिकाना आग है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

58. ऐ ईमान लानेवालो! जो तुम्हारी मिल्कियत में हों और तुममें जो अभी युवावस्था को नहीं पहुँचे हैं, उनको चाहिए कि तीन समयों में तुमसे अनुमति लेकर तुम्हारे पास आएँ : प्रभात काल की नमाज़ से पहले और जब दोपहर

ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ثَلٰثُ
عَوْرٰتٍ لَّكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ
طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝
وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا
كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَالْقَوَاعِدُ
مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ
جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍ بِزِيْنَةٍ
وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ
وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ
تَاْكُلُوْا مِنْ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ

को तुम (आराम के लिए) अपने कपड़े उतार रखते हो और रात्रि की नमाज़ के पश्चात—— ये तीन समय तुम्हारे लिए परदे के हैं। इनके पश्चात न तो तुमपर कोई गुनाह है और न उनपर। वे तुम्हारे पास अधिक चक्कर लगाते हैं। तुम्हारे ही कुछ अंश परस्पर कुछ अंश के पास आकर मिलते हैं।[1] इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है। अल्लाह भली-भाँति जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

59. और जब तुममें से बच्चे युवावस्था को पहुँच जाएँ तो उन्हें चाहिए कि अनुमति ले लिया करें जैसे उनसे पहले लोग अनुमति लेते रहे हैं। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है। अल्लाह भली-भाँति जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।

60. जो स्त्रियाँ युवावस्था से गुज़रकर बैठ चुकी हों, जिन्हें विवाह की आशा न रह गई हो, उनपर कोई दोष नहीं कि वे अपने कपड़े (चादरें) उतारकर रख दें[2] जबकि वे शृंगार का प्रदर्शन करनेवाली न हों। फिर भी वे इससे बचें तो उनके लिए अधिक अच्छा है। अल्लाह भली-भाँति सुनता, जानता है।

61. न अंधे के लिए कोई हरज है, न लँगड़े के लिए कोई हरज है और न रोगी के लिए कोई हरज है और न तुम्हारे अपने लिए इस बात में कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बापों के घरों से या अपनी माँओं के घरों से या

---

1. अर्थात् इनका तुम्हारे पास बराबर आना-जाना लगा रहता है। नितांत निकट सम्बन्ध होने के कारण उनको अपना अंश कहा गया है।
2. अर्थात बड़ी बूढ़ी स्त्रियाँ यदि थोड़े आवश्यक वस्त्रों में रहें, तो इसकी गुंजाइश है।

أُمَّهٰتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ إِخْوٰنِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ أَخَوٰتِكُمْ
أَوْ بُيُوْتِ أَعْمٰمِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ
أَخْوٰلِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ
أَوْ صَدِيْقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوْا
جَمِيْعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا
عَلٰٓى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
طَيِّبَةً ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَإِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ
يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَأْذِنُوْهُ ۚ إِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَأْذِنُوْنَكَ
أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَإِذَا
اسْتَأْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ
مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चाचाओं के घरों से या अपनी फूफियों (बुआओं) के घरों से या अपने मामाओं के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या जिसकी कुंजियों के मालिक हुए हो या अपने मित्र के यहाँ। इसमें तुम्हारे लिए कोई हरज नहीं कि तुम मिलकर खाओ या अलग-अलग। हाँ, अलबत्ता जब घरों में जाया करो तो अपने लोगों को सलाम किया करो, अभिवादन अल्लाह की ओर से नियत किया हुआ, बरकतवाला और अत्यधिक पाक। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है, ताकि तुम बुद्धि से काम लो।

62. मोमिन तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर पक्का ईमान रखते हैं। और जब किसी सामूहिक मामले के लिए उसके साथ हों तो चले न जाएँ जब तक कि उससे अनुमति न प्राप्त कर लें। (ऐ नबी !) जो लोग (आवश्यकता पड़ने पर) तुमसे अनुमति ले लेते हैं, वही लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब वे अपने किसी काम के लिए अनुमति चाहें तो उनमें से जिसको चाहो अनुमति दे दिया करो, और उन लोगों के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना किया करो। निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

63. अपने बीच रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक-दूसरे जैसा बुलाना न समझना। अल्लाह उन लोगों को भली-भाँति जानता है जो तुममें से ऐसे हैं कि (एक-दूसरे की) आड़ लेकर चुपके से खिसक जाते हैं। अत: उनको, जो उसके आदेश की अवहेलना करते हैं, डरना चाहिए कि कहीं ऐसा न हो कि उनपर कोई आज़माइश आ पड़े या उनपर कोई दुखद यातना आ जाए।

64. सुन लो! आकाशों और धरती में जो कुछ भी है, अल्लाह का है। वह जानता है तुम जिस (नीति) पर हो। और जिस दिन वे उसकी ओर पलटेंगे, तो जो कुछ उन्होंने किया होगा वह उन्हें बता देगा। अल्लाह तो हर चीज़ को जानता है।

لا تجعلوا دعاء الرسول بينكم كدعاء بعضكم
بعضا ۚ قد يعلم الله الذين يتسللون منكم
لواذا ۚ فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن
تصيبهم فتنة أو يصيبهم عذاب أليم ۝ ألا
إن لله ما في السماوات والأرض ۖ قد يعلم ما
أنتم عليه ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما
عملوا ۗ والله بكل شيء عليم ۝

سورة الفرقان مكية

بسم الله الرحمن الرحيم

تبارك الذي نزل الفرقان على عبده ليكون
للعالمين نذيرا ۝ الذي له ملك السماوات
والأرض ولم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك
في الملك وخلق كل شيء فقدره تقديرا ۝

25. अल-फ़ुरक़ान

(मक्का में उतरी— आयतें 77)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. बड़ी बरकतवाला है वह जिसने यह फ़ुरक़ान[1] अपने बन्दे पर अवतरित किया, ताकि वह सारे संसार के लिए सावधान करनेवाला हो।

2. वह जिसका राज्य है आकाशों और धरती पर, और उसने न तो किसी को अपना बेटा बनाया और न राज्य में उसका कोई साझी है। उसने हर चीज़ को पैदा किया; फिर उसे ठीक अन्दाज़े पर रखा।

---

1. अर्थात सत्य और असत्य का अन्तर स्पष्ट करनेवाली किताब।



3. फिर भी उन्होंने उससे हटकर ऐसे इष्ट-पूज्य बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किए जाते हैं। उन्हें न तो अपनी हानि का अधिकार प्राप्त है और न लाभ का। और न उन्हें मृत्यु का अधिकार प्राप्त है और न जीवन का और न दोबारा जीवित होकर उठने का।

4. जिन लोगों ने इनकार किया उनका कहना है : "यह तो बस मनघड़त है जो उसने स्वयं ही घड़ लिया है। और कुछ दूसरे लोगों ने इस काम में उसकी सहायता की है।" वे तो ज़ुल्म और झूठ ही के ध्येय से आए।

5. कहते हैं : "ये अगलों की कहानियाँ हैं, जिनको उसने लिख लिया है तो वही उसके पास प्रभात काल और संध्या समय लिखाई जाती हैं।"

6. कहो : "उसे अवतरित किया है उसने, जो आकाशों और धरती के रहस्य जानता है। निश्चय ही वह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।"

7. उनका यह भी कहना है : "इस रसूल को क्या हुआ कि यह खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है? क्यों न इसकी ओर कोई फ़रिश्ता उतरा कि वह इसके साथ रहकर सावधान करता?

8. या इसकी ओर कोई ख़ज़ाना ही डाल दिया जाता या इसके पास कोई बाग़ होता, जिससे यह खाता।" और इन ज़ालिमों का कहना है : "तुम लोग तो

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا
فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝ تَبٰرَكَ الَّذِيْۤ
اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ
قُصُوْرًا ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۟ وَاَعْتَدْنَا
لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝ اِذَا رَاَتْهُمْ
مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّ
زَفِيْرًا ۝ وَاِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ
اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ
لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ۝ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ

बस एक ऐसे व्यक्ति के पीछे चल रहे हो जो जादू का मारा हुआ है !"

9. देखो, उन्होंने तुमपर कैसी-कैसी फब्तियाँ कसीं। तो वे बहक गए हैं। अब उनमें इसकी सामर्थ्य नहीं कि कोई मार्ग पा सकें !

10. बरकतवाला है वह, जो यदि चाहे तो तुम्हारे लिए इससे भी उत्तम प्रदान करे, बहुत-से बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही हों, और तुम्हारे लिए बहुत-से महल तैयार कर दे।

11. नहीं, बल्कि बात यह है कि वे लोग क़ियामत की घड़ी को झुठला चुके हैं। और जो उस घड़ी को झुठला दे, उसके लिए हमने दहकती आग तैयार कर रखी है।

12. जब वह उनको दूर से देखेगी तो वे उसके बिफरने और साँस खींचने की आवाज़ें सुनेंगे।

13. और जब वे उसकी किसी तंग जगह जकड़े हुए डाले जाएँगे, तो वहाँ विनाश को पुकारने लगेंगे।

14. (कहा जाएगा :) "आज एक विनाश को मत पुकारो, बल्कि बहुत-से विनाशों को पुकारो !"

15. कहो : "यह अच्छा है या वह शाश्वत जन्नत, जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है ? यह उनका बदला और अंतिम मंज़िल होगी।"



16. उनके लिए उसमें वह सबकुछ होगा, जो वे चाहेंगे। उसमें वे सदैव रहेंगे। यह तुम्हारे रब के ज़िम्मे एक ऐसा वादा है जो प्रार्थनीय है।

17. और जिस दिन उन्हें इकट्ठा किया जाएगा और उनको भी जिन्हें वे अल्लाह को छोड़कर पूजते हैं, फिर वह कहेगा : "क्या मेरे बन्दों को तुमने पथभ्रष्ट किया था या वे स्वयं मार्ग छोड़ बैठे थे ?"

18. वे कहेंगे : "महान और उच्च है तू! यह हमसे नहीं हो सकता था कि तुझे छोड़कर दूसरे संरक्षक बनाएँ। किन्तु हुआ यह कि तूने उन्हें और उनके बाप-दादा को अत्यधिक सुख-सामग्री दी, यहाँ तक कि वे अनुस्मृति को भुला बैठे और विनष्ट होनेवाले लोग होकर रहे।"

19. अतः इस प्रकार वे तुम्हें उस बात में, जो तुम कहते हो झूठा ठहराए हुए हैं। अब न तो तुम यातना को फेर सकते हो और न कोई सहायता ही पा सकते हो। जो कोई तुममें से ज़ुल्म करे उसे हम बड़ी यातना का मज़ा चखाएँगे।

20. और तुमसे पहले हमने जितने रसूल भी भेजे हैं, वे सब खाना खाते और बाज़ारों में चलते फिरते थे। हमने तो तुम्हें परस्पर एक को दूसरे के लिए आज़माइश बना दिया है : "क्या तुम धैर्य दिखाते हो?" तुम्हारा रब तो सबकुछ देखता है।



وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا
الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ نَرٰى رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِيْٓ أَنْفُسِهِمْ
وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا ۝ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا ۝ وَقَدِمْنَا
إِلٰى مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَاءً مَّنْثُورًا ۝ أَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّأَحْسَنُ مَقِيلًا ۝ وَيَوْمَ
تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيلًا ۝
الْمُلْكُ يَوْمَئِذِنِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى
الْكٰفِرِينَ عَسِيرًا ۝ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ
يَقُولُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝ يٰوَيْلَتٰى
لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ۝ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ
الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۚ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْإِنْسَانِ
خَذُولًا ۝ وَقَالَ الرَّسُولُ يٰرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا

21. जिन्हें हमसे मिलने की आशंका नहीं, वे कहते हैं : "क्यों न फ़रिश्ते हमपर उतरे या फिर हम अपने रब को देखते?" उन्होंने अपने जी में बड़ा घमण्ड किया और बड़ी सरकशी पर उतर आए।

22. जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन अपराधियों के लिए कोई ख़ुशख़बरी न होगी और वे पुकार उठेंगे "पनाह! पनाह!!"

23. हम बढ़ेंगे उस कर्म की ओर जो उन्होंने किया होगा और उसे उड़ती धूल कर देंगे।

24. उस दिन जन्नतवाले ठिकाने की दृष्टि से अच्छे होंगे और आरामगाह की दृष्टि से भी अच्छे होंगे।

25. उस दिन आकाश एक बादल के साथ फटेगा और फ़रिश्ते भली प्रकार उतारे जाएँगे।

26. उस दिन वास्तविक राज्य रहमान का होगा और वह दिन इनकार करनेवालों के लिए बड़ा ही मुश्किल होगा।

27. उस दिन अत्याचारी अपने हाथ चबाएगा। कहेगा : "ऐ काश! मैंने रसूल के साथ मार्ग अपनाया होता!

28. हाय मेरा दुर्भाग्य! काश, मैंने अमुक व्यक्ति को मित्र न बनाया होता!

29. उसने मुझे भटकाकर अनुस्मृति से विमुख कर दिया, इसके पश्चात कि वह मेरे पास आ चुकी थी। शैतान तो समय पर मनुष्य का साथ छोड़ ही देता है।"

30. रसूल कहेगा : "ऐ मेरे रब! निस्संदेह मेरी क़ौम के लोगों ने इस क़ुरआन



को व्यर्थ बकवास की चीज़ ठहरा लिया था।"

31. और इसी तरह हमने अपराधियों में से प्रत्येक नबी के लिए शत्रु बनाया। मार्गदर्शन और सहायता के लिए तो तुम्हारा रब ही काफ़ी है।

32. और जिन लोगों ने इनकार किया उनका कहना है कि "उसपर पूरा क़ुरआन एक ही बार में क्यों नहीं उतरा?" ऐसा इसलिए किया गया ताकि हम इसके द्वारा तुम्हारे दिल को मज़बूत रखें और हमने इसे एक उचित क्रम में रखा।

33. और जब कभी भी वे तुम्हारे पास कोई आक्षेप की बात लेकर आएँगे तो हम तुम्हारे पास पक्की-सच्ची चीज़ ले आएँगे! इस दशा में कि वह स्पष्टीकरण की दृष्टि से उत्तम है।

34. जो लोग औंधे मुँह जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे वही स्थान की दृष्टि से बहुत बुरे हैं, और मार्ग की दृष्टि से भी बहुत भटके हुए हैं।

35. हमने मूसा को किताब प्रदान की और उसके भाई हारून को सहायक के रूप में उसके साथ किया।

36. और कहा कि "तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया है।" अन्ततः हमने उन लोगों को विनष्ट करके रख दिया।

37. और नूह की क़ौम को भी, जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया तो हमने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें एक निशानी बना दिया, और उन ज़ालिमों के लिए हमने एक दुखद यातना तैयार कर रखी है।

38-39. और आद और समूद और अर-रस्सवालों और उस बीच की बहुत-सी नस्लों को भी विनष्ट किया। प्रत्येक के लिए हमने मिसालें बयान

الْأَمْثَالَ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ۝ وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ
الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا بَلْ
كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ۝ وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ
إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۝ إِنْ كَادَ
لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا وَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝
أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ
وَكِيلًا ۝ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ
إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝ أَلَمْ تَرَ
إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا
ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا
قَبْضًا يَسِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا
وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۝ وَهُوَ الَّذِي

منزل ٤

कीं। अन्ततः प्रत्येक को हमने पूरी तरह विध्वस्त कर दिया।

40. और उस बस्ती पर से तो वे हो आए हैं जिसपर बुरी वर्षा बरसी; तो क्या वे उसे देखते नहीं रहे हैं? नहीं, बल्कि वे दोबारा जीवित होकर उठने की आशा ही नहीं रखते रहे हैं।

41. वे जब भी तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारा मज़ाक़ बना लेते हैं कि "क्या यही है, जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

42. इसने तो हमें भटकाकर हमको हमारे प्रभु-पूज्यों से फेर ही दिया होता, यदि हम उनपर मज़बूती से जम न गए होते।" शीघ्र ही वे जान लेंगे जब वे यातना को देखेंगे, कि कौन मार्ग से बहुत भटक गया था।

43. क्या तुमने उसको भी देखा, जिसने अपना प्रभु अपनी (तुच्छ) इच्छा को बना रखा है? तो क्या तुम उसका ज़िम्मा ले सकते हो।

44. या तुम समझते हो कि उनमें अधिकतर सुनते और समझते हैं? वे तो बस चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी अधिक पथभ्रष्ट!

45. क्या तुमने अपने रब को नहीं देखा कि कैसे फैलाई छाया? यदि वह चाहता तो उसे स्थिर रखता। फिर हमने सूर्य को उसका पता देनेवाला बनाया,

46. फिर हम उसको धीरे-धीरे अपनी ओर समेट लेते हैं।

47. वही है जिसने रात्रि को तुम्हारे लिए वस्त्र और निद्रा को सर्वथा विश्राम एवं शांति बनाया और दिन को जी उठने का समय बनाया।

48. और वही है जिसने अपनी दयालुता (वर्षा) के आगे-आगे हवाओं को शुभ सूचना बनाकर भेजता है, और हम ही आकाश से स्वच्छ जल

أَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۙ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ
مِمَّا خَلَقْنَآ أَنْعَامًا وَّأَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ
بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَأَبٰىٓ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُوْرًا ۝ وَلَوْ
شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ
وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا
بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ
بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ۝ وَ
يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ
الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ۝ وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَّ
نَذِيْرًا ۝ قُلْ مَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَآءَ
أَنْ يَّتَّخِذَ إِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ

उतारते हैं।

49. ताकि हम उसके द्वारा निर्जीव भू-भाग को जीवन प्रदान करें और उसे अपने पैदा किए हुए बहुत-से चौपायों और मनुष्यों को पिलाएँ।

50. उसे हमने उनके बीच विभिन्न ढंग से पेश किया है, ताकि वे ध्यान दें। परन्तु अधिकतर लोगों ने इनकार और अकृतज्ञता के अतिरिक्त दूसरी नीति अपनाने से इनकार ही किया।

51. यदि हम चाहते तो हर बस्ती में एक डरानेवाला भेज देते।

52. अतः इनकार करनेवालों की बात न मानना और इस (क़ुरआन) के द्वारा उनसे जिहाद करो, बड़ा जिहाद! (जी तोड़ कोशिश)

53. वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह स्वादिष्ट और मीठा है और यह खारी और कड़ुआ। और दोनों के बीच उसने एक परदा डाल दिया है और एक पृथक करनेवाली रोक रख दी है।

54. और वही है जिसने पानी से एक मनुष्य पैदा किया। फिर उसे वंशगत सम्बन्धों और ससुराली रिश्तेवाला बनाया। तुम्हारा रब बड़ा ही सामर्थ्यवान है।

55. अल्लाह से इतर वे उनको पूजते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकते हैं और न ही उन्हें हानि पहुँचा सकते हैं। और ऊपर से यह भी कि इनकार करनेवाला अपने रब का विरोधी और उसके मुक़ाबले में दूसरों का सहायक बना हुआ है।

56-57. और हमने तो तुमको शुभ-सूचना देनेवाला और सचेतकर्त्ता बनाकर भेजा है। कह दो : "मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता सिवाय इसके कि जो कोई चाहे अपने रब की ओर ले जानेवाला मार्ग अपना ले।"

58. और उस अल्लाह पर भरोसा करो जो जीवन्त और अमर है और उसका

لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ۚ
الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ
خَبِيرًا ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩ تَبَارَكَ
الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَ
قَمَرًا مُنِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً
لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝ وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ
الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ
الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ
سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا
عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ إِنَّهَا سَاءَتْ
مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا

गुणगान करो। वह अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने के लिए काफ़ी है,

59. जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है छह दिनों में पैदा किया, फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। रहमान है वह! अतः पूछो उससे जो उसकी ख़बर रखता है।

60. उन लोगों से जब कहा जाता है कि "रहमान को सजदा करो" तो वे कहते हैं : "और रहमान क्या होता है? क्या जिसे तू हमसे कह दे उसी को हम सजदा करने लगें?" और यह चीज़ उनकी घृणा को और बढ़ा देती है।

61. बड़ी बरकतवाला है वह, जिसने आकाश में बुर्ज (नक्षत्र) बनाए और उसमें एक चिराग़ और एक चमकता चाँद बनाया।

62. और वही है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आनेवाला बनाया, उस व्यक्ति के लिए (निशानी) जो चेतना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।

63. रहमान के (प्रिय) बन्दे वही हैं जो धरती पर नम्रतापूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं : "तुमको सलाम!"

64. जो अपने रब के आगे सजदे में और खड़े रातें गुज़ारते हैं;

65. जो कहते हैं कि "ऐ हमारे रब! जहन्नम की यातना को हमसे हटा दे।" निश्चय ही उसकी यातना चिमटकर रहनेवाली है।

66. निश्चय ही वह जगह ठहरने की दृष्टि से भी बुरी है और स्थान की दृष्टि से भी।

67. जो ख़र्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और न ही तंगी से काम

وقال الذين ١٩ الفرقان ٢٥

ولم يقتروا وكان بين ذلك قواما ۝ والذين لا
يدعون مع الله إلها آخر ولا يقتلون النفس التي
حرم الله إلا بالحق ولا يزنون ۚ ومن يفعل ذلك يلق
أثاما ۝ يضاعف له العذاب يوم القيامة ويخلد
فيه مهانا ۝ إلا من تاب وآمن وعمل عملا صالحا
فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات ۗ وكان الله
غفورا رحيما ۝ ومن تاب وعمل صالحا فإنه يتوب
إلى الله متابا ۝ والذين لا يشهدون الزور وإذا مروا
باللغو مروا كراما ۝ والذين إذا ذكروا بآيات ربهم
لم يخروا عليها صما وعميانا ۝ والذين يقولون
ربنا هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين و
اجعلنا للمتقين إماما ۝ أولئك يجزون الغرفة
بما صبروا ويلقون فيها تحية وسلاما ۝ خالدين

منزل ٤

लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्यमार्ग पर रहते हैं।

68. जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे इष्ट-पूज्य को नहीं पुकारते और न नाहक़ किसी जीव को जिस (के क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है, क़त्ल करते हैं। और न वे व्यभिचार करते हैं—जो कोई यह काम करे वह गुनाह के वबाल से दोचार होगा।

69. क़ियामत के दिन उसकी यातना बढ़ती चली जाएगी। और वह उसी में अपमानित होकर स्थायी रूप से पड़ा रहेगा।

70. सिवाय उसके जो पलट आया और ईमान लाया और अच्छा कर्म किया, तो ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा। और अल्लाह है भी अत्यन्त क्षमाशील, दयावान।

71. और जिसने तौबा की और अच्छा कर्म किया, तो निश्चय ही वह अल्लाह की ओर पलटता है, जैसा कि पलटने का हक़ है।

72. जो किसी झूठ और असत्य में सम्मिलित नहीं होते और जब किसी व्यर्थ के कामों के पास से गुज़रते हैं, तो श्रेष्ठतापूर्वक गुज़र जाते हैं,

73-74. जो ऐसे हैं कि जब उनके रब की आयतों के द्वारा उन्हें याददिहानी कराई जाती है तो उन (आयतों) पर वे अंधे और बहरे होकर नहीं गिरते।[1] और जो कहते हैं : "ऐ हमारे रब !हमें हमारी अपनी पत्नियों और हमारी अपनी संतान से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें डर रखनेवालों का नायक बना दे।"

75. यही वे लोग हैं जिन्हें, इसके बदले में कि वे जमे रहे, उच्च भवन प्राप्त होगा, तथा ज़िन्दाबाद और सलाम से उनका वहाँ स्वागत होगा।

---

1. अर्थात वे अल्लाह की आयतों को सुनते और उनसे पूरा-पूरा फ़ायदा उठाते हैं।


فيها حسنت مستقرا ومقاما ﴿٧٦﴾ قل ما يعبؤا بكم ربي
لولا دعاؤكم فقد كذبتم فسوف يكون لزاما ﴿٧٧﴾
سورة الشعراء مكية
بسم الله الرحمن الرحيم
طسم ﴿١﴾ تلك آيات الكتاب المبين ﴿٢﴾ لعلك باخع
نفسك ألا يكونوا مؤمنين ﴿٣﴾ إن نشأ ننزل عليهم
من السماء آية فظلت أعناقهم لها خاضعين ﴿٤﴾
وما يأتيهم من ذكر من الرحمن محدث إلا كانوا عنه
معرضين ﴿٥﴾ فقد كذبوا فسيأتيهم أنباء ما كانوا به
يستهزئون ﴿٦﴾ أولم يروا إلى الأرض كم أنبتنا
فيها من كل زوج كريم ﴿٧﴾ إن في ذلك لآية وما
كان أكثرهم مؤمنين ﴿٨﴾ وإن ربك لهو العزيز
الرحيم ﴿٩﴾ وإذ نادى ربك موسى أن ائت القوم

76. वहाँ वे सदैव रहेंगे। **बहुत** ही अच्छी है वह ठहरने की **जगह** और स्थान ;

77. कह दो : "मेरे **रब** को तुम्हारी कोई परवाह नहीं अगर **तुम** (उसको) न पुकारो। अब **जबकि** तुम झुठला चुके हो, तो **शीघ्र ही** वह चीज़ चिमट जानेवाली **होगी**।[1]

26. अश-शुअरा

(मक्का में उतरी— आयतें 227)

अल्लाह के नाम से जो **बड़ा** कृपाशील, अत्यन्त दयावान **है**।

1. ता० सीन० मीम०।

2. ये स्पष्ट किताब की आयतें **हैं**।

3. शायद इसपर कि वे ईमान नहीं लाते, तुम अपने प्राण ही **खो बैठोगे**।

4. यदि हम चाहें तो उनपर आकाश से एक निशानी उतार दें। फिर उनकी गर्दनें उसके आगे झुकी रह जाएँ।

5. उनके पास रहमान की ओर से जो नवीन अनुस्मृति भी आती **है**, वे उससे मुँह फेर ही लेते हैं।

6. अब जबकि वे झुठला **चुके हैं**, तो शीघ्र ही उन्हें उसकी **हक़ीक़त** मालूम हो जाएगी, जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते **रहे हैं**।

7-8. क्या उन्होंने धरती को **नहीं देखा** कि हमने उसमें कितने **ही** प्रकार की उमदा चीज़ें पैदा की हैं ? निश्चय **ही इसमें** एक **बड़ी निशानी है, इसपर** भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

9. और निश्चय ही तुम्हारा **रब ही है** जो **बड़ा** प्रभुत्वशाली, अत्यन्त **दयावान है**।



1. अर्थात झुठलाने का दण्ड उन्हें **शीघ्र** मिलकर रहेगा।

الظّٰلِمِيْنَ ۙ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ؕ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا
يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝ وَلَهُمْ عَلَيَّ
ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۚ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا
بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۝ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ
اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ
اِسْرَآءِيْلَ ؕ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ
فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۙ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ
فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ فَعَلْتُهَاۤ اِذًا وَّاَنَا
مِنَ الضَّآلِّيْنَ ؕ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ
لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَتِلْكَ
نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ؕ قَالَ
فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

10-11. और जबकि तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि "ज़ालिम लोगों के पास जा—फ़िरऔन की क़ौम के पास—क्या वे डर नहीं रखते ?"

12. उसने कहा : "ऐ मेरे रब ! मुझे डर है कि वे मुझे झुठला देंगे,

13. और मेरा सीना घुटता है और मेरी ज़बान नहीं चलती। इसलिए हारून की ओर भी संदेश भेज दे।

14. और मुझपर उनके यहाँ के एक गुनाह का बोझ भी है। इसलिए मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे।"

15. कहा : "कदापि नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ। हम तुम्हारे साथ हैं, सुनने को मौजूद हैं।

16-17. अत: तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो कि 'हम सारे संसार के रब के भेजे हुए हैं कि तू इसराईल की संतान को हमारे साथ जाने दे'।"

18. (फ़िरऔन ने) कहा : "क्या हमने तुझे जबकि तू बच्चा था, अपने यहाँ पाला नहीं था ? और तू अपनी अवस्था के कई वर्षों तक हममें रहा,

19. और तूने अपना वह काम किया, जो किया। तू बड़ा ही कृतघ्न है।"

20. कहा : "ऐसा तो मुझसे उस समय हुआ जबकि मैं चूक गया था।

21. फिर जब मुझे तुम्हारा भय हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया। फिर मेरे रब ने मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान की और मुझे रसूलों में सम्मिलित किया।

22. यही वह उदार अनुग्रह है जिसका एहसान तू मुझपर जताता है कि तूने इसराईल की संतान को ग़ुलाम बना रखा है।"

23. फ़िरऔन ने कहा : "और यह सारे संसार का रब क्या होता है ?"

24. उसने कहा : "आकाशों और धरती का रब और जो कुछ इन दोनों के मध्य

है उसका भी, यदि तुम्हें यक़ीन हो।"

25. उसने अपने आस-पासवालों से कहा: "क्या तुम सुनते नहीं हो?"

26. कहा: "तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब।"

27. बोला: "निश्चय ही तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिलकुल ही पागल है।"

28. उसने कहा: "पूर्व और पश्चिम का रब और जो कुछ उनके बीच है उसका भी, यदि तुम कुछ बुद्धि रखते हो।"

29. बोला: "यदि तूने मेरे सिवा किसी और को पूज्य एवं प्रभु बनाया, तो मैं तुझे बन्दी बनाकर रहूँगा।"

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝ قَالَ لِمَنْ
حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۝ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ
لَمَجْنُوْنٌ ۝ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰــهًا غَيْرِيْ
لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ
مُّبِيْنٍ ۝ قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝
فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَّنَزَعَ يَدَهٗ
فَاِذَا هِىَ بَيْضَاۗءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ
هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ
بِسِحْرِهٖ ڰ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ
فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۝ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ۝
فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ وَّقِيْلَ

30. उसने कहा: "क्या यदि मैं तेरे पास एक स्पष्ट चीज़ ले आऊँ तब भी?"

31. बोला: "अच्छा, वह ले आ; यदि तू सच्चा है।"

32. फिर उसने अपनी लाठी डाल दी, तो अचानक क्या देखते हैं कि वह एक प्रत्यक्ष अजगर है।

33. और उसने अपना हाथ बाहर खींचा तो फिर क्या देखते हैं कि वह देखनेवालों के सामने चमक रहा है।

34. उसने अपने आस-पास के सरदारों से कहा: "निश्चय ही यह एक बड़ा ही प्रवीण जादूगर है।

35. चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी अपनी भूमि से निकाल बाहर करे; तो अब तुम क्या कहते हो?"

36-37. उन्होंने कहा: "इसे और इसके भाई को अभी टाले रखिए, और एकत्र करनेवालों को नगरों में भेज दीजिए कि वे प्रत्येक प्रवीण जादूगर को आपके पास ले आएँ।"

38. अतएव एक निश्चित दिन के नियत समय पर जादूगर एकत्र कर लिए गए।



39. और लोगों से कहा गया : "क्या तुम भी एकत्र होते हो ?"

40. कदाचित हम जादूगरों ही के अनुयायी रह जाएँ, यदि वे विजयी हुए।

41. फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा : "क्या हमारे लिए कोई प्रतिदान भी है, यदि हम प्रभावी रहे ?"

42. उसने कहा : "हाँ, और निश्चय ही तुम तो उस समय निकटतम लोगों में से हो जाओगे।"

43. मूसा ने उनसे कहा : "डालो, जो कुछ तुम्हें डालना है।"

44. तब उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं और बोले : "फ़िरऔन के प्रताप से हम ही विजयी रहेंगे।"

45. फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी तो क्या देखते हैं कि वह उस स्वाँग को, जो वे रचाते थे, निगलती जा रही है।

46. इसपर जादूगर सजदे में गिर पड़े।

47. वे बोल उठे : "हम सारे संसार के रब पर ईमान ले आए——

48. मूसा और हारून के रब पर !"

49. उसने कहा : "तुमने उसको मान लिया, इससे पहले कि मैं तुम्हें अनुमति देता। निश्चय ही वह तुम सबका प्रमुख है, जिसने तुमको जादू सिखाया है। अच्छा, शीघ्र ही तुम्हें मालूम हुआ जाता है ! मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा और तुम सभी को सूली पर चढ़ा दूँगा।"

50. उन्होंने कहा : "कुछ हरज नहीं; हम तो अपने रब ही की ओर पलटकर जानेवाले हैं।

51. हमें तो इसी की लालसा है कि हमारा रब हमारी खताओं को क्षमा कर

दे, क्योंकि हम सबसे पहले ईमान लाए।"

52. हमने मूसा की ओर प्रकाशना की : "मेरे बन्दों को लेकर रातों-रात निकल जा। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।"

53-56. इसपर फ़िरऔन ने एकत्र करनेवालों को नगरों में भेजा कि "यह गिरे-पड़े थोड़े लोगों का एक गिरोह है, और ये हमें क्रुद्ध कर रहे हैं। और हम चौकन्ना रहनेवाले लोग हैं।"

57-58. इस प्रकार हम उन्हें बाग़ों और स्रोतों और ख़ज़ानों और अच्छे स्थान से निकाल लाए।

رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَوْحَيْنَآ
اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝
فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ
لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۝ وَ
اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّ
عُيُوْنٍ ۝ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝ كَذٰلِكَ ؕ وَ
اَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝
فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝
قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى
مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ
فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَ
اَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

59. ऐसा ही हम करते हैं और इनका वारिस हमने इसराईल की संतान को बना दिया।

60. सुबह-तड़के उन्होंने उनका पीछा किया।

61. फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा : "हम तो पकड़े गए!"

62. उसने कहा : "कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा।"

63. तब हमने मूसा की ओर प्रकाशना की : "अपनी लाठी सागर पर मार।" तो वह फट गया और (उसका) प्रत्येक टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की भाँति हो गया।

64. और हम दूसरों को भी निकट ले आए।

65. हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे, बचा लिया।

66. और दूसरों को डुबो दिया।

67. निस्संदेह इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاتْلُ
عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝
قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ۝ قَالَ هَلْ
يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۝ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ۝
قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝ قَالَ
اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ
الْاَقْدَمُوْنَ ۝ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۝ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَ
يَسْقِيْنِ ۝ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝ وَالَّذِيْ
يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ۝ وَالَّذِيْ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ
خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ
بِالصّٰلِحِيْنَ ۝ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي
الْاٰخِرِيْنَ ۝ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ۝

68. और निश्चय ही तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

69-70. और उन्हें इबराहीम का वृत्तान्त सुनाओ, जबकि उसने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा : "तुम क्या पूजते हो ?"

71. उन्होंने कहा : "हम बुतों की पूजा करते हैं, हम तो उन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे।"

72. उसने कहा : "क्या ये तुम्हारी सुनते हैं, जब तुम पुकारते हो,

73-76. या ये तुम्हें कुछ लाभ या हानि पहुँचाते हैं ?" उन्होंने कहा : "नहीं, बल्कि हमने तो अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है।" उसने कहा : "क्या तुमने उनपर विचार भी किया कि जिन्हें तुम पूजते हो, तुम और तुम्हारे पहले के बाप-दादा ?

77. वे सब तो मेरे शत्रु हैं, सिवाय सारे संसार के रब के,

78. जिसने मुझे पैदा किया और फिर वही मेरा मार्गदर्शन करता है।

79. और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

80. और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही मुझे अच्छा करता है।

81. और वही है जो मुझे मारेगा, फिर मुझे जीवित करेगा।[1]

82. और वही है जिससे मुझे इसकी आकांक्षा है कि बदला दिए जाने के दिन वह मेरी ख़ता माफ़ कर देगा।

83-84. ऐ मेरे रब ! मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान कर और मुझे योग्य लोगों के साथ मिला। और बाद के आनेवालों में मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर।

85. और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में सम्मिलित कर।

1. यह अनुवाद भी कर सकते हैं : "जो मुझे मारता और जीवित करता है।"

وَاغْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ ۝ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ
يُبْعَثُونَ ۝ يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۝ إِلَّا
مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ
لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ۝ وَقِيلَ لَهُمْ
أَيْنَ مَا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ۝ مِن دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنصُرُونَكُمْ
أَوْ يَنتَصِرُونَ ۝ فَكُبْكِبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ۝ وَجُنُودُ
إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۝ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ۝
تَاللَّهِ إِن كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ إِذْ نُسَوِّيكُم بِرَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝ وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ۝ فَمَا لَنَا
مِن شَافِعِينَ ۝ وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ۝ فَلَوْ أَنَّ لَنَا
كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ

86. और मेरे बाप को क्षमा कर दे। निश्चय ही वह पथभ्रष्ट लोगों में से है।

87-88. और मुझे उस दिन रुसवा न कर, जब लोग जीवित करके उठाए जाएँगे। जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद,

89. सिवाय इसके कि कोई भला-चंगा दिल लिए हुए अल्लाह के पास आया हो।"

90. और डर रखनेवालों के लिए जन्नत निकट लाई जाएगी।

91. और भड़कती आग पथभ्रष्ट लोगों के लिए प्रकट कर दी जाएगी।

92-93. और उनसे कहा जाएगा : "कहाँ हैं वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते रहे हो ? क्या वे तुम्हारी कुछ सहायता कर रहे हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं ?"

94-95-96. फिर वे उसमें औंधे झोंक दिए जाएँगे, वे और बहके हुए लोग और इबलीस की सेनाएँ, सबके सब। वे वहाँ आपस में झगड़ते हुए कहेंगे :

97. "अल्लाह की क़सम ! निश्चय ही हम खुली गुमराही में थे।

98. जबकि हम तुम्हें सारे संसार के रब के बराबर ठहरा रहे थे।

99. और हमें तो बस उन अपराधियों ने ही पथभ्रष्ट किया।

100-101. अब न हमारा कोई सिफ़ारिशी है, और न घनिष्ट मित्र।

102. क्या ही अच्छा होता कि हमें एक बार फिर पलटना होता, तो हम मोमिनों में से हो जाते !"

103. निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

104. और निस्संदेह तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

105. नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया;

لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ
أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ
مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ فَاتَّقُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝ قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ
الْأَرْذَلُونَ ۝ قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ۝ وَمَا أَنَا
بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ قَالُوا
لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ۝
قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ۝ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ
فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَأَنْجَيْنَاهُ
وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ
الْبَاقِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَتْ

106. जबकि उनसे उनके भाई नूह ने कहा : "क्या तुम डर नहीं रखते ?

107. निस्संदेह मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

108. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरा कहा मानो।

109. मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है।

110. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।"

111. उन्होंने कहा : "क्या हम तेरी बात मान लें, जबकि तेरे पीछे तो अत्यन्त नीच लोग चल रहे हैं ?"

112-113-114-115. उसने कहा : "मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते रहे हैं ? उनका हिसाब तो बस मेरे रब के ज़िम्मे है। क्या ही अच्छा होता कि तुममें चेतना होती। और मैं ईमानवालों को धुत्कारनेवाला नहीं हूँ। मैं तो बस स्पष्ट रूप से एक सावधान करनेवाला हूँ।"

116. उन्होंने कहा : "यदि तू बाज़ न आया ऐ नूह, तो तू संगसार[1]-होकर रहेगा।"

117. उसने कहा : "ऐ मेरे रब ! मेरी क़ौम के लोगों ने तो मुझे झुठला दिया।

118. अब मेरे और उनके बीच दो टूक फ़ैसला कर दे और मुझे और जो ईमानवाले मेरे साथ हैं, उन्हें बचा ले !"

119. अतः हमने उसे और जो उसके साथ भरी हुई नौका में थे बचा लिया।

120. और उसके पश्चात शेष लोगों को डुबो दिया।

121. निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

122. और निस्संदेह तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

---

1. अर्थात पथराव करके मार डाला जाएगा।

123. आद ने रसूलों को झुठलाया।

124. जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा : "क्या तुम डर नहीं रखते ?

125. मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

126. अतः तुम अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा मानो।

127-128 मैं इस काम पर तुमसे कोई प्रतिदान नहीं माँगता। मेरा प्रतिदान तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है। क्या तुम प्रत्येक उच्च स्थान पर व्यर्थ एक स्मारक का निर्माण करते रहोगे ?


عَادُ ۨالْمُرْسَلِيْنَ ۚۖ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا
تَتَّقُوْنَ ۚ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۚ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۗ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً
تَعْبَثُوْنَ ۙ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۚ
وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۚ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۚ
اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۚۙ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۚ اِنِّيْٓ
اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۗ قَالُوْا سَوَآءٌ
عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ۙ اِنْ هٰذَآ
اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۚ فَكَذَّبُوْهُ
فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۞ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۠ كَذَّبَتْ

129. और भव्य महल बनाते रहोगे, मानो तुम्हें सदैव रहना है ?

130. और जब किसी पर हाथ डालते हो तो बिलकुल निर्दय अत्याचारी बनकर हाथ डालते हो !

131. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

132. उसका डर रखो जिसने तुम्हें वे चीज़ें पहुँचाईं जिनको तुम जानते हो।

133. उसने तुम्हारी सहायता की चौपायों और बेटों से,

134. और बाग़ों और स्रोतों से।

135. निश्चय ही मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है।"

136-137. उन्होंने कहा : "हमारे लिए बराबर है चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करनेवाले न बनो। यह तो बस पहले लोगों की पुरानी आदत है।

138. और हमें कदापि यातना न दी जाएगी।"

139. अन्ततः उन्होंने उन्हें झुठला दिया तो हमने उनको विनष्ट कर दिया। बेशक इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

140. और बेशक तुम्हारा रब ही है, जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

141. समूद ने रसूलों को झुठलाया,

142. जबकि उसके भाई सालेह ने उनसे कहा : "क्या तुम डर नहीं रखते?

143. निस्संदेह मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

144. अत: तुम अल्लाह का डर रखो और मेरी बात मानो।

145. मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है।

146. क्या तुम यहाँ जो कुछ है उसके बीच, निश्चिन्त छोड़ दिए जाओगे,

ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صٰلِحٌ أَلَا
تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
أَطِيعُونِ ۝ وَمَا أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا
هٰهُنَا آمِنِينَ ۝ فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ ۝ وَزُرُوعٍ وَ
نَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ۝ وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا
فٰرِهِينَ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ۝ وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ
الْمُسْرِفِينَ ۝ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا
يُصْلِحُونَ ۝ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝ مَا أَنْتَ
إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا ۚ فَأْتِ بِاٰيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝
قَالَ هٰذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَعْلُومٍ ۝
وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نٰدِمِينَ ۝ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۚ

147-148. बाग़ों और स्रोतों और खेतों और उन खजूरों में जिनके गुच्छे तरो ताज़ा और गुँथे हुए हैं?

149. तुम पहाड़ों को काट-काटकर इतराते हुए घर बनाते हो?

150. अत: अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो-।

151-152. और उन हद से गुज़र जानेवालों की आज्ञा का पालन न करो, जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं, और सुधार का काम नहीं करते।"

153-154. उन्होंने कहा : "तू तो बस जादू का मारा हुआ है। तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है। यदि तू सच्चा है, तो कोई निशानी ले आ।"

155. उसने कहा : "यह ऊँटनी है। एक दिन पानी पीने की बारी इसकी है और एक नियत दिन की बारी पानी लेने की तुम्हारी है।

156. तकलीफ़ पहुँचाने के लिए इसे हाथ न लगाना, अन्यथा एक बड़े दिन की यातना तुम्हें आ लेगी।"

157. किन्तु उन्होंने उसकी कूचें काट दीं। फिर पछताते रह गए।

158. अन्तत: यातना ने उन्हें आ दबोचा। निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَ
إِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ
الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ وَ
تَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ
قَوْمٌ عَادُونَ ۝ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ
الْمُخْرَجِينَ ۝ قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ۝ رَبِّ
نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ۝ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝
إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ۝ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ۝ وَ
أَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۝ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ

है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

159. और निस्संदेह तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

160. लूत की क़ौम के लोगों ने रसूलों को झुठलाया;

161. जबकि उनके भाई लूत ने उनसे कहा : "क्या तुम डर नहीं रखते ?

162. मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

163. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

164. मैं इस काम पर तुमसे कोई प्रतिदान नहीं माँगता, मेरा प्रतिदान तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है।

165. क्या सारे संसारवालों में से तुम ही ऐसे हो जो पुरुषों के पास जाते हो,

166. और अपनी पत्नियों को, जिन्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा किया, छोड़ देते हो ? इतना ही नहीं, बल्कि तुम हद से आगे बढ़े हुए लोग हो।"

167. उन्होंने कहा : "यदि तू बाज़ न आया, ऐ लूत ! तो तू अवश्य ही निकाल बाहर किया जाएगा।"

168-169. उसने कहा : "मैं तुम्हारे कर्म से अत्यन्त विरक्त हूँ। ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरे लोगों को, जो कुछ ये करते हैं उसके परिणाम से, बचा ले।"

170-171. अन्ततः हमने उसे और उसके सारे लोगों को बचा लिया; सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जानेवालों में थी।

172-173. फिर शेष दूसरे लोगों को हमने विनष्ट कर दिया। और हमने उनपर एक बरसात बरसाई। और यह चेताए हुए लोगों की बहुत ही बुरी वर्षा थी।

174. निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

175. और निश्चय ही तुम्हारा रब बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

176. अल-ऐकावालों ने रसूलों को झुठलाया।

177. जबकि शुऐब ने उनसे कहा : "क्या तुम डर नहीं रखते?

178. मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

179. अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

180. मैं इस काम पर तुमसे कोई प्रतिदान नहीं माँगता। मेरा प्रतिदान तो बस सारे संसार के रब के ज़िम्मे है।

ربك لهو العزيز الرحيم ۝ كذب أصحب لئيكة
المرسلين ۝ إذ قال لهم شعيب ألا تتقون ۝
إني لكم رسول أمين ۝ فاتقوا الله وأطيعون ۝
وما أسئلكم عليه من أجر إن أجري إلا على رب
العلمين ۝ أوفوا الكيل ولا تكونوا من المخسرين ۝
وزنوا بالقسطاس المستقيم ۝ ولا تبخسوا الناس
أشياءهم ولا تعثوا في الأرض مفسدين ۝ و
اتقوا الذي خلقكم والجبلة الأولين ۝ قالوا
إنما أنت من المسحرين ۝ وما أنت إلا بشر مثلنا
وإن نظنك لمن الكذبين ۝ فأسقط علينا كسفا
من السماء إن كنت من الصدقين ۝ قال ربي
أعلم بما تعملون ۝ فكذبوه فأخذهم عذاب
يوم الظلة إنه كان عذاب يوم عظيم ۝ إن

181. तुम पूरा-पूरा पैमाना भरो और घाटा न दो।

182. और ठीक तराज़ू से तौलो।

183. और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो और धरती में बिगाड़ और फ़साद मचाते मत फिरो।

184. उसका डर रखो जिसने तुम्हें और पिछली नस्लों को पैदा किया है।"

185. उन्होंने कहा : "तू तो बस जादू का मारा हुआ है।

186. और तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है और हम तो तुझे झूठा समझते हैं।

187. फिर तू हमपर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दे, यदि तू सच्चा है।"

188. उसने कहा : "मेरा रब भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।"

189. किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर छायावाले दिन[1] की यातना ने आ लिया। निश्चय ही वह एक बड़े दिन की यातना थी।

---

1. यातना छाया अर्थात बादलों के रूप में प्रकट हुई थी।

190. निस्संदेह इसमें एक बड़ी निशानी है। इसपर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं।

191. और निश्चय ही तुम्हारा रब ही है, जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

192. निश्चय ही यह (क़ुरआन) सारे संसार के रब की अवतरित की हुई चीज़ है।

193-195. इसको स्पष्ट अरबी भाषा में लेकर तुम्हारे हृदय पर एक विश्वसनीय आत्मा उतरी है, ताकि तुम सावधान करनेवाले हो।

196. और निस्संदेह यह पिछले लोगों की किताबों में भी मौजूद है।

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝ عَلٰى
قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ
مُّبِيْنٍ ۝ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَكُنْ
لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ وَلَوْ
نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ
الْاَلِيْمَ ۝ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝
فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝ اَفَبِعَذَابِنَا
يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝ ثُمَّ
جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

197. क्या यह उनके लिए कोई निशानी नहीं है कि इसे बनी इसराईल के विद्वान जानते हैं?

198. यदि हम इसे ग़ैर अरबी भाषी पर भी उतारते,

199. और वह इसे उन्हें पढ़कर सुनाता तब भी वे इसे माननेवाले न होते।

200. इसी प्रकार हमने इसे अपराधियों के दिलों में पैठाया है।

201. वे इसपर ईमान लाने को नहीं, जब तक कि दुखद यातना न देख लें।

202. फिर जब वह अचानक उनपर आ जाएगी और उन्हें ख़बर भी न होगी,

203. तब वे कहेंगे : "क्या हमें कुछ मुहलत मिल सकती है?"

204. तो क्या वे लोग हमारी यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं?

205. क्या तुमने कुछ विचार किया? यदि हम उन्हें कुछ वर्षों तक सुख भोगने दें;

206. फिर उनपर वह चीज़ आ जाए, जिससे उन्हें डराया जाता रहा है;

207. तो जो सुख उन्हें मिला होगा वह उनके कुछ काम न आएगा।



208-209. हमने किसी बस्ती को भी इसके बिना विनष्ट नहीं किया कि उसके लिए सचेत करनेवाले याददिहानी के लिए मौजूद रहे हैं। हम कोई ज़ालिम नहीं हैं।

210-211. इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। न यह उन्हें फबता ही है और न ये उनके बस का ही है।

212. वे तो इसके सुनने से भी दूर रखे गए हैं।

213. अतः अल्लाह के साथ दूसरे इष्ट-पूज्य को न पुकारना, अन्यथा तुम्हें भी यातना दी जाएगी।

214. और अपने निकटतम नातेदारों को सचेत करो।

215. और जो ईमानवाले तुम्हारे अनुयायी हो गए हैं, उनके लिए अपनी भुजाएँ बिछाए रखो।

216. किन्तु यदि वे तुम्हारी अवज्ञा करें तो कह दो : "जो कुछ तुम करते हो, उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।"

217-218. और उस प्रभुत्वशाली और दया करनेवाले पर भरोसा रखो जो तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम खड़े होते हो।

219. और सजदा करनेवालों में तुम्हारी चलत-फिरत को भी वह देखता है।

220. निस्संदेह वह भली-भाँति सुनता-जानता है।

221. क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किसपर उतरते हैं?

222. वे प्रत्येक ढोंग रचनेवाले गुनाहगार पर उतरते हैं।

223. वे कान लगाते हैं और उनमें से अधिकतर झूठे होते हैं।

224. रहे कवि, तो उनके पीछे बहके हुए लोग ही चला करते हैं।——

225. क्या तुमने देखा नहीं कि वे हर घाटी में बहके फिरते हैं,

226. और कहते वह हैं जो करते नहीं?——



227. वे नहीं जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और अल्लाह को अधिक याद किया। और इसके बाद कि उनपर ज़ुल्म किया गया तो उन्होंने उसका प्रतिकार किया और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उन्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा कि वे किस जगह पलटते हैं।

27. अन-नम्ल

(मक्का में उतरी— आयतें 93)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ता० सीन०। ये आयतें हैं क़ुरआन और एक स्पष्ट किताब की।

2. मार्गदर्शन है और शुभ-सूचना उन ईमानवालों के लिए,

3. जो नमाज़ का आयोजन करते हैं और ज़कात देते हैं और वही हैं जो आख़िरत पर विश्वास रखते हैं।

4. रहे वे लोग जो आख़िरत को नहीं मानते, उनके लिए हमने उनकी करतूतों को शोभायमान बना दिया है। अत: वे भटकते फिरते हैं।

5. वही लोग हैं, जिनके लिए बुरी यातना है और वही हैं जो आख़िरत में अत्यन्त घाटे में रहेंगे।

6. निश्चय ही तुम यह क़ुरआन एक बड़े तत्त्वदर्शी, ज्ञानवान (प्रभु) की ओर से पा रहे हो।

7. याद करो जब मूसा ने अपने घरवालों से कहा कि "मैंने एक आग-सी देखी है। मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आता हूँ या तुम्हारे

بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهَا
نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَاَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ
كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰى
لَا تَخَفْ ۣ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِلَّا
مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْۗءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ
مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ ۣ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ۭ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَاۗءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا
مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَجَحَدُوْا بِهَا
وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ

पास कोई दहकता अंगार लाता हूँ, ताकि तुम तापो।"

8. फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो उसे आवाज़ आई कि "मुबारक है वह, जो इस आग में है और जो इसके आस-पास है। महान और उच्च है अल्लाह, सारे संसार का रब!

9. ऐ मूसा! वह तो मैं अल्लाह हूँ, अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी!

10. तू अपनी लाठी डाल दे।" जब मूसा ने देखा कि वह बल खा रही है जैसे वह कोई साँप हो, तो वह पीठ फेरकर भागा और पीछे मुड़कर न देखा। "ऐ मूसा! डर मत। निस्संदेह रसूल मेरे पास डरा नहीं करते,

11. सिवाय उसके जिसने कोई ज़्यादती की हो। फिर बुराई के पश्चात उसे भलाई से बदल दिया, तो मैं भी बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान हूँ।

12. अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल। वह बिना किसी ख़राबी के उज्ज्वल चमकता निकलेगा। ये नौ निशानियों में से हैं फ़िरऔन और उसकी क़ौम की ओर भेजने के लिए। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग हैं।"

13. किन्तु जब आँखें खोल देनेवाली हमारी निशानियाँ उनके पास आईं तो उन्होंने कहा : "यह तो खुला हुआ जादू है।"

14. उन्होंने ज़ुल्म और सरकशी से उनका इनकार कर दिया, हालाँकि उनके जी को उनका विश्वास हो चुका था। अब देख लो इन बिगाड़ पैदा करनेवालों का क्या परिणाम हुआ?

15. हमने दाऊद और सुलैमान को बड़ा ज्ञान प्रदान किया था, (उन्होंने उसके

महत्त्व को जाना) और उन दोनों ने कहा : "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है[1], जिसने हमें अपने बहुत-से ईमानवाले बन्दों के मुक़ाबले में श्रेष्ठता प्रदान की।"

16. दाऊद का उत्तराधिकारी सुलैमान हुआ और उसने कहा : "ऐ लोगो ! हमें पक्षियों की बोली सिखाई गई है और हमें हर चीज़ दी गई है। निस्संदेह यह स्पष्ट बड़ाई है।"

17. सुलैमान के लिए जिन्न और मनुष्य और पक्षियों में से उसकी सेनाएँ एकत्र की गईं फिर उनकी दर्जाबन्दी की जा रही थी।

وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا
عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَوَرِثَ
سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ
الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ
الْمُبِيْنُ ۝ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَ
الْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا
عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ
ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ
قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ
عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ
وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَ
تَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ

18. यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा : "ऐ चींटियो ! अपने घरों में प्रवेश कर जाओ। कहीं सुलैमान और उसकी सेनाएँ तुम्हें कुचल न डालें और उन्हें एहसास भी न हो।"

19. तो वह उसकी बात पर प्रसन्न होकर मुस्कराया और कहा : "मेरे रब ! मुझे संभाले रख कि मैं तेरी उस कृपा पर कृतज्ञता दिखाता रहूँ जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि अच्छा कर्म करूँ जो तुझे पसन्द आए और अपनी दयालुता से मुझे अपने अच्छे बन्दों में दाख़िल कर।"

20. उसने पक्षियों की जाँच-पड़ताल की तो कहा : "क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, (वह यहीं कहीं है) या वह ग़ायब हो गया है ?

1. कृतज्ञता के रूप में उन्होंने अल्लाह की प्रशंसा की।

مِنَ الْغَآئِبِينَ ۝ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَا۟ذْبَحَنَّهُ
أَوْ لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ
فَقَالَ أَحَطتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِن سَبَإٍ بِنَبَإٍ
يَقِينٍ ۝ إِنِّي وَجَدتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ
مِن كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝ وَجَدتُّهَا وَقَوْمَهَا
يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِن دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ۝
أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ اللَّهُ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۩ قَالَ سَنَنظُرُ
أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ اذْهَب بِّكِتَابِي
هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانظُرْ مَاذَا
يَرْجِعُونَ ۝ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ

21. मैं उसे कठोर दण्ड दूँगा या उसे ज़बह ही कर डालूँगा या फिर वह मेरे सामने कोई स्पष्ट कारण प्रस्तुत करे।"

22. फिर कुछ अधिक देर नहीं ठहरा कि उसने आकर कहा : "मैंने वह जानकारी प्राप्त की है जो आपको मालूम नहीं है। मैं सबा से आपके पास एक विश्वसनीय सूचना लेकर आया हूँ।

23. मैंने एक स्त्री को उनपर[1] शासन करते पाया है। उसे हर चीज़ प्राप्त है और उसका एक बड़ा सिंहासन है।

24. मैंने उसे और उसकी क़ौम के लोगों को अल्लाह से इतर सूर्य को सजदा करते हुए पाया। शैतान ने उनके कर्मों को उनके लिए शोभायमान बना दिया है और उन्हें मार्ग से रोक दिया है— अतः वे सीधा मार्ग नहीं पा रहे हैं।—

25. कि अल्लाह को सजदा न करें जो आकाशों और धरती की छिपी चीज़ें निकालता है, और जानता है जो कुछ भी तुम छिपाते हो और जो कुछ प्रकट करते हो।

26. अल्लाह कि उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, वह महान सिंहासन का रब है।"

27. उसने कहा : "अभी हम देख लेते हैं कि तूने सच कहा या तू झूठा है।

28. मेरा यह पत्र लेकर जा, और इसे उन लोगों की ओर डाल दे। फिर उनके पास से अलग हटकर देख कि वे क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।"

29. वह बोली : "ऐ सरदारो ! मेरी ओर एक प्रतिष्ठित पत्र डाला गया है।

---

1. अर्थात सबा के लोगों पर।

كَرِيْمٌ ۝ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۝ أَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَأْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝ قَالَتْ
يٰٓأَيُّهَا الْمَلَؤُا أَفْتُوْنِيْ فِيْٓ أَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً
أَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ۝ قَالُوْا نَحْنُ أُولُوْا قُوَّةٍ وَّأُولُوْا
بَأْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَأْمُرِيْنَ ۝
قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوْكَ إِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً أَفْسَدُوْهَا وَ
جَعَلُوْٓا أَعِزَّةَ أَهْلِهَآ أَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝
وَإِنِّيْ مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌ ۢ بِمَ يَرْجِعُ
الْمُرْسَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ أَتُمِدُّوْنَنِ
بِمَالٍ ۡ فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ
بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ۝ اِرْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ
بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ أَذِلَّةً
وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝ قَالَ يٰٓأَيُّهَا الْمَلَؤُا أَيُّكُمْ

30. वह सुलैमान की ओर से है और वह यह है कि 'अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

31. यह कि मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो और आज्ञाकारी बनकर मेरे पास आओ'।"

32. उसंने कहा : "ऐ सरदारो! मेरे मामले में मुझे परामर्श दो। मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती, जब तक कि तुम मेरे पास मौजूद न हो।"

33. उन्होंने कहा : "हम शक्तिशाली हैं, और हमें बड़ी युद्ध-क्षमता प्राप्त है। आगे मामले का अधिकार आपको है, अतः आप देख लें कि आपको क्या आदेश देना है।"

34. उसने कहा : "सम्राट जब किसी बस्ती में प्रवेश करते हैं, तो उसे ख़राब कर देते हैं और वहाँ के प्रभावशाली लोगों को अपमानित करके रहते हैं। और वे ऐसा ही करेंगे।

35. मैं उनके पास एक उपहार भेजती हूँ; फिर देखती हूँ कि दूत क्या उत्तर लेकर लौटते हैं।"

36. फिर जब वह सुलैमान के पास पहुँचा तो उसने (सुलैमान ने) कहा : "क्या तुम माल से मेरी सहायता करोगे, तो जो कुछ अल्लाह ने मुझे दिया है वह उससे कहीं उत्तम है, जो उसने तुम्हें दिया है? बल्कि तुम्हीं लोग हो जो अपने उपहार से प्रसन्न होते हो!

37. उनके पास वापस जाओ। हम उनपर ऐसी सेनाएँ लेकर आएँगे, जिनका मुक़ाबला वे न कर सकेंगे और हम उन्हें अपमानित करके वहाँ से निकाल देंगे कि वे पस्त होकर रहेंगे।"

38. उसने (सुलैमान ने) कहा : "ऐ सरदारो! तुममें कौन उसका सिंहासन

يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۝ قَالَ
عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ
مِنْ مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۝ قَالَ
الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ
أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ
قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ءَأَشْكُرُ أَمْ
أَكْفُرُ ۖ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ
فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ۝ قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ
أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۝ فَلَمَّا
جَاءَتْ قِيلَ أَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۚ وَ
أُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۝ وَصَدَّهَا
مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ
كٰفِرِينَ ۝ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ

लेकर मेरे पास आता है, इससे पहले कि वे लोग आज्ञाकारी होकर मेरे पास आएँ ?"

39. जिन्नों में से एक बलिष्ट निर्भीक ने कहा : "मैं उसे आपके पास ले आऊँगा। इससे पहले कि आप अपने स्थान से उठें। मुझे इसकी शक्ति प्राप्त है और मैं अमानतदार भी हूँ।"

40. जिस व्यक्ति के पास किताब का ज्ञान था, उसने कहा : "मैं आपकी पलक झपकने से पहले उसे आपके पास लाए देता हूँ।" फिर जब उसने उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो कहा : "यह मेरे रब का उदार अनुग्रह है, ताकि वह मेरी परीक्षा करे कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्न बनता हूँ। जो कृतज्ञता दिखलाता है, तो वह अपने लिए ही कृतज्ञता दिखलाता है और वह जिसने कृतघ्नता दिखाई, तो मेरा रब निश्चय ही निस्पृह, बड़ा उदार है।"

41. उसने कहा कि : "उसके लिए उसके सिंहासन का रूप बदल दो। देखें वह वास्तविकता को पा लेती है या उन लोगों में से होकर रह जाती है, जो वास्तविकता को नहीं पाते।"

42. जब वह आई तो कहा गया : "क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है ?" उसने कहा : "यह तो जैसे वही है, और हमें तो इससे पहले ही ज्ञान प्राप्त हो चुका था; और हम आज्ञाकारी हो गए थे।"

43. अल्लाह से हटकर वह दूसरे को पूजती थी। इसी चीज़ ने उसे रोक रखा था। निस्संदेह वह एक इनकार करनेवाली क़ौम में से थी।

44. उससे कहा गया कि : "महल में प्रवेश करो।" तो जब उसने उसे देखा

حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ اِنَّهٗ
صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ
نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ۝
قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝
قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ۝ وَكَانَ فِي
الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا
يُصْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَ
اَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ
اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا

तो उसने उसको गहरा पानी समझा और उसने अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं।[1] उसने कहा : "यह तो शीशे से निर्मित महल है।" बोली : "ऐ मेरे रब! निश्चय ही मैंने अपने आपपर ज़ुल्म किया। अब मैंने सुलैमान के साथ अपने आपको अल्लाह के समर्पित कर दिया, जो सारे संसार का रब है।"

45. और समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा कि : "अल्लाह की बन्दगी करो।" तो क्या देखते हैं कि वे दो गिरोह होकर आपस में झगड़ने लगे।

46. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचा रहे हो? तुम अल्लाह से क्षमा याचना क्यों नहीं करते? कदाचित तुमपर दया की जाए।

47. उन्होंने कहा : "हमने तुम्हें और तुम्हारे साथवालों को अपशकुन पाया है।" उसने कहा : "तुम्हारा शकुन-अपशकुन तो अल्लाह के पास है, बल्कि बात यह है कि तुम लोग आज़माए जा रहे हो।"

48. नगर में नौ जत्थेदार थे जो धरती में बिगाड़ पैदा करते थे, सुधार का काम नहीं करते थे।

49. वे आपस में अल्लाह की क़समें खाकर बोले : "हम अवश्य उसपर और उसके घरवालों पर रात को छापा मारेंगे। फिर उसके वली (परिजन) से कह देंगे कि हम उसके घरवालों के विनाश के अवसर पर मौजूद न थे। और हम बिलकुल सच्चे हैं।"

50. वे एक चाल चले और हमने भी एक चाल चली और उन्हें

1. अर्थात अपने पाँएँचे उठा लिए कि कहीं भीग न जाएँ।



مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝
فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝ اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۗءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ
مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ
وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَ
اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰي عِبَادِهِ الَّذِيْنَ
اصْطَفٰى ۭ ءٰۗاللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

ख़बर तक न हुई।

51. अब देख लो, उनकी चाल का कैसा परिणाम हुआ! हमने उन्हें और उनकी क़ौम——सबको विनष्ट करके रख दिया।

52. अब ये उनके घर उनके ज़ुल्म के कारण उजड़े पड़े हुए हैं। निश्चय ही इसमें एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो जानना चाहें।

53. और हमने उन लोगों को बचा लिया, जो ईमान लाए और डर रखते थे।

54. और लूत को भी भेजा, जब उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : "क्या तुम आँखों देखते हुए अश्लील कर्म करते हो?

55. क्या तुम स्त्रियों को छोड़कर अपनी काम-तृप्ति के लिए पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि बात यह है कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो।"

56. परन्तु उसकी क़ौम के लोगों का उत्तर इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा : "निकाल बाहर करो लूत के घरवालों को अपनी बस्ती से। ये लोग सुथराई को बहुत पसंद करते हैं!"

57. अन्ततः हमने उसे और उसके घरवालों को बचा लिया सिवाय उसकी स्त्री के। उसके लिए हमने नियत कर दिया था कि वह पीछे रह जानेवालों में से होगी।

58. और हमने उनपर एक बरसात बरसाई और वह बहुत ही बुरी बरसात थी उन लोगों के हक़ में, जिन्हें सचेत किया जा चुका था।

59. कहो : "प्रशंसा अल्लाह के लिए है और सलाम है उसके उन बन्दों पर जिन्हें उसने चुन लिया। क्या अल्लाह अच्छा है या वे जिन्हें वे साझी ठहरा रहे हैं?



60. (तुम्हारे पूज्य अच्छे हैं) या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और तुम्हारे लिए आकाश से पानी बरसाया; फिर उसके द्वारा हमने रमणीय उद्यान उगाए? तुम्हारे लिए सम्भव न था कि तुम उनके वृक्षों को उगाते। —क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु-पूज्य है? नहीं, बल्कि वही लोग मार्ग से हटकर चले जा रहे हैं!

61. या वह जिसने धरती को ठहरने का स्थान बनाया और उसके बीच-बीच में नदियाँ बहाईं और उसके लिए मज़बूत पहाड़ बनाए और दो समुद्रों के बीच एक रोक लगा दी। क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु पूज्य है? नहीं, उनमें से अधिकतर जानते ही नहीं!

62. या वह जो व्यग्र की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है और तुम्हें धरती में अधिकारी बनाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य-प्रभु है? तुम ध्यान थोड़े ही देते हो।

63. या वह जो थल और जल के अँधेरों में तुम्हारा मार्गदर्शन करता है और जो अपनी दयालुता[1] के आगे हवाओं को शुभ-सूचना बनाकर भेजता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु-पूज्य है? उच्च है अल्लाह, उस शिर्क से जो वे करते हैं।

64. या वह जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करता है, और जो तुमको आकाश और धरती से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु पूज्य है? कहो : "लाओ अपना प्रमाण, यदि तुम सच्चे हो।"

1. दयालुता से अभिप्रेत यहाँ वर्षा है।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا
اللّٰهُ ۭ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ ۣ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۣ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَاۗؤُنَآ اَىِٕنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ
اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا
الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ
لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ غَاۗىِٕبَةٍ
فِي السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِنَّ هٰذَا

65. कहो : "आकाशों और धरती में जो भी हैं, अल्लाह के सिवा किसी को भी परोक्ष का ज्ञान नहीं है। और न उन्हें इसकी चेतना प्राप्त है कि वे कब उठाए जाएँगे।"

66. बल्कि आख़िरत के विषय में उनका ज्ञान पक्का हो गया है[1], बल्कि ये उसकी ओर से कुछ संदेह में हैं, बल्कि वे उससे अंधे हैं।

67-68. जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि : "क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे और हमारे बाप-दादा भी, तो क्या वास्तव में हम (जीवित करके) निकाले जाएँगे? इसका वादा तो इससे पहले भी किया जा चुका है, हमसे भी और हमारे बाप-दादा से भी। ये तो बस पहले लोगों की कहानियाँ हैं।"

69. कहो कि : "धरती में चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का कैसा परिणाम हुआ।"

70-71. उनके प्रति शोकाकुल न हो और न उस चाल से दिल तंग हो, जो वे चल रहे हैं। वे कहते हैं : "यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो?"

72. कहो : "जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो बहुत सम्भव है कि उसका कोई हिस्सा तुम्हारे पीछे ही लगा हो।"

73. निश्चय ही तुम्हारा रब तो लोगों पर उदार अनुग्रह करनेवाला है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

74-75. निश्चय ही तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है, जो कुछ उनके सीने छिपाए हुए हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं। आकाश और धरती में छिपी कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो।

---

1. अर्थात उनके विचार में आख़िरत कदापि नहीं आएगी।

الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ
رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ
الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝
وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا
مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ
عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ
النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ
أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ
إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا
أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا
ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ

76. निस्संदेह यह क़ुरआन इसराईल की संतान को अधिकतर ऐसी बातें खोलकर सुनाता है जिनके विषय में उनमें मतभेद है।

77. और निस्संदेह यह तो ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।

78. निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच अपने हुक्म से फ़ैसला कर देगा। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ है।

79. अतः अल्लाह पर भरोसा रखो। निश्चय ही तुम स्पष्ट सत्य पर हो।

80-81. तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ देकर फिरे भी जा रहे हों। और न तुम अन्धों को उनकी गुमराही से हटाकर राह पर ला सकते हो। तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाना चाहें। अतः वही आज्ञाकारी होते हैं।

82. और जब उनपर बात पूरी हो जाएगी, तो हम उनके लिए धरती का प्राणी सामने लाएँगे जो उनसे बातें करेगा कि "लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे।"

83. और जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय में से एक गिरोह, ऐसे लोगों का जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं, घेर लाएँगे। फिर उनकी दर्जाबन्दी की जाएगी।

84. यहाँ तक कि जब वे आ जाएँगे तो वह कहेगा : "क्या तुमने मेरी आयतों को झुठलाया, हालाँकि अपने ज्ञान से तुम उनपर हावी न थे या फिर तुम क्या करते थे?"

85. और बात उनपर पूरी होकर रहेगी, इसलिए कि उन्होंने ज़ुल्म किया। अतः वे कुछ बोल न सकेंगे।



86. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने रात को (अँधेरी) बनाया, ताकि वे उसमें शान्ति और चैन प्राप्त करें। और दिन को प्रकाशमान बनाया (कि उसमें काम करें)? निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान ले आएँ।

87. और ख़याल करो जिस दिन सूर (नरसिंघा) में फूँक मारी जाएगी और जो आकाशों और धरती में हैं, घबरा उठेंगे, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे—— और सब कान दबाए उसके समक्ष उपस्थित हो जाएँगे।

88. और तुम पहाड़ों को देखकर समझते हो कि वे जमे हुए हैं, हालाँकि वे चल रहे होंगे, जिस प्रकार बादल चलते हैं। यह अल्लाह की कारीगरी है, जिसने हर चीज़ को सुदृढ़ किया। निस्संदेह वह उसकी ख़बर रखता है, जो कुछ तुम करते हो।

89. जो कोई सुचरित लेकर आया उसको उससे भी अच्छा प्राप्त होगा; और ऐसे लोग घबराहट से उस दिन निश्चिन्त होंगे।

90. और जो कुचरित लेकर आया तो ऐसे लोगों के मुँह आग में औंधे होंगे। (और उनसे कहा जाएगा :) "क्या तुम उसके सिवा किसी और चीज़ का बदला पा रहे हो, जो तुम करते रहे हो?"

91. मुझे तो बस यही आदेश मिला है कि इस नगर (मक्का) के रब की बन्दगी करूँ, जिसने इसे आदरणीय ठहराया और उसी की हर चीज़ है। और मुझे आदेश मिला है कि मैं आज्ञाकारी बनकर रहूँ।

92. और यह कि क़ुरआन पढ़कर सुनाऊँ। अब जिस किसी ने संमार्ग ग्रहण किया वह अपने ही लिए संमार्ग ग्रहण करेगा। और जो पथभ्रष्ट रहा तो कह दो : "मैं तो बस एक सचेत करनेवाला ही हूँ।"


آيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓمّٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ نَتْلُوْا عَلَيْكَ
مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا
يَّسْتَضْعِفُ طَاۗىِٕفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَاۗءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَاۗءَهُمْ
اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَي
الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَىِٕمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ
الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ
وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝ وَ
اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ
عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا

93. और कहो : "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है। जल्द ही वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा देगा और तुम उन्हें पहचान लोगे। और तेरा रब उससे बेख़बर नहीं है, जो कुछ तुम सब कर रहे हो।"

28. अल-क़सस

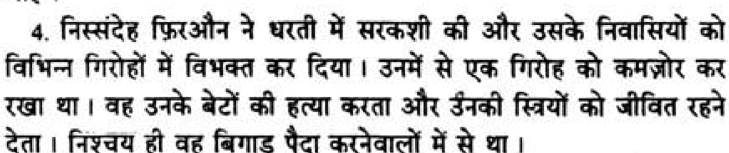
(मक्का में उतरी— आयतें 88)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ता० सीन० मीम०।

2. (जो आयतें अवतरित हो रही हैं) वे स्पष्ट किताब की आयतें हैं।

3. हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन का कुछ वृत्तान्त ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाना चाहें।



4. निस्संदेह फ़िरऔन ने धरती में सरकशी की और उसके निवासियों को विभिन्न गिरोहों में विभक्त कर दिया। उनमें से एक गिरोह को कमज़ोर कर रखा था। वह उनके बेटों की हत्या करता और उनकी स्त्रियों को जीवित रहने देता। निश्चय ही वह बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था।

5. और हम यह चाहते थे कि उन लोगों पर उपकार करें, जो धरती में कमज़ोर पड़े थे और उन्हें नायक बनाएँ और उन्हीं को वारिस बनाएँ।

6. और धरती में उन्हें सत्ताधिकार प्रदान करें और उनकी ओर से फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को वह कुछ दिखाएँ, जिसकी उन्हें आशंका थी।

7. हमने मूसा की माँ को संकेत किया कि : "उसे दूध पिला। फिर जब तुझे उसके विषय में भय हो, तो उसे दरिया में डाल दे और न तुझे कोई भय हो और



न तू शोकाकुल हो। हम उसे तेरे पास लौटा लाएँगे और उसे रसूल बनाएँगे।"

8. अन्ततः फ़िरऔन के लोगों ने उसे उठा लिया, ताकि परिणाम-स्वरूप वह उनका शत्रु और उनके लिए दुख बने। निश्चय ही फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं से बड़ी चूक हुई।

9. फ़िरऔन की स्त्री ने कहा कि : "यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठंडक है। इसकी हत्या न करो, कदाचित यह हमें लाभ पहुँचाए या हम इसे अपना बेटा ही बना लें।" और वे (परिणाम से) बेख़बर थे।

10. और मूसा की माँ का हृदय विचलित हो गया। निकट था कि वह उसको प्रकट कर देती, यदि हम उसके दिल को इस ध्येय से न सँभालते कि वह मोमिनों में से हो।

11. उसने उसकी बहन से कहा कि : "तू उसके पीछे-पीछे जा।" अतएव वह उसे दूर ही दूर से देखती रही और वे महसूस नहीं कर रहे थे।

12. हमने पहले ही से दूध पिलानेवालियों को उसपर हराम कर दिया।[1] अतः उसने (मूसा की बहन ने) कहा कि : "क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इसके पालन-पोषण का ज़िम्मा लें और इसके शुभ-चिंतक हों?"

13. इस प्रकार हम उसे उसकी माँ के पास लौटा लाए, ताकि उसकी आँख ठंडी हो और वह शोकाकुल न हो और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

1. अर्थात मूसा ने किसी औरत का दूध न पिया।

آتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۗ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَ
دَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ
فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ
عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ
عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنْ
عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ۭ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ
اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ۝ فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ
خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ
يَسْتَصْرِخُهٗ ۭ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝
فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ
قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

14. और जब वह अपनी जवानी को पहुँचा और भरपूर हो गया, तो हमने उसे निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया। और सुकर्मी लोगों को हम इसी प्रकार बदला देते हैं।

15. उसने नगर में ऐसे समय प्रवेश किया जबकि वहाँ के लोग बेख़बर थे। उसने वहाँ दो आदमियों को लड़ते पाया। यह उसके अपने गिरोह का था और यह उसके शत्रुओं में से था। जो उसके गिरोह में से था उसने उसके मुक़ाबले में, जो उसके शत्रुओं में से था, सहायता के लिए उसे पुकारा। मूसा ने उसे घूँसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया। कहा : "यह शैतान की कार्यवाई है। निश्चय ही वह खुला पथभ्रष्ट करनेवाला शत्रु है।"

16. उसने कहा : "ऐ मेरे रब, मैंने अपने आपपर ज़ुल्म किया। अतः तू मुझे क्षमा कर दे।" अतएव उसने उसे क्षमा कर दिया। निश्चय ही वही बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

17. उसने कहा : "ऐ मेरे रब! जैसे तूने मुझपर अनुकम्पा दर्शाई है, अब मैं भी कभी अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा।"

18. फिर दूसरे दिन वह नगर में डरता, टोह लेता हुआ प्रविष्ट हुआ। इतने में अचानक क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिसने कल उससे सहायता चाही थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा : "तू तो प्रत्यक्ष बहका हुआ व्यक्ति है।"

19. फिर जब उसने इरादा किया कि उस व्यक्ति को पकड़े, जो उन दोनों का शत्रु था, तो वह बोल उठा : "ऐ मूसा, क्या तू चाहता है कि मुझे मार डाले,

بِالْأَمْسِ إِن تُرِيدُ إِلَّا أَن تَكُونَ جَبَّارًا فِي
الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَن تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ
رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ
الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ
النَّاصِحِينَ ۝ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي
مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ
عَسَىٰ رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ وَلَمَّا وَرَدَ
مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَ
وَجَدَ مِن دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا
قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرِّعَاءُ وَأَبُونَا شَيْخٌ
كَبِيرٌ ۝ فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ
إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝ فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا
تَمْشِي عَلَى اسْتِحْيَاءٍ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ

जिस प्रकार तूने कल एक व्यक्ति को मार डाला? धरती में बस तू निर्दय अत्याचारी बनकर रहना चाहता है और यह नहीं चाहता कि सुधार करनेवाला हो।"

20. इसके पश्चात एक आदमी नगर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया। उसने कहा : "ऐ मूसा, सरदार तेरे विषय में परामर्श कर रहे हैं कि तुझे मार डालें। अतः तू निकल जा! मैं तेरा हितैषी हूँ।"

21. फिर वह वहाँ से डरता और खतरा भाँपता हुआ निकल खड़ा हुआ। उसने कहा : "ऐ मेरे रब! मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे।"

22. जब उसने मदयन का रुख किया तो कहा : "आशा है, मेरा रब मुझे ठीक रास्ते पर डाल देगा।"

23. और जब वह मदयन के पानी पर पहुँचा तो उसने उसपर पानी पिलाते लोगों का एक गिरोह पाया। और उनसे हटकर एक ओर दो स्त्रियों को पाया, जो अपने जानवरों को रोक रही थीं। उसने कहा : "तुम्हारा क्या मामला है?" उन्होंने कहा : "हम उस समय तक पानी नहीं पिला सकते, जब तक ये चरवाहे अपने जानवर निकाल न ले जाएँ, और हमारे बाप बहुत ही बूढ़े हैं।"

24. तब उसने उन दोनों के लिए पानी पिला दिया। फिर छाया की ओर पलट गया और कहा : "ऐ मेरे रब, जो भलाई भी तू मेरी ओर उतार दे, मैं उसका ज़रूरतमंद हूँ।"

25. फिर उन दोनों में से एक लजाती हुई उसके पास आई। उसने कहा : "मेरे बाप आपको बुला रहे हैं, ताकि आपने हमारे लिए (जानवरों को) जो पानी

أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۚ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ
الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ
قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ مَنِ
اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ
إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَىٰ أَن تَأْجُرَنِي ثَمَانِيَ حِجَجٍ ۖ
فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِندِكَ ۖ وَمَا أُرِيدُ أَنْ
أَشُقَّ عَلَيْكَ ۚ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ
قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ
فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ
فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ
مِن جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي
آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ
مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِن

पिलाया है, उसका बदला आपको दें।" फिर जब वह उसके पास पहुँचा और उसे अपने सारे वृत्तान्त सुनाए तो उसने कहा : "कुछ भय न करो। तुम ज़ालिम लोगों से छुटकारा पा गए हो।"

26. उन दोनों स्त्रियों में से एक ने कहा : "ऐ मेरे बाप! इसको मज़दूरी पर रख लीजिए। अच्छा व्यक्ति, जिसे आप मज़दूरी पर रखें, वही है जो बलवान, अमानतदार हो।"

27. उसने कहा : "मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का विवाह तुम्हारे साथ इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ वर्ष तक मेरे यहाँ नौकरी करो। और यदि तुम दस वर्ष पूरे कर दो, तो यह तुम्हारी ओर से होगा। मैं तुम्हें कठिनाई में डालना नहीं चाहता। यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक पाओगे।"

28. कहा : "यह मेरे और आपके बीच निश्चय हो चुका। इन दोनों अवधियों में से जो भी मैं पूरी कर दूँ, तो मुझपर कोई ज़्यादती नहीं होगी। और जो कुछ हम कह रहे हैं, उसके विषय में अल्लाह पर भरोसा काफ़ी है।"

29. फिर जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी और अपने घरवालों को लेकर चला तो तूर की ओर उसने एक आग-सी देखी। उसने अपने घरवालों से कहा : "ठहरो, मैंने एक आग का अवलोकन किया है। कदाचित मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर ले आऊँ या उस आग से कोई अंगारा ही, ताकि तुम ताप सको।"

30. फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो दाहिनी घाटी के किनारे से शुभ क्षेत्र में वृक्ष



से आवाज़ आई : "ऐ मूसा ! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब !"

31. और यह कि[1] "डाल दे अपनी लाठी।" फिर जब उसने उसे देखा कि वह बल खा रही है, जैसे कोई साँप हो तो वह पीठ फेरकर भागा और पीछे मुड़कर भी न देखा। "ऐ मूसा ! आगे आ और भय न कर। निस्संदेह तेरे लिए कोई भय की बात नहीं।

32. अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल। बिना किसी ख़राबी के चमकता हुआ निकलेगा। और भय के समय अपनी भुजा को अपने से मिलाए रख[2]। ये दो निशानियाँ हैं तेरे रब की ओर से फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास लेकर जाने के लिए। निश्चय ही वे बड़े अवज्ञाकारी लोग हैं।"[3]

33. उसने कहा : "ऐ मेरे रब ! मुझसे उनके एक आदमी की जान गई है। इसलिए मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे।

34. मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे बढ़कर धाराप्रवाह है। अत: उसे मेरे साथ सहायक के रूप में भेज कि वह मेरी पुष्टि करे। मुझे भय है कि वे मुझे झुठलाएँगे।"

35. कहा : "हम तेरे भाई के द्वारा तेरी भुजा मज़बूत करेंगे, और तुम दोनों को एक ओज प्रदान करेंगे कि वे फिर तुम तक न पहुँच सकेंगे। हमारी

1. और यह आवाज़ भी आई।
2. अर्थात बिलकुल निश्चिन्त रह, जैसे पक्षी निश्चिन्त अवस्था में अपने परों को समेटे रखता है।
3. अर्थात उन्हें उनकी अवज्ञा के बुरे परिणाम से डरा।

الْغٰلِبُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ
قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا
فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ
بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ
فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا
لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ
اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَتْبَعْنٰهُمْ

निशानियों के कारण तुम दोनों और जो तुम्हारे अनुयायी होंगे वे ही प्रभावी होंगे।"

36. फिर जब मूसा उनके पास हमारी खुली-खुली निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने कहा : "यह तो बस घड़ा हुआ जादू है। हमने तो यह बात अपने अगले बाप-दादा में कभी सुनी ही नहीं।"

37. मूसा ने कहा : "मेरा रब उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो उसके यहाँ से मार्गदर्शन लेकर आया है, और उसको भी जिसके लिए अंतिम घर है। निश्चय ही ज़ालिम सफल नहीं होते।"

38. फ़िरऔन ने कहा : "ऐ दरबारवालो, मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी प्रभु को नहीं जानता। अच्छा तो ऐ हामान ! तू मेरे लिए ईंटें आग में पकवा। फिर मेरे लिए एक ऊँचा महल बना कि मैं मूसा के प्रभु को झाँक आऊँ। मैं तो उसे झूठा समझता हूँ।"

39. उसने और उसकी सेनाओं ने धरती में नाहक़ घमण्ड किया और समझा कि उन्हें हमारी ओर लौटना नहीं है।

40. अन्ततः हमने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें गहरे पानी में फेंक दिया। अब देख लो कि ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ।

41. और हमने उन्हें आग की ओर बुलानेवाले पेशवा बना दिया और क़ियामत के दिन उन्हें कोई सहायता प्राप्त न होगी।

---

1. यह बात उसने परिहास के रूप में कही। उसने यह न जाना कि वास्तव में मूसा के साथ ही वह परिहास नहीं कर रहा है, बल्कि यह अल्लाह की प्रतिष्ठा के प्रति ऐसी धृष्टता है, जिसका दण्ड उसे अवश्य मिलेगा।

فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ
الْمَقْبُوْحِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ
مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى
وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ
الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ
الشّٰهِدِيْنَ ۝ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝ وَمَا كُنْتَ
بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ
لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ
اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

42. और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन वही बदहाल होंगे।

43. और अगली नस्लों को विनष्ट कर देने के पश्चात हमने मूसा को किताब प्रदान की, लोगों के लिए अन्तर्दृष्टियों की सामग्री, मार्गदर्शन और दयालुता बनाकर, ताकि वे ध्यान दें।

44. तुम तो (नगर के) पश्चिमी किनारे पर नहीं थे, जब हमने मूसा को बात की निर्णित सूचना दी थी, और न तुम गवाहों में से थे।

45. लेकिन हमने बहुत-सी नस्लें उठाईं और उनपर बहुत समय बीत गया। और न तुम मदयनवालों में रहते थे कि उन्हें हमारी आयतें सुना रहे होते, किन्तु रसूलों को भेजनेवाले हम ही रहे हैं।

46. और तुम तूर के अंचल में भी उपस्थित न थे जब हमने पुकारा था, किन्तु यह तुम्हारे रब की दयालुता है—— ताकि तुम ऐसे लोगों को सचेत कर दो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करनेवाला नहीं आया, ताकि वे ध्यान दें।

47. (हम रसूल बनाकर न भेजते) यदि यह बात न होती कि जो कुछ उनके हाथ आगे भेज चुके हैं उसके कारण जब उनपर कोई मुसीबत आए तो वे कहने लगें : "ऐ हमारे रब, तूने क्यों न हमारी ओर कोई रसूल भेजा कि हम तेरी आयतों का (अनुसरण) करते और मोमिन होते?"

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ
مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۚ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ
مِنْ قَبْلُ ۖ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا إِنَّا بِكُلٍّ
كَافِرُونَ ۝ قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ
أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبِعْهُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِنْ لَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَمَنْ
أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِنَ اللَّهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ
وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا يُتْلَىٰ
عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا
مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ
بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا

48. फिर जब उनके पास हमारे यहाँ से सत्य आ गया तो वे कहने लगे कि : "जो चीज़[1] मूसा को मिली थी उसी तरह की चीज़ इसे क्यों न मिली?" क्या वे उसका इनकार नहीं कर चुके हैं, जो इससे पहले मूसा को प्रदान किया गया था? उन्होंने कहा : "दोनों जादू हैं[2] जो एक-दूसरे की सहायता करते हैं।" और कहा : "हम तो हरेक का इनकार करते हैं।"

49. कहो : "अच्छा तो लाओ अल्लाह के यहाँ से कोई ऐसी किताब, जो इन दोनों से बढ़कर मार्गदर्शन करनेवाली हो कि मैं उसका अनुसरण करूँ, यदि तुम सच्चे हो?"

50. अब यदि वे तुम्हारी माँग पूरी न करें तो जान लो कि वे केवल अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं। और उस व्यक्ति से बढ़कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह की ओर से किसी मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा पर चले? निश्चय ही अल्लाह ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

51. और हम उनके लिए वाणी बराबर अवतरित करते रहे, शायद वे ध्यान दें।

52. जिन लोगों को हमने इससे पूर्व किताब दी थी, वे इसपर ईमान लाते हैं।

53. और जब यह उनको पढ़कर सुनाया जाता है तो वे कहते हैं : "हम इसपर ईमान लाए। निश्चय ही यह सत्य है हमारे रब की ओर से। हम तो इससे पहले ही से मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।"

54. ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रतिदान दुगना दिया जाएगा, क्योंकि वे जमे रहे और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी हमने उन्हें दी

---

1. अर्थात चमत्कार। 2. अर्थात तौरैत और क़ुरआन।

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا
عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۡ سَلٰمٌ
عَلَيْكُمْ ۡ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ۝ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ
اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ
اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ
نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ۭ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا
يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ
قَرْيَةٍۢ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ
مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۭ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ
اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي
الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ

है, उसमें से ख़र्च करते हैं।

55. और जब वे व्यर्थ बात सुनते हैं तो यह कहते हुए उससे किनारा खींच लेते हैं कि : "हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म हैं। तुमको सलाम है ! जाहिलों को हम नहीं चाहते।"

56. तुम जिसे चाहो राह पर नहीं ला सकते, किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है राह दिखाता है, और वही राह पानेवालों को भली-भाँति जानता है।

57. वे कहते हैं : "यदि हम तुम्हारे साथ इस मार्गदर्शन का अनुसरण करें तो अपने भू-भाग से उचक लिए जाएँगे।" क्या ख़तरों से सुरक्षित हरम[1] में हमने उन्हें ठिकाना नहीं दिया, जिसकी ओर हमारी ओर से रोज़ी के रूप में हर चीज़ की पैदावार खिंची चली आती है? किन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं।

58. हमने कितनी ही बस्तियों को विनष्ट कर डाला, जिन्होंने अपनी गुज़र-बसर के संसाधन पर इतराते हुए अकृतज्ञता दिखाई। तो वे हैं उनके घर, जो उनके बाद आबाद थोड़े ही हुए। अन्ततः हम ही वारिस हुए।

59. तेरा रब तो बस्तियों को विनष्ट करनेवाला नहीं जब तक कि उनकी केन्द्रीय बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, जो उन्हें हमारी आयतें सुनाए। और हम बस्तियों को विनष्ट करनेवाले नहीं सिवाय इस स्थिति के कि वहाँ के रहनेवाले ज़ालिम हों।

60. जो चीज़ भी तुम्हें प्रदान की गई है वह तो सांसारिक जीवन की सामग्री

1. अर्थात मक्का का आदरणीय अधिक्षेत्र।



और उसकी शोभा है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और शेष रहनेवाला है, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

61. भला वह व्यक्ति जिससे हमने अच्छा वादा किया है और वह उसे पानेवाला भी हो, वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिसे हमने सांसारिक जीवन की सामग्री दे दी हो, फिर वह क़ियामत के दिन पकड़कर पेश किया जानेवाला हो?

62. ख़याल करो, जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा : "कहाँ है मेरे वे साझीदार जिनका तुम्हें दावा था?"

63. जिनपर बात पूरी हो चुकी होगी, वे कहेंगे : "ऐ हमारे रब! ये वे लोग हैं जिन्हें हमने बहका दिया था। जैसे हम स्वयं बहके थे, इन्हें भी बहकाया। हमने तेरे आगे स्पष्ट कर दिया कि इनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। ये हमारी बन्दगी तो करते नहीं थे?"[1]

64. कहा जाएगा : "पुकारो, अपने ठहराए हुए साझीदारों को!" तो वे उन्हें पुकारेंगे, किन्तु वे उनको कोई उत्तर न देंगे। और वे यातना देखकर रहेंगे। काश, वे मार्ग पानेवाले होते!

65. और ख़याल करो, जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा : "तुमने रसूलों को क्या उत्तर दिया था?"

66. उस दिन उन्हें बातें न सूझेंगी, फिर वे आपस में भी पूछताछ न करेंगे।

67. अलबत्ता जिस किसी ने तौबा कर ली और वह ईमान ले आया और अच्छा कर्म किया, तो आशा है कि वह सफल होनेवालों में से होगा।

---

1. अर्थात ये तो गुमराह अपनी इच्छा से हुए, हमने इसके लिए इन्हें विवश नहीं किया था।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ
الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝
وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝
وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَ
الْاٰخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ قُلْ
اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ۖ اَفَلَا
تَسْمَعُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ
النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ
يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ۖ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝
وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا
فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

68. तेरा रब पैदा करता है जो कुछ चाहता है और ग्रहण करता है जो चाहता है। उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं। अल्लाह महान और उच्च है उस शिर्क से, जो वे करते हैं।

69. और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छिपाते हैं और जो कुछ वे लोग व्यक्त करते हैं।

70. और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। सारी प्रशंसा उसी के लिए है पहले और पिछले जीवन में[1] फ़ैसले का अधिकार उसी को है और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे।

71. कहो : "क्या तुमने विचार किया कि यदि अल्लाह क़ियामत के दिन तक सदैव के लिए तुमपर रात कर दे तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन इष्ट-पूज्य है जो तुम्हारे पास प्रकाश लाए? तो क्या तुम सुनते नहीं?"

72. कहो : "क्या तुमने विचार किया? यदि अल्लाह क़ियामत के दिन तक सदैव के लिए तुमपर दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन इष्ट-पूज्य है जो तुम्हारे लिए रात लाए जिसमें तुम आराम पाते हो? तो क्या तुम देखते नहीं?

73. उसने अपनी दयालुता से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए, ताकि तुम उसमें (रात में) आराम पाओ और ताकि तुम (दिन में) उसका अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ।"

74. ख़याल करो, जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा : "कहाँ हैं मेरे

1. अर्थात दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا
فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَ
ضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ إِنَّ قَارُونَ
كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ
مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ
أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۝ وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ
الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا تَنسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا
وَأَحْسِن كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ
فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝ قَالَ
إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ
اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ
أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ

वे साझीदार, जिनका तुम्हें दावा था?"

75. और हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह निकाल लाएँगे[1] और कहेंगे : "लाओ अपना प्रमाण।" तब वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह की ओर से है और जो कुछ वे घड़ते थे, वह सब उनसे गुम होकर रह जाएगा।

76. निश्चय ही क़ारून मूसा की क़ौम में से था, फिर उसने उनके विरुद्ध सिर उठाया और हमने उसे इतने ख़ज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियाँ एक बलशाली दल को भारी पड़ती थीं। जब उससे उसकी क़ौम के लोगों ने कहा : "इतरा मत, अल्लाह इतरानेवालों को पसन्द नहीं करता।

77. जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता।"

78. उसने कहा : "मुझे तो यह मेरे अपने व्यक्तिगत ज्ञान के कारण मिला है।" क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुका है जो शक्ति में उससे बढ़-चढ़कर और बाहुल्य में उससे

1. अर्थात इनकार और शिर्क में जो उनका अगुआ रहा होगा उसे अल्लाह के सामने पेश होना पड़ेगा।

عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ۝ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ
فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ
عَظِيمٍ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ
ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا
يُلَقَّاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ
الْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ۝
وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ
وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ
بِنَا ۖ وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ تِلْكَ الدَّارُ
الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي

अधिक थीं? अपराधियों से तो (उनकी तबाही के समय) उनके गुनाहों के विषय में पूछा भी नहीं जाता।

79. फिर वह अपनी क़ौम के सामने अपने ठाठ-बाट में निकला। जो लोग सांसारिक जीवन के चाहनेवाले थे, उन्होंने कहा : "क्या ही अच्छा होता जैसा कुछ क़ारून को मिला है, हमें भी मिला होता! वह तो बड़ा भाग्यशाली है।"

80. किन्तु जिनको ज्ञान प्राप्त था, उन्होंने कहा : "अफ़सोस तुमपर! अल्लाह का प्रतिदान उत्तम है, उस व्यक्ति के लिए जो ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, और यह बात उन्हीं के दिलों में पड़ती है जो धैर्यवान होते हैं।"

81. अन्ततः हमने उसको और उसके घर को धरती में धँसा दिया। और कोई ऐसा गिरोह न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी सहायता करता, और न वह स्वयं अपना बचाव कर सका।

82. अब वही लोग, जो कल उसके पद की कामना कर रहे थे, कहने लगे : "अफ़सोस हम भूल गए थे कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा करता है और जिसे चाहता है नपी-तुली देता है। यदि अल्लाह ने हमपर उपकार न किया होता तो हमें भी धँसा देता। अफ़सोस हम भूल गए थे कि इनकार करनेवाले सफल नहीं हुआ करते।"

83. आख़िरत का घर हम उन लोगों के लिए ख़ास कर देंगे जो न तो धरती

में अपनी बड़ाई चाहते हैं और न बिगाड़। परिणाम तो अन्ततः डर रखनेवालों के पक्ष में है।

84. जो कोई अच्छा आचरण लेकर आया उसे उससे उत्तम प्राप्त होगा, और जो बुरा आचरण लेकर आया तो बुराइयाँ करनेवालों को तो बस वही मिलेगा जो वे करते थे।

85. जिसने इस क़ुरआन की ज़िम्मेदारी तुमपर डाली है, वह तुम्हें उसके (अच्छे) अंजाम तक ज़रूर पहुँचाएगा। कहो : "मेरा रब उसे भली-भाँति जानता है जो मार्गदर्शन लेकर आया, और उसे भी जो खुली गुमराही में पड़ा है।"

الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝
مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ
جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ
اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ
عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ۚ قُلْ رَّبِّيْٓ
اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ۝ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ
الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا
لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ
اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ۗ
لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

86. तुम तो इसकी आशा नहीं रखते थे कि तुम्हारी ओर किताब उतारी जाएगी। इसकी संभावना तो केवल तुम्हारे रब की दयालुता के कारण हुई। अतः तुम इनकार करनेवालों के पृष्ठपोषक न बनो।

87. और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोक न पाएँ, इसके पश्चात कि वे तुमपर अवतरित हो चुकी हैं। और अपने रब की ओर बुलाओ और बहुदेववादियों में कदापि सम्मिलित न होना।

88. और अल्लाह के साथ किसी और इष्ट-पूज्य को न पुकारना। उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। हर चीज़ नाशवान है सिवाय उसके स्वरूप के। फ़ैसला और आदेश का अधिकार उसी को प्राप्त है और उसी की ओर तुम सबको लौटकर जाना है।



29. अल-अनकबूत

(मक्का में उतरी— आयतें 69)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम०।

2. क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएँगे कि "हम ईमान लाए", और उनकी परीक्षा न की जाएगी?

3. हालाँकि हम उन लोगों की परीक्षा कर चुके हैं जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। अल्लाह तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा[1], जो सच्चे हैं। और वह झूठों को भी मालूम करके रहेगा।

4. या उन लोगों ने, जो बुरे कर्म करते हैं, यह समझ रखा है कि वे हमारे क़ाबू से बाहर निकल जाएँगे? बहुत बुरा है जो फ़ैसला वे कर रहे हैं।

5. जो व्यक्ति अल्लाह से मिलने की आशा रखता है तो अल्लाह का नियत समय तो आने ही वाला है। और वह सब कुछ सुनता, जानता है।

6. और जो व्यक्ति (अल्लाह के मार्ग में) संघर्ष करता है वह तो स्वयं अपने ही लिए संघर्ष करता है। निश्चय ही अल्लाह सारे संसार से निस्पृह है।

7. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए हम उनसे उनकी बुराइयों को दूर कर देंगे और उन्हें अवश्य ही उसका प्रतिदान प्रदान करेंगे, जो कुछ अच्छे कर्म वे करते रहे होंगे।

8. और हमने मनुष्य को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है। किन्तु यदि वे तुझपर ज़ोर डालें कि तू किसी ऐसी चीज़ को मेरा

1. अर्थात उन्हें ज़ाहिर करके रहेगा।

امن خلق ٢٠ العنكبوت ٢٩

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِی الصّٰلِحِیْنَ ﴿٩﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِیَ فِی اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ
كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَیَقُوْلُنَّ
اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَیْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِیْ صُدُوْرِ
الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٠﴾ وَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَلَیَعْلَمَنَّ
الْمُنٰفِقِیْنَ ﴿١١﴾ وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا
اتَّبِعُوْا سَبِیْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰیٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِیْنَ
مِنْ خَطٰیٰهُمْ مِّنْ شَیْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَیَحْمِلُنَّ
اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ؗ وَلَیُسْـَٔلُنَّ یَوْمَ
الْقِیٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا
اِلٰی قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِیْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِیْنَ عَامًا

منزل ٥

साझी ठहराए जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मान। मेरी ही ओर तुम सबको पलटकर आना है, फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।

9. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए हम उन्हें अवश्य अच्छे लोगों में सम्मिलित करेंगे।

10. लोगों में ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि "हम अल्लाह पर ईमान लाए", किन्तु जब अल्लाह के मामले में वे सताए गए तो उन्होंने लोगों की ओर से आई हुई आज़माइश को अल्लाह की यातना जैसी समझ लिया। अब यदि तेरे रब की ओर से सहायता पहुँच गई तो कहेंगे : "हम तो तुम्हारे साथ थे।" क्या जो कुछ दुनियावालों के सीनों में है उसे अल्लाह भली-भाँति नहीं जानता?

11. अल्लाह तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा जो ईमान लाए, और वह कपटाचारियों को भी मालूम करके रहेगा।

12. और इनकार करनेवाले ईमान लानेवालों से कहते हैं : "तुम हमारे मार्ग पर चलो, हम तुम्हारी ख़ताओं का बोझ उठा लेंगे।" हालाँकि वे उनकी ख़ताओं में से कुछ भी उठानेवाले नहीं हैं। वे निश्चय ही झूठे हैं।

13. हाँ, अवश्य वे अपने बोझ भी उठाएँगे और अपने बोझों के साथ और बहुत-से बोझ भी। और क़ियामत के दिन अवश्य उनसे उसके विषय में पूछा जाएगा जो कुछ झूठ वे घड़ते रहे होंगे।

14. हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा। और वह पचास साल कम एक हज़ार वर्ष उनके बीच रहा। अन्ततः उनको तूफ़ान ने इस दशा में आ

فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝ فَأَنجَيْنَاهُ وَ
أَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَإِبْرَاهِيمَ
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۖ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن
دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ
الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
وَإِن تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى
الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ
يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى
اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ
بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ
اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ

पकड़ा कि वे अत्याचारी थे।

15. फिर उसको और नौकावालों को हमने बचा लिया और उसे सारे संसार के लिए एक निशानी बना दिया।

16. और इबराहीम को भी भेजा, जबकि उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि : "अल्लाह की बन्दगी करो और उसका डर रखो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम जानो।

17. तुम तो अल्लाह से हटकर बस मूर्तियों को पूज रहे हो और झूठ घढ़ रहे हो। तुम अल्लाह से हटकर जिनको पूजते हो वे तुम्हारे लिए रोज़ी का भी अधिकार नहीं रखते। अत: तुम अल्लाह ही के यहाँ रोज़ी तलाश करो और उसी की बन्दगी करो और उसके आभारी बनो। तुम्हें उसी की ओर लौटकर जाना है।

18. और यदि तुम झुठलाते हो तो तुमसे पहले कितने ही समुदाय झुठला चुके हैं। रसूल पर तो बस केवल स्पष्ट रूप से (सत्य संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।"——

19. क्या उन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह किस प्रकार पैदाइश का आरम्भ करता है और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है? निस्संदेह यह अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।

20. कहो कि : "धरती में चलो-फिरो और देखो कि उसने किस प्रकार पैदाइश का आरम्भ किया। फिर अल्लाह पश्चात्वर्ती उठान उठाएगा। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

21. वह जिसे चाहे यातना दे और जिसपर चाहे दया करे। और उसी की

وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ۝ وَمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ
اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ
النَّارِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَقَالَ
اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ
بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ
بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ
النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ
وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا

ओर तुम्हें पलटकर जाना है।"

22. तुम न तो धरती में क़ाबू से बाहर निकल सकते हो और न आकाश में। और अल्लाह से हटकर न तो तुम्हारा कोई मित्र है और न सहायक।

23. और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों और उससे मिलने का इनकार किया, वही लोग हैं जो मेरी दयालुता से निराश हुए और वही हैं जिनके लिए दुखद यातना है।——

24. फिर उसकी क़ौम के लोगों का उत्तर इसके सिवा और कुछ न था कि उन्होंने कहा, "मार डालो उसे या जला दो उसे!" अंततः अल्लाह ने उसको आग से बचा लिया। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान लाएँ।

25. और उसने कहा कि : "अल्लाह से हटकर तुमने कुछ मूर्तियों को केवल सांसारिक जीवन में अपने पारस्परिक प्रेम के कारण पकड़ रखा है। फिर क़ियामत के दिन तुममें से एक-दूसरे का इनकार करेगा और तुममें से एक-दूसरे पर लानत करेगा। तुम्हारा ठौर-ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई सहायक न होगा।"

26. फिर लूत ने उसकी बात मानी और उसने[1] कहा : "निस्संदेह मैं अपने रब की ओर हिजरत करता हूँ।[2] निस्संदेह वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।"

27. और हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए और उसकी संतति में

1. अर्थात इबराहीम (अलै०)।
2. अर्थात अपने रब के लिए घरबार छोड़ता हूँ।



नुबूवत (पैग़म्बरी) और किताब का सिलसिला जारी किया और हमने उसे संसार में भी उसका अच्छा प्रतिदान प्रदान किया। और निश्चय ही वह आख़िरत में अच्छे लोगों में से होगा।

28. और हमने लूत को भेजा, जबकि उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, "तुम तो वह अश्लील कर्म करते हो, जिसे तुमसे पहले सारे संसार में किसी ने नहीं किया।

29. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो और बटमारी करते हो[1], और अपनी मजलिस में बुरा कर्म करते हो?" फिर उसकी क़ौम के लोगों का उत्तर बस यही था कि उन्होंने कहा, "ले आ हमपर अल्लाह की यातना, यदि तू सच्चा है।"

30. उसने कहा, "ऐ मेरे रब! बिगाड़ पैदा करनेवाले लोगों के मुक़ाबले में मेरी सहायता कर।"

31. हमारे भेजे हुए जब इबराहीम के पास शुभ सूचना लेकर आए तो उन्होंने कहा, "हम इस बस्ती के लोगों को विनष्ट करनेवाले हैं। निस्संदेह इस बस्ती के लोग ज़ालिम हैं।"

32. उसने कहा, "वहाँ तो लूत मौजूद है।" वे बोले, "जो कोई भी वहाँ है, हम भली-भाँति जानते हैं। हम उसको और उसके घरवालों को बचा लेंगे, सिवाय उसकी स्त्री के। वह पीछे रह जानेवालों में से है।"

1. अर्थात प्रकृति के मार्ग को छोड़ रहे हो। प्रकृति की मंशा के ख़िलाफ़ चलकर तुम तबाही से बच नहीं सकते।

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ
قَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۗ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ
إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلٰٓى
أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ۝ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُونَ ۝ وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا
فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا
تَعْثَوْا فِى الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ
الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِى دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝ وَعَادًا وَّثَمُودَا۟
وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۗ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَ
كَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝ وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَ
هَامٰنَ ۗ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوسٰى بِالْبَيِّنٰتِ

33. जब यह हुआ कि हमारे भेजे हुए लूत के पास आए तो उनका आना उसे नागवार हुआ और उनके प्रति दिल को तंग पाया। किन्तु उन्होंने कहा, "डरो मत और न शोकाकुल हो। हम तुम्हें और तुम्हारे घरवालों को बचा लेंगे सिवाय तुम्हारी स्त्री के। वह पीछे रह जानेवालों में से है।

34. निश्चय ही हम इस बस्ती के लोगों पर आकाश से एक यातना उतारनेवाले हैं, इस कारण कि वे बंदगी की सीमा से निकलते रहे हैं।"

35. और हमने उस बस्ती से प्राप्त होनेवाली एक खुली निशानी उन लोगों के लिए छोड़ दी है, जो बुद्धि से काम लेना चाहें।

36. और मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा "ऐ मेरी क़ौम के लोगो, अल्लाह की बन्दगी करो। और अंतिम दिन की आशा रखो। और धरती में बिगाड़ फैलाते मत फिरो।"

37. किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया। अन्ततः भूकम्प ने उन्हें आ लिया। और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

38. और आद और समूद को भी हमने विनष्ट किया। और उनके घरों और बस्तियों के अवशेषों से तुमपर स्पष्ट हो चुका है। शैतान ने उनके कर्मों को उनके लिए सुहाना बना दिया और उन्हें संमार्ग से रोक दिया। यद्यपि वे बड़े तीक्ष्ण दृष्टिवाले थे।

39. और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को हमने विनष्ट किया। मूसा उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया। किन्तु उन्होंने धरती में घमण्ड किया,

فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ۚ
فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهٖ ۖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ
حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا
كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ
وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ۝ إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝
وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَا
إِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ۝ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

हालाँकि वे हमसे निकल जानेवाले न थे।

40. अन्ततः हमने हरेक को उसके अपने गुनाह के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें से कुछ पर तो हमने पथराव करनेवाली वायु भेजी और उनमें से कुछ को एक प्रचण्ड चीत्कार नें आ लिया। और उनमें से कुछ को हमने धरती में धँसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया। अल्लाह तो ऐसा न था कि उनपर ज़ुल्म करता, किन्तु वे स्वयं अपने आपपर ज़ुल्म कर रहे थे।

41. जिन लोगों ने अल्लाह से हटकर अपने दूसरे संरक्षक बना लिए हैं उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है, जिसने अपना एक घर बनाया, और यह सच है कि सब घरों से कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही होता है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते!

42. निस्संदेह अल्लाह उन चीज़ों को भली-भाँति जानता है जिन्हें ये उससे हटकर पुकारते हैं। वह तो अत्यन्त प्रभुत्त्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

43. ये मिसालें हम लोगों के लिए पेश करते हैं, परन्तु इनको ज्ञानवान ही समझते हैं।

44. अल्लाह ने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया। निश्चय ही इसमें ईमानवालों के लिए एक बड़ी निशानी है।



اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ
الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ
اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ۝ وَلَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ
الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا
مِنْهُمْ وَقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَاُنْزِلَ اِلَیْكُمْ
وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَ
كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰۤؤُلَآءِ مَنْ یُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا یَجْحَدُ
بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ
مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِیَمِیْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝
بَلْ هُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ
وَمَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَاۤ
اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰیٰتُ

45. उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है, और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और अल्लाह का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो।

46. और किताबवालों से बस उत्तम रीति ही से वाद-विवाद करो—— रहे वे लोग जो उनमें ज़ालिम हैं, उनकी बात दूसरी है—और कहो : "हम ईमान लाए उस चीज़ पर जो हमारी ओर अवतरित हुई और तुम्हारी ओर भी अवतरित हुई। और हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य अकेला ही है और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।"

47. इसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर किताब अवतरित की है, तो जिन्हें हमने किताब प्रदान की है वे उसपर ईमान लाएँगे। उनमें से कुछ उसपर ईमान ला भी रहे हैं। हमारी आयतों का इनकार तो केवल न माननेवाले ही करते हैं।

48. इससे पहले तुम न कोई किताब पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते ही थे। ऐसा होता तो ये मिथ्यावादी संदेह में पड़ सकते थे।

49. नहीं, बल्कि वे तो उन लोगों के सीनों में विद्यमान खुली निशानियाँ हैं, जिन्हें ज्ञान प्रदान हुआ है। हमारी आयतों का इनकार तो केवल ज़ालिम ही करते हैं।

50. उनका कहना है कि : "उसपर उसके रब की ओर से निशानियाँ क्यों नहीं अवतरित हुईं?" कह दो : "निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं। मैं तो


عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ
اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ
بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَلَوْلَآ
اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاۗءَهُمُ الْعَذَابُ ۭ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً
وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَاِنَّ
جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ
اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ
ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۣ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

केवल स्पष्ट रूप से सचेत करनेवाला हूँ।"

51. क्या उनके लिए यह पर्याप्त नहीं कि हमने तुमपर किताब अवतरित की, जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? निस्संदेह उसमें उन लोगों के लिए दयालुता और अनुस्मृति है जो ईमान लाएँ।

52. कह दो : "मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह के रूप में काफ़ी है।" वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है। जो लोग असत्य पर ईमान लाए और अल्लाह का इनकार किया वही हैं जो घाटे में हैं।

53. वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं। यदि इसका एक नियत समय न होता तो उनपर अवश्य यातना आ जाती। वह तो अचानक उनपर आकर रहेगी कि उन्हें ख़बर भी न होगी।

54. वे तुमसे यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि जहन्नम इनकार करनेवालों को अपने घेरे में लिए हुए है।

55. जिस दिन यातना उन्हें उनके ऊपर से ढाँक लेगी और उनके पाँव के नीचे से भी, और वह कहेगा : "चखो उसका मज़ा जो कुछ तुम करते रहे हो!"

56. ऐ मेरे बन्दो, जो ईमान लाए हो! निस्संदेह मेरी धरती विशाल है। अतः तुम मेरी ही बन्दगी करो।

57. प्रत्येक जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है। फिर तुम हमारी ओर वापस लौटोगे।

58. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें हम जन्नत की

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ
الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ وَكَاَيِّنْ
مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ
وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ
اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً
فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ وَمَا
هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۭ وَاِنَّ الدَّارَ
الْاٰخِرَةَ لَهِىَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ

ऊपरी मंज़िल के कक्षों में जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उसमें सदैव रहेंगे। क्या ही अच्छा प्रतिदान है कर्म करनेवालों का!

59. जिन्होंने धैर्य से काम लिया और जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

60. कितने ही चलनेवाले जीवधारी हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी! वह सब कुछ सुनता, जानता है।

61. और यदि तुम उनसे पूछो कि "किसने आकाशों और धरती को पैदा किया और सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगाया?" तो वे बोल पड़ेंगे : "अल्लाह ने!" फिर वे किधर उलटे फिरे जाते हैं?

62. अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है आजीविका विस्तीर्ण कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। निस्संदेह अल्लाह हरेक चीज़ को भली-भाँति जानता है।

63. और यदि तुम उनसे पूछो कि "किसने आकाश से पानी बरसाया; फिर उसके द्वारा धरती को उसके मुर्दा हो जाने के पश्चात जीवित किया?" तो वे बोल पड़ेंगे : "अल्लाह ने!" कहो : "सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है।" किन्तु उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते।

64. और यह सांसारिक जीवन तो केवल दिल का बहलावा और खेल है। निस्संदेह पश्चात्वर्ती घर[1] (का जीवन) ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते!

1. अर्थात आख़िरत का घर।



65. जब वे नौका में सवार होते हैं, तो वे अल्लाह को उसके दीन (आज्ञापालन) के लिए निष्ठावान होकर पुकारते हैं। किन्तु जब वह उन्हें बचाकर शुष्क भूमि तक ले आता है तो क्या देखते हैं कि वे लगे (अल्लाह के साथ) साझी ठहराने।

66. ताकि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके प्रति वे इस तरह कृतघ्नता दिखाएँ, और ताकि इस तरह मज़े उड़ा लें। अच्छा तो वे शीघ्र ही जान लेंगे।

67. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने एक शान्तिमय हरम बनाया, हालाँकि उनके आसपास से लोग उचक लिए जाते हैं, तो क्या फिर भी वे असत्य पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की अनुकम्पा के प्रति कृतघ्नता दिखलाते हैं?

68. उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर थोपकर झूठ घड़े या सत्य को झुठलाए, जबकि वह उसके पास आ चुका हो? क्या इनकार करनेवालों का ठौर-ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा?

69. रहे वे लोग जिन्होंने हमारे मार्ग में मिलकर प्रयास किया, हम उन्हें अवश्य अपने मार्ग दिखाएँगे। निस्संदेह अल्लाह सुकर्मियों के साथ है।

30. अर्-रूम

(मक्का में उतरी— आयतें 60)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰।

2-5. रूमी निकटवर्ती क्षेत्र में पराभूत हो गए हैं। और वे अपने पराभव के

الامر من قبل ومن بعد ويومئذ يفرح
المؤمنون ۝ بنصر الله ينصر من يشاء وهو العزيز
الرحيم ۝ وعد الله لا يخلف الله وعده ولكن
اكثر الناس لا يعلمون ۝ يعلمون ظاهرا من
الحيوة الدنيا وهم عن الاخرة هم غفلون ۝ اولم
يتفكروا في انفسهم ما خلق الله السموت و
الارض وما بينهما الا بالحق واجل مسمى و
ان كثيرا من الناس بلقائ ربهم لكفرون ۝
اولم يسيروا في الارض فينظروا كيف كان
عاقبة الذين من قبلهم كانوا اشد منهم قوة
واثاروا الارض وعمروها اكثر مما عمروها و
جاءتهم رسلهم بالبينت فما كان الله ليظلمهم
ولكن كانوا انفسهم يظلمون ۝ ثم كان عاقبة

पश्चात शीघ्र ही कुछ वर्षों में प्रभावी हो जाएँगे। हुक्म तो अल्लाह ही का है पहले भी और उसके बाद भी। और उस दिन ईमानवाले अल्लाह की सहायता से प्रसन्न होंगे। वह जिसकी चाहता है, सहायता करता है। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

6. यह अल्लाह का वादा है! अल्लाह अपने वादे का उल्लंघन नहीं करता। किन्तु अधिकांश लोग जानते नहीं।

7. वे सांसारिक जीवन के केवल वाह्य रूप को जानते हैं। किन्तु आखिरत की ओर से वे बिलकुल असावधान हैं।

8. क्या उन्होंने अपने आप में सोच-विचार नहीं किया? अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है सत्य के साथ और एक नियत अवधि ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत-से लोग तो अपने प्रभु के मिलन का इनकार करते हैं।

9. क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो उनसे पहले थे? वे शक्ति में उनसे अधिक बलवान थे और उन्होंने धरती को उपजाया और उससे कहीं अधिक उसे आबाद किया जितना उन्होंने उसे आबाद किया था। और उनके पास उनके रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर आए। फिर अल्लाह ऐसा न था कि उनपर ज़ुल्म करता। किन्तु वे स्वयं ही अपने आपपर ज़ुल्म करते थे।

10. फिर जिन लोगों ने बुरा किया था उनका परिणाम बुरा हुआ, क्योंकि



उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और उनका उपहास करते रहे।

11. अल्लाह ही सृष्टि का आरंभ करता है। फिर वही उसकी पुनरावृति करता है। फिर उसी की ओर तुम पलटोगे।

12. जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी, उस दिन अपराधी एकदम निराश होकर रह जाएँगे।

13. उनके ठहराए हुए साझीदारों में से कोई उनका सिफ़ारिश करनेवाला न होगा और वे स्वयं भी अपने साझीदारों का इनकार करेंगे।

14. और जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी, उस दिन वे सब अलग-अलग हो जाएँगे।

15. अत: जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे एक बाग़ में प्रसन्नतापूर्वक रखे जाएँगे।

16. किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया, वे लाकर यातनाग्रस्त किए जाएँगे।

17-18. अत: अब अल्लाह की तसबीह करो, जबकि तुम शाम करो और जब सुब्ह करो।—— और उसी के लिए प्रशंसा है आकाशों और धरती में—— और पिछले पहर और जब तुमपर दोपहर हो।

19. वह जीवित को मृत से निकालता है और मृत को जीवित से, और धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवन प्रदान करता है। इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे।

20. और यह उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा

أَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَآ أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ۝
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا
لِّتَسْكُنُوْٓا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۚ إِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ
إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ إِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ
الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ
بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ أَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَ
الْأَرْضُ بِأَمْرِهٖ ۚ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِّنَ
الْأَرْضِ ۖ إِذَآ أَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَنْ فِي

किया। फिर क्या देखते हैं कि तुम मानव हो, फैलते जा रहे हो।

21. और यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा की। और निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

22. और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती का सृजन और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की विविधता भी है। निस्संदेह इसमें ज्ञानवानों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

23. और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन का सोना और तुम्हारा उसके अनुग्रह की तलाश करना भी है। निश्चय ही इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

24. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह तुम्हें बिजली की चमक भय और आशा उत्पन्न करने के लिए दिखाता है। और वह आकाश से पानी बरसाता है। फिर उसके द्वारा धरती को उसके निर्जीव हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है। निस्संदेह इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

25. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश से क़ायम हैं। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारकर धरती में से बुलाएगा, तो क्या देखेंगे कि सहसा तुम निकल पड़े।

26. आकाशों और धरती में जो कोई भी है उसी का है। प्रत्येक उसी के

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ
الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ
مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ
فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ
كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ بَلِ اتَّبَعَ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ
اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ فَاَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ
عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ
وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ

निष्ठावान आज्ञाकारी हैं।

27. वही है जो सृष्टि का आरंभ करता है। फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा। और यह उसके लिए अधिक सरल है। आकाशों और धरती में उसी की मिसाल (गुण) सर्वोच्च है। और वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

28. उसने तुम्हारे लिए स्वयं तुम्हीं में से एक मिसाल पेश की है। क्या जो रोज़ी हमने तुम्हें दी है, उसमें तुम्हारे अधीनस्थों[1] में से, कुछ तुम्हारे साझीदार हैं कि तुम सब उसमें बराबर के हो, तुम उनका ऐसा डर रखते हो जैसा अपने लोगों का डर रखते हो?—इस प्रकार हम उन लोगों के लिए आयतें खोल-खोलकर प्रस्तुत करते हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं।—

29. नहीं, बल्कि ये ज़ालिम तो बिना ज्ञान के अपनी इच्छाओं के पीछे चल पड़े।[2] तो अब कौन उसे मार्ग दिखाएगा जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो? ऐसे लोगों का तो कोई सहायक नहीं।

30-32. अतः एक ओर का होकर अपने रुख़ को 'दीन' (धर्म) की ओर जमा दो, अल्लाह की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिसपर उसने लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। उसकी ओर रुजू करनेवाले (प्रवृत्त होनेवाले) रहो। और उसका डर रखो और नमाज़ का आयोजन करो।

---

1. अर्थात गुलाम, लौंडी।
2. अर्थात इच्छा के अनुसरण ने इनको अंधा बना दिया है। इसलिए ये अपने ऊपर ज़ुल्म ही ढाएँगे।

من الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا ، كل حزب
بما لديهم فرحون ۝ وإذا مس الناس ضر دعوا
ربهم منيبين إليه ثم إذا أذاقهم منه رحمة
إذا فريق منهم بربهم يشركون ۝ ليكفروا بما
آتيناهم ، فتمتعوا ، فسوف تعلمون ۝ أم أنزلنا
عليهم سلطانا فهو يتكلم بما كانوا به يشركون ۝
وإذا أذقنا الناس رحمة فرحوا بها ، وإن تصبهم
سيئة بما قدمت أيديهم إذا هم يقنطون ۝
أولم يروا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ،
إن في ذلك لآيات لقوم يؤمنون ۝ فآت
ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ، ذلك
خير للذين يريدون وجه الله ، وأولئك هم
المفلحون ۝ وما آتيتم من ربا ليربو في أموال

और (अल्लाह का) साझी ठहरानेवालों में से न होना, उन लोगों में से जिन्होंने अपने दीन (धर्म) को टुकड़े-टुकड़े कर डाला और गिरोहों में बँट गए। हर गिरोह के पास जो कुछ है, उसी में मग्न है।

33. और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वे अपने रब को, उसकी ओर रुजू (प्रवृत्त) होकर पुकारते हैं। फिर जब वह उन्हें अपनी दयालुता का रसास्वादन करा देता है, तो क्या देखते हैं कि उनमें से कुछ लोग अपने रब का साझी ठहराने लगे;

34. ताकि इस प्रकार वे उसके प्रति अकृतज्ञता दिखलाएँ जो कुछ हमने उन्हें दिया है। "अच्छा तो मज़े उड़ा लो, शीघ्र ही तुम जान लोगे।"

35. (क्या उनके देवताओं ने उनकी सहायता की थी,) या हमने उनपर ऐसा कोई प्रमाण उतारा है कि वह उसके हक़ में बोलता हो, जो वे उसके साथ साझी ठहराते हैं।

36. और जब हम लोगों को दयालुता का रसास्वादन कराते हैं तो वे उसपर इतराने लगते हैं; परन्तु जो कुछ उनके हाथों ने आगे भेजा है यदि उसके कारण उनपर कोई विपत्ति आ जाए, तो क्या देखते हैं कि वे निराश हो रहे हैं।

37. क्या उन्होंने विचार नहीं किया कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है? निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान लाएँ।

38. अतः नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी। यह अच्छा है उनके लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता के इच्छुक हों और वही सफल हैं।

39. तुम जो कुछ ब्याज पर देते हो, ताकि वह लोगों के मालों में सम्मिलित

الناس فلا يربوا عند الله ۚ وما آتيتم من زكاة
تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون ﴿٣٩﴾ الله
الذي خلقكم ثم رزقكم ثم يميتكم ثم يحييكم ۖ
هل من شركائكم من يفعل من ذلكم من
شيء ۚ سبحانه وتعالى عما يشركون ﴿٤٠﴾ ظهر الفساد
في البر والبحر بما كسبت أيدي الناس ليذيقهم
بعض الذي عملوا لعلهم يرجعون ﴿٤١﴾ قل سيروا
في الأرض فانظروا كيف كان عاقبة الذين
من قبل ۚ كان أكثرهم مشركين ﴿٤٢﴾ فأقم وجهك
للدين القيم من قبل أن يأتي يوم لا مرد له
من الله ۖ يومئذ يصدعون ﴿٤٣﴾ من كفر فعليه
كفره ۖ ومن عمل صالحا فلأنفسهم يمهدون ﴿٤٤﴾
ليجزي الذين آمنوا وعملوا الصالحات من فضله ۚ

होकर बढ़ जाए, तो वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता। किन्तु जो ज़कात तुमने अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दी, तो ऐसे ही लोग (अल्लाह के यहाँ) अपना माल बढ़ाते हैं।

40. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रोज़ी दी; फिर वह तुम्हें मृत्यु देता है; फिर तुम्हें जीवित करेगा। क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में भी कोई है, जो इन कामों में से कुछ कर सके? महान और उच्च है वह उससे जो साझी वे ठहराते हैं।

41. थल और जल में बिगाड़ फैल गया स्वयं लोगों ही के हाथों की कमाई के कारण, ताकि वह उन्हें उनकी कुछ करतूतों का मज़ा चखाए, कदाचित वे बाज़ आ जाएँ।

42. कहो : "धरती में चल-फिरकर देखो कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ है जो पहले गुज़रे हैं। उनमें अधिकतर बहुदेववादी ही थे।"

43. अतः तुम अपना रुख़ सीधे व ठीक धर्म की ओर जमा दो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं। उस दिन लोग अलग-अलग हो जाएँगे।

44. जिस किसी ने इनकार किया तो उसका इनकार उसी के लिए घातक सिद्ध होगा, और जिन लोगों ने अच्छा कर्म किया वे अपने ही लिए आराम का साधन जुटा रहे हैं।

45. ताकि वह अपने उदार अनुग्रह से उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए

إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ۞ وَمِنْ اٰيٰتِهِۦٓ أَنْ يُّرْسِلَ
الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهِۦ وَلِتَجْرِيَ
الْفُلْكُ بِأَمْرِهِۦ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۞ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلٰى قَوْمِهِمْ
فَجَآءُوهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۗ
وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۞ اللّٰهُ الَّذِي
يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُۥ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ
يَشَآءُ وَيَجْعَلُهُۥ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ
خِلٰلِهِۦ ۚ فَإِذَآ أَصَابَ بِهِۦ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦٓ
إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۞ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ
أَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهِۦ لَمُبْلِسِينَ ۞ فَانْظُرْ
إِلٰىٓ اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ
إِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۞

और उन्होंने अच्छे कर्म किए। निश्चय ही वह इनकार करनेवालों को पसन्द नहीं करता ।——

46. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह शुभ सूचना देनेवाली हवाएँ भेजता है (ताकि उनके द्वारा तुम्हें वर्षा की शुभ सूचना मिले) और ताकि वह तुम्हें अपनी दयालुता का रसास्वादन कराए और ताकि उसके आदेश से नौकाएँ चलें और ताकि तुम उसका अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो और कदाचित तुम कृतज्ञता दिखलाओ ।

47. हम तुमसे पहले कितने ही रसूलों को उनकी क़ौम की ओर भेज चुके हैं और वे उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए। फिर हम उन लोगों से बदला लेकर रहे जिन्होंने अपराध किया, और ईमानवालों की सहायता करना तो हमपर एक हक़ है ।

48. अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है । फिर वे बादलों को उठाती हैं; फिर जिस तरह चाहता है उन्हें आकाश में फैला देता है और उन्हें परतों और टुकड़ियों का रूप दे देता है । फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से वर्षा की बूँदें टपकी चली आती हैं । फिर जब वह अपने बन्दों में से जिनपर चाहता है, उसे बरसाता है । तो क्या देखते हैं कि वे हर्षित हो उठे ।

49. जबकि इससे पूर्व, इससे पहले कि वह उनपर उतरे, वे बिलकुल निराश थे ।

50. अत: देखो अल्लाह की दयालुता के चिह्न ! वह किस प्रकार धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है । निश्चय ही वह मुर्दों को जीवित करनेवाला है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है ।



51. किन्तु यदि हम एक दूसरी हवा भेज दें, जिसके प्रभाव से वे उस (खेती) को पीली पड़ी हुई देखें तो इसके पश्चात वे कुफ़्र करने लग जाएँ।

52. अतः तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ फेरे चले जा रहे हों।

53. और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से फेरकर मार्ग पर ला सकते हो। तुम तो केवल उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाएँ। तो वही आज्ञाकारी हैं।

54. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें निर्बल पैदा किया, फिर निर्बलता के पश्चात शक्ति प्रदान की; फिर शक्ति के पश्चात निर्बलता और बुढ़ापा दिया। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है। वह जाननेवाला, सामर्थ्यवान है।

55. जिस दिन वह घड़ी आ खड़ी होगी अपराधी क़सम खाएँगे कि वे घड़ी भर से अधिक नहीं ठहरे। इसी प्रकार वे उलटे फिरे चले जाते थे।

56. किन्तु जिन लोगों को ज्ञान और ईमान प्रदान हुआ, वे कहेंगे : "अल्लाह के लेख में तो तुम जीवित होकर उठने के दिन तक ठहरे रहे हो। तो यही जीवित होकर उठने का दिन है। किन्तु तुम जानते न थे।"

57. अतः उस दिन ज़ुल्म करनेवालों को उनका कोई उज़्र (सफ़ाई पेश करना) काम न आएगा और न उनसे यह चाहा जाएगा कि वे किसी यत्न से (अल्लाह के) प्रकोप को टाल सकें।

58. हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए प्रत्येक मिसाल पेश कर दी है। यदि तुम कोई भी निशानी उनके पास ले आओ, जिन लोगों ने इनकार किया है, वे तो यही कहेंगे : "तुम तो बस झूठ घड़ते हो।"

59. इस प्रकार अल्लाह उन लोगों के दिलों पर ठप्पा लगा देता है जो अज्ञानी हैं।

60. अतः धैर्य से काम लो। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है और जिन्हें विश्वास नहीं, वे तुम्हें कदापि हल्का न पाएँ।


ولقد ضربنا للناس في هذا القرآن من كل مثل
ولئن جئتهم بآية ليقولن الذين كفروا إن
أنتم إلا مبطلون ۝ كذلك يطبع الله على
قلوب الذين لا يعلمون ۝ فاصبر إن وعد
الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون ۝
سورة لقمان مكية
بسم الله الرحمن الرحيم
الم ۝ تلك آيات الكتاب الحكيم ۝ هدى و
رحمة للمحسنين ۝ الذين يقيمون الصلاة
ويؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم يوقنون ۝
أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم
المفلحون ۝ ومن الناس من يشتري لهو
الحديث ليضل عن سبيل الله بغير علم

31. लुक़मान

(मक्का में उतरी— आयतें 34)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम०।

2. (जो आयतें उतर रही हैं) वे तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण किताब की आयतें हैं;

3. मार्गदर्शन और दयालुता उत्तमकारों के लिए;

4. जो नमाज़ का आयोजन करते हैं और ज़कात देते हैं और आख़िरत पर विश्वास रखते हैं।

5. वही अपने रब की ओर से मार्ग पर हैं और वही सफल हैं।

6. लोगों में से कोई ऐसा भी है जो दिल को लुभानेवाली बातों का ख़रीदार बनता है, ताकि बिना किसी ज्ञान के अल्लाह के मार्ग से (दूसरों को) भटकाए

وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ
يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ
أَلِيمٍ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
جَنَّاتُ النَّعِيمِ ۝ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ
تَرَوْنَهَا ۖ وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ
وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ هَٰذَا خَلْقُ
اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ بَلِ
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ
الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ لِلَّهِ ۚ وَمَن يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ
لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ وَإِذْ

और उनका[1] परिहास करे। वही हैं जिनके लिए अपमानजनक यातना है।

7. जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह स्वयं को बड़ा समझता हुआ पीठ फेरकर चल देता है, मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं, मानो उसके कान बहरे हैं। अच्छा तो उसे एक दुखद यातना की शुभ सूचना दे दो।

8-9. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए नेमत भरी जन्नतें हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा वादा है और वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

10. उसने आकाशों को पैदा किया, (जो थमे हुए हैं) बिना ऐसे स्तंभों के जो तुम्हें दिखाई दें। और उसने धरती में पहाड़ डाल दिए कि ऐसा न हो कि तुम्हें लेकर डाँवाडोल हो जाए और उसने उसमें हर प्रकार के जानवर फैला दिए। और हमने ही आकाश से पानी उतारा, फिर उसमें हर प्रकार की उत्तम चीज़ें उगाईं।

11. यह तो अल्लाह की संरचना है। अब तनिक मुझे दिखाओ कि उससे हटकर जो दूसरे हैं (तुम्हारे ठहराए हुए प्रभु) उन्होंने क्या पैदा किया है! नहीं, बल्कि ज़ालिम तो एक खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

12. निश्चय ही हमने लुक़मान को तत्त्वदर्शिता प्रदान की थी कि अल्लाह के प्रति कृतज्ञता दिखलाओ और जो कोई कृतज्ञता दिखलाए, वह अपने ही भले के लिए कृतज्ञता दिखलाता है। और जिसने अकृतज्ञता दिखलाई तो अल्लाह वास्तव में निस्पृह, प्रशंसनीय है।

1. अर्थात आयतों का।

قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ
بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ
بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ
فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ۝
وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ
بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ؗ
وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ
مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ
فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ
بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ
اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَلَا تُصَعِّرْ

13. याद करो जब लुक़मान ने अपने बेटे से, उसे नसीहत करते हुए, कहा : "ऐ मेरे बेटे ! अल्लाह का साझी न ठहराना। निश्चय ही शिर्क (बहुदेववाद) बहुत बड़ा ज़ुल्म है।"——

14. और हमने मनुष्य को उसके अपने माँ-बाप के मामले में ताकीद की है—— उसकी माँ ने निढाल पर निढाल होकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसके दूध छूटने में लगे—— कि "मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ-बाप के प्रति भी। अंततः मेरी ही ओर आना है।

15. किन्तु यदि वे तुझपर दबाव डालें कि तू किसी को मेरे साथ साझी ठहराए, जिसका तुझे ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ भले तरीक़े से रहना। किन्तु अनुसरण उस व्यक्ति के मार्ग का करना जो मेरी ओर रुजू हो। फिर तुम सबको मेरी ही ओर पलटना है; फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।"——

16. "ऐ मेरे बेटे ! इसमें संदेह नहीं कि यदि वह राई के दाने के बराबर भी हो, फिर वह किसी चट्टान के बीच हो या आकाशों में हो या धरती में हो, अल्लाह उसे ला उपस्थित करेगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।

17. ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ का आयोजन कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक और जो मुसीबत भी तुझपर पड़े उसपर धैर्य से काम ले। निस्संदेह ये उन कामों में से हैं जो अनिवार्य और दृढ़संकल्प के काम हैं।

18. और लोगों से अपना रुख़ न फेर और न धरती में इतराकर चल।

خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾ وَاقْصِدْ
فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِن صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنكَرَ
الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ﴿١٩﴾ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ
سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ
النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى
وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا
أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ
السَّعِيرِ ﴿٢١﴾ وَمَن يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۗ وَإِلَى
اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٢٢﴾ وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ

निश्चय ही अल्लाह किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।

19. और अपनी चाल में सहजता एवं संतुलन बनाए रख और अपनी आवाज़ धीमी रख। निस्संदेह आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ होती है।"

20. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने, जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, सबको तुम्हारे काम में लगा रखा है और उसने तुमपर अपनी प्रकट और अप्रकट अनुकम्पाएँ पूर्ण कर दी हैं? इसपर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान, बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी प्रकाशमान किताब के झगड़ते हैं।

21. अब जब उनसे कहा जाता है कि "उस चीज़ का अनुसरण करो जो अल्लाह ने उतारी है", तो कहते हैं : "नहीं, बल्कि हम तो उस चीज़ का अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।" क्या यद्यपि शैतान उनको भड़कती आग की यातना की ओर बुला रहा हो तब भी?

22. जो कोई आज्ञाकारिता के साथ अपना रुख़ अल्लाह की ओर करे और वह उत्तमकार भी हो तो उसने मज़बूत सहारा थाम लिया। सारे मामलों की परिणति अल्लाह ही की ओर है।

23. और जिस किसी ने इनकार किया तो उसका इनकार तुम्हें शोकाकुल न

كُفْرُهٗ ۭ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ
اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ وَلَوْ اَنَّ مَا
فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ
بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا
كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ
اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۡ كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

करे। हमारी ही ओर तो उन्हें पलटकर आना है। फिर जो कुछ वे करते रहे होंगे, उससे हम उन्हें अवगत करा देंगे। निस्संदेह अल्लाह सीनों की बात तक जानता है।

24. हम उन्हें थोड़ा मज़ा उड़ाने देंगे। फिर उन्हें विवश करके एक कठोर यातना की ओर खींच ले जाएँगे।

25. यदि तुम उनसे पूछो कि "आकाशों और धरती को किसने पैदा किया?" तो वे अवश्य कहेंगे कि "अल्लाह ने।" कहो : "प्रशंसा भी अल्लाह के लिए है।" वरन् उनमें से अधिकांश जानते नहीं।

26. आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का है। निस्संदेह अल्लाह ही निस्पृह, स्वतः प्रशंसित है।

27. धरती में जितने वृक्ष हैं, यदि वे क़लम हो जाएँ और समुद्र उसकी स्याही हो जाए, उसके बाद सात और समुद्र हों तब भी अल्लाह के बोल समाप्त न हो सकेंगे। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

28. तुम सबका पैदा करना और तुम सबका जीवित करके पुनः उठाना तो बस ऐसा है, जैसे एक जीव का। अल्लाह तो सबकुछ सुनता, देखता है।

29. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है। उसने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रखा है? प्रत्येक एक नियत समय तक चला जा रहा है और इसके साथ यह कि जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

30. यह सब कुछ इस कारण से है कि अल्लाह ही सत्य है और यह कि

هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الْبَاطِلُ وَ
أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ
تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُم مِّنْ آيَاتِهِ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذَا
غَشِيَهُم مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِي
وَالِدٌ عَن وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَن
وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝
إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّا

उसे छोड़कर जिनको वे पुकारते हैं, वे असत्य हैं। और यह कि अल्लाह ही सर्वोच्च, महान है।

31. क्या तुमने देखा नहीं कि नौका समुद्र में अल्लाह के अनुग्रह से चलती है, ताकि वह तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए। निस्संदेह इसमें प्रत्येक धैर्यवान, कृतज्ञ के लिए निशानियाँ हैं।

32. और जब कोई मौज छाया-छत्रों की तरह उन्हें ढाँक लेती है, तो वे अल्लाह को उसी के लिए अपने निष्ठाभाव को विशुद्ध करते हुए पुकारते हैं, फिर जब वह उन्हें बचाकर स्थल तक पहुँचा देता है, तो उनमें से कुछ ही लोग संतुलित मार्ग पर रहते हैं। (अधिकांश तो पुन: पथभ्रष्ट हो जाते हैं।) हमारी निशानियों का इनकार तो बस प्रत्येक वह व्यक्ति करता है जो विश्वासघाती, कृतघ्न हो।

33. ऐ लोगो ! अपने रब का डर रखो और उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपनी औलाद की ओर से बदला देगा और न कोई औलाद ही अपने बाप की ओर से कोई बदला देनेवाली होगी। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। अत: सांसारिक जीवन कदापि तुम्हें धोखे में न डाले। और न अल्लाह के विषय में वह धोखेबाज़ तुम्हें धोखे में डाले।

34. निस्संदेह उस घड़ी का ज्ञान अल्लाह ही के पास है। वही मेंह बरसाता है और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में होता है। कोई व्यक्ति नहीं जानता कि

ذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ
تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ

سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الٓمٓ ۚ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۚ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ
عَلَى الْعَرْشِ ۖ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا
شَفِيعٍ ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ
السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۝ ذَٰلِكَ

कल वह क्या कमाएगा और कोई व्यक्ति नहीं जानता है कि किस भूभाग में उसकी मृत्यु होगी। निस्संदेह अल्लाह जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।

32. अस-सजदा

(मक्का में उतरी—— आयतें 30)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अलिफ़० लाम० मीम०।

2. इस किताब का अवतरण —— इसमें सन्देह नहीं——सारे संसार के रब की ओर से है।

3. (क्या वे इसपर विश्वास नहीं रखते) या वे कहते हैं कि "इस व्यक्ति ने इसे स्वयं ही घड़ लिया है?" नहीं, बल्कि वह सत्य है तेरे रब की ओर से, ताकि तू उन लोगों को सावधान कर दे जिनके पास तुझसे पहले कोई सावधान करनेवाला नहीं आया। कदाचित वे मार्ग पाएँ।

4. अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छह दिनों में पैदा किया। फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उससे हटकर न तो तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र है और न उसके मुक़ाबले में कोई सिफ़ारिश करनेवाला। फिर क्या तुम होश में न आओगे?

5. वह कार्य की व्यवस्था करता है आकाश से धरती तक—— फिर सारे मामले उसी की तरफ़ लौटते हैं—— एक दिन में, जिसकी माप तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ الَّذِيْٓ
اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ
مِنْ طِيْنٍ ۚ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ
مَّهِيْنٍ ۚ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ
لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ
جَدِيْدٍ ۥ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝ قُلْ
يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ
اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ
نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا
وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝ وَلَوْ
شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ
الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

6. वही है परोक्ष और प्रत्यक्ष का जाननेवाला अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान।

7. जिसने हरेक चीज़, जो बनाई खूब ही बनाई और उसने मनुष्य की संरचना का आरंभ गारे से किया।

8. फिर उसकी सन्तति एक तुच्छ पानी के सत से चलाई।

9. फिर उसे ठीक-ठीक किया और उसमें अपनी रूह (आत्मा) फूँकी। और तुम्हें कान और आँखें और दिल दिए। तुम आभारी थोड़े ही होते हो।

10. और उन्होंने कहा : "जब हम धरती में रल-मिल जाएँगे तो फिर क्या हम वास्तव में नवीन काय में जीवित होंगे?" नहीं, बल्कि उन्हें अपने रब से मिलने का इनकार है।

11. कहो : "मृत्यु का फ़रिश्ता जो तुमपर नियुक्त है, वह तुम्हें पूर्ण रूप से अपने क़ब्ज़े में ले लेता है। फिर तुम अपने रब की ओर वापस होगे।"

12. और यदि कहीं तुम देखते जब वे अपराधी अपने रब के सामने अपने सिर झुकाए होंगे कि "हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया। अब हमें वापस भेज दे, ताकि हम अच्छे कर्म करें। निस्संदेह अब हमें विश्वास हो गया।"

13. यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को उसका अपना संमार्ग दिखा देते, किन्तु मेरी ओर से बात सत्यापित हो चुकी है कि "मैं जहन्नम को जिन्नों और

أجمعين ۝ فذوقوا بما نسيتم لقاء يومكم هذا ۚ
إنا نسينكم وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم
تعملون ۝ إنما يؤمن بآيتنا الذين إذا ذكروا
بها خروا سجدا وسبحوا بحمد ربهم وهم لا
يستكبرون ۝ تتجافى جنوبهم عن المضاجع
يدعون ربهم خوفا وطمعا ومما رزقنهم ينفقون ۝
فلا تعلم نفس ما أخفي لهم من قرة أعين
جزاء بما كانوا يعملون ۝ أفمن كان مؤمنا
كمن كان فاسقا لا يستوون ۝ أما الذين آمنوا
وعملوا الصلحت فلهم جنت المأوى نزلا بما
كانوا يعملون ۝ وأما الذين فسقوا فمأوىهم
النار كلما أرادوا أن يخرجوا منها أعيدوا فيها
وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذي كنتم به

मनुष्यों, सबसे भरकर रहूँगा।"

14. अतः अब चखो मज़ा, इसका कि तुमने अपने इस दिन के मिलन को भुलाए रखा। तो हमने भी तुम्हें भुला दिया। शाश्वत यातना का रसास्वादन करो, उसके बदले में जो तुम करते रहे हो।

15. हमारी आयतों पर तो बस वही लोग ईमान लाते हैं जिन्हें उनके द्वारा जब याद दिलाया जाता है तो सजदे में गिर पड़ते हैं और अपने रब का गुणगान करते हैं और घमण्ड नहीं करते।

16. उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

17. फिर कोई प्राणी नहीं जानता आँखों की जो ठंडक उसके लिए छिपा रखी गई है उसके बदले में देने के ध्येय से जो वे करते रहे होंगे।

18. भला जो व्यक्ति ईमानवाला हो वह उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अवज्ञाकारी हो? वे बराबर नहीं हो सकते।

19. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए जो कर्म वे करते रहे उसके बदले में आतिथ्य स्वरूप रहने के बाग़ हैं।

20. रहे वे लोग जिन्होंने सीमा का उल्लंघन किया, उनका ठिकाना आग है। जब कभी भी वे चाहेंगे कि उससे निकल जाएँ तो उसी में लौटा दिए जाएँगे और उनसे कहा जाएगा: "चखो उस आग की यातना का मज़ा, जिसे तुम झूठ

تُكَذِّبُونَ ۝ وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ
دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ
إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى
الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ
هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً
يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يُوقِنُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ
أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي
مَسَاكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ۝
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ
فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ

समझते थे।"

21. हम बड़ी यातना से इतर उन्हें छोटी यातना का मज़ा चखाएँगे, कदाचित वे पलट आएँ।

22. और उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के द्वारा याद दिलाया जाए, फिर वह उनसे मुँह फेर ले? निश्चय ही हम अपराधियों से बदला लेकर रहेंगे।

23. हमने मूसा को किताब प्रदान की थी—अतः उसके मिलने के प्रति तुम किसी संदेह में न रहना—और हमने इसराईल की संतान के लिए उस (किताब) को मार्गदर्शन बनाया था।

24. और जब वे जमे रहे और उन्हें हमारी आयतों पर विश्वास था, तो हमने उनमें ऐसे नायक बनाए जो हमारे आदेश से मार्ग दिखाते थे।

25. निश्चय ही तेरा रब ही क़ियामत के दिन उनके बीच उन बातों का फ़ैसला करेगा, जिनमें वे मतभेद करते रहे हैं।

26. क्या उनके लिए यह चीज़ भी मार्गदर्शक सिद्ध नहीं हुई कि उनसे पहले कितनी ही नस्लों को हम विनष्ट कर चुके हैं, जिनके रहने-बसने की जगहों में वे चलते-फिरते हैं? निस्संदेह इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं। फिर क्या वे सुनते नहीं?

27. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम सूखी पड़ी भूमि की ओर पानी ले जाते हैं। फिर उससे खेती उगाते हैं, जिसमें से उनके चौपाए भी खाते हैं और वे


أفلا يبصرون ۝ ويقولون متى هذا الفتح إن
كنتم صادقين ۝ قل يوم الفتح لا ينفع الذين
كفروا إيمانهم ولا هم ينظرون ۝ فأعرض
عنهم وانتظر إنهم منتظرون ۝
سورة الأحزاب
بسم الله الرحمن الرحيم
يا أيها النبي اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين
إن الله كان عليما حكيما ۝ واتبع ما يوحى إليك
من ربك إن الله كان بما تعملون خبيرا ۝
وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ۝ ما جعل
الله لرجل من قلبين في جوفه وما جعل
أزواجكم اللائي تظاهرون منهن أمهاتكم وما
جعل أدعياءكم أبناءكم ذلكم قولكم

स्वयं भी? तो क्या उन्हें सूझता नहीं?

28. वे कहते हैं कि "यह फ़ैसला कब होगा, यदि तुम सच्चे हो?"

29. कह दो कि "फ़ैसले के दिन इनकार करनेवालों का ईमान उनके लिए कुछ लाभदायक न होगा और न उन्हें ढील ही दी जाएगी।"

30. अच्छा, उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो और प्रतीक्षा करो। वे भी प्रतीक्षारत हैं।

33. अल-अहज़ाब

(मदीना में उतरी— आयतें 73)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ नबी! अल्लाह का डर रखना और इनकार करनेवालों और कपटाचारियों का कहना न मानना। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

2. और अनुसरण करना उस चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हें प्रकाशना की जा रही है। निश्चय ही अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो तुम करते हो।

3. और अल्लाह पर भरोसा रखो। और अल्लाह भरोसे के लिए काफ़ी है।

4. अल्लाह ने किसी व्यक्ति के सीने में दो दिल नहीं रखे। और न उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार कर बैठते हो[1], वास्तव में तुम्हारी माँ

---

1. अज्ञानकाल में लोग अपनी पत्नियों से झगड़ते समय कभी यह कह बैठते थे कि अब तू मेरे लिए मेरी माँ की पीठ की तरह हराम है। इसे ज़िहार करना कहा जाता है। ज़िहार करने से पत्नी माँ नहीं हो सकती।

بِاَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝
اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ
لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۚ
وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ
مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ
وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ۗ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى
بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ
اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ۚ كَانَ ذٰلِكَ
فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝ وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ
مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى
وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝
لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

बनाया, और न उसने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारे वास्तविक बेटे बनाए। ये तो तुम्हारे मुँह की बातें हैं। किन्तु अल्लाह सच्ची बात कहता है और वही मार्ग दिखाता है।

5. उन्हें[1] उनके बापों का बेटा कहकर पुकारो। अल्लाह के यहाँ यही अधिक न्यायसंगत बात है। और यदि तुम उनके बापों को न जानते हो, तो धर्म में वे तुम्हारे भाई तो हैं ही और तुम्हारे सहचर भी। इस सिलसिले में तुमसे जो ग़लती हुई हो उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं, किन्तु जिसका संकल्प तुम्हारे दिलों ने कर लिया, उसकी बात और है।[2] वास्तव में अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

6. नबी का हक़ ईमानवालों पर स्वयं उनके अपने प्राणों से बढ़कर है। और उसकी पत्नियाँ उनकी माएँ हैं। और अल्लाह के विधान के अनुसार, सामान्य मोमिनों और मुहाजिरों की अपेक्षा नातेदार आपस में एक-दूसरे से अधिक निकट हैं। यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो। यह बात किताब में लिखी हुई है।

7-8. और याद करो जब हमने नबियों से उनका वचन लिया, तुमसे भी और नूह और इबराहीम और मूसा और मरयम के बेटे ईसा से भी। इन सबसे हमने दृढ़ वचन लिया, ताकि वह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछे। और

---

1. अर्थात मुँह बोले बेटों को।
2. अर्थात उसपर पकड़ है।

عَذَابًا اَلِيْمًا ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا
وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۚ
اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ
زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ
بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا
زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ
اِلَّا غُرُوْرًا ۝ وَاِذْ قَالَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ
يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ
مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۭ وَمَا هِيَ
بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دُخِلَتْ
عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُـىِٕلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا

इनकार करनेवालों के लिए तो उसने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

9. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह की उस अनुकम्पा को याद करो जो तुमपर हुई; जबकि सेनाएँ तुमपर चढ़ आईं तो हमने उनपर एक हवा भेज दी और ऐसी सेनाएँ भी, जिनको तुमने देखा नहीं। और अल्लाह वह सब कुछ देखता है जो तुम करते हो।

10. याद करो जब वे तुम्हारे ऊपर की ओर से और तुम्हारे नीचे की ओर से भी तुमपर चढ़ आए, और जब निगाहें टेढ़ी-तिरछी हो गईं और उर (हृदय) कण्ठ को आ लगे। और तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे थे।

11. उस समय ईमानवाले आज़माए गए और पूरी तरह हिला दिए गए।

12. और जब कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कहने लगे : "अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे जो वादा किया था वह तो धोखा मात्र था।"

13. और जबकि उनमें से एक गिरोह ने कहा : "ऐ यसरिबवालो[1], तुम्हारे लिए ठहरने का कोई मौक़ा नहीं। अतः लौट चलो।" और उनका एक गिरोह नबी से यह कहकर (वापस जाने की) अनुमति चाह रहा था कि "हमारे घर असुरक्षित हैं।" यद्यपि वे असुरक्षित न थे। वे तो बस भागना चाहते थे।

14. और यदि उसके चतुर्दिक से उनपर हमला हो जाता, फिर उस समय उनसे उपद्रव के लिए कहा जाता[2], तो वे ऐसा कर डालते और इसमें विलम्ब

1. अर्थात मदीनावालो।
2. अर्थात यदि उनसे कहा जाता कि इस्लाम को त्यागकर इस्लाम विरोधियों का साथ दो, तो वे घरों में न ठहरते और अविलम्ब उनके साथ हो जाते।

وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا
اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ
مَسْئُولًا ۝ قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ
الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝
قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ
سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن
دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ
الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ
وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ
فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ
أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا
ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى
الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ

थोड़े ही करते !

15. यद्यपि वे इससे पहले अल्लाह को वचन दे चुके थे कि वे पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से की गई प्रतिज्ञा के विषय में तो पूछा जाना ही है।

16. कह दो : "यदि तुम मृत्यु और मारे जाने से भागो भी तो यह भागना तुम्हारे लिए कदापि लाभप्रद न होगा। और इस हालत में भी तुम सुख थोड़े ही प्राप्त कर सकोगे।"

17. कहो : "कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, यदि वह तुम्हारी कोई बुराई चाहे या वह तुम्हारे प्रति दयालुता का इरादा करे (तो कौन है जो उसकी दयालुता को रोक सके)?" वे अल्लाह के अलावा न अपना कोई निकटवर्ती समर्थक पाएँगे और न (दूर का) सहायक।

18. अल्लाह तुममें से उन लोगों को भली-भाँति जानता है जो (युद्ध से) रोकते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं : "हमारे पास आ जाओ।" और वे लड़ाई में थोड़े ही आते हैं, (क्योंकि वे)

19. तुम्हारे साथ कृपणता से काम लेते हैं। अत: जब भय का समय आ जाता है, तो तुम उन्हें देखते हो कि वे तुम्हारी ओर इस प्रकार ताक रहे हैं कि उनकी आँखें चक्कर खा रही हैं, जैसे किसी व्यक्ति पर मौत की बेहोशी छा रही हो। किन्तु जब भय जाता रहता है तो वे माल के लोभ में तेज़ ज़बानें तुमपर चलाते हैं। ऐसे लोग ईमान लाए ही नहीं। अत: अल्लाह ने उनके कर्म उनकी जान को लागू कर दिए। और यह अल्लाह के लिए बहुत सरल है।

20. वे समझ रहे हैं कि (शत्रु के) सैन्य दल अभी गए नहीं हैं, और यदि वे गिरोह फिर आ जाएँ तो वे चाहेंगे कि किसी प्रकार बाहर (मरुस्थल में) बद्दुओं के साथ हो रहें और वहीं से तुम्हारे बारे में समाचार पूछते रहें। और यदि वे तुम्हारे साथ होते भी तो लड़ाई में हिस्सा थोड़े ही लेते।

21. निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है अर्थात उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे।

وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ۝ يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ
يَذْهَبُوا ۖ وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُمْ
بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ
كَانُوا فِيكُمْ مَا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ
فِي رَسُولِ اللّٰهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللّٰهَ وَ
الْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيرًا ۝ وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ
الْأَحْزَابَ قَالُوا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُولُهُ وَ
صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا
وَتَسْلِيمًا ۝ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا
عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ
مَنْ يَنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ۝ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ
الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ إِنْ شَاءَ
أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

22. और जब ईमानवालों ने सैन्य दलों को देखा तो वे पुकार उठे : "यह तो वही चीज़ है, जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था। और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था।" इस चीज़ ने उनके ईमान और आज्ञाकारिता ही को बढ़ाया।

23. ईमानवालों के रूप में ऐसे पुरुष मौजूद हैं कि जो प्रतिज्ञा उन्होंने अल्लाह से की थी उसे उन्होंने सच्चा कर दिखाया। फिर उनमें से कुछ तो अपना प्रण पूरा कर चुके और उनमें से कुछ प्रतीक्षा में हैं। और उन्होंने अपनी बात तनिक भी नहीं बदली।

24. ताकि इसके परिणामस्वरूप अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और कपटाचारियों को चाहे तो यातना दे या उनकी तौबा क़बूल करे। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۚ وَ
كَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ﴿٢٥﴾
وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ
وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ﴿٢٦﴾ وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطَئُوهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢٧﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ إِنْ
كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ
أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٢٨﴾ وَإِنْ كُنْتُنَّ
تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ
أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾ يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ
مَنْ يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ يُضَاعَفْ لَهَا
الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾

25. अल्लाह ने इनकार करनेवालों को उनके अपने क्रोध के साथ फेर दिया। वे कोई भलाई प्राप्त न कर सके। अल्लाह ने मोमिनों को युद्ध करने से बचा लिया। अल्लाह तो है ही बड़ा शक्तिवान, प्रभुत्वशाली।

26. और किताबवालों में से जिन लोगों ने उनकी[1] सहायता की थी, उन्हें उनकी गढ़ियों से उतार लाया। और उनके दिलों में धाक बिठा दी कि तुम एक गिरोह को जान से मारने लगे और एक गिरोह को बन्दी बनाने लगे।

27. और उसने तुम्हें उनके भू-भाग और उनके घरों और उनके मालों का वारिस बना दिया और उस भू-भाग का भी जिसे तुमने पददलित नहीं किया। वास्तव में अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

28. ऐ नबी! अपनी पत्नियों से कह दो कि "यदि तुम सांसारिक जीवन और उसकी शोभा चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ दे-दिलाकर भली रीति से विदा कर दूँ।

29. किन्तु यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो तो निश्चय ही अल्लाह ने तुममें से उत्तमकार स्त्रियों के लिए बड़ा प्रतिदान रख छोड़ा है।"

30. ऐ नबी की स्त्रियो! तुममें से जो कोई प्रत्यक्ष अनुचित कर्म करे तो उसके लिए दोहरी यातना होगी। और यह अल्लाह के लिए बहुत सरल है।

---

1. अर्थात ईमान लाने के लिए परोक्ष को देख लेने की शर्त वे नहीं लगाते।



31. किन्तु तुममें से जो अल्लाह और उसके रसूल के प्रति निष्ठापूर्वक आज्ञाकारिता की नीति अपनाए और अच्छा कर्म करे, उसे हम दोहरा प्रतिदान प्रदान करेंगे और उसके लिए हमने सम्मानपूर्ण आजीविका तैयार कर रखी है।

32. ऐ नबी की स्त्रियो ! तुम सामान्य स्त्रियों में से किसी की तरह नहीं हो, यदि तुम अल्लाह का डर रखो। अत: तुम्हारी बातों में लोच न हो कि वह व्यक्ति जिसके दिल में रोग है, वह लालच में पड़ जाए। तुम सामान्य रूप से बात करो।

33. अपने घरों में टिककर रहो और विगत अज्ञानकाल की-सी सज-धज न दिखाती फिरना। नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो। और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो। अल्लाह तो बस यही चाहता है कि ऐ नबी के घरवालो, तुमसे गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ रखे।

34. तुम्हारे घरों में अल्लाह की जो आयतें और तत्त्वदर्शिता की बातें[1] सुनाई जाती हैं उनकी चर्चा करती रहो। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।

35. मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम स्त्रियाँ, ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ, निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाले पुरुष और निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाली स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादी स्त्रियाँ, धैर्यवान पुरुष और धैर्य रखनेवाली स्त्रियाँ, विनम्रता दिखानेवाले पुरुष और विनम्रता दिखानेवाली स्त्रियाँ, सदक़ा (दान) देनेवाले पुरुष और सदक़ा देनेवाली स्त्रियाँ, रोज़ा

1. यहाँ तत्त्वदर्शिता से अभिप्रेत सभ्यता और शिष्टाचार की उत्तम शिक्षाएँ हैं।

الْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَ
الْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا
وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ
اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝ وَاِذْ
تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ
عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ
مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ
فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا
مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝ مَا كَانَ عَلَى
النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ

रखनेवाले पुरुष और रोज़ा रखनेवाली स्त्रियाँ, अपने गुप्तांगों की रक्षा करनेवाले पुरुष और रक्षा करनेवाली स्त्रियाँ और अल्लाह को अधिक याद करनेवाले पुरुष और याद करनेवाली स्त्रियाँ——इनके लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है।

36. न किसी ईमानवाले पुरुष और न किसी ईमानवाली स्त्री को यह अधिकार है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दें, तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार शेष रहे। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करे तो वह खुली गुमराही में पड़ गया।

37. याद करो (ऐ नबी), जबकि तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे जिसपर अल्लाह ने अनुकम्पा की, और तुमने भी जिसपर अनुकम्पा की कि "अपनी पत्नी को अपने पास रोके रखो और अल्लाह का डर रखो, और तुम अपने जी में उस बात को छिपा रहे हो जिसको अल्लाह प्रकट करनेवाला है। तुम लोगों से डरते हो, जबकि अल्लाह इसका ज़्यादा हक़ रखता है कि तुम उससे डरो।" अत: जब ज़ैद उससे अपनी ज़रूरत पूरी कर चुका तो हमने उसका तुमसे विवाह कर दिया, ताकि ईमानवालों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे जबकि वे उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें। अल्लाह का फ़ैसला तो पूरा होकर ही रहता है।

38. नबी पर उस काम में कोई तंगी नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए ठहराया हो। यही अल्लाह का दस्तूर उन लोगों के मामले में भी रहा है जो पहले गुज़र

فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا
مَّقْدُورًا ﴿٣٨﴾ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَ
يَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ
حَسِيبًا ﴿٣٩﴾ مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن
رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا ﴿٤٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا
كَثِيرًا ﴿٤١﴾ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِي
يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ
يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾ يَا أَيُّهَا
النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾ وَ
دَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا

منزل ٥

चुके हैं—— और अल्लाह का काम तो जँचा-तुला होता है।——

39. जो अल्लाह के संदेश पहुँचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे। और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है।——

40. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक[1] हैं। अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है।

41. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह को अधिक याद करो।

42. और प्रातःकाल और संध्या समय उसकी तसबीह करते रहो——

43. वही है जो तुमपर रहमत भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी (दुआएँ करते हैं) —— ताकि वह तुम्हें अँधेरों से प्रकाश की ओर निकाल लाए। वास्तव में, वह ईमानवालों पर बहुत दयालु है।

44. जिस दिन वे उससे मिलेंगे उनका अभिवादन होगा 'सलाम' और उनके लिए उसने प्रतिष्ठामय प्रतिदान तैयार कर रखा है।

45. ऐ नबी ! हमने तुमको साक्षी और शुभ सूचना देनेवाला और सचेत करनेवाला बनाकर भेजा है;

46. और अल्लाह की अनुज्ञा से उसकी ओर बुलानेवाला और प्रकाशमान प्रदीप बनाकर।

47. ईमानवालों को शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए अल्लाह की ओर से बहुत बड़ा उदार अनुग्रह है।

1. अर्थात अन्तिम नबी।

48. और इनकार करनेवालों और कपटाचारियों के कहने में न आना। उनकी पहुँचाई हुई तकलीफ़ का ख़याल न करो। और अल्लाह पर भरोसा रखो। अल्लाह इसके लिए काफ़ी है कि अपने मामले में उसपर भरोसा किया जाए।

49. ऐ ईमान लानेवालो! जब तुम ईमानवाली स्त्रियों से विवाह करो और फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो तुम्हारे लिए उनपर कोई इद्दत नहीं, जिसकी तुम गिनती करो। अत: उन्हें कुछ सामान दे दो और भली रीति से विदा कर दो।

تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا
نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ
فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ
اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ
يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ
وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَ
امْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ
اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ
قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ

50. ऐ नबी! हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी वे पत्नियाँ वैध कर दी हैं जिनके महर तुम दे चुके हो, और उन स्त्रियों को भी जो तुम्हारी मिल्कियत में आईं, जिन्हें अल्लाह ने ग़नीमत के रूप में तुम्हें दी और तुम्हारी चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामुओं की बेटियाँ और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की हैं और वह ईमानवाली स्त्री जो अपने आपको नबी के लिए दे दे, यदि नबी उससे विवाह करना चाहे। ईमानवालों से हटकर यह केवल तुम्हारे ही लिए है, हमें मालूम है जो कुछ हमने उनकी पत्नियों और उनकी लौंडियों के बारे में उनपर अनिवार्य किया है—— ताकि तुमपर कोई तंगी न रहे। अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयावान है।

51. तुम उनमें से जिसे चाहो अपने से अलग रखो और जिसे चाहो अपने

تَشَاءُ ۖ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ
ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ
بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ
بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ
حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ رَقِيبًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ
النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ
إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ
فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ
يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ
الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ
حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ

पास रखो, और जिनको तुमने अलग रखा हो उनमें से किसी के इच्छुक हो तो इसमें तुमपर कोई दोष नहीं, इससे इस बात की अधिक सम्भावना है कि उनकी आँखें ठण्डी रहें और वे शोकाकुल न हों और जो कुछ तुम उन्हें दो उसपर वे राज़ी रहें। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। अल्लाह सर्वज्ञ, बहुत सहनशील है।

52. इसके पश्चात तुम्हारे लिए दूसरी स्त्रियाँ वैध नहीं और न यह कि तुम उनकी जगह दूसरी पत्नियाँ ले आओ, यद्यपि उनका सौन्दर्य तुम्हें कितना ही भाए। उनकी बात और है जो तुम्हारी लौण्डियाँ हों। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि हर चीज़ पर है।

53. ऐ ईमान लानेवालो ! नबी के घरों में प्रवेश न करो, सिवाय इसके कि कभी तुम्हें खाने पर आने की अनुमति दी जाए। वह भी इस तरह कि उसकी (खाना पकने की) तैयारी की प्रतीक्षा में न रहो। अलबत्ता जब तुम्हें बुलाया जाए तो अन्दर जाओ, और जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ, बातों में लगे न रहो। निश्चय ही तुम्हारी यह हरकत नबी को तकलीफ़ देती है। किन्तु उन्हें तुमसे लज्जा आती है। किन्तु अल्लाह सच्ची बात कहने से लज्जा नहीं करता। और जब तुम उनसे[1] कुछ माँगों तो उनसे परदे के पीछे से माँगो। यह अधिक शुद्धता की बात है तुम्हारे दिलों के लिए और उनके दिलों के लिए भी। तुम्हारे लिए वैध नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुँचाओ

1. अर्थात नबी की पत्नियों से।

لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللّٰهِ وَلَآ أَنْ تَنْكِحُوٓا أَزْوٰجَهٗ
مِنْ بَعْدِهٖٓ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيمًا ۝
إِنْ تُبْدُوا شَيْـًٔا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآئِهِنَّ
وَلَآ إِخْوٰنِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ إِخْوٰنِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ
أَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمٰنُهُنَّ ۚ
وَاتَّقِينَ اللّٰهَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝
إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ
اٰمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ
يُؤْذُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَ
الْاٰخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ۝ وَالَّذِينَ
يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا
فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتٰنًا وَّإِثْمًا مُّبِينًا ۝ يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ

और न यह कि उसके बाद कभी उसकी पत्नियों से विवाह करो। निश्चय ही अल्लाह की दृष्टि में यह बड़ी गंभीर बात है।

54. तुम चाहे किसी चीज़ को व्यक्त करो या उसे छिपाओ, अल्लाह को तो हर चीज़ का ज्ञान है।

55. न उनके लिए अपने बापों के सामने होने में कोई दोष है और न अपने बेटों, न अपने भाइयों, न अपने भतीजों, न अपने भाज़ों, न अपने मेल की स्त्रियों और न जिनपर उन्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो उनके सामने होने में। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है।

56. निस्संदेह अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान लानेवालो, तुम भी उसपर रहमत भेजो और ख़ूब सलाम भेजो।

57. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को दुख पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत की है और उनके लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

58. और जो लोग ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को, बिना इसके कि उन्होंने कुछ किया हो (आरोप लगाकर), दुख पहुँचाते हैं, उन्होंने तो बड़े मिथ्यारोपण और प्रत्यक्ष गुनाह का बोझ अपने ऊपर उठा लिया।

59. ऐ नबी ! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और ईमानवाली स्त्रियों से



कह दो कि वे अपने ऊपर अपनी चादरों का कुछ हिस्सा लटका लिया करें। इससे इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जाएँ और सताई न जाएँ। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

60. यदि कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और मदीना में खलबली पैदा करनेवाली अफ़वाहें फैलानेवाले बाज़ न आएँ तो हम तुम्हें उनके विरुद्ध उभार खड़ा करेंगे। फिर वे उसमें तुम्हारे साथ थोड़ा ही रहने पाएँगे,

61. फिटकारे हुए होंगे। जहाँ कहीं पाए गए पकड़े जाएँगे और बुरी तरह जान से मारे जाएँगे।

62. यही अल्लाह की रीति रही है उन लोगों के विषय में भी जो पहले गुज़र चुके हैं। और तुम अल्लाह की रीति में कदापि परिवर्तन न पाओगे।

63. लोग तुमसे क़ियामत की घड़ी के बारे में पूछते हैं। कह दो : "उसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है। तुम्हें क्या मालूम? कदाचित वह घड़ी निकट ही हो।"

64. निश्चय ही अल्लाह ने इनकार करनेवालों पर लानत की है और उनके लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है,

65. जिसमें वे सदैव रहेंगे। न वे कोई निकटवर्ती समर्थक पाएँगे और न (दूर का) सहायक।

66. जिस दिन उनके चेहरे आग में उलटे-पलटे जाएँगे, वे कहेंगे : "क्या ही अच्छा होता कि हमने अल्लाह का आज्ञापालन किया होता और रसूल का आज्ञापालन किया होता!"

67. वे कहेंगे : "ऐ हमारे रब! वास्तव में हमने अपने सरदारों और अपने

وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ۝ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ
مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ
مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝
يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ
وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝
إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ
الْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا
وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۝
لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ
وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

बड़ों की आज्ञा का पालन किया और उन्होंने हमें मार्ग से भटका दिया।

68. ऐ हमारे रब! उन्हें दोहरी यातना दे और उनपर बड़ी लानत कर!"

69. ऐ ईमान लानेवालो! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा को दुख पहुँचाया, तो अल्लाह ने उससे जो कुछ उन्होंने कहा था उसे बरी कर दिया। वह अल्लाह के यहाँ बड़ा गरिमावान था।

70. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो और बात कहो ठीक सधी हुई।

71. वह तुम्हारे कर्मों को सँवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है।

72. हमने अमानत को आकाशों और धरती और पर्वतों के समक्ष प्रस्तुत किया, किन्तु उन्होंने उसके उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए। लेकिन मनुष्य ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह बड़ा ज़ालिम, आवेश के वशीभूत हो जानेवाला है।

73. ताकि अल्लाह कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी स्त्रियों और बहुदेववादी पुरुषों और बहुदेववादी स्त्रियों को यातना दे, और ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों पर अल्लाह कृपा-दृष्टि करे। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।



34. सबा

(मक्का में उतरी—— आयतें 54)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आकाशों में है और जो धरती में है। और आख़िरत में भी उसी के लिए प्रशंसा है। और वही तत्त्वदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।

2. वह जानता है जो कुछ धरती में प्रविष्ट होता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता और जो कुछ उसमें चढ़ता है। और वही अत्यन्त दयावान, क्षमाशील है।

3. जिन लोगों ने इनकार किया उनका कहना है कि "हमपर क़ियामत की घड़ी नहीं आएगी।" कह दो : "क्यों नहीं, मेरे परोक्ष ज्ञाता रब की क़सम! वह तो तुमपर आकर रहेगी—— उससे कणभर भी कोई चीज़ न तो आकाशों में ओझल है और न धरती में, और न इससे छोटी कोई चीज़ और न बड़ी। किन्तु वह एक स्पष्ट किताब में अंकित है।——

4. ताकि वह उन लोगों को बदला दे, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए। वही हैं जिनके लिए क्षमा और प्रतिष्ठामय आजीविका है।

5. रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को मात करने का प्रयास किया, वही हैं जिनके लिए बहुत ही बुरे प्रक़ार की दुखद यातना है।"

6. जिन लोगों को ज्ञान प्राप्त हुआ है वे स्वयं देखते हैं कि जो कुछ तुम्हारे

مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ
الْحَمِيْدِ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى
رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ
خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ
بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ
الْبَعِيْدِ ۝ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ
اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۗءِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا
فَضْلًا ۭ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ
الْحَدِيْدَ ۝ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا
صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ
غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ

रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है वही सत्य है, और वह उसका मार्ग दिखाता है जो प्रभुत्वशाली, प्रशंसा का अधिकारी है।

7. जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि "क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुम्हें खबर देता है कि जब तुम बिलकुल चूर्ण-विचूर्ण हो जाओगे तो तुम नवीन काय में जीवित होगे?"

8. क्या उसने अल्लाह पर झूठ घड़कर थोपा है, या उसे कुछ उन्माद है? नहीं, बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे यातना और परले दरजे की गुमराही में हैं।

9. क्या उन्होंने आकाश और धरती को नहीं देखा, जो उनके आगे भी हैं और उनके पीछे भी? यदि हम चाहें तो उन्हें धरती में धँसा दें या उनपर आकाश से कुछ टुकड़े गिरा दें। निश्चय ही इसमें एक निशानी है हर उस बन्दे के लिए जो रुजू करनेवाला हो।

10-11. हमने दाऊद को अपनी ओर से श्रेष्ठता प्रदान की थी : "ऐ पर्वतो! उसके साथ तसबीह को प्रतिध्वनित करो, और पक्षियो तुम भी!" और हमने उसके लिए लोहे को नर्म कर दिया कि "पूरी कवचें बना और कड़ियों को ठीक अंदाज़े से जोड़।"—और तुम अच्छा कर्म करो। निस्संदेह जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देखता हूँ।

12. और सुलैमान के लिए वायु को वशीभूत कर दिया था। प्रात: समय उसका चलना एक महीने की राह तक और सायंकाल को उसका चलना एक महीने की राह तक—और हमने उसके लिए पिघले हुए ताँबे का स्रोत बहा

الْقِطْرِ ۚ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ
وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾
يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَاسِيَاتٍ ۚ اعْمَلُوا آلَ دَاوُودَ شُكْرًا ۚ
وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ
الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ
مِنْسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ
الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾ لَقَدْ كَانَ
لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ
كُلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَ
رَبٌّ غَفُورٌ ﴿١٥﴾ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَ
أَثْلٍ وَشَيْءٍ مِنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿١٦﴾ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِمَا كَفَرُوا

दिया—— और जिन्नों में से भी कुछ को (उसके वशीभूत कर दिया था,) जो अपने रब की अनुज्ञा से उसके आगे काम करते थे। (हमारा आदेश था) : "उनमें से जो हमारे हुक्म से फिरेगा उसे हम भड़कती आग का मज़ा चखाएँगे।"

13. वे उसके लिए बनाते, जो कुछ वह चाहता——बड़े-बड़े भवन, प्रतिमाएँ, बड़े हौज़ जैसे थाल और जमी रहनेवाली देगें——"ऐ दाऊद के लोगो! कर्म करो, कृतज्ञता दिखाने के रूप में। मेरे बन्दों में कृतज्ञ थोड़े ही हैं।"

14. फिर जब हमने उसके लिए मौत का फ़ैसला लागू किया तो फिर उन जिन्नों को उसकी मौत का पता बस भूमि के उस कीड़े ने दिया जो उसकी लाठी को खा रहा था। फिर जब वह गिर पड़ा, तब जिन्नों पर प्रकट हुआ कि यदि वे परोक्ष के जाननेवाले होते तो इस अपमानजनक यातना में पड़े न रहते।

15. सबा के लिए उनके निवास-स्थान ही में एक निशानी थी——दाएँ और बाएँ दो बाग़ : "खाओ अपने रब की रोज़ी, और उसके प्रति आभार प्रकट करो। भूमि भी अच्छी-सी और रब भी क्षमाशील।"

16. किन्तु वे ध्यान में न लाए तो हमने उनपर बँध-तोड़ बाढ़ भेज दी और उनके दोनों बाग़ों के बदले में उन्हें दो दूसरे बाग़ दिएं, जिनमें कड़वे-कसैले फल और झाऊ थे, और कुछ थोड़ी-सी झड़-बेरियाँ।

17. यह बदला हमने उन्हें इसलिए दिया कि उन्होंने कृतघ्नता दिखाई। ऐसा

وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ۝ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ
الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا
السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ۝ فَقَالُوْا
رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ
اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ
ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ
لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ
مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝
قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ
فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ۝ وَلَا تَنْفَعُ
الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۭ حَتّٰٓي اِذَا فُزِّعَ عَنْ

बदला तो हम कृतघ्न लोगों को ही देते हैं।

18. और हमने उनके और उन बस्तियों के बीच जिनमें हमने बरकत रखी थी प्रत्यक्ष बस्तियाँ बसाई और उनमें सफ़र की मंज़िलें ख़ास अंदाज़े पर रखीं : "उनमें रात-दिन निश्चिन्त होकर चलो-फिरो !"

19. किन्तु उन्होंने कहा : "ऐ हमारे रब ! हमारी यात्राओं में दूरी कर दे।" उन्होंने स्वयं अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया। अन्ततः हम उन्हें (अतीत की) कहानियाँ बनाकर रहे, और उन्हें बिलकुल छिन्न-भिन्न कर डाला। निश्चय ही इसमें निशानियाँ हैं प्रत्येक बड़े धैर्यवान, कृतज्ञ के लिए।

20. इबलीस ने उनके विषय में अपना गुमान सत्य पाया और ईमानवालों के एक गिरोह के सिवा उन्होंने उसी का अनुसरण किया।

21. यद्यपि उसको उनपर कोई ज़ोर और अधिकार प्राप्त न था, किन्तु यह इसलिए कि हम उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से अलग जान लें[1] जो उसकी ओर से किसी संदेह में पड़े हुए हैं। तुम्हारा रब हर चीज़ का अभिरक्षक है।

22. कह दो : "अल्लाह को छोड़कर जिनका तुम्हें (उपास्य होने का) दावा है, उन्हें पुकार कर देखो। वे न आकाशों में कणभर चीज़ के मालिक हैं और न धरती में और न उन दोनों में उनका कोई साझा है और न उनमें से कोई उसका सहायक है।"

23. और उसके यहाँ कोई सिफ़ारिश काम नहीं आएगी, किन्तु उसी की जिसे उसने (सिफ़ारिश करने की) अनुमति दी हो। यहाँ तक कि जब उनके

1. अर्थात ईमानवालों को स्पष्टतः अलग कर दें।

قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ ۝ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ
اللّٰهُ ۙ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى أَوْ فِي ضَلٰلٍ مُبِينٍ ۝
قُلْ لَا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۖ وَهُوَ الْفَتَّاحُ
الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ ۖ كَلَّا ۚ
بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا كَافَّةً
لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝
وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝
قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا
تَسْتَقْدِمُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهٰذَا
الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ تَرٰى إِذِ الظّٰلِمُونَ
مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ

दिलों से घबराहट दूर हो जाएगी, तो वे कहेंगे : "तुम्हारे रब ने क्या कहा?" वे कहेंगे : "सर्वथा सत्य। और वह अत्यन्त उच्च, महान है।"

24. कहो : "कौन तुम्हें आकाशों और धरती से रोज़ी देता है?" कहो : "अल्लाह!" अब अवश्य ही हम हैं या तुम ही हो मार्ग पर, या खुली गुमराही में।

25. कहो : "जो अपराध हमने किए, उसकी पूछ तुमसे न होगी और न उसकी पूछ हमसे होगी जो तुम कर रहे हो।"

26. कह दो : "हमारा रब हम सबको इकट्ठा करेगा। फिर हमारे बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा। वही खूब फ़ैसला करनेवाला, अत्यन्त ज्ञानवान है।"

27. कहो : "मुझे उनको दिखाओ तो, जिनको तुमने साझीदार बनाकर उसके साथ जोड़ रखा है। कुछ नहीं, बल्कि वही अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।"

28. हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों को शुभ-सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

29. वे कहते हैं : "यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो?"

30. कह दो : "तुम्हारे लिए एक विशेष दिन की अवधि नियत है, जिससे न एक घड़ी भर पीछे हटोगे और न आगे बढ़ोगे।"

31. जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं : "हम इस क़ुरआन को कदापि न मानेंगे और न उसको जो इसके आगे है।"[1] और यदि तुम देख पाते जब

1. अर्थात उन किताबों को भी नहीं मानेंगे जो इससे पहले अवतरित हुई हैं।

الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ
بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا ۚ وَ
أَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ
فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۝ وَقَالُوا نَحْنُ
أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّي
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي

ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े कर दिए जाएँगे। वे आपस में एक-दूसरे पर इल्ज़ाम डाल रहे होंगे। जो लोग कमज़ोर समझे गए वे उन लोगों से जो बड़े बनते थे कहेंगे : "यदि तुम न होते तो हम अवश्य ही ईमानवाले होते।"

32. वे लोग जो बड़े बनते थे उन लोगों से जो कमज़ोर समझे गए थे, कहेंगे : "क्या हमने तुम्हें उस मार्गदर्शन से रोका था, जब वह तुम्हारे पास आया था? नहीं, बल्कि तुम स्वयं ही अपराधी हो।"

33. वे लोग जो कमज़ोर समझे गए थे बड़े बननेवालों से कहेंगे "नहीं, बल्कि रात-दिन की मक्कारी थी जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और दूसरों को उसका समकक्ष ठहराएँ।" जब वे यातना देखेंगे तो मन ही मन पछताएँगे और हम उन लोगों की गरदनों में जिन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई, तौक़ डाल देंगे। वे वही तो बदले में पाएँगे, जो वे करते रहे थे?

34. हमने जिस बस्ती में भी कोई सचेतकर्ता भेजा तो वहाँ के सम्पन्न लोगों ने यही कहा कि "जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है[1], हम तो उसको नहीं मानते।"

35. उन्होंने यह भी कहा कि "हम तो धन और संतान में तुमसे बढ़कर हैं और हम यातनाग्रस्त होनेवाले नहीं।"

36. कहो : "निस्संदेह मेरा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसे चाहता है नपी-तुली देता है। किन्तु अधिकांश लोग जानते नहीं।"

37. वह चीज़ न तुम्हारे धन हैं और न तुम्हारी संतान, जो तुम्हें हमसे निकट

1. अर्थात तुम्हारे अपने दावे के अनुसार तुम्हें जो कुछ देकर भेजा गया है।



कर दे। अलबत्ता, जो कोई ईमान लाया और उसने अच्छा कर्म किया, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए उसका कई गुना बदला है, जो उन्होंने किया। और वे ऊपरी मंज़िल के कक्षों में निश्चिन्तता-पूर्वक रहेंगे।

38. रहे वे लोग जो हमारी आयतों को मात करने के लिए प्रयासरत हैं, वे लाकर यातनाग्रस्त किए जाएँगे।

39. कह दो : "मेरा रब ही है जो अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।"

40. याद करो जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा, फिर फ़रिश्तों से कहेगा : "क्या तुम्हीं को ये पूजते रहे हैं?"

41. वे कहेंगे : "महान है तू, हमारा निकटता का मधुर सबंध तो तुझी से है, उनसे नहीं; बल्कि बात यह है कि वे जिन्नों को पूजते थे। उनमें से अधिकतर उन्हीं पर ईमान रखते थे।"

42. "अत: आज न तो तुम परस्पर एक-दूसरे के लाभ का अधिकार रखते हो और न हानि का।" और हम उन ज़ालिमों से कहेंगे : "अब उस आग की यातना का मज़ा चखो, जिसे तुम झुठलाते रहे हो।"

43. उन्हें जब हमारी स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं : "यह तो बस ऐसा व्यक्ति है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनको तुम्हारे बाप-दादा पूजते रहे हैं।" और कहते हैं : "यह तो एक घड़ा हुआ झूठ है।"

مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ۗ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ
لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ
نَّذِيْرٍ ۝ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ
مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۗ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ قُلْ اِنَّمَآ
اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ
تَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ
بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ۝ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ
فَهُوَ لَكُمْ ۗ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيْدٌ ۝ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝
قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ۝ قُلْ اِنْ
ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا
يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا

जिन लोगों ने इनकार किया उन्होंने सत्य के विषय में, जबकि वह उनके पास आया, कह दिया : "यह तो बस एक प्रत्यक्ष जादू है ।"

44. हमने उन्हें न तो किताबें दी थीं, जिनको वे पढ़ते हों और न तुमसे पहले उनकी ओर कोई सावधान करनेवाला ही भेजा था ।

45. और झुठलाया उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे । और जो कुछ हमने उन्हें दिया था ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे हैं । तो उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया । तो फिर कैसी रही मेरी यातना !

46. कहो : "मैं तुम्हें बस एक बात की नसीहत करता हूँ कि अल्लाह के लिए दो-दो और एक-एक करके उठ खड़े हो; फिर विचार करो । तुम्हारे साथी को कोई उन्माद नहीं है ।[1] वह तो एक कठोर यातना से पहले तुम्हें सचेत करनेवाला ही है ।"

47. कहो : "मैं तुमसे कोई बदला नहीं माँगता वह तुम्हें ही मुबारक हो । मेरा बदला तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है और वह हर चीज़ का साक्षी है ।"

48-49. कहो : "निश्चय ही मेरा रब सत्य को असत्य पर ग़ालिब करता है । वह परोक्ष की बातें भली-भाँति जानता है ।" कह दो : "सत्य आ गया (असत्य मिट गया) और असत्य न तो आरंभ करता है और न पुनरावृत्ति ही ।"

50. कहो : "यदि मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँ तो पथभ्रष्ट होकर मैं अपना ही बुरा करूँगा, और यदि मैं सीधे मार्ग पर हूँ, तो इसका कारण वह प्रकाशना है जो मेरा रब मेरी ओर करता है । निस्संदेह वह सबकुछ सुनता है, निकट है ।"

---

1. अर्थात हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को कोई उन्माद नहीं है, बल्कि वे सच्चे पैग़म्बर हैं ।



51. और यदि तुम देख लेते जब वे घबराए हुए होंगे; फिर बचकर भाग न सकेंगे और निकट स्थान ही से पकड़ लिए जाएँगे।

52. और कहेंगे : "हम उसपर ईमान ले आए।" हालाँकि उनके लिए कहाँ संभव है कि इतने दूरस्थ स्थान से उसको पा सकें।

53. इससे पहले तो उन्होंने उसका इनकार किया और दूरस्थ स्थान से बिन देखे तीर-तुक्के चलाते रहे।

54. उनके और उनकी चाहतों के बीच रोक लगा दी जाएगी; जिस प्रकार इससे पहले उनके सहमार्गी लोगों के साथ मामला किया गया। निश्चय ही वे डाँवाडोल कर देनेवाले संदेह में पड़े रहे हैं।

35. फ़ातिर

(मक्का में उतरी— आयतें 45)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो आकाशों और धरती का पैदा करनेवाला है। दो-दो, तीन-तीन और चार-चार फ़रिश्ते को बाज़ुओंवाले संदेशवाहक बनाकर नियुक्त करता है। वह संरचना में जैसी चाहता है, अभिवृद्धि करता है। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

2. अल्लाह जो दयालुता लोगों के लिए खोल दे उसे कोई रोकनेवाला नहीं और जिसे वह रोक ले तो उसके बाद उसे कोई जारी करनेवाला भी नहीं। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

3. ऐ लोगो! अल्लाह की तुमपर जो अनुकम्पा है, उसे याद करो। क्या

خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝ وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ
كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝ إِنَّ الشَّيْطَانَ
لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا
مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَ
أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ أَفَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا ۖ
فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۖ
فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرَاتٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
بِمَا يَصْنَعُونَ ۝ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ
سَحَابًا فَسُقْنَاهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ

अल्लाह के सिवा कोई और पैदा करनेवाला है, जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी देता हो? उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। तो तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो?

4. और यदि वे तुम्हें झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी कितने ही रसूल झुठलाए जा चुके हैं। सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

5. ऐ लोगो! निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। अतः सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाले और न वह धोखेबाज़ अल्लाह के विषय में तुम्हें धोखा दे।

6. निश्चय ही शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम उसे शत्रु ही समझो। वह तो अपने गिरोह को केवल इसी लिए बुला रहा है कि वे दहकती आगवालों में सम्मिलित हो जाएँ।

7. वे लोग कि जिन्होंने इनकार किया उनके लिए कठोर यातना है। किन्तु जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है।

8. फिर क्या वह व्यक्ति जिसके लिए उसका बुरा कर्म सुहाना बना दिया गया हो और वह उसे अच्छा दिख रहा हो (तो क्या वह बुराई को छोड़ेगा)? निश्चय ही अल्लाह जिसे चाहता है मार्ग से वंचित रखता है और जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है। अतः उनपर अफ़सोस करते-करते तुम्हारी जान न जाती रहे। अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वे रच रहे हैं।

9. अल्लाह ही तो है जिसने हवाएँ चलाईं फिर वह बादलों को उभारती हैं, फिर हम उसे किसी शुष्क और निर्जीव भूभाग की ओर ले गए, और उसके

بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَٰلِكَ النُّشُورُ ﴿٩﴾ مَن كَانَ يُرِيدُ
الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۚ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ
الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ
السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ
يَبُورُ ﴿١٠﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ
جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا
بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِن مُّعَمَّرٍ وَلَا يُنقَصُ مِنْ عُمُرِهِ
إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾ وَمَا
يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ
وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۖ وَمِن كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَ
تَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ
مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾
يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَ

द्वारा हमने धरती को उसके मुर्दा हो जाने के पश्चात जीवित कर दिया। इसी प्रकार (लोगों का नए सिरे से) जीवित होकर उठना भी है।

10. जो कोई प्रभुत्व चाहता हो तो प्रभुत्व तो सारा का सारा अल्लाह के लिए है। उसी की ओर अच्छा-पवित्र बोल चढ़ता है और अच्छा कर्म उसे ऊँचा उठाता है। रहे वे लोग जो बुरी चालें चलते हैं, उनके लिए कठोर यातना है और उनकी चालबाज़ी मलियामेट होकर रहेगी।

11. अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। उसके ज्ञान के बिना न कोई स्त्री गर्भवती होती है और न जन्म देती है। और जो कोई आयु को प्राप्त करनेवाला आयु को प्राप्त करता है और जो कुछ उसकी आयु में कमी होती है अनिवार्यतः यह सब एक किताब में लिखा होता है। निश्चय ही यह सब अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।

12. दोनों सागर समान नहीं, यह मीठा सुस्वादु है जिससे प्यास जाती रहे, पीने में रुचिकर। और यह खारा-कड़ुआ है। और तुम प्रत्येक में से तरोताज़ा माँस खाते हो और आभूषण निकालते हो, जिसे तुम पहनते हो। और तुम नौकाओं को देखते हो कि चीरती हुई उसमें चली जा रही हैं, ताकि तुम उसका उदार अनुग्रह तलाश करो और कदाचित तुम आभारी बनो।

13. वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता



है। उसने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रखा है। प्रत्येक एक नियत समय पूरी करने के लिए चल रहा है। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। उसी की बादशाही है। उससे हटकर जिनको तुम पुकारते हो वे एक तिनके के भी मालिक नहीं।

14. यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनेंगे नहीं। और यदि वे सुनते तो भी तुम्हारी याचना स्वीकार न कर सकते और क़ियामत के दिन वे तुम्हारे साझी ठहराने का इनकार कर देंगे। पूरी ख़बर रखनेवाला (अल्लाह) की तरह तुम्हें कोई न बताएगा।

15. ऐ लोगो! तुम्हीं अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह तो निस्पृह, स्वप्रशंसित है।

16. यदि वह चाहे तो तुम्हें हटा दे और एक नई संसृति ले आए।

17. और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं।

18. कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। और यदि कोई बोझ से दबा हुआ व्यक्ति अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से कुछ भी न उठाया जाएगा, यद्यपि वह निकट का संबंधी ही क्यों न हो। तुम तो केवल सावधान कर रहे हो। जो परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं और नमाज़ के पाबन्द हो चुके हैं (उनकी आत्मा का विकास हो गया)। और जिसने स्वयं को विकसित किया वह अपने ही भले के लिए अपने आपको विकसित करेगा। और पलटकर जाना तो अल्लाह ही की ओर है।

19. अंधा और आँखोंवाला बराबर नहीं,

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۙ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۚ
وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝ اِنْ اَنْتَ
اِلَّا نَذِيْرٌ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ
مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ۝ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا
اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ
اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ
وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ۝ اِنَّ

20-23. और न अँधेरे और प्रकाश, और न छाया और धूप और न जीवित और मृत बराबर हैं। निश्चय ही अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है। तुम उन लोगों को नहीं सुना सकते, जो क़ब्रों में हों। तुम तो बस एक सचेतकर्ता हो।

24. हमने तुम्हें सत्य के साथ भेजा है, शुभ-सूचना देनेवाला और सचेतकर्ता बनाकर। और जो भी समुदाय गुज़रा है, उसमें अनिवार्यतः एक सचेतकर्ता हुआ है।

25. यदि वे तुम्हें झुठलाते हैं तो जो उनसे पहले थे वे भी झुठला चुके हैं। उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण और ज़बूरें[1] और प्रकाशमान किताब लेकर आए थे।

26. फिर मैंने उन लोगों को, जिन्होंने इनकार किया, पकड़ लिया (तो फिर कैसा रहा मेरा इनकार !)।

27. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी बरसाया, फिर उसके द्वारा हमने फल निकाले, जिनके रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं? और पहाड़ों में भी श्वेत और लाल विभिन्न रंगों की धारियाँ पाई जाती हैं, और भुजंग काली भी।

28. और मनुष्यों और जानवरों और चौपायों के रंग भी इसी प्रकार भिन्न हैं। अल्लाह से डरते तो उसके वही बन्दे हैं, जो बाख़बर हैं। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, क्षमाशील है।

---

1. ज़बूरों से अभिप्राय वे ईश्वरीय ग्रंथ हैं, जिनमें अधिकतर उपदेश और तत्त्वज्ञान की बातें हृदयस्पर्शी और प्रभावकारी शैली में बयान हुई हैं।



29. निश्चय ही जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, इस हाल में कि नमाज़ के पाबन्द हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से छिपे और खुले ख़र्च किया है, वे एक ऐसे व्यापार की आशा रखते हैं जो कभी तबाह न होगा।

30. परिणामस्वरूप वह उन्हें उनके प्रतिदान पूरे-पूरे दे और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक भी प्रदान करे। निस्संदेह वह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त गुणग्राहक है।

31. जो किताब हमने तुम्हारी ओर प्रकाशना द्वारा भेजी है, वही सत्य है। अपने से पहले (की किताबों) की पुष्टि में है। निश्चय ही अल्लाह अपने बन्दों की ख़बर पूरी रखनेवाला, देखनेवाला है।

32. फिर हमने इस किताब का उत्तराधिकारी उन लोगों को बनाया, जिन्हें हमने अपने बन्दों में से चुन लिया है। अब कोई तो उनमें से अपने आप पर ज़ुल्म करता है और कोई उनमें से मध्य श्रेणी का है और कोई उनमें से अल्लाह के कृपायोग से भलाइयों में अग्रसर है। यही है बड़ी श्रेष्ठता।—

33. सदैव रहने के बाग़ हैं, जिनमें वे प्रवेश करेंगे। वहाँ उन्हें सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किया जाएगा। और वहाँ उनका वस्त्र रेशम होगा।

34. और वे कहेंगे : "सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे ग़म दूर कर दिया। निश्चय ही हमारा रब अत्यन्त क्षमाशील, बड़ा गुणग्राहक है।

35. जिसने हमें अपने उदार अनुग्रह से रहने के ऐसे घर में उतारा जहाँ न हमें

يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ
لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ
عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۝ وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ
فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا
نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَ
جَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ۝
إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي
الْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ
كُفْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ
كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ
تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ
الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا

कोई मशक़्क़त उठानी पड़ती है और न हमें कोई थकान ही आती है।"

36. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनका काम तमाम किया जाएगा कि मर जाएँ और न उनसे उसकी यातना ही कुछ हल्की की जाएगी। हम ऐसा ही बदला प्रत्येक अकृतज्ञ को देते हैं।

37. वे वहाँ चिल्लाएँगे कि "ऐ हमारे रब! हमें निकाल ले। हम अच्छा कर्म करेंगे, उससे भिन्न जो हम करते रहे।" "क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी कि जिसमें कोई होश में आना चाहता तो होश में आ जाता? और तुम्हारे पास सचेतकर्ता भी आया था, तो अब मज़ा चखते रहो! ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं!"

38. निस्संदेह अल्लाह आकाशों और धरती की छिपी बात को जानता है। वह तो सीनों तक की बात जानता है।

39. वही तो है जिसने तुम्हें धरती में ख़लीफ़ा बनाया[1]। अब जो कोई इनकार करेगा, उसके इनकार का वबाल उसी पर है। इनकार करनेवालों का इनकार उनके रब के यहाँ केवल प्रकोप ही को बढ़ाता है, और इनकार करनेवालों का इनकार केवल घाटे में ही अभिवृद्धि करता है।

40. कहो : "क्या तुमने अपने ठहराए हुए साझीदारों का अवलोकन भी किया, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने धरती का कौन-सा भाग पैदा किया है या आकाशों में उनकी कोई भागीदारी है?" या

1. अर्थात उत्तराधिकारी। मानव धरती पर निरन्तर आबाद है। उसके लोग एक-दूसरे के उत्तराधिकारी होते चले आ रहे हैं।

فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ
اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَاۤ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ
بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى
الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۝
اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ
السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ
فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ
تَحْوِيْلًا ۝ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا
فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ

हमने उन्हें कोई किताब दी है कि उसका कोई स्पष्ट प्रमाण उनके पक्ष में हो? नहीं, बल्कि वे ज़ालिम आपस में एक-दूसरे से केवल धोखे का वादा कर रहे हैं।

41. अल्लाह ही आकाशों और धरती को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ और यदि वे टल जाएँ तो उसके पश्चात कोई भी नहीं जो उन्हें थाम सके। निस्संदेह, वह बहुत सहनशील, क्षमा करनेवाला है।

42-43. उन्होंने अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाई थीं कि यदि उनके पास कोई सचेतकर्ता आए तो वे समुदायों में से प्रत्येक से बढ़कर सीधे मार्ग पर होंगे। किन्तु जब उनके पास एक सचेतकर्ता आ गया तो इस चीज़ ने धरती में उनके घमंड और बुरी चालों के कारण उनकी नफ़रत ही में अभिवृद्धि की, हालाँकि बुरी चाल अपने ही लोगों को घेर लेती है। तो अब क्या जो रीति अगलों के सिलसिले में रही है वे बस उसी रीति की प्रतीक्षा कर रहे हैं? तो तुम अल्लाह की रीति में कदापि कोई परिवर्तन न पाओगे और न तुम अल्लाह की रीति को कभी टलते ही पाओगे।

44. क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ है जो उनसे पहले गुज़रे हैं? हालाँकि वे शक्ति में उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे। अल्लाह ऐसा नहीं कि आकाशों में कोई चीज़ उसे मात कर सके और न धरती ही में। निस्संदेह वह सर्वज्ञ, सामर्थ्यवान है।

45. यदि अल्लाह लोगों को उनकी कमाई के कारण पकड़ने पर आ जाए तो इस धरती की पीठ पर किसी जीवधारी को भी न छोड़े। किन्तु वह उन्हें एक


ٱللَّهُ ٱلنَّاسَ بِمَا كَسَبُوا۟ مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن
دَآبَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا
جَآءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِۦ بَصِيرًۢا ﴿٤٥﴾

سُورَةُ يسٓ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

يسٓ ﴿١﴾ وَٱلْقُرْءَانِ ٱلْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّكَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٣﴾ عَلَىٰ
صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤﴾ تَنزِيلَ ٱلْعَزِيزِ ٱلرَّحِيمِ ﴿٥﴾ لِتُنذِرَ قَوْمًا
مَّآ أُنذِرَ ءَابَآؤُهُمْ فَهُمْ غَٰفِلُونَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ ٱلْقَوْلُ عَلَىٰٓ
أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾ إِنَّا جَعَلْنَا فِىٓ أَعْنَٰقِهِمْ أَغْلَٰلًا
فَهِىَ إِلَى ٱلْأَذْقَانِ فَهُم مُّقْمَحُونَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنۢ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَٰهُمْ فَهُمْ
لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩﴾ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾ إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلذِّكْرَ وَخَشِىَ ٱلرَّحْمَٰنَ

नियत समय तक ढील देता है, फिर जब उनका नियत समय आ जाता है तो निश्चय ही अल्लाह तो अपने बन्दों को देख ही रहा है।[1]

36. या०सीन०

(मक्का में उतरी—आयतें 83)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. या० सीन०

2-6. गवाह है हिकमतवाला क़ुरआन—कि तुम निश्चय ही रसूलों में से हो एक सीधे मार्ग पर—क्या ही ख़ूब है प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान का इसको अवतरित करना! ताकि तुम ऐसे लोगों को सावधान करो, जिनके बाप-दादा को सावधान नहीं किया गया; इस कारण वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

7-8. उनमें से अधिकतर लोगों पर बात सत्यापित हो चुकी है। अत: वे ईमान नहीं लाएँगे। हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं जो उनकी ठोड़ियों से लगे हैं। अत: उनके सिर ऊपर को उचके हुए हैं।

9. और हमने उनके आगे एक दीवार खड़ी कर दी है और एक दीवार उनके पीछे भी। इस तरह हमने उन्हें ढाँक दिया है। अत: उन्हें कुछ सुझाई नहीं देता।

10. उनके लिए बराबर है तुमने उन्हें सचेत किया या उन्हें सचेत नहीं किया, वे ईमान नहीं लाएँगे।

11. तुम तो बस सावधान कर रहे हो। जो कोई अनुस्मृति का अनुसरण करे

---

1. अर्थात वह उनके साथ वही नीति अपनाएगा जिसके वे योग्य होंगे। इस समय यदि उनको वह पकड़ नहीं रहा है तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वह उनकी करतूतों से बेख़बर है। यह तो एक मुहलत दी गई है, ताकि सँभलना चाहें तो सँभल जाएं।

بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ
الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ
فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ
إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ
فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُرْسَلُونَ ۝
قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِنْ
شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ۝ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ
إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ۝ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝
قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ
لَيَمَسَّنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ ۚ
أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ ۝ وَجَاءَ مِنْ
أَقْصَى الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝
اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۝

और परोक्ष में रहते हुए रहमान से डरे, अतः उसे क्षमा और प्रतिष्ठामय बदले की शुभ सूचना दे दो।

12. निस्संदेह हम मुर्दों को जीवित करेंगे और हम लिखेंगे जो कुछ उन्होंने आगे के लिए भेजा और उनके चिह्नों को (जो पीछे रहा)। हर चीज़ हमने एक स्पष्ट किताब में गिन रखी है।

13. उनके लिए बस्तीवालों की एक मिसाल पेश करो, जबकि वहाँ भेजे हुए दूत आए।

14. जबकि हमने उनकी ओर दो दूत भेजे, तो उन्होंने उनको झुठला दिया। तब हमने एक तीसरे के द्वारा शक्ति पहुँचाई, तो उन्होंने कहा : "हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं।"

15. वे बोले : "तुम तो बस हमारे ही जैसे मनुष्य हो। रहमान ने तो कोई भी चीज़ अवतरित नहीं की है। तुम केवल झूठ बोलते हो।"

16-17. उन्होंने कहा : "हमारा रब जानता है कि हम निश्चय ही तुम्हारी ओर भेजे गए हैं और हमारी ज़िम्मेदारी तो केवल स्पष्ट रूप से संदेश पहुँचा देने की है।"

18. वे बोले : "हम तो तुम्हें अपशकुन समझते हैं, यदि तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें पथराव करके मार डालेंगे और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से दुखद यातना पहुँचेगी।"

19. उन्होंने कहा : "तुम्हारा अपशकुन तो तुम्हारे अपने ही साथ है। क्या यदि तुम्हें याददिहानी कराई जाए (तो यह कोई क्रुद्ध होने की बात है)? नहीं, बल्कि तुम मर्यादाहीन लोग हो।"

20-21. इतने में नगर के दूरवर्ती सिरे से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया। उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! उनका अनुवर्तन करो, जो भेजे गए हैं। उनका अनुवर्तन करो जो तुमसे कोई बदला नहीं माँगते और वे सीधे मार्ग पर हैं।"



وَمَا لِيَ لَآ أَعۡبُدُ ٱلَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيۡهِ تُرۡجَعُونَ
ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدۡنِ ٱلرَّحۡمَٰنُ بِضُرّٖ لَّا
تُغۡنِ عَنِّي شَفَٰعَتُهُمۡ شَيۡـٔٗا وَلَا يُنقِذُونِ إِنِّيٓ إِذٗا
لَّفِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٍ إِنِّيٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمۡ فَٱسۡمَعُونِ
قِيلَ ٱدۡخُلِ ٱلۡجَنَّةَۖ قَالَ يَٰلَيۡتَ قَوۡمِي يَعۡلَمُونَ بِمَا
غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ ٱلۡمُكۡرَمِينَ وَمَآ أَنزَلۡنَا
عَلَىٰ قَوۡمِهِۦ مِنۢ بَعۡدِهِۦ مِن جُندٖ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَمَا كُنَّا
مُنزِلِينَ إِن كَانَتۡ إِلَّا صَيۡحَةٗ وَٰحِدَةٗ فَإِذَا هُمۡ
خَٰمِدُونَ يَٰحَسۡرَةً عَلَى ٱلۡعِبَادِۚ مَا يَأۡتِيهِم مِّن
رَّسُولٍ إِلَّا كَانُواْ بِهِۦ يَسۡتَهۡزِءُونَ أَلَمۡ يَرَوۡاْ كَمۡ أَهۡلَكۡنَا
قَبۡلَهُم مِّنَ ٱلۡقُرُونِ أَنَّهُمۡ إِلَيۡهِمۡ لَا يَرۡجِعُونَ وَإِن
كُلّٞ لَّمَّا جَمِيعٞ لَّدَيۡنَا مُحۡضَرُونَ وَءَايَةٞ لَّهُمُ ٱلۡأَرۡضُ
ٱلۡمَيۡتَةُ أَحۡيَيۡنَٰهَا وَأَخۡرَجۡنَا مِنۡهَا حَبّٗا فَمِنۡهُ

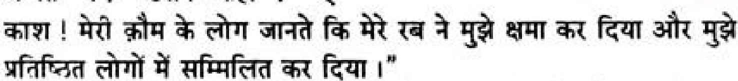
22. "और मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी बन्दगी न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया और उसी की ओर तुम्हें लौटकर जाना है ?

23. क्या मैं उससे इतर दूसरे उपास्य बना लूँ ? यदि रहमान मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम नहीं आ सकती और न वे मुझे छुड़ा ही सकते हैं।

24. तब तो मैं अवश्य स्पष्ट गुमराही में पड़ जाऊँगा।

25. मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ले आया, अत: मेरी सुनो !"

26-27. कहा गया : "प्रवेश करो जन्नत में !" उसने कहा : "ऐ काश ! मेरी क़ौम के लोग जानते कि मेरे रब ने मुझे क्षमा कर दिया और मुझे प्रतिष्ठित लोगों में सम्मिलित कर दिया।"



28. उसके पश्चात उसकी क़ौम पर हमने आकाश से कोई सेना नहीं उतारी और हम इस तरह उतारा नहीं करते।

29. वह तो केवल एक प्रचण्ड चीत्कार थी। तो सहसा क्या देखते हैं कि वे बुझकर रह गए।

30. ऐ अफ़सोस बन्दों पर ! जो रसूल भी उनके पास आया, वे उसका परिहास ही करते रहे।

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितनी ही नस्लों को हमने विनष्ट किया कि वे उनकी ओर पलटकर नहीं आएँगे ?

32. और जितने भी हैं, सबके सब हमारे ही सामने उपस्थित किए जाएँगे।

33. और एक निशानी उनके लिए मृत भूमि है। हमने उसे जीवित किया और उससे अनाज निकाला, तो वे खाते हैं।

يَأْكُلُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّٰتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَٰبٍ
وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝ لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ
وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۚ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ سُبْحَٰنَ الَّذِي
خَلَقَ الْأَزْوَٰجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنۢبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ
وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَءَايَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ
فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ
ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَٰهُ مَنَازِلَ
حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنۢبَغِي لَهَا
أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ
فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَءَايَةٌ لَّهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ
فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِۦ مَا
يَرْكَبُونَ ۝ وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا
هُمْ يُنقَذُونَ ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَٰعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

34-35. और हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और उसमें स्रोत प्रवाहित किए; ताकि वे उसके फल खाएँ—हालाँकि यह सब कुछ उनके हाथों का बनाया हुआ नहीं है।—तो क्या वे आभार नहीं प्रकट करते ?

36. महिमावान है वह जिसने सबके जोड़े पैदा किए धरती जो चीज़ें उगाती है उनमें से भी और स्वयं उनकी अपनी जाति में से भी और उन चीज़ों में से भी जिनको वे नहीं जानते।

37. और एक निशानी उनके लिए रात है। हम उसपर से दिन को खींच लेते हैं। फिर क्या देखते हैं कि वे अँधेरे में रह गए।

38. और सूर्य अपने नियत ठिकाने के लिए चला जा रहा है। यह बाँधा हुआ हिसाब है प्रभुत्वशाली, ज्ञानवान का।

39. और रहा चन्द्रमा, तो उसकी नियति हमने मंज़िलों के क्रम में रखी, यहाँ तक कि वह फिर खजूर की पुरानी टेढ़ी टहनी के सदृश हो जाता है।

40. न सूर्य ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से आगे बढ़ सकती है। सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं।

41. और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनके अनुवर्तियों को भरी हुई नौका में सवार किया।

42. और उनके लिए उसी के सदृश और भी ऐसी चीज़ें पैदा कीं, जिनपर वे सवार होते हैं।

43. और यदि हम चाहें तो उन्हें डुबो दें। फिर न तो उनकी कोई चीख-पुकार हो और न उन्हें बचाया जा सके।

44. यह तो बस हमारी दयालुता और एक नियत समय तक की सुख-सामग्री है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ
أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا
أَنُطْعِمُ مَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي
ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً
وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا
هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ۝ قَالُوا
يَا وَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ
الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِنْ كَانَتْ إِلَّا
صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝

45. और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का डर रखो, जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है, ताकि तुमपर दया की जाए ! (तो चुप्पी साध लेते हैं) ।

46. उनके पास उनके रब की आयतों में से जो आयत भी आती है, वे उससे कतराते ही हैं ।

47. और जब उनसे कहा जाता है कि "अल्लाह ने जो कुछ रोज़ी तुम्हें दी है उनमें से ख़र्च करो ।" तो जिन लोगों ने इनकार किया है, वे उन लोगों से, जो ईमान लाए हैं, कहते हैं : "क्या हम उसको खाना खिलाएँ जिसे यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं खिला देता ? तुम तो बस खुली गुमराही में पड़े हो ।"

48. और वे कहते हैं कि "यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो ?"

49. वे तो बस एक प्रचण्ड चीत्कार की प्रतीक्षा में हैं, जो उन्हें आ पकड़ेगी, जबकि वे झगड़ते होंगे ।

50. फिर न तो वे कोई वसीयत कर पाएँगे और न अपने घरवालों की ओर लौट ही सकेंगे ।

51. और नरसिंघा में फूँक मारी जाएगी । फिर क्या देखेंगे कि वे क़ब्रों से निकलकर अपने रब की ओर चल पड़े हैं ।

52. कहेंगे : "ऐ अफ़सोस हम पर ! किसने हमें सोते से जगा दिया ? यह वही चीज़ है जिसका रहमान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था ।"

53. बस एक ज़ोर की चिंघाड़ होगी । फिर क्या देखेंगे कि वे सबके-सब हमारे सामने उपस्थित कर दिए गए ।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ
شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى
الْاَرَاۗىِٕكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ
مَّا يَدَّعُوْنَ ۝ سَلٰمٌ ۣ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝ وَامْتَازُوا
الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ۝ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝
وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ۭ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا
تَعْقِلُوْنَ ۝ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝
اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ
عَلٰٓي اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَاۗءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓي

54. अब आज किसी जीव पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदले में वही मिलेगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

55. निश्चय ही जन्नतवाले आज किसी न किसी काम में व्यस्त आनन्द ले रहे हैं।

56. वे और उनकी पत्नियाँ छायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए हैं,

57. उनके लिए वहाँ मेवे हैं। और उनके लिए वह सब कुछ मौजूद है, जिसकी वे माँग करें।

58. (उनपर) सलाम है, दयामय रब का उच्चारित किया हुआ।

59. "और ऐ अपराधियो ! आज तुम छँटकर अलग हो जाओ।

60. क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं की थी, ऐ आदम के बेटो ! कि शैतान की बन्दगी न करो।——वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

61. और यह कि मेरी बन्दगी करो ? यही सीधा मार्ग है।

62. उसने तो तुममें से बहुत-से गिरोहों को पथभ्रष्ट कर दिया। तो क्या तुम बुद्धि नहीं रखते थे ?

63. यह वही जहन्नम है जिसकी तुम्हें धमकी दी जाती रही है।

64. जो इनकार तुम करते रहे हो, उसके बदले में आज इसमें प्रविष्ट हो जाओ।"

65. आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और जो कुछ वे कमाते रहे हैं, उनके पाँव उसकी गवाही देंगे।

66. यदि हम चाहें तो उनकी आँखें मेट दें[1] क्योंकि वे (अपने रूढ़) मार्ग की

1. अर्थात अंधा कर दें।



ओर लपके हुए हैं। फिर उन्हें सुझाई कहाँ से देगा?

67-68. यदि हम चाहें तो उनकी जगह पर ही उनके रूप बिगाड़कर रख दें क्योंकि वे सत्य की ओर न चल सके और वे (गुमराही से) बाज़ नहीं आते। जिसको हम दीर्घायु देते हैं, उसको उसकी संरचना में उल्टा फेर देते हैं। तो क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते हैं?

69. हमने उस (नबी) को कविता नहीं सिखाई और न वह उसके लिए शोभनीय है। वह तो केवल अनुस्मृति और स्पष्ट क़ुरआन है;

70. ताकि वह उसे सचेत कर दे जो जीवन्त हो और इनकार करनेवालों पर (यातना की) बात सत्यापित हो जाए।

71. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने उनके लिए अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ों में से चौपाए पैदा किए और अब वे उनके मालिक हैं?

72-73. और उन्हें उनके बस में कर दिया कि उनमें से कुछ तो उनकी सवारियाँ हैं और उनमें से कुछ को वे खाते हैं। और उनके लिए उनमें कितने ही लाभ हैं और पेय भी हैं। तो क्या वे कृतज्ञता नहीं दिखलाते?

74-75. उन्होंने अल्लाह से इतर कितने ही उपास्य बना लिए हैं कि शायद उन्हें मदद पहुँचे। वे उनकी सहायता करने की सामर्थ्य नहीं रखते, हालाँकि वे (बहुदेववादियों की अपनी दृष्टि में) उनके लिए उपस्थित सेनाएँ हैं।[1]

76. अतः उनकी बात तुम्हें शोकाकुल न करे। हम जानते हैं जो कुछ वे छिपाते और जो कुछ व्यक्त करते हैं।

---

1. अर्थात जिन उपास्यों को बहुदेववादी अपनी सहायक सेना समझते हैं और यह विचार करते हैं कि संकट में वे सब हमारी मदद करेंगे, सर्वथा भ्रम है। ये उपास्य न संसार में उनके कुछ काम आएँगे और न परलोक में उनका कोई संकट दूर कर सकेंगे।



77. क्या (इनकार करनेवाले) मनुष्य ने देखा नहीं कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया? फिर क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष विरोधी झगड़ालू बन गया।

78. और उसने हमपर फबती कसी और अपनी पैदाइश को भूल गया। कहता है : "कौन हड्डियों में जान डालेगा, जबकि वे जीर्ण-शीर्ण हो चुकी होंगी?"

79. कह दो : "उनमें वही जान डालेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया। वह तो प्रत्येक संसृति को भली-भाँति जानता है।

80. वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे-भरे वृक्ष से आग पैदा कर दी। तो लगे हो तुम उससे जलाने।"

81. क्या जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया उसे इसकी सामर्थ्य नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे? क्यों नहीं, जबकि वह महान स्रष्टा, अत्यन्त ज्ञानवान है।

82. उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ (के पैदा करने) का इरादा करता है तो उससे कहता है, "हो जा!" और वह हो जाती है।

83. अतः महिमा है उसकी, जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है। और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे।

37. अस-साफ़्फ़ात

(मक्का में उतरी — आयतें 182)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-5. गवाह हैं परा जमाकर पंक्तिबद्ध होनेवाले; फिर डाँटनेवाले; फिर यह ज़िक्र करनेवाले कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला है। वह आकाशों और धरती और जो

وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا
بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝
لَّا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ
جَانِبٍ ۝ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَنْ
خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ
أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّن طِينٍ
لَّازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝ وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا
يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا إِنْ
هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝ أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ
دَاخِرُونَ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ ۝
وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ
الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا

कुछ उनके बीच है सबका रब है और पूर्व दिशाओं का भी रब है।

6-7. हमने दुनिया के आकाश को सजावट अर्थात तारों से सुसज्जित किया, (रात में मुसाफ़िरों को मार्ग दिखाने) और प्रत्येक सरकश शैतान से सुरक्षित रखने के लिए।

8-9. वे (शैतान) "मलए आला"[1] की ओर कान नहीं लगा पाते और हर ओर से फेंक मारे जाते हैं भगाने-धुतकारने के लिए। और उनके लिए अनवरत यातना है।

10. किन्तु यह और बात है कि कोई कुछ उचक ले, इस दशा में एक तेज़ दहकती उल्का उसका पीछा करती है।

11-12. अब उनसे पूछो कि उनके पैदा करने का काम अधिक कठिन है या उन चीज़ों का, जो हमने पैदा कर रखी हैं। निस्संदेह हमने उनको लेसदार मिट्टी से पैदा किया। बल्कि तुम तो आश्चर्य में हो और वे हैं कि परिहास कर रहे हैं।

13. और जब उन्हें याद दिलाया जाता है, तो वे याद नहीं करते,

14. और जब कोई निशानी देखते हैं तो हँसी उड़ाते हैं।

15. और कहते हैं : "यह तो बस एक प्रत्यक्ष जादू है।

16-17. क्या जब हम मर चुके होंगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, तो क्या फिर हम उठाए जाएँगे ? क्या और हमारे पहले के बाप-दादा भी ?"

18. कह दो : "हाँ ! और तुम अपमानित भी होगे।"

19. वह तो बस एक झिड़की होगी। फिर क्या देखेंगे कि वे ताकने लगे हैं।

20. और वे कहेंगे : "ऐ अफ़सोस हमपर ! यह तो बदले का दिन है।"

21. यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते रहे हो।

---

1. ऊपरी लोक के फ़रिश्तों का प्रतिष्ठित समूह।



22-23. (कहा जाएगा :) "एकत्र करो उन लोगों को जिन्होंने ज़ुल्म किया और उनके जोड़ीदारों को भी और उनको भी जिनकी अल्लाह से हटकर वे बन्दगी करते रहे हैं। फिर उन सबको भड़कती हुई आग की राह दिखाओ !

24-25. और तनिक उन्हें ठहराओ, उनसे पूछना है : "तुम्हें क्या हो गया, जो तुम एक-दूसरे की सहायता नहीं कर रहे हो ?"

26. बल्कि वे तो आज बड़े आज्ञाकारी हो गए हैं।

27-28. वे एक-दूसरे की ओर रुख करके पूछते हुए कहेंगे : "तुम तो हमारे पास आते थे दाहिने से (और बाएँ से)।"

29. वे कहेंगे : "नहीं, बल्कि तुम स्वयं ही ईमानवाले न थे।

30. और हमारा तो तुमपर कोई ज़ोर न था; बल्कि तुम स्वयं ही सरकश लोग थे।

31. अन्ततः हमपर हमारे रब की बात सत्यापित होकर रही। निस्संदेह हमें (अपनी करतूत का) मज़ा चखना ही होगा।

32. सो हमने तुम्हें बहकाया। निश्चय ही हम स्वयं बहके हुए थे।"

33. अतः वे सब उस दिन यातना में एक-दूसरे के सह-भागी होंगे।

34. हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।

35-36. उनका हाल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है।" तो वे घमंड में आ जाते थे और कहते थे : "क्या हम एक उन्मादी कवि के लिए अपने उपास्यों को छोड़ दें ?"

37-38. "नहीं, बल्कि वह सत्य लेकर आया है और वह (पिछले) रसूलों की पुष्टि में है। निश्चय ही तुम दुखद यातना का मज़ा चखोगे।——

39. तुम बदला वही तो पाओगे जो तुम करते रहे हो।"——

40. अलबत्ता अल्लाह के उन बन्दों की बात और है, जिनको उसने चुन लिया है।

41-44. वही लोग हैं जिनके लिए जानी-बूझी नियत रोज़ी है, स्वादिष्ट फल। और वे नेमत भरी जन्नतों में सम्मानपूर्वक होंगे, तख़्तों पर आमने-सामने विराजमान होंगे;

45-46 उनके बीच विशुद्ध पेय का पात्र फिराया जाएगा, बिलकुल साफ़, उज्ज्वल, पीनेवालों के लिए सर्वथा सुस्वादु।

إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝
أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۝ فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ۝
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝ يُطَافُ
عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ۝
لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ۝ وَعِندَهُمْ
قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ۝ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ۝
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالَ
قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝ يَقُولُ أَئِنَّكَ
لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ۝ قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ۝
فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ قَالَ تَاللَّهِ إِن
كِدتَّ لَتُرْدِينِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ
الْمُحْضَرِينَ ۝ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا

47-49. न उसमें कोई ख़ुमार होगा और न वे उससे निढाल और मदहोश होंगे। और उनके पास निगाहें बचाए रखनेवाली, सुन्दर आँखोंवाली स्त्रियाँ होंगी, मानो वे सुरक्षित अंडे हैं।[1]

50. फिर वे एक-दूसरे की ओर रुख़ करके आपस में पूछेंगे।

51. उनमें से एक कहनेवाला कहेगा: "मेरा एक साथी था;

52. जो कहा करता था: 'क्या तुम भी पुष्टि करनेवालों में से हो?

53. क्या जब हम मर चुके होंगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, तो क्या हम वास्तव में बदला पाएँगे?'"

54. वह कहेगा: "क्या तुम झाँककर देखोगे?"

55. फिर वह झाँकेगा तो उसे भड़कती हुई आग के बीच में देखेगा।

56. कहेगा: "अल्लाह की क़सम! तुम तो मुझे तबाह ही करने को थे।

57. यदि मेरे रब की अनुकम्पा न होती तो अवश्य ही मैं भी पकड़कर हाज़िर किए गए लोगों में से होता।

58-59. है ना अब ऐसा कि हम मरने के नहीं। हमें जो मृत्यु आनी थी वह बस

1. पाकदामन और सुन्दर स्त्रियों के लिए यह मिसाल अरब में प्रसिद्ध थी।



पहले आ चुकी। और न हमें कोई यातना ही दी जाएगी !"

60. निश्चय ही यही बड़ी सफलता है।

61. ऐसी ही चीज़ के लिए कर्म करनेवालों को कर्म करना चाहिए।

62. क्या यह आतिथ्य अच्छा है या 'ज़क़्क़ूम'[1] का वृक्ष ?

63. निश्चय ही हमने उस (वृक्ष) को ज़ालिमों के लिए परीक्षा बना दिया है।

64. वह एक वृक्ष है जो भड़कती हुई आग की तह से निकलता है।

65. उसके गाभे मानो शैतानों के सिर (साँपों के फन) हैं।

66. तो वे उसे खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे।

67. फिर उनके लिए उसपर खौलते हुए पानी का मिश्रण होगा।

68. फिर उनकी वापसी भड़कती हुई आग की ओर होगी।

69-70. निश्चय ही उन्होंने अपने बाप-दादा को पथभ्रष्ट पाया। फिर वे उन्हीं के पद-चिह्नों पर दौड़ते रहे।

71. और उनसे पहले भी पूर्ववर्ती लोगों में अधिकांश पथभ्रष्ट हो चुके हैं,

72-73. हमने उनमें सचेत करनेवाले भेजे थे। तो अब देख लो उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ, जिन्हें सचेत किया गया था।

74. अलबत्ता अल्लाह के उन बन्दों की बात और है, जिनको उसने चुन लिया है।

75. नूह ने हमको पुकारा था, तो हम कैसे अच्छे हैं निवेदन स्वीकार करनेवाले !

76. हमने उसे और उसके लोगों को बड़ी घुटन और बेचैनी से छुटकारा दिया।

77. और हमने उसकी सतति (औलाद व अनुयायी) ही को बाक़ी रखा।

---

1. अर्थात थूहड़, सेंहुड़ या नागफनी का काटेदार वृक्ष।

ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝
سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ جَآءَ
رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا
تَعْبُدُوْنَ ۝ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ۝
فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ۝
فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ۝ فَرَاغَ اِلٰٓى
اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ۝
فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ۝ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ۝
قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا
تَعْمَلُوْنَ ۝ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ۝
فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ۝ وَقَالَ اِنِّيْ

78-79. और हमने पीछे आनेवाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि "सलाम है नूह पर संपूर्ण संसारवालों में !"

80. निस्संदेह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।

81. निश्चय ही वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

82-84. फिर हमने दूसरों को डुबो दिया। और इबराहीम भी उसी के सहधर्मियों में से था। याद करो, जब वह अपने रब के समक्ष भला-चंगा हृदय लेकर आया;

85. जबकि उसने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा : "तुम किस चीज़ की पूजा करते हो ?

86. क्या अल्लाह से हटकर मनघड़ंत उपास्यों को चाह रहे हो ?

87. आख़िर सारे संसार के रब के विषय में तुम्हारा क्या गुमान है ?"

88-89. फिर उसने एक दृष्टि तारों पर डाली और कहा : "मैं तो निढाल हूँ।"

90. अतएव वे उसे छोड़कर चले गए पीठ फेरकर।

91-92. फिर वह आँख बचाकर उनके देवताओं की ओर गया और कहा : "क्या तुम खाते नहीं ? तुम्हें क्या हुआ है कि तुम बोलते नहीं ?"

93. फिर वह भरपूर हाथ मारते हुए उनपर पिल पड़ा।

94. फिर वे लोग झपटते हुए उसकी ओर आए।

95-96. उसने कहा : "क्या तुम उनको पूजते हो, जिन्हें स्वयं तराशते हो, जबकि अल्लाह ने तुम्हें भी पैदा किया है और उनको भी, जिन्हें तुम बनाते हो ?"

97-98. वे बोले : "उसके लिए एक मकान (अर्थात अग्नि-कुण्ड) तैयार करके उसे भड़कती आग में डाल दो !" अत: उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही, किन्तु हमने उन्हीं को नीचा दिखा दिया।

99. उसने कहा : "मैं अपने रब की ओर जा रहा हूँ, वह मेरा मार्गदर्शन करेगा।

100. ऐ मेरे रब! मुझे कोई नेक संतान प्रदान कर।"

101. तो हमने उसे एक सहनशील पुत्र की शुभ सूचना दी।

102. फिर जब वह उसके साथ दौड़-धूप करने की अवस्था को पहुँचा तो उसने कहा : "ऐ मेरे प्रिय बेटे! मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुझे क़ुरबान कर रहा हूँ। तो अब देख, तेरा क्या विचार है?" उसने कहा : "ऐ मेरे बाप! जो कुछ आपको आदेश दिया जा रहा है उसे कर डालिए। अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पाएँगे।"

ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ
الصَّالِحِينَ ۝ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا بَلَغَ
مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي
أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ
سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ۝ فَلَمَّا
أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۝ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝ قَدْ
صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ
عَظِيمٍ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ ۝ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ
عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ
الصَّالِحِينَ ۝ وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ۝ وَلَقَدْ مَنَنَّا

103-105. अन्ततः जब दोनों ने अपने आपको (अल्लाह के आगे) झुका दिया और उसने (इबराहीम ने) उसे कनपटी के बल लिटा दिया (तो उस समय क्या दृश्य रहा होगा, सोचो!) और हमने उसे पुकारा : "ऐ इबराहीम! तूने स्वप्न को सच कर दिखाया। निस्संदेह हम उत्तमकारों को इसी प्रकार बदला देते हैं।"

106. निस्संदेह यह तो एक खुली हुई परीक्षा थी।

107. और हमने उसे (बेटे को) एक बड़ी क़ुरबानी के बदले में छुड़ा लिया।

108-109. और हमने पीछे आनेवाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोडा, कि "सलाम है इबराहीम पर।"

110. उत्तमकारों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

111. निश्चय ही वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

112. और हमने उसे इसहाक़ की शुभ सूचना दी, अच्छों में से एक नबी।

113. और हमने उसे और इसहाक़ को बरकत दी। और उन दोनों की संतति में कोई तो उत्तमकार है और कोई अपने आप पर खुला ज़ुल्म करनेवाला।

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۚ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ
الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۚ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۚ وَ
اٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ۚ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۚ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ۚ سَلٰمٌ عَلٰى
مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝
اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ۚ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اَتَدْعُوْنَ
بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ۚ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَ
رَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۚ
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۚ
سَلٰمٌ عَلٰۤى اِلْ يَاسِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ۚ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۚ اِلَّا عَجُوْزًا

114. और हम मूसा और हारून पर भी उपकार कर चुके हैं।

115. और हमने उन्हें और उनकी क़ौम को बड़ी घुटन और बेचैनी से छुटकारा दिया।

116. हमने उनकी सहायता की, तो वही प्रभावी रहे।

117-118. हमने उनको अत्यन्त स्पष्ट किताब प्रदान की। और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया।

119-120. और हमने पीछे आनेवाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि "सलाम है मूसा और हारून पर!"

121. निस्संदेह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।

122. निश्चय ही वे दोनों हमारे ईमानवाले बन्दों में से थे।

123-124. और निस्संदेह इलयास भी रसूलों में से था। याद करो, जब उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : "क्या तुम डर नहीं रखते?

125-126. क्या तुम 'बअ्ल' (देवता) को पुकारते हो और सर्वोत्तम स्रष्टा को छोड़ देते हो; अपने रब और अपने अगले बाप-दादा के रब, अल्लाह को!"

127. किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया। सो वे निश्चय ही पकड़कर हाज़िर किए जाएँगे।

128. अल्लाह के उन बन्दों की बात और है, जिनको उसने चुन लिया है।

129-130. और हमने पीछे आनेवाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि "सलाम है इलयास पर!"

131. निस्संदेह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।

132. निश्चय ही वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

133. और निश्चय ही लूत भी रसूलों में से था।

134-135. याद करो, जब हमने उसे और उसके सभी लोगों को बचा लिया



सिवाय एक बुढ़िया के, जो पीछे रह जानेवालों में से थी।

136. फिर दूसरों को हमने तहस-नहस करके रख दिया।

137-138. और निस्संदेह तुम उनपर (उनके क्षेत्र) से गुज़रते हो कभी प्रातः करते हुए और रात में भी। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

139. और निस्संदेह यूनुस भी रसूलों में से था।

140-141. याद करो, जब वह भरी नौका की ओर भाग निकला, फिर पर्ची डालने में शामिल हुआ और उसमें मात खाई।

142-146. फिर उसे मछली ने निगल लिया और वह निन्दनीय दशा में ग्रस्त हो गया था। अब यदि वह तसबीह करनेवाला न होता तो उसी के भीतर उस दिन तक पड़ा रह जाता, जबकि लोग उठाए जाएँगे। अन्ततः हमने उसे इस दशा में कि वह निढाल था, साफ़ मैदान में डाल दिया। हमने उसपर बेलदार वृक्ष उगाया था।

147. और हमने उसे एक लाख या उससे अधिक (लोगों) की ओर भेजा।

148-149. फिर वे ईमान लाए तो हमने उन्हें एक अवधि तक सुख भोगने का अवसर दिया। अब उनसे पूछो : "क्या तुम्हारे रब के लिए तो बेटियाँ हों और उनके अपने लिए बेटे?

150. क्या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया और यह उनकी आँखों देखी बात है?"

151-154. सुन लो, निश्चय ही वे अपनी मनघड़ंत कहते हैं कि "अल्लाह के औलाद हुई है!" निश्चय ही वे झूठे हैं। क्या उसने बेटों की अपेक्षा बेटियाँ चुन ली हैं? तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़ैसला करते हो?

155. तो क्या तुम होश से काम नहीं लेते?

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ۝ فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝
وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ
إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۝ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ
اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ۝ مَا أَنتُمْ
عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ۝ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا مِنَّا
إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ۝ وَإِنَّا
لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ۝ وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ۝ لَوْ أَنَّ عِندَنَا
ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝
فَكَفَرُوا بِهِ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا
لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ۝ وَإِنَّ
جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ وَ
أَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝
فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ۝ وَتَوَلَّ

156-157. क्या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण है ? तो लाओ अपनी किताब, यदि तुम सच्चे हो ।

158 उन्होंने अल्लाह और जिन्नों के बीच नाता जोड़ रखा है, हालाँकि जिन्नों को भली-भाँति मालूम है कि वे अवश्य पकड़कर हाज़िर किए जाएँगे —

159. महान और उच्च है अल्लाह उससे, जो वे बयान करते हैं ।—

160. अल्लाह के उन बन्दों की बात और है, जिन्हें उसने चुन लिया ।

161-162. अतः तुम और जिनको तुम पूजते हो वे, तुम सब अल्लाह के विरुद्ध किसी को बहका नहीं सकते,

163. सिवाय उसके जो जहन्नम की भड़कती आग में पड़ने ही वाला हो ।

164. और हमारी ओर से उसके लिए अनिवार्यतः एक ज्ञात और नियत स्थान है ।

165-166. और हम ही पंक्तिबद्ध करते हैं । और हम ही महानता बयान करते हैं ।

167-169. वे तो कहा करते थे कि "यदि हमारे पास पिछलों की कोई शिक्षा होती तो हम अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते ।"

170. किन्तु उन्होंने उसका इनकार कर दिया, तो अब जल्द ही वे जान लेंगे ।

171-173. और हमारे अपने उन बन्दों के हक़ में, जो रसूल बनाकर भेजे गए, हमारी बात पहले ही निश्चित हो चुकी है कि निश्चय ही उन्हीं की सहायता की जाएगी । और निश्चय ही हमारी सेना ही प्रभावी रहेगी ।

174-175. अतः एक अवधि तक के लिए उनसे रुख फेर लो और उन्हें देखते रहो । वे भी जल्द ही (अपना परिणाम) देख लेंगे ।

176. क्या वे हमारी यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं ?

177. तो जब वह उनके आँगन में उतरेगी तो बड़ी ही बुरी सुबह होगी उन लोगों की, जिन्हें सचेत किया जा चुका है !



178-179. एक अवधि तक के लिए उनसे रुख़ फेर लो और देखते रहो, वे जल्द ही देख लेंगे।

180. महान और उच्च है तुम्हारा रब, प्रताप का स्वामी, उन बातों से जो वे बताते हैं !

181. और सलाम है रसूलों पर;

182. और सब प्रशंसा अल्लाह, सारे संसार के रब के लिए है।

38. साद

(मक्का में उतरी— आयतें 88)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साद। क़सम है, याददिहानी-वाले क़ुरआन की (जिसमें कोई कमी नहीं कि धर्मविरोधी सत्य को न समझ सकें)।

2. बल्कि जिन्होंने इनकार किया वे गर्व और विरोध में पड़े हुए हैं।

3. उनसे पहले हमने कितनी ही पीढ़ियों को विनष्ट किया, तो वे लगे पुकारने। किन्तु वह समय हटने-बचने का न था।

4. उन्होंने आश्चर्य किया इसपर कि उनके पास उन्हीं में से एक सचेतकर्ता आया और इनकार करनेवाले कहने लगे : "यह जादूगर है बड़ा झूठा।

5. क्या उसने सारे उपास्यों को अकेला एक उपास्य ठहरा दिया ? निस्संदेह यह तो बहुत अचंभेवाली चीज़ है !"

6. और उनके सरदार (यह कहते हुए) चल खड़े हुए कि "चलते रहो और अपने उपास्यों पर जमे रहो। निस्संदेह यह वांछित चीज़ है।

7. यह बात तो हमने पिछले धर्म में सुनी ही नहीं। यह तो बस मनघड़त है।

8. क्या हम सबमें से (चुनकर) इसी पर अनुस्मृति अवतरित हुई है ?" नहीं,



बल्कि वे मेरी अनुस्मृति के विषय में संदेह में हैं, बल्कि उन्होंने अभी तक मेरी यातना का मज़ा चखा ही नहीं है।

9. या, तेरे प्रभुत्वशाली, बड़े दाता रब की दयालुता के ख़ज़ाने उनके पास हैं?

10. या, आकाशों और धरती और जो कुछ उनके बीच है, उन सबकी बादशाही उन्हीं की है? फिर तो चाहिए कि वे रस्सियों द्वारा ऊपर चढ़ जाएँ।

11. वह एक साधारण सेना है (विनष्ट होनेवाले) दलों में से, वहाँ मात खाना जिसकी नियति है।

12. उनसे पहले नूह की क़ौम और आद और मेखोंवाले फ़िरऔन ने झुठलाया।

13. और समूद और लूत की क़ौम और 'ऐकावाले' भी, ये हैं वे दल।

14. उनमें से प्रत्येक ने रसूलों को झुठलाया, तो मेरी ओर से दण्ड अवश्यम्भावी होकर रहा।

15. इन्हें बस एक चीख़ की प्रतीक्षा है जिसमें तनिक भी अवकाश न होगा।

16. वे कहते हैं : "ऐ हमारे रब! हिसाब के दिन से पहले ही शीघ्र हमारा हिस्सा दे दे।"

17. वे जो कुछ कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और ज़ोर व शक्तिवाले हमारे बन्दे दाऊद को याद करो। निश्चय ही वह (अल्लाह की ओर) बहुत रुजू करनेवाला था।

18-19. हमने पर्वतों को उसके साथ वशीभूत कर दिया था कि प्रात: काल और संध्या समय तसबीह करते रहें। और पक्षियों को भी, जो एकत्र हो जाते थे। प्रत्येक उसके आगे रुजू रहता।

20. हमने उसका राज्य सुदृढ़ कर दिया था और उसे तत्त्वदर्शिता प्रदान की



थी और निर्णायक बात कहने की क्षमता प्रदान की थी।

21. और क्या तुम्हें उन विवादियों की ख़बर पहुँची है? जब वे दीवार पर चढ़कर मेहराब (एकांत कक्ष) में आ पहुँचे।

22. जब वे दाऊद के पास पहुँचे तो वह उनसे सहम गया। वे बोले कि "डरिए नहीं, हम दो विवादी हैं। हममें से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है; तो आप हमारे बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर दीजिए। और बात को दूर न डालिए और हमें ठीक मार्ग बता दीजिए।

23. यह मेरा भाई है। इसके पास निन्यानबे दुंबियाँ हैं और मेरे पास एक दुंबी है। अब इसका कहना है कि 'इसे भी मुझे सौंप दे' और बातचीत में इसने मुझे दबा लिया।"

24. उसने कहा : "इसने अपनी दुंबियों के साथ तेरी दुंबी को मिला लेने की माँग करके निश्चय ही तुझपर ज़ुल्म किया है। और निस्संदेह बहुत-से साथ मिलकर रहनेवाले एक-दूसरे पर ज़्यादती करते हैं, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए। किन्तु ऐसे लोग थोड़े ही हैं।" अब दाऊद समझ गया कि यह तो हमने उसे परीक्षा में डाला है। अत: उसने अपने रब से क्षमा-याचना की और झुककर (सीधे सजदे में) गिर पड़ा और रुजू हुआ।

25. तो हमने उसका वह क़सूर माफ़ कर दिया। और निश्चय ही हमारे यहाँ उसके लिए अनिवार्यत: सामीप्य और उत्तम ठिकाना है।

26. "ऐ दाऊद ! हमने धरती में तुझे ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया है। अत: तू लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला करना और अपनी इच्छा का अनुपालन न करना कि वह तुझे अल्लाह के मार्ग से भटका दे। जो लोग अल्लाह के मार्ग से

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ
الْحِسَابِ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
بَاطِلًا ۚ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنَ النَّارِ ۝ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۡ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝
كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا
الْاَلْبَابِ ۝ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۚ اِنَّهٗٓ
اَوَّابٌ ۝ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝
فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۚ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ
وَالْاَعْنَاقِ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ
جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا
يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ فَسَخَّرْنَا

भटकते हैं, निश्चय ही उनके लिए कठोर यातना है, क्योंकि वे हिसाब के दिन को भूले रहे ।——

27. हमने आकाश और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, व्यर्थ नहीं पैदा किया । यह तो उन लोगों का गुमान है जिन्होंने इनकार किया । अतः आग में झोंके जाने के कारण इनकार करनेवालों की बड़ी दुर्गति है ।

28-29. (क्या हम उनको जो समझते हैं कि जगत की संरचना व्यर्थ नहीं है, उनके समान कर देंगे जो जगत को निरर्थक मानते हैं ।) या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके समान कर देंगे जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं; या डर रखनेवालों को हम दुराचारियों जैसा कर देंगे ? यह एक बरकतवाली किताब है, जिसे हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है, ताकि वे लोग इसकी आयतों पर सोच-विचार करें और ताकि बुद्धि और समझवाले इससे शिक्षा ग्रहण करें ।——

30-31. और हमने दाऊद को सुलैमान प्रदान किया । वह कितना अच्छा बन्दा था ! निश्चय ही वह बहुत ही रुजू रहनेवाला था । याद करो, जबकि संध्या समय उसके सामने सधे हुए द्रुतगामी घोड़े हाज़िर किए गए ।

32. तो उसने कहा : "मैंने इनके प्रति प्रेम अपने रब की याद के कारण अपनाया है ।" यहाँ तक कि वे (घोड़े) ओट में छिप गए ।

33. "उन्हें मेरे पास वापस लाओ !" फिर वह उनकी पिंडलियों और गरदनों पर हाथ फेरने लगा ।

34. निश्चय ही हमने सुलैमान को भी परीक्षा में डाला । और हमने उसके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया । फिर वह रुजू हुआ ।

35. उसने कहा : "ऐ मेरे रब ! मुझे क्षमा कर दे और मुझे वह राज्य प्रदान कर, जो मेरे पश्चात किसी के लिए शोभनीय न हो । निश्चय ही तू बड़ा दाता है ।"

لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۙ وَالشَّيٰطِينَ
كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ۙ وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ
هٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ وَإِنَّ
لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ ۘ
إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ
ارْكُضْ بِرِجْلِكَ ۖ هٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ وَ
هَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ
لِأُولِي الْأَلْبَابِ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهِ
وَلَا تَحْنَثْ ۗ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ
أَوَّابٌ وَاذْكُرْ عِبَادَنَا إِبْرٰهِيمَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي
الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ إِنَّا أَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى
الدَّارِ وَإِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ
وَاذْكُرْ إِسْمٰعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ

36. तब हमने वायु को उसके लिए वशीभूत कर दिया, जो उसके आदेश से, जहाँ वह पहुँचना चाहता, सरलतापूर्वक चलती थी।

37-38. और शैतानों को भी (वशीभूत कर दिया), प्रत्येक निर्माता और ग़ोताख़ोर को और दूसरों को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए रहते।

39. "यह हमारी बेहिसाब देन है। अब एहसान करो या रोको।"

40. और निश्चय ही हमारे यहाँ उसके लिए अनिवार्यत: सामीप्य और उत्तम ठिकाना है।

41. हमारे बन्दे अय्यूब को भी याद करो, जब उसने अपने रब को पुकारा कि "शैतान ने मुझे दुख और पीड़ा पहुँचा रखी है।"

42. "अपना पाँव (धरती पर) मार, यह है ठण्डा (पानी) नहाने को और पीने को।"

43-44. और हमने उसे उसके परिजन दिए और उनके साथ वैसे ही और भी; अपनी ओर से दयालुता के रूप में और बुद्धि और समझ रखनेवालों के लिए शिक्षा के रूप में। "और अपने हाथ में तिनकों का एक मुट्ठा ले और उससे मार और अपनी क़सम न तोड़।" निश्चय ही हमने उसे धैर्यवान पाया, क्या ही अच्छा बन्दा! निस्संदेह वह बड़ा ही रुजू रहनेवाला था।

45. हमारे बन्दों, इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब को भी याद करो, जो हाथों (शक्ति) और निगाहोंवाले (ज्ञान-चक्षुवाले) थे।

46. निस्संदेह हमने उन्हें एक विशिष्ट बात के लिए चुन लिया था और वह वास्तविक घर (आख़िरत) की याद थी।

47. और निश्चय ही वे हमारे यहाँ चुने हुए नेक लोगों में से हैं।

48. इसमाईल और अल-यसअ और ज़ुलकिफ़्ल को भी याद करो। इनमें से प्रत्येक ही अच्छा रहा है।

هٰذَا ذِكْرٌ ۚ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ۝ جَنّٰتِ
عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ۝ مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ
فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ۝ هٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ إِنَّ
هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِنْ نَّفَادٍ ۝ هٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطّٰغِينَ
لَشَرَّ مَآبٍ ۝ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هٰذَا ۙ
فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝ وَآخَرُ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ۝
هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا
النَّارِ ۝ قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ
لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا
فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرٰى
رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْأَشْرَارِ ۝ أَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا
أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ۝ إِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ

49. यह एक अनुस्मृति है। और निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए अच्छा ठिकाना है।

50. सदैव रहने के बाग़ हैं, जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे।

51. उनमें वे तकिया लगाए हुए होंगे। वहाँ वे बहुत-से मेवे और पेय मँगवाते होंगे।

52. और उनके पास निगाहें बचाए रखनेवाली स्त्रियाँ होंगी, जो समान अवस्था की होंगी।

53. यह है वह चीज़, जिसका हिसाब के दिन के लिए तुमसे वादा किया जाता है।

54. यह हमारा दिया है, जो कभी समाप्त न होगा।

55. एक ओर यह है, किन्तु सरकशों के लिए बहुत बुरा ठिकाना है;

56. जहन्नम, जिसमें वे प्रवेश करेंगे। तो वह बहुत ही बुरा विश्राम-स्थल है!

57-58. यह है, अब उन्हें इसे चखना है—— खौलता हुआ पानी और रक्तयुक्त पीप और इसी प्रकार की दूसरी और भी चीज़ें।

59. "यह एक भीड़ है जो तुम्हारे साथ घुसी चली आ रही है। कोई आवभगत उनके लिए नहीं। वे तो आग में पड़नेवाले हैं।"

60. वे कहेंगे : "नहीं, बल्कि तुम। तुम्हारे लिए कोई आवभगत नहीं। तुम्हीं यह हमारे आगे लाए हो। तो बहुत ही बुरी है यह ठहरने की जगह!"

61. वे कहेंगे : "ऐ हमारे रब! जो हमारे आगे यह (मुसीबत) लाया उसे आग में दोहरी यातना दे!"

62. और वे कहेंगे : "क्या बात है कि हम उन लोगों को नहीं देखते जिनकी गणना हम बुरों में करते थे?

63. क्या हमने यूँ ही उनका मज़ाक़ बनाया था, या उनसे निगाहें चूक गई हैं?"

64. निस्संदेह आग में पड़नेवालों का यह आपस का झगड़ा तो अवश्य होना है।

أَهْلِ النَّارِ ۝ قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا
اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝ أَنتُمْ
عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ
إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ
مُّبِينٌ ۝ إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن
طِينٍ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا
لَهُ سَاجِدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا
إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ
مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ
أَمْ كُنتَ مِنَ الْعَالِينَ ۝ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِن
نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ
رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۝

65. कह दो : "मैं तो बस एक सचेत करनेवाला हूँ। कोई पूज्य-प्रभु नहीं सिवाय अल्लाह के, जो अकेला है, सबपर क़ाबू रखनेवाला;

66. आकाशों और धरती का रब है, और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसका भी, अत्यन्त प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील।"

67-68. कह दो : "वह एक बड़ी ख़बर है, जिसे तुम ध्यान में नहीं ला रहे हो।

69. मुझे 'मलए आला' (ऊपरी लोक के फ़रिश्तों) का कोई ज्ञान नहीं था, जब वे वाद-विवाद कर रहे थे।

70. मेरी ओर तो बस इसलिए प्रकाशना की जाती है कि मैं खुल्लम-खुल्ला सचेत करनेवाला हूँ।"

71. याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि "मैं मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करनेवाला हूँ।

72. तो जब मैं उसको ठीक-ठाक कर दूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ, तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना।"

73-74. तो सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। उसने घमंड किया और इनकार करनेवालों में से हो गया।

75. कहा : "ऐ इबलीस ! तुझे किस चीज़ ने उसको सजदा करने से रोका जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया ? क्या तूने घमण्ड किया, या तू कोई ऊँची हस्ती है ?"

76. उसने कहा : "मैं उससे उत्तम हूँ। तूने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया।"

77. कहा : "अच्छा, निकल जा यहाँ से, क्योंकि तू धुत्कारा हुआ है।

78. और निश्चय ही बदला दिए जाने के दिन तक तुझपर मेरी लानत है।"

79. उसने कहा : "ऐ मेरे रब! फिर तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे, जबकि लोग (जीवित करके) उठाए जाएँगे।"

80-81. कहा : "अच्छा, तुझे ज्ञात एवं निश्चित समय तक मुहलत है।"

82-83. उसने कहा : "तेरे प्रताप की सौगन्ध! मैं अवश्य उन सबको बहकाकर रहूँगा, सिवाय उनमें से तेरे उन बन्दों के, जो चुने हुए हैं।"

84-85. कहा : "तो यह सत्य है और मैं सत्य ही कहता हूँ कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन सबसे भर दूँगा, जिन्होंने उनमें से तेरा अनुसरण किया होगा।"

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ فَاِنَّكَ
مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝ قَالَ
فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ
الْمُخْلَصِيْنَ ۝ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ۝ لَاَمْلَئَنَّ
جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ قُلْ مَآ
اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ۝ اِنْ
هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ۝

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ
اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ
الدِّيْنَ ۝ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ

86. कह दो : "मैं इसपर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता और न मैं बनावट करनेवालों में से हूँ।"

87. वह तो एक अनुस्मृति है सारे संसारवालों के लिए।

88. और थोड़ी ही अवधि के पश्चात उसकी दी हुई ख़बर तुम्हें मालूम हो जाएगी।

39. अज़-ज़ुमर

(मक्का में उतरी— आयतें 75)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. इस किताब का अवतरण अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी की ओर से है।

2. निस्संदेह हमने यह किताब तुम्हारी ओर सत्य के साथ अवतरित की है। अतः तुम अल्लाह ही की बन्दगी करो, धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए।

3. जान रखो कि विशुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिए है। रहे वे लोग जिन्होंने

زُلْفَىٰ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ۝ لَوْ أَرَادَ
اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ
سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ
النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ
يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُمْ
مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنْزَلَ
لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ
أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ
ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ
تُصْرَفُونَ ۝ إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۖ
وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۖ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ

उससे हटकर दूसरे समर्थक और संरक्षक बना रखे हैं (कहते हैं :) "हम तो उनकी बन्दगी इसी लिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करा दें।" निश्चय ही अल्लाह उनके बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे विभेद कर रहे हैं। अल्लाह उसे मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा और बड़ा अकृतज्ञ हो।

4. यदि अल्लाह अपनी कोई संतान बनाना चाहता तो वह उनमें से, जिन्हें वह पैदा कर रहा है, चुन लेता। महान और उच्च है वह! वह अल्लाह है अकेला, सब पर क़ाबू रखनेवाला।

5. उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया। रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूर्य और चन्द्रमा को वशीभूत कर रखा है। प्रत्येक एक नियत समय को पूरा करने के लिए चल रहा है। जान रखो, वही प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।

6. उसने तुम्हें अकेली जान पैदा किया; फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ नर-मादा उतारे। वह तुम्हारी माँओं के पेटों में तीन अँधेरों के भीतर तुम्हें एक सृजनरूप के पश्चात अन्य एक सृजनरूप देता चला जाता है। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो?

7. यदि तुम इनकार करोगे तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है। यद्यपि वह अपने बन्दों के लिए इनकार को पसन्द नहीं करता, किन्तु यदि तुम कृतज्ञता दिखाओगे,

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم
مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾ وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ
دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ
نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ
أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ
قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾ أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ
آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو
رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ
وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾
قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ
أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللَّهِ
وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

तो उसे वह तुम्हारे लिए पसन्द करता है। कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारी वापसी अपने रब ही की ओर है। और वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे होगे। निश्चय ही वह सीनों तक की बातें जानता है।

8. जब मनुष्य को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने रब को उसी की ओर रुजू होकर पुकारने लगता है, फिर जब वह उसपर अपनी अनुकम्पा करता है, तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए पहले पुकार रहा था और (दूसरों को) अल्लाह के समकक्ष ठहराने लगता है, ताकि इसके परिणामस्वरूप वह उसकी राह से भटका दे। कह दो : "अपने इनकार का थोड़ा मज़ा ले लो। निस्संदेह तुम आगवालों में से हो।"

9. (क्या उक्त व्यक्ति अच्छा है) या वह व्यक्ति जो रात की घड़ियों में सजदा करता और खड़ा रहता है, आख़िरत से डरता और अपने रब की दयालुता की आशा रखता हुआ विनयशीलता के साथ बन्दगी में लगा रहता है? कहो : "क्या वे लोग जो जानते हैं और वे लोग जो नहीं जानते दोनों समान होंगे? शिक्षा तो बुद्धि और समझवाले ही ग्रहण करते हैं।"

10. कह दो कि "ऐ मेरे बन्दो, जो ईमान लाए हो! अपने रब का डर रखो। जिन लोगों ने अच्छा कर दिखाया उनके लिए इस संसार में अच्छाई है, और अल्लाह की धरती विस्तृत है। जमे रहनेवालों को तो उनका बदला बेहिसाब मिलकर रहेगा।"

قُلْ إِنِّيٓ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ ٱللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ
ٱلدِّينَ ۝ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ ٱلْمُسْلِمِينَ ۝
قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ۝ قُلِ ٱللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُۥ دِينِي ۝
فَٱعْبُدُوا۟ مَا شِئْتُم مِّن دُونِهِۦ ۗ قُلْ إِنَّ ٱلْخَٰسِرِينَ
ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۗ
أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ ٱلْخُسْرَانُ ٱلْمُبِينُ ۝ لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ
ظُلَلٌ مِّنَ ٱلنَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ
ٱللَّهُ بِهِۦ عِبَادَهُۥ ۚ يَٰعِبَادِ فَٱتَّقُونِ ۝ وَٱلَّذِينَ
ٱجْتَنَبُوا۟ ٱلطَّٰغُوتَ أَن يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوٓا۟ إِلَى
ٱللَّهِ لَهُمُ ٱلْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝ ٱلَّذِينَ
يَسْتَمِعُونَ ٱلْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُۥٓ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ
ٱلَّذِينَ هَدَىٰهُمُ ٱللَّهُ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ۝

11. कह दो : "मुझे तो आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की बन्दगी करूँ, धर्म (भक्तिभाव एवं निष्ठा) को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए।

12. और मुझे आदेश दिया गया है कि सबसे बढ़कर मैं स्वयं आज्ञाकारी बनूँ।"

13. कहो : "यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है।"

14. कहो : "मैं तो अल्लाह ही की बन्दगी करता हूँ, अपने धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए।

15. अब तुम उससे हटकर जिसकी चाहो बन्दगी करो।" कह दो : "वास्तव में घाटे में पड़नेवाले तो वही हैं, जिन्होंने अपने आपको और अपने लोगों को क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया। जान रखो, यही खुला घाटा है।

16. उनके लिए उनके ऊपर से भी आग की छतरियाँ होंगी और उनके नीचे से भी छतरियाँ होंगी। यही वह चीज़ है, जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है : "ऐ मेरे बन्दो ! अतः तुम मेरा डर रखो।"

17-18. रहे वे लोग जो इससे बचे कि वे तागूत (बढ़े हुए फ़सादी) की बन्दगी करते और अल्लाह की ओर रुजू हुए, उनके लिए शुभ सूचना है। अतः मेरे उन बन्दों को शुभ सूचना दे दो जो बात को ध्यान से सुनते हैं; फिर उस अच्छी से अच्छी बात का अनुपालन करते हैं। वही हैं, जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया है और वही बुद्धि और समझवाले हैं।

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۖ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ
مَنْ فِي النَّارِ ۝ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ
مِنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ
وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ
أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ
يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا
ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي
الْأَلْبَابِ ۝ أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ
فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ
مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ اللَّهُ
نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُتَشَابِهًا مَثَانِيَ تَقْشَعِرُّ
مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ
وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ

19. तो क्या वह व्यक्ति जिसपर यातना की बात सत्यापित हो चुकी है (यातना से बच सकता है)? तो क्या तुम छुड़ा लोगे उसको जो आग में है?

20. अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरकर रहे उनके लिए ऊपरी मंज़िल पर कक्ष होंगे, जिनके ऊपर भी निर्मित कक्ष होंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे का उल्लंघन नहीं करता।

21. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा, फिर धरती में उसके स्रोत प्रवाहित कर दिए; फिर उसके द्वारा खेती निकालता है, जिसके विभिन्न रंग होते हैं; फिर वह सूखने लगती है; फिर तुम देखते हो कि वह पीली पड़ गई; फिर वह उसे चूर्ण-विचूर्ण कर देता है? निस्संदेह इसमें बुद्धि और समझवालों के लिए बड़ी याददिहानी है।

22. अब क्या वह व्यक्ति जिसका सीना (हृदय) अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, अत: वह अपने रब की ओर से प्रकाश पर है, (उस व्यक्ति के समान होगा जो कठोर हृदय और अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल है)? अत: तबाही है उन लोगों के लिए जिनके दिल कठोर हो चुके हैं, अल्लाह की याद से ख़ाली होकर! वही खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

23. अल्लाह ने सर्वोत्तम वाणी अवतरित की, एक ऐसी किताब जिसके सभी भाग परस्पर मिलते-जुलते हैं, जो रुख़ फेर देनेवाली (क्रांतिकारी) है। उससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, जो अपने रब से डरते हैं। फिर उनकी खालें (शरीर) और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की ओर झुक जाते हैं। वह अल्लाह का मार्गदर्शन है, उसके द्वारा वह सीधे मार्ग पर ले आता है, जिसे

مَنْ يَّشَاۤءُ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝
اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْۤءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ
وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝ كَذَّبَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۝ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ
عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا
فِيْهِ شُرَكَاۤءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۗ
هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ۝ ثُمَّ
اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ۝

चाहता है। और जिसको अल्लाह पथभ्रष्ट रहने दे, फिर उसके लिए कोई मार्गदर्शक नहीं।

24. अब क्या जो क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरी यातना (से बचने) की ढाल बनाएगा वह (यातना से सुरक्षित लोगों जैसा होगा)? और ज़ालिमों से कहा जाएगा : "चखो मज़ा उस कमाई का, जो तुम करते रहे थे!"

25. जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने भी झुठलाया। अन्ततः उनपर वहाँ से यातना आ पहुँची, जिसका उन्हें कोई पता न था।

26. फिर अल्लाह ने उन्हें सांसारिक जीवन में भी रुसवाई का मज़ा चखाया और आख़िरत की यातना तो इससे भी बड़ी है। काश! वे जानते।

27. हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसालें पेश कर दी हैं, ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें।

28. एक अरबी क़ुरआन के रूप में, जिसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि वे धर्मपरायणता अपनाएँ।

29. अल्लाह एक मिसाल पेश करता है कि एक व्यक्ति है, जिसके मालिक होने में कई व्यक्ति साझी हैं, आपस में खींचातानी करनेवाले, और एक व्यक्ति वह है जो पूरा का पूरा एक ही व्यक्ति का है। क्या दोनों का हाल एक जैसा होगा? सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, किन्तु उनमें से अधिकांश लोग नहीं जानते।

30. तुम्हें भी मरना है और उन्हें भी मरना है।

31. फिर निश्चय ही तुम सब क़ियामत के दिन अपने रब के समक्ष झगड़ोगे।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ
جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝ وَالَّذِي
جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝
لَهُم مَّا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝
لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم
بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ
وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ هَادٍ ۝ وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ
اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ
ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ
قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ قُلْ يَا قَوْمِ

32. फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जिसने झूठ घड़कर अल्लाह पर थोपा और सत्य को झुठला दिया जब वह उसके पास आया। क्या जहन्नम में इनकार करनेवालों का ठिकाना नहीं है?

33. और जो व्यक्ति सच्चाई लेकर आया और उसने उसकी पुष्टि की, ऐसे ही लोग डर रखते हैं।

34. उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ है, जो वे चाहेंगे। यह है उत्तमकारों का बदला।

35. ताकि जो निकृष्टतम कर्म उन्होंने किए अल्लाह उन (के बुरे प्रभाव) को उनसे दूर कर दे। और जो उत्तम कर्म वे करते रहे उसका उन्हें बदला प्रदान करे।

36. क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है, यद्यपि वे तुम्हें उनसे डराते हैं, जो उसके सिवा (उन्होंने अपने सहायक बना रखे) हैं? अल्लाह जिसे गुमराही में डाल दे उसे मार्ग दिखानेवाला कोई नहीं।

37. और जिसे अल्लाह मार्ग दिखाए उसे गुमराह करनेवाला भी कोई नहीं। क्या अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेनेवाला नहीं है?

38. यदि तुम उनसे पूछो कि "आकाशों और धरती को किसने पैदा किया?" तो वे अवश्य कहेंगे : "अल्लाह ने।" कहो : "तुम्हारा क्या विचार है? यदि अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचानी चाहे तो क्या अल्लाह से हटकर जिनको तुम पुकारते हो वे उसकी पहुँचाई हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं? या वह मुझपर कोई दयालुता दर्शानी चाहे तो क्या वे उसकी दयालुता को रोक सकते हैं?" कह दो : "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है। भरोसा करनेवाले उसी पर भरोसा करते हैं।"

39-40. कह दो : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपनी जगह काम करो। मैं

اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ مَن
يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾ إِنَّا
أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ
فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنتَ
عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿٤١﴾ اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَ
الَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا
الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾ أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ
شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾
قُل لِّلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ
ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾ وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ
قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ
مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ

भी (अपनी जगह) काम करता हूँ। तो शीघ्र ही तुम जान लोगे कि किसपर वह यातना आती है जो उसे रुसवा कर देगी और किसपर अटल यातना उतरती है।"

41. निश्चय ही हमने लोगों के लिए हक़ के साथ तुमपर किताब अवतरित की है। अत: जिसने सीधा मार्ग ग्रहण किया तो अपने ही लिए, और जो भटका, तो वह भटककर अपने ही को हानि पहुँचाता है। तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो।

42. अल्लाह ही प्राणों को उनकी मृत्यु के समय ग्रस्त कर लेता है और जिसकी मृत्यु नहीं आई उसे उसकी निद्रा की अवस्था में (ग्रस्त कर लेता है)। फिर जिसकी मृत्य का फ़ैसला कर दिया है उसे रोक रखता है। और दूसरों को एक नियत समय तक के लिए छोड़ देता है। निश्चय ही इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं सोच-विचार करनेवालों के लिए।

43. (क्या उनके उपास्य प्रभुता में साझीदार हैं) या उन्होंने अल्लाह से हटकर दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है? कहो : "क्या यद्यपि वे किसी चीज़ का अधिकार न रखते हों और न कुछ समझते ही हों तब भी?"

44. कहो : "सिफ़ारिश तो सारी की सारी अल्लाह के अधिकार में है। आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है। फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।"

45. जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल भिंचने लगते हैं, किन्तु जब उसके सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो क्या देखते हैं कि वे ख़ुशी से खिले जा रहे हैं।

46. कहो : "ऐ अल्लाह, आकाशों और धरती के पैदा करनेवाले; परोक्ष

وَالْأَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ
ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا
بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ
اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۝ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا
كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَإِذَا مَسَّ
الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ
إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ
وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا
وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

और प्रत्यक्ष के जाननेवाले ! तू ही अपने बन्दों के बीच उस चीज़ का फ़ैसला करेगा, जिसमें वे विभेद कर रहे हैं।"

47. जिन लोगों ने ज़ुल्म किया यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है और उसके साथ उतना ही और भी, तो वे क़ियामत के दिन बुरी यातना से बचने के लिए वह सब फ़िदया (प्राण-मुक्ति के बदले) में दे डालें। बात यह है कि अल्लाह की ओर से उनके सामने वह कुछ आ जाएगा जिसका वे गुमान तक न करते थे।

48. और जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयाँ उनपर प्रकट हो जाएँगी। और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसकी वे हँसी उड़ाया करते थे।

49. अतः जब मनुष्य को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारने लगता है, फिर जब हमारी ओर से उसपर कोई अनुकम्पा होती है तो कहता है : "यह तो मुझे ज्ञान के कारण प्राप्त हुआ है।" नहीं, बल्कि यह तो एक परीक्षा है, किन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं।

50. यही बात वे लोग भी कह चुके हैं, जो उनसे पहले गुज़रे हैं। किन्तु जो कुछ कमाई वे करते थे, वह उनके कुछ काम न आई।

51. फिर जो कुछ उन्होंने कमाया, उसकी बुराइयाँ उनपर आ पड़ीं और इनमें से भी जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उनपर भी जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयाँ जल्द ही आ पड़ेंगी। और वे क़ाबू से बाहर निकलनेवाले नहीं।

52. क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है ? निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ
رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا
اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ
يّٰحَسْرَتٰى عَلٰي مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ
السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ
الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ
كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ
فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ
اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ

53. कह दो : "ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपने आपपर ज़्यादती की है, अल्लाह की दयालुता से निराश न हो। निस्संदेह अल्लाह सारे ही गुनाहों को क्षमा कर देता है। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

54. रुजू हो अपने रब की ओर और उसके आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुमपर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी।

55. और अनुसरण करो उस सर्वोत्तम चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से अवतरित हुई है, इससे पहले कि तुमपर अचानक यातना आ जाए और तुम्हें पता भी न हो।"

56. कहीं ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : "हाय, अफ़सोस उसपर ! जो कोताही अल्लाह के हक़ में मैंने की। और मैं तो परिहास करनेवालों में ही सम्मिलित रहा।"

57. या, कहने लगे कि "यदि अल्लाह मुझे मार्ग दिखाता तो अवश्य ही मैं डर रखनेवालों में से होता।"

58. या, जब वह यातना देखे तो कहने लगे : "काश ! मुझे एक बार फिर लौटकर जाना हो, तो मैं उत्तमकारों में सम्मिलित हो जाऊँ।"

59. "क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास आ चुकी थीं, किन्तु तूने उनको झुठलाया और घमण्ड किया और इनकार करनेवालों में सम्मिलित रहा।

60. और क़ियामत के दिन तुम उन लोगों को देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूट घड़कर थोपा है कि उनके चेहरे स्याह हैं। क्या अहंकारियों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ?"

61. इसके विपरीत अल्लाह उन लोगों को जिन्होंने डर रखा उन्हें उनकी



अपनी सफलता के साथ मुक्ति प्रदान करेगा। न तो उन्हें कोई अनिष्ट छू सकेगा और न वे शोकाकुल होंगे।

62. अल्लाह हर चीज़ का स्रष्टा है और वही हर चीज़ का ज़िम्मा लेता है।

63. उसी के पास आकाशों और धरती की कुंजियाँ हैं। और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया, वही हैं जो घाटे में हैं।

64. कहो : "क्या फिर भी तुम मुझसे कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी और की बन्दगी करूँ, ऐ अज्ञानियो ?"

65. तुम्हारी ओर और जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्य की जा चुकी है कि "यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यतः अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।"

66. नहीं, बल्कि अल्लाह ही की बन्दगी करो और कृतज्ञता दिखानेवालों में से हो जाओ।

67. उन्होंने अल्लाह की क़द्र न जानी, जैसी क़द्र उसकी जाननी चाहिए थी। हालाँकि क़ियामत के दिन सारी की सारी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाएँ हाथ में लिपटे हुए होंगे। महान और उच्च है वह उससे, जो वे साझी ठहराते हैं।

68. और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो जो कोई आकाशों और जो कोई धरती में होगा वह अचेत हो जाएगा सिवाय उसके जिसको अल्लाह चाहे। फिर उसे दोबारा फूँका जाएगा, तो क्या देखेंगे कि सहसा वे खड़े देख रहे हैं।

69. और धरती अपने रब के प्रकाश से जगमगा उठेगी, और किताब रखी जाएगी

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ

और नबियों और गवाहों को लाया जाएगा और लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उनपर कोई ज़ुल्म न होगा।

70. और प्रत्येक व्यक्ति को उसका किया भरपूर दिया जाएगा। और वह भली-भाँति जानता है, जो कुछ वे करते हैं।

71. जिन लोगों ने इनकार किया, वे गिरोह के गिरोह जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके द्वार खोल दिए जाएँगे और उसके प्रहरी उनसे कहेंगे : "क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते रहे हों और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाक़ात से सचेत करते रहे हों?" वे कहेंगे : "क्यों नहीं। (वे तो आए थे,)" किन्तु इनकार करनेवालों पर यातना की बात सत्यापित होकर रही।

72. कहा जाएगा : "जहन्नम के द्वारों में प्रवेश करो। उसमें सदैव रहने के लिए।" तो बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का!

73. और जो लोग अपने रब का डर रखते थे, वे गिरोह के गिरोह जन्नत की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे इस हाल में कि उसके द्वार खुले होंगे। और उसके प्रहरी उनसे कहेंगे : "सलाम हो तुमपर! बहुत अच्छे रहे! अतः इसमें प्रवेश करो सदैव रहने के लिए तो (उनकी ख़ुशियों का क्या हाल होगा!)

74. और वे कहेंगे : "प्रशंसा अल्लाह के लिए, जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया, और हमें इस भूमि का वारिस बनाया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें वहाँ रहें-बसें।" अतः क्या ही अच्छा प्रतिदान है कर्म करनेवालों का!——

75. और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि वे सिंहासन के गिर्द घेरा बाँधे हुए,



अपने रब का गुणगान कर रहे हैं। और लोगों के बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा : "सारी प्रशंसा अल्लाह, सारे संसार के रब, के लिए है।"

40. अल-मोमिन

(मक्का में उतरी— आयतें 85)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम० ।

2. इस किताब का अवतरण प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से है,

3. जो गुनाह क्षमा करनेवाला, तौबा क़बूल करनेवाला, कठोर दण्ड देनेवाला, शक्तिमान है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अन्ततः उसी की ओर जाना है।

4. अल्लाह की आयतों के बारे में बस वही लोग झगड़ते हैं जिन्होंने इनकार किया, तो नगरों में उनकी चलत-फिरत तुम्हें धोखे में न डाले।

5. उनसे पहले नूह की क़ौम ने और उनके पश्चात दूसरे गिरोहों ने भी झुठलाया और हर समुदाय के लोगों ने अपने रसूलों के बारे में इरादा किया कि उन्हें पकड़ लें और वे असत्य का सहारा लेकर झगड़े, ताकि उसके द्वारा सत्य को उखाड़ दें। अन्ततः मैंने उन्हें पकड़ लिया। तो कैसी रही मेरी सज़ा!

6. और (जैसे दुनिया में सज़ा मिली) उसी प्रकार तेरे रब की यह बात भी उन लोगों पर सत्यापित हो गई है, जिन्होंने इनकार किया कि वे आग में पड़नेवाले हैं;

7. जो सिंहासन को उठाए हुए हैं और जो उसके चतुर्दिक हैं, अपने रब का

العرش ومن حوله يسبحون بحمد ربهم ويؤمنون
به ويستغفرون للذين آمنوا ربنا وسعت كل شيء
رحمة وعلما فاغفر للذين تابوا واتبعوا سبيلك
وقهم عذاب الجحيم ۝ ربنا وأدخلهم جنات عدن
التي وعدتهم ومن صلح من آبائهم وأزواجهم و
ذرياتهم إنك أنت العزيز الحكيم ۝ وقهم السيئات
ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته وذلك هو
الفوز العظيم ۝ إن الذين كفروا ينادون لمقت الله
أكبر من مقتكم أنفسكم إذ تدعون إلى الإيمان
فتكفرون ۝ قالوا ربنا أمتنا اثنتين وأحييتنا
اثنتين فاعترفنا بذنوبنا فهل إلى خروج من
سبيل ۝ ذلكم بأنه إذا دعي الله وحده كفرتم وإن
يشرك به تؤمنوا فالحكم لله العلي الكبير ۝ هو

गुणगान करते हैं और उसपर ईमान रखते हैं और उन लोगों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं जो ईमान लाए, कि : "ऐ हमारे रब! तू अपनी दयालुता और अपने ज्ञान से हर चीज़ को व्याप्त है। अतः जिन लोगों ने तौबा की और तेरे मार्ग का अनुसरण किया, उन्हें क्षमा कर दे और भड़कती हुई आग की यातना से उन्हें बचा ले।

8. ऐ हमारे रब! और उन्हें सदैव रहने के बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी संततियों में से जो योग्य हुए उन्हें भी। निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

9. और उन्हें अनिष्टों से बचा। जिसे उस दिन तूने अनिष्टों से बचा लिया, तो निश्चय ही उसपर तूने दया की। और वही बड़ी सफलता है।"

10. निश्चय ही जिन लोगों ने इनकार किया उन्हें पुकारकर कहा जाएगा कि "अपने आपसे जो तुम्हें विद्वेष एवं क्रोध है, तुम्हारे प्रति अल्लाह का क्रोध एवं द्वेष उससे कहीं बढ़कर है कि जब तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था तो तुम इनकार करते थे।"

11. वे कहेंगे : "ऐ हमारे रब! तूने हमें दो बार मृत रखा और दो बार जीवन प्रदान किया। अब हमने अपने गुनाहों को स्वीकार किया, तो क्या अब (यहाँ से) निकलने का भी कोई मार्ग है?"

12. वह (बुरा परिणाम) तो इसलिए सामने आएगा कि जब अकेला अल्लाह को पुकारा जाता है तो तुम इनकार करते हो। किन्तु यदि उसके साथ साझी ठहराया जाए तो तुम मान लेते हो। तो अब फ़ैसला तो अल्लाह ही के हाथ में है, जो सर्वोच्च बड़ा महान है।——

الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ
وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ۝ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ
ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝ يَوْمَ هُم بَارِزُونَ ۚ
لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ
لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝
وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ
كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ
يُطَاعُ ۝ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝
وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ
لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

13. वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आकाश से रोज़ी उतारता है, किन्तु याददिहानी तो बस वही हासिल करता है जो (उसकी ओर) रुजू करे।

14. अतः तुम अल्लाह ही को, धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए, पुकारो, यद्यपि इनकार करनेवालों को अप्रिय ही लगे।——

15. वह ऊँचे दर्जोंवाला, सिंहासनवाला है, अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है, अपने हुक्म से रूह उतारता है, ताकि वह मुलाक़ात के दिन से सावधान कर दे।

16. जिस दिन वे खुले रूप में सामने उपस्थित होंगे, उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी, "आज किसकी बादशाही है?" "अल्लाह की, जो अकेला सबपर क़ाबू रखनेवाला है।"

17. आज प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा। आज कोई ज़ुल्म न होगा। निश्चय ही अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।

18. (उन्हें अल्लाह की ओर बुलाओ) और उन्हें निकट आ जानेवाले (क़ियामत के) दिन से सावधान कर दो, जबकि उर (हृदय) कंठ को आ लगे होंगे और वे दबा रहे होंगे। ज़ालिमों का न कोई घनिष्ट मित्र होगा और न ऐसा सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए।

19. वह निगाहों की चोरी तक को जानता है और उसे भी जो सीने छिपा रहे होते हैं।

20. अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा। रहे वे जिन्हें वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं, वे किसी चीज़ का भी फ़ैसला करनेवाले नहीं। निस्संदेह अल्लाह ही है जो सुनता, देखता है।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ
اٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ
لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِيٌّ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَ
سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا
سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا
اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ
وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ
يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ۝
وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ

21. क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं? वे शक्ति और धरती में अपने चिह्नों की दृष्टि से उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे, फिर उनके गुनाहों के कारण अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह से उन्हें बचानेवाला कोई न हुआ।

22. वह (बुरा परिणाम) तो इसलिए सामने आया कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आते रहे, किन्तु उन्होंने इनकार किया। अन्ततः अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। निश्चय ही वह बड़ी शक्तिवाला, सज़ा देने में अत्यधिक कठोर है।

23-24. और हमने मूसा को भी अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ फ़िरऔन और हामान और क़ारून की ओर भेजा था, किन्तु उन्होंने कहा : "यह तो जादूगर है, बड़ा झूठा !"

25. फिर जब वह उनके सामने हमारे पास से सत्य लेकर आया तो उन्होंने कहा : "जो लोग ईमान लाकर उसके साथ हैं, उनके बेटों को मार डालो और उनकी स्त्रियों को जीवित छोड़ दो।" किन्तु इनकार करनेवालों की चाल तो भटकने ही के लिए होती है।

26. फ़िरऔन ने कहा : "मुझे छोड़ो, मैं मूसा को मार डालूँ और उसे चाहिए कि वह अपने रब को (अपनी सहायता के लिए) पुकारे। मुझे डर है कि ऐसा न हो कि वह तुम्हारे धर्म को बदल डाले या यह कि वह देश में बिगाड़ पैदा करे।"

27. मूसा ने कहा : "मैंने हर अहंकारी के मुक़ाबले में, जो हिसाब के दिन पर

لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ
مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ
يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ
وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا
يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ
هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ
ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۡ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ
اِنْ جَآءَنَا ۭ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ
اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۝ وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ
اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ۝ مِثْلَ دَاْبِ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا
اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ
يَوْمَ التَّنَادِ ۝ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

ईमान नहीं रखता, अपने रब और तुम्हारे रब की शरण ले ली है।"

28. फ़िरऔन के लोगों में से एक ईमानवाले व्यक्ति ने, जो अपने ईमान को छिपा रहा था, कहा : "क्या तुम एक ऐसे व्यक्ति को इसलिए मार डालोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुले प्रमाण भी लेकर आया है? यदि वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा। किन्तु यदि वह सच्चा है तो जिस चीज़ की वह तुम्हें धमकी दे रहा है, उसमें से कुछ न कुछ तो तुमपर पड़कर रहेगा। निश्चय ही अल्लाह उसको मार्ग नहीं दिखाता जो मर्यादाहीन, बड़ा झूठा हो।

29. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! आज तुम्हारी बादशाही है। धरती में प्रभावी हो। किन्तु अल्लाह की यातना के मुक़ाबले में कौन हमारी सहायता करेगा, यदि वह हमपर आ जाए?" फ़िरऔन ने कहा : "मैं तो तुम्हें बस वही दिखा रहा हूँ जो मैं स्वयं देख रहा हूँ और मैं तुम्हें बस ठीक रास्ता दिखा रहा हूँ, जो बुद्धिसंगत भी है।"

30-31. उस व्यक्ति ने, जो ईमान ला चुका था, कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझे भय है कि तुमपर (विनाश का) ऐसा दिन न आ पड़े, जैसा दूसरे विगत समुदायों पर आ पड़ा था —— जैसे नूह की क़ौम और आद और समूद और उनके पश्चातवर्ती लोगों का हाल हुआ। अल्लाह तो ऐसा नहीं कि बन्दों पर कोई ज़ुल्म करना चाहे।

32. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझे तुम्हारे बारे में चीख़-पुकार के दिन का भय है,

33. जिस दिन तुम पीठ फेरकर भागोगे, तुम्हें अल्लाह से बचानेवाला कोई

न होगा——और जिसे अल्लाह ही भटका दे उसे मार्ग दिखानेवाला कोई नहीं ।——

34. इससे पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ खुले प्रमाण लेकर आ चुके हैं, किन्तु जो कुछ वे लेकर तुम्हारे पास आए थे, उसके बारे में तुम बराबर संदेह में पड़े रहे, यहाँ तक कि जब उनकी मृत्यु हो गई तो तुम कहने लगे : "अल्लाह उनके पश्चात कदापि कोई रसूल न भेजेगा ।" इसी प्रकार अल्लाह उसे गुमराही में डाल देता है जो मर्यादाहीन, संदेहों में पड़नेवाला हो ।——

35. ऐसे लोगों को (गुमराही में डालता है) जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, बिना इसके कि उनके पास कोई प्रमाण आया हो, अल्लाह की दृष्टि में और उन लोगों की दृष्टि में जो ईमान लाए यह (बात) अत्यन्त अप्रिय है। इसी प्रकार अल्लाह हर अहंकारी, निर्दय-अत्याचारी के दिल पर मुहर लगा देता है ।——

36. फ़िरऔन ने कहा : "ऐ हामान ! मेरे लिए एक उच्च भवन बना, ताकि मैं साधनों तक पहुँच सकूँ,

37. आकाशों के साधनों (और क्षेत्रों) तक । फिर मूसा के पूज्य को झाँककर देखूँ । मैं तो उसे झूठा ही समझता हूँ ।" इस प्रकार फ़िरऔन के लिए उसका दुष्कर्म सुहाना बना दिया गया और उसे मार्ग[1] से रोक दिया गया । फ़िरऔन की चाल तो बस तबाही के सिलसिले में रही ।

38. उस व्यक्ति ने, जो ईमान लाया था, कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मेरा अनुसरण करो, मैं तुम्हें भलाई का ठीक रास्ता दिखाऊँगा ।

مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝
وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ
فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ
يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُرْتَابٌ ۝ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي
آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَ
عِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ
مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانُ ابْنِ لِي
صَرْحًا لَعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ۝ أَسْبَابَ السَّمَاوَاتِ
فَأَطَّلِعَ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ
زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا
كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ
يَا قَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ يَا قَوْمِ إِنَّمَا

1. अर्थात सत्य-मार्ग ।

39. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यह सांसारिक जीवन तो बस अस्थायी उपभोग है। निश्चय ही स्थायी रूप से ठहरने का घर तो आख़िरत ही है।

40. जिस किसी ने बुराई की तो उसे वैसा ही बदला मिलेगा, किन्तु जिस किसी ने अच्छा कर्म किया, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, किन्तु हो वह मोमिन, तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे। वहाँ उन्हें बेहिसाब दिया जाएगा।

41. ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! यह मेरे साथ क्या मामला है कि मैं तो तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की ओर बुला रहे हो ?

هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ؗ وَّ اِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ
الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ
وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَ
تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۝ تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ
اُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؗ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى
الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ
لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ
مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝
فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا
مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝

منزل

42. तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूँ और उसके साथ उसे साझी ठहराऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं, जबकि मैं तुम्हें बुला रहा हूँ उसकी ओर जो प्रभुत्वशाली, अत्यन्त क्षमाशील है।

43. निस्संदेह तुम मुझे जिसकी ओर बुलाते हो उसके लिए न संसार में आमंत्रण है और न आख़िरत (परलोक) में और यह कि हमें लौटना भी अल्लाह ही की ओर है और यह कि जो मर्यादाहीन हैं, वही आग (में पड़ने) वाले हैं।

44. अत: शीघ्र ही तुम याद करोगे, जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ। मैं तो अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ। निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि सब बन्दों पर है।

45. अन्तत: जो चाल वे चल रहे थे, उसकी बुराइयों से अल्लाह ने उसे बचा लिया और फ़िरऔनियों[1] को बुरी यातना ने आ घेरा;

1. अर्थात फ़िरऔन के लोगों और उसके अनुयायियों।

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ
السَّاعَةُ ۗ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝ وَ
اِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ
عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا
كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝ وَقَالَ
الَّذِيْنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ
عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ
رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۗ قَالُوْا بَلٰى ۗ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا
دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ۝ اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ
وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى

46. अर्थात आग ने; जिसके सामने वे प्रातःकाल और सायंकाल पेश किए जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत की घड़ी घटित होगी (कहा जाएगा) : "फ़िरऔन के लोगों को निकृष्टतम यातना में प्रविष्ट कराओ !"

47. और सोचो जबकि वे आग के भीतर एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों से, जो बड़े बनते थे, कहेंगे : "हम तो तुम्हारे पीछे चलनेवाले थे। अब क्या तुम हमपर से आग का कुछ भाग हटा सकते हो ?"

48. वे लोग, जो बड़े बनते थे, कहेंगे : "हममें से प्रत्येक इसी में पड़ा है। निश्चय ही अल्लाह बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका।"

49. जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के प्रहरियों से कहेंगे कि "अपने रब को पुकारो कि वह हमपर से एक दिन यातना कुछ हल्की कर दे !"

50. वे कहेंगे : "क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण लेकर नहीं आते रहे ?" कहेंगे : "क्यों नहीं !" वे कहेंगे : "फिर तो तुम्हीं पुकारो।" किन्तु इनकार करनेवालों की पुकार तो बस भटककर ही रह जाती है।

51. निश्चय ही हम अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए अवश्य सहायता करते हैं, सांसारिक जीवन में भी और उस दिन भी, जबकि गवाह खड़े होंगे।

52. जिस दिन ज़ालिमों को उनका उज़्र (सफ़ाई पेश करना) कुछ भी लाभ न पहुँचाएगा, बल्कि उनके लिए तो लानत है और उनके लिए बुरा घर है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا ... (continued)

وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ۝ هُدًى وَ
ذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَ
الْإِبْكَارِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ
سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۙ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَا هُمْ
بِبَالِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝
لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ
وَالْبَصِيرُ ۙ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا
الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ
لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝

53-54. मूसा को भी हम मार्ग दिखा चुके हैं और इसराईल की संतान को हमने किताब का उत्तराधिकारी बनाया, जो बुद्धि और समझवालों के लिए मार्गदर्शन और अनुस्मृति थी।

55. अत: धैर्य से काम लो। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है और अपने क़सूर की क्षमा चाहो और संध्या समय और प्रात: की घड़ियों में अपने रब की प्रशंसा की तसबीह करो।

56. जो लोग बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उनके पास आया हो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं उनके सीनों में केवल अहंकार है जिस तक वे पहुँचनेवाले नहीं।[1] अत: अल्लाह की शरण लो। निश्चय ही वह सुनता, देखता है।

57. निस्संदेह, आकाशों और धरती को पैदा करना लोगों को पैदा करने की अपेक्षा अधिक बड़ा (कठिन) काम है। किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

58. अंधा और आँखोंवाला बराबर नहीं होते, और वे लोग भी परस्पर बराबर नहीं होते जिन्होंने ईमान लाकर अच्छे कर्म किए और न बुरे कर्म करनेवाले ही परस्पर बराबर हो सकते हैं। तुम होश से काम थोड़े ही लेते हो!

59. निश्चय ही क़ियामत की घड़ी आनेवाली है, इसमें कोई संदेह नहीं। किन्तु अधिकतर लोग मानते नहीं।

60. तुम्हारे रब ने कहा है कि "तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार करूँगा।" जो लोग मेरी बन्दगी के मामले में घमण्ड से काम लेते हैं निश्चय ही वे शीघ्र ही अपमानित होकर जहन्नम में प्रवेश करेंगे।

1. अर्थात अपने अभिमान में वे सफल होनेवाले नहीं हैं।

61. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात (अंधकारमय) बनाई, ताकि तुम उसमें शान्ति प्राप्त करो और दिन को प्रकाशमान बनाया (ताकि उसमें दौड़-धूप करो)। निस्संदेह अल्लाह लोगों के लिए बड़ा उदार अनुग्रहवाला है, किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

62. वह है अल्लाह, तुम्हारा रब, हर चीज़ का पैदा करनेवाला ! उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। फिर तुम कहाँ उलटे फिरे जा रहे हो ?

63. इसी प्रकार वे भी उलटे फिरे जाते थे जो अल्लाह की निशानियों का इनकार करते थे।

الله الذي جعل لكم اليل لتسكنوا فيه و النهار
مبصرا ان الله لذو فضل على الناس ولكن اكثر
الناس لا يشكرون ۝ ذلكم الله ربكم خالق كل
شيء لا اله الا هو فانى تؤفكون ۝ كذلك
يؤفك الذين كانوا بايت الله يجحدون ۝ الله
الذي جعل لكم الارض قرارا والسماء بناء و
صوركم فاحسن صوركم ورزقكم من الطيبت
ذلكم الله ربكم فتبرك الله رب العلمين ۝ هو
الحي لا اله الا هو فادعوه مخلصين له الدين
الحمد لله رب العلمين ۝ قل اني نهيت ان اعبد
الذين تدعون من دون الله لما جاءني البينت
من ربي وامرت ان اسلم لرب العلمين ۝ هو
الذي خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم من

64. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने का स्थान बनाया और आकाश को एक भवन के रूप में बनाया, और तुम्हें रूप दिए तो क्या ही अच्छे रूप तुम्हें दिए, और तुम्हें अच्छी पाक चीज़ों की रोज़ी दी। वह है अल्लाह, तुम्हारा रब। तो बड़ी बरकतवाला है अल्लाह, सारे संसार का रब।

65. वह जीवन्त है। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः उसी को पुकारो, धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करके। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसार का रब है।

66. कह दो : "मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी बन्दगी करूँ जिन्हें तुम अल्लाह से हटकर पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले प्रमाण आ चुके हैं। मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं सारे संसार के रब के आगे नतमस्तक हो जाऊँ।"——

67. वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के लोथड़े से; फिर वह तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालता है, फिर (तुम्हें बढ़ाता

عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا أَشُدَّكُمْ
ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ
وَلِتَبْلُغُوٓا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هُوَ
الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰٓ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ
لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ
فِيٓ ءَايَٰتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ۝ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِالْكِتَٰبِ وَبِمَآ أَرْسَلْنَا بِهِۦ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝
إِذِ الْأَغْلَٰلُ فِيٓ أَعْنَٰقِهِمْ وَالسَّلَٰسِلُ يُسْحَبُونَ ۝
فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ
لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ۝ مِن دُونِ اللَّهِ
قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُوا مِن قَبْلُ شَيْـًٔا
كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَٰفِرِينَ ۝ ذَٰلِكُم بِمَا كُنتُمْ
تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ

है) ताकि अपनी प्रौढ़ता को प्राप्त हो, फिर मुहलत देता है कि तुम बुढ़ापे को पहुँचो—यद्यपि तुममें से कोई इससे पहले भी उठा लिया जाता है— और यह इसलिए करता है कि तुम एक नियत अवधि तक पहुँच जाओ और ऐसा इसलिए है कि तुम समझो।

68. वही है जो जीवन और मृत्यु देता है, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसके लिए बस कह देता है कि 'हो जा' तो वह हो जाता है।

69. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं, वे कहाँ फिरे जाते हैं?

70. जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था। तो शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा।

71-72. जबकि तौक़ उनकी गरदनों में होंगे और ज़ंजीरें (उनके पैरों में) वे खौलते हुए पानी में घसीटे जाएँगे, फिर आग में झोंक दिए जाएँगे।

73-74. फिर उनसे कहा जाएगा : "कहाँ हैं वे जिन्हें प्रभुत्व में साझी ठहराकर तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे?" वे कहेंगे : "वे हमसे गुम होकर रह गए, बल्कि हम इससे पहले किसी चीज़ को नहीं पुकारते थे।" इसी प्रकार अल्लाह इनकार करनेवालों को भटकता छोड़ देता है।

75. "यह इसलिए कि तुम धरती में नाहक़ मग्न थे और इसलिए कि तुम इतराते रहे हो।

تمرحون ۝ ادخلوا ابواب جهنم خلدين
فيها ۚ فبئس مثوى المتكبرين ۝ فاصبر
ان وعد الله حق ۚ فاما نرينك بعض الذي
نعدهم او نتوفينك فالينا يرجعون ۝ و
لقد ارسلنا رسلا من قبلك منهم من قصصنا
عليك ومنهم من لم نقصص عليك ۗ وما كان
لرسول ان ياتي باية الا باذن الله ۚ فاذا جاء
امر الله قضي بالحق وخسر هنالك المبطلون ۝
الله الذي جعل لكم الانعام لتركبوا منها و
منها تاكلون ۝ ولكم فيها منافع ولتبلغوا
عليها حاجة في صدوركم وعليها وعلى الفلك
تحملون ۝ ويريكم ايته ۖ فاي ايت الله
تنكرون ۝ افلم يسيروا في الارض فينظروا

76. प्रवेश करो जहन्नम के द्वारों में, उसमें सदैव रहने के लिए।" अतः बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का !

77. अतः धैर्य से काम लो। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। तो जिस चीज़ की हम उन्हें धमकी दे रहे हैं उसमें से कुछ यदि हम तुम्हें दिखा दें या हम तुम्हें उठा लें, हर हाल में उन्हें लौटना तो हमारी ही ओर है।

78. हम तुमसे पहले कितने ही रसूल भेज चुके हैं। उनमें से कुछ तो वे हैं जिनके वृत्तान्त का उल्लेख हमने तुमसे किया है और उनमें ऐसे भी हैं जिनके वृत्तान्त का उल्लेख हमने तुमसे नहीं किया। किसी रसूल को भी यह सामर्थ्य प्राप्त न थी कि वह अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई निशानी ले आए। फिर जब अल्लाह का आदेश आ जाता है तो ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाता है। और उस समय झूठवाले घाटे में पड़ जाते हैं।

79. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए ताकि उनमें से कुछ पर तुम सवारी करो और उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो।——

80. उनमें तुम्हारे लिए और भी फ़ायदे हैं—और ताकि उनके द्वारा तुम उस आवश्यकता की पूर्ति कर सको जो तुम्हारे सीनों में हो, और उनपर भी और नौकाओं पर भी तुम सवार होते हो।

81. और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है। आख़िर तुम अल्लाह की कौन-सी निशानी को नहीं पहचानते?

82. फिर क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा


كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوٓا أَكْثَرَ
مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَءَاثَارًا فِى الْأَرْضِ فَمَآ أَغْنَىٰ
عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَٰتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَ
حَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَأَوْا
بَأْسَنَا قَالُوٓا ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُۥ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِۦ
مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَٰنُهُمْ لَمَّا رَأَوْا
بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِى قَدْ خَلَتْ فِى عِبَادِهِۦ ۖ
وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَٰفِرُونَ ﴿٨٥﴾

سُورَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
حمٓ ﴿١﴾ تَنزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٢﴾ كِتَٰبٌ
فُصِّلَتْ ءَايَٰتُهُۥ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾

परिणाम हुआ, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं। वे उनसे अधिक थे और शक्ति और अपनी छोड़ी हुई निशानियों की दृष्टि से भी बढ़-चढ़कर थे। किन्तु जो कुछ वे कमाते थे, वह उनके कुछ भी काम न आया।

83. फिर जब उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आए तो जो ज्ञान उनके अपने पास था वे उसी पर मग्न होते रहे और उनको उसी चीज़ ने आ घेरा जिसका व परिहास करते थे।

84. फिर जब उन्होंने हमारी यातना देखी तो कहने लगे : "हम ईमान लाए अल्लाह पर जो अकेला है और उसका इनकार किया जिसे हम उसका साझी ठहराते थे।"

85. किन्तु उनका ईमान उनको कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता था जबकि उन्होंने हमारी यातना को देख लिया—यही अल्लाह की रीति है, जो उसके बन्दों में पहले से चली आई है—और उस समय इनकार करनेवाले घाटे में पड़कर रहे।

41. हा॰मीम॰अस-सजदा

(मक्का में उतरी— आयतें 54)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा॰ मीम॰।

2. यह अवतरण है बड़े कृपाशील, अत्यन्त दयावान की ओर से,

3. एक किताब, जिसकी आयतें खोल-खोलकर बयान हुई हैं; अरबी क़ुरआन के रूप में, उन लोगों के लिए जो जानना चाहें;



4. शुभ सूचक एवं सचेतकर्त्ता। किन्तु उनमें से अधिकतर कतरा गए तो वे सुनते ही नहीं।

5. और उनका कहना है कि "जिसकी ओर तुम हमें बुलाते हो उसके लिए तो हमारे दिल आवरणों में हैं। और हमारे कानों में बोझ है। और हमारे और तुम्हारे बीच एक ओट है; अत: तुम अपना काम करो, हम तो अपना काम करते हैं।"

6-7. कह दो : "मैं तो तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है। अत: तुम सीधे उसी का रुख़ करो और उसी से क्षमा-याचना करो—— साझी ठहरानेवालों के लिए तो बड़ी तबाही है, जो ज़कात नहीं देते और वही हैं जो आख़िरत का इनकार करते हैं।——

8. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए ऐसा बदला है जिसका क्रम टूटनेवाला नहीं।"

9. कहो : "क्या तुम उसका इनकार करते हो, जिसने धरती को दो दिनों (काल) में पैदा किया और तुम उसके समकक्ष ठहराते हो? वह तो सारे संसार का रब है।

10. और उसने उस (धरती) में उसके ऊपर से पहाड़ जमाए और उसमें बरकत रखी और उसमें उसकी ख़ुराकों को ठीक अंदाज़े से रखा। माँग करनेवालों के लिए समान रूप से यह सब चार दिन में हुआ।

ثُمَّ اسْتَوٰىٓ اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ
لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۭ قَالَتَآ
اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۝ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ
فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ۭ وَ
زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۤ وَحِفْظًا ۭ
ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا
فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ
ثَمُوْدَ ۝ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ
وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ قَالُوْا لَوْ شَآءَ
رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ۝ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۭ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ
اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَكَانُوْا

11. फिर उसने आकाश की ओर रुख़ किया, जबकि वह मात्र धुआँ था—— और उसने उससे और धरती से कहा : 'आओ, स्वेच्छा के साथ या अनिच्छा के साथ।' उन्होंने कहा : 'हम स्वेच्छा के साथ आए।'——

12. फिर दो दिनों में उनको अर्थात सात आकाशों को बनाकर पूरा किया और प्रत्येक आकाश में उससे संबंधित आदेश की प्रकाशना कर दी और दुनिया के (निकटवर्ती) आकाश को हमने दीपों से सजाया (रात में यात्रियों के दिशा-निर्देश आदि के लिए) और सुरक्षित करने के उद्देश्य से। यह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ का ठहराया हुआ है।"

13. अब यदि वे लोग ध्यान में न लाएँ तो कह दो : "मैं तुम्हें उसी तरह के कड़का (वज्रपात) से डराता हूँ, जैसा कड़का आद और समूद पर हुआ था।"

14. जब उनके पास रसूल उनके आगे और उनके पीछे से आए कि "अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो।" तो उन्होंने कहा : "यदि हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता। अतः जिस चीज़ के साथ तुम्हें भेजा गया है, हम उसे नहीं मानते।"

15. रहे आद, तो उन्होंने नाहक़ धरती में घमण्ड किया और कहा : "कौन हमसे शक्ति में बढ़कर है?" क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने उन्हें पैदा किया, वह उनसे शक्ति में बढ़कर है? वे तो हमारी आयतों का इनकार

بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا
فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى
وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا
الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ
الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ
اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰىٓ اِذَا مَا
جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ
عَلَيْنَا ۖ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ
وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَمَا
كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ

ही करते रहे ।

16. अन्ततः हमने कुछ अशुभ दिनों में उनपर एक शीत-झंझावात चलाई, ताकि हम उन्हें सांसारिक जीवन में अपमान और रुसवाई की यातना का मज़ा चखा दें। और आख़िरत की यातना तो इससे कहीं बढ़कर रुसवा करनेवाली है। और उनको कोई सहायता भी न मिल सकेगी।

17. और रहे समूद, तो हमने उनके सामने सीधा मार्ग दिखाया, किन्तु मार्गदर्शन के मुक़ाबले में उन्होंने अन्धा रहना ही पसन्द किया। परिणामतः जो कुछ वे कमाई करते रहे थे उसके बदले में अपमानजनक यातना के कड़के ने उन्हें आ पकड़ा।

18. और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए थे और डर रखते थे।

19-20. और विचार करो जिस दिन अल्लाह के शत्रु आग की ओर एकत्र करके लाए जाएँगे, फिर उन्हें श्रेणियों में क्रमबद्ध किया जाएगा, यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँच जाएँगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उनके विरुद्ध उन बातों की गवाही देंगी, जो कुछ वे करते रहे होंगे।

21. वे अपनी खालों से कहेंगे कि "तुमने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी ?" वे कहेंगी : "हमें उसी अल्लाह ने वाक-शक्ति प्रदान की है, जिसने प्रत्येक चीज़ को वाक-शक्ति प्रदान की।"—— उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी की ओर तुम्हें लौटना है।

22. तुम इस भय से छिपते न थे कि तुम्हारे कान तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगे, और न इसलिए कि तुम्हारी आँखें गवाही देंगी और न इस कारण से कि

أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا
يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي
ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝
فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا
فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ۝ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ
فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَ
حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۝
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ
وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ۝ فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ ۖ
لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا

तुम्हारी खालें गवाही देंगी, बल्कि तुमने तो यह समझ रखा था कि अल्लाह तुम्हारे बहुत-से कामों को जानता ही नहीं।

23. और तुम्हारे उस गुमान ने तुम्हें बरबाद किया जो तुमने अपने रब के साथ किया; अतः तुम घाटे में पड़कर रहे।

24. अब यदि वे धैर्य दिखाएँ तब भी आग ही उनका ठिकाना है। और यदि वे किसी प्रकार (उसके) क्रोध को दूर करना चाहें, तब भी वे ऐसे नहीं कि वे राज़ी कर सकें।

25. हमने उनके लिए कुछ साथी नियुक्त कर दिए थे। फिर उन्होंने उनके आगे और उनके पीछे जो कुछ था उसे सुहाना बनाकर उन्हें दिखाया। अंततः उनपर भी जिन्नों और मनुष्यों के उन गिरोहों के साथ फ़ैसला सत्यापित होकर रहा, जो उनसे पहले गुज़र चुके थे। निश्चय ही वे घाटा उठानेवाले थे।

26. जिन लोगों ने इनकार किया उन्होंने कहा : "इस क़ुरआन को सुनो ही मत और इसके बीच में शोर-गुल मचाओ, ताकि तुम प्रभावी रहो।"

27. अतः हम अवश्य ही उन लोगों को, जिन्होंने इनकार किया, कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे, और हम अवश्य उन्हें उसका बदला देंगे जो निकृष्टतम कर्म वे करते रहे हैं।

28. वह है अल्लाह के शत्रुओं का बदला—आग। उसी में उनका सदा का घर है, उसके बदले में जो वे हमारी आयतों का इनकार करते रहे।

يَجْحَدُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا
الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ
أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ
الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ
الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي
أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ
رَّحِيمٍ ۝ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَ
عَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَلَا تَسْتَوِي
الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ
فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ
حَمِيمٌ ۝ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ وَمَا

29. और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहेंगे : "ऐ हमारे रब ! हमें दिखा दे उन जिन्नों और मनुष्यों को, जिन्होंने हमको पथभ्रष्ट किया कि हम उन्हें अपने पैरों तले डाल दें ताकि वे सबसे नीचे जा पड़ें ।[1]

30. जिन लोगों ने कहा कि "हमारा रब अल्लाह है ।" फिर इसपर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उनपर फ़रिश्ते उतरते हैं कि "न डरो और न शोकाकुल हो, और उस जन्नत की शुभ सूचना लो जिसका तुमसे वादा किया गया है ।

31. हम सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे सहचर मित्र हैं और आख़िरत में भी । और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ है, जिसकी इच्छा तुम्हारे जी को होगी । और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा, जिसकी तुम माँग करोगे ।

32. आतिथ्य के रूप में क्षमाशील, दयावान सत्ता की ओर से ।"

33. और उस व्यक्ति से बात में अच्छा कौन हो सकता है जो अल्लाह की ओर बुलाए और अच्छे कर्म करे और कहे : "निस्संदेह मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ ?"

34. भलाई और बुराई समान नहीं हैं । तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो । फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र है ।

35. किन्तु यह चीज़ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्य से काम

1. अर्थात पूर्णरूपेण अपमानित हों ।

يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ
الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا
لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝
فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ
لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ
اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ
الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ
يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ اِنَّ

लेते हैं, और यह चीज़ केवल उसको प्राप्त होती है जो बड़ा भाग्यशाली होता है।

36. और यदि शैतान की ओर से कोई उकसाहट तुम्हें चुभे तो अल्लाह की शरण माँग लो। निश्चय ही वह सबकुछ सुनता, जानता है।

37. रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा उसकी निशानियों में से हैं। तुम न तो सूर्य को सजदा करो और न चन्द्रमा को, बल्कि अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें पैदा किया, यदि तुम उसी की बन्दगी करनेवाले हो।

38. लेकिन यदि वे घमण्ड करें (और अल्लाह को याद न करें), तो जो फ़रिश्ते तुम्हारे रब के पास हैं वे तो रात और दिन उसकी तसबीह करते ही रहते हैं और वे उकताते नहीं।

39. और यह चीज़ भी उसकी निशानियों में से है कि तुम देखते हो कि धरती दबी पड़ी हुई है; फिर ज्यों ही हमने उसपर पानी बरसाया कि वह फबक उठी और फूल गई। निश्चय ही जिसने उसे जीवित किया, वही मुर्दों को जीवित करनेवाला है। निस्संदेह उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

40. जो लोग हमारी आयतों में कुटिलता की नीति अपनाते हैं वे हमसे छिपे हुए नहीं हैं, तो क्या जो व्यक्ति आग में डाला जाए वह अच्छा है या वह जो क़ियामत के दिन निश्चिन्त होकर आएगा? जो चाहो कर लो, तुम जो कुछ करते हो वह तो उसे देख ही रहा है।

41. जिन लोगों ने अनुस्मृति का इनकार किया, जबकि वह उनके पास आई, हालाँकि वह एक प्रभुत्वशाली किताब है, (तो न पूछो कि उनका कितना बुरा परिणाम होगा)।

42. असत्य उस तक न उसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से; अवतरण है उसकी ओर से जो अत्यन्त तत्त्वदर्शी, प्रशंसा के योग्य है।

43. तुम्हें बस वही कहा जा रहा है, जो उन रसूलों को कहा जा चुका है, जो तुमसे पहले गुज़रे हैं। निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील है और दुखद दण्ड देनेवाला भी।

الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَٰبٌ
عَزِيزٌ ۝ لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا
مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝ مَا
يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ
رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَلَوْ جَعَلْنَٰهُ
قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ ءَأَعْجَمِيٌّ
وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ
عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۗ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ
لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ
وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ۝

44. यदि हम उसे ग़ैर अरबी क़ुरआन बनाते तो वे कहते कि "उसकी आयतें क्यों नहीं (हमारी भाषा में) खोलकर बयान की गईं? यह क्या कि वाणी तो ग़ैर अरबी है और व्यक्ति अरबी?" कहो : "वह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए मार्गदर्शन और आरोग्य है, किन्तु जो लोग ईमान नहीं ला रहे हैं उनके कानों में बोझ है और वह (क़ुरआन) उनके लिए अन्धापन (सिद्ध हो रहा) है, वे ऐसे हैं जिनको किसी दूर के स्थान से पुकारा जा रहा हो।"

45. हमने मूसा को भी किताब प्रदान की थी, फिर उसमें भी विभेद किया गया। यदि तुम्हारे रब की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न हो चुकी होती तो उनके बीच फ़ैसला चुका दिया जाता। हालाँकि वे उसकी ओर से उलझन में डाल देनेवाले संदेह में पड़े हुए हैं।

46. जिस किसी ने अच्छा कर्म किया तो अपने ही लिए और जिस किसी ने बुराई की, तो उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा। वास्तव में तुम्हारा रब अपने बन्दों पर तनिक भी ज़ुल्म नहीं करता।

مِنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا
بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا
آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا
كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُمْ مِنْ
مَحِيصٍ ﴿٤٨﴾ لَا يَسْأَمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ
وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ
رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا
لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُجِعْتُ إِلَىٰ
رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾
وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ

47. उस घड़ी का ज्ञान अल्लाह की ओर फिरता है। जो फल भी अपने कोषों से निकलते हैं और जो मादा भी गर्भवती होती है और बच्चा जनती है, अनिवार्यत: उसे इन सबका ज्ञान होता है। जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा : "कहाँ हैं मेरे साझीदार ?" वे कहेंगे : "हम तेरे समक्ष खुल्लम-खुल्ला कह चुके हैं कि हममें से कोई भी इसका गवाह नहीं।"

48. और जिन्हें वे पहले पुकारा करते थे वे उनसे गुम हो जाएँगे। और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई भी भागने की जगह नहीं है।

49. मनुष्य[1] भलाई माँगने से नहीं उकताता, किन्तु यदि उसे कोई तकलीफ़ छू जाती है तो वह निराश होकर आस छोड़ बैठता है।

50. और यदि उस तकलीफ़ के बाद, जो उसे पहुँची, हम उसे अपनी दयालुता का आस्वादन करा दें तो वह निश्चय ही कहेगा : "यह तो मेरा हक़ ही है। मैं तो यह नहीं समझता कि वह, क़ियामत की घड़ी, घटित होगी और यदि मैं अपने रब की ओर लौटाया भी गया तो अवश्य ही उसके पास मेरे लिए अच्छा पारितोषिक होगा।" फिर हम उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, अवश्य बताकर रहेंगे, जो कुछ उन्होंने किया होगा। और हम उन्हें अवश्य ही कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे।

51. जब हम मनुष्य पर अनुकम्पा करते हैं तो वह ध्यान में नहीं लाता और अपना पहलू फेर लेता है। किन्तु जब उसे तकलीफ़ छू जाती है, तो वह लम्बी-चौड़ी प्रार्थनाएँ करने लगता है।

1. यहाँ संकेत उस मनुष्य की ओर है, जो सत्य का इनकार करनेवाला हो।

52. कह दो कि "क्या तुमने विचार किया, यदि वह (क़ुरआन) अल्लाह की ओर से ही हुआ और तुमने उसका इनकार किया तो उससे बढ़कर भटका हुआ और कौन होगा जो विरोध में बहुत दूर जा पड़ा हो?"

53. शीघ्र ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ वाह्य क्षेत्रों में दिखाएँगे और स्वयं उनके अपने भीतर भी, यहाँ तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि वह (क़ुरआन) सत्य है। क्या तुम्हारा रब इस दृष्टि से काफ़ी नहीं कि वह हर चीज़ का साक्षी है।



أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم
بِهِۦ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ۝
سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ
يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُۥ
عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ ۝ أَلَآ إِنَّهُمْ فِى مِرْيَةٍ
مِّن لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَآ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيطٌۢ ۝

سُورَةُ الشُّورَىٰ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

حمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذَٰلِكَ يُوحِىٓ إِلَيْكَ وَإِلَى
ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكَ ٱللَّهُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ۝ لَهُۥ
مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ
ٱلْعَظِيمُ ۝ تَكَادُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِن
فَوْقِهِنَّ ۚ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ

54. जान लो कि वे लोग अपने रब से मिलन के बारे में संदेह में पड़े हुए हैं। जान लो कि निश्चय ही वह हर चीज़ को अपने घेरे मे लिए हुए है।

42. अश-शूरा

(मक्का में उतरी—— आयतें 53)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम०।

2. ऐन० सीन० क़ाफ़०।

3. इसी प्रकार अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी तुम्हारी ओर और उन लोगों की ओर प्रकाशना (वह्य) करता रहा है, जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं।

4. आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है और वह सर्वोच्च महिमावान है।

5. लगता है कि आकाश स्वयं अपने ऊपर से फट पड़ें। हाल यह है कि फ़रिश्ते अपने रब का गुणगान कर रहे हैं, और उन लोगों के लिए जो धरती

وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ
دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ
قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا
وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ
وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً
وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ
وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمِ
اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ
وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ
ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

में हैं, क्षमा की प्रार्थना करते रहते हैं। सुन लो! निश्चय ही अल्लाह ही क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

6. और जिन लोगों ने उससे हटकर अपने कुछ दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, अल्लाह उनपर निगरानी रखे हुए है। तुम उनके कोई ज़िम्मेदार नहीं हो।

7. और (जैसे हम स्पष्ट आयतें उतारते हैं) उसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर एक अरबी क़ुरआन की प्रकाशना की है, ताकि तुम बस्तियों के केन्द्र (मक्का) को और जो लोग उसके चतुर्दिक हैं उनको सचेत कर दो और सचेत करो इकट्ठा होने के दिन से, जिसमें कोई संदेह नहीं। एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह भड़कती आग में।

8. यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही समुदाय बना देता, किन्तु वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाख़िल करता है। रहे ज़ालिम, तो उनका न तो कोई निकटवर्ती मित्र है और न कोई (दूर का) सहायक।

9. (क्या उन्होंने अल्लाह से हटकर दूसरे सहायक बना लिए हैं), या उन्होंने उससे हटकर दूसरे संरक्षक बना रखे हैं? संरक्षक तो अल्लाह ही है। वही मुर्दों को जीवित करता है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

10. (रसूल ने कहा) "जिस चीज़ में तुमने विभेद किया है उसका फ़ैसला तो अल्लाह के हवाले है। वही अल्लाह मेरा रब है। उसी पर मैंने भरोसा किया है, और उसी की ओर मैं रुजू करता हूँ।

11. वह आकाशों और धरती का पैदा करनेवाला है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी अपनी ही सहजाति से जोड़े बनाए और चौपायों के जोड़े भी। फैला रहा है वह तुमको अपने में। उसके सदृश कोई चीज़ नहीं। वही सबकुछ सुनता, देखता है।

12. आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं। वह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। निस्संदेह उसे हर चीज़ का ज्ञान है।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ
اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ
يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۤءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ
نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ
اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ
وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۚ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا
تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۚ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَاۤءُ
وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ

13. उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी।"

और वह (जीवन्त आदेश) जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है और वह जिसकी ताकीद हमने इबराहीम और मूसा और ईसा को की थी यह है कि "धर्म को क़ायम करो और उसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ।" बहुदेववादियों को वह चीज़ बहुत अप्रिय है, जिसकी ओर तुम उन्हें बुलाते हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी ओर छाँट लेता है और अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उसकी ओर रुजू करता है।

14. उन्होंने तो परस्पर एक-दूसरे पर ज़्यादती करने के उद्देश्य से इसके पश्चात विभेद किया कि उनके पास ज्ञान आ चुका था। और यदि तुम्हारे रब की ओर से एक नियत अवधि तक के लिए बात पहले निश्चित न हो चुकी

بينهم وإن الذين أورثوا الكتاب من بعدهم
لفي شك منه مريب ۝ فلذلك فادع
واستقم كما أمرت ولا تتبع أهواءهم وقل
آمنت بما أنزل الله من كتاب وأمرت
لأعدل بينكم الله ربنا وربكم لنا أعمالنا
ولكم أعمالكم لا حجة بيننا وبينكم الله
يجمع بيننا وإليه المصير ۝ والذين يحاجون
في الله من بعد ما استجيب له حجتهم
داحضة عند ربهم وعليهم غضب ولهم عذاب
شديد ۝ الله الذي أنزل الكتاب بالحق
والميزان وما يدريك لعل الساعة
قريب ۝ يستعجل بها الذين لا يؤمنون بها
والذين آمنوا مشفقون منها ويعلمون أنها

होती तो उनके बीच फ़ैसला चुका दिया गया होता। किन्तु जो लोग उनके पश्चात किताब के वारिस हुए वे उसकी ओर से एक उलझन में डाल देनेवाले संदेह में पड़े हुए हैं।

15. अत: इसी लिए (उन्हें सत्य की ओर) बुलाओ, और जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया है स्वयं क़ायम रहो, और उनकी इच्छाओं का पालन न करना और कह दो : "अल्लाह ने जो किताब अवतरित की है, मैं उसपर ईमान लाया। मुझे तो आदेश हुआ है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह ही हमारा भी रब है और तुम्हारा रब भी। हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। हममें और तुममें कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा और अन्तत: उसी की ओर जाना भी है।"

16. जो लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं, इसके पश्चात कि उसकी पुकार स्वीकार कर ली गई, उनका झगड़ना उनके रब की दृष्टि में बिलकुल न ठहरनेवाला (असत्य) है। प्रकोप है उनपर और उनके लिए कड़ी यातना है।

17. वह अल्लाह ही है जिसने हक़ के साथ किताब और तुला अवतरित की। और तुम्हें क्या मालूम कदाचित क़ियामत की घड़ी निकट ही आ लगी हो।

18. उसकी जल्दी वे लोग मचाते हैं जो उसपर ईमान नहीं रखते, किन्तु जो ईमान रखते हैं वे तो उससे डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है। जान लो,

الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ
لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ
مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝ مَنْ كَانَ
يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۖ وَمَنْ
كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي
الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا
لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ
الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا
كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ ۖ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ ذَٰلِكَ الَّذِي
يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

जो लोग उस घड़ी के बारे में संदेह डालनेवाली बहसें करते हैं, वे परले दरजे की गुमराही में पड़े हुए हैं।

19. अल्लाह अपने बन्दों पर अत्यन्त दयालु है। वह जिसे चाहता है रोज़ी देता है। वह शक्तिमान, अत्यन्त प्रभुत्वशाली है।

20. जो कोई आख़िरत की खेती चाहता है, हम उसके लिए उसकी खेती में बढ़ोत्तरी प्रदान करेंगे और जो कोई दुनिया की खेती चाहता है, हम उसमें से उसे कुछ दे देते हैं, किन्तु आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

21. (क्या उन्हें समझ नहीं) या उनके कुछ ऐसे (ठहराए हुए) साझीदार हैं, जिन्होंने उनके लिए कोई ऐसा धर्म निर्धारित कर दिया है जिसकी अनुज्ञा अल्लाह ने नहीं दी? यदि फ़ैसले की बात निश्चित न हो गई होती तो उनके बीच फ़ैसला हो चुका होता। निश्चय ही ज़ालिमों के लिए दुखद यातना है।

22. तुम ज़ालिमों को देखोगे कि उन्होंने जो कुछ कमाया उससे डर रहे होंगे, किन्तु वह तो उनपर पड़कर रहेगा। किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे जन्नतों की वाटिकाओं में होंगे। उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ है जिसकी वे इच्छा करेंगे। वही तो बड़ा उदार अनुग्रह है।

23. उसी की शुभ सूचना अल्लाह अपने उन बन्दों को देता है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए——कहो : "मैं इसका तुमसे कोई पारिश्रमिक

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ
وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ
فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ
الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُوْنَ ۝ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ
لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ
اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ
الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ

नहीं माँगता, बस निकटता का प्रेम-भाव चाहता हूँ, जो कोई नेकी कमाएगा हम उसके लिए उसमें अच्छाई की अभिवृद्धि करेंगे। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, गुणग्राहक है।"

24. (क्या वे ईमान नहीं लाएँगे) या उनका कहना है कि "इस व्यक्ति ने अल्लाह पर मिथ्यारोपण किया है?" यदि अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे (जिस प्रकार उसने इनकार करनेवालों के दिल पर मुहर लगा दी है)। अल्लाह तो असत्य को मिटा रहा है और सत्य को अपने बोलों से सत्य सिद्ध कर रहा है। निश्चय ही वह सीनों तक की बात को भी भली-भाँति जानता है।

25. वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और बुराइयों को माफ़ करता है, हालाँकि वह जानता है, जो कुछ तुम करते हो।

26. और वह उन लोगों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करता है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए। और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करता है। रहे इनकार करनेवाले, तो उनके लिए कड़ी यातना है।

27. यदि अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता तो वे धरती में सरकशी करने लगते। किन्तु वह एक अंदाज़े के साथ जो चाहता है, उतारता है। निस्संदेह वह अपने बन्दों की ख़बर रखनेवाला है। वह उनपर निगाह रखता है।

28. वही है जो इसके पश्चात कि लोग निराश हो चुके होते हैं, मेंह बरसाता है और अपनी दयालुता को फैला देता है। और वही है संरक्षक

मित्र, प्रशंसनीय !

29. और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती का पैदा करना, और वे जीवधारी भी जो उसने इन दोनों में[1] फैला रखे हैं। वह जब चाहे उन्हें इकट्ठा करने की सामर्थ्य भी रखता है।

30. जो मुसीबत तुम्हें पहुँची वह तो तुम्हारे अपने हाथों की कमाई से पहुँची और बहुत कुछ तो वह माफ़ कर देता है।

31. तुम धरती में क़ाबू से निकल जानेवाले नहीं हो, और न अल्लाह से हटकर तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र है और न सहायक ही।


الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِن دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ
جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۝ وَمَا أَصَابَكُم مِّن
مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ ۝
وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن
دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ
فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ إِن يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ
رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ۝ أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَن
كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا
لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ۝ فَمَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ
آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ

32. उसकी निशानियों में से समुद्र में पहाड़ों के सदृश चलते जहाज़ भी हैं।

33. यदि वह चाहे तो वायु को ठहरा दे, तो वे समुद्र की पीठ पर ठहरे रह जाएँ—निश्चय ही इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए जो अत्यन्त धैर्यवान, कृतज्ञ हो।

34. या उनको[2] उनकी कमाई के कारण विनष्ट कर दे और बहुतों को माफ़ भी कर दे।

35. और परिणामतः वे लोग जान लें जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं।

36. तुम्हें जो चीज़ भी मिली है वह तो सांसारिक जीवन की अस्थायी सुख-सामग्री है। किन्तु जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम भी है और शेष रहनेवाला भी, वह उन्हीं के लिए है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं;

1. अर्थात आकाशों और धरती में।
2. अर्थात जहाज़ों को।

كبائر الإثم والفواحش وإذا ما غضبوا هم يغفرون ۝
والذين استجابوا لربهم وأقاموا الصلوة وأمرهم
شورى بينهم ومما رزقنهم ينفقون ۝ والذين
إذا أصابهم البغي هم ينتصرون ۝ وجزؤا سيئة
سيئة مثلها فمن عفا وأصلح فأجره على
الله إنه لا يحب الظلمين ۝ ولمن انتصر بعد
ظلمه فأولئك ما عليهم من سبيل ۝ إنما السبيل
على الذين يظلمون الناس ويبغون في الأرض
بغير الحق أولئك لهم عذاب أليم ۝ ولمن صبر
وغفر إن ذلك لمن عزم الأمور ۝ ومن يضلل
الله فما له من ولي من بعده وترى الظلمين
لما رأوا العذاب يقولون هل إلى مرد من
سبيل ۝ وتراهم يعرضون عليها خشعين من

37. जो बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं और जब उन्हें (किसी पर) क्रोध आता है तो वे क्षमा कर देते हैं;

38. और जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ क़ायम की, और उनका मामला उनके पारस्परिक परामर्श से चलता है, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं;

39. और जो ऐसे हैं कि जब उनपर ज़्यादती होती है तो वे प्रतिशोध करते हैं।

40. बुराई का बदला वैसी ही बुराई है किन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार करे तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।

41. और जो कोई अपने ऊपर ज़ुल्म होने के पश्चात बदला ले ले, तो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं।

42. इलज़ाम तो केवल उनपर आता है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और धरती में नाहक़ ज़्यादती करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है।

43. किन्तु जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।

44. जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराही में डाल दे, तो उसके पश्चात उसे संभालनेवाला कोई भी नहीं। तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे यातना को देख लेंगे तो कह रहे होंगे : "क्या लौटने का भी कोई मार्ग है?"

45. और तुम उन्हें देखोगे कि वे उस (जहन्नम) पर इस दशा में लाए जा रहे हैं कि बेबसी और अपमान के कारण दबे हुए हैं। कनखियों से देख रहे हैं। जो

الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ
اَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ
عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ
يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ۝ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۗ مَا لَكُمْ
مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ
اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۗ اِنْ عَلَيْكَ
اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ
فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۗ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۗ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا

लोग ईमान लाए, वे उस समय कहेंगे कि "निश्चय ही घाटे में पड़नेवाले वही हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने आपको और अपने लोगों को घाटे में डाल दिया। सावधान! निश्चय ही ज़ालिम स्थिर रहनेवाली यातना में होंगे।

46. और उनके कुछ संरक्षक भी न होंगे, जो सहायता करके उन्हें अल्लाह से बचा सकें। जिसे अल्लाह गुमराही में डाल दे तो उसके लिए फिर कोई मार्ग नहीं।"

47. अपने रब की बात मान लो इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जो पलटने का नहीं। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई शरण-स्थल होगा और न तुम किसी चीज़ को रद्द कर सकोगे।

48. अब यदि वे ध्यान में न लाएँ तो हमने तुम्हें उनपर कोई रक्षक बनाकर तो भेजा नहीं है। तुमपर तो केवल (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है। हाल यह है कि जब हम मनुष्य को अपनी ओर से किसी दयालुता का आस्वादन कराते हैं तो वह उसपर इतराने लगता है, किन्तु ऐसे लोगों के हाथों ने जो कुछ आगे भेजा है उसके कारण यदि उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो निश्चय ही वही मनुष्य बड़ा कृतघ्न बन जाता है।

49-50. अल्लाह ही की है आकाशों और धरती की बादशाही। वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है लड़कियाँ देता है और जिसे चाहता है

يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورَ ۝ أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَ
إِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝
وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ
وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ
مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا
إِلَيْكَ رُوحًا مِنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ
وَلَا الْإِيمَانُ وَلَٰكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا نَهْدِي بِهِ مَنْ
نَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝
صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ۝

سُورَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا

लड़के देता है। या उन्हें लड़के और लड़कियाँ मिला-जुलाकर देता है और जिसे चाहता है निस्संतान रखता है। निश्चय ही वह सर्वज्ञ, सामर्थ्यवान है।

51. किसी मनुष्य की यह शान नहीं कि अल्लाह उससे बात करे, सिवाय इसके कि प्रकाशना के द्वारा या परदे के पीछे से (बात करे)। या यह कि वह एक रसूल (फ़रिश्ता) भेज दे, फिर वह उसकी अनुज्ञा से जो कुछ वह चाहता है प्रकाशना कर दे। निश्चय ही वह सर्वोच्च अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

52-53. और इसी प्रकार हमने अपने आदेश से एक रूह (क़ुरआन) की प्रकाशना तुम्हारी ओर की है। तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या होती है और न ईमान को (जानते थे), किन्तु हमने इस (प्रकाशना) को एक प्रकाश बनाया, जिसके द्वारा हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं मार्ग दिखाते हैं। निश्चय ही तुम एक सीधे मार्ग की ओर पथप्रदर्शन कर रहे हो—उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब कुछ है, जो आकाशों में है और जो धरती में है। सुन लो, सारे मामले अन्ततः अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

43. अज़-ज़ुख़रुफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 89)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम०।
2. गवाह है स्पष्ट किताब।
3. हमने उसे अरबी क़ुरआन बनाया, ताकि तुम समझो।

عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّهُ فِيٓ أُمِّ الْكِتٰبِ
لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝ أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِن نَّبِيٍّ
فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ۝ فَأَهْلَكْنَآ أَشَدَّ مِنْهُم بَطْشًا وَمَضٰى
مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا
لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ
بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝
وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوٰجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ
الْفُلْكِ وَالْأَنْعٰمِ مَا تَرْكَبُونَ ۝ لِتَسْتَوُۥا عَلٰى ظُهُورِهِ
ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ

4. और निश्चय ही वह मूल किताब में अंकित है, हमारे यहाँ बहुत उच्च कोटि की, तत्वदर्शिता से परिपूर्ण है।

5. क्या इसलिए कि तुम मर्यादाहीन लोग हो, हम तुमपर से बिलकुल ही नज़र फेर लेंगे?

6. हमने पहले के लोगों में कितने ही रसूल भेजे।

7. किन्तु जो भी नबी उनके पास आया, वे उसका उपहास ही करते रहे।

8. अन्ततः हमने उनको पकड़ में लेकर विनष्ट कर दिया जो उनसे कहीं अधिक बलशाली थे। और पहले के लोगों की मिसाल गुज़र चुकी है।

9. यदि तुम उनसे पूछो कि "आकाशों और धरती को किसने पैदा किया?" तो वे अवश्य कहेंगे : "उन्हें अत्यन्त प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ सत्ता ने पैदा किया।"

10. जिसने तुम्हारे लिए धरती को गहवारा बनाया और उसमें तुम्हारे लिए मार्ग बना दिए, ताकि तुम्हें मार्गदर्शन प्राप्त हो।

11. और जिसने आकाश से एक अंदाज़े से पानी उतारा। और हमने उसके द्वारा मृत भूमि को जीवित कर दिया। इसी तरह तुम भी (जीवित करके) निकाले जाओगे।

12. और जिसने विभिन्न प्रकार की चीज़ें पैदा कीं, और तुम्हारे लिए वे नौकाएँ और जानवर बनाए जिनपर तुम सवार होते हो।

13. ताकि तुम उनकी पीठों पर जमकर बैठो, फिर याद करो अपने रब की अनुकम्पा को जब तुम उनपर बैठ जाओ और कहो : "कितना महिमावान है

تَقُولُوا سُبْحٰنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ
مُقْرِنِينَ ۝ وَإِنَّا إِلٰى رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ۝ وَجَعَلُوا لَهٗ
مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝
أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّأَصْفٰكُم بِالْبَنِينَ ۝
وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ
وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝ أَوَمَن يُنَشَّؤُا فِي
الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝ وَجَعَلُوا
الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ إِنٰثًا ۚ أَشَهِدُوا
خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهٰدَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُونَ ۝ وَقَالُوا
لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُم ۗ مَّا لَهُم بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ
إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ أَمْ آتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّن قَبْلِهٖ
فَهُم بِهٖ مُسْتَمْسِكُونَ ۝ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَآءَنَا
عَلٰى أُمَّةٍ وَّإِنَّا عَلٰى آثٰرِهِم مُّهْتَدُونَ ۝ وَكَذٰلِكَ مَا

वह जिसने इसको हमारे वश में किया, अन्यथा हम तो इसे क़ाबू में कर सकनेवाले न थे।

14. और निश्चय ही हम अपने रब की ओर लौटनेवाले हैं।"

15. उन्होंने उसके बन्दों में से कुछ को उसका अंश ठहरा लिया! निश्चय ही मनुष्य खुला कृतघ्न है।

16. (क्या किसी ने अल्लाह को इससे रोक दिया है कि वह अपने लिए बेटे चुनता) या जो कुछ वह पैदा करता है उसमें से उसने स्वयं ही अपने लिए तो बेटियाँ ली और तुम्हें चुन लिया बेटों के लिए?

17. और हाल यह है कि जब उनमें से किसी को उसकी मंगल सूचना दी जाती है, जो वह रहमान के लिए बयान करता है, तो उसके मुँह पर कलौंस छा जाती है और वह ग़म के मारे घुटा-घुटा रहने लगता है।

18. और क्या वह जो आभूषणों में पले और वह जो वाद-विवाद और झगड़े में खुल न पाए (ऐसी अबला को अल्लाह की संतान घोषित करते हो)?

19. उन्होंने फ़रिश्तों को, जो रहमान के बन्दे हैं, स्त्रियाँ ठहरा ली हैं। क्या वे उनकी संरचना के समय मौजूद थे? उनकी गवाही लिख ली जाएगी और उनसे पूछ होगी।

20. वे कहते हैं कि "यदि रहमान चाहता तो हम उन्हें न पूजते।" उन्हें इसका कुछ ज्ञान नहीं। वे तो बस अटकल दौड़ाते हैं।

21. (क्या हमने इससे पहले उनके पास कोई रसूल भेजा है) या हमने इससे पहले उनको कोई किताब दी है तो वे उसे दृढ़तापूर्वक थामे हुए हैं?

22. नहीं, बल्कि वे कहते हैं: "हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उन्हीं के पद-चिह्नों पर हैं, सीधे मार्ग पर चल रहे हैं।"

أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ
آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ ۝ قٰلَ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا
وَجَدتُّمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ
كَافِرُونَ ۝ فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ
وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ۝ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي
فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۝ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي
عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ بَلْ مَتَّعْتُ هَٰؤُلَاءِ وَ
آبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَمَّا
جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ۝
وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ
الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ۝ أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ

23. इसी प्रकार हमने जिस किसी बस्ती में तुमसे पहले कोई सावधान करनेवाला भेजा तो वहाँ के संपन्न लोगों ने बस यही कहा कि "हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उन्हीं के पद-चिह्नों पर हैं, उनका अनुसरण कर रहे हैं।"

24. उसने कहा : "क्या यदि मैं उससे उत्तम मार्गदर्शन लेकर आया हूँ, जिसपर तूने अपने बाप-दादा को पाया है, तब भी (तुम अपने बाप-दादा के पद-चिह्नों का ही अनुसरण करोगे) ?" उन्होंने कहा : "तुम्हें जो कुछ देकर भेजा गया है, हम तो उसका इनकार करते हैं।"——

25. अन्ततः हमने उनसे बदला लिया। तो देख लो कि झुठलानेवालों का कैसा परिणाम हुआ ?

26-28. याद करो, जबकि इबराहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा : "तुम जिनको पूजते हो उनसे मेरा कोई संबंध नहीं, सिवाय उसके जिसने मुझे पैदा किया। अतः निश्चय ही वह मुझे मार्ग दिखाएगा।" और यही बात वह अपने पीछे (अपनी संतान में) बाक़ी छोड़ गया, ताकि वे रुजू करें।——

29. नहीं, बल्कि मैं उन्हें और उनके बाप-दादा को जीवन-सुख प्रदान करता रहा, यहाँ तक कि उनके पास सत्य और खोल-खोलकर बतानेवाला रसूल आ गया।

30. किन्तु जब वह हक़ लेकर उनके पास आया तो वे कहने लगे : "यह तो जादू है। और हम तो इसका इनकार करते हैं।"

31. वे कहते हैं : "यह क़ुरआन इन दो बस्तियों के किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं अवतरित हुआ ?"

32. क्या वे तुम्हारे रब की दयालुता को बाँटते हैं ? सांसारिक जीवन में उनके

نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ
رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ وَلَوْلَآ
أَنْ يَّكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ
بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا
يَظْهَرُونَ ۝ وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا
يَتَّكِـُٔونَ ۝ وَزُخْرُفًا ۚ وَإِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَمَنْ
يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهُ
قَرِينٌ ۝ وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ
أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝ حَتّٰى إِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِي
وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ ۝ وَلَنْ
يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذْ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ

जीवन-यापन के साधन हमने उनके बीच बाँटे हैं और हमने उनमें से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों से श्रेणियों की दृष्टि से उच्च रखा है, ताकि उनमें से वे एक-दूसरे से काम लें। और तुम्हारे रब की दयालुता उससे कहीं उत्तम है जिसे वे समेट रहे हैं।

33-35. यदि इस बात की संभावना न होती कि सब लोग एक ही समुदाय (अधर्मी) हो जाएँगे, तो जो लोग रहमान के साथ कुफ़्र करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चाँदी की कर देते और सीढ़ियाँ भी जिनपर वे चढ़ते। और उनके घरों के दरवाज़े भी और वे तख़्त भी जिनपर वे टेक लगाते और सोने द्वारा सजावट का आयोजन भी कर देते। यह सब तो कुछ भी नहीं, बस सांसारिक जीवन की अस्थायी सुख-सामग्री है। और आख़िरत तुम्हारे रब के यहाँ डर रखनेवालों के लिए है।

36. जो रहमान के स्मरण की ओर से अंधा बना रहता है, हम उसपर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं तो वही उसका साथी होता है।

37. और वे (शैतान) उन्हें मार्ग से रोकते हैं और वे (इनकार करनेवाले) यह समझते हैं कि वे मार्ग पर हैं।

38. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो (शैतान से) कहेगा : "ऐ काश, मेरे और तेरे बीच पूरब के दोनों किनारों की दूरी होती! तू तो बहुत ही बुरा साथी निकला!"

39. और जबकि तुम ज़ालिम ठहरे तो आज यह बात तुम्हें कुछ लाभ न पहुँचा सकेगी कि यातना में तुम एक-दूसरे के साझी हो।

40. क्या तुम बहरों को सुनाओगे या अंधों को और जो खुली गुमराही में पड़ा हुआ हो उसको राह दिखाओगे ?

41-42. फिर यदि तुम्हें उठा भी लें तब भी हम उनसे बदला लेकर रहेंगे या हम तुम्हें वह चीज़ दिखा देंगे जिसका हमने उनसे वादा किया है। निस्संदेह हमें उनपर पूरी सामर्थ्य प्राप्त है।

43. अतः तुम उस चीज़ को मज़बूती से थामे रहो जिसकी तुम्हारी ओर प्रकाशना की गई। निश्चय ही तुम सीधे मार्ग पर हो।

44. निश्चय ही वह अनुस्मृति है तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए। शीघ्र ही तुम सबसे पूछा जाएगा।

45. तुम हमारे रसूलों से, जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा, पूछ लो कि क्या हमने रहमान के सिवा भी कुछ उपास्य ठहराए थे, जिनकी बन्दगी की जाए ?

46. और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उसने कहा : "मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।"

47. लेकिन जब वह उनके पास हमारी निशानियाँ लेकर आया तो क्या देखते हैं कि वे लगे उनकी हँसी उड़ाने।

48. और हम उन्हें जो निशानी भी दिखाते वह अपने प्रकार की पहली निशानी से बढ़-चढ़कर होती और हमने उन्हें यातना में ग्रस्त कर लिया, ताकि वे रुजू करें।

49. उनका कहना था : "ऐ जादूगर ! अपने रब से हमारे लिए प्रार्थना कर, उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उसने तुझसे कर रखी है। निश्चय ही हम सीधे मार्ग पर चलेंगे।"

50. फिर जब भी हम उनपर से यातना हटा देते, तो क्या देखते हैं कि वे

مُشْرِكُونَ ۝ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ
وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ
فَإِنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ۝ أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ
فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُقْتَدِرُونَ ۝ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ
إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَكَ
وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ۝ وَاسْأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَٰنِ
آلِهَةً يُعْبَدُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ۝ وَمَا نُرِيهِمْ
مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ
بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا



प्रतिज्ञा-भंग कर रहे हैं।

51. फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के बीच पुकारकर कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! क्या मिस्र का राज्य मेरा नहीं और ये मेरे नीचे बहती नहरें ? तो क्या तुम देखते नहीं ?

52. (यह अच्छा है) या मैं इससे अच्छा हूँ जो तुच्छ है, और साफ़ बोल भी नहीं पाता ?

53. (यदि वह रसूल है तो) फिर ऐसा क्यों न हुआ कि उसके लिए ऊपर से सोने के कंगन डाले गए होते या उसके साथ पार्श्ववर्ती होकर फ़रिश्ते आए होते ?"

54. तो उसने अपनी क़ौम के लोगों को मूर्ख बनाया और उन्होंने उसकी बात मान ली। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग थे।

55. अन्ततः जब उन्होंने हमें अप्रसन्न कर दिया तो हमने उनसे बदला लिया और हमने उन सबको डुबो दिया।

56. अतः हमने उन्हें अग्रगामी और बादवालों के लिए शिक्षाप्रद उदाहरण बना दिया।

57. और जब मरयम के बेटे की मिसाल दी गई तो क्या देखते हैं कि उसपर तुम्हारी क़ौम के लोग लगे चिल्लाने।

58. और कहने लगे : "क्या हमारे उपास्य अच्छे हैं या वह (मसीह) ?" उन्होंने यह बात तुमसे केवल झगड़ने के लिए कही, बल्कि वे तो हैं ही झगड़ालू लोग।

59. वह (ईसा मसीह) तो बस एक बन्दा था, जिसपर हमने अनुकम्पा की और उसे हमने इसराईल की संतान के लिए एक आदर्श बनाया।

60. और यदि हम चाहते तो तुममें से फ़रिश्ते पैदा कर देते, जो धरती में

الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ
بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ
الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ
بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُم بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُم
بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝
إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِن بَيْنِهِمْ ۖ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ هَلْ
يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ۝ الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۝ يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ
تَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۝
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۝ يُطَافُ

उत्तराधिकारी होते ।

61. निश्चय ही वह उस घड़ी (जिसका वादा किया गया है) के ज्ञान का साधन है। अतः तुम उसके बारे में संदेह न करो और मेरा अनुसरण करो। यही सीधा मार्ग है।

62. और शैतान तुम्हें रोक न दे, निश्चय ही वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

63. जब ईसा स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया तो उसने कहा : "मैं तुम्हारे पास तत्त्वदर्शिता लेकर आया हूँ (ताकि उसकी शिक्षा तुम्हें दूँ) और ताकि कुछ ऐसी बातें तुमपर खोल दूँ, जिनमें तुम मतभेद करते हो। अतः अल्लाह का डर रखो और मेरी बात मानो।

64. वास्तव में अल्लाह ही मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, तो उसी की बन्दगी करो। यही सीधा मार्ग है।"

65. किन्तु उनमें के कितने ही गिरोहों ने आपस में विभेद किया। अतः तबाही है एक दुखद दिन की यातना से, उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया।

66. क्या वे बस उस (क़ियामत की) घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह सहसा उनपर आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो।

67. उस दिन सभी मित्र परस्पर एक-दूसरे के शत्रु होंगे सिवाय डर रखनेवालों के।——

68. "ऐ मेरे बन्दो ! आज न तुम्हें कोई भय है और न तुम शोकाकुल होगे।"——

69. वह जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और आज्ञाकारी रहे;

70. "प्रवेश करो जन्नत में, तुम भी और तुम्हारे जोड़े भी, हर्षित होकर !"

71. उनके आगे सोने की तशतरियाँ और प्याले गर्दिश करेंगे और वहाँ वह

عليهم بصحاف من ذهب وأكواب ۚ وفيها
ما تشتهيه الأنفس وتلذ الأعين ۖ وأنتم فيها
خالدون ۝ وتلك الجنة التي أورثتموها بما كنتم
تعملون ۝ لكم فيها فاكهة كثيرة منها تأكلون ۝
إن المجرمين في عذاب جهنم خالدون ۝ لا
يفتر عنهم وهم فيه مبلسون ۝ وما ظلمناهم
ولكن كانوا هم الظالمين ۝ ونادوا يا مالك ليقض
علينا ربك ۖ قال إنكم ماكثون ۝ لقد جئناكم
بالحق ولكن أكثركم للحق كارهون ۝ أم أبرموا
أمرا فإنا مبرمون ۝ أم يحسبون أنا لا نسمع سرهم
ونجواهم ۚ بلى ورسلنا لديهم يكتبون ۝ قل إن
كان للرحمن ولد فأنا أول العابدين ۝ سبحان
رب السماوات والأرض رب العرش عما يصفون ۝

सबकुछ होगा, जो दिलों को भाए और आँखें जिससे लज़्ज़त पाएँ। "और तुम उसमें सदैव रहोगे।

72-73. यह वह जन्नत है जिसके तुम वारिस उसके बदले में हुए जो कर्म तुम करते रहे। तुम्हारे लिए वहाँ बहुत-से स्वादिष्ट फल हैं जिन्हें तुम खाओगे।"

74. निस्संदेह अपराधी लोग सदैव जहन्नम की यातना में रहेंगे।

75. वह (यातना) कभी उनपर से हल्की न होगी और वे उसी में निराश पड़े रहेंगे।

76. हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, परन्तु वे ख़ुद ही ज़ालिम थे।

77. वे पुकारेंगे : "ऐ मालिक[1] ! तुम्हारा रब हमारा काम ही तमाम कर दे !" वह कहेगा : "तुम्हें तो इसी दशा में रहना है।"

78. "निश्चय ही हम तुम्हारे पास सत्य लेकर आए हैं, किन्तु तुममें से अधिकतर लोगों को सत्य प्रिय नहीं।

79. (क्या उन्होंने कुछ निश्चय नहीं किया है) या उन्होंने किसी बात का निश्चय कर लिया है? अच्छा तो हमने भी निश्चय कर लिया है।

80. या वे समझते हैं कि हम उनकी छिपी बात और उनकी कानाफूसी को सुनते नहीं हैं? क्यों नहीं, और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनके समीप हैं, वे लिखते रहते हैं।"

81. कहो : "यदि रहमान की कोई संतान होती तो सबसे पहले मैं (उसे) पूजता।

82. आकाशों और धरती का रब, सिंहासन का स्वामी, उससे महान और उच्च है जो वे बयान करते हैं।"

1. नरक के अधिकारियों में से एक अधिकारी।

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى يُلٰقُوا يَوْمَهُمُ
الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلٰهٌ
وَّفِي الْأَرْضِ إِلٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَبٰرَكَ
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ
وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَا
يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا
مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ
مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ۝ وَقِيلِهِ
يٰرَبِّ إِنَّ هٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ۝ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ
وَقُلْ سَلٰمٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

سُورَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِي لَيْلَةٍ

83. अच्छा, छोड़ो उन्हें कि वे व्यर्थ की बहस में पड़े रहें और खेलों में लगे रहें। यहाँ तक कि उनकी भेंट अपने उस दिन से हो जिसका वादा उनसे किया जाता है।

84. वही है जो आकाशों में भी पूज्य है और धरती में भी पूज्य है और वह तत्त्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

85-86. बड़ी ही बरकतवाली है वह सत्ता, जिसके अधिकार में है आकाशों और धरती की बादशाही और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसकी भी। और उसी के पास उस घड़ी का ज्ञान है, और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे। और जिन्हें वे उसके और अपने बीच माध्यम ठहराकर पुकारते हैं, उन्हें सिफ़ारिश का कुछ भी अधिकार नहीं, बस उसे ही यह अधिकार प्राप्त है जो हक़ की गवाही दे, और ऐसे लोग जानते हैं।——

87. यदि तुम उनसे पूछो कि "उन्हें किसने पैदा किया?" तो वे अवश्य कहेंगे: "अल्लाह ने।" तो फिर वे कहाँ उलटे फिर जाते हैं?——

88. और उसका कहना हो कि "ऐ मेरे रब! निश्चय ही ये वे लोग हैं, जो ईमान नहीं रखते थे।"

89. अच्छा तो उनसे नज़र फेर लो और कह दो: "सलाम है तुम्हें!" अन्ततः शीघ्र ही वे स्वयं जान लेंगे।

44. अद्दुख़ान

(मक्का में उतरी— आयतें 59)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम०।

2. गवाह है स्पष्ट किताब।

مُّبَٰرَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ۝ فِيهَا يُفْرَقُ
كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝ أَمْرًا مِّنْ عِندِنَآ ۚ إِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِينَ ۝ رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ
ٱلْعَلِيمُ ۝ رَبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَآ ۖ
إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ۝ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ ۖ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝ بَلْ هُمْ
فِى شَكٍّ يَلْعَبُونَ ۝ فَٱرْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِى ٱلسَّمَآءُ
بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝ يَغْشَى ٱلنَّاسَ ۖ هَٰذَا عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ رَّبَّنَا ٱكْشِفْ عَنَّا ٱلْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۝
أَنَّىٰ لَهُمُ ٱلذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝
ثُمَّ تَوَلَّوْا۟ عَنْهُ وَقَالُوا۟ مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ۝ إِنَّا
كَاشِفُوا۟ ٱلْعَذَابِ قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ عَآئِدُونَ ۝
يَوْمَ نَبْطِشُ ٱلْبَطْشَةَ ٱلْكُبْرَىٰ ۚ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ۝

3-6. निस्संदेह हमने उसे एक बरकत भरी रात में अवतरित किया है।—निश्चय ही हम सावधान करनेवाले हैं।—— उस (रात) में तमाम तत्त्वदर्शिता युक्त मामलों का फ़ैसला किया जाता है, हमारे यहाँ से आदेश के रूप में। निस्संदेह रसूलों को भेजनेवाले हम ही हैं।—— तुम्हारे रब की दयालुता के कारण।—— निस्संदेह वही सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है।

7. आकाशों और धरती का रब और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसका भी, यदि तुम विश्वास रखनेवाले हो (तो विश्वास करो कि किताब का अवतरण अल्लाह की दयालुता है)।

8. उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं; वही जीवित करता और मारता है; तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप-दादों का रब है।

9. बल्कि वे संदेह में पड़े खेल रहे हैं।

10-11. अच्छा तो तुम उस दिन की प्रतीक्षा करो, जब आकाश प्रत्यक्ष धुआँ लाएगा। वह लोगों को ढाँक लेगा। यह है दुखद यातना!

12. (वे कहेंगे :) "ऐ हमारे रब! हमपर से यातना हटा दे। हम ईमान लाते हैं।"

13-14. अब उनके लिए होश में आने का मौक़ा कहाँ बाक़ी रहा। उनका हाल तो यह है कि उनके पास साफ़-साफ़ बतानेवाला एक रसूल आ चुका है। फिर उन्होंने उसकी ओर से मुँह मोड़ लिया और कहने लगे : "यह तो एक सिखाया- पढ़ाया दीवाना है।"

15-16. "हम यातना थोड़ा हटा देते हैं तो तुम पुनः फिर जाते हो। याद रखो, जिस दिन हम बड़ी पकड़ पकड़ेंगे, तो निश्चय ही हम बदला लेकर रहेंगे।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ
كَرِيْمٌ ۝ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۭ اِنِّيْ لَكُمْ
رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ
اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ
وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ۝ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ
فَاعْتَزِلُوْنِ ۝ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمٌ
مُّجْرِمُوْنَ ۝ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝
وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝
كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ وَّ
مَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۝
كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَمَا
بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا
مُنْظَرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنَ

17-18. उनसे पहले हम फ़िरऔन की क़ौम के लोगों को परीक्षा में डाल चुके हैं, जबकि उनके पास एक अत्यन्त सज्जन रसूल आया कि "तुम अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो। निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय रसूल हूँ।

19. और अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, मैं तुम्हारे पास एक स्पष्ट प्रमाण लेकर आया हूँ।

20. और मैं इससे अपने रब और तुम्हारे रब की शरण ले चुका हूँ कि तुम मुझ पर पथराव करके मार डालो।

21. किन्तु यदि तुम मेरी बात नहीं मानते तो मुझसे अलग हो जाओ !"

22. अन्ततः उसने अपने रब को पुकारा कि "ये अपराधी लोग हैं।"

23. "अच्छा तुम रातों रात मेरे बन्दों को लेकर चले जाओ। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

24. और सागर को स्थिर छोड़ दो। वे तो एक सेना दल हैं, डूब जानेवाले।"

25-27. वे छोड़ गए कितने ही बाग़ और स्रोत, और खेतियाँ और उत्तम आवास और सुख-सामग्री जिनमें वे मज़े कर रहे थे।

28. हम ऐसा ही मामला करते हैं, और उन चीज़ों का वारिस हमने दूसरे लोगों को बनाया।

29. फिर न तो आकाश और धरती ने उनपर विलाप किया और न उन्हें मुहलत ही मिली।

الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۙ مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ
عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ
عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ وَآتَيْنَاهُم مِّنَ الْآيَاتِ مَا
فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ۝ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۙ
إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ۝
فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝
أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ
أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ وَمَا
خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ۝
مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۙ
يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ۙ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ

30-31. इस प्रकार हमने इसराईल की संतान को अपमानजनक यातना से अर्थात फ़िरऔन से छुटकारा दिया। निश्चय ही वह मर्यादाहीन लोगों में से बड़ा ही सरकश था।

32. और हमने (उनकी स्थिति को) जानते हुए उन्हें सारे संसारवालों के मुक़ाबले में चुन लिया।

33. और हमने उन्हें निशानियों के द्वारा वह चीज़ दी जिसमें स्पष्ट परीक्षा थी।

34-35. ये लोग बड़ी दृढ़तापूर्वक कहते हैं : "बस यह हमारी पहली मृत्यु ही है, हम दोबारा उठाए जानेवाले नहीं हैं।

36. तो ले आओ हमारे बाप- दादा को, यदि तुम सच्चे हो !"

37. क्या वे अच्छे हैं या तुब्बा की क़ौम या वे लोग जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं? हमने उन्हें विनष्ट कर दिया, निश्चय ही वे अपराधी थे।

38. हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है उन्हें खेल नहीं बनाया।

39. हमने उन्हें हक़ के साथ पैदा किया, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

40. निश्चय ही फ़ैसले का दिन उन सबका नियत समय है,

41-42. जिस दिन कोई अपना किसी अपने के कुछ काम न आएगा और न



उन्हें कोई सहायता पहुँचेगी, सिवाय उस व्यक्ति के जिसपर अल्लाह दया करे। निश्चय ही वह प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है।

43-46. निस्संदेह ज़क़्क़ूम का वृक्ष गुनहगार का भोजन होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेटों में खौलता होगा जैसे गर्म पानी खौलता है।

47. "पकड़ो उसे, और भड़कती हुई आग के बीच तक घसीट ले जाओ,

48. फिर उसके सिर पर खौलते हुए पानी की यातना उंडेल दो !"

49. "मज़ा चख, तू तो बड़ा बलशाली, सज्जन और आदरणीय है !

50. यही तो है, जिसके विषय में तुम संदेह करते थे।"

51. निस्संदेह डर रखनेवाले निश्चिन्तता की जगह होंगे,

52-53. बाग़ों और स्रोतों में बारीक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए, एक-दूसरे के आमने-सामने उपस्थित होंगे।

54. ऐसा ही उनके साथ मामला होगा। और हम साफ़ गोरी, बड़ी नेत्रोंवाली स्त्रियों से उनका विवाह कर देंगे।

55. वे वहाँ निश्चिन्तता के साथ हर प्रकार के स्वादिष्ट फल मँगवाते होंगे।

56. वहाँ वे मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे। बस पहली मृत्यु जो हुई, सो हुई। और उसने उन्हें भड़कती हुई आग की यातना से बचा लिया।

57. यह सब तुम्हारे रब के विशेष उदार अनुग्रह के कारण होगा, वही बड़ी सफलता है।

58. हमने तो इस (क़ुरआन) को बस तुम्हारी भाषा में सहज एवं सुगम



बना दिया है ताकि वे याददिहानी प्राप्त करें।

59. अच्छा तुम भी प्रतीक्षा करो, वे भी प्रतीक्षा में हैं।

45. अल-जासिया

(मक्का में उतरी— आयतें 37)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम०।

2. इस किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।——

3. निस्संदेह आकाशों और धरती में ईमानवालों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

4. और तुम्हारी संरचना में, और उनकी भी जो जानवर वह फैलाता रहता है, निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।

5. और रात और दिन के उलट-फेर में भी, और उस रोज़ी (पानी) में भी जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसके द्वारा धरती को उसके मुर्दा हो जाने के पश्चात जीवित किया और हवाओं की गर्दिश में भी उन लोगों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें।

6. ये अल्लाह की आयतें हैं, हम उन्हें हक़ के साथ तुमको सुना रहे हैं। अब आखिर अल्लाह और उसकी आयतों के पश्चात और कौन-सी बात है जिसपर वे ईमान लाएँगे?

7. तबाही है हर झूठ घड़नेवाले गुनहगार के लिए,

8. जो अल्लाह की उन आयतों को सुनता है जो उसे पढ़कर सुनाई जाती हैं। फिर घमंड के साथ अपनी (इनकार की) नीति पर अड़ा रहता है मानो



उसने उनको सुना ही नहीं। अतः उसको दुखद यातना की शुभ सूचना दे दो।

9. जब हमारी आयतों में से कोई बात वह जान लेता है तो वह उनका परिहास करता है, ऐसे लोगों के लिए रुसवा कर देनेवाली यातना है।

10. उनके आगे जहन्नम है, जो उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम न आएगा और न यही कि उन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने संरक्षक ठहरा रखे हैं। उनके लिए तो बड़ी यातना है।

11. यह सर्वथा मार्गदर्शन है। और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों का इनकार किया, उनके लिए हिला देनेवाली दुखद यातना है।

12. वह अल्लाह ही है जिसने समुद्र को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि उसके आदेश से नौकाएँ उसमें चलें; और ताकि तुम उसका उदार अनुग्रह तलाश करो; और इसलिए कि तुम कृतज्ञता दिखाओ।

13. जो चीज़ें आकाशों में हैं और जो धरती में हैं, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं।

14. जो लोग ईमान लाए उनसे कह दो कि "वे उन लोगों को क्षमा करें (उनकी करतूतों पर ध्यान न दें) जो अल्लाह के दिनों[1] की आशा नहीं रखते, ताकि वह

1. 'अल्लाह के दिन' से अभिप्राय वे दिन हैं, जिनमें अल्लाह किसी क़ौम को तबाह करता है या किसी क़ौम को उन्नति प्रदान करता है।

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ
بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْ بَعْدِ
مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ اِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ
فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ
الْمُتَّقِيْنَ ۝ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى

इसके परिणामस्वरूप उन लोगों को उनकी अपनी कमाई का बदला दे।

15. जो कोई अच्छा कर्म करता है तो अपने ही लिए करेगा और जो कोई बुरा कर्म करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा। फिर तुम अपने रब की ओर लौटाये जाओगे।

16. निश्चय ही हमने इसराईल की संतान को किताब और हुक्म[1] और पैग़म्बरी प्रदान की थी। और हमने उन्हें पवित्र चीज़ों की रोज़ी दी और उन्हें सारे संसारवालों पर श्रेष्ठता प्रदान की।

17. और हमने उन्हें इस मामले[2] के विषय में स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं। फिर जो भी विभेद उन्होंने किया, वह इसके पश्चात ही किया कि उनके पास ज्ञान आ चुका था और इस कारण कि वे परस्पर एक-दूसरे पर ज़्यादती करना चाहते थे। निश्चय ही तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे परस्पर विभेद करते रहे हैं।

18. फिर हमने तुम्हें इस मामले में एक खुले मार्ग (शरीअत) पर कर दिया। अतः तुम उसी पर चलो और उन लोगों की इच्छाओं का अनपालन न करना जो जानते नहीं।

19. वे अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कदापि कुछ काम नहीं आ सकते। निश्चय ही ज़ालिम लोग एक-दूसरे के साथी हैं और डर रखनेवालों का साथी अल्लाह है।

20. यह लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पुंज है, और मार्गदर्शन और

---

1. अर्थात हुकूमत और निर्णय-शक्ति।
2. अर्थात धर्म।

وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ
اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ
وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَخَلَقَ اللّٰهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ
نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ
مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ
وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ
غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ
وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا
يَظُنُّوْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।

21. (क्या मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता समान हैं) या वे लोग, जिन्होंने बुराइयाँ कमाई हैं, यह समझ बैठे हैं कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए कि उनका जीना और मरना समान हो जाए? बहुत ही बुरा है जो निर्णय वे करते हैं!

22. अल्लाह ने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया और इसलिए कि प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाए और उनपर ज़ुल्म न किया जाएगा।

23. क्या तुमने उस व्यक्ति को भी देखा जिसने अपनी इच्छा ही को अपना उपास्य बना लिया? अल्लाह ने (उसकी स्थिति) जानते हुए उसे गुमराही में डाल दिया, और उसके कान और उसके दिल पर ठप्पा लगा दिया और उसकी आँखों पर परदा डाल दिया। फिर अब अल्लाह के पश्चात कौन उसे मार्ग पर ला सकता है? तो क्या तुम शिक्षा नहीं ग्रहण करते?

24. वे कहते हैं: "वह तो बस हमारा सांसारिक जीवन ही है। हम मरते और जीते हैं। हमें तो बस काल (समय) ही विनष्ट करता है।" हालाँकि उनके पास इसका कोई ज्ञान नहीं। वे तो बस अटकलें ही दौड़ाते हैं।

25. और जब उनके सामने हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती हैं, तो उनकी

مَا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتُوا
بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ
يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ
وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ۝
وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ
إِلَىٰ كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
هَٰذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّا
كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَأَمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ
رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝
وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ

हुज्जत इसके सिवा कुछ और नहीं होती कि वे कहते हैं : "यदि तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादा को ले आओ।"

26. कह दो : "अल्लाह ही तुम्हें जीवन प्रदान करता है। फिर वही तुम्हें मृत्यु देता है। फिर वही तुम्हें क़ियामत के दिन तक इकट्ठा कर रहा है, जिसमें कोई संदेह नहीं। किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

27. आकाशों और धरती की बादशाही अल्लाह ही की है। और जिस दिन वह घड़ी घटित होगी उस दिन झूठवाले घाटे में होंगे।

28. और तुम प्रत्येक गिरोह को घुटनों के बल झुका हुआ देखोगे। प्रत्येक गिरोह अपनी किताब की ओर बुलाया जाएगा : "आज तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा, जो तुम करते थे।

29. यह हमारी किताब है, जो तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक बोल रही है। निश्चय ही हम लिखवाते रहे हैं जो कुछ तुम करते थे।"

30. अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें उनका रब अपनी दयालुता में दाख़िल करेगा, यही स्पष्ट सफलता है।

31. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया (उनसे कहा जाएगा :) "क्या तुम्हें

عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝
وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ السَّاعَةُ
لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ
إِنْ نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ۝
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا
كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسٰكُمْ
كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِينَ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ
فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ
الْعٰلَمِينَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

हमारी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं? किन्तु तुमने घमण्ड किया और तुम थे ही अपराधी लोग।

32. और जब कहा जाता था कि 'अल्लाह का वादा सच्चा है और (क़ियामत की) उस घड़ी में कोई संदेह नहीं है।' तो तुम कहते थे : 'हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या है? हमें तो बस एक अनुमान-सा प्रतीत होता है और हमें विश्वास नहीं होता।' "

33. और जो कुछ वे करते रहे उसकी बुराइयाँ उनपर प्रकट हो गईं और जिस चीज़ का वे परिहास करते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

34. और कह दिया जाएगा कि "आज हम तुम्हें भुला देते हैं जैसे तुमने इस दिन की भेंट को भुला रखा था। तुम्हारा ठिकाना अब आग है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं।

35. यह इस कारण कि तुमने अल्लाह की आयतों की हँसी उड़ाई थी और सांसारिक जीवन ने तुम्हें धोखे में डाले रखा।" अत: आज वे न तो उससे निकाले जाएँगे और न उनसे यह चाहा जाएगा कि वे किसी उपाय से (अल्लाह के) प्रकोप को दूर कर सकें।

36. अत: सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों का रब और धरती का रब, सारे संसार का रब है।

37. आकाशों और धरती में बड़ाई उसी के लिए है, और वही प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।



46. अल-अहक़ाफ़

(मक्का में उतरी — आयतें 35)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हा० मीम० ।

2. इस किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

3. हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के मध्य है उसे केवल हक़ के साथ और एक नियत अवधि तक के लिए पैदा किया है। किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया है, वे उस चीज़ को ध्यान में नहीं लाते हैं जिससे उन्हें सावधान किया गया है।

4. कहो : "क्या तुमने उनको देखा भी, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने धरती की चीज़ों में से क्या पैदा किया है या आकाशों में उनकी कोई साझेदारी है? मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ या ज्ञान की कोई अवशेष बात ही, यदि तुम सच्चे हो।"

5. आख़िर उस व्यक्ति से बढ़कर पथभ्रष्ट और कौन होगा जो अल्लाह से हटकर उन्हें पुकारता हो जो क़ियामत के दिन तक उसकी पुकार को स्वीकार नहीं कर सकते, बल्कि वे तो उनकी पुकार से भी बेख़बर हैं;

6. और जब लोग इकट्ठे किए जाएँगे तो वे उनके शत्रु होंगे और उनकी बन्दगी का इनकार करेंगे।

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ
لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ
اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ
شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝
قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا
يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى
اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ
كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَ
اسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا
سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ

7. जब हमारी स्पष्ट आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया, सत्य के विषय में, जबकि वह उनके पास आ गया, कहते हैं कि "यह तो खुला जादू है।"

8. (क्या ईमान लाने से उन्हें कोई चीज़ रोक रही है) या वे कहते हैं : "उसने इसे स्वयं ही घड़ लिया है?" कहो : "यदि मैंने इसे स्वयं घड़ा है तो अल्लाह के विरुद्ध मेरे लिए तुम कुछ भी अधिकार नहीं रखते। जिसके विषय में तुम बातें बनाने में लगे हो, वह उसे भली-भाँति जानता है। और वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह की हैसियत से काफ़ी है। और वही बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।"

9. कह दो : "मैं कोई पहला रसूल तो नहीं हूँ। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और न यह कि तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा। मैं तो बस उसी का अनुगामी हूँ, जिसकी प्रकाशना मेरी ओर की जाती है और मैं तो केवल एक स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ।"

10. कहो : "क्या तुमने सोचा भी (कि तुम्हारा क्या परिणाम होगा)? यदि वह (कुरआन) अल्लाह के यहाँ से हुआ और तुमने उसका इनकार कर दिया, हालाँकि इसराईल की संतान में से एक गवाह ने उसके एक भाग की गवाही भी दी। सो वह ईमान ले आया और तुम घमण्ड में पड़े रहे। अल्लाह तो ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।"

11. जिन लोगों ने इनकार किया, वे ईमान लानेवालों के बारे में कहते हैं : "यदि वह अच्छा होता तो वे उसकी ओर (बढ़ने में) हमसे अग्रसर न रहते।"

هٰذَآ إِفْكٌ قَدِيمٌ ۝ وَمِن قَبْلِهِۦ كِتَٰبُ مُوسَىٰٓ
إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا
عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ۝
إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُوا۟ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسْتَقَٰمُوا۟ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ
خَٰلِدِينَ فِيهَا جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝ وَ
وَصَّيْنَا ٱلْإِنسَٰنَ بِوَٰلِدَيْهِ إِحْسَٰنًا ۖ حَمَلَتْهُ
أُمُّهُۥ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُۥ وَفِصَٰلُهُۥ
ثَلَٰثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُۥ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ
سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِىٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ ٱلَّتِىٓ
أَنْعَمْتَ عَلَىَّ وَعَلَىٰ وَٰلِدَىَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَٰلِحًا
تَرْضَىٰهُ وَأَصْلِحْ لِى فِى ذُرِّيَّتِىٓ ۖ إِنِّى تُبْتُ
إِلَيْكَ وَإِنِّى مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ ۝ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ

और जब उन्होंने उससे मार्ग ग्रहण नहीं किया तो अब अवश्य कहेंगे : "यह तो पुराना झूठ है !"

12. हालाँकि इससे पहले मूसा की किताब पथप्रदर्शक और दयालुता रही है। और यह किताब, जो अरबी भाषा में है, उसकी पुष्टि में है, ताकि उन लोगों को सचेत कर दे जिन्होंने ज़ुल्म किया और शुभ सूचना हो उत्तमकारों के लिए।

13. निश्चय ही जिन लोगों ने कहा : "हमारा रब अल्लाह है।" फिर वे उसपर जमे रहे, तो उन्हें न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

14. वही जन्नतवाले हैं, वहाँ वे सदैव रहेंगे उसके बदले में जो वे करते रहे हैं।

15. हमने मनुष्य को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की। उसकी माँ ने उसे (पेट में) तकलीफ़ के साथ उठाए रखा और उसे जना भी तकलीफ़ के साथ। और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और दूध छुड़ाने की अवधि तीस माह है, यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुँचा और चालीस वर्ष का हुआ तो उसने कहा : "ऐ मेरे रब ! मुझे संभाल कि मैं तेरी उस अनुकम्पा के प्रति कृतज्ञता दिखाऊँ, जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि मैं ऐसा अच्छा कर्म करूँ जो तुझे प्रिय हो और मेरे लिए मेरी संतति में भलाई रख दे। मैं तेरे आगे तौबा करता हूँ और मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ।"

16. ऐसे ही लोग हैं जिनसे हम अच्छे कर्म, जो उन्होंने किए होंगे, स्वीकार

نتقبل عنهم أحسن ما عملوا ونتجاوز عن سيئاتهم
في أصحب الجنة ۖ وعد الصدق الذي كانوا
يوعدون ۝ والذي قال لوالديه أف لكما
أتعدانني أن أخرج وقد خلت القرون من قبلي ۚ
وهما يستغيثان الله ويلك ءامن ۚ إن وعد الله
حق ۚ فيقول ما هذا إلا أسطير الأولين ۝
أولئك الذين حق عليهم القول في أمم قد خلت
من قبلهم من الجن والإنس ۖ إنهم كانوا
خسرين ۝ ولكل درجت مما عملوا ۖ وليوفيهم
أعملهم وهم لا يظلمون ۝ ويوم يعرض
الذين كفروا على النار أذهبتم طيبتكم في
حياتكم الدنيا واستمتعتم بها فاليوم تجزون
عذاب الهون بما كنتم تستكبرون في

कर लेंगे और उनकी बुराइयों को टाल जाएँगे। इस हाल में कि वे जन्नतवालों में होंगे, उस सच्चे वादे के अनुरूप जो उनसे किया जाता रहा है।

17. किन्तु वह व्यक्ति जिसने अपने माँ-बाप से कहा : "धिक् है तुम पर! क्या तुम मुझे डराते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा, हालाँकि मुझसे पहले कितनी ही नस्लें गुज़र चुकी हैं?" और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते हैं—— "अफ़सोस है तुझपर! मान जा। निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है।" किन्तु वह कहता है : "ये तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।"

18. ऐसे ही लोग हैं जिनपर उन गिरोहों के साथ यातना की बात सत्यापित होकर रही[1] जो जिन्नों और मनुष्यों में से उनसे पहले गुज़र चुके हैं। निश्चय ही वे घाटे में रहे।

19. उनमें से प्रत्येक के दरजे उनके अपने किए हुए कर्मों के अनुसार होंगे (ताकि अल्लाह का वादा पूरा हो) और ताकि वह उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला चुका दे और उनपर कदापि ज़ुल्म न होगा।

20. और याद करो जिस दिन वे लोग, जिन्होंने इनकार किया, आग के सामने पेश किए जाएँगे। (कहा जाएगा :) "तुम अपने सांसारिक जीवन में अपनी अच्छी रुचिकर चीज़ें नष्ट कर बैठे और उनका मज़ा ले चुके। अतः आज तुम्हें अपमानजनक यातना दी जाएगी, क्योंकि तुम धरती में बिना किसी

1. अर्थात यातना में ग्रस्त होने और नरक में डाले जाने की बात पूरी होकर रही।



हक़ के घमण्ड करते रहे और इसलिए कि तुम आज्ञा का उल्लंघन करते रहे।"

21. आद के भाई को याद करो, जबकि उसने अपनी क़ौम के लोगों को अहक़ाफ़ में सावधान किया—और उसके आगे और पीछे भी सावधान करनेवाले गुज़र चुके थे— कि : "अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है।"

22. उन्होंने कहा : "क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि झूठ बोलकर हमको हमारे अपने उपास्यों से विमुख कर दे? अच्छा, तो हमपर ले आ, जिसकी तू हमें धमकी देता है, यदि तू सच्चा है।"

23. उसने कहा : "ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है (कि वह कब यातना लाएगा)। और मैं तो तुम्हें वह संदेश पहुँचा रहा हूँ जो मुझे देकर भेजा गया है। किन्तु मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि तुम अज्ञानता से काम ले रहे हो।"

24. फिर जब उन्होंने उसे बादल के रूप में देखा, जिसका रुख उनकी घाटियों की ओर था, तो वे कहने लगे : "यह बादल है जो हमपर बरसनेवाला है!" "नहीं, बल्कि यह तो वही चीज़ है जिसके लिए तुमने जल्दी मचा रखी थी।—एक वायु है जिसमें दुखद यातना है।

25. हर चीज़ को अपने रब के आदेश से विनष्ट कर देगी।" अन्ततः वे ऐसे हो गए कि उनके रहने की जगहों के सिवा कुछ नज़र न आता था। अपराधी लोगों को हम इसी तरह बदला देते हैं।

26. हमने उन्हें उन चीज़ों में जमाव और सामर्थ्य प्रदान की थी, जिनमें तुम्हें जमाव और सामर्थ्य नहीं प्रदान की। और हमने उन्हें कान, आँखें और दिल

أَفْئِدَةً ۖ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ
وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ
أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا
مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۖ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ
وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٨﴾ وَإِذْ
صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ
فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا
إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُنْذِرِينَ ﴿٢٩﴾ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا
كِتَابًا أُنْزِلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾
يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرْ لَكُمْ

दिए थे। किन्तु न तो उनके कान उनके कुछ काम आए और न उनकी आँखें और न उनके दिल ही। क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे और जिस चीज़ की वे हँसी उड़ाते थे, उसी ने उन्हें आ घेरा।

27. हम तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को विनष्ट कर चुके हैं, हालाँकि हमने तरह-तरह से आयतें पेश की थीं, ताकि वे रुजू करें।

28. फिर क्यों न उन हस्तियों ने उनकी सहायता की जिनको उन्होंने अपने और अल्लाह के बीच माध्यम ठहराकर सामीप्य प्राप्त करने के लिए उपास्य बना लिया था? बल्कि वे उनसे गुम हो गए, और यह था उनका मिथ्यारोपण और वह कुछ जो वे घड़ते थे।

29. और याद करो (ऐ नबी) जब हमने कुछ जिन्नों को तुम्हारी ओर फेर दिया जो क़ुरआन सुनने लगे थे, तो जब वे वहाँ पहुँचे तो कहने लगे : "चुप हो जाओ!" फिर जब वह (क़ुरआन का पाठ) पूरा हुआ तो वे अपनी क़ौम की ओर सावधान करनेवाले होकर लौटे।

30. उन्होंने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के पश्चात अवतरित की गई है। उसकी पुष्टि में है जो उससे पहले से मौजूद है, सत्य की ओर और सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।

31. ऐ हमारी क़ौम के लोगो! अल्लाह के आमंत्रणकर्त्ता का आमंत्रण

مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَمَن لَّا
يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَ
لَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ
مُّبِينٍ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن
يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۚ أَلَيْسَ
هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ فَاصْبِرْ كَمَا
صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِل
لَّهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ
يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ ۚ بَلَاغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ
إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ۝

स्वीकार करो और उसपर ईमान लाओ। अल्लाह तुम्हें क्षमा करके गुनाहों से तुम्हें पाक कर देगा और दुखद यातना से तुम्हें बचाएगा।

32. और जो कोई अल्लाह के आमंत्रणकर्त्ता का आमंत्रण स्वीकार नहीं करेगा तो वह धरती में क़ाबू से बच निकलनेवाला नहीं है और न अल्लाह से हटकर उसके संरक्षक होंगे। ऐसे ही लोग खुली गुमराही में हैं।"

33. क्या उन्होंने देखा नहीं कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं; क्या ऐसा नहीं कि वह मुर्दों को जीवित कर दे? क्यों नहीं, निश्चय ही उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

34. और याद करो जिस दिन वे लोग, जिन्होंने इनकार किया, आग के सामने पेश किए जाएँगे; (कहा जाएगा:) "क्या यह सत्य नहीं है?" वे कहेंगे : "क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम!" वह कहेगा : "तो अब यातना का मज़ा चखो, उस इनकार के बदले में जो तुम करते रहे थे।"

35. अत: धैर्य से काम लो, जिस प्रकार संकल्पवान रसूलों ने धैर्य से काम लिया। और उनके लिए जल्दी न करो। जिस दिन वे लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, तो वे महसूस करेंगे कि जैसे वे बस दिन की एक घड़ी भर ही ठहरे थे। यह (संदेश) साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। अब क्या अवज्ञाकारी लोगों के अतिरिक्त कोई और विनष्ट होगा?



47. मुहम्मद

(मदीना में उतरी— आयतें 38)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका उनके कर्म उसने अकारथ कर दिए।

2. रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और उस चीज़ पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर अवतरित किया गया—और वही सत्य है उनके रब की ओर से—उसने उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दीं और उनका हाल ठीक कर दिया।

3. यह इसलिए कि जिन लोगों ने इनकार किया उन्होंने असत्य का अनुसरण किया और यह कि जो लोग ईमान लाए उन्होंने सत्य का अनुसरण किया, जो उनके रब की ओर से है। इस प्रकार अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है।

4. अतः जब इनकार करनेवालों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो (उनकी) गरदनें मारना है, यहाँ तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल दो तो बन्धनों में जकड़ो, फिर बाद में या तो एहसान करो या फ़िदया (अर्थ-दण्ड) का मामला करो, यहाँ तक कि युद्ध अपने बोझ उतारकर रख दे। यह भली-भाँति समझ लो, यदि अल्लाह चाहे तो स्वयं उनसे निपट ले। किन्तु (उसने यह आदेश इसलिए दिया), ताकि तुम्हारी एक-दूसरे के द्वारा परीक्षा ले। और जो लोग अल्लाह के

يضل اعمالهم ۝ سيهديهم ويصلح بالهم ۝ و
يدخلهم الجنة عرفها لهم ۝ يايها الذين
امنوا ان تنصروا الله ينصركم ويثبت اقدامكم ۝
والذين كفروا فتعسا لهم واضل اعمالهم ۝
ذلك بانهم كرهوا ما انزل الله فاحبط اعمالهم ۝
افلم يسيروا في الارض فينظروا كيف كان عاقبة
الذين من قبلهم دمر الله عليهم وللكفرين
امثالها ۝ ذلك بان الله مولى الذين امنوا وان
الكفرين لا مولى لهم ۝ ان الله يدخل الذين
امنوا وعملوا الصلحت جنت تجري من تحتها
الانهر والذين كفروا يتمتعون وياكلون كما
تاكل الانعام والنار مثوى لهم ۝ وكاين من
قرية هي اشد قوة من قريتك التي اخرجتك

मार्ग में मारे जाते हैं उनके कर्म वह कदापि अकारथ न करेगा।

5. वह उनका मार्गदर्शन करेगा और उनका हाल ठीक कर देगा।

6. और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा, जिससे वह उन्हें परिचित करा चुका है।

7. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो, यदि तुम अल्लाह की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।

8. रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, तो उनके लिए तबाही है। और उनके कर्मों को अल्लाह ने अकारथ कर दिया।

9. यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसन्द किया जिसे अल्लाह ने अवतरित किया, तो उसने उनके कर्म अकारथ कर दिए।

10. क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं? अल्लाह ने उन्हें तहस-नहस कर दिया, और इनकार करनेवालों के लिए ऐसे ही मामले होने हैं।

11. यह इसलिए कि जो लोग ईमान लाए उनका संरक्षक अल्लाह है और यह कि इनकार करनेवालों का कोई संरक्षक नहीं।

12. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, वे कुछ दिनों का सुख भोग रहे हैं और खा रहे हैं, जिस तरह चौपाए खाते हैं। और आग उनका ठिकाना है।

13. कितनी ही बस्तियाँ थीं जो शक्ति में तुम्हारी उस बस्ती से, जिसने तुम्हें निकाल दिया, बढ़-चढ़कर थीं। हमने उन्हें विनष्ट कर दिया! फिर कोई उनका सहायक न हुआ।

14. तो क्या जो व्यक्ति अपने रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हो वह उन लोगों जैसा हो सकता है, जिन्हें उनका बुरा कर्म ही सुहाना लगता हो और वे अपनी इच्छाओं के पीछे ही चलने लग गए हों?

15. उस जन्नत की शान, जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है, यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें होंगी जो प्रदूषित नहीं होता। और ऐसे दूध की नहरें होंगी जिसके स्वाद में तनिक भी अन्तर न आया होगा, और ऐसे पेय की नहरें होंगी जो पीनेवालों के लिए मज़ा ही मज़ा होंगी, और साफ़-सुथरे शहद की नहरें भी होंगी। और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के फल होंगे और क्षमा उनके अपने रब की ओर से——क्या वे उन जैसे हो सकते हैं, जो सदैव आग में रहनेवाले हैं और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा?

أهلكنهم فلا ناصر لهم ۝ أفمن كان على بينة
من ربه كمن زين له سوء عمله واتبعوا أهواءهم ۝
مثل الجنة التي وعد المتقون فيها أنهر من
ماء غير آسن وأنهر من لبن لم يتغير طعمه
وأنهر من خمر لذة للشربين وأنهر من
عسل مصفى ولهم فيها من كل الثمرت
ومغفرة من ربهم كمن هو خالد في النار و
سقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم ۝ ومنهم من
يستمع إليك حتى إذا خرجوا من عندك قالوا
للذين أوتوا العلم ماذا قال آنفا أولئك
الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا أهواءهم ۝
والذين اهتدوا زادهم هدى وآتهم تقوهم ۝
فهل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة

منزل

16. और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उन लोगों से, जिन्हें ज्ञान प्रदान हुआ है, कहते हैं : "उन्होंने अभी-अभी क्या कहा?" वही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने ठप्पा लगा दिया है और वे अपनी इच्छाओं के पीछे चले हैं।

17. रहे वे लोग जिन्होंने सीधा रास्ता अपनाया, (अल्लाह ने) उनके मार्गदर्शन में अभिवृद्धि कर दी और उन्हें उनकी परहेज़गारी प्रदान की।

18. अब क्या वे लोग बस उस घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उनपर

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ
ذِكْرٰىهُمْ ۝ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا
نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ
وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ۗ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۗ
فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۗ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا
لَّهُمْ ۝ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِى
الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ۝ اَفَلَا
يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ۝ اِنَّ

अचानक आ जाए? उसके लक्षण तो सामने आ चुके हैं, जब वह स्वयं उनपर आ जाएगी तो फिर उनके लिए होश में आने का अवसर कहाँ शेष रहेगा?

19. अतः जान रखो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। और अपने गुनाहों के लिए क्षमा-याचना करो और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के लिए भी। अल्लाह तुम्हारी चलत-फिरत को भी जानता है और तुम्हारे ठिकाने को भी।

20. जो लोग ईमान लाए वे कहते हैं : "कोई सूरा क्यों नहीं उतरी?" किन्तु जब एक पक्की सूरा अवतरित की जाती है, जिसमें युद्ध का उल्लेख होता है, तो तुम उन लोगों को देखते हो जिनके दिलों में रोग है कि वे तुम्हारी ओर इस प्रकार देखते हैं जैसे किसी पर मृत्यु की बेहोशी छा गई हो। तो अफ़सोस है उनके हाल पर!

21. उनके लिए उचित है आज्ञापालन और अच्छी-भली बात। फिर जब (युद्ध की) बात पक्की हो जाए (तो युद्ध करना चाहिए) तो यदि वे अल्लाह के लिए सच्चे साबित होते तो उनके लिए ही अच्छा होता।

22. यदि तुम उल्टे फिर गए तो क्या तुम इससे निकट हो कि धरती में बिगाड़ पैदा करो और अपने नातों-रिश्तों को काट डालो?

23. ये वे लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की और उन्हें बहरा और उनकी आँखों को अन्धा कर दिया।

24. तो क्या वे क़ुरआन में सोच-विचार नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लगे हैं?

25. वे लोग जो पीठ फेरकर पलट गए, इसके पश्चात कि उनपर मार्ग स्पष्ट

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۝
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ
سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۝
فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ
وَأَدْبَارَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ
اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝ أَمْ
حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ
اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم
بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
أَعْمَالَكُمْ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ
مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا

हो चुका था, उन्हें शैतान ने बहका दिया और उसने उन्हें ढील दे दी।

26. यह इसलिए कि उन्होंने उन लोगों से, जिन्होंने उस चीज़ को नापसन्द किया जो कुछ अल्लाह ने उतारा है, कहा कि "हम कुछ मामलों में तुम्हारी बात मान लेंगे।" अल्लाह उनकी गुप्त बातों को भली-भाँति जानता है।

27. फिर उस समय क्या हाल होगा जब फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए उनकी रूहें क़ब्ज़ करेंगे?

28. यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ का अनुसरण किया जो अल्लाह को अप्रसन्न करनेवाली थी और उन्होंने उसकी ख़ुशी को नापसन्द किया तो उसने उनके कर्मों को अकारथ कर दिया।

29. (क्या अल्लाह से कोई चीज़ छिपी है) या जिन लोगों के दिलों में रोग है वे यह समझ बैठे हैं कि अल्लाह उनके द्वेषों को कदापि प्रकट न करेगा?

30. यदि हम चाहें तो उन्हें तुम्हें दिखा दें, फिर तुम उन्हें उनके लक्षणों से पहचान लो; किन्तु तुम उन्हें उनकी बातचीत के ढब से अवश्य पहचान लोगे। अल्लाह तो तुम्हारे कर्मों को जानता ही है।

31. हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा करेंगे, यहाँ तक कि हम तुममें से जो जिहाद करनेवाले हैं और जो दृढ़तापूर्वक जमे रहनेवाले हैं उनको जान लें[1] और तुम्हारी हालतों को जाँच लें।

32. जिन लोगों ने इसके पश्चात कि मार्ग उनपर स्पष्ट हो चुका था, इनकार

---

1. अर्थात स्पष्ट रूप से सामने ला दें।

किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और रसूल का विरोध किया, वे अल्लाह को कदापि कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, बल्कि वही उनका सब किया-कराया उनकी जान को लागू कर देगा।

33. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो और अपने कर्मों को विनष्ट न करो।

34. निश्चय ही जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और इनकार करनेवाले ही रहकर मर गए, अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा न करेगा।

الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا
تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ ۝ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ
الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝
اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۗ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَ
تَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝
اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ۝
هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا
يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ

35. अत: ऐसा न हो कि तुम हिम्मत हार जाओ और सुलह का निमंत्रण देने लगो, जबकि तुम ही प्रभावी हो। अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारे कर्मों (के फल) में तुम्हें कदापि हानि न पहुँचाएगा।

36. सांसारिक जीवन तो बस एक खेल और तमाशा है। और यदि तुम ईमान लाओ और डर रखो तो वह तुम्हारे कर्मफल तुम्हें प्रदान करेगा—— और तुम्हारे धन तुमसे नहीं माँगेगा।——

37. और यदि वह उनको तुमसे माँगे और समेटकर तुमसे माँगे तो तुम कंजूसी करोगे। और वह तुम्हारे द्वेष को निकाल बाहर कर देगा।

38. सुनो! यह तुम्हीं लोग हो कि तुम्हें आमंत्रण दिया जा रहा है कि "अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करो।" फिर तुममें कुछ लोग हैं जो कंजूसी करते हैं। हालाँकि जो कंजूसी करता है वह, वास्तव में अपने आप ही से कंजूसी



करता है। अल्लाह तो निस्पृह है, तुम्हीं मुहताज हो। और यदि तुम फिर जाओ तो वह तुम्हारी जगह अन्य लोगों को ले आएगा; फिर वे तुम जैसे न होंगे।

48. अल-फ़तह

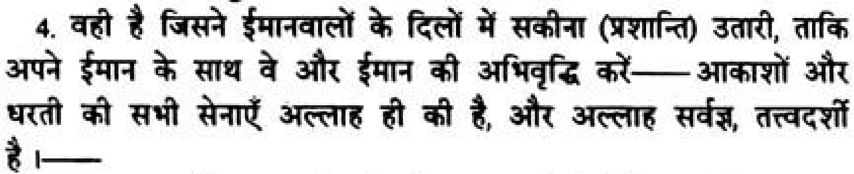
(मदीना में उतरी—— आयतें 29)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. निश्चय ही हमने तुम्हारे लिए एक खुली विजय प्रकट की,

2. ताकि अल्लाह तुम्हारे अगले और पिछले गुनाहों को क्षमा कर दे और तुमपर अपनी अनुकम्पा पूर्ण कर दे और तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए,

3. और अल्लाह तुम्हें प्रभावकारी सहायता प्रदान करे।



4. वही है जिसने ईमानवालों के दिलों में सकीना (प्रशान्ति) उतारी, ताकि अपने ईमान के साथ वे और ईमान की अभिवृद्धि करें—— आकाशों और धरती की सभी सेनाएँ अल्लाह ही की है, और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।——

5. ताकि वह मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को ऐसे बाग़ों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी कि वे उनमें सदैव रहें और उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दे——यह अल्लाह के यहाँ बड़ी सफलता है।——

عَظِيْمًا ۙ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَ
الْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ
السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ
مَصِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ
شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً
وَّاَصِيْلًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ
اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ
فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ
عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۠ سَيَقُوْلُ
لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا

6. और कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी स्त्रियों और बहुदेववादी पुरुषों और बहुदेववादी स्त्रियों को, जो अल्लाह के बारे में बुरा गुमान रखते हैं, यातना दे। उन्हीं पर बुराई की गर्दिश है। उनपर अल्लाह का क्रोध हुआ और उसने उनपर लानत की, और उसने उनके लिए जहन्नम तैयार कर रखा है, और वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है!

7. आकाशों और धरती की सब सेनाएँ अल्लाह ही की हैं। अल्लाह प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्त्वदर्शी है।

8. निश्चय ही हमने तुम्हें गवाही देनेवाला और शुभ सूचना देनेवाला और सचेतकर्त्ता बनाकर भेजा,

9. ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, उसे सहायता पहुँचाओ और उसका आदर करो, और प्रातःकाल और संध्या समय उसकी तसबीह करते रहो।

10. (ऐ नबी) वे लोग जो तुमसे बैअत करते हैं[1] वे तो वास्तव में अल्लाह ही से बैअत करते हैं। उनके हाथों के ऊपर अल्लाह का हाथ होता है। फिर जिस किसी ने वचन भंग किया तो वह वचन भंग करके उसका वबाल अपने ही सिर लेता है, किन्तु जिसने उस प्रतिज्ञा को पूरा किया जो उसने अल्लाह से की है, तो उसे वह बड़ा बदला प्रदान करेगा।

11. जो बद्दू पीछे रह गए थे, वे अब तुमसे कहेंगे : "हमारे माल और हमारे घरवालों ने हमें व्यस्त कर रखा था; तो आप हमारे लिए क्षमा की

1. अर्थात तुम्हारे हाथ पर अपना हाथ रखकर निष्ठा और आज्ञापालन की प्रतिज्ञा करते हैं।

وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِمْ
مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم
مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ
بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝
بَلْ ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَنقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ
إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ
وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝
وَمَن لَّمْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ
إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ
يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا

प्रार्थना कीजिए!" वे अपनी ज़बानों से वे बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं। कहना कि "कौन है जो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए किसी चीज़ का अधिकार रखता है, यदि वह तुम्हें कोई हानि पहुँचानी चाहे या वह तुम्हें कोई लाभ पहुँचाने का इरादा करे? बल्कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

12. नहीं, बल्कि तुमने यह समझा कि रसूल और ईमानवाले अपने घरवालों की ओर लौटकर कभी न आएँगे और यह तुम्हारे दिलों को अच्छा लगा। तुमने तो बहुत बुरे गुमान किए और तुम्हीं लोग हुए तबाही में पड़नेवाले।"

13. और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाया, तो हमने भी इनकार करनेवालों के लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है।

14. अल्लाह ही की है आकाशों और धरती की बादशाही। वह जिसे चाहे क्षमा करे और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

15. जब तुम ग़नीमतों[1] को प्राप्त करने के लिए उनकी ओर चलोगे तो पीछे रहनेवाले कहेंगे : "हमें भी अनुमति दी जाए कि हम तुम्हारे साथ चलें।" वे चाहते हैं कि अल्लाह के कथन[2] को बदल दें। कह देना : "तुम हमारे साथ

---

1. धर्म-युद्ध में प्राप्त होनेवाला माल।
2. अर्थात अल्लाह के आदेश और फ़ैसले।

कदापि नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले ही ऐसा कह दिया है।" इसपर वे कहेंगे : "नहीं, बल्कि तुम हमसे ईर्ष्या कर रहे हो।" नहीं, बल्कि वे लोग समझते थोड़े ही हैं।

16. पीछे रह जानेवाले बद्दुओं से कहना : "शीघ्र ही तुम्हें ऐसे लोगों की ओर बुलाया जाएगा जो बड़े युद्धवीर हैं कि तुम उनसे लड़ो या वे आज्ञाकारी हो जाएँ। तो यदि तुम आज्ञापालन करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला प्रदान करेगा। किन्तु यदि तुम फिर गए, जैसे पहले फिर गए थे, तो वह तुम्हें दुखद यातना देगा।"

كذلكم قال الله من قبل ۚ فسيقولون بل
تحسدوننا ۚ بل كانوا لا يفقهون إلا قليلا ۝
قل للمخلفين من الأعراب ستدعون إلى
قوم أولي بأس شديد تقاتلونهم أو يسلمون ۖ
فإن تطيعوا يؤتكم الله أجرا حسنا ۖ وإن
تتولوا كما توليتم من قبل يعذبكم عذابا
أليما ۝ ليس على الأعمى حرج ولا على الأعرج
حرج ولا على المريض حرج ۗ ومن يطع الله
ورسوله يدخله جنات تجري من تحتها
الأنهار ۖ ومن يتول يعذبه عذابا أليما ۝
لقد رضي الله عن المؤمنين إذ يبايعونك
تحت الشجرة فعلم ما في قلوبهم فأنزل
السكينة عليهم وأثابهم فتحا قريبا ۝ ومغانم

17. न अन्धे के लिए कोई हरज है, न लँगड़े के लिए कोई हरज है और न बीमार के लिए कोई हरज है। जो भी अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेगा, उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, किन्तु जो मुँह फेरेगा उसे वह दुखद यातना देगा।

18. निश्चय ही अल्लाह मोमिनों से प्रसन्न हुआ, जब वे वृक्ष के नीचे तुमसे बैअत कर रहे थे। उसने उसे जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। अतः उनपर उसने सकीना (प्रशान्ति) उतारी और बदले में उन्हें शीघ्र मिलनेवाली विजय निश्चित कर दी;

19. और बहुत-सी ग़नीमतें भी, जिन्हें वे प्राप्त करेंगे। अल्लाह प्रभुत्वशाली,

كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝
وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ
لَكُمْ هَٰذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ
آيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝
وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ وَلَوْ قَاتَلَكُمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ۝ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ وَهُوَ
الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ
بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ
وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ هُمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ

तत्त्वदर्शी है।

20. अल्लाह ने तुमसे बहुत-सी ग़नीमतों का वादा किया है, जिन्हें तुम प्राप्त करोगे। यह विजय तो उसने तुम्हें तात्कालिक रूप से निश्चित कर दी। और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए (कि वे तुमपर आक्रमण करने का साहस न कर सकें) और ताकि ईमानवालों के लिए एक निशानी हो। और वह सीधे मार्ग की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करे।

21. इसके अतिरिक्त दूसरी और विजय का भी वादा है, जिसकी सामर्थ्य अभी तुम्हें प्राप्त नहीं, उन्हें अल्लाह ने घेर रखा है। अल्लाह को हर चीज की सामर्थ्य प्राप्त है।

22. यदि (मक्का के) इनकार करनेवाले तुमसे लड़ते तो अवश्य ही पीठ फेर जाते। फिर यह भी कि वे न तो कोई संरक्षक पाएँगे और न कोई सहायक।

23. यह अल्लाह की उस रीति के अनुकूल है जो पहले से चली आई है, और तुम अल्लाह की रीति में कदापि कोई परिवर्तन न पाओगे।

24. वही है जिसने उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे मक्के की घाटी में रोक दिए इसके पश्चात कि वह तुम्हें उनपर प्रभावी कर चुका था। अल्लाह उसे देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।

25. ये वही लोग तो हैं जिन्होंने इनकार किया और तुम्हें मस्जिदे हराम (काबा) से रोक दिया और क़ुरबानी के बँधे हुए जानवरों को भी इससे रोके

مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ
وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَئُوهُمْ
فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِيُدْخِلَ
اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ إِذْ جَعَلَ
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ
الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ
وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا
أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝
لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ۖ لَتَدْخُلُنَّ
الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ
رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ
تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

रखा कि वे अपने ठिकाने पर पहुँचें। यदि यह ख़याल न होता कि बहुत-से मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ (मक्का में) मौजूद हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते, उन्हें कुचल दोगे, फिर उनके सिलसिले में अनजाने तुमपर इल्ज़ाम आएगा (तो युद्ध की अनुमति दे दी जाती, अनुमति इसलिए नहीं दी गई) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी दयालुता में दाख़िल कर ले। यदि वे ईमानवाले अलग हो गए होते तो उनमें से जिन लोगों ने इनकार किया उनको हम अवश्य दुखद यातना देते।

26. याद करो जब इनकार करनेवाले लोगों ने अपने दिलों में हठ को जगह दी, अज्ञानपूर्ण हठ को; तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमानवालों पर सकीना (प्रशान्ति) उतारी और उन्हें परहेज़गारी (धर्मपरायणता) की बात का पाबन्द रखा। वे इसके ज़्यादा हक़दार और इसके योग्य भी थे। अल्लाह तो हर चीज़ जानता है।

27. निश्चय ही अल्लाह ने अपने रसूल को हक़ के साथ सच्चा स्वप्न दिखाया : "यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम अवश्य मस्जिदे हराम (काबा) में प्रवेश करोगे बेखटके, अपने सिर के बाल मुड़ाते और कतरवाते हुए, तुम्हें कोई भय न होगा।" हुआ यह कि उसने वह बात जान ली जो तुमने नहीं जानी। अतः इससे पहले उसने शीघ्र प्राप्त होनेवाली विजय तुम्हारे लिए निश्चित कर दी।



28. वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा, ताकि उसे पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान करे और गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है।

29. अल्लाह के रसूल मुहम्मद और जो लोग उनके साथ हैं, वे इनकार करनेवालों पर भारी हैं, आपस में दयालु हैं। तुम उन्हें रुकू में, सजदे में, अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता चाहते हुए देखोगे। वे अपने चेहरों से पहचाने जाते हैं जिनपर सजदों का प्रभाव है। यही उनकी विशेषता तौरात में और उनकी विशेषता इंजील में उस खेती की तरह उल्लिखित है जिसने अपना अंकुर निकाला; फिर उसे शक्ति पहुँचाई तो वह मोटा हुआ और वह अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया। खेती करनेवालों को भा रहा है, ताकि उनसे[1] इनकार करनेवालों का जी जलाए। उनमें से[2] जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह ने क्षमा और बड़े बदले का वादा किया है।

49. अल-हुजुरात

(मदीने में उतरी— आयतें 18)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ ईमानवालो ! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह

1. 'उनसे' अर्थात अल्लाह के रसूल के साथियों से।
2. अर्थात इनकार करनेवालों में से।

का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह सुनता, जानता है।

2. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! तुम अपनी आवाज़ों को नबी की आवाज़ से ऊँची न करो। और जिस तरह तुम आपस में एक-दूसरे से ज़ोर से बोलते हो, उनसे ऊँची आवाज़ से बात न करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म अकारथ हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो।

3. वे लोग जो अल्लाह के रसूल के समक्ष अपनी आवाज़ों को दबी रखते हैं, वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँचकर चुन लिया है। उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है।

وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ
صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ
لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ
عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۤئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ
قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَاۗءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ
اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَاۗءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ
فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰي
مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ

4. जो लोग (ऐ नबी) तुम्हें कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते।

5. यदि वे धैर्य से काम लेते यहाँ तक कि तुम स्वयं निकलकर उनके पास आ जाते तो यह उनके लिए अच्छा होता। किन्तु अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

6. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! यदि कोई अवज्ञाकारी[1] तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ।

1. अर्थात वह व्यक्ति जो शरीअत के आदेशों को खुल्लम-खुल्ला तोड़ता हो।

اللَّهِ ۚ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ
وَلَٰكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي
قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ
أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ ۝ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَ
نِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِن طَائِفَتَانِ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ فَإِن
بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي
تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِن فَاءَتْ
فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۖ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ
فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ
مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا

7-8. जान लो कि तुम्हारे बीच अल्लाह का रसूल मौजूद है। बहुत-से मामलों में यदि वह तुम्हारी बात मान ले तो तुम कठिनाई में पड़ जाओ। किन्तु अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को प्रिय बना दिया और उसे तुम्हारे दिलों में सुन्दरता दे दी और इनकार, उल्लंघन और अवज्ञा को तुम्हारे लिए बहुत अप्रिय बना दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के उदार अनुग्रह और अनुकम्पा से सूझबूझवाले हैं। और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्वदर्शी है।

9. यदि मोमिनों में से दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गिरोह ज़्यादती कर रहा हो उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर पलट आए। फिर यदि वह पलट आए तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो[1], और इनसाफ़ करो। निश्चय ही अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।

10. मोमिन तो भाई-भाई ही हैं। अतः अपने दो भाइयों के बीच सुलह करा दो और अल्लाह का डर रखो, ताकि तुमपर दया की जाए।

11. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुषों की हँसी उड़ाए, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ,

1. अर्थात इस बात को न भूलो कि लड़ाई के बावजूद दोनों गिरोह आपस में भाई-भाई हैं।

نِسَاءٌ مِّنْ نِّسَاءٍ عَسٰى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ
وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۚ
بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ
لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ
بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ
بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ۭ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ
اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ
مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَاۗىِٕلَ
لِتَعَارَفُوْا ۭ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ۭ
قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

संभव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के पश्चात अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति बाज़ न आए, तो ऐसे ही व्यक्ति ज़ालिम हैं।

12. ऐ ईमान लानेवालो! बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे——क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का मांस खाए? वह तो तुम्हें अप्रिय होगा ही।——और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

13. ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सबकुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।

14. बद्दुओं ने कहा कि "हम ईमान लाए।" कह दो : "तुम ईमान नहीं लाए। किन्तु यूँ कहो, 'हम तो आज्ञाकारी हुए' ईमान तो अभी तुम्हारे दिलों में

दाख़िल ही नहीं हुआ। यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो तो वह तुम्हारे कर्मों में से तुम्हारे लिए कुछ कम न करेगा। निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।"

15. मोमिन तो बस वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर उन्होंने कोई सन्देह नहीं किया और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया। वही लोग सच्चे हैं।

16. कहो : "क्या तुम अल्लाह को अपने धर्म की सूचना दे रहे हो। हालाँकि जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, अल्लाह सब जानता है? अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।"

17. वे तुमपर एहसान जताते हैं कि उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। कह दो : "मुझपर अपने इस्लाम का एहसान न रखो, बल्कि यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह ही तुमपर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें ईमान की राह दिखाई।

18. निश्चय ही अल्लाह आकाशों और धरती के अदृष्ट को जानता है। और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।"

يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوا
اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۚ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ
آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ
هُمُ الصَّادِقُونَ ۝ قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ ۚ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ يَمُنُّونَ عَلَيْكَ
أَنْ أَسْلَمُوا ۖ قُل لَّا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُم ۖ
بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ
إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا
تَعْمَلُونَ ۝



50. क़ाफ़

(मक्का में उतरी— आयतें 45)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. क़ाफ़॰; गवाह है क़ुरआन मजीद !— बल्कि उन्हें तो इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक सावधान करनेवाला आ गया। फिर इनकार करनेवाले कहने लगे : "यह तो आश्चर्य की बात है।

3. क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे (तो फिर हम जीवित होकर पलटेंगे)? यह पलटना तो बहुत दूर की बात है!"

4. हम जानते हैं धरती उनमें जो कुछ कमी करती है[1] और हमारे पास सुरक्षित रखनेवाली एक किताब[2] भी है।

5. बल्कि उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब वह उनके पास आया। अत: वे एक उलझन भरी बात में पड़े हुए हैं।

6. अच्छा तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा, हमने उसे कैसा बनाया और उसे सजाया। और उसमें कोई दरार नहीं।

7-8. और धरती को हमने फैलाया और उसमें अटल पहाड़ डाल दिए। और हमने उसमें हर प्रकार की सुन्दर चीज़ें उगाईं, आँखें खोलने और याद दिलाने के उद्देश्य से, हर उस बन्दे के लिए जो रुजू करनेवाला हो।

---

1. मनुष्य आत्मा भी है और शरीर भी। मरने के पश्चात धरती मात्र शरीर को नष्ट करती है, आत्मा को नहीं।
2. मनुष्य के कर्मों का लेखा-जोखा सुरक्षित रखनेवाली किताब।

الْحَصِيدِ ۝ وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۝
رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ
الْخُرُوجُ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ
وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَابُ
الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝
أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ
جَدِيدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ
بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝
إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ
قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ
مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ
يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ

9-11. और हमने आकाश से बरकतवाला पानी उतारा, फिर उससे बाग़ और फ़सल के अनाज। और ऊँचे-ऊँचे खजूर के वृक्ष उगाए जिनके गुच्छे तह पर तह होते हैं, बन्दों की रोज़ी के लिए। और हमने उस (पानी) के द्वारा निर्जीव धरती को जीवन प्रदान किया। इसी प्रकार निकलना[1] भी है।

12-14. उनसे पहले नूह की क़ौम, 'अर्-रस' वाले, समूद, आद, फ़िरऔन, लूत के भाई, 'अल-ऐका' वाले और तुब्बा के लोग भी झुठला चुके हैं। प्रत्येक ने रसूलों को झुठलाया। अन्ततः मेरी धमकी सत्यापित होकर रही।

15. क्या हम पहली बार पैदा करने से असमर्थ रहे? नहीं, बल्कि वे एक नई सृष्टि के विषय में सन्देह में पड़े हैं।

16. हमने मनुष्य को पैदा किया है और हम जानते हैं जो बातें उसके जी में आती हैं। और हम उससे उसकी गरदन की रग से भी अधिक निकट हैं।

17. जब दो प्राप्त करनेवाले (फ़रिश्ते) प्राप्त कर रहे होते हैं[2], दाएँ से और बाएँ से वे लगे बैठे होते हैं।

18. कोई बात उसने कही नहीं कि उसके पास एक निरीक्षक तैयार रहता है।

19. और मौत की बेहोशी ले आई विश्वसनीय चीज़! यही वह चीज़ है जिससे तू कतराता था।

20. और नरसिंघा फूँक दिया गया। यही है वह दिन जिसकी धमकी दी गई थी।

21. हर व्यक्ति इस दशा में आ गया कि उसके साथ एक लानेवाला है

1. अर्थात जीवित होकर क़ब्रों से निकलना।
2. मनुष्य के कथन और कर्म को फ़रिश्ते अंकित कर रहे होते हैं।



और एक गवाही देनेवाला।

22. तू इस चीज़ की ओर से ग़फ़लत में था। अब हमने तुझसे तेरा परदा हटा दिया, तो आज तेरी निगाह बड़ी तेज़ है।

23. उसके साथी ने कहा : "यह है (तेरी सज़ा)! मेरे पास कुछ (सहायता के लिए) मौजूद नहीं।"

24-26. "डाल दो, डाल दो, जहन्नम में! हर अकृतज्ञ द्वेष रखनेवाले, भलाई से रोकनेवाले, सीमा का अतिक्रमण करनेवाले, सन्देहग्रस्त को जिसने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को पूज्य-प्रभु ठहराया। तो डाल दो उसे कठोर यातना में।"

27. उसका साथी बोला : "ऐ हमारे रब! मैंने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह स्वयं ही परले दरजे की गुमराही में था।"

28. कहा : "मेरे सामने मत झगड़ो। मैं तो तुम्हें पहले ही अपनी धमकी से सावधान कर चुका था।

29. मेरे यहाँ बात बदला नहीं करती और न मैं अपने बन्दों पर तनिक भी अत्याचार करता हूँ।"

30. जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे : "क्या तू भर गई?" और वह कहेगी : "क्या अभी और भी कुछ है?"

31. और जन्नत डर रखनेवालों के निकट कर दी गई, कुछ भी दूर न रही।

32. "यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था हर रुजू करनेवाले, बड़ी निगरानी रखनेवाले के लिए;

33. जो रहमान से डरा परोक्ष में और आया रुजू रहनेवाला हृदय लेकर।

34. "प्रवेश करो उस (जन्नत) में सलामती के साथ।" वह शाश्वत दिवस है।

الْخُلُوْدِ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَاۗءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝
وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ
بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ۭ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى
السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ڰ وَّمَا مَسَّنَا
مِنْ لُّغُوْبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلٰي مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۝
وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝ وَاسْتَمِعْ
يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُوْنَ
الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ۝ اِنَّا نَحْنُ
نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ۝ يَوْمَ تَشَقَّقُ
الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۭ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝

35. उनके लिए उसमें वह सबकुछ है जो वे चाहें और हमारे पास उससे अधिक भी है।

36. उनसे पहले हम कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुके हैं। वे लोग शक्ति में उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे। (पनाह की तलाश में) उन्होंने नगरों को छान मारा, कोई है भागने को ठिकाना?

37. निश्चय ही इसमें उस व्यक्ति के लिए शिक्षा-सामग्री है जिसके पास दिल हो या वह (दिल से) हाज़िर रहकर कान लगाए।

38. हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में पैदा कर दिया और हमें कोई थकान न छू सकी।

39-40. अतः जो कुछ वे कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और अपने रब की प्रशंसा की तसबीह करो; सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त से पूर्व, और रात की घड़ियों में फिर उसकी तसबीह करो और सजदों के पश्चात भी।

41-42. और कान लगाकर सुन लेना जिस दिन पुकारनेवाला अत्यन्त निकट के स्थान से पुकारेगा, जिस दिन लोग भयंकर चीख़ को सत्यतः सुन रहे होंगे। वही दिन होगा निकलने का।——

43. हम ही जीवन प्रदान करते और मृत्यु देते हैं और हमारी ही ओर अन्ततः आना है।——

44. जिस दिन धरती उनपर से फट जाएगी और वे तेज़ी से निकल पड़ेंगे। यह इकट्ठा करना हमारे लिए अत्यन्त सरल है।



45. हम जानते हैं जो कुछ वे कहते हैं : तुम उनपर कोई ज़बरदस्ती करनेवाले तो हो नहीं। अतः तुम क़ुरआन के द्वारा उसे नसीहत करो जो हमारी चेतावनी से डरे।

51. अज़-ज़ारियात

(मक्का में उतरी—— आयतें 60)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. गवाह हैं (हवाएँ) जो गर्द-ग़ुबार उड़ाती फिरती हैं;

2. फिर बोझ उठाती हैं;

3. फिर नरमी से चलती हैं;

4. फिर मामले को अलग-अलग करती हैं;[1]

5. निश्चय ही तुमसे जिस चीज़ का वादा किया जाता है, वह सत्य है;

6. और (कर्मों का) बदला अवश्य सामने आकर रहेगा।

7-8. गवाह है धारियोंवाला आकाश। निश्चय ही तुम उस बात में पड़े हुए हो जिनमें कथन भिन्न-भिन्न हैं।

9. इससे कोई सरफिरा ही विमुख होता है।

10-11. मारे जाएँ अटकल दौड़ानेवाले; जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं भूले हुए।

12. पूछते हैं : "बदले का दिन कब आएगा ?"

13-14. जिस दिन वे आग पर तपाए जाएँगे : "चखो मज़ा, अपने फ़ितने (उपद्रव) का ! यही है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे।"

15. निश्चय ही डर रखनेवाले बाग़ों और स्रोतों में होंगे।

16. जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया, वे उसे ले रहे होंगे। निस्संदेह वे इससे

1. यहाँ हवाओं को एक बड़ी वास्तविकता अर्थात आख़िरत पर गवाह ठहराया गया है।

كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۚ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ
مَا يَهْجَعُوْنَ ۝ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَفِيْۤ
اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ
لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۝ وَفِيْۤ اَنْفُسِكُمْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝ وَفِي
السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝ هَلْ
اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۝ اِذْ دَخَلُوْا
عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۚ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝
فَرَاغَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝ فَقَرَّبَهٗۤ اِلَيْهِمْ
قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۚ قَالُوْا لَا
تَخَفْ ۚ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ
صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۝ قَالُوْا
كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ ۚ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝

पहले उत्तमकारों में से थे।

17. रातों को थोड़ा ही सोते थे,

18. और वही प्रातः की घड़ियों में क्षमा की प्रार्थना करते थे।

19. और उनके मालों में माँगने-वाले और धनहीन का हक़ था।

20-21. और धरती में विश्वास करनेवालों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, और स्वयं तुम्हारे अपने आप में भी। तो क्या तुम देखते नहीं?

22. और आकाश में ही तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है।

23. अतः सौगन्ध है आकाश और धरती के रब की। निश्चय ही वह सत्य बात है ऐसे ही जैसे तुम बोलते हो।

24. क्या इबराहीम के प्रतिष्ठित अतिथियों का वृतान्त तुम तक पहुँचा?

25. जब वे उसके पास आए तो कहा : "सलाम है तुमपर !" उसने भी कहा : "सलाम है आप लोगों पर भी !" (और जी में कहा) : "ये तो अपरिचित लोग हैं।"

26-27. फिर वह चुपके-से अपने घरवालों के पास गया और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा (का भूना हुआ मांस) ले आया और उसे उनके सामने पेश किया। कहा : "क्या आप खाते नहीं?"

28. फिर उसने दिल में उनसे डर महसूस किया। उन्होंने कहा : "डरिए नहीं।" और उन्होंने उसे एक ज्ञानवान लड़के की मंगल-सूचना दी।

29. इसपर उसकी स्त्री (चकित होकर) आगे बढ़ी और उसने अपना मुँह पीट लिया और कहने लगी : "एक बूढ़ी बाँझ (के यहाँ बच्चा पैदा होगा) !"

30. उन्होंने कहा : "ऐसा ही तेरे रब ने कहा है। निश्चय ही वह बड़ा तत्त्वदर्शी, ज्ञानवान है।"

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا
أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ۝ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِنْ طِينٍ ۝ مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۝
فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَمَا
وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَتَرَكْنَا
فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝
وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ
مُبِينٍ ۝ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۝
فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝
وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ۝ مَا
تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ۝
وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۝ فَعَتَوْا
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝

31. उसने कहा : "ऐ (अल्लाह के) भेजे हुए दूतो, तुम्हारे सामने क्या मुहिम है ?"

32. उन्होंने कहा : "हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गए हैं;

33-34. ताकि उनके ऊपर मिट्टी के पत्थर (कंकड़) बरसाएँ, जो आपके रब के यहाँ सीमा का अतिक्रमण करनेवालों के लिए चिह्नित हैं।"

35. फिर वहाँ जो ईमानवाले थे उन्हें हमने निकाल लिया;

36. किन्तु हमने वहाँ एक घर के अतिरिक्त मुसलमानों (आज्ञाकारियों) का और कोई घर न पाया।

37. इसके पश्चात हमने वहाँ उन लोगों के लिए एक निशानी छोड़ दी, जो दुखद यातना से डरते हैं।

38. और मूसा के वृत्तान्त में भी (निशानी है) जब हमने उसे फ़िरऔन के पास एक स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा,

39. किन्तु उसने अपनी शक्ति के कारण मुँह फेर लिया और कहा : "जादूगर है या दीवाना।"

40. अन्ततः हमने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें गहरे पानी में फेंक दिया, इस दशा में कि वह निन्दनीय था।

41. और आद में भी (तुम्हारे लिए निशानी है), जबकि हमने उनपर अशुभ वायु चला दी।

42. वह जिस चीज़ पर से भी गुज़री उसे उसने जीर्ण-शीर्ण करके रख दिया।

43. और समूद में भी (तुम्हारे लिए निशानी है), जबकि उनसे कहा गया : "एक समय तक मज़े कर लो!"

44. किन्तु उन्होंने अपने रब के आदेश की अवहेलना की; फिर कड़क ने उन्हें आ लिया और वे देखते रहे।



45. फिर वे न खड़े ही हो सके और न अपना बचाव ही कर सके।

46. और इससे पहले नूह की क़ौम को भी पकड़ा। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग थे।

47. आकाश को हमने अपने हाथ के बल से बनाया और हम बड़ी समाई रखनेवाले हैं।

48. और धरती को हमने बिछाया, तो हम क्या ही ख़ूब बिछानेवाले हैं।

49. और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाए, ताकि तुम ध्यान दो।

50. अतः अल्लाह की ओर दौड़ो। मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सावधान करनेवाला हूँ।

51. और अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य-प्रभु न ठहराओ। मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सावधान करनेवाला हूँ।

52. इसी तरह उन लोगों के पास भी, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, जो भी रसूल आया तो उन्होंने बस यही कहा : "जादूगर है या दीवाना !"

53. क्या उन्होंने एक-दूसरे को इसकी वसीयत कर रखी है ? नहीं, बल्कि वे हैं ही सरकश लोग।

54. अतः उनसे मुँह फेर लो, अब तुमपर कोई मलामत नहीं।

55. और याद दिलाते रहो, क्योंकि याद दिलाना ईमानवालों को लाभ पहुँचाता है।

56. मैंने तो जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी बन्दगी करें।

57. मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ।

58. निश्चय ही अल्लाह ही है रोज़ी देनेवाला, शक्तिशाली, दृढ़।



59. अतः जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उनके लिए एक नियत पैमाना है; जैसा उनके साथियों का नियत पैमाना[1] था। अतः वे मुझसे जल्दी न मचाएँ!

60. अतः इनकार करनेवालों के लिए बड़ी ख़राबी है उनके उस दिन के कारण जिसकी उन्हें धमकी दी जा रही है।

52. अत-तूर

(मक्का में उतरी— आयतें 49)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. गवाह है तूर पर्वत,

2-3. और फैले हुए झिल्ली के पन्ने में लिखी हुई किताब;

4. और बसा हुआ घर;

5. और ऊँची छत;

6-7. और उफनता समुद्र कि तेरे रब की यातना अवश्य घटित होकर रहेगी;

8. जिसे टालनेवाला कोई नहीं;

9. जिस दिन आकाश बुरी तरह डगमगाएगा;

10. और पहाड़ चलते-फिरते होंगे;

11. तो तबाही है उस दिन, झुठलानेवालों के लिए;

12. जो बात बनाने में लगे हुए खेल रहे हैं।

13-14. जिस दिन वे धक्के दे-देकर जहन्नम की ओर ढकेले जाएँगे (कहा जाएगा) : "यही है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे।

15. अब भला (बताओ) यह कोई जादू है या तुम्हें सुझाई नहीं देता?

1. अर्थात जीवन की सीमा-अवधि।

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۚ
اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ
فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ۞ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ
رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۞ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَ
زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۞ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ
ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ
مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ۞
وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۞ يَتَنَازَعُوْنَ
فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ۞ وَيَطُوْفُ
عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ۞ وَاَقْبَلَ
بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ۞ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا
قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ۞ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا

16. जाओ, झुलसो उसमें ! अब धैर्य से काम लो या धैर्य से काम न लो; तुम्हारे लिए बराबर है। तुम वही बदला पा रहे हो, जो तुम करते रहे थे।"

17. निश्चय ही डर रखनेवाले बाग़ों और नेमतों में होंगे।

18-20. जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया होगा, उसका आनन्द ले रहे होंगे और इस बात से कि उनके रब ने उन्हें भड़कती हुई आग से बचा लिया—— "मज़े से खाओ और पियो उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे हो।"——पंक्तिबद्ध तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे और हम बड़ी आँखोंवाली हूरों (परम रूपवती स्त्रियों) से उनका विवाह कर देंगे।

21. जो लोग ईमान लाए और उनकी सन्तान ने भी ईमान के साथ उनका अनुसरण किया, उनकी सन्तान को भी हम उनसे मिला देंगे, और उनके कर्म में से कुछ भी कम करके उन्हें नहीं देंगे। हर व्यक्ति अपनी कमाई के बदले में बन्धक है।

22. और हम उन्हें मेवे और मांस, जिसकी वे इच्छा करेंगे दिए चले जाएँगे।

23. वे वहाँ आपस में प्याले हाथोंहाथ ले रहे होंगे, जिसमें न कोई बेहूदगी होगी और न गुनाह पर उभारनेवाली कोई बात,

24. और उनकी सेवा में सुरक्षित मोतियों के सदृश किशोर दौड़ते फिरते होंगे, जो ख़ास उन्हीं (की सेवा) के लिए होंगे।

25. उनमें से कुछ व्यक्ति कुछ व्यक्तियों की ओर हाल पूछते हुए रुख़ करेंगे,

26. कहेंगे : "निश्चय ही हम पहले अपने घरवालों में डरते रहे हैं,

27. अन्ततः अल्लाह ने हमपर एहसान किया और हमें गर्म विषैली वायु की

وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ۝ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ۝ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ
رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ
نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ۝ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ
مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ۝ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ
بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ
بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا
صٰدِقِيْنَ ۝ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ۝
اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ۝
اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَۜيْطِرُوْنَ ۝
اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ
بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ۝
اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ

यातना से बचा लिया।

28. इससे पहले हम उसे पुकारते रहे हैं। निश्चय ही वह सद्व्यवहार करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।"

29. अत: तुम याद दिलाते रहो। अपने रब की अनुकम्पा से न तुम काहिन (ढोंगी भविष्यवक्ता) हो और न दीवाना।

30. या वे कहते हैं : "वह कवि है जिसके लिए हम काल-चक्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं?"

31. कह दो : "प्रतीक्षा करो! मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।"

32. या उनकी बुद्धियाँ यही आदेश दे रही हैं, या वे हैं ही सरकश लोग?

33. या वे कहते हैं : "उसने उस (क़ुरआन) को स्वयं ही कह लिया है?" नहीं, बल्कि वे ईमान नहीं लाते।

34. अच्छा यदि वे सच्चे हैं तो उन्हें उस जैसी वाणी ले आनी चाहिए।

35. या वे बिना किसी चीज़ के पैदा हो गए? या वे स्वयं ही अपने स्रष्टा हैं?

36. या उन्होंने आकाशों और धरती को पैदा किया? नहीं, बल्कि वे विश्वास नहीं रखते।

37. या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं? या वही उनके परिरक्षक हैं?

38. या उनके पास कोई सीढ़ी है जिसपर चढ़कर वे (कान लगाकर) सुन लेते हैं? फिर उनमें से जिसने सुन लिया हो तो वह ले आए स्पष्ट प्रमाण।

39. या उस (अल्लाह) के लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे अपने लिए बेटे?

40. या तुम उनसे कोई पारिश्रमिक माँगते हो कि वे तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं?



41. या उनके पास परोक्ष (स्पष्ट) है जिसके आधार पर वे लिख रहे हों ?

42. या वे कोई चाल चलना चाहते हैं ? तो जिन लोगों ने इनकार किया वही चाल की लपेट में आनेवाले हैं।

43. या अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई और पूज्य-प्रभु है ? अल्लाह महान और उच्च है उससे जो वे साझी ठहराते हैं।

44. यदि वे आकाश का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहेंगे : "यह तो परत पर परत बादल है !"

45. अत: छोड़ो उन्हें, यहाँ तक कि वे अपने उस दिन का सामना करें जिसमें उनपर वज्रपात होगा;

46. जिस दिन उनकी चाल उनके कुछ भी काम न आएगी और न उन्हें कोई सहायता ही मिलेगी;

47. और निश्चय ही जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए एक यातना है उससे हटकर भी, परन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं।

48. अपने रब का फ़ैसला आने तक धैर्य से काम लो, तुम तो हमारी आँखों में हो, और जब उठो तो अपने रब का गुणगान करो;

49. रात की कुछ घड़ियों में भी उसकी तसबीह करो, और सितारों के पीठ फेरने के समय (प्रात: काल) भी।

53. अन-नज्म

(मक्का में उतरी— आयतें 62)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. गवाह है तारा, जब वह नीचे को आए।

2. तुम्हारा साथी (मुहम्मद सल्ल०) न गुमराह हुआ और न बहका;

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝
عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۝ وَهُوَ
بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝ فَكَانَ قَابَ
قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝ فَاَوْحٰى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ۝ مَا
كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝
وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۝ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝
عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۝
مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ۝ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ
الْكُبْرٰى ۝ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۝ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ
الْاُخْرٰى ۝ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ
ضِيْزٰى ۝ اِنْ هِيَ اِلَّاۤ اَسْمَاۤءٌ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ
اٰبَاۤؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ
اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَاۤءَهُمْ مِّنْ

3-4. और न वह अपनी इच्छा से बोलता है; वह तो बस एक प्रकाशना है, जो की जा रही है।

5-7. उसे बड़ी शक्तियोंवाले ने सिखाया, स्थिर रीतिवाले ने। अतः वह भरपूर हुआ, इस हाल में कि वह क्षितिज के उच्चतम छोर पर है।

8. फिर वह निकट हुआ और उतर गया।

9. अब दो कमानों के बराबर या उससे भी अधिक निकट हो गया।

10-11. तब उसने अपने बन्दे की ओर प्रकाशना की, जो कुछ भी प्रकाशना की। दिल ने कोई धोखा नहीं दिया, जो कुछ उसने देखा;

12. अब क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो, जिसे वह देख रहा है?——

13-14. और निश्चय ही वह उसे एक बार और 'सिदरतुल मुन्तहा' (परली सीमा की बेर) के पास उतरते देख चुका है।

15. उसी के निकट 'जन्नतुल मावा' (ठिकानेवाली जन्नत) है।——

16. जबकि छा रहा था उस बेर पर, जो कुछ छा रहा था।

17. निगाह न तो टेढ़ी हुई और न हद से आगे बढ़ी।

18. निश्चय ही उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं।

19-20. तो क्या तुमने लात और उज़्ज़ा और तीसरी एक और (देवी) मनात पर विचार किया?

21. क्या तुम्हारे लिए तो बेटे हैं और उसके लिए बेटियाँ?

22. तब तो यह बहुत बेढंगा और अन्यायपूर्ण बँटवारा हुआ!

23. वे तो बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह ने उनके लिए कोई सनद नहीं उतारी। वे तो केवल अटकल के पीछे

رَبِّهِمُ الْهُدٰى ۞ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ۞ فَلِلّٰهِ
الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ۞ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ لَا
تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ۞ وَمَا لَهُمْ بِهٖ
مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا
يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۞ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۥ
عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۞ ذٰلِكَ
مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ
عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۞ وَلِلّٰهِ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ
اَسَاۗءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۞
اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰۗئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۭ

चल रहे हैं और उसके पीछे जो उनके मन की इच्छा होती है। हालाँकि उनके पास उनके रब की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है।

24. (क्या उनकी देवियाँ उन्हें लाभ पहुँचा सकती हैं) या मनुष्य वह कुछ पा लेगा, जिसकी वह कामना करता है?

25. आख़िरत और दुनिया का मालिक तो अल्लाह ही है।

26-29. आकाशों में कितने ही फ़रिश्ते हैं, उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आएगी; यदि काम आ सकती है तो इसके पश्चात ही कि अल्लाह अनुमति दे, जिसे चाहे और पसन्द करे। जो लोग आख़िरत को नहीं मानते, वे फ़रिश्तों को देवियों के नाम से अभिहित करते हैं, हालाँकि इस विषय में उन्हें कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अटकल के पीछे चलते हैं, हालाँकि सत्य से जो लाभ पहुँचता है वह अटकल से कदापि नहीं पहुँच सकता। अतः तुम उसको ध्यान में न लाओ जो हमारे ज़िक्र से मुँह मोड़ता है और सांसारिक जीवन के सिवा उसने कुछ नहीं चाहा।

30. ऐसे लोगों के ज्ञान की पहुँच बस यहीं तक है। निश्चय ही तुम्हारा रब ही उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया, और वही उसे भी भली-भाँति जानता है जिसने सीधा मार्ग अपनाया।

31. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, ताकि जिन लोगों ने बुराई की वह उन्हें उनके किए का बदला दे। और जिन लोगों ने भलाई की उन्हें अच्छा बदला दे;

32. वे लोग जो बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं, यह और बात है कि संयोगवश कोई छोटी बुराई उनसे हो जाए। निश्चय ही तुम्हारा रब

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ
مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ
فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ۝ أَفَرَأَيْتَ
الَّذِي تَوَلَّىٰ ۝ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ۝ أَعِنْدَهُ
عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ۝ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ
مُوسَىٰ ۝ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ۝ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِزْرَ أُخْرَىٰ ۝ وَأَنْ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ۝
وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ۝ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ۝
وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۝
وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ۝ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ
الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۝ مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ۝ وَأَنَّ عَلَيْهِ
النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۝ وَأَنَّهُ
هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ۝ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۝

क्षमाशीलता में बड़ा व्यापक है। वह तुम्हें उस समय से भली-भाँति जानता है, जबकि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माँओं के पेटों में भ्रूण अवस्था में थे। अतः अपने मन की पवित्रता और निखार का दावा न करो। वह उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है, जिसने डर रखा।

33-34. क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने मुँह फेरा, और थोड़ा-सा देकर रुक गया;

35. क्या उसके पास परोक्ष का ज्ञान है कि वह देख रहा है;

36-37. या उसको उन बातों की ख़बर नहीं पहुँची, जो मूसा की किताबों में है और इबराहीम की (किताबों में है), जिसने (अल्लाह की बन्दगी का) पूरा-पूरा हक़ अदा कर दिया?

38. यह कि कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा;

39. और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया;

40-42. और यह कि उसका प्रयास शीघ्र ही देखा जाएगा। फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा; और यह कि अंत में पहुँचना तुम्हारे रब ही की ओर है;

43. और यह कि वही है जो हँसाता और रुलाता है;

44. और यह कि वही है जो मारता और जिलाता है;

45-47. और यह कि वही है जिसने नर और मादा के जोड़े पैदा किए, एक बूँद से, जब वह टपकाई जाती है; और यह कि उसी के ज़िम्मे दोबारा उठाना भी है;

48. और यह कि वही है जिसने धनी और पूँजीपति बनाया;

49. और यह कि वही है जो शेअरा (नामक तारे) का रब है।

50. और यह कि उसी ने प्राचीन आद को विनष्ट किया;



51-52. और समूद को भी। फिर किसी को बाक़ी न छोड़ा। और उससे पहले नूह की क़ौम को भी। बेशक वे ज़ालिम और सरकश थे।

53-54. उलट जानेवाली बस्ती को भी फेंक दिया। तो ढँक लिया उसे जिस चीज़ ने ढँक लिया;

55-56. फिर तू अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस के विषय में संदेह करेगा? यह पहले के सावधान- कर्ताओं के सदृश एक सावधान करनेवाला है।

57. निकट आनेवाली (क़ियामत की घड़ी) निकट आ गई।

58. अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो उसे प्रकट कर दे।

59-61. अब क्या तुम इस वाणी पर आश्चर्य करते हो; और हँसते हो और रोते नहीं? जबकि तुम घमण्डी और ग़ाफ़िल हो।

62. अत: अल्लाह को सजदा करो और बन्दगी करो।

54. अल-क़मर

(मक्का में उतरी— आयतें 55)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. वह घड़ी निकट आ लगी और चाँद फट गया;

2. किन्तु हाल यह है कि यदि वे कोई निशानी देख भी लें तो टाल जाएँगे और कहेंगे : "यह तो जादू है, पहले से चला आ रहा है !"

3. उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया; किन्तु हर मामले के लिए एक नियत अवधि है।

4-5. उनके पास अतीत की ऐसी खबरें आ चुकी हैं, जिनमें ताड़ना अर्थात

تُغْنِ النُّذُرُ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ
شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝ خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ
الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۝ مُّهْطِعِينَ إِلَى
الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ
وَازْدُجِرَ ۝ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ۝
فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝ وَفَجَّرْنَا
الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝
وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ۝ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا
جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ۝ وَلَقَد تَّرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ
مِن مُّدَّكِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ
يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ
عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

पूर्णतः तत्त्वदर्शिता है। किन्तु चेतावनियाँ उनके कुछ काम नहीं आ रही हैं !——

6. अतः उनसे रुख़ फेर लो—— जिस दिन पुकारनेवाला एक अत्यन्त अप्रिय चीज़ की ओर पुकारेगा;

7. वे अपनी झुकी हुई निगाहों के साथ अपनी क़ब्रों से निकल रहे होंगे, मानो वे बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं;

8. दौड़ पड़ने को पुकारनेवाले की ओर। इनकार करनेवाले कहेंगे : "यह तो एक कठिन दिन है !"

9. उनसे पहले नूह की क़ौम ने भी झुठलाया। उन्होंने हमारे बन्दे को झूठा ठहराया और कहा : "यह तो दीवाना है !" और वह बुरी तरह झिड़का गया।

10-11. अन्त में उसने अपने रब को पुकारा कि "मैं दबा हुआ हूँ। अब तू बदला ले।" तब हमने मूसलाधार बरसते हुए पानी से आकाश के द्वार खोल दिए;

12. और धरती को प्रवाहित स्रोतों में परिवर्तित कर दिया, और सारा पानी उस काम के लिए मिल गया जो नियत हो चुका था।

13-17. और हमने उसे एक तख़्तों और कीलोंवाली (नौका) पर सवार किया, जो हमारी निगाहों के सामने चल रही थी—— यह बदला था उस व्यक्ति के लिए जिसकी क़द्र नहीं की गई। हमने उसे एक निशानी बनाकर छोड़ दिया; फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला? फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे? और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला?

18. आद ने भी झुठलाया, फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरा डराना?

19-20. निश्चय ही हमने एक निरन्तर अशुभ दिन में तेज़ प्रचंड ठंडी हवा भेजी,



उसे उनपर मुसल्लत कर दिया, तो वह लोगों को उखाड़ फेंक रही थी मानो वे उखड़े खजूर के तने हों।

21. फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे?

22. और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला?

23-24. समूद ने चेतावनियों को झुठलाया; और कहने लगे : "एक अकेला आदमी, जो हम ही में से है, क्या हम उसके पीछे चलेंगे? तब तो वास्तव में हम गुमराही और दीवानापन में पड़ गए!

25. क्या हमारे बीच उसी पर अनुस्मृति उतारी है? नहीं, बल्कि वह तो परले दरजे का झूठा, बड़ा आत्मश्लाघी है।"——

26-27. "कल को ही वे जान लेंगे कि कौन परले दरजे का झूठा, बड़ा आत्मश्लाघी है। हम ऊँटनी को उनके लिए परीक्षा के रूप में भेज रहे हैं! अत: तुम उन्हें देखते जाओ और धैर्य से काम लो।

28. और उन्हें सूचित कर दो कि पानी उनके बीच बाँट दिया गया है। हर एक पीने की बारी पर बारीवाला उपस्थित होगा।"

29. अन्तत: उन्होंने अपने साथी को पुकारा, तो उसने ज़िम्मा लिया फिर उसने उसकी कूचें काट दी।

30-31. फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे? हमने उनपर एक धमाका छोड़ा, फिर वे बाड़ लगानेवाले की रौंदी हुई बाड़ की तरह चूरा होकर रह गए।

32. हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या कोई है नसीहत हासिल करनेवाला?

33. लूत की क़ौम ने भी चेतावनियों को झुठलाया।



34-35. हमने लूत के घरवालों के सिवा उनपर पथराव करनेवाली तेज़ वायु भेजी। हमने अपनी विशेष अनुकम्पा से प्रातःकाल उन्हें बचा लिया। हम इसी तरह उस व्यक्ति को बदला देते हैं जो कृतज्ञता दिखाए।

36. उसने तो उन्हें हमारी पकड़ से सावधान कर दिया था। किन्तु वे चेतावनियों के विषय में संदेह करते रहे।

37. उन्होंने उसे फुसलाकर उसके पास से उसके अतिथियों को बलाना चाहा। अन्ततः हमने उनकी आँखें मेट दीं : "लो, अब चखो मज़ा मेरी यातना और चेतावनियों का !"

38-39. सुबह सवेरे ही एक अटल यातना उनपर आ पहुँची : "लो, अब चखो मज़ा मेरी यातना और चेतावनियों का !"

40. और हमने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला ?

41. और फ़िरऔनियों के पास चेतावनियाँ आईं;

42. उन्होंने हमारी सारी निशानियों को झुठला दिया। अन्ततः हमने उन्हें पकड़ लिया, जिस प्रकार एक ज़बरदस्त प्रभुत्वशाली पकड़ता है।

43. क्या तुम्हारे काफ़िर कुछ उन लोगों से अच्छे हैं या किताबों में तुम्हारे लिए कोई छुटकारा लिखा हुआ है ?

44. या वे कहते हैं : "और हम मुक़ाबले की शक्ति रखनेवाले एक जत्था हैं ?"

45. शीघ्र ही वह जत्था पराजित होकर रहेगा और वे पीठ दिखा जाएँगे।

46. नहीं, बल्कि वह घड़ी है, जिसका समय उनके लिए नियत है और वह बड़ी आपदावाली और कटु घड़ी है !

47. निस्संदेह, अपराधी लोग गुमराही और दीवानेपन में पड़े हुए हैं।



48. जिस दिन वे अपने मुँह के बल आग में घसीटे जाएँगे : "चखो मज़ा आग की लपट का !"

49. निश्चय ही हमने हर चीज़ एक अंदाज़े के साथ पैदा की है।

50. और हमारा आदेश (और काम) तो बस एक दम की बात होती है जैसे आँख का झपकना।

51. और हम तुम्हारे जैसे लोगों को विनष्ट कर चुके हैं। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला ?

52. जो कुछ उन्होंने किया है, वह पन्नों में अंकित है।

53. और हर छोटी और बड़ी चीज़ लिखित है।

54-55. निश्चय ही डर रखनेवाले बाग़ों और नहरों के बीच होंगे, प्रतिष्ठित स्थान पर, प्रभुत्वशाली सम्राट के निकट।

55. अर-रहमान

(मदीना में उतरी— आयतें 78)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. रहमान ने कुरआन सिखाया;

3-4. उसी ने मनुष्य को पैदा किया; उसे बोलना सिखाया;

5. सूर्य और चन्द्रमा एक हिसाब के पाबन्द हैं;

6. और तारे और वृक्ष सजदा करते हैं;

7-8. उसने आकाश को ऊँचा किया और संतुलन स्थापित किया—कि तुम भी तुला में सीमा का उल्लंघन न करो।

9. न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो और तौल में कमी न करो।—

10. और धरती को उसने सृष्ट प्राणियों के लिए बनाया;

11-12. उसमें स्वादिष्ट फल हैं और खजूर के वृक्ष हैं, जिनके फल आवरणों में लिपटे हुए हैं, और भुसवाले अनाज भी और सुगंधित बेल-बूटा भी।

13. तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

14. उसने मनुष्य को ठीकरी जैसी खनखनाती हुई मिट्टी से पैदा किया;

15. और जिन्न को उसने आग की लपट से पैदा किया।

16. फिर तुम दोनों अपने रब की सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे?

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ
ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝
وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
يَلْتَقِيَانِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَآتُ
فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ
ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

17-18. वह दो पूर्व का रब है और दो पश्चिम का रब भी।[1] अतः तुम दोनों अपने रब की महानताओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

19-20. उसने दो समुद्रों को प्रवाहित कर दिया, जो आपस में मिल रहे होते हैं। उन दोनों के बीच एक परदा बाधक होता है, जिसका वे अतिक्रमण नहीं करते।

21. तो तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

22-23. उन (समुद्रों) से मोती और मूँगा निकलता है। अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

24. उसी के बस में हैं समुद्र में पहाड़ों की तरह उठे हुए जहाज़।

25-26 तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे? प्रत्येक जो भी इस (धरती) पर है, नाशवान है।

27. किन्तु तुम्हारे रब का प्रतापवान और उदार स्वरूप शेष रहनेवाला है।

28. अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

1. अभिप्राय है उत्तरायण और दक्षिणायण में सूर्य के उदय एवं अस्त होने के स्थल।



29. आकाशों और धरती में जो भी है उसी से माँगता है। उसकी नित्य नई शान है।

30. अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

31. ऐ दोनों बोझों ! शीघ्र ही हम तुम्हारे लिए निवृत्त हुए जाते हैं।

32. तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

33. ऐ जिन्नों और मनुष्यों के गिरोह ! यदि तुमसे हो सके कि आकाशों और धरती की सीमाओं को पार कर सको, तो पार कर जाओ; तुम कदापि पार नहीं कर सकते बिना अधिकार-शक्ति के।

34. अतः तुम दोनों अपने रब की सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

35-38. तुम दोनों पर अग्नि-ज्वाला और धुएँवाला अंगारा (पिघला ताँबा) छोड़ दिया जाएगा, फिर तुम मुक़ाबला न कर सकोगे। अतः तुम दोनों अपने रब की सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे ? फिर जब आकाश फट जाएगा और लाल चमड़े की तरह लाल हो जाएगा।—— अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

39. फिर उस दिन न किसी मनुष्य से उसके गुनाह के विषय में पूछा जाएगा न किसी जिन्न से।

40. अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

41. अपराधी अपने चेहरों से पहचान लिए जाएँगे और उनके माथे के बालों और टाँगों द्वारा उन्हें पकड़ लिया जाएगा।

42. अतः तुम दोनों अपने रब की सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

الْمُجْرِمُونَ ۘ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ۚ
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ وَلِمَنْ خَافَ
مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۙ
ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ
فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۚ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۚ
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ
بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ
الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۚ
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ
وَالْمَرْجَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ
هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۚ فَبِأَيِّ

43. यही वह जहन्नम है जिसे अपराधी लोग झूठ ठहराते रहे हैं।

44. वे उसके और खौलते हुए पानी के बीच चक्कर लगा रहे होंगे।

45-46. फिर तुम दोनों अपने रब के सामर्थ्यों में से किस-किस को झुठलाओगे? किन्तु जो अपने रब के सामने खड़े होने का डर रखता होगा, उसके लिए दो बाग़ हैं।——

47. तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?——

48. घनी डालियोंवाले;

49-51. अतः तुम दोनों अपने रब के उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे? उन दोनों (बाग़ों) में दो प्रवाहित स्रोत हैं। अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

52-53. उन दोनों (बाग़ों) में हर स्वादिष्ट फल की दो-दो क़िस्में हैं; अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

54-55. वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए हुए होंगे जिनके अस्तर गाढ़े रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के फल झुके हुए निकट ही होंगे। अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

56. उन (अनुकम्पाओं) में निगाह बचाए रखनेवाली (सुन्दर) स्त्रियाँ होंगी, जिन्हें उनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने।

57. फिर तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

58-59. मानो वे लाल (याक़ूत) और प्रवाल (मूँगा) हैं। अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

60. अच्छाई का बदला अच्छाई के सिवा और क्या हो सकता है?



اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ وَمِنْ دُوْنِهِمَا
جَنَّتٰنِ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
مُدْهَآمَّتٰنِ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۝
فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ
حِسَانٌ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ حُوْرٌ
مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝
فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى
رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِىٍّ حِسَانٍ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ
وَالْاِكْرَامِ ۝

61. अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

62-63. उन दोनों से हटकर दो और बाग़ हैं। फिर तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

64-65. गहरे हरित; अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

66. उन दोनों (बाग़ों) में दो स्रोत हैं जोश मारते हुए।

67. अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

68-69. उनमें हैं स्वादिष्ट फल और खजूर और अनार; अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

70-71. उनमें भली और सुन्दर स्त्रियाँ होंगी। तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

72-73. हूरें (परम रूपवती स्त्रियाँ) ख़ेमों में रहनेवालीं; अतः तुम दोनों अपने रब के चमत्कारों में से किस-किस को झुठलाओगे ?

74-75. जिन्हें उनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

76-77. वे हरे रेशमी गद्दों और उत्कृष्ट और असाधारण क़ालीनों पर तकिया लगाए होंगे; अतः तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे ?

78. बड़ा ही बरकतवाला नाम है तुम्हारे प्रतापवान और उदार रब का।

56. अल-वाक़िआ

(मक्का में उतरी— आयतें 96)


سورة الواقعة مكية
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۘ
خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۙ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۙ
وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۙ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْبَثًّا ۙ
وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۗ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ
مَآ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۗ وَأَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ
مَآ أَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۗ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۚ
أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ
ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۙ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۗ
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ مُّتَّكِـِٔيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ
يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۙ بِأَكْوَابٍ
وَّأَبَارِيْقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ لَّا يُصَدَّعُوْنَ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जब घटित होनेवाली (घड़ी) घटित हो जाएगी;

2. उसके घटित होने में कुछ भी झूठ नहीं;

3. पस्त करनेवाली होगी, ऊँचा करनेवाली भी;

4. जब धरती थरथराकर काँप उठेगी;

5-6. और पहाड़ टूटकर चूर्ण-विचूर्ण हो जाएँगे कि वे बिखरे हुए धूल होकर रह जाएँगे।

7. और तुम लोग तीन प्रकार के हो जाओगे—

8. तो दाहिने हाथ वाले (सौभाग्यशाली), कैसे होंगे दाहिने हाथ वाले!

9. और बाएँ हाथ वाले (दुर्भाग्यशाली), कैसे होंगे बाएँ हाथ वाले!

10. और आगे बढ़ जानेवाले तो आगे बढ़ जानेवाले ही हैं।

11. वही (अल्लाह के) निकटवर्ती हैं;

12. नेमत भरी जन्नतों में होंगे;

13-14. अगलों में से तो बहुत-से होंगे, किन्तु पिछलों में से कम ही।

15. जड़ित तख़्तों पर;

16. तकिया लगाए आमने-सामने होंगे;

17-19. उनके पास किशोर होंगे जो सदैव किशोरावस्था ही में रहेंगे, प्याले और आफ़ताबे (जग) और विशुद्ध पेय से भरा हुआ पात्र लिए फिर रहे होंगे— जिस (के पीने) से न तो उन्हें सिर दर्द होगा और न उनकी बुद्धि में

عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ۙ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۙ
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۙ وَحُورٌ عِينٌ ۙ
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۚ جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۙ
إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۙ مَا
أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۙ وَطَلْحٍ
مَّنضُودٍ ۙ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ۙ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۙ وَ
فَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۙ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ۙ
وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ۝ إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ۙ
فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۙ عُرُبًا أَتْرَابًا ۙ لِّأَصْحَابِ
الْيَمِينِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۙ وَثُلَّةٌ مِّنَ
الْآخِرِينَ ۝ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ۙ مَا أَصْحَابُ
الشِّمَالِ ۝ فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۙ وَظِلٍّ مِّنْ

विकार आएगा।

20. और स्वादिष्ट फल जो वे पसन्द करें;

21. और पक्षी का मांस जो वे चाहें;

22-23. और बड़ी आँखोंवाली हूरें, मानो छिपाए हुए मोती हों।

24. यह सब उसके बदले में उन्हें प्राप्त होगा जो कुछ वे करते रहे।

25-26. उसमें वे न कोई व्यर्थ बात सुनेंगे और न गुनाह की बात; सिवाय इस बात के कि "सलाम हो, सलाम हो!"

27. रहे सौभाग्यशाली लोग, तो सौभाग्यशालियों का क्या कहना!

28-29. वे वहाँ होंगे जहाँ बिन काँटों के बेर होंगे; और गुच्छेदार केले;

30. दूर तक फैली हुई छाँव;

31. बहता हुआ पानी;

32-33. बहुत-सा स्वादिष्ट फल, जिसका सिलसिला टूटनेवाला न होगा और न उसपर कोई रोक-टोक होगी।

34. उच्चकोटि के बिछौने होंगे;

35. (और वहाँ उनकी पत्नियों को) निश्चय ही हमने एक विशेष उठान पर उठाया।

36. और हमने उन्हें कुँवारियाँ बनाया;

37. प्रेम दर्शानेवाली और समायु;

38. सौभाग्यशाली लोगों के लिए;

39-40. वे अगलों में से भी अधिक होंगे और पिछलों में से भी अधिक होंगे।

41. रहे दुर्भाग्यशाली लोग, तो कैसे होंगे दुर्भाग्यशाली लोग!

42. गर्म हवा और खौलते हुए पानी में होंगे;

يَحْمُوْمٍ ۙ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ۝ اِنَّهُمْ كَانُوْا
قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۚ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ
عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۚ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا
مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ
اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَ
الْاٰخِرِيْنَ ۙ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ
مَّعْلُوْمٍ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ
لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ فَمَالِـُٔوْنَ
مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ
الْحَمِيْمِ ۚ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۙ هٰذَا
نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۙ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا
تُصَدِّقُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۙ ءَاَنْتُمْ
تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۝ نَحْنُ قَدَّرْنَا

43-44. और काले धुएँ की छाँव में, जो न ठंडी होगी और न उत्तम और लाभप्रद।

45. वे इससे पहले सुख-सम्पन्न थे;

46. और बड़े गुनाह पर अड़े रहते थे।

47. कहते थे : "क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, तो क्या हम वास्तव में उठाए जाएँगे?

48. और क्या हमारे पहले के बाप-दादा भी?"

49-50. कह दो : "निश्चय ही अगले और पिछले भी एक नियत समय तक इकट्ठे कर दिए जाएँगे, जिसका दिन ज्ञात और नियत है।

51-52. फिर तुम ऐ गुमराहो, झुठलानेवालो! ज़क़्क़ूम के वृक्ष में से खाओगे;

53. और उसी से पेट भरोगे;

54. और उसके ऊपर से खौलता हुआ पानी पीओगे;

55. और तौंस लगे ऊँट[1] की तरह पीओगे।"

56. यह बदला दिए जाने के दिन उनका पहला सत्कार होगा।

57. हमने तुम्हें पैदा किया; फिर तुम सच क्यों नहीं मानते?

58. तो क्या तुमने विचार किया जो चीज़ तुम टपकाते हो?

59. क्या तुम उसे आकार देते हो, या हम हैं आकार देनेवाले?

60-61. हमने तुम्हारे बीच मृत्यु को नियत किया है और हमारे बस से यह बाहर नहीं है कि हम तुम्हारे जैसों को बदल दें और तुम्हें ऐसी हालत में उठा

1. अर्थात प्यास के रोगी ऊँट।

بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ عَلَىٰٓ أَن
نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۝
أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ۝ ءَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُۥٓ أَمْ
نَحْنُ الزَّٰرِعُونَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَٰهُ حُطَٰمًا
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۝ إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ۝ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُومُونَ ۝ أَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۝
ءَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ۝
لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنَٰهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝
أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۝ ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ
شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنشِـُٔونَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنَٰهَا
تَذْكِرَةً وَمَتَٰعًا لِّلْمُقْوِينَ ۝ فَسَبِّحْ بِٱسْمِ
رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝ فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوَٰقِعِ النُّجُومِ ۝

खड़ा करें जिसे तुम जानते नहीं।

62. तुम तो पहली पैदाइश को जान चुके हो, फिर तुम ध्यान क्यों नही देते ?

63 फिर क्या तुमने देखा जो कुछ तुम खेती करते हो ?

64. क्या उसे तुम उगाते हो या हम उसे उगाते हैं ?

65-67. यदि हम चाहें तो उसे चूर-चूर कर दें। फिर तुम बातें बनाते रह जाओ कि "हमपर उलटा डाँड़ पड़ गया, बल्कि हम वंचित होकर रह गए !"

68. फिर क्या तुमने उस पानी को देखा जिसे तुम पीते हो ?

69. क्या उसे बादलों से तुमने बरसाया या बरसानेवाले हम हैं ?

70. यदि हम चाहें तो उसे अत्यन्त खारा बनाकर रख दें। फिर तुम कृतज्ञता क्यों नहीं दिखाते ?

71. फिर क्या तुमने उस आग को देखा जिसे तुम सुलगाते हो ?

72. क्या तुमने उसके वृक्ष को पैदा किया है या पैदा करनेवाले हम हैं ?

73. हमने उसे एक अनुस्मृति और मरुभूमि के मुसाफ़िरों और ज़रूरतमन्दों के लिए लाभप्रद बनाया।

74. अतः तुम अपने महान रब के नाम की तसबीह करो।

75. अतः नहीं ! मैं क़सम खाता हूँ सितारों की स्थितियों की——

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۝ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ
كَرِيمٌ ۝ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ۝ لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا
الْمُطَهَّرُونَ ۝ تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝
أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ۝ وَتَجْعَلُونَ
رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ۝ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ
الْحُلْقُومَ ۝ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ۝ وَنَحْنُ
أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ۝ فَلَوْلَا
إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝ تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝ فَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝
فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝ وَأَمَّا إِن
كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ
أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝ وَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ
الضَّالِّينَ ۝ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةُ

76-77. और यह बहुत बड़ी गवाही है, यदि तुम जानो—निश्चय ही यह प्रतिष्ठित क़ुरआन है ।

78-79. एक सुरक्षित किताब में अंकित है । उसे केवल पाक-साफ़ व्यक्ति ही हाथ लगाते हैं ।

80-82. उसका अवतरण सारे संसार के रब की ओर से है । फिर क्या तुम उस वाणी के प्रति उपेक्षा दर्शाते हो ? और तुम इसको अपनी वृत्ति बना रहे हो कि झुठलाते हो ?

83-87. फिर ऐसा क्यों नहीं होता, जबकि प्राण कण्ठ को आ लगते हैं और उस समय तुम देख रहे होते हो—— और हम तुम्हारी अपेक्षा उससे अधिक निकट होते हैं । किन्तु तुम देखते नहीं——फिर ऐसा क्यों नहीं होता कि यदि तुम अधीन[1] नहीं हो तो उसे (प्राण को) लौटा लो, यदि तुम सच्चे हो ।

88. फिर यदि वह (अल्लाह के) निकटवर्तियों में से है;

89. तो (उसके लिए) आराम, सुख-सामग्री और सुगंध है, और नेमतवाला बाग़ है ।

90-91. और यदि वह भाग्यशालियों में से है, तो "सलाम है तुम्हें कि तुम सौभाग्यशालियों में से हो ।"

92. किन्तु यदि वह झुठलानेवालों, गुमराहों में से है;

93. तो उसका पहला सत्कार खौलते हुए पानी से होगा ।

94. फिर भड़कती हुई आग में उन्हें झोंका जाना है ।

---

1. अर्थात यदि तुम स्वतंत्र हो और तुम्हारा आख़िरत में कोई हिसाब-किताब होनेवाला नहीं है तो प्राण को क्यों जाने देते हो ? उसे रोक रखो ।

جَحِيمٍ ٩٤ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ٩٥ فَسَبِّحْ
بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ٩٦

سُورَةُ الْحَدِيدِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ١ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَ
يُمِيتُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٢ هُوَ الْأَوَّلُ
وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ٣ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا
يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ
مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ
مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ٤ لَهُ

95. निस्संदेह यही विश्वसनीय सत्य है।

96. अतः तुम अपने महान रब की तसबीह करो।

57. अल-हदीद

(मदीना में उतरी— आयतें 29)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह की हर उस चीज़ ने जो आकाशों और धरती में है। वही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

2. आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है। वही जीवन प्रदान करता है और मृत्यु देता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

3. वही आदि है और अन्त भी और वही व्यक्त है और अव्यक्त भी। और वह हर चीज़ को जानता है।

4. वही है जिसने आकाशों और धरती को छह दिनों में पैदा किया; फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। वह जानता है जो कुछ धरती में प्रवेश करता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। और तुम जहाँ कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ۝ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اٰمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ
فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ
كَبِيْرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ
يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى
عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَمَا
لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ
مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً

5. आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है और अल्लाह ही की ओर सारे मामले पलटते हैं।

6. वह रात को दिन में प्रविष्ट कराता है और दिन को रात में प्रविष्ट कराता है। वह सीनों में छिपी बात तक को जानता है।

7. ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और उसमें से ख़र्च करो जिसका उसने तुम्हें अधिकारी बनाया है। तो तुममें से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ख़र्च किया, उनके लिए बड़ा प्रतिदान है।

8. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते; जबकि रसूल तुम्हें निमंत्रण दे रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे दृढ़ वचन भी ले चुका है, यदि तुम मोमिन हो।

9. वही है जो अपने बन्दे पर स्पष्ट आयतें उतार रहा है, ताकि वह तुम्हें अंधकारों से प्रकाश की ओर ले आए। और वास्तविकता यह है कि अल्लाह तुमपर अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

10. और तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के मार्ग में ख़र्च न करो, हालाँकि आकाशों और धरती की विरासत अल्लाह ही के लिए है? तुममें से जिन लोगों ने विजय से पूर्व ख़र्च किया और लड़े वे परस्पर एक-दूसरे के समान नहीं हैं। वे तो दरजे में उनसे बढ़कर हैं जिन्होंने बाद में ख़र्च किया और लड़े। यद्यपि अल्लाह ने प्रत्येक से अच्छा वादा किया है। अल्लाह उसकी

खबर रखता है, जो कुछ तुम करते हो।

11. कौन है जो अल्लाह को ऋण दे, अच्छा ऋण कि वह उसे उसके लिए कई गुना कर दे। और उसके लिए सम्मानित प्रतिदान है।

12. जिस दिन तुम मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को देखोगे कि उनका प्रकाश उनके आगे-आगे दौड़ रहा है और उनके दाएँ हाथ में है। (कहा जाएगा :) "आज शुभ सूचना है तुम्हारे लिए ऐसी जन्नतों की जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें सदैव रहना है। वही बड़ी सफलता है।"

مِنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ۗ وَكُلًّا
وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝
مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ
لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ
بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ يَوْمَ
يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا
وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ
بَابٌ ۗ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ
الْعَذَابُ ۝ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى
وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ

13. जिस दिन कपटाचारी पुरुष और कपटाचारी स्त्रियाँ मोमिनों से कहेंगी: "तनिक हमारी प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे प्रकाश में से कुछ प्रकाश ले लें!" कहा जाएगा : "अपने पीछे लौट जाओ। फिर प्रकाश तलाश करो!" इतने में उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिसमें एक द्वार होगा। उसके भीतर का हाल यह होगा कि उसमें दयालुता होगी और उसके बाहर का यह कि उस ओर से यातना होगी।

14. वे उन्हें पुकारकर कहेंगे : "क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे?" वे कहेंगे : "क्यों नहीं? किन्तु तुमने तो अपने आपको फ़ितने (गुमराही) में डाला और प्रतीक्षा करते रहे और संदेह में पड़े रहे और कामनाओं ने तुम्हें धोखे में डाले

وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ
بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ
وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ هِيَ
مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ
وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۤ وَالشُّهَدَاۗءُ

रखा, यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया और धोखेबाज़ (शैतान) ने तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखे में डाले रखा है।

15. अब आज न तुमसे कोई फ़िदया (मुक्ति-प्रतिदान) लिया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने इनकार किया। तुम्हारा ठिकाना आग है, और वही तुम्हारी संरक्षिका है। और बहुत ही बुरी जगह है अन्त में पहुँचने की!"

16. क्या उन लोगों के लिए, जो ईमान लाए, अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिए और जो सत्य अवतरित हुआ है उसके लिए झुक जाएँ? और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें किताब दी गई थी, फिर उनपर दीर्घ समय बीत गया। अन्ततः उनके दिल कठोर हो गए और उनमें से अधिकांश अवज्ञाकारी ही रहे।

17. जान लो, अल्लाह धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवन प्रदान करता है। हमने तुम्हारे लिए आयतें खोल-खोलकर बयान कर दी हैं, ताकि तुम बुद्धि से काम लो।

18. निश्चय ही जो सदक़ा देनेवाले पुरुष और सदक़ा देनेवाली स्त्रियाँ हैं और उन्होंने अल्लाह को अच्छा ऋण दिया, उसे उनके लिए कई गुना कर दिया जाएगा। और उनके लिए सम्मानित प्रतिदान है।

19. जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए, वही अपने रब के यहाँ सिद्दीक़ और शहीद[1] हैं। उनके लिए उनका प्रतिदान और उनका प्रकाश

1. अर्थात अत्यन्त सच्चे और सत्य के साक्षी।

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ۖ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَحِيمِ ۝ اعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ
وَلَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۖ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ
نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ
حُطَامًا ۖ وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۙ وَمَغْفِرَةٌ
مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ
مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ ۙ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَ
رُسُلِهِ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ مَا أَصَابَ مِنْ

है। किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही भड़कती आगवाले हैं।

20. जान लो, सांसारिक जीवन तो बस एक खेल और तमाशा है और एक साज-सज्जा, और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर बड़ाई जताना, और धन और संतान में परस्पर एक-दूसरे से बढ़ा हुआ प्रदर्शित करना। वर्षा की मिसाल की तरह जिसकी वनस्पति ने किसान का दिल मोह लिया। फिर वह पक जाती है; फिर तुम उसे देखते हो कि वह पीली हो गई। फिर वह चूर्ण-विचूर्ण होकर रह जाती है, जबकि आख़िरत में कठोर यातना भी है और अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता भी। सांसारिक जीवन तो केवल धोखे की सुख-सामग्री है।

21. अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर अग्रसर होने में एक-दूसरे से बाज़ी ले जाओ, जिसका विस्तार आकाश और धरती के विस्तार जैसा है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हों। यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। अल्लाह बड़े उदार अनुग्रह का मालिक है।

22-23. जो मुसीबत भी धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, वह

مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا
فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ
وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَنْ يَتَوَلَّ
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا
رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ
وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنْزَلْنَا
الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَ
إِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ

अनिवार्यतः एक किताब में अंकित है, इससे पहले कि हम उसे अस्तित्व में लाएँ—निश्चय ही यह अल्लाह के लिए आसान है—(यह बात तुम्हें इसलिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। अल्लाह किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।

24. जो स्वयं कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी करने पर उकसाते हैं, और जो कोई मुँह मोड़े तो अल्लाह तो निस्पृह प्रशंसनीय है।

25. निश्चय ही हमने अपने रसूलों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला उतारी, ताकि लोग इनसाफ़ पर क़ायम हों। और लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ी दहशत है और लोगों के लिए कितने ही लाभ हैं, और (किताब एवं तुला इसलिए भी उतारी) ताकि अल्लाह जान ले[1] कि कौन परोक्ष में रहते हुए उसकी और उसके रसूलों की सहायता करता है। निश्चय ही अल्लाह शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली है।

26. हमने नूह और इबराहीम को भेजा और उन दोनों की संतति में पैग़म्बरी और किताब रख दी। फिर उनमें से किसी ने तो सन्मार्ग अपनाया; किन्तु उनमें

1. लोगों के समक्ष स्पष्ट कर दे।

से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

27. फिर उनके पीछे उन्हीं के पद-चिह्नों पर हमने अपने दूसरे रसूलों को भेजा और हमने उनके पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उसे इंजील प्रदान की। और जिन लोगों ने उसका अनुसरण किया, उनके दिलों में हमने करुणा और दया रख दी। रहा संन्यास, तो उसे उन्होंने स्वयं घड़ा था। हमने उसे उनके लिए अनिवार्य नहीं किया था, यदि अनिवार्य किया था तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता की चाहत। फिर वे उसका निर्वाह न कर सके, जैसा कि उनका निर्वाह करना चाहिए था। अतः उन लोगों को, जो उनमें से वास्तव में ईमान लाए थे, उनका बदला हमने (उन्हें) प्रदान किया। किन्तु उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी ही हैं।

فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ ثُمَّ
قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى
ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي
قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً ۖ وَرَهْبَانِيَّةً
ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ
اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۖ فَآتَيْنَا الَّذِينَ
آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا
تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ
مِّن فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ
مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

28. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह का डर रखो और उसके रसूल पर ईमान लाओ। वह तुम्हें अपनी दयालुता का दोहरा हिस्सा प्रदान करेगा और तुम्हारे लिए एक प्रकाश कर देगा, जिसमें तुम चलोगे और तुम्हें क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

29. ताकि किताबवाले यह न समझें कि अल्लाह के अनुग्रह में से वे[1] किसी चीज़ पर अधिकार न प्राप्त कर सकेंगे और यह कि अनुग्रह अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहता है प्रदान करता है।[2] अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है।

1. अर्थात हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के अनुयायी।
2. अर्थात अल्लाह के अनुग्रह पर उनका कोई अधिकार नहीं है। वह जिसे चाहता है, प्रदान करता है। अतएव यह वास्तविकता है कि उसने ईमानवालों पर अपना अनुग्रह किया है।



58. अल-मुजादला

(मदीना में उतरी—— आयतें 22)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह ने उस स्त्री की बात सुन ली जो अपने पति के विषय में तुमसे झगड़ रही है और अल्लाह से शिकायत किए जाती है। अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुन रहा है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, देखनेवाला है।

2. तुममें से जो लोग अपनी स्त्रियों से ज़िहार[1] करते हैं, उनकी माएँ वे नहीं हैं, उनकी माएँ तो वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया है। यह अवश्य है कि वे लोग एक अनुचित बात और झूट कहते हैं। और निश्चय ही अल्लाह टाल जानेवाला अत्यन्त क्षमाशील है।

3. जो लोग अपनी स्त्रियों से ज़िहार करते हैं; फिर जो बात उन्होंने कही थी उससे रुजू करते हैं, तो इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएँ एक गर्दन[2] आज़ाद करनी होगी। यह वह बात है जिसकी तुम्हें नसीहत की जाती है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

4. किन्तु जिस किसी को गुलाम प्राप्त न हो तो वह निरन्तर दो माह रोज़े रखे, इससे पहले कि वे दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएँ, और जिस किसी को इसकी भी सामर्थ्य न हो तो साठ मुहताजों को भोजन कराना होगा। यह इसलिए कि तुम

---

1. ज़िहार का अर्थ है किसी व्यक्ति का अपनी पत्नी से कह देना कि तू मेरे लिए ऐसी (हराम) है, जैसे मेरी माँ की पीठ।
2. अर्थात इसका प्रायश्चित यह है कि वह एक गुलाम आज़ाद करे।

اللهِ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ
اللهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ
اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۗ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۗ
اَحْصٰىهُ اللهُ وَنَسُوْهُ ۗ وَاللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ
اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ
مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ
اِنَّ اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا
عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ
بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۖ وَاِذَا جَآءُوْكَ
حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

अल्लाह और उसके रसूल पर ईमानवाले सिद्ध हो सको। ये अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ हैं। और इनकार करनेवालों के लिए दुखद यातना है।

5. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वे अपमानित और तिरस्कृत होकर रहेंगे, जैसे उनसे पहले के लोग अपमानित और तिरस्कृत हो चुके हैं। हमने स्पष्ट आयतें अवतरित कर दी हैं और इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना है।

6. जिस दिन अल्लाह उन सबको उठा खड़ा करेगा और जो कुछ उन्होंने किया होगा, उससे उन्हें अवगत करा देगा। अल्लाह ने उसकी गणना कर रखी है, और वे उसे भूले हुए हैं, और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है।

7. क्या तुमने इसको नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कभी ऐसा नहीं होता कि तीन आदमियों की गुप्त वार्ता हो और उनके बीच चौथा वह (अल्लाह) न हो। और न पाँच आदमियों की होती है जिसमें छठा वह न होता हो। और न इससे कम की कोई होती है और न इससे अधिक की भी, किन्तु वह उनके साथ होता है जहाँ कहीं भी वे हों; फिर जो कुछ भी उन्होंने किया होगा क़ियामत के दिन उससे वह उन्हें अवगत करा देगा। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

8. क्या तुमने उन्हें नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोका गया था, फिर वे वही करते रहे जिससे उन्हें रोका गया था। वे आपस में गुनाह और ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा की कानाफूसी करते हैं। और जब तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हारे प्रति अभिवादन के ऐसे शब्द प्रयोग में लाते हैं जो शब्द अल्लाह ने तुम्हारे लिए अभिवादन के लिए नहीं कहे। और अपने जी में कहते हैं : "जो

لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۚ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ
فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا
تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ
وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۝ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَاۗرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ
اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۭ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ
صَدَقَةً ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا

कुछ हम कहते हैं उसपर अल्लाह हमें यातना क्यों नहीं देता ?" उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है जिसमें वे प्रविष्ट होंगे। वह तो बहुत बुरी जगह है, अन्त में पहुँचने की !

9. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुम आपस में गुप्त वार्ता करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा की गुप्त वार्ता न करो, बल्कि नेकी और परहेज़गारी के विषय में आपस में एकान्त वार्ता करो। और अल्लाह का डर रखो, जिसके पास तुम इकट्ठे होगे।

10. वह कानाफूसी तो केवल शैतान की ओर से है[1], ताकि वह उन्हें ग़म में डाले जो ईमान लाए हैं। हालाँकि अल्लाह की अनुज्ञा के बिना उसे कुछ भी हानि पहुँचाने की सामर्थ्य प्राप्त नहीं। और ईमानवालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

11. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुमसे कहा जाए कि मजलिसों में जगह कुशादा कर दो, तो कुशादगी पैदा कर दो। अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा करेगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो। तुममें से जो लोग ईमान लाए हैं और जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है, अल्लाह उनके दरजों को उच्चता प्रदान करेगा। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

12. ऐ ईमान लानेवालो ! जब तुम रसूल से अकेले में बात करो तो अपनी गुप्त वार्ता से पहले सदक़ा दो। यह तुम्हारे लिए अच्छा और अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम अपने को इसमें असमर्थ पाओ, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा

---

1. अर्थात गुनाह, ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा के लिए की जानेवाली कानाफूसी।

क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है ।

13. क्या तुम इससे डर गए कि अपनी गुप्त वार्ता से पहले सदक़े दो? तो जब तुमने यह न किया[1] और अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया, तो नमाज़ क़ायम करो, ज़कात देते रहो और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो । और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है ।

14. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने ऐसे लोगों को मित्र बनाया जिनपर अल्लाह का प्रकोप हुआ है? वे न तुममें से हैं और न उनमें से । और वे जानते-बूझते झूठी बात पर क़सम खाते हैं ।

فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ
يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ
عَلَيْكُمْ فَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَأَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ مَا هُمْ مِّنْكُمْ
وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۗ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ لَنْ تُغْنِيَ
عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ
أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ
وَيَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ۗ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝

15. अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है । निश्चय ही बुरा है जो वे कर रहे हैं ।

16. उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है । अतः वे अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोकते हैं । तो उनके लिए रुसवा करनेवाली यातना है ।

17. अल्लाह से बचाने के लिए न उनके माल उनके कुछ काम आएँगे और न उनकी संतान । वे आगवाले हैं । उसी में वे सदैव रहेंगे ।

18. जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उसके सामने भी इसी तरह क़समें खाएँगे, जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं और समझते हैं कि वे किसी बुनियाद पर हैं । सावधान रहो, निश्चय ही वही झूठे हैं !

---

1. अर्थात इसके बावजूद कि निर्धन लोगों को सदक़ा देने से माफ़ रखा गया, तुमने तनहाई में वार्ता करने से परहेज़ किया, तो फिर अल्लाह भी तुम पर मेहरबान हो गया । अब तुम उचित- अनुचित का ध्यान रखो ।

اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنْسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ أُولَٰئِكَ حِزْبُ
الشَّيْطَانِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ۝
كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝
لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ
مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ
أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ
الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

سُورَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ

19. उनपर शैतान ने पूरी तरह अपना प्रभाव जमा लिया है। अत: उसने अल्लाह की याद को उनसे भुला दिया। वे शैतान की पार्टीवाले हैं। सावधान रहो शैतान की पार्टीवाले ही घाटे में रहनेवाले हैं!

20. निश्चय ही जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वे अत्यन्त अपमानित लोगों में से हैं।

21. अल्लाह ने लिख दिया है : "मैं और मेरे रसूल ही विजयी होकर रहेंगे।" निस्संदेह अल्लाह शक्तिमान, प्रभुत्वशाली है।

22. तुम उन लोगों को ऐसा कभी नहीं पाओगे जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं कि वे उन लोगो से प्रेम करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया, यद्यपि वे उनके अपने बाप हों या उनके अपने बेटे हों या उनके अपने भाई या उनके अपने परिवारवाले ही हों। वही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान को अंकित कर दिया है और अपनी ओर से एक आत्मा के द्वारा उन्हें शक्ति दी है। और उन्हें वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; जहाँ वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे भी उससे राज़ी हुए। वे अल्लाह की पार्टी के लोग हैं। सावधान रहो, निश्चय ही अल्लाह की पार्टीवाले ही सफल हैं।

59. अल-हश्र

(मदीना में उतरी— आयतें 24)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह की है हर उस चीज़ ने जो आकाशों और धरती में है,

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ هُوَ الَّذِيٓ أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
أَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ
يَّخْرُجُوا وَظَنُّوٓا أَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَأَتٰىهُمُ
اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا ۖ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ
الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ ۚ
فَاعْتَبِرُوا يٰٓأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ وَلَوْلَآ أَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ
الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْأٰخِرَةِ عَذَابُ
النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ ۖ وَمَنْ
يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ مَا قَطَعْتُمْ
مِّنْ لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ
اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِينَ ۝ وَمَآ أَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُولِهٖ
مِنْهُمْ فَمَآ أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ
وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى

और वही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

2. वही है जिसने किताबवालों में से उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, उनके घरों से पहले ही जमावड़े में निकाल बाहर किया। तुम्हें गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे समझते थे कि उनकी गढ़ियाँ अल्लाह से उन्हें बचा लेंगी। किन्तु अल्लाह उनपर वहाँ से आया जिसका उन्हें गुमान भी न था। और उसने उनके दिलों में रोब डाल दिया कि वे अपने घरों को स्वयं अपने हाथों और ईमानवालों के हाथों भी उजाड़ने लगे। अतः शिक्षा ग्रहण करो, ऐ दृष्टि रखनेवालो!

3. यदि अल्लाह ने उनके लिए देश निकाला न लिख दिया होता तो दुनिया में ही वह उन्हें अवश्य यातना दे देता, और आख़िरत में तो उनके लिए आग की यातना है ही।

4. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करने की कोशिश की। और जो कोई अल्लाह का मुक़ाबला करता है तो निश्चय ही अल्लाह की यातना बहुत कठोर है।

5. तुमने खजूर के जो वृक्ष काटे या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो यह अल्लाह ही की अनुज्ञा से हुआ (ताकि ईमानवालों के लिए आसानी पैदा करे) और इसलिए कि वह अवज्ञाकारियों को रुसवा करे।

6. और अल्लाह ने उनसे लेकर अपने रसूल की ओर जो कुछ पलटाया, उसके लिए न तो तुमने घोड़े दौड़ाए और न ऊँट।[1] किन्तु अल्लाह अपने रसूलों को जिसपर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है। अल्लाह को तो हर चीज़ की

1. अर्थात उनका जो माल तुम्हारे हाथ लगा उसके लिए तुम्हें कोई युद्ध नहीं करना पड़ा।

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَآ أَفَآءَ ٱللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ مِنْ أَهْلِ
ٱلْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَ
ٱلْمَسَٰكِينِ وَٱبْنِ ٱلسَّبِيلِ كَىْ لَا يَكُونَ دُولَةًۢ بَيْنَ
ٱلْأَغْنِيَآءِ مِنكُمْ ۚ وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ ۚ وَمَا
نَهَىٰكُمْ عَنْهُ فَٱنتَهُوا۟ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ
ٱلْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَآءِ ٱلْمُهَٰجِرِينَ ٱلَّذِينَ أُخْرِجُوا۟
مِن دِيَٰرِهِمْ وَأَمْوَٰلِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ ٱللَّهِ
وَرِضْوَٰنًا وَيَنصُرُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ
ٱلصَّٰدِقُونَ ۝ وَٱلَّذِينَ تَبَوَّءُو ٱلدَّارَ وَٱلْإِيمَٰنَ
مِن قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ
فِى صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ أُوتُوا۟ وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰٓ
أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَن يُوقَ شُحَّ
نَفْسِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ۝ وَٱلَّذِينَ جَآءُو

सामर्थ्य प्राप्त है।

7. जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल की ओर बस्तियोंवालों से लेकर पलटाया वह अल्लाह और रसूल और (मुहताज) नातेदार और अनाथों और मुहताजों और मुसाफ़िर के लिए है, ताकि वह (माल) तुम्हारे मालदारों ही के बीच चक्कर न लगाता रहे—रसूल जो कुछ तुम्हें दे उसे ले लो और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दे उससे रुक जाओ, और अल्लाह का डर रखो। निश्चय ही अल्लाह की यातना बहुत कठोर है।—

8. वह ग़रीब मुहाजिरों के लिए है, जो अपने घरों और अपने मालों से इस हालत में निकाल बाहर किए गए हैं कि वे अल्लाह का उदार अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता की तलाश में हैं और अल्लाह और उसके रसूल की सहायता कर रहे हैं, और वही वास्तव में सच्चे हैं।

9. और उनके लिए जो उनसे पहले ही से हिजरत के घर (मदीना) में ठिकाना बनाए हुए हैं और ईमान पर जमे हुए हैं, वे उनसे प्रेम करते हैं जो हिजरत करके उनके यहाँ आए हैं और जो कुछ भी उन्हें दिया गया उससे वे अपने सीनों में कोई खटक नहीं पाते और वे उन्हें अपने मुक़ाबले में प्राथमिकता देते हैं, यद्यपि अपनी जगह वे स्वयं मुहताज ही हों। और जो अपने मन के लोभ और कृपणता से बचा लिया जाए ऐसे ही लोग सफल हैं।

10. और (इस माल में उनका भी हिस्सा है) जो उनके बाद आए, वे कहते

مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا
غِلًّا لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ أَلَمْ
تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ
مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ
قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝
لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِن قُوتِلُوا لَا
يَنصُرُونَهُمْ وَلَئِن نَّصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا
يُنصَرُونَ ۝ لَأَنتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِم
مِّنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ۝ لَا
يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُّحَصَّنَةٍ أَوْ مِن
وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُم بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا

हैं : "ऐ हमारे रब ! हमें क्षमा कर दे और हमारे उन भाइयों को भी जो ईमानलाने में हमसे अग्रसर रहे और हमारे दिलों में ईमानवालों के लिए कोई विद्वेष न रख। ऐ हमारे रब ! तू निश्चय ही बड़ा करुणामय, अत्यन्त दयावान है।"

11. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने कपटाचार की नीति अपनाई है, वे अपने किताबवाले उन भाइयों से, जो इनकार की नीति अपनाए हुए हैं, कहते हैं : "यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी अवश्य ही तुम्हारे साथ निकल जाएँगे और तुम्हारे मामले में किसी की बात कभी भी नहीं मानेंगे। और यदि तुमसे युद्ध किया गया तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे।" किन्तु अल्लाह गवाही देता है कि वे बिलकुल झूठे हैं।

12. यदि वे निकाले गए तो वे उनके साथ नहीं निकलेंगे और यदि उनसे युद्ध हुआ तो वे उनकी सहायता कदापि न करेंगे और यदि उनकी सहायता करें भी तो पीठ फेर जाएँगे। फिर उन्हें कोई सहायता प्राप्त न होगी।

13. उनके दिलों में अल्लाह से बढ़कर तुम्हारा भय समाया हुआ है। यह इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

14. वे इकट्ठे होकर भी तुमसे (खुले मैदान में) नहीं लड़ेंगे, क़िलाबन्द बस्तियों या दीवारों के पीछे हों तो यह और बात है। उनकी आपस में सख़्त लड़ाई है। तुम उन्हें इकट्ठा समझते हो ! हालाँकि उनके दिल फटे हुए हैं। यह

وقلوبهم شتى ذلك بأنهم قوم لا يعقلون ۝
كمثل الذين من قبلهم قريبا ذاقوا وبال أمرهم
ولهم عذاب أليم ۝ كمثل الشيطن إذ قال
للإنسان اكفر فلما كفر قال إني بريء منك إني
أخاف الله رب العلمين ۝ فكان عاقبتهما أنهما في
النار خلدين فيها وذلك جزؤا الظلمين ۝
يأيها الذين ءامنوا اتقوا الله ولتنظر نفس
ما قدمت لغد واتقوا الله إن الله خبير بما
تعملون ۝ ولا تكونوا كالذين نسوا الله فأنسىهم
أنفسهم أولئك هم الفسقون ۝ لا يستوي
أصحب النار وأصحب الجنة أصحب الجنة هم
الفائزون ۝ لو أنزلنا هذا القرءان على جبل
لرأيته خشعا متصدعا من خشية الله

इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

15. उनकी हालत उन्हीं लोगों जैसी है जो उनसे पहले निकट काल में अपने किए के वबाल का मज़ा चख चुके हैं, और उनके लिए दुखद यातना भी है।

16. इनकी मिसाल शैतान जैसी है कि जब उसने मनुष्य से कहा : "कुफ़्र कर!" फिर जब वह कुफ़्र कर बैठा तो कहने लगा : "मैं तुम्हारी ज़िम्मेदारी से बरी हूँ। मैं तो सारे संसार के रब अल्लाह से डरता हूँ।"

17. फिर उन दोनों का परिणाम यह हुआ कि दोनों आग में गए, जहाँ सदैव रहेंगे। और ज़ालिमों का यही बदला है।

18. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो। और प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रखो। जो कुछ भी तुम करते हो निश्चय ही अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

19. और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया। तो उसने भी ऐसा किया कि वे स्वयं अपने आपको भूल बैठे। वही अवज्ञाकारी हैं।

20. आगवाले और बाग़वाले (जहन्नमवाले और जन्नतवाले) कभी समान नहीं हो सकते। बाग़वाले ही सफल हैं।

21. यदि हमने इस क़ुरआन को किसी पर्वत पर भी उतार दिया होता तो तुम अवश्य देखते कि अल्लाह के भय से वह दबा हुआ और फटा जाता है।

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ
عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ۝
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ
السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

سُورَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ
أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا
جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ ۙ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ

ये मिसालें लोगों के लिए हम इसलिए पेश करते हैं कि वे सोच-विचार करें।

22. वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानता है। वह बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

23. वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह बादशाह है अत्यन्त पवित्र, सर्वथा सलामती, निश्चिन्तता प्रदान करनेवाला, संरक्षक, प्रभुत्वशाली, प्रभावशाली (टूटे हुए को जोड़नेवाला), अपनी बड़ाई प्रकट करनेवाला। महान और उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे करते हैं।

24. वही अल्लाह है जो संरचना का प्रारूपक है, अस्तित्व प्रदान करनेवाला, रूप देनेवाला है। उसी के लिए अच्छे नाम हैं। जो चीज़ भी आकाशों और धरती में है, उसी की तसबीह कर रही है। और वह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

60. अल-मुम्तहिना

(मदीना में उतरी— आयतें 13)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ ईमान लानेवालो! यदि तुम मेरे मार्ग में जिहाद के लिए और मेरी प्रसन्नता की तलाश में निकले हो तो मेरे शत्रुओं और अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ कि उनके प्रति प्रेम दिखाओ, जबकि तुम्हारे पास जो सत्य आया है

اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۗ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ
سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۗ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ
وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ۗ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ
يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ
وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ
اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۗ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا
لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ
اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ

उसका वे इनकार कर चुके हैं। वे रसूल को और तुम्हें इसलिए निर्वासित करते हैं कि तुम अपने रब—— अल्लाह पर ईमान लाए हो। तुम गुप्त रूप से उनसे मित्रता की बातें करते हो। हालाँकि मैं भली-भाँति जानता हूँ जो कुछ तुम छिपाते हो और व्यक्त करते हो। और जो कोई भी तुममें से ऐसा करेगा वह संमार्ग से भटक गया।

2. यदि वे तुम्हें पा जाएँ तो तुम्हारे शत्रु हो जाएँ और कष्ट पहुँचाने के लिए तुमपर हाथ और ज़बान चलाएँ। वे तो चाहते हैं कि काश! तुम भी इनकार करनेवाले हो जाओ।

3. क़ियामत के दिन तुम्हारी नातेदारियाँ कदापि तुम्हें लाभ न पहुँचाएँगी और न तुम्हारी सन्तान ही। उस दिन वह (अल्लाह) तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा। जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा होता है।

4. तुम लोगों के लिए इबराहीम में और उन लोगों में जो उसके साथ थे अच्छा आदर्श है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कह दिया कि "हम तुमसे और अल्लाह से हटकर जिन्हें तुम पूजते हो उनसे विरक्त हैं। हमने तुम्हारा इनकार किया और हमारे और तुम्हारे बीच सदैव के लिए वैर और विद्वेष प्रकट हो चुका, जब तक अकेले अल्लाह पर तुम ईमान न लाओ।" इबराहीम का अपने बाप से यह कहना अपवाद है कि "मैं आपके लिए क्षमा की

أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۖ رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا
وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ۚ وَمَن يَتَوَلَّ
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَن يَجْعَلَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً ۚ وَاللَّهُ
قَدِيرٌ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ لَّا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ
الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم
مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ
الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن
دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ

प्रार्थना अवश्य करूँगा, यद्यपि अल्लाह के मुक़ाबले में आपके लिए मैं किसी चीज़ पर अधिकार नहीं रखता।" "ऐ हमारे रब! हमने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही ओर रुजू हुए और तेरी ही ओर अन्त में लौटना है।

5. ऐ हमारे रब! हमें इनकार करनेवालों के लिए फ़ितना न बना और ऐ हमारे रब! हमें क्षमा कर दे। निश्चय ही तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।"

6. निश्चय ही तुम्हारे लिए उनमें अच्छा आदर्श है और हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो। और जो कोई मुँह फेरे तो अल्लाह तो निस्पृह, अपने आप में स्वयं प्रशंसित है।

7. आशा है कि अल्लाह तुम्हारे और उनके बीच, जिनसे तुमने शत्रुता मोल ली है, प्रेम-भाव उत्पन्न कर दे। अल्लाह बड़ी सामर्थ्य रखता है और अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

8. अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के मामले में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला। निस्संदेह अल्लाह न्याय करनेवालों को पसन्द करता है।

9. अल्लाह तो तुम्हें केवल उन लोगों से मित्रता करने से रोकता है जिन्होंने धर्म के मामले में तुमसे युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला और तुम्हारे निकाले जाने के सम्बन्ध में सहायता की। जो लोग उनसे मित्रता

وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ
فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ
مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ
لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ؕ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ
اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۞ وَاِنْ فَاتَكُمْ
شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا
الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ؕ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا
جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ

करें वही ज़ालिम हैं।

10. ऐ ईमान लानेवालो! जब तुम्हारे पास ईमान की दावेदार स्त्रियाँ हिजरत करके आएँ तो तुम उन्हें जाँच लिया करो। यूँ तो अल्लाह उनके ईमान से भली-भाँति परिचित है। फिर यदि वे तुम्हें ईमानवाली मालूम हों, तो उन्हें इनकार करनेवालों (अधर्मियों) की ओर न लौटाओ। न तो वे स्त्रियाँ उनके लिए वैध हैं और न वे उन स्त्रियों के लिए वैध हैं। और जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया हो तुम उन्हें दे दो[1] और इसमें तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि तुम उनसे विवाह कर लो, जबकि तुम उन्हें उनके महर अदा कर दो। और तुम स्वयं भी इनकार करनेवाली स्त्रियों के सतीत्व को अपने अधिकार में न रखो।[2] और जो कुछ तुमने ख़र्च किया हो माँग लो। और उन्हें भी चाहिए कि जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया हो माँग लें। यह अल्लाह का आदेश है। वह तुम्हारे बीच फ़ैसला करता है। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

11. और यदि तुम्हारी पत्नियों (के महरों) में से कुछ तुम्हारे हाथ से निकल जाए और इनकार करनेवालों (अधर्मियों) की ओर रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए[3] तो जिन लोगों की पत्नियाँ चली गई हैं, उन्हें जितना उन्होंने ख़र्च किया हो दे दो। और अल्लाह का डर रखो, जिसपर तुम ईमान रखते हो।

12. ऐ नबी! जब तुम्हारे पास ईमानवाली स्त्रियाँ आकर तुमसे इसपर 'बैअत' करें कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराएँगी और न चोरी

---

1. अर्थात उन स्त्रियों पर उनके अधर्मी पतियों ने जो ख़र्च किया हो तुम उन्हें लौटा दो।
2. अर्थात उन्हें अपने विवाह-संबंध में न रखो।
3. अर्थात जब हमले के परिणामस्वरूप तुम्हें उनपर प्रभुत्त्व प्राप्त हो।


بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ
اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ
وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ
اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَىِٕسُوْا
مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَىِٕسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ۝

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝ وَاِذْ

करेंगी और न व्यभिचार करेंगी, और न अपनी औलाद की हत्या करेंगी और न अपने हाथों और पैरों के बीच कोई आरोप घड़कर लाएँगी, और न किसी भले काम में तुम्हारी अवज्ञा करेंगी, तो उनसे 'बैअत' ले लो और उनके लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

13. ऐ ईमान लानेवालो ! ऐसे लोगों से मित्रता न करो जिनपर अल्लाह का प्रकोप हुआ, वे आख़िरत से निराश हो चुके हैं, जिस प्रकार इनकार करनेवाले क़ब्रवालों से निराश हो चुके हैं।

61. अस-सफ़्फ़

(मदीना में उतरी— आयतें 14)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह की हर उस चीज़ ने जो आकाशों और धरती में है। वही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

2. ऐ ईमान लानेवालो ! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं ?

3. अल्लाह के यहाँ यह अत्यन्त अप्रिय बात है कि तुम वह बात कहो, जो करो नहीं।

4. अल्लाह तो उन लोगों से प्रेम रखता है जो उसके मार्ग में पंक्तिबद्ध होकर लड़ते हैं मानो वे सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।

5. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : "ऐ मेरी

क़ौम के लोगो ! तुम मुझे क्यों दुख देते हो, हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ ?" फिर जब उन्होंने टेढ़ अपनाई तो अल्लाह ने भी उनके दिल टेढ़े कर दिए। अल्लाह अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

6. और याद करो जबकि मरयम के बेटे ईसा ने कहा : "ऐ इसराईल की संतान ! मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ। मैं तौरात की (उस भविष्यवाणी की) पुष्टि करता हूँ जो मुझसे पहले से विद्यमान है और एक रसूल की शुभ सूचना देता हूँ जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा।" किन्तु वह जब उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया तो उन्होंने कहा : "यह तो खुला जादू है।"

قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ
اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۭ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ
قُلُوْبَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَاِذْ
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اِنِّىْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۭ
فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى
اِلَى الْاِسْلَامِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔـوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ
مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ
رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَي
الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

7. अब उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर थोपकर झूठ घड़े जबकि उसे इस्लाम (अल्लाह के आगे समर्पण करने) की ओर बुलाया जा रहा हो ? अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता।

8. वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह की फूँक से बुझा दें, किन्तु अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण करके ही रहेगा, यद्यपि इनकार करनेवालों को अप्रिय ही लगे।

9. वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा, ताकि उसे पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, यद्यपि बहुदेववादियों को अप्रिय ही लगे।

10. ऐ ईमान लानेवालो ! क्या मैं तुम्हें एक ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुम्हें

اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ
اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ
وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَ
مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ
قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ
وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى
عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝

दुखद यातना से बचा ले?

11. तुम्हें ईमान लाना है अल्लाह और उसके रसूल पर, और जिहाद करना है अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से। यही तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम जानो।

12. वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और उन अच्छे घरों में भी जो सदाबहार बाग़ों में होंगे। यही बड़ी सफलता है।

13. और दूसरी चीज़ भी जो तुम्हें प्रिय है (प्रदान करेगा) : "अल्लाह की ओर से सहायता और निकट प्राप्त होनेवाली विजय ;" ईमानवालों को शुभसूचना दे दो!

14. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह के सहायक बनो, जैसा कि मरयम के बेटे ईसा ने हवारियों (साथियों) से कहा था : "कौन हैं अल्लाह की ओर (बुलाने में) मेरे सहायक?" हवारियों ने कहा : "हम हैं अल्लाह के सहायक।" फिर इसराईल की संतान में से एक गिरोह ईमान ले आया और एक गिरोह ने इनकार किया। अत: हमने उन लोगों को, जो ईमान लाए थे, उनके अपने शत्रुओं के मुक़ाबले में शक्ति प्रदान की, तो वे छाकर रहे।

سورة الجمعة مدنية

بسم الله الرحمن الرحيم

يسبح لله ما في السموت وما في الأرض الملك
القدوس العزيز الحكيم ۝ هو الذي بعث في
الأميين رسولا منهم يتلوا عليهم ءايته ويزكيهم
ويعلمهم الكتب والحكمة وإن كانوا من قبل
لفي ضلل مبين ۝ وءاخرين منهم لما يلحقوا بهم
وهو العزيز الحكيم ۝ ذلك فضل الله يؤتيه
من يشاء والله ذو الفضل العظيم ۝ مثل
الذين حملوا التورىة ثم لم يحملوها كمثل الحمار
يحمل أسفارا بئس مثل القوم الذين كذبوا
بايت الله والله لا يهدي القوم الظلمين ۝
قل يأيها الذين هادوا إن زعمتم أنكم أولياء

62. अल-जुमुआ

(मदीना में उतरी — आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह कर रही है हर वह चीज़ जो आकाशों में है और जो धरती में है, जो सम्राट है अत्यन्त पवित्र, प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी।

2. वही है जिसने उम्मियों में उन्हीं में से एक रसूल उठाया जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें निखारता है और उन्हें किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, यद्यपि इससे पहले तो वे खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे,

3. और उन दूसरे लोगों को भी (किताब और हिकमत की शिक्षा दे) जो अभी उनसे मिले नहीं हैं, वे उन्हीं में से होंगे।[1] और वही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

4. यह अल्लाह का उदार अनुग्रह है, जिसको चाहता है उसे प्रदान करता है। अल्लाह बड़े अनुग्रह का मालिक है।

5. जिन लोगों पर तौरात का बोझ डाला गया, किन्तु उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की-सी है जो किताबें लादे हुए हो। बहुत ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया। अल्लाह ज़ालिमों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता।

6. कह दो : "ऐ लोगो, जो यहूदी हुए हो! यदि तुम्हें यह गुमान है कि

---

1. अर्थात जो लोग सहाबा (रज़ि॰) के बाद होंगे वे भी आप ही की शिक्षा से फ़ायदा उठाएँगे। आपके बाद कोई नबी नहीं होगा।

لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۭ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ
تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ
الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ
الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ
اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا
رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ
قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ
التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

सारे मनुष्यों को छोड़कर तुम ही अल्लाह के प्रेमपात्र हो तो मृत्यु की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो।"

7. किन्तु वे कभी भी उसकी कामना न करेंगे, उस (कर्म) के कारण जो उनके हाथों ने आगे भेजा है। अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।

8. कह दो : "मृत्यु जिससे तुम भागते हो, वह तो तुम्हें मिलकर रहेगी, फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे जो छिपे और खुले का जाननेवाला है। और वह तुम्हें उससे अवगत करा देगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।"——

9. ऐ ईमान लानेवालो, जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की ओर दौड़ पड़ो और क्रय-विक्रय छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम जानो।

10. फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह का उदार अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम सफल हो।——

11. किन्तु जब वे व्यापार और खेल-तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर टूट पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ देते हैं। कह दो : "जो कुछ अल्लाह के पास है वह तमाशे और व्यापार से कहीं अच्छा है। और अल्लाह सबसे अच्छा आजीविका प्रदान करनेवाला है।"


سورة المنافقون مدنية
بسم الله الرحمن الرحيم
إذا جاءك المنافقون قالوا نشهد إنك لرسول الله ۘ والله يعلم إنك لرسوله ۗ والله يشهد إن المنافقين لكاذبون ۝ اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله ۚ إنهم ساء ما كانوا يعملون ۝ ذلك بأنهم آمنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون ۝ وإذا رأيتهم تعجبك أجسامهم ۖ وإن يقولوا تسمع لقولهم ۖ كأنهم خشب مسندة ۖ يحسبون كل صيحة عليهم ۚ هم العدو فاحذرهم ۚ قاتلهم الله ۖ أنى يؤفكون ۝ وإذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رءوسهم ورأيتهم يصدون وهم مستكبرون ۝

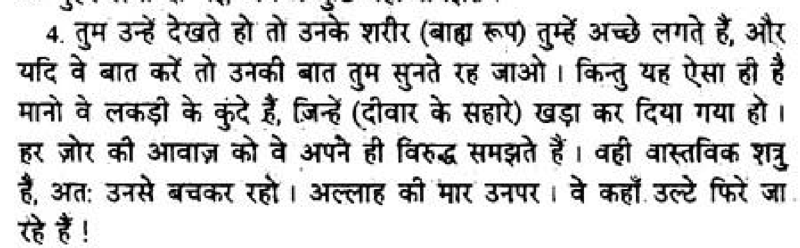
63. अल-मुनाफ़िक़ून

(मदीना में उतरी— आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील अत्यन्त दयावान है।

1. जब मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं "हम गवाही देते हैं कि निश्चय ही आप अल्लाह के रसूल हैं।" अल्लाह जानता है कि निस्संदेह तुम उसके रसूल हो, किन्तु अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ बिलकुल झूठे हैं।

2. उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है, इस प्रकार वे अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। निश्चय ही बुरा है जो वे कर रहे हैं।



3. यह इस कारण कि वे ईमान लाए, फिर इनकार किया, अत: उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, अब वे कुछ नहीं समझते।

4. तुम उन्हें देखते हो तो उनके शरीर (बाह्य रूप) तुम्हें अच्छे लगते हैं, और यदि वे बात करें तो उनकी बात तुम सुनते रह जाओ। किन्तु यह ऐसा ही है मानो वे लकड़ी के कुंदे हैं, जिन्हें (दीवार के सहारे) खड़ा कर दिया गया हो। हर ज़ोर की आवाज़ को वे अपने ही विरुद्ध समझते हैं। वही वास्तविक शत्रु हैं, अत: उनसे बचकर रहो। अल्लाह की मार उनपर। वे कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हैं!

5. और जब उनसे कहा जाता है : "आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करे।" तो वे अपने सिर मटकाते हैं और तुम देखते हो कि घमण्ड के साथ खिंचे रहते हैं।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ
لَهُمْ ۚ لَنْ يَغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا
عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ۚ وَلِلّٰهِ
خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا
يَفْقَهُوْنَ ۝ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ إِلَى الْمَدِيْنَةِ
لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ يٰٓأَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَآ أَوْلَادُكُمْ
عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَأَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ
قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ
أَخَّرْتَنِيْ إِلٰٓى أَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنْ مِّنَ

6. उनके लिए बराबर है चाहे तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या उनके लिए क्षमा की प्रार्थना न करो। अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा न करेगा। निश्चय ही अल्लाह अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता।

7. वे वही लोग हैं जो कहते हैं : "उन लोगों पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास रहनेवाले है, ताकि वे तितर-बितर हो जाएँ।" हालाँकि आकाशों और धरती के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, किन्तु वे मुनाफ़िक़ समझते नहीं।

8. वे कहते हैं : "यदि हम मदीना लौटकर गए तो जो अधिक शक्तिवाला है, वह हीनतर (व्यक्तियों) को वहाँ से निकाल बाहर करेगा।" हालाँकि शक्ति अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के लिए है, किन्तु वे मुनाफ़िक़ जानते नहीं।

9. ऐ ईमान लानेवालो ! तुम्हारे माल तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी संतान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं।

10. हमने तुम्हें जो कुछ दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी की मृत्यु आ जाए और उस समय वह कहने लगे : "ऐ मेरे रब ! तूने मुझे कुछ थोड़े समय तक और मुहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा (दान) करता (मुझे



मुहलत दे कि मैं सदक़ा करूँ) और अच्छे लोगों में सम्मिलित हो जाऊँ।"

11. किन्तु अल्लाह, किसी व्यक्ति को जब उसका नियत समय आ जाता है, कदापि मुहलत नहीं देता। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

64. अत-तग़ाबुन

(मदीना में उतरी— आयतें 18)

अल्लाह के नाम से, जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. अल्लाह की तसबीह कर रही है हर वह चीज़ जो आकाशों में है और जो धरती में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए प्रशंसा है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

2. वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुममें से कोई तो इनकार करनेवाला है और तुममें से कोई ईमानवाला है, और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा होता है।

3. उसने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया और तुम्हारा रूप बनाया, तो बहुत ही अच्छे बनाए तुम्हारे रूप और उसी की ओर अन्ततः जाना है।

4. वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है और उसे भी जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो। अल्लाह तो सीनों में छिपी बात तक को जानता है।

5. क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहले इनकार किया था, फिर उन्होंने अपने कर्म के वबाल का मज़ा चखा और उनके लिए

أليم ﴿٥﴾ ذلك بأنه كانت تأتيهم رسلهم
بالبينت فقالوا أبشر يهدوننا فكفروا و
تولوا واستغنى الله ۚ والله غني حميد ﴿٦﴾ زعم
الذين كفروا أن لن يبعثوا ۚ قل بلى وربي
لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم ۚ وذلك على
الله يسير ﴿٧﴾ فآمنوا بالله ورسوله والنور الذي
أنزلنا ۚ والله بما تعملون خبير ﴿٨﴾ يوم يجمعكم
ليوم الجمع ذلك يوم التغابن ۗ ومن يؤمن
بالله ويعمل صالحا يكفر عنه سيئاته
ويدخله جنت تجري من تحتها الأنهر
خلدين فيها أبدا ۚ ذلك الفوز العظيم ﴿٩﴾ و
الذين كفروا وكذبوا بآيتنا أولئك أصحب
النار خلدين فيها ۖ وبئس المصير ﴿١٠﴾ ما أصاب

एक दुखद यातना भी है।

6. यह इस कारण कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आते रहे, किन्तु उन्होंने कहा : "क्या मनुष्य हमें मार्ग दिखाएँगे ?" इस प्रकार उन्होंने इनकार किया और मुँह फेर लिया, तब अल्लाह भी उनसे बेपरवाह हो गया। अल्लाह तो है ही निस्पृह, अपने आपमें स्वयं प्रशंसित।

7. जिन लोगों ने इनकार किया, उन्होंने दावा किया कि वे मरने के पश्चात कदापि न उठाए जाएँगे। कह दो : "क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम ! तुम अवश्य उठाए जाओगे, फिर जो कुछ तुमने किया है उससे तुम्हें अवगत करा दिया जाएगा। और अल्लाह के लिए यह अत्यन्त सरल है।"

8. अत: ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस प्रकाश पर जिसे हमने अवतरित किया है। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

9. इकट्ठा होने के दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा, वह परस्पर लाभ-हानि का दिन होगा। जो भी अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा कर्म करे उसकी बुराइयाँ अल्लाह उससे दूर कर देगा और उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।

10. रहे वे लोग जिन्होने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही आगवाले हैं जिसमें वे सदैव रहेंगे। अन्ततः लौटकर पहुँचने की वह बहुत ही बुरी जगह है।

11. अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई भी मुसीबत नहीं आती। जो अल्लाह

مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ
يَهْدِ قَلْبَهٗ ۚ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا
عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا
لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ
اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝
فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا
وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اِنْ تُقْرِضُوا
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ

पर ईमान ले आए अल्लाह उसके दिल को मार्ग दिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है।

12. अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो, किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो हमारे रसूल पर बस स्पष्ट रूप से (संदेश) पहुँचा देने ही की ज़िम्मेदारी है।

13. अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए।

14. ऐ ईमान लानेवालो, तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी संतान में से कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारे शत्रु हैं। अतः उनसे होशियार रहो। और यदि तुम माफ़ कर दो और टाल जाओ और क्षमा कर दो तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

15. तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान तो केवल एक आज़माइश है, और अल्लाह ही है जिसके पास बड़ा प्रतिदान है।

16. अतः जहाँ तक तुम्हारे बस में हो अल्लाह का डर रखो और सुनो और आज्ञापालन करो और ख़र्च करो अपनी भलाई के लिए। और जो अपने मन के लोभ एवं कृपणता से सुरक्षित रहा तो ऐसे ही लोग सफल हैं।

17. यदि तुम अल्लाह को अच्छा ऋण दो तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना



बढ़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा गुणग्राहक और सहनशील है,

18. परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानता है, प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

65. अत-तलाक़

(मदीना में उतरी—— आयतें 12)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ नबी! जब तुम लोग स्त्रियों को तलाक़ दो तो उन्हें तलाक़ उनकी इद्दत के हिसाब से दो। और इद्दत की गणना करो और अल्लाह का डर रखो, जो तुम्हारा रब है। उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वे स्वयं निकलें, सिवाय इसके कि वे कोई स्पष्ट अशोभनीय कर्म कर बैठें। ये अल्लाह की नियत की हुई सीमाएँ हैं—— और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो उसने स्वयं अपने आपपर ज़ुल्म किया—— तुम नहीं जानते, कदाचित इस (तलाक़) के पश्चात अल्लाह कोई सूरत पैदा कर दे।[1]

2. फिर जब वे अपनी नियत इद्दत को पहुँचें तो या तो उन्हें भली रीति से रोक लो या भली रीति से अलग कर दो। और अपने में से दो न्यायप्रिय आदमियों को गवाह बना लो और अल्लाह के लिए गवाही को दुरुस्त रखो।

---

1. अर्थात मेल-मिलाप की कोई सूरत पैदा कर दे।

الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۚ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۚ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ
قَدْرًا ۝ وَالّٰٓئِيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ
اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓئِيْ لَمْ
يَحِضْنَ ۚ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ
يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ
مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗ
اِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ
وَيُعْظِمْ لَهٗ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ
سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا

इसकी नसीहत उस व्यक्ति को की जाती है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता हो। जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उसके लिए वह (परेशानी से) निकलने की राह पैदा कर देगा।

3. और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है। अल्लाह ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा नियत कर रखा है।

4. और तुम्हारी स्त्रियों में से जो मासिक धर्म से निराश हो चुकी हों, यदि तुम्हें संदेह हो तो उनकी इद्दत तीन मास है और इसी प्रकार उनकी भी जो अभी रजस्वला नहीं हुईं। और जो गर्भवती स्त्रियाँ हों उनकी इद्दत उनके शिशु-प्रसव तक है। जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उसके मामले में वह आसानी पैदा कर देगा।

5. यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है। और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उससे वह उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसके प्रतिदान को बड़ा कर देगा।

6. अपनी हैसियत के अनुसार जहाँ तुम स्वयं रहते हो उन्हें भी उसी जगह रखो। और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें हानि न पहुँचाओ। और यदि वे

عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ
حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ
أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ۝ لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ
مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ
مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ
سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝ وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ
عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا
شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝ فَذَاقَتْ
وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۝
أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا
اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ
قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝ رَّسُولًا يَتْلُو

गर्भवती हों तो उनपर ख़र्च करते रहो जब तक कि उनका शिशु-प्रसव न हो जाए। फिर यदि वे तुम्हारे लिए (शिशु को) दूध पिलाएँ तो तुम उन्हें उनका पारिश्रमिक दो और आपस में भली रीति से परस्पर बातचीत के द्वारा कोई बात तय कर लो। और यदि तुम दोनों में कोई कठिनाई हो तो फिर कोई दूसरी स्त्री उसके लिए दूध पिला देगी।

7. चाहिए कि समाई (सामर्थ्य) वाला अपनी समाई के अनुसार ख़र्च करे और जिसे उसकी रोज़ी नपी-तुली मिली हो तो उसे चाहिए कि अल्लाह ने उसे जो कुछ भी दिया है उसी में से वह ख़र्च करे। जितना कुछ दिया है उससे बढ़कर अल्लाह किसी व्यक्ति पर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता। जल्द ही अल्लाह कठिनाई के बाद आसानी पैदा कर देगा।

8. कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के आदेश के मुक़ाबले में सरकशी की, तो हमने उनकी सख़्त पकड़ की और उन्हें बुरी यातना दी।

9. अतः उन्होंने अपने किए के वबाल का मज़ा चख लिया और उनकी कार्य-नीति का परिणाम घाटा ही रहा।

10. अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है। अतः ऐ बुद्धि और समझवालो जो ईमान लाए हो! अल्लाह का डर रखो। अल्लाह ने तुम्हारी ओर एक याददिहानी उतार दी है।

11. (अर्थात) एक रसूल, जो तुम्हें अल्लाह की स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाता



है, ताकि वह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, अँधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले आए। जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, उसे वह ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी—ऐसे लोग उनमें सदैव रहेंगे— अल्लाह ने उनके लिए उत्तम रोज़ी रखी है।

12. अल्लाह ही है जिसने सात आकाश बनाए और उन्ही के सदृश धरती से भी।[1] उनके बीच (उसका) आदेश उतरता रहता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है और यह कि अल्लाह हर चीज़ को अपनी ज्ञान-परिधि में लिए हुए है

66. अत-तहरीम

(मदीना में उतरी— आयतें 12)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ नबी ! जिस चीज़ को अल्लाह ने तुम्हारे लिए वैध ठहराया है उसे

---

1. अर्थात आकाशों जैसे पहाड़।

تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَ
إِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا ۚ
فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ
بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَن بَعْضٍ ۖ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ
قَالَتْ مَنْ أَنبَأَكَ هَٰذَا ۖ قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ
الْخَبِيرُ ۝ إِن تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوبُكُمَا ۖ وَإِن تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ
مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ
بَعْدَ ذَٰلِكَ ظَهِيرٌ ۝ عَسَىٰ رَبُّهُ إِن طَلَّقَكُنَّ
أَن يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنكُنَّ مُسْلِمَاتٍ
مُّؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ

तुम अपनी पत्नियों की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए क्यों अवैध करते हो ? अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है ।

2. अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी अपनी क़समों की पाबदी से निकलने का उपाय निश्चित कर दिया है। अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है और वही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है ।

3. जब नबी ने अपनी पत्नियों में से किसी से एक गोपनीय बात कही, फिर जब उसने उसकी ख़बर कर दी और अल्लाह ने उसे उसपर[1] ज़ाहिर कर दिया, तो उसने उसे किसी हद तक बता दिया और किसी हद तक उसे टाल गया । फिर जब उसने उसकी उसे ख़बर की तो वह बोली : "आपको इसकी ख़बर किसने दी ?" उसने कहा : "मुझे उसने ख़बर दी जो सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है ।"

4. यदि तुम दोनों[2] अल्लाह की ओर रुजू हो तो तुम्हारे दिल तो झुक ही चुके हैं, किन्तु यदि तुम उसके विरुद्ध एक-दूसरे की सहायता करोगी तो अल्लाह उसका संरक्षक है, और जिबरील और नेक ईमानवाले भी, और इसके बाद फ़रिश्ते भी उसके सहायक हैं ।

5. इसकी बहुत संभावना है कि यदि वह तुम्हें तलाक़ दे दे तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे अच्छी पत्नियाँ उसे प्रदान करे—— मुस्लिम, ईमानवाली, आज्ञाकारिणी, तौबा करनेवाली, इबादत करनेवाली, (अल्लाह के मार्ग में) सफ़र

1. अर्थात अपने नबी पर ।
2. संकेत नबी (सल्ल०) की दो पत्नियों की ओर है ।

करनेवाली, विवाहिता और कुँवारियाँ भी।

6. ऐ ईमान लानेवालो! अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जिसपर कठोर स्वभाव के ऐसे बलशाली फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो अल्लाह की अवज्ञा उसमें नहीं करेंगे जो आदेश भी वह उन्हें देगा, और वे वही करेंगे जिसका उन्हें आदेश दिया जाएगा।

7. ऐ इनकार करनेवालो! आज उज़्र पेश न करो। तुम्हें बदले में वही तो दिया जा रहा है जो कुछ तुम करते रहे हो।

ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا
يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا
الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً
نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا
نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

8. ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह के आगे तौबा करो, विशुद्ध तौबा। बहुत संभव है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उनको जो ईमान लाकर उसके साथ हुए, रुसवा न करेगा। उनका प्रकाश उनके आगे-आगे दौड़ रहा होगा और उनके दाहिने हाथ में होगा। वे कह रहे होंगे : "ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारे प्रकाश को पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर। निश्चय ही तू हर चीज़ की सामार्थ्य रखता है।"

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ
وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ
ٱلْمَصِيرُ ۝ ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱمْرَأَتَ
نُوحٍ وَٱمْرَأَتَ لُوطٍ ۖ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ
عِبَادِنَا صَٰلِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
عَنْهُمَا مِنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا وَقِيلَ ٱدْخُلَا ٱلنَّارَ
مَعَ ٱلدَّٰخِلِينَ ۝ وَضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ
ءَامَنُوا۟ ٱمْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ٱبْنِ
لِى عِندَكَ بَيْتًا فِى ٱلْجَنَّةِ وَنَجِّنِى مِن
فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِۦ وَنَجِّنِى مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝
وَمَرْيَمَ ٱبْنَتَ عِمْرَٰنَ ٱلَّتِىٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَٰتِ
رَبِّهَا وَكُتُبِهِۦ وَكَانَتْ مِنَ ٱلْقَٰنِتِينَ ۝

9. ऐ नबी ! इनकार करनेवालों और कपटाचारियों से जिहाद करो और उनके साथ सख़्ती से पेश आओ। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह अन्ततः पहुँचने की बहुत बुरी जगह है।

10. अल्लाह ने इनकार करनेवालों के लिए नूह की स्त्री और लूत की स्त्री की मिसाल पेश की है। वे हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के अधीन थीं। किन्तु उन दोनों स्त्रियों ने उनसे विश्वासघात किया[1] तो वे अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके और कह दिया गया : "प्रवेश करनेवालों के साथ दोनों आग में प्रविष्ट हो जाओ।"

11. और ईमान लानेवालों के लिए अल्लाह ने फ़िरऔन की स्त्री की मिसाल पेश की है, जबकि उसने कहा : "ऐ मेरे रब ! तू मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे फ़िरऔन और उसके कर्म से छुटकारा दे, और छुटकारा दे मुझे ज़ालिम लोगों से।"

12. और इमरान की बेटी मरयम की मिसाल पेश की है जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की थी, फिर हमने उस स्त्री के भीतर अपनी रूह फूँक दी और उसने अपने रब के बोलों और उसकी किताबों की पुष्टि की और वह भक्ति-प्रवृत आज्ञाकारियों में से थी।

1. अर्थात धर्म के मामले में उनका साथ न दिया।

67. अल-मुल्क

(मक्का में उतरी—— आयतें 30)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।


سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرُ ۙ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ
اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ الَّذِيْ
خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۗ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ
مِنْ تَفٰوُتٍ ۗ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝
ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ
خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا
بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ
جَهَنَّمَ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا
لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۙ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۗ

1. बड़ा बरकतवाला है वह जिसके हाथ में सारी बादशाही है और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।——

2. जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।——

3. जिसने ऊपर-तले सात आकाश बनाए। तुम रहमान की रचना में कोई असंगति और विषमता न देखोगे। फिर नज़र डालो : "क्या तुम्हें कोई बिगाड़ दिखाई देता है?"

4. फिर दोबारा नज़र डालो। निगाह रद्द होकर और थक-हारकर तुम्हारी ओर पलट आएगी।

5. हमने निकटवर्ती आकाश को दीपों से सजाया और उन्हें शैतानों के मार भगाने का साधन बनाया और उनके लिए हमने भड़कती आग की यातना तैयार कर रखी है।

6. जिन लोगों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उनके लिए जहन्नम की यातना है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

7-8. जब वे उसमें डाले जाएँगे तो उसकी दहाड़ने की भयानक आवाज़ सुनेंगे और वह प्रकोप से बिफर रही होगी। ऐसा प्रतीत होगा कि प्रकोप के कारण



अभी फट पड़ेगी। हर बार जब भी कोई समूह उसमें डाला जाएगा तो उसके कार्यकर्ता उनसे पूछेंगे : "क्या तुम्हारे पास कोई सावधान करनेवाला नहीं आया ?"

9. वे कहेंगे : "क्यों नहीं, अवश्य हमारे पास सावधान करनेवाला आया था, किन्तु हमने झुठला दिया और कहा कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं अवतरित किया। तुम तो बस एक बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो।"

10. और वे कहेंगे : "यदि हम सुनते या बुद्धि से काम लेते तो हम दहकती आग में पड़नेवालों में सम्मिलित न होते।"

11. इस प्रकार वे अपने गुनाहों को स्वीकार करेंगे, तो धिक्कार हो दहकती आगवालों पर !

12. जो लोग परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं, उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है।

13. तुम अपनी बात छिपाओ या उसे व्यक्त करो, वह तो सीनों में छिपी बातों तक को जानता है।

14. क्या वह नहीं जानेगा जिसने पैदा किया? वह सूक्ष्मदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।

15. वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती को वशीभूत किया। अत: तुम उसके (धरती के) कंधों पर चलो और उसकी रोज़ी में से खाओ, उसी की ओर दोबारा उठकर (जीवित होकर) जाना है।

16. क्या तुम उससे निश्चिन्त हो जो आकाश में है कि वह तुम्हें धरती में धँसा दे, फिर क्या देखोगे कि वह डाँवाडोल हो रही है ?



17. या तुम उससे निश्चिन्त हो जो आकाश में है कि वह तुमपर पथराव करनेवाली वायु भेज दे? फिर तुम जान लोगे कि मेरी चेतावनी कैसी होती है।

18. उन लोगों ने भी झुठलाया जो उनसे पहले थे, फिर कैसा रहा मेरा इनकार!

19. क्या उन्होंने अपने ऊपर पक्षियों को पंक्तिबद्ध, पंख फैलाए और उन्हें समेटते नहीं देखा? उन्हें रहमान के सिवा कोई और नहीं थामे रहता।[1] निश्चय ही वह हर चीज़ को देखता है।

20. या वह कौन है जो तुम्हारी सेना बनकर रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी सहायता करे। इनकार करनेवाले तो बस धोखे में पड़े हुए हैं।

21. या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए हैं।

22. तो क्या वह व्यक्ति जो अपने मुँह के बल औंधा चलता हो वह अधिक सीधे मार्ग पर है या वह जो सीधा होकर सीधे मार्ग पर चल रहा है?

23. कह दो : "वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। तुम कृतज्ञता थोड़े ही दिखाते हो।"

24. कह दो : "वही है जिसने तुम्हें धरती में फैलाया और उसी की ओर तुम एकत्र किए जा रहे हो।"

25. वे कहते हैं : "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

1. अर्थात रहमान ही है जिसने उनको पंख आदि देकर ऐसी व्यवस्था कर दी है कि वे वायुमंडल में अपने को रोक सकें।



26. कह दो : "इसका ज्ञान तो बस अल्लाह ही के पास है और मैं तो एक स्पष्ट सचेत करनेवाला हूँ।"

27. फिर जब वे उसे निकट देखेंगे तो उन लोगों के चेहरे बिगड़ जाएँगे जिन्होंने इनकार की नीति अपनाई; और कहा जाएगा : "यही है वह चीज़ जिसकी तुम माँग कर रहे थे।"

28. कहो : "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि अल्लाह मुझे और उन्हें भी, जो मेरे साथ हैं, विनष्ट ही कर दे या वह हमपर दया करे, आखिर इनकार करनेवालों को दुखद यातना से कौन पनाह देगा?"

29. कह दो : "वह रहमान है। उसी पर हम ईमान लाए हैं और उसी पर हमने भरोसा किया। तो शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन पड़ा हुआ है।"

30. कहो : "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुम्हारा पानी (धरती में) नीचे उतर जाए तो फिर कौन तुम्हें लाकर देगा निर्मल प्रवाहित जल?

68. अल-क़लम

(मक्का में उतरी— आयतें 52)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. नून॰। गवाह है क़लम और वह चीज़ जो वे लिखते हैं, तुम अपने रब की अनुकम्पा से कोई दीवाने नहीं हो।

3. निश्चय ही तुम्हारे लिए ऐसा प्रतिदान है जिसका क्रम कभी टूटनेवाला नहीं।

4. निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो।

5-6. अतः शीघ्र ही तुम भी देख लोगे और वे भी देख लेंगे कि तुममें से

بِأَييِّكُمُ الْمَفْتُونُ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ
عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ فَلَا تُطِعِ
الْمُكَذِّبِينَ ۝ وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ ۝ وَلَا
تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ ۝ هَمَّازٍ مَشَّاءٍ بِنَمِيمٍ ۝
مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ
زَنِيمٍ ۝ أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ
آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ سَنَسِمُهُ عَلَى
الْخُرْطُومِ ۝ إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ
إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ۝
فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِنْ رَبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۝
فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ۝ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ۝
أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَارِمِينَ ۝
فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ۝ أَنْ لَا يَدْخُلَنَّهَا

कौन विभ्रमित है ।

7. निस्संदेह तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया है, और वही उन लोगों को भी जानता है जो सीधे मार्ग पर हैं ।

8. अतः तुम झुठलानेवालों का कहना न मानना ।

9. वे चाहते हैं कि तुम ढीले पड़ो, इस कारण वे चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं ।

10. तुम किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जो बहुत क़समें खानेवाला, हीन है,

11. कचोके लगाता, चुग़लियाँ खाता फिरता है,

12. भलाई से रोकता है, सीमा का उल्लंघन करनेवाला, हक़ मारनेवाला है,

13-14. क्रूर है फिर अधम भी । इस कारण कि वह धन और बेटोंवाला है ।

15. जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहता है : "ये तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं !"

16. शीघ्र ही हम उसकी सूँड पर दाग़ लगाएँगे ।

17-18. हमने उन्हें परीक्षा में डाला है जैसे बाग़वालों को परीक्षा में डाला था, जबकि उन्होंने क़सम खाई कि वे प्रातःकाल अवश्य उस (बाग़) के फल तोड़ लेंगे और वे इसमें छूट की कोई गुंजाइश नहीं रख रहे थे ।

19. अभी वे सो ही रहे थे कि तुम्हारे रब की ओर से गर्दिश का एक झोंका आया ।

20. और वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई फ़सल ।

21-22. फिर प्रातःकाल होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाज़ दी कि "यदि तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही पहुँचो ।"

23-24. अतएव वे चुपके-चुपके बातें करते हुए चल पड़े कि आज वहाँ कोई

الْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ۝ وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ۝
فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ۝ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُومُونَ ۝ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ لَوْلَا
تُسَبِّحُونَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ۝ قَالُوا
يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ۝ عَسَىٰ رَبُّنَا أَن يُبْدِلَنَا
خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رَاغِبُونَ ۝ كَذَٰلِكَ
الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ
النَّعِيمِ ۝ أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۝
مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ
تَدْرُسُونَ ۝ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ
أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۙ إِنَّ لَكُمْ

मुहताज तुम्हारे पास न पहुँचने पाए।

25. और वे आज तेज़ी के साथ चले मानो (मुहताजों को) रोक देने की उन्हें सामर्थ्य प्राप्त है।

26-27. किन्तु जब उन्होंने उसको देखा, कहने लगे : "निश्चय ही हम भटक गए हैं। नहीं, बल्कि हम वंचित होकर रह गए।"

28. उनमें जो सबसे अच्छा था कहने लगा : "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था? तुम तसबीह क्यों नहीं करते?"

29. वे पुकार उठे : "महान और उच्च है हमारा रब! निश्चय ही हम ज़ालिम थे।"

30-31. फिर वे परस्पर एक-दूसरे की ओर रुख करके लगे एक-दूसरे को मलामत करने। उन्होंने कहा : "अफ़सोस हम पर! निश्चय ही हम सरकश थे।

32. आशा है कि हमारा रब बदले में हमें इससे अच्छा प्रदान करे। हम अपने रब की ओर उन्मुख हैं।"

33. यातना ऐसी ही होती है, और आखिरत की यातना तो निश्चय ही इससे भी बड़ी है, काश वे जानते!

34. निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए उनके रब के यहाँ नेमत भरी जन्नतें हैं।

35. तो क्या हम मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) को अपराधियों जैसा कर देंगे?

36. तुम्हें क्या हो गया है, कैसा फ़ैसला करते हो?

37-38. क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो कि उसमें तुम्हारे लिए वह कुछ है जो तुम पसन्द करो?

39. या तुमने हमसे क़समें ले रखी हैं जो क़ियामत के दिन तक बाक़ी



रहनेवाली हैं कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो !

40. उनसे पूछो : "उनमें से कौन इसकी ज़मानत लेता है !

41. या उनके ठहराए हुए कुछ साझीदार हैं ? फिर तो यह चाहिए कि वे अपने साझीदारों को ले आएँ, यदि वे सच्चे हैं ।

42. जिस दिन पिंडली खुल जाएगी[1] और वे सजदे के लिए बुलाए जाएँगे, तो वे (सजदा) न कर सकेंगे ।

43. उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, ज़िल्लत (अपमान) उनपर छा रही होगी । उन्हें उस समय भी सजदा करने के लिए बुलाया जाता था जब वे भले-चंगे थे ।

44. अत: तुम मुझे छोड़ दो और उसको जो इस वाणी को झुठलाता है । हम ऐसों को क्रमश: (विनाश की ओर) ले जाएँगे, ऐसे तरीक़े से कि वे नहीं जानते ।

45. मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ । निश्चय ही मेरी चाल बड़ी मज़बूत है ।

46. (क्या वे यातना ही चाहते हैं) या तुम उनसे कोई बदला माँग रहे हो कि वे तावान के बोझ से दबे जाते हों ?

47. या उनके पास परोक्ष का ज्ञान है तो वे लिख रहे हैं ?

48-50. तो अपने रब के आदेश हेतु धैर्य से काम लो और मछलीवाले (यूनुस अलै०) की तरह न हो जाना, जबकि उसने पुकारा था इस दशा में कि वह ग़म में घुट रहा था । यदि उसके रब की अनुकम्पा उसके साथ न हो जाती तो वह अवश्य ही चटियल मैदान में बुरे हाल में डाल दिया जाता । अन्तत: उसके रब ने उसे चुन लिया और उसे अच्छे लोगों में सम्मिलित कर दिया ।

1. अर्थात कठिन विपत्ति और हलचल का दिन आ जाएगा ।



وَإِن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ
لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ
وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ

سُورَةُ الْحَاقَّةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَاقَّةُ مَا الْحَاقَّةُ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ
كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ فَأَمَّا ثَمُودُ
فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ
صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ
أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ
أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ فَهَلْ تَرَىٰ لَهُم مِّن
بَاقِيَةٍ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَن قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ
بِالْخَاطِئَةِ فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً

51. जब वे लोग, जिन्होंने इनकार किया, ज़िक्र (क़ुरआन) सुनते हैं और कहते हैं : "वह तो दीवाना है !" तो ऐसा लगता है कि वे अपनी निगाहों के ज़ोर से तुम्हें फिसला देंगे।

52. हालाँकि वह सारे संसार के लिए एक अनुस्मृति है।

69. अल-हाक़्क़ा

(मक्का में उतरी— आयतें 52)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-3. होकर रहनेवाली ! क्या है वह होकर रहनेवाली ? और तुम क्या जानो कि क्या है वह होकर रहनेवाली ?

4. समूद और आद ने उस खड़खड़ा देनेवाली (घटना) को झुठलाया,

5. फिर समूद तो एक हद से बढ़ जानेवाली आपदा से विनष्ट किए गए।

6. और रहे आद, तो वे एक अनियंत्रित प्रचण्ड वायु से विनष्ट कर दिए गए।

7. अल्लाह ने उसको सात रात और आठ दिन तक उन्मूलन के उद्देश्य से उनपर लगाए रखा। तो लोगों को तुम देखते कि वे उसमें पछाड़े हुए ऐसे पड़े हैं मानो वे खजूर के जर्जर तने हों।

8. अब क्या तुम्हें उनमें से कोई शेष दिखाई देता है ?

9. और फ़िरऔन ने और उससे पहले के लोगों ने और तलपट हो जानेवाली बस्तियों ने यह ख़ता की।

10. उन्होंने अपने रब के रसूल की अवज्ञा की तो उसने उन्हें ऐसी पकड़ में



ले लिया जो बड़ी कठोर थी ।

11. जब पानी उमड़ आया तो हमने तुम्हें प्रवाहित नौका में सवार किया;

12. ताकि उसे तुम्हारे लिए हम शिक्षाप्रद यादगार बनाएँ और याद रखनेवाले कान उसे सुरक्षित रखें ।

13. तो याद रखो जब सूर (नरसिंघा) में एक फूँक मारी जाएगी,

14. और धरती और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में चूर्ण-विचूर्ण कर दिया जाएगा ।

15. तो उस दिन घटित होनेवाली घटना घटित हो जाएगी,

16. और आकाश फट जाएगा और उस दिन उसका बंधन ढीला पड़ जाएगा,

17. और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे और उस दिन तुम्हारे रब के सिंहासन को आठ[1] अपने ऊपर उठाए हुए होंगे ।

18. उस दिन तुम लोग पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई छिपी बात छिपी न रहेगी ।

19. फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, तो वह कहेगा : "लो पढ़ो, मेरा कर्म-पत्र !

20. मैं तो समझता ही था कि मुझे अपना हिसाब मिलनेवाला है ।"

21-22. अतः वह सुख और आनन्दमय जीवन में होगा; उच्च जन्नत में,

23. जिसके फलों के गुच्छे झुके हुए होंगे ।

24. मज़े से खाओ और पियो उन कर्मों के बदले में जो तुमने बीते दिनों में किए हैं ।

25-26. और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र उसके बाएँ हाथ में दिया

1. आठ गुण या फ़रिश्ते या कोई शक्ति या नियम जिनपर सिंहासन टिका होगा ।

فَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِى لَمْ أُوتَ كِتَٰبِيَهْ ۝ وَلَمْ أَدْرِ مَا
حِسَابِيَهْ ۝ يَٰلَيْتَهَا كَانَتِ ٱلْقَاضِيَةَ ۝ مَآ
أَغْنَىٰ عَنِّى مَالِيَهْ ۝ هَلَكَ عَنِّى سُلْطَٰنِيَهْ ۝
خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝ ثُمَّ ٱلْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝ ثُمَّ فِى
سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَٱسْلُكُوهُ ۝
إِنَّهُۥ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ ٱلْعَظِيمِ ۝ وَلَا يَحُضُّ
عَلَىٰ طَعَامِ ٱلْمِسْكِينِ ۝ فَلَيْسَ لَهُ ٱلْيَوْمَ هَٰهُنَا
حَمِيمٌ ۝ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۝ لَّا يَأْكُلُهُۥٓ إِلَّا
ٱلْخَٰطِـُٔونَ ۝ فَلَآ أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۝ وَمَا لَا
تُبْصِرُونَ ۝ إِنَّهُۥ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ وَمَا هُوَ
بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۝ وَلَا بِقَوْلِ
كَاهِنٍ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝ تَنزِيلٌ
مِّن رَّبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ

गया, वह कहेगा : "काश, मेरा कर्म-पत्र मुझे न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है !

27. ऐ काश, वह (मृत्यु) समाप्त करनेवाली होती !

28. मेरा माल मेरे कुछ काम न आया,

29. मेरा ज़ोर (सत्ता) मुझसे जाता रहा !"

30. "पकड़ो उसे और उसकी गरदन में तौक़ डाल दो,

31. फिर उसे भड़कती हुई आग में झोंक दो,

32. फिर उसे एक ऐसी ज़ंजीर में जकड़ दो जिसकी माप सत्तर हाथ है ।

33-34. वह न तो महिमावान अल्लाह पर ईमान रखता था और न मुहताज को खाना खिलाने पर उभारता था ।

35-36. अतः आज उसका यहाँ कोई घनिष्ट मित्र नहीं, और न ही धोवन[1] के सिवा कोई भोजन है,

37. उसे ख़ताकारों (अपराधियों) के अतिरिक्त कोई नहीं खाता ।"

38-39. अतः कुछ नहीं ! मैं क़सम खाता हूँ उन चीज़ों की जो तुम देखते हो और उन चीज़ों की भी जो तुम नहीं देखते,

40. निश्चय ही वह एक प्रतिष्ठित रसूल की लाई हुई वाणी है ।

41. वह किसी कवि की वाणी नहीं । तुम ईमान थोड़े ही लाते हो ।

42. और न वह किसी काहिन की वाणी है । तुम होश से थोड़े ही काम लेते हो ।

43. अवतरण है सारे संसार के रब की ओर से,

1. अर्थात घावों का धोवन ।

الْأَقَاوِيلِ ۝ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝ ثُمَّ
لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝ فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ
عَنْهُ حَاجِزِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ۝
وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ۝ وَإِنَّهُ
لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

سُورَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ (٧٠)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝ لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ
لَهُ دَافِعٌ ۝ مِنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝ تَعْرُجُ
الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ
خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۝
إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ۝ يَوْمَ

44-46. यदि वह (नबी) हमपर थोपकर कुछ बातें घड़ता, तो अवश्य हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते, फिर उसकी गर्दन की रग काट देते,

47. और तुममें से कोई भी इससे रोकनेवाला न होता।

48. और निश्चय ही वह एक अनुस्मृति है डर रखनेवालों के लिए।

49. और निश्चय ही हम जानते हैं कि तुममें कितने ही ऐसे हैं जो झुठलाते हैं।

50. निश्चय ही वह इनकार करनेवालों के लिए सर्वथा पछतावा है,

51-52. और वह बिलकुल विश्वसनीय सत्य है। अतः तुम अपने महिमावान रब के नाम की तसबीह (गुणगान) करो।

70. अल-मआरिज

(मक्का में उतरी— आयतें 44)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. एक माँगनेवाले ने घटित होनेवाली यातना माँगी, जो इनकार करनेवालों के लिए होगी, उसे कोई टालनेवाला नहीं,

3. वह अल्लाह की ओर से होगी, जो चढ़ाव के सोपानों का स्वामी है।

4. फ़रिश्ते और रूह (जिबरील) उसकी ओर चढ़ते हैं—उस दिन में जिसकी अवधि पचास हज़ार वर्ष है।

5. अतः धैर्य से काम लो, उत्तम धैर्य।

6-7. वे उसे बहुत दूर देख रहे हैं, किन्तु हम उसे निकट देख रहे हैं।

8. जिस दिन आकाश तेल की तलछट जैसा काला हो जाएगा,

9. और पर्वत रंग-बिरंगे ऊन के सदृश हो जाएँगे।

10-14. कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा, हालाँकि वे एक-दूसरे को दिखाए जाएँगे। अपराधी चाहेगा कि किसी प्रकार वह उस दिन की यातना से छूटने के लिए अपने बेटों, अपनी पत्नी, अपने भाई, और अपने उस परिवार को जो उसको आश्रय देता है, और उन सभी लोगों को जो धरती में रहते हैं, फ़िदया (मुक्ति-प्रतिदान) के रूप में दे डाले फिर वह उसको छुटकारा दिला दे।

تَكُونُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝
وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ۝ يُبَصَّرُونَهُمْ ۚ يَوَدُّ
الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ۝
وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۝ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُـْٔوِيهِ ۝
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۝ كَلَّا ۖ
إِنَّهَا لَظَىٰ ۝ نَزَّاعَةً لِلشَّوَىٰ ۝ تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ
وَتَوَلَّىٰ ۝ وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ
هَلُوعًا ۝ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝ وَإِذَا مَسَّهُ
الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ
صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ
مَعْلُومٌ ۝ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ
بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ
مُشْفِقُونَ ۝ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۝

15. कदापि नहीं ! वह लपट मारती हुई आग है,

16. जो मांस और त्वचा को चाट जाएगी,

17. वह उस व्यक्ति को बुलाती है जिसने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा,

18. और (धन) एकत्र किया और सैंत कर रखा।

19. निस्संदेह मनुष्य अधीर पैदा हुआ है।

20. जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो घबरा उठता है,

21. किन्तु जब उसे सम्पन्नता प्राप्त होती है तो वह कृपणता दिखाता है।

22. किन्तु नमाज़ अदा करनेवालों की बात और है,

23. जो अपनी नमाज़ पर सदैव जमे रहते हैं,

24-25. और जिनके मालों में माँगनेवालों और वंचित का एक ज्ञात और निश्चित हक़ होता है,

26. जो बदले के दिन को सत्य मानते हैं,

27. जो अपने रब की यातना से डरते हैं—

28. उनके रब की यातना है ही ऐसी जिससे निश्चिन्त न रहा जाए——

29-30. जो अपनी पत्नियों या जो उनकी मिल्क में हों[1] उनके अतिरिक्त दूसरों से अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं। तो इस बात पर उनकी कोई भर्त्सना नहीं।——

31. किन्तु जिस किसी ने इसके अतिरिक्त कुछ और चाहा तो ऐसे ही लोग सीमा का उल्लंघन करनेवाले हैं।——

32. जो अपने पास रखी गई अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का निर्वाह करते हैं,

33. जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं,

34. और जो अपनी नमाज़ की रक्षा करते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝ إِلَّا عَلَىٰ
أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ
مَلُومِينَ ۝ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْعَادُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رَاعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُم بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ۝ وَ
الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ أُولَٰئِكَ
فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ۝ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا
قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۝ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ
عِزِينَ ۝ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُدْخَلَ جَنَّةَ
نَعِيمٍ ۝ كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّمَّا يَعْلَمُونَ ۝ فَلَا
أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ ۝ عَلَىٰ
أَن نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝
فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ

35. वही लोग जन्नतों में सम्मानपूर्वक रहेंगे।

36-37. फिर उन इनकार करनेवालों को क्या हुआ है कि वे दाएँ और बाएँ से गिरोह के गिरोह तुम्हारी ओर दौड़े चले आ रहे हैं?

38. क्या उनमें से प्रत्येक व्यक्ति इसकी लालसा रखता है कि वह अनुकम्पा से परिपूर्ण जन्नत में प्रविष्ट हो?

39. कदापि नहीं, हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया है, जिसे वे भली-भाँति जानते हैं।

40-41. अतः कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ पूर्वों और पश्चिमों के रब की, हमें इसकी सामर्थ्य प्राप्त है कि उनकी जगह उनसे अच्छे ले आएँ और हम पिछड़ जानेवाले नहीं हैं।

42. अतः उन्हें छोड़ो कि वे व्यर्थ बातों में पड़े रहें और खेलते रहें, यहाँ तक कि

---

1. अर्थात बांदियाँ।


الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ
سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ۝ خَاشِعَةً
أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي
كَانُوا يُوعَدُونَ ۝
سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ (٧١)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن
قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ
إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ
وَأَطِيعُونِ ۝ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ
أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ
لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي
لَيْلًا وَنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۝

वे अपने उस दिन से मिलें जिसका उनसे वादा किया जा रहा है,

43. जिस दिन वे क़ब्रों से तेज़ी के साथ निकलेंगे जैसे किसी निशान की ओर दौड़े जा रहे हैं,

44. उनकी निगाहें झुकी होंगी, ज़िल्लत उनपर छा रही होगी। यह है वह दिन जिससे वह डराए जाते रहे हैं।

71. नूह

(मक्का में उतरी—आयतें 28)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा कि "अपनी क़ौम के लोगों को सावधान कर दो. इससे पहले कि उनपर कोई दुखद यातना आ जाए।"

2-3. उसने कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट सचेतकर्ता हूँ, कि 'अल्लाह की बन्दगी करो और उसका डर रखो और मेरी आज्ञा मानो।'

4. वह तुम्हें क्षमा करके तुम्हारे गुनाहों से तुम्हें पाक कर देगा और एक निश्चित समय तक तुम्हें मुहलत देगा। निश्चय ही जब अल्लाह का निश्चित समय आ जाता है तो वह टलता नहीं, काश कि तुम जानते!"

5. उसने कहा : "ऐ मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम के लोगों को रात और दिन बुलाया,

6. किन्तु मेरी पुकार ने उनके पलायन को ही बढ़ाया।

7. और जब भी मैंने उन्हें बुलाया, ताकि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो उन्होंने अपने कानों में अपनी उँगलियाँ दे लीं और अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँक लिया और अपनी हठ पर अड़ गए और बड़ा ही घमण्ड किया।

8. फिर मैंने उन्हें खुल्लमखुल्ला बुलाया,

9. फिर मैंने उनसे खुले तौर पर भी बातें कीं और उनसे चुपके-चुपके भी बातें कीं।

10. और मैंने कहा : 'अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करो। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील है,

وَاِنِّیْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْۤا اَصَابِعَهُمْ
فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِیَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا
اسْتِكْبَارًاۚ ثُمَّ اِنِّیْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًاۙ ثُمَّ اِنِّیْۤ
اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًاۙ فَقُلْتُ
اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًاۙ یُّرْسِلِ السَّمَآءَ
عَلَیْكُمْ مِّدْرَارًاۙ وَّیُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِیْنَ وَ
یَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّیَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًاؕ مَا لَكُمْ
لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًاۚ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا
اَلَمْ تَرَوْا كَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًاۙ
وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِیْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا
وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًاۙ ثُمَّ یُعِیْدُكُمْ
فِیْهَا وَیُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ
الْاَرْضَ بِسَاطًاۙ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا

11. वह बादल भेजेगा तुमपर ख़ूब बरसनेवाला,

12. और वह माल और बेटों से तुम्हें बढ़ोत्तरी प्रदान करेगा, और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा और तुम्हारे लिए नहरें प्रवाहित करेगा।

13. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम (अपने दिलों में) अल्लाह के लिए किसी गौरव की आशा नहीं रखते?

14. हालाँकि उसने तुम्हें विभिन्न अवस्थाओं से गुज़ारते हुए पैदा किया।

15. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस प्रकार ऊपर-तले सात आकाश बनाए,

16. और उनमें चन्द्रमा को प्रकाश और सूर्य को प्रदीप बनाया?

17. और अल्लाह ने तुम्हें धरती से विशिष्ट प्रकार से विकसित किया,

18. फिर वह तुम्हें उसमें लौटाता है और तुम्हें बाहर निकालेगा भी।

19. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया,

20. ताकि तुम उसके विस्तृत मार्गों पर चलो।' "

قال نوح رب إنهم عصوني واتبعوا من لم
يزده ماله وولده إلا خسارا ۝ ومكروا
مكرا كبارا ۝ وقالوا لا تذرن آلهتكم ولا
تذرن ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق
ونسرا ۝ وقد أضلوا كثيرا ولا تزد
الظالمين إلا ضلالا ۝ مما خطيئاتهم أغرقوا
فأدخلوا نارا فلم يجدوا لهم من دون
الله أنصارا ۝ وقال نوح رب لا تذر على
الأرض من الكافرين ديارا ۝ إنك إن
تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا إلا فاجرا
كفارا ۝ رب اغفر لي ولوالدي ولمن دخل
بيتي مؤمنا وللمؤمنين والمؤمنات ولا تزد
الظالمين إلا تبارا ۝

21. नूह ने कहा : "ऐ मेरे रब ! उन्होंने मेरी अवज्ञा की, और उसका अनुसरण किया जिसके धन और जिसकी संतान ने उसके घाटे ही में अभिवृद्धि की।

22. और वे बहुत बड़ी चाल चले,

23. और उन्होंने कहा : 'अपने इष्ट-पूज्यों को कदापि न छोड़ो और न 'वद्द' को छोड़ो और न 'सुवा' को और न 'यग़ूस' और 'यऊक़' और 'नस्र' को।'

24. और उन्होंने बहुत-से लोगों को पथभ्रष्ट किया है (तो तू उन्हें मार्ग न दिखा) और अब, तू भी ज़ालिमों की पथभ्रष्टता ही में अभिवृद्धि कर।"

25. वे अपनी बड़ी ख़ताओं के कारण पानी में डुबो दिए गए, फिर आग में दाख़िल कर दिए गए, फिर वे अपने और अल्लाह के बीच आड़ बननेवाले सहायक न पा सके।

26. और नूह ने कहा : "ऐ मेरे रब ! धरती पर इनकार करनेवालों में से किसी बसनेवाले को न छोड़।

27. यदि तू उन्हें छोड़ देगा तो वे तेरे बन्दों को पथभ्रष्ट कर देंगे और वे दुराचारियों और बड़े अधर्मियों को ही जन्म देंगे।

28. ऐ मेरे रब ! मुझे क्षमा कर दे और मेरे माँ-बाप को भी और हर उस व्यक्ति को भी जो मेरे घर में ईमानवाला बनकर दाख़िल हुआ, और (सामान्य) ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को भी (क्षमा कर दे), और ज़ालिमों के विनाश को ही बढ़ा।"

72. अल-जिन्न

(मक्का में उतरी—आयतें 28)

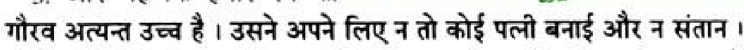


بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۝ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝ وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ۝ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कह दो : "मेरी ओर प्रकाशना की गई है कि जिन्नों के एक गिरोह ने सुना, फिर उन्होंने कहा कि 'हमने एक मनभाता क़ुरआन सुना,

2. जो भलाई और सूझ-बूझ का मार्ग दिखाता है, अत: हम उसपर ईमान ले आए, और अब हम कदापि किसी को अपने रब का साझी नहीं ठहराएँगे।



3. और यह कि हमारे रब का गौरव अत्यन्त उच्च है। उसने अपने लिए न तो कोई पत्नी बनाई और न संतान।

4. और यह कि हममें का मूर्ख व्यक्ति अल्लाह के विषय में सत्य से बिलकुल हटी हुई बातें कहता रहा है।

5. और यह कि हमने समझ रखा था कि मनुष्य और जिन्न अल्लाह के विषय में कभी झूठ नहीं बोलते।

6. और यह कि मनुष्यों में से कितने ही पुरुष ऐसे थे जो जिन्नों में से कितने ही पुरुषों की शरण माँगा करते थे। इस प्रकार उन्होंने उन्हें (जिन्नों को) और चढ़ा दिया।

7. और यह कि उन्होंने गुमान किया जैसे कि तुमने गुमान किया कि अल्लाह किसी (नबी) को कदापि न उठाएगा।

8. और यह कि हमने आकाश को टटोला तो उसे सख़्त पहरेदारों और उल्काओं से भरा हुआ पाया।

9. और यह कि हम उसमें बैठने के स्थानों में सुनने के लिए बैठा करते थे,

किन्तु अब कोई सुनना चाहे तो वह अपने लिए घात में लगा एक उल्का पाएगा।

10. और यह कि हम नहीं जानते कि उन लोगों के साथ जो धरती में हैं बुराई का इरादा किया गया है या उनके रब ने उनके लिए भलाई और मार्गदर्शन का इरादा किया है।

11. और यह कि हममें से कुछ लोग अच्छे हैं और कुछ लोग उससे निम्नतर हैं, हम विभिन्न मार्गों पर हैं।

12. और यह कि हमने समझ लिया कि हम न धरती में कहीं जाकर अल्लाह के क़ाबू से निकल सकते हैं, और न आकाश में कहीं भागकर उसके क़ाबू से निकल सकते हैं।

يستمع الآن يجد له شهابا رصدا ۝ وأنا لا
ندري أشر أريد بمن في الأرض أم أراد بهم
ربهم رشدا ۝ وأنا منا الصالحون ومنا دون
ذلك كنا طرائق قددا ۝ وأنا ظننا أن لن
نعجز الله في الأرض ولن نعجزه هربا ۝ وأنا
لما سمعنا الهدى آمنا به فمن يؤمن بربه
فلا يخاف بخسا ولا رهقا ۝ وأنا منا المسلمون
ومنا القاسطون فمن أسلم فأولئك تحروا
رشدا ۝ وأما القاسطون فكانوا لجهنم حطبا ۝
وأن لو استقاموا على الطريقة لأسقيناهم ماء
غدقا ۝ لنفتنهم فيه ومن يعرض عن ذكر ربه
يسلكه عذابا صعدا ۝ وأن المساجد لله فلا
تدعوا مع الله أحدا ۝ وأنه لما قام عبد الله

13. और यह कि जब हमने मार्गदर्शन की बात सुनी तो उसपर ईमान ले आए। अब जो कोई अपने रब पर ईमान लाएगा, उसे न तो किसी हक़ के मारे जाने का भय होगा और न किसी ज़ुल्म-ज़्यादती का।

14. और यह कि हममें से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और हममें से कुछ हक़ से हटे हुए हैं। तो जिन्होंने आज्ञापालन का मार्ग ग्रहण कर लिया उन्होंने भलाई और सूझ-बूझ की राह ढूँढ़ ली।

15. रहे वे लोग जो हक़ से हटे हुए हैं, तो वे जहन्नम का ईंधन होकर रहे।"

16-17. और यह प्रकाशना की गई है कि यदि वे सीधे मार्ग पर धैर्यपूर्वक चलते तो हम उन्हें पर्याप्त जल से अभिषिक्त करते, ताकि हम उसमें उनकी परीक्षा करें। और जो कोई अपने रब की याद से कतराएगा, तो वह उसे कठोर यातना में डाल देगा।

18. और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं। अत: अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो।

19. और यह कि "जब अल्लाह का बन्दा उसे पुकारता हुआ खड़ा हुआ तो

يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا
أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝ قُلْ إِنِّي
لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝ قُلْ إِنِّي لَنْ
يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ
مُلْتَحَدًا ۝ إِلَّا بَلَاغًا مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَنْ
يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۝ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ
مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۝ قُلْ إِنْ
أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ
رَبِّي أَمَدًا ۝ عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ
أَحَدًا ۝ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ
يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۝
لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَاتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ

منزل ٧

वे ऐसे लगते थे कि उसपर जत्थे बनकर टूट पड़ेंगे।"

20. कह दो : "मैं तो बस अपने रब ही को पुकारता हूँ, और उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।"

21. कह दो : "मैं तो तुम्हारे लिए न किसी हानि का अधिकार रखता हूँ और न किसी भलाई का।"——

22. कहो : "अल्लाह के मुक़ाबले में मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और न मैं उससे बचकर कतराने की कोई जगह पा सकता हूँ।——

23. सिवाय अल्लाह की ओर से पहुँचाने और उसके संदेश देने के। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है, जिसमें ऐसे लोग सदैव रहेंगे।"

24. यहाँ तक कि जब वे उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है तो वे जान लेंगे कि कौन अपने सहायक की दृष्टि से कमज़ोर और संख्या में न्यूनतर है।

25. कह दो : "मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है वह निकट है या मेरा रब उसके लिए कोई लम्बी अवधि ठहराता है।

26-28. परोक्ष का जाननेवाला वही है और वह अपने परोक्ष को किसी पर प्रकट नहीं करता, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे उसने रसूल की हैसियत से पसंद कर लिया हो तो उसके आगे से और उसके पीछे से निगरानी की पूर्ण व्यवस्था कर देता है, ताकि वह यक़ीनी बना दे कि उन्होंने अपने रब के सन्देश पहुँचा दिए और जो कुछ उनके पास है उसे वह घेरे हुए है और हर चीज़ को

उसने गिन रखा है।"



73. अल-मुज़्ज़म्मिल

(मक्का में उतरी—— आयतें 20)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ कपड़े में लिपटनेवाले!

2. रात को उठकर (नमाज़ में) खड़े रहा करो—— सिवाय थोड़ा हिस्सा——

3-4. आधी रात या उससे कुछ थोड़ा कम कर लो या उससे कुछ अधिक बढ़ा लो और क़ुरआन को भली-भाँति ठहर-ठहरकर पढ़ो।—

5. निश्चय ही हम तुमपर एक भारी बात डालनेवाले हैं।

6. निस्संदेह रात का उठना अत्यन्त अनुकूलता रखता है और बात भी उसमें अत्यन्त सधी हुई होती है।

7. निश्चय ही तुम्हारे लिए दिन में भी (तसबीह की) बड़ी गुंजाइश है।——

8-9. और अपने रब के नाम का ज़िक्र किया करो और सबसे कटकर उसी के हो रहो। वह पूर्व और पश्चिम का रब है, उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, अत: तुम उसी को अपना कार्यसाधक बना लो।

10. और जो कुछ वे कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और भली रीति से उनसे अलग हो जाओ।

11. और तुम मुझे और झुठलानेवाले सुख-सम्पन्न लोगों को छोड़ दो और उन्हें थोड़ी मुहलत दो।

12-13. निश्चय ही हमारे पास बेड़ियाँ हैं और भड़कती हुई आग और गले में

अटकनेवाला भोजन है और दुखद यातना,

14. जिस दिन धरती और पहाड़ काँप उठेंगे और पहाड़ रेत के ऐसे ढेर होकर रह जाएँगे जो बिखरे जा रहे होंगे।

15. निश्चय ही हमने तुम्हारी ओर एक रसूल तुमपर गवाह बनाकर भेजा है, जिस प्रकार हमने फ़िरऔन की ओर एक रसूल भेजा था।

16. किन्तु फ़िरऔन ने रसूल की अवज्ञा की, तो हमने उसे पकड़ लिया और यह पकड़ सख़्त वबाल थी।

17. यदि तुमने इनकार किया तो उस दिन से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा?

أَلِيمًا ۝ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ
الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ
رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
رَسُولًا ۝ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا
وَبِيلًا ۝ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝ السَّمَاءُ مُنفَطِرٌ بِهِ ۚ
كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۝ إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن
شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ
تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَ
طَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَ
النَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ
فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ
مِنكُم مَّرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ

18. आकाश उसके कारण फटा पड़ रहा है, उसका वादा तो पूरा ही होना है।

19. निश्चय ही यह एक अनुस्मृति है। अब जो चाहे अपने रब की ओर मार्ग ग्रहण कर ले।

20. निस्संदेह तुम्हारा रब जानता है कि तुम लगभग दो तिहाई रात, आधी रात और एक तिहाई रात तक (नमाज़ में) खड़े रहते हो, और एक गिरोह उन लोगों में से भी जो तुम्हारे साथ है, खड़ा होता है। और अल्लाह रात और दिन की घट-बढ़ नियत करता है। उसे मालूम है कि तुम सब उसका निर्वाह न कर सकोगे, अत: उसने तुमपर दया-दृष्टि की। अब जितना क़ुरआन आसानी से हो सके पढ़ लिया करो। उसे मालूम है कि तुममें से कुछ बीमार भी होंगे, और कुछ दूसरे लोग अल्लाह के उदार अनुग्रह (रोज़ी) को ढूँढ़ते हुए धरती में यात्रा करेंगे, कुछ दूसरे लोग अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेंगे। अत: उसमें से जितना आसानी से हो सके पढ़ लिया करो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो, और



अल्लाह को ऋण दो, अच्छा ऋण। तुम जो भलाई भी अपने लिए (आगे) भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ अत्युत्तम और प्रतिदान की दृष्टि से बहुत बढ़कर पाओगे। और अल्लाह से माफ़ी माँगते रहो। बेशक अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

74. अल-मुद्दस्सिर

(मक्का में उतरी— आयतें 56)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. ऐ ओढ़ने लपेटनेवाले ! उठो, और सावधान करने में लग जाओ।

3. और अपने रब की बड़ाई ही करो।

4-5. अपने दामन को पाक रखो और गन्दगी से दूर ही रहो।

6-7. अपनी कोशिशों को अधिक समझकर उसके क्रम को भंग न करो और अपने रब के लिए धैर्य ही से काम लो।

8. जब सूर में फूँक मारी जाएगी।[1]

9-10. तो जिस दिन ऐसा होगा, वह दिन बड़ा ही कठोर होगा, इनकार करनेवालों पर आसान न होगा।

11-12. छोड़ दो मुझे और उसको जिसे मैंने अकेला पैदा किया, और उसे माल

1. इस आयत का अनुवाद यह भी किया जाता है– अतः जब नाकूर (धरती) को कुरेद लिया जाएगा; नाकूर का अर्थ है, बहुत चोंच मारनेवाला। धरती एक ऐसे बड़े पक्षी की तरह है जो सभी को चोंच मारकर निगल जाती है। एक दिन आएगा, जब उसके निगले हुए प्रत्येक व्यक्ति को उसके भीतर से निकाल लिया जाएगा। – देखें : सूरा 82 आयत 4।

لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ
تَمْهِيْدًا ۙ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۙ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ
كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ؕ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ؕ اِنَّهٗ
فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۙ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ
قَدَّرَ ۙ ثُمَّ نَظَرَ ۙ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۙ ثُمَّ اَدْبَرَ وَ
اسْتَكْبَرَ ۙ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۙ اِنْ
هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ؕ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ۝ وَمَاۤ
اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ؕ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ۚ لَوَّاحَةٌ
لِّلْبَشَرِ ۚ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ؕ وَمَا جَعَلْنَاۤ اَصْحٰبَ
النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۪ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا
فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ

दिया दूर तक फैला हुआ,

13. और उसके पास उपस्थित रहनेवाले बेटे दिए,

14. और मैंने उसके लिए अच्छी तरह जीवन-मार्ग समतल किया।

15. फिर वह लोभ रखता है कि मैं उसके लिए और अधिक दूँगा।

16. कदापि नहीं, वह हमारी आयतों का दुश्मन है,

17. शीघ्र ही मैं उसे घेरकर कठिन चढ़ाई चढ़वाऊँगा।

18. उसने सोचा और अटकल से एक बात बनाई।

19. तो विनष्ट हो, कैसी बात बनाई!

20. फिर विनष्ट हो, कैसी बात बनाई!

21-22. फिर नज़र दौड़ाई, फिर त्योरी चढ़ाई और मुँह बनाया,

23. फिर पीठ फेरी और घमंड किया।

24. अन्ततः बोला : "यह तो बस एक जादू है, जो पहले से चला आ रहा है।

25. यह तो मात्र मनुष्य की वाणी है।"

26. मैं शीघ्र ही उसे 'सक़र' (जहन्न की आग) में झोंक दूँगा।

27. और तुम्हें क्या पता कि 'सक़र' क्या है?

28-29. वह न तरस खाएगी और न छोड़ेगी, खाल को झुलसा देनेवाली है,

30. उसपर उन्नीस (कार्यकर्ता) नियुक्त हैं।

31. और हमने उस आग पर नियुक्त रहनेवालों को फ़रिश्ते ही बनाया है, और हमने उनकी संख्या को इनकार करनेवालों के लिए मुसीबत और आज़माइश ही बनाकर रखा है। ताकि वे लोग जिन्हें किताब प्रदान की गई थी पूर्ण विश्वास प्राप्त करें, और वे लोग जो ईमान ले आए वे ईमान में और आगे बढ़ जाएँ। और जिन लोगों को किताब प्रदान की गई वे और ईमानवाले किसी

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ
بِهَٰذَا مَثَلًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَ
يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا
هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ۝ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝
وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ۝ وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ۝ إِنَّهَا لَإِحْدَى
الْكُبَرِ ۝ نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ۝ لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن
يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۝
إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۝ فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ عَنِ
الْمُجْرِمِينَ ۝ مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ۝ قَالُوا لَمْ
نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ۝
وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۝ وَكُنَّا نُكَذِّبُ
بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ حَتَّىٰ أَتَانَا الْيَقِينُ ۝ فَمَا
تَنفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۝ فَمَا لَهُمْ عَنِ

संशय में न पड़ें, और ताकि जिनके दिलों में रोग है वे और इनकार करनेवाले कहें : "इस वर्णन से अल्लाह का क्या अभिप्राय है?" इस प्रकार अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है और जिसे चाहता है संमार्ग प्रदान करता है। और तुम्हारे रब की सेनाओं को स्वयं उसके सिवा कोई नहीं जानता, और यह तो मनुष्य के लिए मात्र एक शिक्षा-सामग्री है।

32-35. कुछ नहीं, साक्षी है चाँद और साक्षी है रात जबकि वह पीठ फेर चुकी, और प्रातःकाल जबकि वह पूर्णरूपेण प्रकाशित हो जाए। निश्चय ही वह भारी (भयंकर) चीज़ों में से एक है,

36. मनुष्य के लिए सावधानकर्ता के रूप में,

37. तुममें से उस व्यक्ति के लिए जो आगे बढ़ना या पीछे हटना चाहे।

38. प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ उसने कमाया उसके बदले रेहन (गिरवी) है,

39. सिवाय दाएँवालों के।

40-41. वे बाग़ों में होंगे, अपराधियों के विषय में पूछ-ताछ कर रहे होंगे।

42-44. "तुम्हें क्यां चीज़ 'सक़र' (जहन्नम) में ले आई?" वे कहेंगे : "हम नमाज़ अदा करनेवालों में से न थे। और न हम मुहताज को खाना खिलाते थे।

45-46. और व्यर्थ बात और कठ-हुज्जती में पड़े रहनेवालों के साथ हम भी उसी में लगे रहते थे। और हम बदला दिए जाने के दिन को झुठलाते थे,

47. यहाँ तक कि विश्वसनीय चीज़ (प्रलय-दिवस) ने हमें आ लिया।"

48. अतः सिफ़ारिश करनेवालों की कोई सिफ़ारिश उनको कुछ लाभ न पहुँचा सकेगी।

49. आख़िर उन्हें क्या हुआ है कि वे नसीहत से कतराते हैं,

50-51. मानो वे बिदके हुए जंगली गधे हैं जो शेर से (डरकर) भागे हैं?

52. नहीं, बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे खुली किताबें दी जाएँ।

53. कदापि नहीं, बल्कि वे आख़िरत से डरते नहीं।

54. कुछ नहीं, वह तो एक अनुस्मृति है।

55. अब जो कोई चाहे इससे नसीहत हासिल करे,

56. और वे नसीहत हासिल नहीं करेंगे। यह और बात है कि अल्लाह ही ऐसा चाहे। वही इस योग्य है कि उसका डर रखा जाए और इस योग्य भी कि क्षमा करे।

التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ۙ كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ۙ فَرَّتْ
مِن قَسْوَرَةٍ ۗ بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن
يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۙ كَلَّا ۖ بَل لَّا يَخَافُونَ
الْآخِرَةَ ۙ كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ۚ
وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ
وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ

(٧٥) سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ (٣١)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لَا أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ۙ وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ
اللَّوَّامَةِ ۚ أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ۚ
بَلَىٰ قَادِرِينَ عَلَىٰ أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَهُ ۚ بَلْ يُرِيدُ
الْإِنسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۚ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ ۚ
فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۙ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ وَجُمِعَ الشَّمْسُ

75. अल-क़ियामह

(मक्का में उतरी— आयतें 40)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. नहीं! मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की,
2. और नहीं! मैं क़सम खाता हूँ मलामत करनेवाली आत्मा की।
3. क्या मनुष्य यह समझता है कि हम कदापि उसकी हड्डियों को एकत्र न करेंगे?
4. क्यों नहीं, हम उसकी पोरों को ठीक-ठाक करने की सामर्थ्य रखते हैं।
5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि अपने आगे ढिठाई करता रहे।
6. पूछता है: "आख़िर क़ियामत का दिन कब आएगा?"
7. तो जब निगाह चौंधिया जाएगी,
8. और चन्द्रमा को ग्रहण लग जाएगा,
9. और सूर्य और चन्द्रमा इकट्ठे कर दिए जाएँगे,

وَالْقَمَرُ ۙ يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ
كَلَّا لَا وَزَرَ ۚ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۚ
يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۚ بَلِ
الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۙ وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ۚ
لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۚ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ
وَقُرْآنَهُ ۚ فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۚ ثُمَّ إِنَّ
عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۚ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۙ وَتَذَرُونَ
الْآخِرَةَ ۚ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ إِلَىٰ رَبِّهَا
نَاظِرَةٌ ۚ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۙ تَظُنُّ أَن
يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۚ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ
وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۙ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ وَ
الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ
الْمَسَاقُ ۚ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ۙ وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۙ

منزل ٧

10. उस दिन मनुष्य कहेगा : "कहाँ जाऊँ भागकर ?"

11-12. कुछ नहीं, कोई शरण-स्थल नहीं ! उस दिन तुम्हारे रब ही की ओर जाकर ठहरना है ।

13. उस दिन मनुष्य को बता दिया जाएगा जो कुछ उसने आगे बढ़ाया और पीछे टाला ।

14. नहीं, बल्कि मनुष्य स्वयं अपने हाल पर निगाह रखता है,

15. यद्यपि उसने अपने कितने ही बहाने पेश किए हों ।

16. तू उसे शीघ्र पाने के लिए उसके प्रति अपनी ज़बान को न चला ।

17-18. हमारे ज़िम्मे है उसे एकत्र करना और उसका पढ़ाना, अतः जब हम उसे पढ़ें तो उसके पठन का अनुसरण कर,

19. फिर हमारे ज़िम्मे है उसका स्पष्टीकरण करना ।

20. कुछ नहीं, बल्कि तुम लोग शीघ्र मिलनेवाली चीज़ (दुनिया) से प्रेम रखते हो,

21. और आख़िरत को छोड़ रहे हो ।

22-25. कितने ही चेहरे उस दिन तरो ताज़ा और प्रफुल्लित होंगे, अपने रब की ओर देख रहे होंगे । और कितने ही चेहरे उस दिन उदास और बिगड़े हुए होंगे, समझ रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देनेवाला मामला किया जाएगा ।

26-27. कुछ नहीं, जब प्राण कण्ठ को आ लगेंगे, और कहा जाएगा : "कौन है झाड़-फूँक करनेवाला ?"

28. और वह समझ लेगा कि वह जुदाई (का समय) है ।

29. और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी,

30. तुम्हारे रब की ओर उस दिन प्रस्थान होगा ।

31. किन्तु उसने न तो सत्य माना और न नमाज़ अदा की,

32. लेकिन झुठलाया और मुँह मोड़ा,

33. फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की ओर चल दिया।

34-35. अफ़सोस है तुझपर और अफ़सोस है! फिर अफ़सोस है तुझपर और अफ़सोस है!

36. क्या मनुष्य समझता है कि वह यूँ ही स्वतंत्र छोड़ दिया जाएगा?

37. क्या वह केवल टपकाए हुए वीर्य की एक बूँद न था?

38. फिर वह रक्त की एक फुटकी हुआ, फिर अल्लाह ने उसे रूप दिया और उसके अंग-प्रत्यंग ठीक-ठाक किए।

39. और उसकी दो जातियाँ बनाईं——पुरुष और स्त्री।

40. क्या उसे यह सामर्थ्य प्राप्त नहीं कि मुर्दों को जीवित कर दे?



76. अद-दह्र

(मक्का में उतरी—— आयतें 31)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या मनुष्य पर काल-खण्ड का ऐसा समय भी बीता है कि वह कोई ऐसी चीज़ न था जिसका उल्लेख किया जाता?

2. हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया, उसे उलटते-पलटते रहे, फिर हमने उसे सुनने और देखनेवाला बना दिया।

3. हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह कृतज्ञ बने या अकृतज्ञ।

4. हमने इनकार करनेवालों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

5. निश्चय ही वफ़ादार लोग ऐसे जाम से पिएँगे जिसमें काफ़ूर का मिश्रण होगा,

يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝ وَ
يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا
وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ
جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا
عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ
وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا
جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا
يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝ وَدَانِيَةً
عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝ وَ
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ
كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۝ قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا
تَقْدِيْرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

6. उस स्रोत का क्या कहना! जिसपर बैठकर अल्लाह के बन्दे पिएँगे, इस तरह कि उसे बहा-बहाकर (जहाँ चाहेंगे) ले जाएँगे।

7. वे नज़्र (मन्नत) पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी आपदा व्यापक होगी,

8. और वे मुहताज, अनाथ और क़ैदी को खाना उसकी चाहत रखते हुए खिलाते हैं :

9. "हम तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए तुम्हें खिलाते हैं, तुमसे न कोई बदला चाहते हैं और न कृतज्ञता ज्ञापन।

10. हमें तो अपने रब की ओर से एक ऐसे दिन का भय है जो त्योरी पर बल डाले हुए अत्यन्त क्रूर होगा।"

11. अत: अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी प्रदान की,

12. और जो उन्होंने धैर्य से काम लिया, उसके बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी वस्त्र प्रदान किया।

13. उसमें वे तख़्तों पर टेक लगाए होंगे, वे उसमें न तो सख़्त धूप देखेंगे और न सख़्त ठंड।

14. और उस (बाग़) के साए उनपर झुके होंगे और उसके फलों के गुच्छे बिलकुल उनके वश में होंगे।

15-16. और उनके पास चाँदी के बरतन गर्दिश में होंगे और प्याले जो बिलकुल शीशे हो रहे होंगे, शीशे भी चाँदी के जो ठीक अन्दाज़े करके रखे गए होंगे।

17. और वहाँ वे एक और जाम पिएँगे जिसमें सोंठ का मिश्रण होगा।



18. क्या कहना उस स्रोत का जो उसमें होगा, जिसका नाम सल-सबील है ।

19. उनकी सेवा में ऐसे किशोर दौड़ते फिर रहे होंगे जो सदैव किशोर ही रहेंगे। जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुए मोती हैं ।

20. जब तुम वहाँ देखोगे तो तुम्हें बड़ी नेमत और विशाल राज्य दिखाई देगा ।

21. उनके ऊपर हरे बारीक रेशमी वस्त्र और गाढ़े रेशमी कपड़े होंगे, और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब उन्हें पवित्र पेय पिलाएगा ।

22. "यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारा प्रयास क़द्र करने के योग्य है ।"[1]

23. निश्चय ही हमने अत्यन्त व्यवस्थित ढंग से तुमपर क़ुरआन अवतरित किया है;

24. अत: अपने रब के हुक्म और फ़ैसले के लिए धैर्य से काम लो और उनमें से किसी पापी या कृतघ्न का आज्ञापालन न करना ।

25. और प्रात:काल और संध्या समय अपने रब के नाम का स्मरण करो ।

26. और रात के कुछ हिस्से में भी उसे सजदा करो, लम्बी-लम्बी रात तक उसकी तसबीह करते रहो ।

27. निस्संदेह ये लोग शीघ्र प्राप्त होनेवाली चीज़ (संसार) से प्रेम रखते हैं और एक भारी दिन को अपने परे छोड़ रहे हैं ।

28. हमने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़-बन्द मज़बूत किए और हम जब चाहें उन जैसों को पूर्णत: बदल दें ।

1. अर्थात संसार में तुमने संमार्ग में जो भी प्रयास किया, वह सराहनीय है ।



29. निश्चय ही यह एक अनुस्मृति है, अब जो चाहे अपने रब की ओर मार्ग ग्रहण कर ले।

30. और तुम नहीं चाह सकते सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

31. वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाख़िल करता है। रहे ज़ालिम, तो उनके लिए उसने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

77.अल-मुरसलात

(मक्का में उतरी— आयतें 50)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी हैं वे (हवाएँ) जिनकी चोटी छोड़ दी जाती है।[1]

2-3. फिर ख़ूब तेज़ हो जाती हैं, और (बादलों को) उठाकर फैलाती हैं,

4. फिर मामला करती हैं अलग-अलग,

5-6. फिर पेश करती हैं याददिहानी इल्ज़ाम उतारने या चेतावनी देने के लिए,

7. निस्संदेह जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह निश्चय ही घटित होकर रहेगा।

8-10. अतः जब तारे विलुप्त (प्रकाशहीन) हो जाएँगे, और जब आकाश फट जाएगा, और जब पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण होकर बिखर जाएँगे;

11-12. और जब रसूलों का हाल यह होगा कि उनका समय नियत कर दिया गया होगा——किस दिन के लिए वे टाले गए हैं?

---

1. हवाओं को गवाह के रूप में पेश किया गया है। हवाओं की उपमा घोड़े से और उनके चलने-रुकने की उपमा घोड़े की पेशानी के बाल पकड़ने और छोड़ने से दी गई है।

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ۝
ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ۝ كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِينَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ
نَخْلُقكُّم مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ
مَّكِينٍ ۝ إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ
الْقَادِرُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ
نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ۝
وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُم مَّاءً
فُرَاتًا ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ انطَلِقُوا
إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ انطَلِقُوا إِلَىٰ
ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۝ لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي
مِنَ اللَّهَبِ ۝ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝

13. फ़ैसले के दिन के लिए।

14. और तुम्हें क्या मालूम कि वह फ़ैसले का दिन क्या है ?——

15. तबाही है उस दिन झुठलाने-वालों की !

16. क्या ऐसा नहीं हुआ कि हमने पहलों को विनष्ट किया ?

17. फिर उन्हीं के पीछे बादवालों को भी लगाते रहे ?

18. अपराधियों के साथ हम ऐसा ही करते हैं।

19. तबाही है उस दिन झुठलाने-वालों की !

20. क्या ऐसा नहीं है कि हमने तुम्हें तुच्छ जल से पैदा किया,

21. फिर हमने उसे एक सुरक्षित टिकने की जगह में रखा,

22. एक ज्ञात और निश्चित अवधि तक ?

23. फिर हमने अंदाज़ा ठहराया, तो हम क्या ही अच्छा अंदाज़ा ठहरानेवाले हैं।

24. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

25-26. क्या ऐसा नहीं है कि हमने धरती को समेट रखनेवाली बनाया, ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी,

27. और उसमें ऊँचे-ऊँचे पहाड़ जमाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया ?

28. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

29. चलो उस चीज़ की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे हो !

30. चलो तीन शाखाओंवाली छाया की ओर,

31. जिसमें न छाँव है और न वह अग्नि-ज्वाला से बचा सकती है।

32-33. निस्संदेह वे (ज्वालाएँ) महल जैसी (ऊँची) चिंगारियाँ फेंकती हैं मानो

كَأَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝
هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ
جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ۝ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ
فَكِيْدُوْنِ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اِنَّ
الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا
يَشْتَهُوْنَ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا
قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا
يَرْكَعُوْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ فَبِاَيِّ
حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝

वे पीले ऊँट हैं !

34. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !

35. यह वह दिन है कि वे कुछ बोल नहीं रहे हैं,

36. तो कोई उज्र पेश करें, (बात यह है कि) उन्हें बोलने की अनुमति नहीं दी जा रही है।

37 तबाही है उस दिन झुठलाने-वालों की।

38. "यह फ़ैसले का दिन है, हमने तुम्हें भी और पहलों को भी इकट्ठा कर दिया।

39. अब यदि तुम्हारे पास कोई चाल है तो मेरे विरुद्ध चलो।"

40. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

41. निस्संदेह डर रखनेवाले छाँवों और स्रोतों में हैं,

42. और उन फलों के बीच जो वे चाहें।

43. "खाओ-पियो मज़े से, उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे हो।"

44. निश्चय ही उत्तमकारों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

45. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

46. "खा लो और मज़े कर लो थोड़ा-सा, वास्तव में तुम अपराधी हो !"

47. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

48. जब उनसे कहा जाता है कि "झुको ! तो नहीं झुकते।"

49. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की !

50. अब आख़िर इसके पश्चात किस वाणी पर वे ईमान लाएँगे ?



78. अन-नबा

(मक्का में उतरी— आयतें 40)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. किस चीज़ के विषय में वे आपस में पूछ-गच्छ कर रहे हैं?

2-3. उस बड़ी ख़बर के संबंध में, जिसमें वे मतभेद रखते हैं।

4-7. कदापि नहीं, शीघ्र ही वे जान लेंगे। फिर कदापि नहीं, शीघ्र ही वे जान लेंगे। क्या ऐसा नहीं है कि हमने धरती को बिछौना बनाया और पहाड़ों को मेखें?

8-9. और हमने तुम्हें जोड़े-जोड़े पैदा किया, और तुम्हारी नींद को थकन दूर करनेवाली बनाया,

10-11. रात को आवरण बनाया, और दिन को जीवन-वृत्ति के लिए बनाया।

12. और तुम्हारे ऊपर सात सुदृढ़ आकाश निर्मित किए,

13. और एक तप्त और प्रकाशमान प्रदीप बनाया,

14. और बरस पड़नेवाली घटाओं से हमने मूसलाधार पानी उतारा,

15-17. ताकि हम उसके द्वारा अनाज और वनस्पति उत्पादित करें और सघन बाग़ भी। निस्संदेह फ़ैसले का दिन एक नियत समय है,

18-19. जिस दिन नरसिंघा में फूँक मारी जाएगी, तो तुम गिरोह के गिरोह चले आओगे। और आकाश खोल दिया जाएगा, तो द्वार ही द्वार हो जाएँगे;

20. और पहाड़ चलाए जाएँगे, तो वे बिलकुल मरीचिका[1] होकर रह जाएँगे।

21-22. वास्तव में जहन्नम एक घात-स्थल है; सरकशों का ठिकाना है।

23. वस्तुस्थिति यह है कि वे उसमें मुद्दत पर मुद्दत बिताते रहेंगे।

24. वे उसमें न किसी शीतलता का मज़ा चखेंगे और न किसी पेय का,

1. चमकती रेत जिसके अपवर्तन से पानी होने का भ्रम होता है।


إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝ جَزَاءً وِفَاقًا ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ
حِسَابًا ۝ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ۝ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ
كِتَابًا ۝ فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ
مَفَازًا ۝ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝ وَكَأْسًا
دِهَاقًا ۝ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ۝ جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً
حِسَابًا ۝ رَّبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ
مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ
إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن
شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ۝ إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ تُرَابًا ۝

25. सिवाय खौलते पानी और बहती पीप-रक्त के।

26. यह बदले के रूप में उनके कर्मों के ठीक अनुकूल होगा।

27. वास्तव में वे किसी हिसाब की आशा न रखते थे,

28. और उन्होंने हमारी आयतों को खूब झुठलाया,

29. और हमने हर चीज़ लिखकर गिन रखी है।

30. "अब चखो मज़ा कि यातना के अतिरिक्त हम तुम्हारे लिए किसी और चीज़ में बढ़ोत्तरी नहीं करेंगे।"

31. निस्संदेह डर रखनेवालों के लिए एक बड़ी सफलता है,

32. बाग़ हैं और अंगूर,

33. और नवयौवना समान उम्रवाली,

34. और छलकता जाम।

35. वे उसमें न तो कोई व्यर्थ बात सुनेंगे और न कोई झुठलाने की बात।

36. यह तुम्हारे रब की ओर से बदला होगा, हिसाब के अनुसार प्रदत्त।

37. वह आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है सबका "रब" है, अत्यन्त कृपाशील है, उसके सामने बात करना उनके बस में नहीं होगा।

38. जिस दिन रूह और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे, वे बोलेंगे नहीं, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे रहमान अनुमति दे और जो ठीक बात कहे।

39. वह दिन सत्य है। अब जो कोई चाहे अपने रब की ओर रुजू करे।

40. हमने तुम्हें निकट आ लगी यातना से सावधान कर दिया है। जिस दिन मनुष्य देख लेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा होगा, और इनकार करनेवाला कहेगा : "ऐ काश! कि मैं मिट्टी होता!"

79. अन-नाज़िआत

(मक्का में उतरी— आयतें 46)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. गवाह हैं वे (हवाएँ) जो ज़ोर से उखाड़ फेंकें,

2. और गवाह हैं वे (हवाएँ) जो नर्मी के साथ चलें,

3-4. और गवाह हैं वे जो वायुमंडल में तैरें, फिर एक-दूसरे से अग्रसर हों,

5. और मामले की तदबीर करें।

6. जिस दिन हिला डालेगी हिला डालनेवाली घटना,

7. उसके पीछे घटित होगी दूसरी (घटना)।



8-9. कितने ही दिल उस दिन काँप रहे होंगे, उनकी निगाहें झुकी होंगी।

10-11. वे कहते हैं: "क्या वास्तव में हम पहली हालत में फिर लौटाए जाएँगे? क्या जब हम खोखली गलित हड्डियाँ हो चुके होंगे?"

12. कहते हैं: "तब तो यह लौटना बड़े ही घाटे का होगा।"

13-14. वह तो बस एक ही झिड़की होगी, फिर क्या देखेंगे कि वे एक समतल मैदान में उपस्थित हैं।

15-17. क्या तुम्हें मूसा की ख़बर पहुँची है? जबकि उसके रब ने पवित्र घाटी 'तुवा' में उसे पुकारा था कि "फ़िरऔन के पास जाओ, उसने बहुत सिर उठा रखा है।

18. और कहो: 'क्या तू यह चाहता है कि स्वयं को पाक-साफ़ कर ले,

19. और मैं तेरे रब की ओर तेरा मार्गदर्शन करूँ कि तू (उससे) डरे?' "

20. फिर उसने (मूसा ने) उसको बड़ी निशानी दिखाई,

21. किन्तु उसने झुठला दिया और कहा न माना,

22-24. फिर सक्रियता दिखाते हुए पलटा, फिर (लोगों को) एकत्र किया



और पुकारकर कहा : "मैं तुम्हारा उच्चकोटि का स्वामी हूँ !"

25. अन्ततः अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया की शिक्षाप्रद यातना में पकड़ लिया।

26. निस्संदेह इसमें उस व्यक्ति के लिए बड़ी शिक्षा है जो डरे !

27-28. क्या तुम्हें पैदा करना अधिक कठिन कार्य है या आकाश को ? अल्लाह ने उसे बनाया, उसकी ऊँचाई को ख़ूब ऊँचा करके उसे ठीक-ठाक किया;

29. और उसकी रात को अन्धकारमय बनाया और उसका दिवस-प्रकाश प्रकट किया।

30. और धरती को देखो ! इसके पश्चात उसे फैलाया;

31. उसमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला।

32-33. और पहाड़ों को देखो ! उन्हें उस (धरती) में जमा दिया, तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए जीवन-सामग्री के रूप में।

34. फिर जब वह महाविपदा आएगी,

35. उस दिन मनुष्य जो कुछ भी उसने प्रयास किया होगा उसे याद करेगा।

36. और भड़कती आग (जहन्नम) देखनेवाले के लिए खोल दी जाएगी,

37-39. तो जिस किसी ने सरकशी की और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी होगी, तो निस्संदेह भड़कती आग ही उसका ठिकाना है।

40-41. और रहा वह व्यक्ति जिसने अपने रब के सामने खड़े होने का भय रखा और अपने जी को बुरी इच्छा से रोका, तो जन्नत ही उसका ठिकाना है।

42. वे तुमसे उस घड़ी के विषय में पूछते हैं कि वह कब आकर ठहरेगी ?

43. उसके बयान करने से तुम्हारा क्या संबंध ?



44. उसकी अन्तिम पहुँच तो तेरे रब से ही संबंध रखती है।

45. तुम तो बस उस व्यक्ति को सावधान करनेवाले हो जो उससे डरे।

46. जिस दिन वे उसे देखेंगे तो (ऐसा लगेगा) मानो वे (दुनिया में) बस एक शाम या उसकी सुबह ही ठहरे हैं।

80. अ-ब-स

(मक्का में उतरी— आयतें 42)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-3. उसने त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया, इस कारण कि उसके पास अन्धा आ गया। और तुझे क्या मालूम शायद वह स्वयं को सँवारता-निखारता हो।

4. या नसीहत हासिल करता हो तो नसीहत उसके लिए लाभदायक हो?

5-6. रहा वह व्यक्ति जो धनी हो गया है तू उसके पीछे पड़ा है——

7. हालाँकि वह अपने को न निखारे तो तुझपर कोई ज़िम्मेदारी नहीं आती——

8-10. और रहा वह व्यक्ति जो स्वयं तेरे पास दौड़ता हुआ आया, और वह डरता भी है, तो तू उससे बेपरवाई करता है।

11. कदापि नहीं, वे (आयतें) तो महत्वपूर्ण नसीहत हैं——

12. तो जो चाहे उसे याद कर ले—

13-16. प्रतिष्ठित, उच्च, पवित्र पन्नों में अंकित है, ऐसे कातिबों के हाथों में रहा करते हैं जो प्रतिष्ठित और नेक हैं।

17. विनष्ट हुआ मनुष्य ! कैसा अकृतज्ञ है !

18. उसको किस चीज़ से पैदा किया?

19. तनिक-सी बूँद से उसको पैदा किया, तो उसके लिए एक अंदाज़ा ठहराया,



20. फिर मार्ग को देखो, उसे सुगम कर दिया,

21. फिर उसे मृत्यु दी और क़ब्र में उसे रखवाया,

22. फिर जब चाहेगा उसे (जीवित करके) उठा खड़ा करेगा।——

23. कदापि नहीं, उसने उसको पूरा नहीं किया जिसका आदेश अल्लाह ने उसे दिया है।

24. अत: मनुष्य को चाहिए कि अपने भोजन को देखे,

25. कि हमने ख़ूब पानी बरसाया,

26. फिर धरती को विशेष रूप से फाड़ा,

27. फिर हमने उसमें उगाए अनाज,

28. और अंगूर और तरकारी,

29. और ज़ैतून और खजूर,

30. और घने बाग़,

31. और मेवे और घास-चारा,

32. तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए जीवन-सामग्री के रूप में।

33. फिर जब वह बहरा कर देनेवाली प्रचण्ड आवाज़ आएगी,

34. जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से,

35. और अपनी माँ और अपने बाप से,

36. और अपनी पत्नी और अपने बेटों से।

37. उनमें से प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन ऐसी पड़ी होगी जो उसे दूसरों से बेपरवाह कर देगी।

38-39. कितने ही चेहरे उस दिन रौशन होंगे, हँसते, प्रफुल्लित।



40. और कितने ही चेहरे होंगे जिनपर उस दिन धूल पड़ी होगी,

41. उनपर कलौंस छा रही होगी।

42. वही होंगे इनकार करनेवाले, दुराचारी लोग!

81. अत-तकवीर

(मक्का में उतरी— आयतें 29)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जब सूर्य लपेट दिया जाएगा[1],
2. जब तारे मैले हो जाएँगे,
3. जब पहाड़ चलाए जाएँगे,
4. जब दस मास की गाभिन ऊँटनियाँ आज़ाद छोड़ दी जाएँगी,
5. जब जंगली जानवर एकत्र किए जाएँगे,
6. जब समुद्र भड़का दिए जाएँगे,
7. जब लोग क़िस्म-क़िस्म कर दिए जाएँगे,
8. और जब जीवित गाड़ी गई लड़की से पूछा जाएगा
9. कि उसकी हत्या किस गुनाह के कारण की गई,
10. और जब कर्म-पत्र फैला दिए जाएँगे,
11. और जब आकाश की खाल उतार दी जाएगी[2],
12. जब जहन्नम को दहकाया जाएगा,

13-14. और जब जन्नत निकट कर दी जाएगी, तो कोई भी व्यक्ति जान लेगा कि उसने क्या उपस्थित किया है।

---

1. अर्थात, उसकी धूप और उसके प्रकाश आदि सिमटकर रह जाएँगे।
2. अर्थात आकाश पूर्णतः रक्तिम या लाल हो जाएगा।



15. अतः नहीं ! मैं क़सम खाता हूँ पीछे हटनेवालों की,

16. चलनेवालों, छिपने-दुबकनेवालों की ।[1]

17. साक्षी है रात्रि जब वह प्रस्थान करे,

18. और साक्षी है प्रातः जब वह साँस ले ।

19. निश्चय ही वह एक आदरणीय संदेशवाहक की लाई हुई वाणी है,

20. जो शक्तिवाला है, सिंहासनवाले के यहाँ जिसकी पैठ है ।

21. उसका आदेश माना जाता है, वहाँ वह विश्वासपात्र है ।[2]

22. तुम्हारा साथी कोई दीवाना नहीं,

23. उसने तो (पराकाष्ठा के) प्रत्यक्ष क्षितिज पर होकर उस (फ़रिश्ते) को देखा है ।

24. और वह परोक्ष के मामले में कृपण नहीं है,

25. और वह (कुरआन) किसी धुतकारे हुए शैतान की लाई हुई वाणी नहीं है ।

26. फिर तुम किधर जा रहे हो ?

27. वह तो सारे संसार के लिए बस एक अनुस्मृति है,

28. उसके लिए जो तुममें से सीधे मार्ग पर चलना चाहे ।

29. और तुम नहीं चाह सकते सिवाय इसके कि सारे जहान का रब अल्लाह चाहे ।[3]

---

1. संकेत कुछ नक्षत्रों की ओर है ।
2. ये गुण अल्लाह के विशिष्ट फ़रिश्ते हज़रत जिबरील (अलै०) के बयान हुए हैं । जो नबी (सल्ल०) के पास अल्लाह का संदेश लाते थे ।
3. अर्थात तुम सत्यमार्ग पर चलना नहीं चाहते, चाहते हो कि अल्लाह ही राह पर चलाए ।

82. अल-इनफ़ितार

(मक्का में उतरी— आयतें 19)


سُورَةُ الانفِطَارِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انفَطَرَتْ ۝ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انتَثَرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ
فُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ
وَأَخَّرَتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝
الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ
رَكَّبَكَ ۝ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ
لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝
إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जबकि आकाश फट जाएगा,
2. और जबकि तारे बिखर जाएँगे,
3. और जबकि समुद्र बह पड़ेंगे,
4. और जबकि क़ब्रें उखेड़ दी जाएँगी।
5. तब हर व्यक्ति जान लेगा जिसे उसने प्राथमिकता दी और पीछे डाला।
6. ऐ मनुष्य! किस चीज़ ने तुझे अपने उदार प्रभु के विषय में धोखे में डाल रखा है?
7. जिसने तेरा प्रारूप बनाया, फिर नख-शिख से तुझे दुरुस्त किया और तुझे संतुलन प्रदान किया।
8. जिस रूप में चाहा उसने तुझे जोड़कर तैयार किया।
9. कुछ नहीं, बल्कि तुम बदला दिए जाने को झुठलाते हो।
10. जबकि तुमपर निगरानी करनेवाले नियुक्त हैं,
11. प्रतिष्ठित लिपिक,
12. वे जान रहे होते हैं जो कुछ भी तुम करते हो।[1]
13. निस्संदेह वफ़ादार लोग नेमतों में होंगे।
14. और निश्चय ही दुराचारी भड़कती हुई आग में,

1. अर्थात वे कोई ऐसी मशीन नहीं हैं जो रिकार्ड तो कर ले, परन्तु उसे यह ख़बर न हो कि उसने क्या रिकार्ड किया। फ़रिश्तों को तुम्हारे बुरे-भले सभी कर्मों की ख़बर होती है, इसलिए उनसे शर्म करनी चाहिए।

15. जिसमें वे बदले के दिन प्रवेश करेंगे,

16. और उससे वे ओझल नहीं होंगे।

17. और तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन क्या है?

18. फिर तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन क्या है?

19. जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिए किसी चीज़ का अधिकारी न होगा, मामला उस दिन अल्लाह ही के हाथ में होगा।



83. अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन

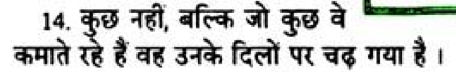
(मक्का में उतरी— आयतें 36)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. तबाही है घटानेवालों के लिए,
2. जो नापकर लोगों पर नज़र जमाए हुए लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं,
3. किन्तु जब उन्हें नापकर या तौलकर देते हैं तो घटाकर देते हैं।
4. क्या वे समझते नहीं कि उन्हें (जीवित होकर) उठना है,
5. एक भारी दिन के लिए,
6. जिस दिन लोग सारे संसार के रब के सामने खड़े होंगे?
7. कुछ नहीं, निश्चय ही दुराचारियों का काग़ज़ 'सिज्जीन' में है।[1]——
8. तुम्हें क्या मालूम कि 'सिज्जीन' क्या है?——
9. मुहर लगा हुआ काग़ज़।[2]

---

1. अर्थात, दुराचारी लोग जहन्नम के सिपाहियों को सौंप दिए जाएं। यह उनके लिए नियत हो चुका है।
2. अर्थात, दुराचारियों का काग़ज़ मुहर लगा हुआ है। उनके हक़ में जो कुछ फ़ैसला कर दिया गया है उसमें परिवर्तन होनेवाला नहीं।



مرقوم ۝ ويل يومئذ للمكذبين ۝ الذين يكذبون بيوم
الدين ۝ وما يكذب به إلا كل معتد أثيم ۝ إذا تتلى
عليه آياتنا قال أساطير الأولين ۝ كلا بل ران
على قلوبهم ما كانوا يكسبون ۝ كلا إنهم عن ربهم
يومئذ لمحجوبون ۝ ثم إنهم لصالوا الجحيم ۝ ثم
يقال هذا الذي كنتم به تكذبون ۝ كلا إن كتاب
الأبرار لفي عليين ۝ وما أدراك ما عليون ۝ كتاب
مرقوم ۝ يشهده المقربون ۝ إن الأبرار لفي نعيم ۝
على الأرائك ينظرون ۝ تعرف في وجوههم نضرة

10. तबाही है उस दिन झुठलानेवालों की,

11. जो बदले के दिन को झुठलाते हैं।

12. और उसे तो बस प्रत्येक वह व्यक्ति ही झुठलाता है जो सीमा का उल्लंघन करनेवाला, पापी है।

13. जब हमारी आयतें उसे सुनाई जाती हैं तो कहता है : "ये तो पहलों की कहानियाँ हैं।"

14. कुछ नहीं, बल्कि जो कुछ वे कमाते रहे हैं वह उनके दिलों पर चढ़ गया है।

15. कुछ नही, अवश्य ही वे उस दिन अपने रब से ओट में होंगे,

16. फिर वे भड़कती आग में जा पड़ेंगे।

17. फिर कहा जाएगा : "यह वही है जिसे तुम झुठलाते थे।"

18. कुछ नहीं, निस्संदेह वफ़ादार लोगों का काग़ज़ 'इल्लीयीन' (उच्च श्रेणी के लोगों) में है।[1]——

19. और तुम क्या जानो कि 'इल्लीयीन' क्या है?——

20. लिखा हुआ रजिस्टर।

21. जिसे देखने के लिए सामीप्य प्राप्त लोग उपस्थित होंगे,

22. निस्संदेह अच्छे लोग नेमतों में होंगे,

23. ऊँची मसनदों पर से देख रहे होंगे।

24. उनके चेहरों से तुम्हें नेमतों की ताज़गी और आभा का बोध हो रहा होगा,

1. अर्थात उच्च श्रेणी के लोगों में उनका सम्मिलित होना निश्चित हो चुका है।



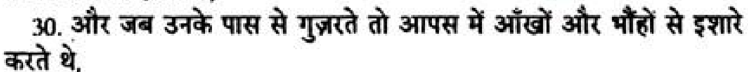
25. उन्हें मुहरबंद विशुद्ध पेय पिलाया जाएगा,

26. मुहर उसकी मुश्क की होगी ——जो लोग दूसरों पर बाज़ी ले जाना चाहते हों वे इस चीज़ को प्राप्त करने में बाज़ी ले जाने का प्रयास करें——

27. और उसमें 'तसनीम' का मिश्रण होगा,

28. हाल यह है कि वह एक स्रोत है, जिसपर बैठकर सामीप्य प्राप्त लोग पिएँगे ।

29. जो अपराधी हैं वे ईमान लानेवालों पर हँसते थे,



30. और जब उनके पास से गुज़रते तो आपस में आँखों और भौंहों से इशारे करते थे,

31. और जब अपने लोगों की ओर पलटते तो चहकते, इतराते हुए पलटते थे,

32. और जब उन्हें देखते तो कहते : "ये तो भटके हुए हैं ।"

33. हालाँकि वे उनपर कोई निगरानी करनेवाले बनाकर नहीं भेजे गए थे ।

34. तो आज ईमान लानेवाले, इनकार करनेवालों पर हँस रहे हैं,

35. ऊँची मसनदों पर से देख रहे हैं ।

36. क्या मिल गया बदला इनकार करनवालों को उसका जो कुछ वे करते रहे हैं ?

84. अल-इनशिक़ाक़

(मक्का में उतरी—— आयतें 25)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. जबकि आकाश फट जाएगा,

2. और वह अपने रब की सुनेगा[1], और उसे यही चाहिए भी ।

1. अर्थात अपने रब के आदेश का पालन करेगा ।


الْأَرْضُ مُدَّتْ ۙ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۙ وَأَذِنَتْ
لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۗ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ
كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۚ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۙ
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۙ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ
مَسْرُورًا ۗ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۙ فَسَوْفَ
يَدْعُو ثُبُورًا ۙ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۗ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ
مَسْرُورًا ۗ إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ۛ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ
بِهِ بَصِيرًا ۗ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۙ وَاللَّيْلِ وَمَا

3. जब धरती फैला दी जाएगी,

4. और जो कुछ उसके भीतर है उसे बाहर डालकर खाली हो जाएगी,

5. और वह अपने रब की सुनेगी, और उसे यही चाहिए भी।

6. ऐ मनुष्य ! तू मशक़्क़त करता हुआ अपने रब ही की ओर खिँचा चला जा रहा है और अन्ततः उससे मिलनेवाला है।

7. फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया,

8. तो उससे आसान, सरसरी हिसाब लिया जाएगा।

9. और वह अपने लोगों की ओर ख़ुश-ख़ुश पलटेगा।

10. और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (उसके बाएँ हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया गया,

11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा,

12. और दहकती आग में जा पड़ेगा।

13. वह अपने लोगों में मग्न था,

14. उसने यह समझ रखा था कि उसे कभी पलटना नहीं है।

15. क्यों नहीं, निश्चय ही उसका रब तो उसे देख रहा था !

16. अतः कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ सांध्य-लालिमा की,

17. और रात की और उसके समेट लेने की,



وَسَقَ ۙ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۙ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۗ
فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۙ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ
لَا يَسْجُدُوْنَ ۩ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ۖ وَاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ۖ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ اِلَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۙ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۙ وَشَاهِدٍ
وَّمَشْهُوْدٍ ۗ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۙ النَّارِ ذَاتِ
الْوَقُوْدِ ۙ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۙ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ

18. और चन्द्रमा की जबकि वह पूर्ण हो जाता है,

19. निश्चय ही तुम्हें मंज़िल पर मंज़िल चढ़ना है।

20. फिर उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते?

21. और जब उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया जाता है तो सजदे में नहीं गिर पड़ते?

22. नहीं, बल्कि इनकार करनेवाले तो झुठलाते हैं,

23. हालाँकि जो कुछ वे अपने अन्दर एकत्र कर रहे हैं, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

24. अतः उन्हें दुखद यातना की मंगल सूचना दे दो।

25. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए कभी न समाप्त होनेवाला प्रतिदान है।

85. अल-बुरूज

(मक्का में उतरी— आयतें 22)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है बुर्जोवाला आकाश,
2. और वह दिन जिसका वादा किया गया है,
3. और देखनेवाला और जो देखा गया।
4. विनष्ट हों खाईवाले,
5. ईंधन भरी आगवाले,
6. जबकि वे वहाँ बैठे होंगे।
7. और वे जो कुछ ईमानवालों के साथ करते रहे, उसे देखेंगे।



بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۝ وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا
بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ
الْحَرِيقِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝ إِنَّ
بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝ وَهُوَ
الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝ فَعَّالٌ لِمَا
يُرِيدُ ۝ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ
مُحِيطٌ ۝ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ۝ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ۝

8. उन्होंने उन (ईमानवालों) से केवल इस कारण बदला लिया और शत्रुता की कि वे उस अल्लाह पर ईमान रखते थे जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, प्रशंसनीय है,

9. जिसके लिए आकाशों और धरती की बादशाही है। और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है।

10. जिन लोगों ने ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को सताया और आज़माइश में डाला, फिर तौबा न की, निश्चय ही उनके लिए जहन्नम की यातना है और उनके लिए जलने की यातना है।

11. निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वही है बड़ी सफलता।

12. वास्तव में तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी ही सख़्त है।

13. वही आरम्भ करता है और वही पुनरावृत्ति करता है,

14. वह बड़ा क्षमाशील, बहुत प्रेम करनेवाला है,

15. सिंहासन का स्वामी है, बड़ा गौरवशाली,

16. जो चाहे उसे कर डालनेवाला।

17. क्या तुम्हें उन सेनाओं की भी खबर पहुँची है :

18. फ़िरऔन और समूद की?

19. नहीं, बल्कि जिन लोगों ने इनकार किया है, वे झुठलाने में लगे हुए हैं;

20. हालाँकि अल्लाह उन्हें घेरे हुए है, उनके आगे-पीछे से।

21. नहीं, बल्कि वह तो गौरवशाली क़ुरआन है,

22. सुरक्षित पट्टिका में अंकित है।

86. अत-तारिक़

(मक्का में उतरी— आयतें 17)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।



1. साक्षी है आकाश, और रात में प्रकट होनेवाला—

2. और तुम क्या जानो कि रात में प्रकट होनेवाला क्या है?

3. दमकता हुआ तारा!—

4. कि हर एक व्यक्ति पर एक निगरानी करनेवाला नियुक्त है।

5. अतः मनुष्य को चाहिए कि देखे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है।

6. एक उछलते पानी से पैदा किया गया है,

7. जो पीठ और पसलियों के मध्य से निकलता है।

8. निश्चय ही वह उसके लौटा देने की सामर्थ्य रखता है।

9. जिस दिन छिपी चीज़ें परखी जाएँगी,

10. तो उस समय उसके पास न तो अपनी कोई शक्ति होगी और न कोई सहायक।

11. साक्षी है आवर्तन (उलट-फेर) वाला आकाश[1],

12. और फट जानेवाली धरती।

13. वह दो-टूक बात है,

14. वह कोई हँसी-मज़ाक़ नहीं है।

15. वे एक चाल चल रहे हैं,

---

1. अर्थात वर्षा करनेवाला आकाश।



16. और मैं भी एक चाल चल रहा हूँ।

17. अतः मुहलत दे दो उन इनकार करनेवालों को; मुहलत दे दो उन्हें थोड़ी-सी।

87. अल-आला

(मक्का में उतरी— आयतें 19)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. तसबीह करो अपने सर्वोच्च रब के नाम की,

2. जिसने पैदा किया, फिर ठीक-ठाक किया,

3. जिसने निर्धारित किया, फिर मार्ग दिखाया,

4. जिसने वनस्पति उगाई,

5. फिर उसे ख़ूब घना और हरा-भरा कर दिया।

6. हम तुम्हें पढ़ा देंगे, फिर तुम भूलोगे नहीं।

7. बात यह है कि अल्लाह की इच्छा ही क्रियान्वित है। निश्चय ही वह जानता है खुले को भी और उसे भी जो छिपा रहे।

8. हम तुम्हें सहज ढंग से उस चीज़ का पात्र बना देंगे जो सहज एवं मृदुल (आरामदायक) है।

9. अतः तुम नसीहत करो, यदि नसीहत लाभप्रद हो!

10. नसीहत हासिल कर लेगा जिसको डर होगा,

11. किन्तु उससे कतराएगा वह अत्यन्त दुर्भाग्यवाला,

12-13. जो बड़ी आग में पड़ेगा, फिर वह उसमें न मरेगा न जिएगा।

14. सफल हो गया वह जिसने अपने आपको निखार लिया,

15. और अपने रब के नाम का स्मरण किया, अतः नमाज़ अदा की।

16. नहीं, बल्कि तुम तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो,

17. हालाँकि आख़िरत अधिक उत्तम और शेष रहनेवाली है।

18. निस्संदेह यही बात पहले की किताबों में भी है :

19. इबराहीम और मूसा की किताबों में।



88. अल-ग़ाशियह

(मक्का में उतरी— आयतें 26)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या तुम्हें उस छा जानेवाली की ख़बर पहुँची है?

2. उस दिन कितने ही चेहरे गिरे हुए होंगे,

3. कठिन परिश्रम में पड़े, थके-हारे,

4. दहकती आग में प्रवेश करेंगे।

5. खौलते हुए स्रोत से पिएँगे,

6. उनके लिए कोई खाना न होगा सिवाय एक प्रकार के ज़रीअ[1] के,

7. जो न पुष्ट करे और न भूख मिटाए।

8. उस दिन कितने ही चेहरे प्रफुल्लित और सौम्य होंगे,

9. अपने प्रयास पर प्रसन्न,

10. उच्च जन्नत में,

11. जिसमें कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे।

12. उसमें स्रोत प्रवाहित होगा,

13. उसमें ऊँची-ऊँची मसनदें होंगी,

---

1. एक प्रकार का ज़हरीला कांटेदार झाड़।



وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۙ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۙ وَّزَرَابِيُّ
مَبْثُوْثَةٌ ۗ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۗ وَ
اِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۗ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ
نُصِبَتْ ۗ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۗ فَذَكِّرْ ۗ اِنَّمَآ
اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۗ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۙ اِلَّا مَنْ
تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۙ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ۗ اِنَّ
اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ۙ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ

سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْفَجْرِ ۙ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۙ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۙ وَالَّيْلِ اِذَا

14. प्याले ढंग से रखे होंगे,

15. क्रम से गाव तकिए लगे होंगे,

16. और हर ओर क़ालीनें बिछी होंगी।

17. फिर क्या वे ऊँट की ओर नहीं देखते कि कैसा बनाया गया?

18. और आकाश की ओर कि कैसा ऊँचा किया गया?

19. और पहाड़ों की ओर कि कैसे खड़े किए गए?

20. और धरती की ओर कि कैसी बिछाई गई?

21. अच्छा तो नसीहत करो! तुम तो बस एक नसीहत करनेवाले हो।

22. तुम उनपर कोई दरोग़ा नहीं हो।

23. किन्तु जिस किसी ने मुँह फेरा और इनकार किया,

24. तो अल्लाह उसे बड़ी यातना देगा।

25. निस्संदेह हमारी ओर ही है उनका लौटना,

26. फिर हमारे ही ज़िम्मे है उनका हिसाब लेना।

89. अल-फ़ज्र

(मक्का में उतरी— आयतें 30)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. साक्षी है उषाकाल, साक्षी हैं दस रातें,

3. साक्षी है युग्म और अयुग्म[1],

4. साक्षी है रात जब वह विदा हो रही हो।

---

1. अर्थात सम-विषम।



يَسْرِ ۝ هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ۝ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ
فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ
مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝
فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ۝ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝ فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا
مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي
أَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا تَحَاضُّونَ
عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۝
وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا
دَكًّا ۝ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ

5. क्या इसमें बुद्धिमान के लिए बड़ी गवाही है?

6. क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने क्या किया आद के साथ,

7. स्तम्भोंवाले 'इरम' के साथ?

8. वे ऐसे थे जिनके सदृश बस्तियों में पैदा नहीं हुए।

9. और समूद के साथ, जिन्होंने घाटी में चट्टानें तराशी थी,

10. और मेखोंवाले फ़िरऔन के साथ?

11. वे लोग कि जिन्होंने देशों में सरकशी की,

12. और उनमें बहुत बिगाड़ पैदा किया।

13. अंततः तुम्हारे रब ने उनपर यातना का कोड़ा बरसा दिया।

14. निस्संदेह तुम्हारा रब घात में रहता है।

15. किन्तु मनुष्य का हाल यह है कि जब उसका रब इस प्रकार उसकी परीक्षा करता है कि उसे प्रतिष्ठा और नेमत प्रदान करता है, तो वह कहता है : "मेरे रब ने मुझे प्रतिष्ठित किया।"

16. किन्तु जब कभी वह उसकी परीक्षा इस प्रकार करता है कि उसकी रोज़ी नपी-तुली कर देता है, तो वह कहता है : "मेरे रब ने मेरा अपमान किया।"

17. कदापि नहीं, बल्कि तुम अनाथ का सम्मान नहीं करते,

18. और न मुहताज को खिलाने पर एक-दूसरे को उभारते हो,

19. और सारी मीरास समेटकर खा जाते हो,

20. और धन से उत्कट प्रेम रखते हो।

21. कुछ नहीं, जब धरती कूट-कूटकर चूर्ण-विचूर्ण कर दी जाएगी,

22. और तुम्हारा रब और फ़रिश्ता (बन्दों की) एक-एक पंक्ति के पास आएगा,

بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ۝
يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ
عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝ يَا أَيَّتُهَا
النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَّةً ۝
فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝

سُورَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ (٩٠)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَ
وَالِدٍ وَمَا وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ۝
أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۝ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا

23. और जहन्नम को उस दिन लाया जाएगा, उस दिन मनुष्य चेतेगा, किन्तु कहाँ है उसके लिए लाभप्रद उस समय का चेतना?

24. वह कहेगा : "ऐ काश ! मैंने अपने जीवन के लिए कुछ करके आगे भेजा होता।"

25. फिर उस दिन कोई नहीं जो उसकी जैसी यातना दे,

26. और कोई नहीं जो उसकी जकड़बन्द की तरह बाँधे।

27-28. "ऐ संतुष्टात्मा ! लौट अपने रब की ओर, इस तरह कि तू उससे राज़ी है वह तुझसे राज़ी है।

29. अत: मेरे बन्दों में सम्मिलित हो जा।

30. और प्रवेश कर मेरी जन्नत में।"

90. अल-बलद

(मक्का में उतरी— आयतें 20)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. सुनो ! मैं क़सम खाता हूँ इस नगर (मक्का) की——

2. हाल यह है कि तुम इसी नगर में रह रहे हो——

3. और बाप और उसकी संतान की,

4. निस्संदेह हमने मनुष्य को पूर्ण अनुकूलता और संतुलन के साथ पैदा किया।[1]

5. क्या वह समझता है कि उसपर किसी का बस न चलेगा?

6. कहता है कि "मैंने ढेरों माल उड़ा दिया।"

---

1. इसका यह अर्थ भी है : "निश्चय ही हमने मनुष्य को मशक़्क़त में पैदा किया।"



لُّبَدًا ۝ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗۤ اَحَدٌ ۝ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ
عَيْنَيْنِ ۝ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۝ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝
فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝
فَكُّ رَقَبَةٍ ۝ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ۝ يَّتِيْمًا
ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝ ثُمَّ كَانَ مِنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا
هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۝ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝

7. क्या वह समझता है कि किसी ने उसे देखा नहीं ?

8. क्या हमने उसे नहीं दीं दो आँखें,

9. और एक ज़बान और दो होंठ ?

10. और क्या ऐसा नहीं है कि हमने दिखाई उसे दो ऊँचाइयाँ ?

11. किन्तु वह तो हुमककर घाटी में से गुज़रा ही नहीं (और न उसने मुक्ति का मार्ग पाया)।

12. और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है !

13. किसी गरदन का छुड़ाना[1]

14. या भूख के दिन खाना खिलाना

15. किसी निकटवर्ती अनाथ को,

16. या धूल-धूसरित मुहताज को;

17. फिर यह कि वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और जिन्होंने एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की, और एक-दूसरे को दया की ताकीद की।

18. वही लोग हैं सौभाग्यशाली।

19. रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया, वे दुर्भाग्यशाली लोग हैं।

20. उनपर आग होगी, जिसे बंद कर दिया गया होगा।

---

1. अर्थात किसी को गुलामी से, ग़म से या किसी भी संकट से मुक्ति दिलाना।

91. अश-शम्स

(मक्का में उतरी— आयतें 15)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।



1. साक्षी है सूर्य और उसकी प्रभा,
2. और चन्द्रमा, जबकि वह उसके पीछे आए,
3. और दिन, जबकि वह उसे प्रकट कर दे,
4. और रात, जबकि वह उसको ढाँक ले।
5. और आकाश और जैसा कुछ उसे उठाया,
6. और धरती और जैसा कुछ उसे बिछाया।
7. और आत्मा और जैसा कुछ उसे सँवारा।
8. फिर उसके दिल में डाली उसकी बुराई और उसकी परहेज़गारी।
9. सफल हो गया जिसने उसे[1] विकसित किया।
10. और असफल हुआ जिसने उसे दबा दिया।
11. समूद ने अपनी सरकशी से झुठलाया,
12. जब उनमें का[2] सबसे बड़ा दुर्भाग्यशाली उठ खड़ा हुआ,
13. तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा : "सावधान, अल्लाह की ऊँटनी और उसके पिलाने (की बारी) से।"
14. किन्तु उन्होंने उसे झुठलाया और उस ऊँटनी की कूचें काट डालीं।

---

1. अर्थात अपनी आत्मा और व्यक्तित्व को।
2. अर्थात समूद क़ौम के लोगों का।


عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝ وَلَا يَخَافُ
عُقْبٰهَا ۝

سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ (٩٢)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ۝ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ۝ وَمَا خَلَقَ
الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰٓى ۝ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝ فَأَمَّا مَنْ أَعْطٰى
وَاتَّقٰى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝ وَ
أَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهٗ
لِلْعُسْرٰى ۝ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهٗٓ إِذَا تَرَدّٰى ۝
إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝ وَإِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْأُوْلٰى ۝

अन्ततः उनके रब ने उनके गुनाह के क़ारण उनपर तबाही डाल दी और उन्हें बराबर कर दिया।

15. और उसे उसके परिणाम का कोई भय नहीं।

92. अल-लैल

(मक्का में उतरी— आयतें 21)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है रात जबकि वह छा जाए,

2. और दिन जबकि वह प्रकाशमान हो,

3. और नर और मादा का पैदा करना,

4. कि तुम्हारा प्रयास भिन्न-भिन्न है।

5. तो जिस किसी ने दिया और डर रखा,

6. और अच्छी चीज़ की पुष्टि की,

7. हम उसे सहज ढंग से उस चीज़ का पात्र बना देंगे, जो सहज और मृदुल (सुख-साध्य) है।

8. रहा वह व्यक्ति जिसने कंजूसी की और बेपरवाही बरती,

9. और अच्छी चीज़ को झुठला दिया,

10. हम उसे सहज ढंग से उस चीज़ का पात्र बना देंगे, जो कठिन चीज़ (कष्ट-साध्य) है।

11. और उसका माल उसके कुछ काम न आएगा, जब वह (सिर के बल) खड्ड में गिरेगा।

12. निस्संदेह हमारे ज़िम्मे है मार्ग दिखाना।

13. और वास्तव में हमारे ही अधिकार में है आख़िरत और दुनिया भी।



14. अतः मैंने तुम्हें दहकती आग से सावधान कर दिया।

15. इसमें बस वही पड़ेगा जो बड़ा ही अभागा होगा,

16. जिसने झुठलाया और मुँह फेरा।

17. और उससे बच जाएगा वह अत्यन्त परहेज़गार व्यक्ति,

18. जो अपना माल देकर अपने आपको निखारता है।

19. और हाल यह है कि किसी का उसपर उपकार नहीं कि उसका बदला दिया जा रहा हो,

20. बल्कि इससे अभीष्ट केवल उसके अपने उच्च रब के मुख (प्रसन्नता) की चाह है।

21. और वह शीघ्र ही राज़ी हो जाएगा।

93. अज़-ज़ुहा

(मक्का में उतरी— आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है चढ़ता दिन,

2. और रात जबकि उसका सन्नाटा छा जाए।

3. तुम्हारे रब ने तुम्हें न तो विदा किया[1] और न वह बेज़ार (अप्रसन्न) हुआ।

4. और निश्चय ही बाद में आनेवाली (अवधि) तुम्हारे लिए पहलेवाली से उत्तम है।

5. और शीघ्र ही तुम्हारा रब तुम्हें प्रदान करेगा कि तुम प्रसन्न हो जाओगे।

---

1. अर्थात उसने तुम्हें छोड़ा नहीं और तुमसे अपना संबंध तोड़ा नहीं।


فترضى ألم يجدك يتيما فآوى ووجدك ضالا
فهدى ووجدك عائلا فأغنى فأما اليتيم فلا
تقهر وأما السائل فلا تنهر وأما بنعمة ربك فحدث
سورة الانشراح مكية
بسم الله الرحمن الرحيم
ألم نشرح لك صدرك ووضعنا عنك وزرك
الذي أنقض ظهرك ورفعنا لك ذكرك فإن
مع العسر يسرا إن مع العسر يسرا فإذا
فرغت فانصب وإلى ربك فارغب

6. क्या ऐसा नहीं कि उसने तुम्हें अनाथ पाया तो ठिकाना दिया?

7. और तुम्हें मार्ग से अपरिचित पाया तो मार्ग दिखाया?

8. और तुम्हें निर्धन पाया तो समृद्ध कर दिया?

9. अत: जो अनाथ हो उसे मत दबाना,

10. और जो माँगता हो उसे न झिड़कना,

11. और जो तुम्हारे रब की अनुकम्पा है, उसे बयान करते रहो।

94. अल-इनशिराह

(मक्का में उतरी— आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या ऐसा नहीं कि हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल दिया?
2. और तुमपर से तुम्हारा बोझ उतार दिया,
3. जो तुम्हारी कमर तोड़े डाल रहा था?
4. और तुम्हारे लिए तुम्हारे ज़िक्र को ऊँचा कर दिया?[1]
5. अत: निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी भी है।
6. निस्संदेह कठिनाई के साथ आसानी भी है।
7. अत: जब निवृत्त हो तो परिश्रम में लग जाओ,
8. और अपने रब से लौ लगाओ।

---

1. अर्थात तुम्हें नेकनामी और ख्याति प्रदान की।


سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝ وَطُورِ سِينِينَ ۝ وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ۝

95. अत-तीन

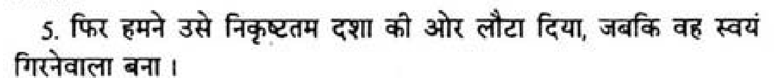
(मक्का में उतरी—आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1-2. साक्षी हैं तीन और ज़ैतून और तूर सीनीन[1],

3. और यह शांतिपूर्ण भूमि (मक्का) [2]

4. निस्संदेह हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया।



5. फिर हमने उसे निकृष्टतम दशा की ओर लौटा दिया, जबकि वह स्वयं गिरनेवाला बना।

6. सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म किए, तो उनके लिए कभी न समाप्त होनेवाला बदला है।

7. अब इसके बाद क्या है, जो बदले के विषय में तुम्हें झुठलाए ?[3]

8. क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है ?[4]



1. ये तीनों पहाड़ों के नाम हैं, जहाँ अल्लाह ने क़ौमों के बारे में महत्त्वपूर्ण फ़ैसले किए।
2. यहाँ, जिन स्थानों को गवाह बनाया गया है उनका संबंध इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं से है, जिनके द्वारा अल्लाह ने एक क़ौम को नेतृत्व-पद से च्युत करके दूसरी क़ौम को उस पर आसीन किया। इसलिए पुरस्कार और दण्ड के बारे में किसी संदेह में कदापि नहीं पड़ना चाहिए।
3. इसका यह अर्थ भी लिया गया है : "अब इसके पश्चात क्या है, जो तुझे बदले के झुठलाने पर उभार रही है।"
4. अर्थात अल्लाह से भी बढ़कर कोई फ़ैसला करनेवाला है ?

96. अल-अलक़

(मक्का में उतरी —— आयतें 19)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।


العلق ٩٦

سورة العلق مكية

بسم الله الرحمن الرحيم

اقرأ باسم ربك الذي خلق ۚ خلق الإنسان من
علق ۚ اقرأ وربك الأكرم ۙ الذي علم بالقلم ۙ
علم الإنسان ما لم يعلم ۗ كلا إن الإنسان ليطغى ۙ
أن رآه استغنى ۗ إن إلى ربك الرجعى ۗ أرأيت الذي
ينهى ۙ عبدا إذا صلى ۗ أرأيت إن كان على
الهدى ۙ أو أمر بالتقوى ۗ أرأيت إن كذب وتولى ۗ
ألم يعلم بأن الله يرى ۗ كلا لئن لم ينته لنسفعا
بالناصية ۙ ناصية كاذبة خاطئة ۚ فليدع ناديه ۙ

1. पढ़ो, अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया,

2. पैदा किया मनुष्य को जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से।

3. पढ़ो, हाल यह है कि तुम्हारा रब बड़ा ही उदार है,

4. जिसने क़लम के द्वारा शिक्षा दी,

5. मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह न जानता था।

6. कदापि नहीं, मनुष्य सरकशी करता है,

7. इसलिए कि वह अपने आपको आत्मनिर्भर देखता है।

8. निश्चय ही तुम्हारे रब ही की ओर पलटना है।

9-10. क्या तुमने देखा उस व्यक्ति को जो एक बन्दे को रोकता है, जब वह नमाज़ अदा करता है ?——

11. तुम्हारा क्या विचार है ? यदि वह सीधे मार्ग पर हो,

12. या परहेज़गारी का हुक्म दे (उसके अच्छा होने में क्या संदेह है)।

13. तुम्हारा क्या विचार है ? यदि उस (रोकनेवाले) ने झुठलाया और मुँह मोड़ा (तो उसके बुरा होने में क्या संदेह है)।——

14. क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है ?

15. कदापि नहीं, यदि वह बाज़ न आया तो हम चोटी पकड़कर घसीटेंगे,

16. झूठी, ख़ताकार चोटी।

17. अब बुला ले वह अपनी मजलिस को !



18. हम भी बुलाए लेते हैं सिपाहियों को।

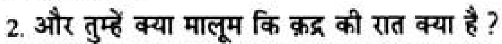
19. कदापि नहीं, उसकी बात न मानो और सजदे करते और क़रीब होते रहो।

97. अल-क़द्र

(मक्का में उतरी— आयतें 5)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. हमने इसे[1] क़द्र की रात[2] में अवतरित किया।



2. और तुम्हें क्या मालूम कि क़द्र की रात क्या है?

3. क़द्र की रात उत्तम है हज़ार महीनों से,

4. उसमें फ़रिश्ते और रूह हर महत्वपूर्ण मामले में अपने रब की अनुमति से उतरते हैं।

5. वह रात पूर्णतः शांति और सलामती है, उषाकाल के उदय होने तक।

98. अल-बैयिनह

(मक्का में उतरी— आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. किताबवालों और मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने इनकार किया वे कुफ़्र (इनकार) से अलग होनेवाले नहीं[3] जब तक कि उनके पास

---

1. अर्थात क़ुरआन को।
2. अर्थात गौरव प्राप्त रात्रि।
3. अर्थात वे कुफ़्र और इनकार से बाज़ नहीं आने के। वे तो यही कहते आए हैं कि हम तो उस समय मानेंगे, जबकि हम स्पष्ट प्रमाण और चमत्कार देख लें।



स्पष्ट प्रमाण न आ जाए;

2. अल्लाह की ओर से एक रसूल पवित्र पृष्ठों को पढ़ता हुआ;

3. जिनमें ठोस और ठीक आदेश अंकित हों,

4. हालाँकि जिन्हें किताब दी गई थी। वे इसके पश्चात फूट में पड़े कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ चुका था।

5. और उन्हें आदेश भी बस यही दिया गया था कि वे अल्लाह की बन्दगी करें निष्ठा एवं विनयशीलता को उसके लिए विशिष्ट करके, बिलकुल एकाग्र होकर, और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें। और यही है सत्यवादी समुदाय का धर्म।

6. निस्संदेह किताबवालों और मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने इनकार किया है, वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे; उसमें सदैव रहने के लिए। वही पैदा किए गए प्राणियों में सबसे बुरे हैं।

7. किन्तु निश्चय ही वे लोग, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए पैदा किए गए प्राणियों में सबसे अच्छे हैं।

8. उनका बदला उनके अपने रब के पास सदाबहार बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। यह कुछ उसके लिए है, जो अपने रब से डरा।

99. अज़-ज़िलज़ाल

(मक्का में उतरी— आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. जब धरती इस प्रकार हिला डाली जाएगी जैसा उसे हिलाया जाना है,

2. और धरती अपने बोझ बाहर निकाल देगी,

3. और मनुष्य कहेगा : "उसे क्या हो गया है ?"

4. उस दिन वह अपना वृत्तांत सुनाएगी,

5. इस कारण कि तुम्हारे रब ने उसे यही संकेत किया होगा।

6. उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे, ताकि उन्हें उनके कर्म दिखाए जाएँ।

7. अतः जो कोई कणभर भी नेकी करेगा, वह उसे देख लेगा,

8. और जो कोई कणभर भी बुराई करेगा, वह भी उसे देख लेगा।



100. अल-आदियात

(मक्का में उतरी— आयतें 11)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. साक्षी है जो हाँफते-फुंकार मारते हुए दौड़ते हैं,[1]
2. फिर ठोकरों से चिनगारियाँ निकालते हैं,
3. फिर सुबह सवेरे धावा मारते होते हैं,
4. उसमें उठाया उन्होंने गर्द-ग़ुबार।
5. और इसी हाल में वे दल में जा घुसे।
6. निस्संदेह मनुष्य अपने रब का बड़ा अकृतज्ञ है,
7. और निश्चय ही वह स्वयं इसपर गवाह है!
8. और निश्चय ही वह धन के मोह में बड़ा दृढ़ है।
9. तो क्या वह जानता नहीं जब उगलवा लिया जाएगा जो क़ब्रों में है।
10. और स्पष्ट अनावृत्त कर दिया जाएगा जो कुछ सीनों में है।
11. निस्संदेह उनका रब उस दिन उनकी पूरी ख़बर रखता होगा।

1. यहाँ घोड़ों की ओर संकेत है।

101. अल-क़ारियह

(मक्का में उतरी— आयतें 11)



अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. वह खड़खड़ानेवाली !
2. क्या है वह खड़खड़ाने वाली ?
3. और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है वह खड़खड़ानेवाली ?
4. जिस दिन लोग बिखरे हुए पतंगों के सदृश हो जाएँगे,
5. और पहाड़ धुनके हुए रंग-बिरंग के ऊन जैसे हो जाएँगे।
6. फिर जिस किसी के वज़न[1] भारी होंगे,
7. वह मनभाते जीवन में रहेगा।
8. और रहा वह व्यक्ति जिसके वज़न हलके होंगे,
9. उसकी माँ होगी गहरा खड्ड।[2]
10. और तुम्हें क्या मालूम कि वह क्या है ?
11. आग है दहकती हुई।

102. अत-तकासुर

(मक्का में उतरी— आयतें 8)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. तुम्हें एक-दूसरे के मुक़ाबले में बहुतायत के प्रदर्शन और घमंड ने ग़फ़लत में डाल रखा है,
2. यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुँच गए।

---

1. अर्थात अच्छे कर्म।
2. अर्थात उसका ठिकाना गहरा गड्ढा होगा।



3. कुछ नहीं, तुम शीघ्र ही जान लोगे ।

4. फिर, कुछ नहीं, तुम्हें शीघ्र ही मालूम हो जाएगा—

5. कुछ नहीं, अगर तुम विश्वसनीय ज्ञान के रूप में जान लो !(तो तुम धन- दौलत के पुजारी न बनो ।)——

6. अवश्य ही तुम भड़कती आग से दो-चार होगे ।

7. फिर सुनो, उसे अवश्य देखोगे इस दशा में कि वह यथावत विश्वास होगा ।

8. फिर निश्चय ही उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा ।

103. अल-अस्र

(मक्का में उतरी—— आयतें 3)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. गवाह है गुज़रता समय,

2. कि वास्तव में मनुष्य घाटे में है,

3. सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए और एक-दूसरे को हक़ की ताकीद की, और एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की ।

104. अल-हु-म-ज़ह

(मक्का में उतरी—— आयतें 9)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. तबाही है हर कचोके लगानेवाले, ऐब निकालनेवाले के लिए,

2. जो माल इकट्ठा करता और उसे गिनता रहा ।[1]

1. या उसे काम आनेवाली चीज़ समझा ।



3. समझता है कि उसके माल ने उसे अमर कर दिया।

4. कदापि नहीं, वह चूर-चूर कर देनेवाली में फेंक दिया जाएगा,

5. और तुम्हें क्या मालूम कि वह चूर-चूर कर देनेवाली क्या है?

6. वह अल्लाह की दहकाई हुई आग है,

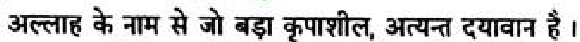
7. जो झाँक लेती है दिलों को।

8. वह उनपर ढाँककर बन्द कर दी गई होगी,

9. लम्बे-लम्बे स्तम्भों में।

105. अल-फ़ील

(मक्का में उतरी— आयतें 5)



अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने हाथीवालों के साथ कैसा बरताव किया?

2. क्या उसने उनकी चाल को अकारथ नहीं कर दिया?

3. और उनपर नियुक्त होने को झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे,

4. उनपर कंकरीले पत्थर मार रहे थे।

5. अन्ततः उन्हें ऐसा कर दिया, जैसे खाने का भूसा हो।

106. क़ुरैश

(मक्का में उतरी— आयतें 4)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कितना है क़ुरैश को लगाए और परचाए रखना,

2. लगाए और परचाए रखना उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा से।[1]

---

1. अर्थात जाड़े और गर्मी की व्यापारिक यात्राओं का उन्हें अभ्यस्त बनाया है।



فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّن
جُوعٍ وَآمَنَهُم مِّنْ خَوْفٍ ۝
سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ۝ فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ
الْيَتِيمَ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝ فَوَيْلٌ
لِّلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝
الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝
سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝

3. अत: उन्हें चाहिए कि इस घर (काबा) के रब की बन्दगी करें,

4. जिसने उन्हें खिलाकर भूख से बचाया और निश्चिन्तता प्रदान करके भय से बचाया।

107. अल-माऊन

(मक्का में उतरी— आयतें 7)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. क्या तुमने उसे देखा जो दीन को झुठलाता है ?[1]

2. वही तो है जो अनाथ को धक्के देता है,

3. और मुहताज के खिलाने पर नहीं उकसाता।

4. अत: तबाही है उन नमाज़ियों के लिए,

5. जो अपनी नमाज़ से[2] ग़ाफ़िल (असावधान) हैं,

6. जो दिखावे के कार्य करते हैं,

7. और साधारण बरतने की चीज़ भी किसी को नहीं देते।

108. अल-कौसर

(मक्का में उतरी— आयतें 3)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. निश्चय ही हमने तुम्हें कौसर[3] प्रदान किया,

2. अत: तुम अपने रब ही के लिए नमाज़ पढ़ो और (उसी के लिए) क़ुरबानी करो।

---

1. अर्थात जो बदले के दिन और धर्म को झुठलाता है।
2. अर्थात अपनी वास्तविक जीवनचर्या से।
3. अर्थात दुनिया और आख़िरत की अनगिनत भलाइयाँ और नेमतें।

3. निस्संदेह तुम्हारा जो वैरी है वही जड़कटा है ।


إن شانئك هو الأبتر
سورة الكافرون
بسم الله الرحمن الرحيم
قل يا أيها الكافرون لا أعبد ما تعبدون ولا
أنتم عابدون ما أعبد ولا أنا عابد ما عبدتم ولا
أنتم عابدون ما أعبد لكم دينكم ولي دين
سورة النصر
بسم الله الرحمن الرحيم
إذا جاء نصر الله والفتح ورأيت الناس
يدخلون في دين الله أفواجا فسبح بحمد
ربك واستغفره إنه كان توابا

109. अल-काफ़िरून

(मक्का में उतरी— आयतें 6)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. कह दो : "ऐ इनकार करने-वालो !

2. मैं वैसी बन्दगी नहीं करूँगा जैसी बन्दगी तुम करते हो,

3. और न तुम वैसी बन्दगी करनेवाले हो जैसी बन्दगी मैं करता हूँ ।

4. और न मैं वैसी बन्दगी करनेवाला हूँ जैसी बन्दगी तुमने की है ।

5. और न तुम वैसी बन्दगी करनेवाले हुए जैसी बन्दगी मैं करता हूँ ।

6. तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म !"

110. अन-नस्र

(मक्का में उतरी— आयतें 3)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. जब अल्लाह की सहायता आ जाए और विजय प्राप्त हो,

2. और तुम लोगों को देखो कि वे अल्लाह के दीन (धर्म) में गिरोह के गिरोह प्रवेश कर रहे हैं,

3. तो अपने रब की प्रशंसा करो और उससे क्षमा चाहो । निस्संदेह वह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला है ।

111. अल-लहब

(मक्का में उतरी— आयतें 5)



अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. टूट गए अबू लहब के दोनों हाथ और वह स्वयं भी विनष्ट हो गया !

2. न उसका माल उसके काम आया और न वह कुछ जो उसने कमाया।

3. वह शीघ्र ही प्रज्वलित भड़कती आग में पड़ेगा,

4. और उसकी स्त्री भी ईंधन लादनेवाली,

5. उसकी गरदन में खजूर के रेशों की बटी हुई रस्सी पड़ी है।

112. अल-इख़लास

(मक्का में उतरी— आयतें 4)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. कहो : "वह अल्लाह यकता है,
2. अल्लाह निरपेक्ष (और सर्वाधार) है,
3. न वह जनिता है और न जन्य[1],
4. और न कोई उसका समकक्ष है।"

---

1. अर्थात न वह किसी का बाप है और न बेटा।

113. अल-फ़लक़

(मक्का में उतरी— आयतें 5)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।



1. कहो : "मैं शरण लेता हूँ प्रकट करनेवाले रब[1] की,
2. जो कुछ भी उसने पैदा किया उसकी बुराई से,
3. और अँधेरे की बुराई से जबकि वह घुस आए,
4. और गाँठों में फूँक मारने-वालों (या फूँक मारनेवालियों) की बुराई से,
5. और ईर्ष्यालु की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।"

1. अर्थात उस रब की जो रात के परदे को फाड़कर सुबह को प्रकट करता है, गुठली से पौधा और दाने से अंकुर निकालता है। इत्यादि।

114. अन-नास

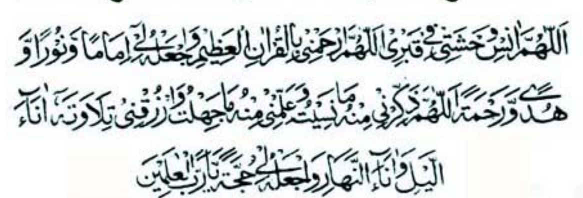
(मक्का में उतरी— आयतें 6)



अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।

1. कहो : "मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के रब की,
2. मनुष्यों के सम्राट की,
3. मनुष्यों के उपास्य की,
4. वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से,
5. जो मनुष्यों के सीनों (दिलों) में वसवसा डालता है,
6. जो जिन्नों में से भी होता है और मनुष्यों में से भी ।"

क़ुरआन पढ़ने के बाद की दुआ



अल्ला हुम-म आनिस वहशति फ़ी क़बरी अल्ला हुम-मर-हमनी बिल क़ुरआनिल अज़ीम वज'अलहु ली इमामौं व नूरौं व हुदौं व रहमतन अल्लाहुम-म जक्किरनी मिनहु मा नसीतु व 'अल्लिमनी मा जहिलतु वरज़ुक़नी तिलावतहु आना-अल्लैलि व आना-अन्नहारि वज 'अलहु ली हुज्जतैं या रब्बल आलमीन।

हे अल्लाह ! मेरी क़ब्र की घबराहट को लगाव से बदल दे । हे अल्लाह ! मुझ पर महान क़ुरआन के द्वारा दया कर और उसे मेरा नायक, प्रकाश, मार्गदर्शन एवं दयालुता बना । हे अल्लाह ! उसमें से जो मैं भूल गया हूँ मुझे याद दिला, जो नहीं जानता मुझे सिखा, और रात और दिन की घड़ियों में मुझे उसके पढ़ने का सौभाग्य प्रदान कर। हे अल्लाह ! सारे संसार के पालनकर्ता स्वामी, इसे मेरे लिए दलील बना।



(कोष्टक में सूरा नं0 दिए गए हैं और कोष्टक से बाहर आयत नं0)

बुनियादी अक़ीदे और धारणाएँ

ईमान और धारणाएँ: **[2]** 4, 5, 62, 97-99, 120, 121, 136, 177, 285 **[3]** 114, 171 **[4]** 47, 136, 162, 170 **[5]** 9, 15, 68, 69, 81 **[6]** 31, 151-156 **[7]** 147, 157, 158 **[8]** 20 **[10]** 7, 8 **[11]** 23 **[13]** 19, 22, 23 **[18]** 105, 107, 108 **[23]** 69 **[24]** 55, 62, **[25]** 11 **[26]** 47, 48 **[27]** 3, 4 **[29]** 47-52, 56, 58 **[37]** 16-26 **[39]** 41 **[41]** 30 **[47]** 2, 33 **[48]** 13, 17, 18 **[64]** 8, 11-13 **[65]** 10, 11 **[72]** 23

ईमान का महत्व: **[2]** 2, 3, 256, 257 **[3]** 193 **[6]** 154 **[7]** 157 **[10]** 66 **[11]** 24 **[24]** 40 **[26]** 52 **[28]** 5 **[53]** 28

ईमान और व्यवहार का पारस्परिक सम्बन्ध: **[2]** 2-4, 24, 81-86, 264, 277 **[4]** 172, 173 **[5]** 5, 9, 10 **[6]** 89, 154 **[7]** 147 **[9]** 17, 19 **[11]** 16, 23 **[14]** 24-27 **[16]** 97 **[18]** 103-106 **[20]** 73-76 **[24]** 39 **[33]** 19 **[39]** 33, 65 **[47]** 1, 2, 7 **[103]** 1-3

तौहीद और शिर्क (बहुदेव वाद): **[16]** 51 **[17]** 46 **[20]** 98 **[21]** 56 **[28]** 88 **[37]** 4, 5, 35, 36 **[38]** 5, 65-68 **[39]** 45 **[43]** 84 **[112]** 1-4

तौहीद के प्रमाण: **[2]**133, 258 **[3]** 51, 68, 95 **[5]** 72 **[6]** 74-81 **[7]** 59, 65, 73, 85 **[9]** 114 **[11]** 61, 75, 84 **[12]** 39, 40 **[14]** 35, 36 **[16]** 36 **[19]** 36, 41-48 **[20]** 14, 98 **[21]** 25, 51-70 **[22]** 26-28 **[23]** 23, 32 **[26]** 69-82 **[29]** 16-26 **[37]** 83-99 **[43]** 64 **[60]** 4 **[98]** 5

तौहीद के नैतिक प्रभाव

रिसालत

अल्लाह की किताब

कुरआन का अल्लाह के कलाम होने का प्रमाण: [2] 23, 24 [10] 16, 38 [11] 13, 14 [16] 101, 102 [17] 88 [25] 4-6, 32, 33 [41] 2-4, 44 [52] 33, 34 [69] 44-47

कुरआन मजीद की विशिष्टिता: [2] 2, 99 [4] 47, 105 [5] 15, 16 [7] 3, 52, 157 [10] 15 [15] 9 [17] 9 [18] 1, 27 [25] 6 [26] 210, 212 [34] 6 [41] 41, 42 [53] 3, 4 [69] 51 [75] 17, 19 [86] 6

कुरआन निरीक्षण और सोच–विचार की दावत देता है: [7] 185 [12] 105 [41] 53 [51] 21

आख़िरत (परलोक)

आख़िरत की अवश्यकता एंव अनिवार्यता: [7] 51, 146, 147 [10] 8 [16] 22 [18] 103-105 [23] 55, 56, 115 [27] 4 [28] 39, 79, 80 [30] 7 [38] 27, 28 [44] 34, 40 [45] 21-23 [64] 7 [68] 35-41 [75] 1, 2, 20, 21, 36 [81] 8, 9 [87] 16, 17 [90] 4, 5 [107] 1-7

आख़िरत पर ईमान: [6] 31, 94 [7] 147, 172, 173 [18] 49 [19] 80, 95 [24] 24 [36] 12, 65 [39] 24, 68, 69 [40] 17 [41] 20, 21 [44] 40 [45] 28, 29 [54] 52, 53 [56] 49, 50 [58] 6 [67] 8 [69] 19, 25 [75] 13-15 [77] 11 [79] 18, 34, 35 [82] 5 [84] 7-10 [86] 9-14 [89] 23, 24 [99] 2, 5-8 [100] 9, 10

आख़िरत का इनकार करने वालों के विचार: [7] 51, 146, 147 [10] 7 [13] 5 [16] 22 [18] 103, 105 [19] 66, 67 [22] 5 [23] 55, 56, 82, 83 [27] 4 [28] 39, 79, 80 [30] 7 [32] 10, 11 [34] 7, 8 [36] 77-79 [44] 33, 34 [45] 24, 25, 32 [50] 3 [56] 47-50 [75] 20, 21 [79] 10, 12 [87] 16, 17 [90] 4, 5

नैतिकता पर आख़िरत के इनकार के कुप्रभाव: [38] 26 [75] 3-5, 20, 21 [76] 27 [83] 12, 1-6 [89] 17-20 [102] 1-8 [107] 1-3

नैतिकता

नैतिक बुराइयों के वास्तविक कारण

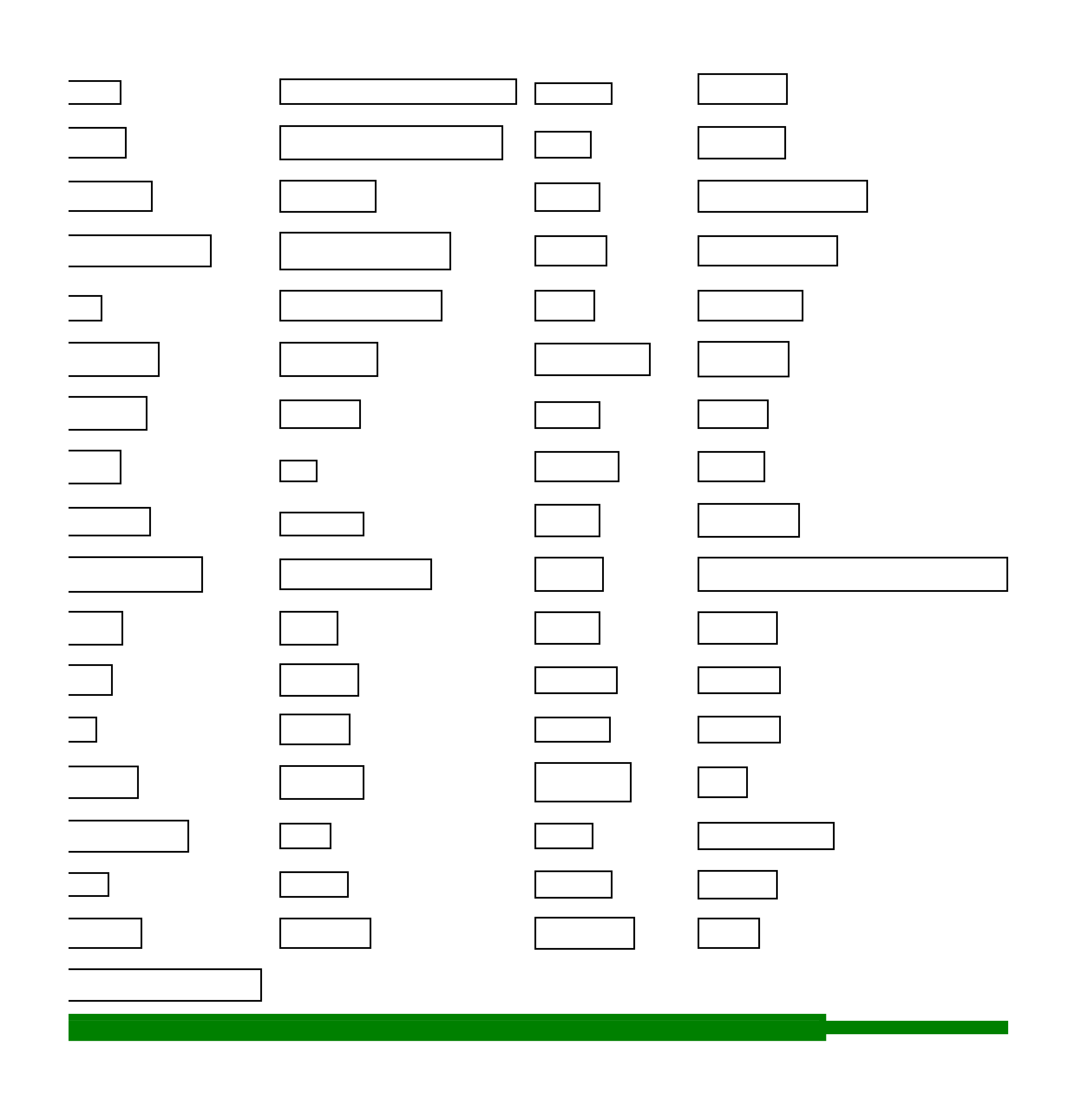
राजनीति

आर्थिक व्यवस्था

सामान्य ज्ञान-विज्ञान

मनुष्य

कुरआन की पारिभाषिक शब्दावली



अनसार—'नासिर' शब्द का बहुवचन है। नासिर के माने मददगार, सहायक के हैं। अत: अनसार के माने हुए सहायता करनेवाले, मदद करनेवाले। इस्लाम में 'अनसार' उन मदीनावासी मुसलमानों को कहा गया है, जिन्होंने हुज़ूर (सल्ल०) को और आपके मक्की साथियों को मक्का से हिजरत करके मदीना पहुँचने पर अपने घरों में ठहराया था और उनकी हर प्रकार से सहायता की थी।

अज़ाब—दण्ड, सज़ा, कष्ट, दुख, यातना। अल्लाह उन लोगों को जो उसकी निर्धारित मर्यादाओं का उल्लंघन करते हैं और अल्लाह की आज्ञा को नहीं मानते, सांसारिक और पारलौकिक जीवन में अज़ाब देता है।

अंतिम दिन—इससे अभिप्रेत वह दिन है जब अल्लाह लोगों के मामलों का फ़ैसला कर देगा और उन्हें उनके भले-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा बदला देगा। क़ुरआन में इसे 'यौमुल आख़िर' कहा गया है।

अरफ़ात—मक्का नगर से 9 मील दूर पूरब की ओर एक विस्तृत मैदान है। हज करनेवालों के लिए अरबी महीना 'ज़िलहिज्जा' की 9वीं तिथि को यहां पहुँचकर ठहरना अनिवार्य है।

अर-रसवाले—एक प्राचीन जाति का नाम जिसका उल्लेख क़ुरआन में 'आद' और 'समूद' जातियों के साथ हुआ है। एक स्थान पर 'अर-रसवालों' के साथ हज़रत नूह (अ०) की जाति का उल्लेख हुआ है। कुछ विद्वानों के मतानुसार 'अर-रस' किसी स्थान विशेष का नाम है। यूं अरबी में 'अर-रस' पुराने कुएँ या अंधे कुएं को कहते हैं।

अर्श—सिंहासन, तख़्त, ईश्वर का सिंहासन। ईश्वर के राजसिंहासन पर विराजमान होने का एक स्पष्ट अर्थ यह है कि उसने विश्व की व्यवस्था और शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली।

अल-आराफ़—इससे अभिप्रेत विशिष्ट ऊँचे स्थान हैं जिनपर अल्लाह के विशिष्ट प्रिय बन्दे पदासीन होंगे।

अल्लाह—ईश्वर, ख़ुदा। अल्लाह शब्द वास्तव में 'अल इलाह' था जो परिवर्तित होकर अल्लाह हो गया। 'अल' अरबी भाषा में उसी प्रकार प्रयुक्त होता है जैसे अंग्रेज़ी में किसी शब्द से पहले The शब्द लगाकर उसे विशिष्टता प्रदान कर देते हैं। इस प्रकार अल्लाह से अभिप्रेत एक प्रमुख और विशिष्ट इलाह (पूज्य) हुआ। अल्लाह आरंभ से ही उसी सत्ता का नाम रहा है जो संपूर्ण सद्‌गुणों से युक्त, विश्व का रचयिता और सबका स्वामी और पालनकर्ता है।

धात्वर्थ की दृष्टि से 'इलाह' उसे कहा जाएगा जो सर्वोच्च और रहस्यमय हो, हमारी आँखें जिसे पाने में असफल रहें, जिसकी पूर्णरूप से कल्पना भी न कर सकें, जो मनुष्य का शरणदाता हो, जिसकी ओर वह पूर्ण अभिलाषा से लपक सके, जिसे वह संकटों में पुकार सके, जो शांति प्रदान कर सकता हो, जो अपने बन्दों की ओर प्रेमपूर्वक बढ़ता हो और जिसकी ओर बन्दे भी प्रेम से बढ़ सकें, जो मनुष्य का प्रिय और अभीष्ट हो, जिसे वह अपना आराध्य और पूज्य बना सके। ये समस्त विशेषताएँ केवल 'अल्लाह' ही में पाई जाती हैं। इसलिए वास्तव में वही अकेला 'इलाह' और पूज्य है।

वेद में भी 'ईल्य' शब्द ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसका धात्वर्थ 'पूजनीय' ही होता है। (देखें ऋग्वेद 1-1-2)

इबरानी भाषा में भी 'ईल' शब्द अल्लाह के लिए प्रयुक्त हुआ है। जैसे— इसराईल, जिसका अर्थ होता है 'अल्लाह का बन्दा'।

अल-हिज्र—यह समूद जाति का केन्द्रीय नगर था। मदीना से तबूक जाते हुए मार्ग में यह स्थान पड़ता है। इस नगर के खण्डहर आज भी मिलते हैं।

अस्र—(1) दिन का चौथा पहर। (2) वह नमाज़ जो थोड़ा दिन रहने पर पढ़ी जाती है। इसका समय दिन डूबने तक रहता है।

अरबी में 'अस्र' वास्तव में 'काल' को कहते हैं। इसमें काल के तीव्र गति से बीतने का संकेत होता है। यह शब्द प्रायः बीते हुए समय के लिए प्रयुक्त होता है। इसी लिए दिन के आख़िरी हिस्से को, जब दिन गुज़रकर मानो बिलकुल निचुड़ जाता है, अस्र कहते हैं।

आद—अरब की एक प्राचीन जाति। अरबी के प्राचीन काव्य में इस जाति का अधिक उल्लेख मिलता है। जिस प्रकार इसकी प्रतिष्ठा बढ़ी हुई थी, उसी प्रकार संसार से इसका मिट जाना भी लोकोक्ति बनकर रह गया।

यह जाति 'अहक़ाफ़' क्षेत्र में बसती थी जो हिजाज़, यमन और यमामा के बीच पड़ता है। आजकल यह ग़ैर आबाद है। हज़रत नूह (अलै०) की जाति के विनष्ट होने के पश्चात यही जाति हर प्रकार से उसकी उत्तराधिकारी थी। इस जाति के लोग ऊँचे-ऊँचे स्तंभोंवाले भवनों का निर्माण करते थे। इनके यहाँ हज़रत 'हूद' (अलै०) को पैग़म्बर बनाकर भेजा गया था, किन्तु दुर्भाग्य से यह जाति संमार्ग पर न आ सकी और विनष्ट होकर रही।

आख़िरत—परलोक, पारलौकिक जीवन। कुरआन के अनुसार वर्तमान लोक की अवधि सीमित और निश्चित है। एक समय आएगा जबकि इस सृष्टि की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी। फिर अल्लाह एक नए लोक का निर्माण करेगा, जिसके नियम वर्तमान लोक के नियम से नितांत भिन्न होंगे। जो कुछ आज छिपा हुआ है, उस लोक में प्रत्यक्ष हो जाएगा। संसार में जो कुछ लोगों ने भला-बुरा किया होगा, वह उनके सामने आ जाएगा। अल्लाह के आज्ञाकारी लोगों का ठिकाना जन्नत (स्वर्ग) होगी और अल्लाह के विद्रोही जहन्नम (नरक) में डाल दिए जाएँगे।

आयत—निशानी, चिह्न, संकेत आदि। कुरआन में 'आयत' शब्द तीन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है—

(1) कुरआन ने प्राकृतिक लक्षणों, तथ्यों और ऐतिहासिक घटनाओं को भी आयत कहा है। इसलिए कि इनसे हमें उन सच्चाइयों का पता मिलता है जो इस भौतिक जगत के पीछे क्रियाशील हैं।

(2) वे चमत्कार जिन्हें अल्लाह के पैग़म्बर अपने पैग़म्बर होने के प्रमाण स्वरूप लोगों को दिखाते थे।

(3) कुरआन का वाक्यांश या वाक्य को भी आयत कहा गया है। कुरआन के वाक्यों में जो विलक्षणता और विशेषता पाई जाती है वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि कुरआन का अवतरण अल्लाह की ओर से हुआ है और वह ईशवाणी है। आयत और प्रमाण में अंतर है। प्रमाण वास्तव में आयत ही पर निर्भर करता है।

इनजील—यह यूनानी शब्द है। इसका शब्दार्थ है—'शुभ सूचना'। हज़रत ईसा मसीह (अलै०) आसमानी बादशाहत या अल्लाह की बादशाहत की शुभ सूचना देते थे। ईसाइयों के मतानुसार इसी लिए ईसा पर अवतरित होनेवाली किताब को इनजील कहा जाता है। किन्तु मुसलमानों के विचार में इनजील इसलिए शुभ सूचना है कि उसमें हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की सूचना दी गई है और ख़ुदा की बादशाहत का सम्बन्ध भी वास्तव में उनके आगमन से ही है।

इद्दत—गिनती। परिभाषा में इद्दत उस समय को कहते हैं जिसके बीतने से पहले विधवा या तलाक़ पाई हुई स्त्रियाँ दूसरा विवाह नहीं कर सकतीं।

पति के देहान्त हो जाने पर इद्दत की अवधि 4 महीने 10 दिन है और तलाक़ पाई हुई स्त्रियों की इद्दत की अवधि तीन बार माहवारी आने तक है। तीन महीने की इद्दत उन बूढ़ी स्त्रियों की है जो ऋतुस्राव से निराश हो चुकी हों। उन लड़कियों की इद्दत भी तीन महीने रखी गई है जो अभी रजवती नहीं हुई हैं। गर्भवती स्त्रियों की इद्दत बच्चा पैदा होने तक है।

इबलीस—अत्यंत निराश, शोकग्रस्त, इनकार करनेवाला।

यह उस जिन्न का उपनाम है जिसने अल्लाह के आदेश की अवहेलना करके हज़रत आदम (अलै०) के आगे झुकने से इनकार कर दिया था और फिर यह निश्चय किया कि वह आदम की संतान को सत्य-मार्ग से विचलित करने का प्रयास करता रहेगा।

इबादत—दास्यभाव, विनम्रता, विनीति, किसी के आगे बिछ जाना, पूर्णरूप से झुक जाना आदि।

इबादत में प्रेम और लगाव का अर्थ भी सम्मिलित है। इबादत का सम्बंध मानव के संपूर्ण जीवन से है। इसलिए इबादत का अर्थ जहाँ पूजा, उपासना होता है वहीं यह शब्द बन्दगी, दासता और आज्ञापालन के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।

इलाह—पूज्य, आराध्य, प्रभु, ईश्वर। देखिये 'अल्लाह'

इशा—रात का अंधकार, रात का पहला पहर। वह नमाज़ जो सूर्यास्त के पश्चात पश्चिम की लालिमा समाप्त होने के बाद पढ़ी जाती है। इसका समय प्रातः काल के पौ फटने से पहले तक रहता है, किन्तु उत्तम यह है कि यह नमाज़ रात्रि के प्रारंभिक भाग में पढ़ ली जाए।

इस्लाम—विनम्रता, विनीत, आज्ञापालन, आत्मसमर्पण, स्वेच्छापूर्वक अधीनता स्वीकार करना आदि। अल्लाह के आगे अपने आपको डाल देने और उसकी आज्ञा के पालन करने ही का दूसरा नाम इस्लाम है।

इस्लाम का दूसरा प्रसिद्ध अर्थ है सुलह, शांति, कुशलता, संरक्षण, शरण आदि। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा है : "इस्लाम ग्रहण करो, (तबाही से) बच जाओगे।" आपने यह भी कहा है : "जो व्यक्ति भी इस (इस्लाम) में आया सलामत (सुरक्षित) रहा!"

इहराम—हज करनेवाले मक्का नगर पहुँचने से पहले एक निश्चित स्थान पर स्नान करके एक विशेष प्रकार का फ़क़ीराना वस्त्र धारण कर लेते हैं—और तलबिया (एक विशेष दुआ) कहते हैं—यही इहराम है। इस वस्त्र में केवल एक तहमद (बिना सिली हुई लुंगी) और एक चादर होती है जिसको ऊपर से ओढ़ लेते हैं। औरतों के लिए इहराम सिले हुए वस्त्र ही हैं। इस वस्त्र के धारण करने के पश्चात बहुत-सी चीज़ें आदमी पर हराम हो जाती हैं जो सामान्य अवस्था में हराम नहीं होतीं। जैसे सुगंध का प्रयोग, बाल कटवाना, साज-सज्जा और पति-पत्नी प्रसंग आदि। इन चीज़ों के हराम होने ही के कारण इस वस्त्र को इहराम कहा जाता है। इहराम की हालत में यह पाबंदी भी है कि किसी जीव का वध न किया जाए और न किसी जानवर का शिकार किया जाए और न ही किसी शिकारी को शिकार का पता बताया जाए।

ईमान—विश्वास, आस्था, मानना। ईमान वास्तव में पुष्टि करने और मानने को कहते हैं। इसका विलोम है इनकार, झुठलाना, कुफ़्र आदि जबकि विश्वास का विलोम होता है शंका, संदेह, अविश्वास।

ईमान लाना—मानना, विश्वास करना, स्वीकार करना। उन बातों को मानना जिनको मानने की शिक्षा इस्लाम देता है। जैसे अल्लाह पर ईमान, उसके नबियों पर ईमान, आख़िरत (परलोक) पर ईमान आदि।

ईसाई —ईसा मसीह (अलै०) के अनुयायी होने का दावा करनेवाले लोग।

उमरा—निर्माण, शोभा, आबादी। परिभाषा में उमरा भी हज की तरह एक इबादत है जो काबा के दर्शन के साथ की जाती है। हज और उमरा में अन्तर है। हज सामर्थ्यवान के लिए अनिवार्य है किन्तु उमरा अनिवार्य नहीं। हज का समय निश्चित है, किन्तु उमरा किसी भी समय कर सकते हैं। हज सामूहिक रूप से करना होता है, उमरा अकेले अदा कर सकते हैं। उमरा में हज की कुछ ही रीतियों का पालन करना पड़ता है।

उम्मी—जो व्यक्ति या जाति शिक्षित न हो, जिस जाति के पास कोई आसमानी किताब न हो।

एतकाफ़—एकांतवास। कुछ समय, विशेष रूप से रमज़ान के अंतिम दस दिन मस्जिद में एकांतवास करना और अल्लाह के स्मरण और उसकी इबादत में लग जाना। एतकाफ़ की दशा में केवल कुछ विशेष ज़रूरत से ही आदमी थोड़ी देर के लिए मस्जिद से बाहर निकल सकता है।

ऐकावाले—ऐका तबूक का प्राचीन नाम है। ऐका का शाब्दिक अर्थ घना जंगल होता है। मदयनवाले और ऐकावाले एक ही नस्ल के दो क़बीले थे। इनके क्षेत्र परस्पर मिले हुए थे। व्यापार इनका पेशा था। दोनों ही क़बीलों के मार्गदर्शन के लिए हज़रत शुऐब (अलै०) को अल्लाह ने नबी बनाकर भेजा था।

काफ़िर—कुफ़्र करनेवाला, इनकार करनेवाला, धर्मविरोधी, सच्चाई को छिपानेवाला, अकृतज्ञ। वे लोग जो उन सच्चाइयों को मानने और स्वीकार करने से इनकार करते हैं जिनकी शिक्षा अल्लाह और रसूल ने दी है।

काबा—मक्का में स्थित वह प्रतिष्ठित एवं पवित्र घर जिसकी दीवारें अल्लाह के आदेश से हज़रत इबराहीम और उनके बेटे हज़रत इसमाईल (अलैहि०) ने खड़ी की थीं। इस घर को अल्लाह ने संपूर्ण मानव-जाति के लिए धर्मकेन्द्र नियत किया है; इसी की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ी जाती है।

किताब—यह शब्द क़ुरआन में कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।

(i) अल्लाह का कलाम (वाणी) जो उसने रसूलों पर उतारा।

पूरी पुस्तक को भी किताब कहते हैं और उसके किसी खण्ड या भाग को भी किताब कहते हैं।

(ii) आदेश, हुक्म, अनिवार्य धर्मविधान, क़ानून, शरीअत।

(iii) अल्लाह का वह अभिलेख (Record) जिसमें प्रत्येक चीज़ अंकित है।

(iv) वह किताब जिसमें उसके फ़ैसले अंकित हैं।

(v) पत्र के अर्थ में भी इसका प्रयोग हुआ है।

(vi) वह कर्मपत्र जिसमें मनुष्य के अपने अच्छे-बुरे कर्मों का विवरण दिया होगा। अच्छे लोगों को उनका कर्मपत्र उनके दाहिने हाथ में और बुरे लोगों को उनका कर्मपत्र उनके बाएँ हाथ में दिया जाएगा।

(vii) नियति, भाग्य, तक़दीर, पूर्व निर्धारित बात।

किताबवाले (अहले किताब) —वे लोग जिन्हें अल्लाह की ओर से किताब प्रदान हुई थी। यह संकेत है यहूदियों और ईसाइयों की ओर जिन्हें अल्लाह ने तौरैत और इनजील नामक किताबें प्रदान की थीं।

क़िबला—वह चीज़ जो आदमी के सम्मुख रहे और जिसकी ओर उसका ध्यान आकृष्ट हो। परिभाषा में इससे अभिप्रेत वह दिशा है जिसकी ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ी जाती है अर्थात काबा।

क़िबती—मिस्र के प्राचीन निवासी। ये बहुदेववादी थे। मूर्तियाँ पूजते थे। मिस्र में इसराईल की संतान जब दासता का जीवन जी रही थी, उस समय जिस गिरोह का देश पर शासन था उसका सम्बन्ध इसी क़िबती जाति से रहा है।

क़ियामत—पुनरुत्थान, महाप्रलय। एक ऐसे दिन से अभिप्रेत है जब वर्त्तमान लोक की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी। सारे जीवधारी मर जाएँगे। इसके पश्चात अल्लाह एक दूसरी सृष्टि की रचना करेगा। सारे लोग पुनः जीवित करके उठाए जाएँगे और उन्हें उनके अपने कर्मों का बदला दिया जाएगा। यही दिन क़ियामत का होगा।

क़िसास—हत्यादंड। क़िसास का अर्थ है ख़ून का बदला। क़त्ल करनेवाले हत्यारे को क़िसास में क़त्ल कर दिया जाएगा। क्षमादान की स्थिति में मारे गए व्यक्ति के वारिसों को कुछ माल दिलाया जाएगा। क्षमा करने का अधिकार मारे गए व्यक्ति के वारिसों को प्राप्त होगा। क़िसास को लागू न करना पूरे समाज के लिए ख़तरे की बात है। इसी लिए क़ुरआन में आया है : "क़िसास में तुम्हारे लिए जीवन है।"

कुफ़्र—अधर्म, इनकार, अकृतज्ञता। कुफ़्र का अर्थ होता है ढँकना, छिपाना, परदा डालना, इस्लाम का इनकार करना। इस्लाम मानव का स्वभाव है। इस्लाम का इनकार करनेवाला वास्तव में अपनी उस सहज और विमल प्रकृति पर अज्ञान का परदा डालता है जिसको लेकर वह पैदा हुआ है। कुफ़्र शब्द 'शुक्र' (कृतज्ञता) और ईमान दोनों शब्दों का विलोम है। अल्लाह के उपकार और कृपा के इनकार से बढ़कर कृतघ्नता और क्या होगी ! इसी लिए इसे कुफ़्र कहा गया है।

क़ुरआन—क़ुरआन का अर्थ होता है पढ़ना—अल्लाह की अंतिम किताब का नाम जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर उतरी है। इस किताब का नाम ही यह बता रहा है कि यह किताब इसलिए अवतरित हुई है कि ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ी जाए और संसार के सारे लोग इसे पढ़कर अपने जीवन के मार्ग का निर्णय करें। इस किताब को क़ुरआन कहना ऐसा ही है जैसे किसी अत्यंत रूपवान व्यक्ति को 'सौन्दर्य' की उपाधि प्रदान कर दी जाए।

कुरबानी—बलिदान। जानवर को अल्लाह के नाम पर कुरबान करने की क्रिया। ऐसी चीज़ जिसके द्वारा अल्लाह का सामीप्य प्राप्त किया जाए। अल्लाह की प्रदान की हुई चीज़ को कृतज्ञतापूर्वक उसको अर्पित करना। कुरबानी की क्रिया वास्तव में अपने प्राण को अल्लाह के अर्पण करने का बाह्य प्रदर्शन है। जानवर का ख़ून बहाकर वास्तव में यह प्रण किया जाता है कि यदि अल्लाह के लिए हमें अपने प्राण न्यौछावर करने पड़े तो इसमें कदापि कोई संकोच न होगा। कुरबानी आत्मा को शुद्ध करने का एक उपाय भी है। इसी लिए बलिदान की प्रथा समस्त प्राचीन जातियों में भी रही है और इसे अल्लाह को प्रसन्न करने का एक साधन समझा गया है।

कुरबानी हज़रत इबराहीम (अलैहिस्सलाम) की यादगार भी है। हज़रत इबराहीम (अलै०) ने अपने बेटे को अल्लाह के लिए कुरबान करना चाहा तो यह कुरबानी दूसरे रूप में क़बूल की गई। हज़रत इबराहीम के बेटे इसमाईल (अलै०) को अल्लाह ने काबा की सेवा के लिए ख़ास कर लिया।

जानवर की कुरबानी की हैसियत एक 'फ़िदया' की भी है। जानवर की कुरबानी देकर हम अपनी जानों को छुड़ा लेते हैं, किन्तु हमारे प्राण हमें लौटाए नहीं जाते बल्कि हमारी अमानत में उन्हें सौंप दिया जाता है ताकि जब भी ज़रूरत पेश आए हम उन्हें अल्लाह के लिए निछावर कर दें। इस्लाम की वास्तविकता भी वास्तव में कुरबानी ही की है। इसमें व्यक्ति अपने आपको अर्पण करता है।

कुरैश—हज़रत इसमाईल (अलै०) की संतति में नज़्र बिन कनाना की नस्ल से सम्बन्ध रखनेवाला एक प्रतिष्ठित क़बीला। नबी (सल्ल०) इसी क़बीले में पैदा हुए।

ख़लीफ़ा—प्रतिनिधि, नायक, स्थानापन्न, किसी के बाद आनेवाला उत्तराधिकारी। प्रतिनिधि के अर्थ में ख़लीफ़ा वह व्यक्ति होता है जो मालिक की प्रदान की हुई सत्ता और अधिकारों का प्रयोग उसके आदेशानुसार ही करता है। वह अपने को स्वामी और मालिक नहीं समझता। और वास्तविकता यह है कि मनुष्य को धरती में जो अधिकार मिले हैं उनका प्रयोग भी अल्लाह के आदेशानुसार ही होना चाहिए।

ख़ुला (ख़ुल्‌अ)—इस्लाम ने यदि पुरुषों को तलाक़ का अधिकार दिया है तो स्त्रियों को 'ख़ुला' का। स्त्री यदि समझती है कि उसका गुज़र-बसर वर्तमान पति के साथ नहीं हो सकता तो वह 'ख़ुला' हासिल कर सकती है। स्त्री यदि ख़ुला हासिल करना चाहती है तो उसे वह माल या उसका एक भाग पुरुष को लौटाना होगा जो उसे 'महर' के रूप में मिला था। स्त्री यदि पति के अन्याय के कारण ख़ुला हासिल करना चाहती है तो पुरुष को सिरे से माल लेना ही उचित न होगा।

ग़नीमत—शत्रुधन। सत्य के लिए लड़ी जानेवाली लड़ाई में धर्मविरोधियों का जो धन और माल इस्लामी सेना के क़ब्ज़े में आता है उसे 'ग़नीमत' कहते हैं। इस्लाम केवल उसी माल को ग़नीमत कहता है जो रण-क्षेत्र में शत्रु की सेना से विजय पानेवालों के हाथ आता है। ग़नीमत के माल में ग़रीबों, मुहताजों, असहाय और सर्वसाधारण जनता की भलाई के लिए पाँचवा भाग निश्चित है। क़ुरआन, 8 : 41

ग़ैब—परोक्ष, अदृष्ट, छिपा हुआ, जिसके जानने का हमारे पास अपना कोई साधन न हो। ग़ैब शब्द रहस्य के लिए भी प्रयुक्त हुआ है।

ग़ैब वास्तव में उन चीज़ों को कहा गया है जिन तक हमारी ज्ञानेन्द्रियों और हमारी अनुभव-शक्ति की पहुँच नहीं। जैसे—अल्लाह का अस्तित्त्व, फ़रिश्ते, जन्नत, जहन्नम, आख़िरत आदि।

ग़ैब या परोक्ष के विषय में सम्यक ज्ञान के बिना मानव-जीवन की व्याख्या नहीं की जा सकती। परोक्ष के प्रति सच्चा ज्ञान हमारी एक बड़ी आवश्यकता है। परोक्ष के विषय में सही जानकारी नबियों द्वारा लाए हुए ईश-संदेश से ही प्राप्त होती है।

ज़कात—बढ़ना, विकसित होना, शुद्ध होना। पारिभाषिक रूप में ज़कात एक निश्चित धन को कहते हैं। इसे अपनी कमाई और अपने माल में से निकालकर अल्लाह के बताए हुए शुभ कामों में ख़र्च करना अनिवार्य ठहराया गया है। जैसे–मुसाफ़िरों, मुहताजों की सेवा, ऋण के बोझ से छुटकारा दिलाना, सत्य-धर्म के लिए किए जानेवाले प्रयासों में ख़र्च करना आदि। ज़कात की हैसियत किसी टैक्स या कर की नहीं है, बल्कि यह एक प्रकार की इबादत है। ज़कात देकर बन्दा अल्लाह का शुक्र अदा करता है और इस प्रकार वह अपनी आत्मा को भी विशुद्ध और विकसित करता है। स्वयं ज़कात शब्द से भी इस तथ्य की ओर संकेत होता है।

जन्नत—बाग़, स्वर्ग, आख़िरत में अल्लाह के नेक बन्दों के रहने की जगह।

ज़बूर—पट्टिका, पर्ण, पत्र, किताब। वह किताब जो पैग़म्बर हज़रत दाऊद (अलै॰) पर अवतरित हुई थी।

जहन्नम—नरक, दोज़ख़। आख़िरत में जहाँ अल्लाह के विद्रोही और अवज्ञाकारी लोगों को रखा जाएगा। वहाँ वे यातनाग्रस्त होंगे। वे आग में जलेंगे।

ज़िक्र—स्मरण, याद, स्मृति, याददिहानी, नसीहत, उपदेश, इतिहास, हर वह चीज़ जो किसी का स्मरण कराए। क़ुरआन और दूसरी आसमानी किताबों को भी ज़िक्र कहा गया है।

जिज़या—रक्षा-कर। इस्लामी राज्य में बसनेवाले ग़ैर मुस्लिम लोगों से उनकी जान, माल और आबरू की रक्षा के बदले में लिया जानेवाला कर (Tax)। यह कर उस राजप्रबन्ध के कामों में ख़र्च होता है जो ग़ैर मुस्लिमों की रक्षा की ज़िम्मेदारी लेता है। मुहताज और विवश ग़ैर मुस्लिम से जिज़या नहीं लिया जाएगा बल्कि हुकूमत स्वयं उसकी ज़रूरतें पूरी करेगी।

जिन्न—जिन्न शब्द में गुप्त और छिपे हुए होने का अर्थ पाया जाता है। जिन्न मनुष्यों से भिन्न एक प्रकार की मख़लूक़ है। जिन्न चूँकि आँखों से दिखाई नहीं देते। इसी लिए उन्हें जिन्न कहा जाता है।

जिबरील—यह इबरानी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है अल्लाह का बन्दा। जिबरील अल्लाह के एक प्रमुख फ़रिश्ते का नाम है। हज़रत जिबरील (अलै०) का विशेष काम यह रहा है कि वे अल्लाह का कलाम और आदेश नबियों तक पहुँचाते रहे हैं।

जिहाद—जानतोड़ कोशिश, ध्येय की सिद्धि के लिए संपूर्ण शक्ति लगा देना। युद्ध के लिए क़ुरआन में 'क़िताल' शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिहाद का अर्थ क़िताल के अर्थ से कहीं अधिक विस्तृत है। जो व्यक्ति सत्य-धर्म के लिए अपने धन, अपनी लेखनी, अपनी वाणी आदि से प्रयत्नशील हो और इसके लिए अपने को थकाता हो वह जिहाद ही कर रहा है। धर्म के लिए युद्ध भी करना पड़ सकता है और उसके लिए प्राणों का बलिदान भी किया जा सकता है। यह भी जिहाद का एक अंग है। जिहाद को उसी समय इस्लामी जिहाद कहा जाएगा जबकि वह अल्लाह के लिए हो। अल्लाह के नाम और उसके धर्म की प्रतिष्ठा के लिए हो, न कि धन-दौलत की प्राप्ति के लिए हो। जिहाद का मुख्य उद्देश्य है सत्य-मार्ग की रुकावटों को दूर करना, संसार को अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों की दासता से छुटकारा दिलाना। धर्म के पालन में जो बाधाएँ और रुकावटें खड़ी होती हैं उन्हें दूर करना।

ज़ुह्—तीसरा पहर, दिन ढलने का समय, वह नमाज़ जो दिन ढलने के बाद पढ़ी जाती है।

तक़्वा—डर रखना, संयम, धर्मपरायणता, परहेज़गारी। तक़्वा का धात्वर्थ है बचना। किसी चीज़ से पहुँचनेवाली हानि से अपने आपको बचाना, किसी आपदा से डरना, अल्लाह की अवज्ञा से बचना और उसकी नाराज़गी से बचना।

तक़्वा वास्तव में वह एहसास और मनोभाव है जो अल्लाह के डर से मन में पैदा होता है, और फिर मनुष्य अल्लाह के आदेशों के पालन में लग जाता है और उसकी अवज्ञा से बचने की कोशिश करता है। अच्छे वस्त्र की तरह तक़्वा भी मनुष्य के आत्मिक सौन्दर्य को बढ़ाता है। इससे अनिवार्यतः उसके जीवन में सुन्दरता और पवित्रता आ जाती है।

तयम्मुम—पानी न मिलने पर स्नान और वुज़ू के बदले तयम्मुम से काम लेते हैं अर्थात पाक मिट्टी पर हाथ मारकर अपने मुँह और हाथों पर हाथ फेर लेते हैं। यह तरीक़ा इसलिए अपनाया गया है ताकि शुद्धता और पाकी का विचार सदैव बना रहे और आदमी कभी भी उससे बेपरवाह न हो।

तलाक़—छुटकारा, पति द्वारा पत्नी का परित्याग। विवाह-विच्छेदन।

तवाफ़—परिक्रमा, चक्कर लगाना। हज या उमरा करनेवाले अल्लाह के घर काबा के चारों ओर सात चक्कर लगाते हैं। इसे तवाफ़ कहते हैं।

तसबीह (Glorification) —अल्लाह की महानता का वर्णन। तसबीह का धात्वर्थ है चेहरे के बल बिछ जाना। नमाज़ को भी तसबीह कहा गया है, इसलिए कि नमाज़ में नमाज़ी अल्लाह के आगे सजदे में चेहरे के बल बिछ जाता है और उसकी महानता का वर्णन करता है। संसार की समस्त चीज़ें अल्लाह की महानता की साक्षी हैं और अल्लाह की बड़ाई और उसके हुक्म के आगे झुकी हुई हैं। इसी लिए कुरआन में आया है कि संसार की सारी चीज़ें अल्लाह की तसबीह कर रही हैं।

तहज्जुद—नींद तोड़कर उठना। इससे अभिप्रेत वह नमाज़ है जो रात के एक हिस्से में सो लेने के पश्चात उठकर पढ़ी जाती है। सोने से पहले भी यह नमाज़ पढ़ सकते हैं।

तागूत—यह शब्द 'तुग़यान' से निकला है। तुग़यान का अर्थ है सीमा से आगे बढ़ना, निरंकुश हो जाना। अतः हर उस चीज़ को तागूत कहेंगे जिसमें अल्लाह के मुक़ाबले में उद्दण्डता पाई जाती हो और जो उद्दण्डता पर लोगों को उभारती हो, चाहे वह आदमी की अपनी इच्छा हो या समाज का कोई भी व्यक्ति हो, या कोई हुकूमत या संस्था हो, या स्वयं शैतान या इबलीस हो।

तूर—पहाड़। एक विशेष पहाड़ का नाम। सीना पर्वत, मूसा पर्वत जो क़ुरआन के अवतरण काल में 'तूर' के नाम से विख्यात था। यह पर्वत प्रायद्वीप सीना के दक्षिण में स्थित है। इसकी ऊँचाई 7359 फ़ीट है।

तौबा—पश्चाताप, क्षमा याचना, लौटना, पलटना, उन्मुख होना, आदि। मनुष्य की ओर से तौबा का अर्थ यह होता है कि वह गुनाह और बुराई को छोड़कर अल्लाह की प्रसन्नता की ओर पलटता है। और अल्लाह की ओर से तौबा का अर्थ यह होता है कि वह अपने बन्दे पर दया-दृष्टि डाले और उसके गुनाह को क्षमा कर दे और अपनी नाराज़गी समाप्त करके उसकी ओर रहमत के साथ पलट आए।

तौरात—यह इबरानी शब्द है जिसका अर्थ होता है 'आदेश और क़ानून'। तौरात वह किताब है जो हज़रत मूसा (अलै०) पर अवतरित हुई थी।

तौहीद—एकेश्वरवाद। अल्लाह को एक मानना और किसी को उसका साझी और समकक्ष न ठहराना। यही तौहीद तमाम नबियों की शिक्षाओं की आधारशिला रही है। तौहीद केवल एक धारणा ही नहीं, बल्कि हमारे संपूर्ण जीवन पर इसका प्रभाव पड़ता है।

दीन—धर्म, जीवन-प्रणाली। वह विधान जिसपर मनुष्य की विचारधारा और कार्यप्रणाली आदि सब कुछ अवलंबित हो।

दीन शब्द के मौलिक अर्थ में अधीनता और विनीत होने का भाव पाया जाता है, फिर इसमें चार अर्थों का आविर्भाव हुआ है—(1) प्रभुत्त्व, (2) आज्ञापालन, अधीनता, बन्दगी, (3) विधि-विधान, नियम, प्रणाली जिसका पालन किया जाए और (4) जाँच-पड़ताल, फ़ैसला, अच्छे-बुरे कर्मों का बदला।

नज़्र (नज़्र) —भेंट, प्रण, मन्नत। केवल अल्लाह ही के आगे नज़्र पेश की जा सकती है। किसी और के आगे नज़्र गुज़ारना जायज़ नहीं। हम प्रेम भाव से यदि किसी को कोई चीज़ देते हैं उसे हद्या या उपहार कहेंगे, नज़्र नहीं। नज़्र केवल अल्लाह के लिए ख़ास है।

नबी—पैग़म्बर, ईशदूत, जो नुबूवत के पद पर नियुक्त किया गया हो, सन्देष्टा। नबी पर ख़ुदा का कलाम उतरता है। ख़ुदा उसे अपने आदेश से अवगत कराता है। फिर नबी का कर्तव्य यह होता है कि वह लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाए। संसार में बहुत-से नबी हुए हैं। सबसे अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं।

नमाज़—नमाज़ के लिए क़ुरआन में 'सलात' शब्द प्रयुक्त हुआ है। सलात का अर्थ होता है किसी चीज़ की ओर बढ़ना और उसमें प्रविष्ट कर जाना, किसी चीज़ की ओर ध्यान देना। यहीं से यह शब्द झुकने और प्रार्थना के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। पूजा और इबादत के लिए इस शब्द का प्रयोग अत्यंत प्राचीन है। सलात बन्दे को उसके अपने रब से मिलाती और उससे जोड़ती है। नमाज़ के लिए सलात शब्द अत्यन्त अर्थपूर्ण है।

नमाज़ क़ायम करना—नमाज़ को ठीक ढंग से उसके सारे नियमों के साथ अदा करना।

नसारा—ईसाई। 'नसारा' नसरान का बहुवचन है। हज़रत ईसा मसीह के अनुयायियों का यह नाम आरंभ ही से था।



नूह की जातिवाले—वे लोग जिनके बीच नूह (अलै०) ने ख़ुदा की ओर से धर्म-प्रचार किया।

कुरआन और बाइबिल से यह संकेत मिलता है कि नूह की जातिवालों का निवास-स्थान वह भूभाग था जो आज ईराक़ कहलाता है। इसकी पुष्टि ऐसे शिलालेखों से भी होती है जो बाइबिल से भी अधिक प्राचीन हैं। इन शिलालेखों में उस जलप्लावन का उल्लेख मिलता है जिसका उल्लेख कुरआन और बाइबिल में पाया जाता है। इस जलप्लावन से मिलती-जुलती कथाएँ यूनान, मिस्र, भारत और चीन के साहित्य में भी मिलती हैं, बल्कि वर्मा, मलाया, आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी, अमेरिका और यूरोप के विभिन्न भागों में भी ऐसी ही जनश्रुतियाँ प्राचीन काल से चली आ रही हैं। इससे यह अंदाज़ा होता है कि जलप्लावन की घटना उस समय की है जब संपूर्ण मानव-जाति किसी एक भू-भाग में बसती थी, फिर वहीं से निकलकर वह दुनिया के विभिन्न भागों में फैली।

जलप्लावन के अवसर पर अल्लाह के आदेश से हज़रत नूह (अलै०) और उनके साथी जिस नाव में सवार हो गए थे, उस नाव का ढाँचा अभी जल्द ही जूदी पर्वत पर खोज लिया गया है। यह खोज एक अमरीकी वैज्ञानिक Vendyl Jones के प्रयास का फल है।

(विस्तार के लिए देखिए 'The Mail on Sunday', London, January 30, 1994)

फ़ज्र—उषाकाल, पौ फटना। वह नमाज़ जो सवेरे पौ फटने के बाद और सूर्योदय से पहले पढ़ी जाती है।

फ़िदया—मुक्ति, प्रतिदान, अर्थदण्ड। वह धन जिसके बदले में किसी अपराधी को छुड़ाया जाए या प्राणदंड से मुक्त कराया जाए। वह माल जो व्यक्ति अपनी किसी ख़ता और कोताही के बदले में मुहताजों पर ख़र्च करे।

फ़िरदौस (Paradise)—जन्नत, बैकुण्ठ, स्वर्ग। फ़िरदौस शब्द संस्कृत, ईरानी, इबरानी, यूनानी, अरबी आदि लगभग सभी भाषाओं में पाया जाता है। यह शब्द सभी भाषाओं में ऐसे बाग़ के लिए प्रयुक्त होता है जो विस्तृत हो और उसके चारों ओर प्राचीर हो और आदमी के निवास-स्थान से मिला हुआ हो और उसमें हर प्रकार के फल विशेषतः अंगूर पाए जाते हों।

फ़रिश्ता (Angel)—कुरआन में इसके लिए 'मलक' शब्द आया है। मलक का अर्थ होता है संदेश लानेवाला। फ़रिश्तों में इसकी क्षमता होती है कि वे ब्रह्मलोक से अपना संपर्क स्थापित कर सकें और मानव-जगत से भी अपना सम्बन्ध जोड़ सकें। इसी लिए वे अल्लाह का संदेश नबियों तक पहुँचाने के लिए नियुक्त हो सके हैं। फ़रिश्ते अल्लाह के पैदा किए हुए और उसके बन्दे हैं। वे वही काम करते हैं जिनका उन्हें आदेश होता है। वे हमेशा अल्लाह का गुणगान करते रहते हैं। अल्लाह ने कितने ही फ़रिश्तों को अपने महान कार्य के प्रबन्ध में लगा रखा है। फ़रिश्ते ज़रूरत पड़ने पर जो रूप चाहें धारण कर सकते हैं। पथभ्रष्ट लोग उन्हें देवी-देवता बनाकर उनको पूजने लगे। उन्हें सिफ़ारिशी और कष्टनिवारक भी समझ लिया गया और उनसे प्रार्थनाएँ भी की जाने लगीं। कुरआन ने फ़रिश्तों की हैसियत स्पष्ट कर दी है ताकि बहुदेववाद का दरवाज़ा बन्द हो सके।

बैअत—वचन देना, आज्ञापालन की प्रतिज्ञा करना, वचनबद्ध होना आदि।

बनी इसमाईल—हज़रत इसमाईल (अलै०) की संतति के लोग। हज़रत इसमाईल (अलै०), हज़रत इबराहीम (अलै०) के बड़े पुत्र थे। अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म बनी इसमाईल ही की संतति में हुआ।

बनी इसराईल—इसराईल की संतति, यहूदी। इसराईल हज़रत याकूब (अलै०) का दूसरा नाम था। हज़रत याकूब (अलै०) हज़रत इसहाक़ (अलै०) के बेटे और हज़रत इबराहीम (अलै०) के पौत्र थे। यहूदी इन्हीं के वंश से हैं, इसी लिए उन्हें बनी इसराईल कहकर पुकारा गया है।

बैतुल मक़दिस—पवित्र घर, मस्जिद अक़सा। वह पाक घर जो यरूशलम में है, जिसके निर्माण का संकल्प हज़रत दाऊद (अलै०) ने किया था और यह काम उनके बेटे हज़रत सुलैमान (अलै०) के हाथों पूरा हुआ।

मजूस—मजूस से अभिप्रेत ईरान के अग्निपूजक लोग हैं, जो प्रकाश और अंधकार के दो अलग-अलग ख़ुदा मानते हैं और अपने को ज़रदुश्त का अनुयायी कहते हैं।

मदयनवाले—अरब की एक पुरानी जाति। इस जाति की आबादी हिजाज से फ़िलिस्तीन के दक्षिण तक और वहाँ से प्रायद्वीप सीना के अंतिम छोर तक, लाल सागर और अक़बा की खाड़ी तक फैली थी। इसका केन्द्र मदयन नगर था। मदयनवाले हज़रत इबराहीम (अलै०) के बेटे मिदयान की नस्ल से बताए जाते हैं। इस क़ौम के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह ने हज़रत शुऐब (अलै०) को नबी बनाकर भेजा। इस क़ौम में शिर्क ही नहीं बल्कि इसके अतिरिक्त और भी बहुत-सी बुराइयाँ पैदा हो गई थीं। जब इस क़ौम ने अपने नबी की बात न मानी और अपनी सरकशी से बाज़ न आए तो अल्लाह ने अपना अज़ाब उतारकर इस क़ौम को विनष्ट कर दिया। केवल इसके खण्डहर ही शिक्षा के लिए शेष रह गए हैं।

मन्न—मन्न प्राकृतिक खाद्य पदार्थ है जो इसराईलियों को बेघरबार होने की दशा में 40 वर्षों तक मिलता रहा। मन्न को वे मीठे और स्वादिष्ट मधु के रूप में प्रयोग में लाते थे। मन्न के अतिरिक्त उन्हें सलवा भी प्राप्त था। सलवा बटेर के प्रकार की एक पक्षी थी जिनको वे खाते थे।

मस्जिदे हराम—प्रतिष्ठित मस्जिद। वह मस्जिद जिसके बीच काबा स्थित है।

महर—वह रक़म या माल जो विवाह के नाते से पति अपनी पत्नी को देता है। कुरआन में इसके लिए 'सदक़ात' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो 'सदक़ा' का बहुवचन है। सदक़ा की व्युत्पत्ति 'सिदक़' से हुई है। सच्चाई, मित्रता, दुरुस्ती आदि इसके कई अर्थ होते हैं। महर वास्तव में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों और उनके प्रेम-भाव के बने रहने का एक प्रतीक या चिह्न है।

मीकाईल—एक प्रसिद्ध फ़रिश्ते का नाम।

मुनाफ़िक़ (Hypocrite)—कपटाचारी, कपटी, छली, निफ़ाक़ रखनेवाला। ऐसा व्यक्ति जो अपने को मुसलमान कहता हो किन्तु इस्लाम से उसका सच्चा सम्बन्ध न हो। मुनाफ़िक़ कई प्रकार के हो सकते हैं—(1) वे लोग जो इसलिए मुसलमानों मे घुस आए हों और अपने को मुसलमान कहते हों, ताकि वे इस्लाम को अधिक से अधिक हानि पहुँचाने में समर्थ हो सकें। (2) जो वास्तव में मुसलमान तो न हों किन्तु भौतिक और सांसारिक लाभों को प्राप्त करने के ध्येय से मुसलमानों में शामिल हों। किन्तु इस्लाम को हानि पहुँचाने का कोई इरादा न रखते हों। (3) वे लोग जो शामिल तो हों मुसलमानों ही के गिरोह में किन्तु ईमान उनका बहुत ही कमज़ोर हो। जब कभी भी आज़माइश पेश आए तो वे कमज़ोरी दिखा जाएँ।

मुशरिक—अनेकेश्वरवादी, बहुदेववादी, शिर्क करनेवाला, किसी अन्य को अल्लाह के समकक्ष घोषित करनेवाला।

मुशरिक वह व्यक्ति है जो अल्लाह के अस्तित्व या उसके गुणों या उसके हक़ में दूसरों को साझीदार बनाए। अस्तित्व में साझीदार ठहराने का यह अर्थ है कि 'किसी से उसको या उससे किसी को उत्पन्न' होने की धारणा रखी जाए। जैसे किसी को उसका बाप या उसकी संतान समझी जाए।

गुणों में दूसरों को अल्लाह का साझीदार ठहराने का अर्थ यह होता है कि ख़ुदा के विशेष गुणों का सम्बन्ध दूसरों से भी जोड़ा जाए। उदाहरणार्थ——कोई यह समझने लगे कि जगत की रचना में किसी अन्य देवी-देवता का भी हाथ है या कोई यह मानने लगे कि कुछ और हस्तियाँ भी हैं जो स्वतंत्र अधिकार रखती हैं कि जो चाहें करें, जिसका चाहें काम बना दें और जिसका चाहें बिगाड़ दें।

हक़ और अधिकार में अल्लाह का शरीक ठहराने का अर्थ यह है कि जो हक़ और अधिकार अल्लाह का होता है उसमें वह दूसरों को भी साझीदार समझने लगे। जैसे– जगत का स्वामी और स्रष्टा अल्लाह है तो उपासना भी उसी की होनी चाहिए। अब यदि कोई अल्लाह से हटकर किसी दूसरे की बन्दगी और पूजा करता है तो यह अल्लाह के हक़ में दूसरे को शरीक ठहराना होगा। और ऐसा करनेवाले को मुशरिक कहा जाएगा।

मुसलमान—इस्लाम का अनुयायी, अल्लाह की आज्ञा का पालन करनेवाला। अल्लाह के अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दिखाए मार्ग पर चलनेवाला।

मुस्लिम—आज्ञाकारी, इस्लाम का अनुयायी, अकेले अल्लाह को अपना रब, स्वामी, शासक और आराध्य सब कुछ माननेवाला और अपने आपको उसके समक्ष समर्पण कर देनेवाला। उसी के आदेशानुसार जीवन-यापन करनेवाला। संसार की सारी ही चीज़ें—सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, हवाएँ आदि सब—वास्तव में मुस्लिम हैं क्योंकि ये सभी अल्लाह की आज्ञा के पालन में लगी हुई हैं।

मुहाजिर—हिजरत करनेवाला, अल्लाह के लिए अपना घरबार छोड़नेवाला। नबी (सल्ल०) के वे साथी जो अल्लाह के लिए अपना वतन—मक्का—छोड़कर मदीना प्रस्थान कर गए थे।



यतीम—अनाथ, वह बच्चा जिसका बाप मर चुका हो।

यहूदी—वे लोग जो अपना सम्बन्ध हज़रत मूसा (अलै॰) से जोड़ते हैं। एक विशेष क़बीले से यहूदी मत का आविर्भाव हुआ, उस क़बीले का नाम 'यहूदाह' था। यहूदाह शब्द की व्युत्पत्ति 'हूद' से हुई है। हूद का अर्थ होता है लौटना, पलटना, तौबा करना। यहूदियों को चाहिए कि वे अपने नाम की लाज रखें और अपने रब की ओर पलट आएँ।

रब—मौलिक अर्थ है पालनकर्ता, फिर स्वाभाविक रूप से इसमें कई अर्थों का आविर्भाव हुआ। कुरआन में 'रब' शब्द तीन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है जिनमें परस्पर गहरा संपर्क पाया जाता है:

(1) पालनकर्ता, संरक्षक। (2) स्वामी, मालिक, प्रभु। (3) शासक, हाकिम, विधाता, प्रबन्धकर्ता।

रब्बानी—धर्माधिकारी, यहूद के यहाँ जो धर्मज्ञाता, धार्मिक पदों पर नियुक्त होते थे और धार्मिक विषयों में मार्गदर्शन करना उनका कर्त्तव्य होता था, इसके अतिरिक्त उपासना की व्यवस्था की निगरानी भी उनके ज़िम्मे होती थी, ऐसे लोगों को रब्बानी कहा जाता था। इसका संकेत कुरआन में भी किया गया है। कुरआन, **5 : 63**

रसूल—पैग़म्बर, दूत, वह व्यक्ति जो रिसालत के पद पर नियुक्त हो। ऐसा व्यक्ति जिसके द्वारा अल्लाह लोगों को अपना मार्ग दिखाता और उन तक अपना संदेश पहुँचाता है उसे रसूल या नबी कहते हैं।

रसूल और नबी में थोड़ा अंतर पाया जाता है। रसूल वह पैग़म्बर होता है जिसे अल्लाह की ओर से नई शरीअत (धर्मविधान) और किताब प्रदान हुई हो। नबी हरेक पैग़म्बर को कहते हैं, चाहे उसे नई शरीअत और किताब मिली हो या उसे केवल पूर्वकालिक किताब और शरीअत पर लोगों को चलाने का कार्यभार सौंपा गया हो। ख़ुदा के पैग़म्बर या नबी संसार के विभिन्न भागों में आए हैं, उनकी एक बड़ी संख्या है, जिनमें से हम कुछ ही नबियों के नाम से परिचित हैं। नबियों की मौलिक शिक्षाएँ एक रहीं हैं। मुस्लिम के लिए अनिवार्य किया गया है कि वह सभी नबियों पर ईमान लाए और उनके प्रति अपने हृदय में श्रद्धा और प्रेम बनाए रखे। भले ही उन नबियों में से किसी या किन्हीं के समुदाय के लोग उसके शत्रु ही क्यों न हों, और शत्रुता में वे कितने ही आगे क्यों न बढ़े हुए हों। जैसे——मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह हज़रत मूसा (अलै०) को पैग़म्बर स्वीकार करे और उनके प्रति आदरभाव रखे, हालाँकि हज़रत मूसा (अलै०) को माननेवाले यहूदियों की इस्लाम और मुसलमानों से शत्रुता कोई छिपी हुई चीज़ नहीं है।

रस्सवाले—देखें 'अर-रसवाले'।

रहमान—अत्यन्त कृपाशील ईश्वर, वह सत्ता जिसकी दयालुता फीकी और धीमी न हो, अल्लाह का एक विशेष नाम।

रिब्बी (Devoted Man)—अल्लाहवाले, ईशभक्त।

रिसालत—रसूल होने का भाव, पैग़म्बरी, ईशदूतत्व। (देखिए 'रसूल'।)

रुकू (रुकूअ)—सिर झुकाना, नमाज़ का एक अंग जिसमें व्यक्ति अल्लाह की बड़ाई का ध्यान करते हुए उसके आगे नतमस्तक होता है।

रूहुल क़ुदुस—पवित्रात्मा। इससे अभिप्रेत वह्य का ज्ञान भी है जो हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को दिया गया था। इससे अभिप्रेत फ़रिश्ता हज़रत जिबरील (अलै०) भी हैं जो अल्लाह की वाणी पैग़म्बर तक पहुँचाते थे और इससे अभिप्रेत हज़रत ईसा (अलै०) की अपनी पवित्रता भी होती है।

रोज़ा—व्रत। क़ुरआन में इसके लिए 'सियाम' आया है। सियाम का मौलिक अर्थ है रुक जाना। रोज़े में आदमी सुबह पौ फटने से लेकर सूर्यास्त तक खाने-पीने और काम वासना की पूर्ति से रुका रहता है। आत्मा की शुद्धता और आत्मिक विकास के लिए रोज़ा रखना ज़रूरी है। रोज़े से आदमी में संयम की वृत्ति पैदा होती है और वह ईशपरायण बन जाता है। अर्थात वह अल्लाह का डर रखनेवाला और उसकी अवज्ञा से बचनेवाला व्यक्ति बन जाता है और उसके मन में यह भाव जागृत हो जाता है कि जीवन में खाने-पीने और भौतिक पदार्थों के भोग के सिवा भी कुछ है, जिसे प्राप्त किए बिना मनुष्य पाशविक स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।

लूत (अलै०) की जातिवाले—हज़रत लूत (अलै०) अल्लाह के एक पैग़म्बर थे। उनकी क़ौम अर्थात उनकी जातिवाले। यह जाति उस भू-भाग में बसती थी जो शर्क़ उर्दुन (Trans Jordan) कहलाता है। यह भू-भाग फ़िलिस्तीन और ईराक़ के मध्य में पड़ता है। बाइबिल में कहा गया है कि इनकी राजधानी 'सदूम' थी। तलमूद से ज्ञात होता है कि इसके चार और बड़े-बड़े नगर थे, जहाँ बाग़ ही बाग़ दिखाई देते थे और जहाँ सौंदर्य का राज्य था। किन्तु आज उस जाति का नाम व निशान सब मिटकर रह गया। बस एक मृत-सागर (Dead Sea) रह गया है जिसे 'लूत सागर' कहा जाता है।

लूत की जातिवाले बड़े निर्लज्ज और चरित्रहीन थे। इनके यहाँ बहुत-सी बुराइयाँ पनपी हुई थीं, लेकिन सबसे बड़ी बुराई उनके यहाँ यह पैदा हो गई थी कि वे स्त्रियों की अपेक्षा अपनी काम-तृष्णा की तृप्ति पुरुषों से करते थे और इसे वे कोई बुराई नहीं समझते थे। हज़रत लूत (अलै०) ने अपनी क़ौम को सीधे मार्ग पर लाने की पूरी कोशिश की, किन्तु क़ौम का दुर्भाग्य था कि उसने सुनी-अनसुनी कर दी। अंततः अल्लाह ने इनकी बस्ती को तलपट करके रख दिया।

लौंडी—इससे अभिप्रेत वे स्त्रियाँ हैं जो इस्लामी युद्ध में गिरफ़्तार हुई हों। इन स्त्रियों के सम्बंध में इस्लामी क़ानून यह है कि पहले उन्हें हुकूमत के हवाले किया जाएगा, फिर हुकूमत को यह अधिकार है कि वह उन्हें रिहा कर दे या रिहाई के बदले में कुछ फ़िदया ले। या वह उन मुसलमान क़ैदियों की रिहाई के बदले में उन्हें छोड़ दे जो दुश्मन के क़ब्ज़े में हों। या फिर उन स्त्रियों को सैनिकों में बाँट दे।

हुकूमत की ओर से विधिपूर्वक स्त्री को किसी व्यक्ति की मिलकियत में दिया जाना ठीक उसी तरह धर्मसंगत बात है जैसे विवाह एक धर्मसंगत कार्य है। लौंडी से जो औलाद पैदा होगी वह जायज़ औलाद मानी जाएगी और उस औलाद को वही हक़ प्राप्त होगा जो अपनी पत्नी से उत्पन्न औलाद को प्राप्त है। बच्चा पैदा होने के बाद लौंडी को बेचा नहीं जा सकता। अपने स्वामी के मरने के बाद वह स्वतंत्र हो जाएगी। इस्लाम में इसे अच्छा माना गया है कि लौंडियों को स्वतंत्र करके उनसे विवाह कर लिया जाए या उनका विवाह उन ग़रीब व्यक्तियों से कर दिया जाए जो निर्धनता के कारण बड़े घरानों में विवाह नहीं कर पाते। लड़ाई में गिरफ़्तार स्त्रियाँ समाज के लिए एक समस्या होती हैं। इस्लाम ने इसका जो समाधान निकाला है वह स्वाभाविक एंव मर्यादानुकूल है।

वुज़ू—नमाज़ पढ़ने से पहले शुद्धता के लिए हाथ, मुँह और पैरों को धोना और सिर पर गीला हाथ फेरना।

वह्य (Revelation)—प्रकाशना, दैवी प्रकाशन, ईश्वरीय संकेत। वह्य का शाब्दिक अर्थ होता है तीव्र संकेत, गुप्त संकेत। अर्थात ऐसा इशारा जो तेज़ी से इस प्रकार किया जाए जिसे वही जान सके जिसको इशारा किया गया हो। परिभाषा में इससे अभिप्रेत वह विशेष वह्य है जिसके द्वारा अल्लाह अपने नबियों को अपनी इच्छा और आदेशों से अवगत कराता है। क़ुरआन और दूसरे ईश्वरीय धर्मग्रंथों का अवतरण वह्य द्वारा ही हुआ है।

शहीद—साक्षी, गवाह, हाज़िर, वीरगति को प्राप्त। इस शब्द के कई अर्थ होते हैं।

(1) जो व्यक्ति किसी जाति की ओर से जाति के प्रतिनिधि के रूप में किसी मामले की गवाही दे क़ुरआन, **28 : 75**

(2) बादशाह के यहाँ जिसकी हैसियत सामान्य जनता के प्रतिनिधि या सिफ़ारिशी की हो।

(3) जिस चीज़ की गवाही दी जा रही हो अर्थात जिसकी सूचना लोगों को दी जा रही हो उस चीज़ और लोगों के बीच जो व्यक्ति वास्ता या माध्यम बन रहा हो क़ुरआन, **2 : 143**

(4) जो व्यक्ति किसी बड़े मामले की गवाही सप्रमाण दे। जो अपने संपूर्ण जीवन और चरित्र से इस बात की गवाही दे कि वह जीवन के जिन तथ्यों और मूल्यों पर विश्वास रखता हो वे सत्य हैं।

अल्लाह के मार्ग में प्राण देनेवाले या मारे जानेवाले को इसी लिए शहीद कहा जाता है कि वह अपने प्राण देकर इस बात की गवाही देता है कि जिस चीज़ पर ईमान लाने का उसे दावा था, वास्तव में दिल से उसे वह सत्य मानता था।

(5) वह व्यक्ति जो किसी चीज़ को पूरी तरह जानता हो और इस सिलसिले में वही

गवाह और सनद (प्रमाण) हो क़ुरआन, **29 : 52**

शिर्क—अनेकेश्वरवाद। किसी को अल्लाह का शरीक या साझीदार ठहराना। अल्लाह की सत्ता, उसके गुणों और उसके अधिकारों में किसी को शरीक समझना। (देखिए 'मुशरिक'।)

मुशरिक—अनेकेश्वरवादी, बहुदेववादी, शिर्क करनेवाला, किसी अन्य को अल्लाह के समकक्ष घोषित करनेवाला।

मुशरिक वह व्यक्ति है जो अल्लाह के अस्तित्व या उसके गुणों या उसके हक़ में दूसरों को साझीदार बनाए। अस्तित्व में साझीदार ठहराने का यह अर्थ है कि 'किसी से उसको या उससे किसी को उत्पन्न' होने की धारणा रखी जाए। जैसे किसी को उसका बाप या उसकी संतान समझी जाए।

गुणों में दूसरों को अल्लाह का साझीदार ठहराने का अर्थ यह होता है कि ख़ुदा के विशेष गुणों का सम्बन्ध दूसरों से भी जोड़ा जाए। उदाहरणार्थ——कोई यह समझने लगे कि जगत की रचना में किसी अन्य देवी-देवता का भी हाथ है या कोई यह मानने लगे कि कुछ और हस्तियाँ भी हैं जो स्वतंत्र अधिकार रखती हैं कि जो चाहें करें, जिसका चाहें काम बना दें और जिसका चाहें बिगाड़ दें।

हक़ और अधिकार में अल्लाह का शरीक ठहराने का अर्थ यह है कि जो हक़ और अधिकार अल्लाह का होता है उसमें वह दूसरों को भी साझीदार समझने लगे। जैसे– जगत का स्वामी और स्रष्टा अल्लाह है तो उपासना भी उसी की होनी चाहिए। अब यदि कोई अल्लाह से हटकर किसी दूसरे की बन्दगी और पूजा करता है तो यह अल्लाह के हक़ में दूसरे को शरीक ठहराना होगा। और ऐसा करनेवाले को मुशरिक कहा जाएगा।

शैतान—शाब्दिक अर्थ है जल्दबाज़, अग्नि-स्वभाववाला, अशान्त। तत्पश्चात इसमें सरकशी और क्रूरता के अर्थ का भी समावेश हो गया। शैतान के ये दुर्गुण किसी जिन्न में भी पाए जा सकते हैं और किसी मनुष्य में भी। क़ुरआन में इस शब्द क प्रयोग मनुष्य और जिन्न दोनों के लिए हुआ है।

सज्दा—झुकना, साष्टांग प्रणाम, दण्डवत, सिर ज़मीन पर रख देना, चेहरे के बल बिछ जाना, नमाज़ का एक विशेष अंग।

सदक़ा—दान, ख़ैरात, अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करना। क़ुरआन में ज़कात और ख़ैरात दोनों ही के लिए यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। सदक़ा की व्युत्पत्ति 'सिद्क़' से हुई है जिसका अर्थ होता है सच्चाई और निष्ठा।

सब्र—धैर्य, दृढ़ता, अविचल होना, जमाव। सब्र का शाब्दिक अर्थ है रोकना, बाँधना। सब्र के अर्थ में बड़ी व्यापकता पाई जाती है। सब्र संकल्प की वह दृढ़ता और मन की वह अविचलता है जिसके कारण आदमी अपने चुने हुए मार्ग पर आगे बढ़ता चला जाता है, किसी हानि का भय उसे मार्ग से हटा नहीं सकता और न ही मन की कोई इच्छा उसे विचलित कर सकती है।

समूद—अरब की प्राचीन जातियों में से एक प्रसिद्ध जाति। इस जाति का उल्लेख असीरिया के शिलालेखों में भी मिलता है। यूनान, स्कंदरिया, और रूम के इतिहासकारों और भूगोल के लेखकों ने भी इस जाति का उल्लेख किया है।

यह जाति अरब के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में बसती थी। आज इस क्षेत्र को 'अलहिज्र' कहते हैं। मदीना और तबूक के बीच एक स्थान 'मदायने-सालेह' पड़ता है। प्राचीन काल में इसे हिज्र कहते थे और यही समूद की राजधानी थी। हज़ारों एकड़ के क्षेत्र में आज भी ऐसे भवन मौजूद हैं, जिनका निर्माण समूद ने पहाड़ों को काट-काटकर किया था।

समूद के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह ने हज़रत सालेह को नबी बनाकर भेजा। किन्तु यह जाति राह पर न आई और अल्लाह ने इसे विनष्ट कर दिया।

सहाबा—साथी, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के साथी।

सहीफ़ा—लिखित पर्ण। बहुवचन के रूप में (सुहुफ़) किताब के लिए आता है। किताब पन्नों ही का समूह होता है।

साबिई—इस नाम के दो समुदाय प्राचीन काल में थे। एक हज़रत यह्या (अलै०) का अनुयायी था। इसके लोग 'अल जज़ीरा' के भू-भाग में अधिक पाए जाते थे। दूसरा गिरोह उन नक्षत्रपूजकों का था जो अपने धर्म का सम्बन्ध हज़रत शीस (अलै०) और हज़रत इदरीस (अलै०) से जोड़ते थे। इन लोगों का केन्द्र 'हर्रान' था। इराक़ के विभिन्न भागों में ये लोग फैले हुए थे। अनुमान है कि क़ुरआन में साबिई से अभिप्रेत पहला ही गिरोह है, क्योंकि क़ुरआन के अवतरण काल में दूसरा गिरोह इस नाम से नहीं जाना जाता था।

सिद्दीक़—अत्यंत सच्चा, निष्ठावान, सत्यवान। जिसमें सत्यप्रियता और सत्यवादिता के अतिरिक्त और कोई दूसरी भावना न पाई जाती हो। जो सत्य और न्याय का साथ हर हाल में दे सके। जो चरित्र का महान हो और स्वार्थपरता से बहुत दूर हो।

सूर—सूर बिगुल या नरसिंघा को कहते हैं। क़ुरआन में जिस सूर का उल्लेख किया गया है उसकी वास्तविकता का सही ज्ञान अल्लाह ही को है।

सूरा (सूरह) —(बहुवचन–'सूरतों')। कुरआन छोटे-बड़े 114 भागों में विभक्त है, जिनमें से प्रत्येक भाग को सूरा कहते हैं। प्रत्येक सूरा अपनी जगह पूर्ण होती है। किन्तु इसी के साथ अपनी अगली-पिछली सूरतों से गहरा संपर्क भी होता है।

सूरा शब्द 'सूर' से निकला है जिसका अर्थ होता है—शहरपनाह, प्राचीर, नगरकोट। इसका बहुवचन 'सुवर' होता, किन्तु हिन्दी नियम के अनुसार इस किताब में सूरतें या सूरतों लिखा गया है।

हक़—'हक़' मौजूद और क़ायम को कहते हैं। फिर इसमें कई अर्थों का समावेश हुआ है-(1) जिसका होना सत्य हो **38 : 64** (2) नैतिक दृष्टि से जो अपेक्षित हो **51 : 19** (3) जो स्पष्ट और बुद्धिसंगत हो **2 : 71, 6 : 62**

अल्लाह और क़ियामत पहले और तीसरे अर्थ के अनुसार हक़ हैं। इनसाफ़ और न्याय को दूसरे अर्थ में हक़ कहा जाएगा। तीसरे अर्थ के अनुसार हिकमत, तत्त्वदर्शिता (Wisdom)।

हम्द—गुणगान, प्रशंसा, ईशप्रशंसा। किसी के सद्‌गुणों और ख़ूबियों का प्रेमपूर्वक वर्णन। हम्द अल्लाह के आगे कृतज्ञता प्रकट करने का एक उत्तम ढंग है। इसी लिए हम्द को शुक्र से भी अभिव्यंजित करते हैं।

हज (हज्ज) —इसका अर्थ होता है इरादा करना, ज़ियारत। परिभाषा में हज एक इबादत है जिसमें आदमी काबा के दर्शन का इरादा करता है और मक्का पहुँचकर उन कृतियों का पालन करता है जिनका आदेश दिया गया है। हज वास्तव में इस बात की घोषणा है कि हमारा प्रेम, श्रद्धा, पूजा और बन्दगी सब अल्लाह ही के लिए है। हज करने से मानव-हृदय पर अल्लाह की बड़ाई और उसके प्रेम की छाप स्थायी रूप से पड़ जाती है।

हरम—प्रतिष्ठित स्थान, आदर योग्य। मक्का का विशेष भू-भाग। हरम की सीमा में बहुत-सी बातें, जो हरम की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हैं, वर्जित हैं।

हराम—अवैध, वर्जित, निषिद्ध। इस्लाम ने जिनका निषेध किया हो, जैसे शराब पीना, ब्याज खाना आदि।

हलाल—वैध, अवर्जित, जो इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुकूल हो।

हवारी—सच्चा साथी, सहायक। हज़रत ईसा मसीह (अलै॰) के साथियों की उपाधि। उर्दू बाइबिल में इसके लिए 'शागिर्द' शब्द प्रयुक्त हुआ है। बाद में उनके लिए 'रसूल' (Apostles) की उपाधि प्रचलित हो गई। क्योंकि हज़रत ईसा मसीह धर्मप्रचार हेतु उन्हें विभिन्न स्थानों पर भेजते थे। क़ुरआन ने उन्हें हवारी कहा। हवारी 'हौर' से बना है। 'हौर' का अर्थ होता है सफ़ेदी। धोबी को हवारी इसी लिए कहते हैं कि वह कपड़े को धोकर सफ़ेद कर देता है। ख़ालिस और शुद्ध चीज़ को भी हवारी कहते हैं। इस पहलू से ख़ालिस दोस्त और निस्स्वार्थ साथी को भी हवारी कहते हैं।

हिकमत (Wisdom)—तत्त्वज्ञान, विवेक, तत्त्वदर्शिता। हिकमत का मूल अर्थ है फ़ैसला करना, फिर सूझबूझ की उस शक्ति को भी हिकमत कहते हैं जिसके द्वारा आदमी फैसले करता है। उस शक्ति को भी हिकमत से अभिव्यंजित करते हैं जो सत्यानुकूल निर्णयों का स्रोत है। इसके अतिरिक्त चरित्र की पवित्रता को भी हिकमत के लक्षणों में से माना जाता है।

हिजरत—स्वदेश-त्याग, अल्लाह की राह में घर-बार छोड़ना, नबी (सल्ल॰) का मक्का छोड़कर मदीना को प्रस्थान करना।

हिदायत (Guidance)—मार्गदर्शन, रास्ता दिखाना, सीधे मार्ग पर लाना, सीधे मार्ग पर चलाना। जीवन-यापन करने का वह तरीक़ा जिसपर चलकर आदमी अपने लोक-परलोक का भला कर सके। क़ुरआन में इसके लिए 'हुदा' शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिसके कई अर्थ होते हैं, किन्तु उनमें परस्पर गहरा सम्बन्ध पाया जाता है। (1) हृदय-ज्योति, अंतर्दृष्टि क़ुरआन,**32: 13, 47: 17** निशानी, प्रमाण, खुली दलील, वह चीज़ जिसके द्वारा राह मिल सके क़ुरआन,**2: 185, 20: 10, 22: 8**। (3) स्पष्ट मार्ग, अभीष्ट स्थान (मंज़िल) तक पहुँचने का रास्ता क़ुरआन,**22: 67** । यहीं से यह शब्द शरीअत के लिए भी मान्य हुआ क़ुरआन,**3: 73, 6: 90** (4) क्रिया की संज्ञा का रूप। अरब किसी चीज़ के स्पष्ट गुण से ही उसका नामकरण कर देते हैं। इसी नियम के अनुसार क़ुरआन को 'अलहुदा' कहा गया है क़ुरआन,**72: 13**

हुक्म—निर्णय-शक्ति, धर्म में सूझ-बूझ, मामलों में सही राय क़ायम करने की क्षमता। मामलों में फ़ैसला करने का अल्लाह की ओर से अधिकार। हुक्म में प्रभुत्त्व का अर्थ भी पाया जाता है। क़ुरआन में यह शब्द और इल्म साधारणतया नुबूवत के लिए प्रयुक्त हुआ है। हुक्म वास्तव में सूझ-बूझ और विवेक का नाम है। यही हिकमत का स्रोत भी है। जब विवेक पूर्ण होकर प्रतिभा एंव विचक्षणता का रूप धारण कर लेता है तो उसे हिकमत कहा जाता है।

हुरूफ़-मुक़त्तआत—'हुरूफ़' शब्द बहुवचन है 'हर्फ़' (अक्षर) का। मुक़त्तआत का अर्थ है कटा हुआ, अलग-अलग किया हुआ। क़ुरआन मजीद की कतिपय सूरतों का आरंभ अरबी के कुछ अक्षरों से हुआ है। ये अक्षर अलग-अलग पढ़े जाते हैं। इन्हें मिलाकर शब्द के रूप में नहीं पढ़ा जाता। इन्हीं अक्षरों को 'हुरूफ़- मुक़त्तआत' कहा जाता है। ये अक्षर वास्तव में कुछ गहरे अर्थों की ओर संकेत करते हैं, जिन्हें समझने के लिए गहरा चिन्तन, पवित्रता और मन की शुद्धता अपेक्षित होती है।

***